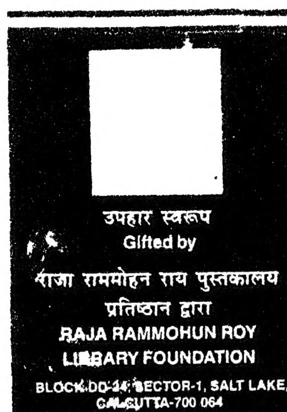


प्रेमचंद
रचनावली

16

प्रेमचंद रचनावली

16

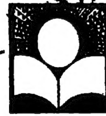


अनुवाद

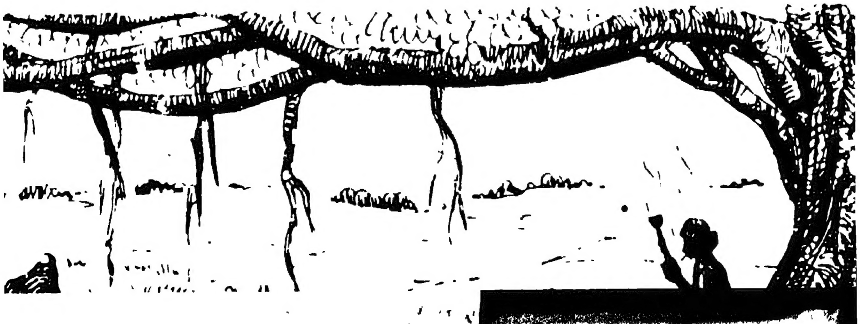
[illegible], सुखदास, अहंकार,
टॉल्सटॉय की कहानियां, चांदी की डिबिया,
न्याय, हड़ताल, सृष्टि का आरंभ

संपादक

राम आनंद



जनवाणी प्रकाशन प्रा० लि०
पंजीकृत कार्यालय एवं शोरूम
30/22ए, गली न० 9, विश्वास नगर, दिल्ली-110032



प्रेमचंद रचनावली

खण्ड : सोलह

भूमिका एवं मार्गदर्शन

डॉ० रामविलास शर्मा



प्रकाशकीय

'प्रेमचंद रचनावली' का प्रकाशन **जनवाणी** के लिए गौरव की बात है। कॉपीराइट समाप्त होने के बाद प्रेमचंद साहित्य विपुल मात्रा में प्रकाशित-प्रचारित हुआ। पर उनका सम्पूर्ण साहित्य अब तक कहीं भी एक जगह उपलब्ध नहीं था। लगातार यह जरूरत महसूस की जा रही थी कि उनके सम्पूर्ण साहित्य का प्रामाणिक प्रकाशन हो।

श्रेष्ठ और कालजयी साहित्यकारों के समग्र कृतित्व का एकत्र प्रकाशन कई दृष्टियों से उपयोगी होता है। इसी आलोक में **'प्रेमचंद रचनावली'** की कुछ विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख बहुत आवश्यक है। इस रचनावली में पहली बार सम्पूर्ण प्रेमचंद साहित्य सर्वाधिक शुद्ध और प्रामाणिक मूल पाठ के साथ सामने आया है। सम्पूर्ण रचनाओं का विभाजन पहले विधावार तत्पश्चात् कालक्रमानुसार किया गया है। रचनाओं के प्रथम प्रकाशन एवं उनके कालक्रम संबंधी प्रामाणिक जानकारी प्रत्येक रचना के अन्त में दी गई है जिससे प्रेमचंद के कृतित्व के अध्ययन और मूल्यांकन में विशेष सुविधा होगी। इसकी अधिकांश सामग्री प्रथम संस्करणों या काफी पुराने संस्करणों से ली गई है। प्रेमचंद साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा शोध के लिए इस रचनावली का अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व है, क्योंकि इसमें प्रेमचंद की [illegible] उपलब्ध सम्पूर्ण तथा अद्यतन सामग्री का समावेश कर लिया गया है। रचनावली के बीस खण्डों का क्रमबद्ध प्रारूप इस प्रकार है--

> **खण्ड 1-6 :** मौलिक उपन्यास, **खण्ड 7-9 :** लेख, भाषण, संस्मरण, संपादकीय, भूमिकाएं, समीक्षाएं, **खण्ड 10 :** मौलिक नाटक **खण्ड 11-15 :** सम्पूर्ण कहानियां (302); **खण्ड 16-17 :** अनुवाद (उपन्यास, नाटक, कहानी), **खण्ड 18 :** जीवनी एवं बाल साहित्य, **खण्ड 19 :** पत्र (चिट्ठी-पत्री), **खण्ड 20 :** विविध।

रचनावली की विस्तृत भूमिका मूर्धन्य आलोचक डॉ॰ रामविलास शर्मा ने लिखी है, जो इस रचनावली की सबसे बड़ी उपलब्धि है। डॉ॰ शर्मा ने अपनी साहित्य-साधना के व्यस्त क्षणों में भी हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन किया। रचनावली का जो यह [illegible] रूप सामने आया है यह सब उन्हीं के आशीर्वाद का प्रतिफल है। इस कृपा और सहयोग के लिए मैं उनके प्रति नतमस्तक हूं।

बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति, हिन्दी और उर्दू के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो॰ जाबिर हुसेन ने प्रेमचंद रचनावली के संपादक-मण्डल का अध्यक्ष होना स्वीकार किया और रचनावली के संपादन कार्य में हमारा उचित मार्गदर्शन किया, इसके लिए मैं उनका आभारी हूं। साथ ही संपादक-मण्डल के विद्वान सदस्यों के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

श्री केशवदेव शर्मा ने अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद सम्पादन कार्य में जिस गहरी लगन, समझदारी और आत्मीयता से सहयोग किया है उसके लिए उनके प्रति अनेकशः धन्यवाद। उनका अहर्निश सानिध्य मुझे स्फूर्ति प्रदान करता रहा। डॉ॰ गीता शर्मा एवं डॉ॰ अशोक कुमार शर्मा, वेद प्रकाश सोनी तथा डॉ॰ विनय के प्रति भी उनके हार्दिक सहयोग के लिए आभारी हूं।

भाई राम आनंद साहित्य क्षेत्र में प्रवेश करते ही प्रेमचंद द्वारा स्थापित प्रकाशन संस्थान **'सरस्वती प्रेस'** से जुड़ गए थे। लगभग बीस वर्षों तक उन्होंने स्व॰ श्रीपत राय (प्रेमचंद के ज्येष्ठ पुत्र) के मार्गदर्शन में अप्राप्य प्रेमचंद साहित्य पर शोध कार्य किया। वे स्व॰ श्रीपत राय के संपादन में प्रकाशित होने वाली विख्यात कथा-पत्रिका **'कहानी'** के सहायक संपादक रहे। श्रीपत राय के देहांत के बाद उन्होंने **'कहानी'** का स्वतंत्र रूप से संपादन किया और उसे नया रूप तथा गरिमा प्रदान की। उन्होंने जिस गहरी सूझ-बूझ, लगन, धैर्य और निष्ठा से इस रचनावली के संपादन कार्य को इतने सुरुचिपूर्ण और वैज्ञानिक ढंग से संपन्न किया, इसके लिए वे हम सबों के साधुवाद के पात्र हैं।

श्री हरीशचन्द्र वार्ष्णेय, श्री प्रेमशंकर शर्मा, श्री उदयकान्त पाठक ने प्रूफ-संशोधन और सम्पूर्ण मुद्रण कार्य में विशेष जागरूकता और मनस्विता का परिचय दिया; इनके साथ विमलसिंह; आर॰ के॰ यादव, सुनील जैन, शिवानंदसिंह तथा संस्था के अन्य सभी सहकर्मियों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं क्योंकि इन सबके सहयोग और सद्भाव के बिना यह काम पूरा होना लगभग असंभव था।

मेरी भ्रातृजा रीमा और भ्रातृज संदीप, संजीव, मनीष, विक्रांत, चेतन की लगन और सूझबूझ ने भी मुझे सदैव प्रेरित और उत्साहित किया वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

रचनावली के मुद्रण का कार्य श्री कान्तीप्रसाद शर्मा की देखरेख में हुआ है। उनकी सूझबूझ और श्रमनिष्ठा के लिए वे हमारे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

सर्वश्री विजयदान देथा, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', रामकुमार कृषक, स्वामी प्रेम जहीर, डॉ॰ कुसुम वियोगी, रामकुमार शर्मा आदि सभी मित्रों के सुझावों के लिए भी आभारी हूं।

इस कार्य में पूज्य माताजी श्रीमती जसवन्ती देवी का आशीर्वाद और पिताश्री प्रेमनाथ शर्मा का दीर्घकालीन प्रकाशन-व्यवसाय का अनुभव और आशीर्वाद मेरे विशेष प्रेरणा स्रोत रहे। इनके साथ मातृतुल्या भाभी श्रीमती ललिता शर्मा, अग्रज राजकुमार शर्मा, चमनलाल शर्मा, धर्मपाल शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी इन्दु शर्मा के साथ भाई हरीशकुमार शर्मा एवं सुभाषचन्द्र शर्मा के साथ ही चाचा श्री दीनानाथ शर्मा का भी आभारी हूं जिन्होंने पग-पग पर मेरा मार्ग-दर्शन किया। और सबसे अंत में सहधर्मिणी श्रीमती गीता शर्मा ने जो सहयोग और संबल प्रदान किया उसके लिए आभार अथवा धन्यवाद जैसा शब्द बहुत कम होगा। सारा श्रेय उन्हीं का है।

नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता के सहयोग से दुर्लभ पुस्तक 'महात्मा शेखसादी' लगभग सत्तर वर्ष बाद एक बार फिर इस रचनावली के मार्फत पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। मैं नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं। उन समस्त संस्थानों, पुस्तकालयों, विभागों, संस्थाओं, लेखकों, संपादकों, अधिकारियों और व्यक्तियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने इस रचनावली के आयोजन में सहयोग किया।

अन्त में विद्वान पाठकों से हमारा निवेदन है कि वे इस रचनावली की त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करें ताकि आगामी संस्करणों में उन्हें दूर किया जा सके।

हम आशा करते हैं कि हिन्दी जगत् इस बहु-प्रतीक्षित रचनावली का हार्दिक स्वागत करेगा।

अरुण कुमार
(प्रबंध निदेशक)



स्व॰ जवाहरलाल नेहरू के साथ प्रेमचंद : एक बैठक में भाग लेते हुए



मदन गोपाल
अंग्रेजी अनुवादक



प्रोफेसर लक्ष्मण प्रसाद मिश्र
इटालवी अनुवादक

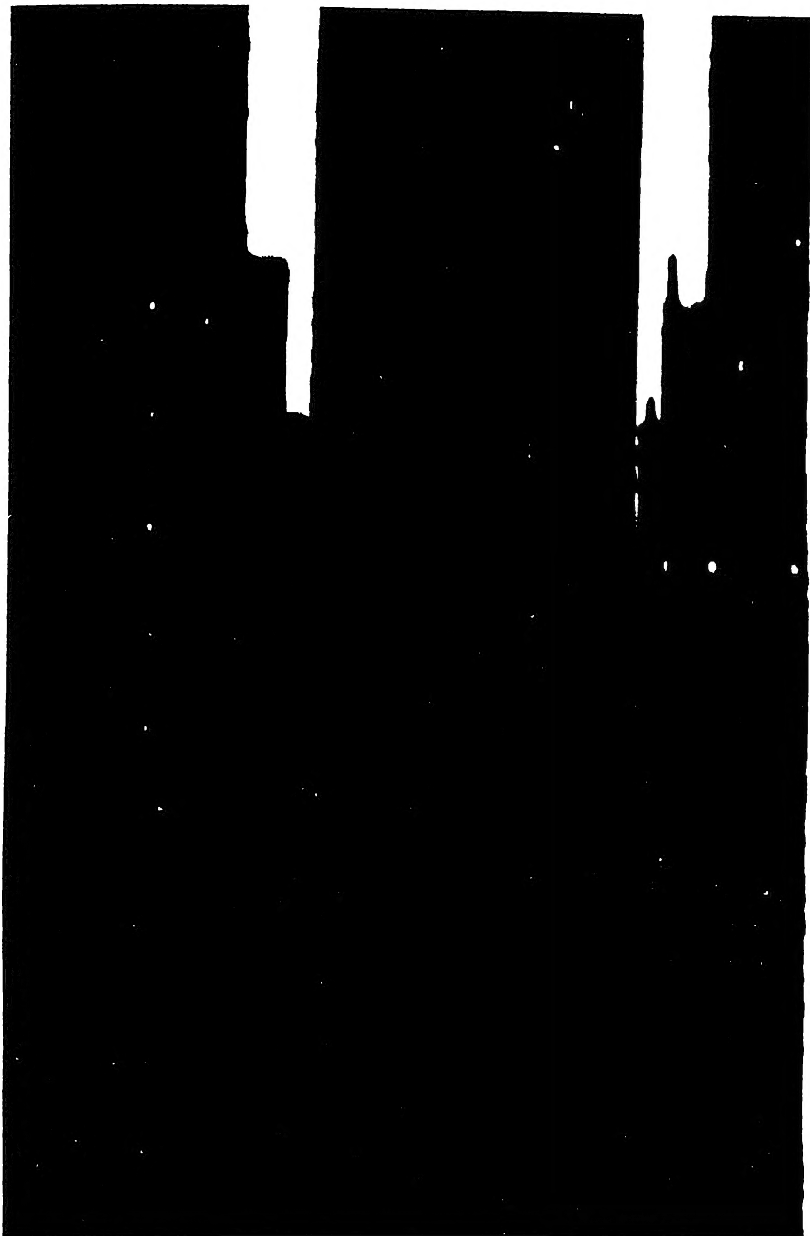
प्रेमचंद साहित्य के अनुवादक



प्रोफेसर के० दोई
जापानी अनुवादक



केशीराम सब्बरवाल
जापानी अनुवादक



शबेतार

प्रकाशनकाल : 1919

मंज़र (दृश्य)

[एक बहुत पुराना खित्ताए-शुमाली (उत्तरी प्रदेश) का जंगल जिससे किदम (प्राचीनता) के आसार (लक्षण) नुमायां (सुस्पष्ट) हैं। आसमान तारों से पुर (भरा हुआ)। जंगल के वस्त (मध्य) में, आधी रात के करीब, एक बूढ़ा दरवेश (संन्यासी) स्याह लबादा ओढ़े बैठा हुआ है। उसका सर और जिस्म का बालाई (ऊपरी) हिस्सा जो किसी कदर पीछे को झुका हुआ और बिल्कुल बेहिस-ओ-हरकत (निश्चल निस्पंद) है, एक शाहबलूत के दरख्त से टिका हुआ है। यह दरख्त बड़ा झंखाड़ और छतनार है। उसका चेहरा बिल्कुल ज़र्द है। उस पर खाक की सी बेरंगी छायी हुई है और उसके नीले होंठ खुले हुए हैं। उसकी जामिद (स्थिर) और पथरायी हुई आंखें अबद (सनातनकाल) के वुजूदे-ज़ाहिर (प्रत्यक्ष अस्तित्व) की तरफ़ नहीं देखतीं और गमहाए-दरीना (पुराने गमों) से खूंफिशां (खून बरसाती हुई) मालूम हो रही हैं। उसके नूरानी (दीप्तिमान) और सफेद बाल उसके चेहरे पर बिखरे हुए हैं जो इस सहराए-तारीक (अंधेरे जंगल) की तमाम चीजों से ज्यादा मुज़महिल (थका हुआ) और रोशन है। उसके निहायत लागर हाथ उसके सीने पर अकड़े हुए पड़े हैं। उसके दाहिने जानिब छः बूढ़े और अंधे आदमी चट्टानों, सूखी पत्तियों और दरख्तों के ठूंठों पर बैठे हुए हैं। बायीं तरफ, उनके मुकाबिल छः बूढ़ी अंधी औरतें बैठी हुई हैं। दर्मियान में एक गिरा हुआ दरख्त और पत्थर के टुकड़े हायल हैं। तीन अंधी औरतें एक गैर-मुअस्सिर (प्रभावशून्य) अंदाज से दुआ कर रही हैं और रो रही हैं। एक औरत निहायत किब्र-सिन (बूढ़ी) है। पांचवीं औरत गूंगी और पगली है। उसकी गोद में एक छोटा-सा लड़का सो रहा है। छठवीं औरत अभी नौजवान है और उसके लंबे-लंबे बालों से उसका सारा जिस्म ढंका हुआ है। मर्द और औरतें सब के सब एक ही किस्म के स्याह और ढीले ढाले कपड़े पहने हुए हैं। उनमें से अक्सर कुहनियां घुटनों पर रक्खे हुए और चेहरों को हाथों से छिपाये हुए सूरते इंतजार बैठे हैं। ऐसा मालूम होता है कि वह इशारे और अंदाज़ की आदत को भूल गये हैं। वह इस जज़ीरे के पैहम (तमाम) शोरो-गुल पर ज़रा भी सर नहीं हिलाते। बड़े-बड़े मातमी दरख्त अज़-किस्म (जैसे) देवदार व बलूत व सनोबर इन्हें अपने तारीक (अंधकारपूर्ण) और वफ़ादार साये में छिपाये हुए हैं। साधु से थोड़ी दूर पर लंबे-लंबे ज़र्द नर्गिसों के फूल खिले हुए हैं। बावजूदे कि कहीं चांद की किरनें पत्तियों से छन-छनकर ज़मीन पर आती हैं और तारीकी (अंधकार) को हटाने की कोशिश करती हैं, फिर भी जंगल में अमीक (गहरा) तारीकी छायी हुई है।]

पहला नाबीना (अंधा आदमी) : क्या वह अभी नहीं आ रहे हैं?

दूसरा नाबीना : तुमने मुझे जगा दिया।

पहला नाबीना : मैं भी सो गया था।

तीसरा नाबीना : मैं भी सोता ही था।

पहला नाबीना : क्या वह अभी नहीं आ रहे हैं?

दूसरा नाबीना : मुझे किसी के आने की आहट नहीं मिलती।

तीसरा नाबीना : अब ख़ानक़ाह (मठ या आश्रम) में लौट जाने का वक़्त क़रीब होगा।

पहला नाबीना : हम यह जानना चाहते हैं कि हम कहां हैं?

सबसे बुड्ढा नाबीना : कोई जानता है कि हम कहां हैं?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : हम बहुत देर तक चलते रहे थे। हम ज़रूर ख़ानक़ाह से बहुत फ़ासले पर हैं।

पहला अंधा आदमी : ओ हो, क्या औरतें हमारे मुक़ाबिल हैं?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : हां, हम तुम्हारे सामने बैठी हुई हैं।

पहला अंधा आदमी : ठहरो, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं। **(वह उठकर इधर-उधर टटोलता है।)** तुम कहां हो? बोलो, ताकि मुझे आवाज़ से कुछ पता चले।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : हम यहां पत्थरों पर बैठी हुई हैं।

पहला नाबीना : **(वह आगे बढ़ता है और गिरे हुए दरख़्तों और चट्टानों से ठोकर खाता है।)** हमारे दर्मियान कुछ हायल (मध्यवर्ती बाघ) है।

दूसरा नाबीना : जहां बैठे हो वहीं बैठे रहो। यह बेहतर है।

तीसरा नाबीना : तुम कहां बैठे हो? क्या हमारे पास आना चाहते हो?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : हम खड़ी नहीं हो सकतीं।

तीसरा नाबीना : इन्होंने हम लोगों को अलग-अलग क्यों कर दिया?

पहला नाबीना : मुझे औरतों की तरफ़ से दुआ करने की आवाज़ आ रही है।

दूसरा नाबीना : हां, तीनों बुड्ढी अंधी औरतें दुआ कर रही हैं।

पहला नाबीना : लेकिन यह तो दुआ करने का वक़्त नहीं है।

दूसरा नाबीना : तुम लोग बावर्चीख़ाने में जाकर नमाज़ पढ़ना।

(तीनों औरतें बदस्तूर दुआ करती रहती हैं।)

तीसरा नाबीना : मैं यह मालूम करना चाहता हूं कि मैं किसके क़रीबतर बैठा हुआ हूं।

दूसरा नाबीना : शायद मैं तुमसे क़रीब हूं।

तीसरा नाबीना : हम एक दूसरे से मिल नहीं सकते।

पहला नाबीना : लेकिन हमारे दर्मियान ज़्यादा फ़ासला नहीं है **(वह इधर-उधर हाथों से टटोलता है। उसकी छड़ी से पांचवें अंधे को चोट लग जाती है और वह कराह उठता है।)** बहरा हमारे

क़रीब बैठा हुआ है।

दूसरा नाबीना : मुझे सब आदमियों की आवाज़ें नहीं सुनायी देतीं। हम कुल छः आदमी थे।

पहला नाबीना मुझे अब कुछ-कुछ हक़ीक़त खुलने लगी है। औरतों से भी पूछ लेना चाहिए। यह ज़रूरी है कि हम सूरते-हाल (परिस्थित) से वाक़िफ़ (परिचित) हो जायें। अभी तक तीनों औरतों की दुआख़्वानी (प्रार्थना करने) की आवाज़ मेरे कान में आ रही है। क्या वह एक ही साथ बैठी हुई हैं?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वह मेरी बग़ल में एक चट्टान पर बैठी हुई हैं।

पहला नाबीना : मैं मुर्दा पत्तियों पर बैठा हुआ हूं।

तीसरा नाबीना : और वह हसीना कहां है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वह उन दुआ करने वाली औरतों के क़रीब बैठी हुई है।

दूसरा नाबीना : वह पगली और उसका बच्चा कहां है?

नौजवान अंधी औरत : वह सो रहा है, उसे न जगाओ।

पहला नाबीना : उफ़! तुम हम लोगों से कितनी दूर हो? मैंने समझा था कि तुम मेरे ऐन मुक़ाबिल हो।

तीसरा अंधा : अब हमें बेशतर ज़रूरी बातें मालूम हो गयी हैं। अब आओ, कुछ बातचीत करें। उस वक़्त तक साधूजी भी लौट आयेंगे।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : उन्होंने हमसे कहा था कि ख़ामोशी के साथ मेरा इंतज़ार करना।

तीसरा नाबीना : हम इबादतख ाने (उपासना-गृह) में नहीं हैं कि ख़ामोश बैठें।

बुड्ढी अंधी औरत : तुम क्या जानते हो कि हम कहां हैं?

तीसरा नाबीना : मुझे बिना बात किये ख़ौफ़ मालूम होता है।

दूसरा नाबीना : तुम्हें मालूम है कि साधूजी कहां गये हैं?

तीसरा नाबीना : मुझे ऐसा मालूम होता है कि उन्हें ज़रूरत से ज़्यादा देर हो रही है।

पहला नाबीना : अब वह ज़ईफ़ हो गये हैं। मुझे मालूम होता है कि कुछ दिनों से उन्हें खुद भी कुछ नहीं सूझता। वह इसका इज़हार नहीं करते, इस ख़ौफ़ से कि उनकी जगह पर हमारा कोई दूसरा निगरांकार (निगरानी करने वाला) आ जायेगा। लेकिन मुझे शुबहा होता है कि अब उनकी आंखें बेकार हो गयी हैं। अब हमें किसी दूसरे रहनुमा की ज़रूरत है। वह अब हमारी बातों की परवाह नहीं करते। हमारी तादाद भी अब ज़्यादा हो गयी है। यहां उनके और जतियों-बैरागियों के सिवा और कोई बीना (आंख वाला) नहीं। और वह लोग हमसे भी ज़्यादा ज़ईफ़ हैं। मुझे यक़ीन है कि महात्माजी हमें लेकर कहीं भूल

आये हैं और अब रास्ता ढूंढ़ रहे हैं। वह कहां गये? उन्हें कोई मजाज नहीं है कि हमको तनहा छोड़ जायें।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी : वह बहुत दूर गये हैं, शायद औरतों से इसका ज़िक्र किया था।

पहला नाबीना : तो अब वह औरतों ही से बोलते हैं? गोया हम सबके सब मर गये। बिल आख़िर हमें उनकी शिकायत करनी पड़ेगी।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी : किससे शिकायत करोगे?

पहला नाबीना : अभी यह नहीं मालूम है। ख़ैर, देखा जायगा। लेकिन वह गये कहां? मैं औरतों से पूछ रहा हूं।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वह इतनी दूर आते-आते थक गये थे। मुझे ख़याल आता है कि वह ज़रा देर तक हमारे दर्मियान बैठे थे। कई दिनों से वह बहुत दिलगिरफ़्ता (उद्विग्न) और अलील (अस्वस्थ) हैं। जब से डाक्टर का इंतक़ाल हुआ उनकी तबीयत परेशान है। वह उदास रहते हैं। शाज (बिरले) ही किसी से बोलते हैं। कुछ ख़बर नहीं कि क्या सानिहा (दुर्घटना) हो गया है। आज वह सैर करने पर मुसिर (आग्रहशील) हुए। वह कहते थे कि मैं सरमा (जाड़ा) शुरू होने के पहले आख़िरी बार धूप में जज़ीरे (टापू) को देखना चाहता हूं। ऐसा मालूम होता कि सरमा बहुत सर्द और तूलानी होगा। अभी से शुमाल (उत्तर) की जानिब से बर्फ़ आने लगी है। वह कुछ मुतरद्दिद (परीशान) भी थे। लोग कहते हैं कि पिछले दिनों के तूफ़ानों से नदियों में सैलाब (बाढ़) आ गया है और पुश्ते (क गार) मुनहादिम (टूटते) होते जाते हैं। वह यह भी कहते थे कि मुझे समुंदर से ख़ौफ़ मालूम होता है। वह बिला वजह मुतहातिम (उद्विग्न) हो रहा है और जज़ीरे की पहाड़ियां काफ़ी तौर पर ऊंची नहीं हैं। वह खुद अपनी आंखों से देखना चाहते थे लेकिन उन्होंने हमसे कुछ नहीं बतलाया कि क्या देखा। मुझे ख़याल आता है कि वह पगली औरत के लिए रोटी और पानी लाने गये हैं। वह कहते थे कि शायद मुझे दूर जाना पड़े। हमको मजबूरन इंतज़ार करना पड़ेगा।

नौजवान अंधी औरत : जाते वक़्त उन्होंने मेरे हाथ पकड़े थे। उनके हाथ कांप रहे थे। गोया वह डर रहे हों। तब उन्होंने मेरा बोसा लिया।

पहला नाबीना : अच्छा!

नौजवान अंधी औरत : मैंने उनसे पूछा कि क्या बात हो गयी है। उन्होंने कहा, मुझे नहीं मालूम कि क्या होने वाला है। वह कहते थे कि बुड्ढों की हुकूमत अब ख त्म होने वाली है। ग़ालिबन....

पहला नाबीना : इससे उनकी क्या मंशा थी?

नौजवान अंधी औरत : मैंने भी उनका मतलब न समझा। उन्होंने मुझसे यही बताया कि मैं उस बड़े रौशनी के मीनार की तरफ़ जा रहा हूं।

पहला नाबीना : क्या यहां कोई रौशनी का मीनार भी है?

नौजवान अंधी औरत : हां, जज़ीरे के शुमाल में है। मेरा ख़याल है कि हम उससे बहुत दूर नहीं हैं। वह मुझसे कहते थे कि मीनार की रौशनी यहां की पत्तियों पर पड़ती हुई नज़र आती है। मुझे आज के से अफ़सुर्दा-ख़ातिर (उदास) वह कभी न मालूम हुए थे और मेरा ख़याल है कि वह कई दिन से रायी करते थे। मालूम नहीं क्यों! मैं ख़ुद भी रोया। मैंने उन्हें जाते हुए नहीं सुना। इससे ज़्यादा मैं उनसे और कुछ न पूछ सकी। मैं सुन रही थी कि वह बहुत संजीदगी से मुस्करा रहे थे। मैंने यह भी सुना कि वह आंखें बन्द कर रहे थे और सुकून चाहते थे।

पहला नाबीना : उन्होंने यह सब बातें हमसे नहीं कहीं।

नौजवान अंधी औरत : तुम उनकी बातें कब सुनते थे!

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : जब वह बोलते हैं तो तुम सबके सब कानाफुसकी करने लगती हो।

दूसरा नाबीना : चलते वक़्त उन्होंने सिर्फ़ "वस्सलाम" कहा।

तीसरा नाबीना : रात ज़्यादा आ गयी।

पहला नाबीना : चलते वक़्त उन्होंने दो-तीन बार "वस्सलाम" कहा, गोया सोने जा रहे हों। जब वह सलाम कर रहे थे तो मुझे ऐसा मालूम होता था कि वह मेरी तरफ ताक रहे हैं। जब कोई किसी चीज़ की तरफ़ ग़ौर से देखता है तो उसकी आवाज़ तबदील हो जाती है।

पांचवां नाबीना : उन लोगों पर रहम करो जिनके आंखें नहीं हैं।

पहला नाबीना : यह कौन वाहियात बातें कर रहा है!

दूसरा नाबीना : शायद यह वो है जो सुन नहीं सकता।

पहला नाबीना : चुप रहो, यह रोने का वक्त नहीं है।

तीसरा नाबीना : महात्मा जी रोटी और पानी लेने कहां चले गये?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वह समुंदर की तरफ़ गये।

तीसरा नाबीना : इस सिन-ओ-साल (उम्र) पर कोई इस तरह समुंदर की तरफ़ नहीं जाता।

दूसरा नाबीना : क्या हम समुंदर के क़रीब हैं?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : हां, एक लमहा ख़ामोश हो जाओ, तुम्हें उसकी आवाज़ सुनायी देगी।

(क़रीब से समुंदर की धीमी-धीमी सदा)

दूसरा नाबीना : मुझे तो सिर्फ़ तीनों औरतों के दुआ करने की आवाज़ आ रही है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : ग़ौर से सुनो। उनकी दुआओं के बीच-बीच में तुम्हें उसकी आवाज़ सुनायी देगी।

दूसरा नाबीना : हां, मुझे कोई ऐसी आवाज़ सुनायी देती है जो हमसे दूर नहीं है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वह सोयी हुई थी, ऐसा मालूम होता है कि अब जाग रही है।

पहला नाबीना : महात्मा जी को हमें यहां न लाना चाहिए था। मुझे इस शोर से अंदेशा होता है।

सबसे बुड्ढा आदमी : तुम खूब जानते हो कि जज़ीरा बहुत बड़ा नहीं है और ज्योंही ख ानक़ाह से बाहर निकले, यह सदा (आवाज) आने लगती है।

दूसरा नाबीना : मैंने कभी इसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

तीसरा नाबीना : मुझे ऐसा मालूम होता है कि आज यह बहुत क़रीब हो गयी है। मैं इसे इतने पास से नहीं सुनना चाहता।

दूसरा नाबीना : मुझे भी यह पसंद नहीं। फिर हमने ख़ानक़ाह से बाहर आने के लिए कभी नहीं कहा।

तीसरा नाबीना : हम इतनी दूर कभी यहां नहीं आये। हमें इतनी दूर लाने से क्या फ़ायदा?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : आज सुबह मौसम बहुत सुहाना था। वह चाहते थे कि हम गर्मी के आख़िरी दिनों का लुत्फ़ उठायें, क़ब्ल इसके कि जाड़े भर के लिए ख़ानक़ाह में मुक़ैयद (कै द) हो जायं।

पहला नाबीना : लेकिन मुझे ख़ानक़ाह में पड़े रहना ज्यादा पसंद है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वह कहते थे कि हम जिस जज़ीरे में रहते हैं उसका कुछ हाल ज़रूर जानना चाहिए। उन्होंने खुद भी पूरा जज़ीरा नहीं देखा है। यहां एक ऐसा पहाड़ है जिस पर कोई नहीं चढ़ सका, ऐसी वादियां हैं जहां कोई नहीं जाना पसंद करता, और ऐसे ग़ार हैं जिनमें आज तक कोई दाख़िल नहीं हो सका। अलगरज़ उनका मंशा था कि हम लोगों को आफ़ताब (सूरज) के इंतज़ार में हमेशा ख़ानक़ाह के ज़ेरे-साया (छाया में) बैठे रहना मुनासिब नहीं। इसलिए वह हमको साहिल तक लाना चाहते थे। वह वहां तनहा गये हैं।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी : उनका कहना सही है। हमको ज़िंदगी का ख़याल रखना चाहिए।

पहला नाबीना : लेकिन यहां मैदान में देखने के क़ाबिल कोई चीज़ नहीं है।

दूसरा नाबीना : क्या हम इस वक़्त धूप में हैं?

तीसरा नाबीना : क्या आफ़ताब अभी तक निकला हुआ है?

छठवां नाबीना : मेरा ख़याल है कि अब नहीं है। मालूम होता है कि रात

ज़्यादा गयी।

दूसरा नाबीना : क्या बजे हैं?

और सबके सब : कोई नहीं जानता।

दूसरा अंधा : क्या अभी तक रोशनी है? **(छठवें नाबीना से)** तुम कहां हो? हमें तो कुछ-कुछ सुझायी देता है। यहां आओ।

छठवां नाबीना : मेरे ख़याल में इस वक्त खूब अंधेरा है। जब धूप होती है तो मुझे पलकों के नीचे एक नीली लकीर-सी नज़र आती है। बहुत अर्सा गुज़रा मैंने ऐसी लकीर देखी थी लेकिन अब मुझे मुतलक़ दिखायी नहीं देता।

पहला नाबीना : और मुझे तो देर होने की ख़बर उस वक्त होती है, जब मुझे भूख लगती है, और इस वक़्त मैं भूखा हूं।

तीसरा नाबीना : लेकिन आसमान की तरफ तो देखो, शायद कुछ नज़र आये।

(सबके सब आसमान की तरफ़ सर उठाते हैं, उन तीनों को छोड़कर जो मादरज़ाद (जनम से) **अंधे थे, जो ज़मीन की तरफ़ ताकते रहते हैं।)**

छठवां नाबीना : मुझे नहीं मालूम होता कि हम लोग बिल्कुल आसमान के नीचे हैं।

पहला नाबीना : हमारी आवाज़ें इस तरह गूंज रही हैं गोया वह किसी ग़ार (गहरे खड्ड) में हों।

सबसे बुड्ढा नाबीना : मेरा तो ख़याल है कि उनके गूंजने का सबब शाम का वक़्त है।

नौजवान अंधी औरत : मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मेरे हाथो पर चांदनी फैली हुई है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : मेरा ख़याल है कि सितारे निकले हैं। मैं उन्हें सुन रही हूं।

नौजवान अंधी औरत : मैं भी सुन रही हूं।

पहला नाबीना : मुझे तो कोई आवाज़ नहीं सुनायी देती।

दूसरा नाबीना : मुझे तो अपने सांस लेने की आवाज़ सुनायी दे रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : मेरा ख़याल है कि औरतें सही कहती हैं।

पहला नाबीना : मैंने कभी सितारों की आवाज़ नहीं सुनी।

दूसरे और तीसरे अंधे आदमी : हमने भी नहीं सुनी।

(तायराने-शब (रात की चिड़ियां) **का एक ग़ोल दफ़अतन्** (अचानक) **पत्तियों पर उतरता है।)**

दूसरा नाबीना : सुनो! सुनो! यह ऊपर क्या है? सुन रहे हो?

सबसे बुड्ढा नाबीना : हमारे और आसमान के बीच से कोई चीज़ गुज़र गयी।

छठवां नाबीना : हमारे बालाए-सर (सर के ऊपर) कोई चीज़ हरकत कर रही है लेकिन हम उसे पा नहीं सकते।

पहला नाबीना : इस आवाज़ की हक़ीक़त मेरी समझ में नहीं आती। मैं ख़ानक़ाह की तरफ़ लौटना चाहता हूं।
दूसरा नाबीना : हम यह जानना चाहते हैं कि हम कहां हैं?
छठवां नाबीना : मैंने खड़े होने की कोशिश की। हमारे चारों तरफ कांटे ही कांटे हैं, और कुछ नहीं। अब मैं अपने हाथ भी फैलाने की जुरअत नहीं कर सकता।
तीसरा नाबीना : मालूम नहीं हम कहां हैं?
सबसे बुड्ढा नाबीना : हम इसे नहीं जान सकते।
छठवां नाबीना : हम ख़ानक़ाह से बहुत दूर हैं। मुझे वहां की कोई आवाज़ नहीं सुनायी देती।
तीसरा नाबीना : बहुत अर्से से मुझे सूखी पत्तियों की बू आ रही है।
छठवां नाबीना : हममें से किसी ने इस जज़ीरे को ज़मानए-गुज़िश्ता (गुज रे ज माने) में देखा है और वह बतला सकता है कि हम कहां हैं?
सबसे बुड्ढी अंधी औरत : जब यहां आये तो हम सबके सब अंधे थे।
पहला नाबीना : हमें कभी कुछ दिखायी ही नहीं दिया।
दूसरा नाबीना : हमें ख़ामख़ाह परेशान होने की क्या ज़रूरत है। वह जल्द वापस आयेंगे। ज़रा देर और उनका इंतज़ार करो, लेकिन आइंदा से हम फिर उनके साथ न आयेंगे।
सबसे बुड्ढा नाबीना : हम अकेले घूमने नहीं निकल सकते।
पहला नाबीना : हम निकलेंगे ही न। मुझे घूमना पसंद नहीं।
दूसरा नाबीना : हमारी बाहर आने की ख़्वाहिश नहीं थी, किसी ने उनसे यह दर्ख़्वास्त नहीं की।
सबसे बुड्ढी अंधी औरत : जज़ीरे में यह तातील का दिन है। तातीलों में हम सब सैर करने निकलते हैं।
तीसरी अंधी औरत : मैं सो ही रही थी कि उन्होंने आकर मेरे कंधे को हिलाया और कहा, उठो-उठो, वक़्त आ गया, धूप निकली हुई है। क्या धूप निकली हुई थी? मुझे इसकी ख़बर नहीं। मैंने कभी धूप नहीं देखी।
सबसे बुड्ढा नाबीना : मैं बहुत छोटा था तब मैंने धूप देखी थी।
सबसे बुड्ढी अंधी औरत : मैंने भी, बहुत दिन हुए जब मैं बहुत छोटी थी लेकिन अब बिल्कुल याद नहीं।
तीसरा नाबीना : हर बार जब धूप निकलती है तो वह क्यों हमें बाहर लाते हैं? क्या हम इससे कुछ ज्यादा अक्लमंद हो जाते हैं? मुझे तो बिल्कुल मालूम नहीं होता कि रात है या दिन?
छठवां नाबीना : मुझे दोपहर के वक़्त घूमना अच्छा मालूम होता है। मुझे उस वक़्त बहुत चमक महसूस होती है और मेरी आंखें खुलने की कोशिश करती हैं।

तीसरा नाबीना : मुझे तो अपनी ख़्वाबगाह (शयनगृह) में कोयले के सामने बैठना ज़्यादा पसंद है। आज सुबह खूब आग रौशन थी।

दूसरा नाबीना : वह हमें धूप खिलाने के लिए सहन में ला सकते थे। वहां दीवारों की हिफ़ाज़त में तो रहते। जब दरवाज़ा बंद रहता है तो कोई खौफ़ नहीं मालूम होता। मैं हमेशा दरवाज़ा बंद कर दिया करता हूं। तुमने मेरी कुहनी क्यों छुई?

पहला नाबीना : मैंने नहीं छुई। मैं तुमसे बहुत दूर हूं।

दूसरा नाबीना : मैं सच कहता हूं कि किसी ने मेरी कुहनी छुई है।

पहला नाबीना : हममें से किसी ने नहीं छुई।

दूसरा नाबीना : मैं यहां से जाना चाहता हूं।

सबसे बुढ्ढी अंधी औरत : या खुदा! खुदा! हम कहां हैं?

पहला नाबीना : हम यहां हमेशा नहीं बैठे रह सकते।

(किसी दूर की घड़ी में आहिस्ता-आहिस्ता बारह बजते हैं।)

सबसे बुढ्ढी अंधी औरत : उफ़! हम लोग ख़ानक़ाह से कितनी दूर निकल आये हैं।

सबसे बुढ्ढा नाबीना : आधी रात हो गयी।

दूसरा नाबीना : दोपहर है। कोई जानता है? बोलो।

छठवां नाबीना : मुझे मालूम नहीं लेकिन मैं ख़याल करता हूं कि हम लोग साये में हैं।

पहला नाबीना : मुझे कुछ नहीं मालूम होता। मैं बहुत देर तक सो गया।

दूसरा नाबीना : मुझे भूख लगी हुई है।

और सबके सब : हम भी भूखे और प्यासे हैं।

दूसरा नाबीना : क्या हमें यहां आये हुए देर हुई?

सबसे बुढ्ढी अंधी औरत : मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि मैं यहां सदियों से हूं।

छठवां नाबीना : मुझे कुछ-कुछ मालूम हो रहा है कि हम कहां हैं।

तीसरा नाबीना : हमें उस तरफ़ जाना चाहिए जिधर से बारह बजने की आवाज़ आयी है।

(तायराने शब यकायक तारीकी (अंधेरे) में शोर करने लगते हैं।)

पहला नाबीना : तुम लोग सुनते हो? सुनते हो?

दूसरा नाबीना : यहां हमारे सिवाय कोई और भी है?

तीसरा नाबीना : मुझे बहुत देर से इसका शुबहा है। कोई हमारी बातें सुन रहा है। क्या वह लौट आये?

पहला नाबीना : मालूम नहीं क्या है। यह हमारे ऊपर है।

दूसरा नाबीना : क्या दूसरों ने कुछ नहीं सुना? तुम लोग हमेशा ख़ामोश रहते हो।

सबसे बुढ्ढा नाबीना : हम तो अभी तक सुन रहे हैं।

नौजवान अंधी औरत : मुझे अपने ईद-गिर्द हर दिन की आवाज़ आ रही है।

सबसे बुढ्ढी अंधी औरत : ऐ ख़ुदा! ऐ ख़ुदा! हम कहां हैं?

छठवां नाबीना : मुझे कुछ-कुछ मालूम हो रहा है कि हम कहां हैं। ख़ानक़ाह इस बड़ी नदी के उस पार है। हम पुराने पुल से होकर आये हैं। महात्मा जी हमको जज़ीरे के शुमाल में लाये हैं। हम नदी से दूर नहीं हैं। अगर हम एक लमहा ग़ौर से सुनें तो उसकी आवाज़ भी शायद सुनायी दे। अगर महात्मा जी न लौटेंगे तो हमको पानी के किनारे तक जाना पड़ेगा। वहां शबोरोज (दिन-रात) बड़े-बड़े जहाज़ आते-जाते रहते हैं। जहाज़ों के मल्लाह हमें किनारे पर खड़े देख लेंगे। यह भी मुमकिन है कि हम उस जंगल में हों जो रोशनी के मीनार को घेरे हुए है। लेकिन मुझे बाहर निकलने का रास्ता नहीं मालूम है। कोई मेरे साथ चलने पर तैयार है?

पहला नाबीना : चुपचाप बैठे रहो। उनका इंतज़ार किये जाओ। हमें बड़ी नदी का रास्ता नहीं मालूम है, और खानक़ाह के चारों तरफ़ दलदल है। बस उनका इंतज़ार करना चाहिए। वह आयेंगे, ज़रूर आयेंगे।

छठवां नाबीना : कोई जानता है कि हम किस रास्ते से आये हैं? जब हम आ रहे थे तो उन्होंने हमें समझाया था।

पहला नाबीना : मैंने बिल्कुल ध्यान नहीं दिया।

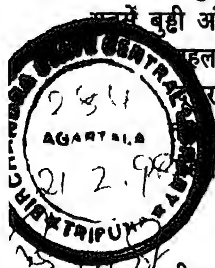
छठवां नाबीना : क्या और किसी ने ध्यान से सुना था?

तीसरा नाबीना : आइंदा हमको उनकी बातों को ग़ौर से सुनना चाहिए।

छठवां नाबीना : क्या हममें से किसी की पैदाइश इस जज़ीरे में हुई है?

सबसे बुड्ढा आदमी : तुम्हें खूब मालूम है कि हम सब यहां दूसरी जगह से आये हैं।

सबसे बुढ्ढी अंधी औरत : हम समुंदर के उस पार से आये हैं।



पहला नाबीना : मुझे अंदेशा होता था कि समुंदर तै करते-करते मर न जाऊं।

...रा नाबीना : मुझे भी। हम साथ-साथ आये थे।

...ा नाबीना : हम तीनों एक ही महाल से आये।

...ा नाबीना : लोग कहते हैं कि हमारा गांव शुमाल की तरफ़ यहां से नज़र आता है, बशर्ते कि आसमान साफ़ हो। उसमें कोई मीनार नहीं है।

तीसरा नाबीना : हम इत्तफ़ाक से यहां उतर पड़े।

सबसे बुढ्ढी अंधी औरत : मैं दूसरी तरफ़ से आयी हूं।

दूसरा नाबीना : तुम कहां से आयी हो?

सबसे बुढ्ढी अंधी औरत : मुझे अब इसका ख़याल करते हुए ख़ौफ़ मालूम होता है। मुझे अब उसकी याद नहीं रही। बहुत दिन गुज़र गये। वहां यहां से ज़्यादा सर्दी पड़ती थी।

नौजवान अंधी औरत : मैं भी बहुत दूर से आयी हूं।

पहला नाबीना : आख़िर तुम कहां से आयी हो?

नौजवान अंधी औरत : यह बतलाना बहुत मुश्किल है। में उसे क्योंकर बयान कर सकती हूं। वह यहां से निहायत दूर है, समुंदरों के उस पार। वह बहुत बड़ा मुल्क है। मैं सिर्फ इशारों से उसका हाल बता सकती हूं लेकिन आंखें तो हैं ही नहीं। मैं बहुत दिनों तक भटकती फिरी हूं लेकिन मैंने सूरज और आग और पानी और पहाड़ और लोगों के चेहरे और अजीब क़िस्म के फूल, सब देखे हैं। वैसे फूल इस जज़ीरे में नहीं हैं। यह तो बिल्कुल वीरान, सुनसान और ठंडा है। जब से मेरी निगाह जाती रही है, मुझे फिर बू का एहसास नहीं हुआ। लेकिन मैंने अपने वाल्दैन (मां-बाप) और बहनों को देखा है। मैं उस वक़्त बहुत छोटी थी और बिल्कुल न जानती थी कि कहां हूं। मैं उस वक़्त तक समुंदर के किनारे खेला करती थी....ताहम आंखों से देखने की याद अब भी खूब है....एक दिन मैंने पहाड़ की चोटी पर से बर्फ़ की तरफ़ देखा....उन्हीं दिनों मुझे उन लोगों की पहचान होने लगी थी जो ग़मनसीब होने वाले हैं।

पहला नाबीना : तुम्हारा मतलब क्या है?

नौजवान अंधी औरत : मैं अब भी कभी-कभी ऐसे आदमियों को उनकी आवाज़ से पहचान सकती हूं...मेरे दिल में ऐसी यादें हैं जो ज़्यादा रौशन हो जाती हैं अगर मुझे उनका ध्यान न हो।

पहला नाबीना : मुझे कुछ याद नहीं....मैं....

(बड़ी-बड़ी चिड़ियों का एक ग़ोल शोर मचाता हुआ पत्तियों के ऊपर से गुज़रता है।)

सबसे बुड्ढा नाबीना : फिर आसमान के नीचे कोई चीज़ गुज़र रही है।

दूसरा नाबीना : तुम यहां क्यों आयीं?

सबसे बुड्ढा नाबीना : किससे पूछ रहे हो?

दूसरा नाबीना : अपनी नौजवान साथिन से।

नौजवान अंधी औरत : लोगों ने मुझसे कहा कि महात्मा जी मुझे अच्छा कर सकते हैं। वह कहते हैं कि एक दिन मेरी आंखें ज़रूर खुलेंगी। तब मैं इस जज़ीरे से चली जाऊंगी।

पहला नाबीना : इस जज़ीरे को तो सब तर्क (छोड़ना) करना चाहते हैं।

दूसरा नाबीना : क्या हम यहां हमेशा पड़े रहेंगे?

तीसरा नाबीना : महात्मा जी बहुत बुड्ढे हो गये हैं। उन्हें हम लोगों को अच्छा करने के लिए अब वक्त नहीं है।

नौजवान अंधी औरत : मेरी पलकें बंद हैं लेकिन मुझे मालूम होता है कि मेरी आंखों में बीनाई है।

पहला नाबीना : मेरी आंखें तो खुली हुई हैं....

दूसरा नाबीना : मैं सोता हूं तब भी आंखें खुली रहती हैं।

तीसरा नाबीना : आंखों का ज़िक्र छोड़ो।

सबसे बुड्ढा नाबीना : एक रोज़ शाम को दुआ करते वक़्त मुझे औरतों की तरफ़ से एक ऐसी आवाज़ सुनायी दी कि जिसे मैं पहचान न सका। तुम्हारी आवाज से मालूम हो जाता है कि तुम नौजवान हो...मैं तुम्हारी आवाज़ सुनकर मैं तुम्हें देखना चाहता था...

पहला नाबीना : मुझे कभी इसका इल्म नहीं हुआ।

दूसरा नाबीना : वह हमें कुछ बतलाते ही नहीं।

छठवां नाबीना : लोग कहते हैं कि तुम खूबसूरत हो, जैसे कोई औरत जो बहुत दूर से आयी हो।

नौजवान अंधी औरत : मैंने अपने तईं खुद कभी नहीं देखा।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी : हमने कभी एक दूसरे को नहीं देखा। हम तो आपस में सवाल करते हैं, जवाब देते हैं, साथ रहते हैं, साथ चलते-फिरते हैं, लेकिन बिल्कुल नहीं जानते कि हम क्या हैं। एक दूसरे को दोनों हाथों से छू लेने से क्या होता है। आंखें हाथों से ज़्यादा बाख़बर होती हैं....

छठवां नाबीना : जब तुम लोग धूप में निकलते हो तो कभी-कभी मुझे तुम्हारा साया दिखायी देता है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : हमने उस घर को नहीं देखा जिसमें रहते हैं। दीवारों और खिड़कियों को हाथ से छूने से क्या होता है। हम बिल्कुल नहीं जानते कि हम कहां रहते हैं।....

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : लोग कहते हैं कि यह एक बिल्कुल तारीक, शिकस्ता, पुराना क़िला है। इस बुर्ज के सिवा जिसमें साधू जी रहते हैं वहां कभी रौशनी नज़र नहीं आती।

पहला नाबीना : जिनके आंखें नहीं हैं उन्हें रौशनी की क्या ज़रूरत है?

छठवां नाबीना : जब मैं ख़ानक़ाह के आसपास भेड़ें चराता हूं तो शाम के वक़्त वह बुर्ज की रौशनी देखकर आप ही आप घर पहुंच जाती हैं। उन्होंने मुझे कभी नहीं भटकाया।

सबसे बुड्ढा नाबीना : हमें साथ रहते मुद्दतें गुज़र गईं, लेकिन हमने एक दूसरे को कभी नहीं देखा, गोया हम हमेशा तनहा रहते हैं। बिला देखे मुहब्बत नहीं पैदा होती....

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : मुझे कभी-कभी ख़्वाब में मालूम होता है कि मैं देख सकती हूं।

सबसे बुड्ढा अंधा : मुझे सिर्फ़ सपने ही में दिखायी देता है।

पहला नाबीना : मैं अक्सर आधी रात को ख़्वाब देखता हूं।

दूसरा नाबीना : जब हाथों में हरकत ही नहीं होती तो इंसान किस चीज़ का ख़्वाब देख सकता है?

(एक तूफ़ान जंगल को हिला देता है और पत्तियां झड़ने लगती हैं।)

पांचवां नाबीना : किसने मेरे हाथ छुए?

पहला नाबीना : हमारे चारों तरफ़ कोई चीज़ गिर रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : ऊपर से आ रही है। मालूम नहीं क्या है....

पांचवां नाबीना : किसने मेरे हाथ छुए। मैं सो रहा था। मुझे खूब सोने दो।

सबसे बुड्ढा नाबीना : किसी ने तुम्हारे हाथ नहीं छुए।

पांचवां नाबीना : किसने मेरे हाथ पकड़े थे? ज़ोर से बोलो। मैं ज़रा ऊंचा सुनता हूं।

सबसे बुड्ढा नाबीना : हमको खुद नहीं मालूम।

पांचवां नाबीना : क्या कोई हमें ख़बरदार करने आया है?

पहला नाबीना : इसको जवाब देना फ़िज़ूल है। उसे कुछ सुनायी नहीं देता।

तीसरा नाबीना : यह मानना पड़ेगा कि बहरे बड़े बदनसीब होते हैं।

सबसे बुड्ढा नाबीना : मैं बैठे-बैठे थक गया।

छठवां नाबीना : मैं यहां रहते-रहते थक गया।

दूसरा नाबीना : मुझे ऐसा मालूम होता है कि हम लोग बहुत दूर बैठे हुए हैं। आओ ज़रा और क़रीब आ जायें....ठंड पड़ने लगी।

तीसरा नाबीना : मुझे खड़े होते डर मालूम होता है। जहां बैठे हो वहीं बैठे रहो।

सबसे बुड्ढा नाबीना : मालूम नहीं हम लोगों के बीच में क्या हो।

छठवां नाबीना : मेरे दोनों हाथों से खून निकलता हुआ मालूम होता है। मैं खड़ा होना चाहता था।

तीसरा नाबीना : आवाज़ से ऐसा मालूम होता है कि तुम मेरी तरफ़ झुके हुए हो।

(अंधी पगली औरत ज़ोर से अपनी आंखें मलती है और कराहते हुए बार-बार बेजान साधू की तरफ़ सर फेरती है।)

पांचवां नाबीना : मुझे अब दूसरा शोर सुनायी देता है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : मेरे ख़याल में हमारी पगली बहन आंखें मल रही है।

दूसरा नाबीना : बस, वह भी क्या करती है, मैं रोज़ रात को सुना करता हूं।

तीसरा नाबीना : वह पगली से कुछ नहीं बोलती।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : जब से बच्चा पैदा हुआ वह एक बार भी नहीं बोली। मालूम होता है वह डरती है....

सबसे बुड्ढा नाबीना : तो क्या तुम लोगों को यहां डर नहीं लगता?

पहला नाबीना : किसको ?

सबसे बुड्ढा नाबीना : बाक़ी बाहम सब लोगों को।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : हां, हम सब यहां डरते हैं।

नौजवान अंधी औरत : हम बहुत दिनों से डर रहे हैं।

पहला नाबीना : तुम यह क्यों पूछते हो?

सबसे बुड्ढा नाबीना : मैं खुद नहीं जानता कि क्यों पूछता हूं...कोई बात ऐसी है जो मेरे ज़ेहन में नहीं आती....ऐसा मालूम होता है कि मेरे कानों में यकायक किसी के रोने की आवाज़ आयी....

पहला नाबीना : डरने से क्या होता है। शायद पगली औरत रोती है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : नहीं, इसके अलावा कुछ और है....यक़ीनन कुछ और है.... सिर्फ उसके रोने से मुझे खौफ़ नहीं मालूम होता।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वह जब अपने बच्चे को दूध पिलाने लगती है तो हमेशा रोती है।

पहला नाबीना : सिर्फ़ वही इस तरह रोती है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : लोग कहते हैं कि अब भी कभी-कभी उसे दिखायी देता

पहला नाबीना : हम किसी का रोना नहीं सुनते।

सबसे बुड्ढा नाबीना : रोने के लिए देखना ज़रूरी है।

नौजवान अंधी औरत : मुझे यहां कहीं से फूलों की महक आयी है।

पहला नाबीना : मुझे तो सिर्फ़ मिट्टी की बू आती है।

नौजवान अंधी औरत : हमारे क़रीब फूल हैं, फूल हैं।

दूसरा नाबीना : मुझे तो सिर्फ़ मिट्टी की बू आती है।

नौजवान अंधी औरत : मुझे अभी हवा में फूलों की खुशबू आयी।

तीसरा नाबीना : मुझे तो सिर्फ़ मिट्टी की बू आ रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : मेरा ख़याल है कि औरतें सही कहती हैं।

छठवां नाबीना : फूल कहां हैं? मैं जाकर चुनूंगा।

नौजवान अंधी औरत : खड़े हो जाओ, तुम्हारे दायीं तरफ़ हैं।

(छठवां अंधा आहिस्ता-आहिस्ता खड़ा होता है और दरख़्तों और झाड़ियों में उलझता हुआ नर्गिसों की तरफ जाता है जिन्हें वह पैरों से कुचल डालता है।)

नौजवान अंधी औरत : मुझे सुनायी देता है कि तुम हरी डालियों को तोड़े डालते हो। ठहरो, ठहरो।

पहला नाबीना : फूलो की फ़िक्र मत करो, सोचो कि क्योंकर लौटोगे।

छठवां नाबीना : अब मैं अपने क़दमों को फेरने की जुरअत नहीं कर सकता।

नौजवान अंधी औरत : हरगिज़ मत आना। ठहरो **(वह उठती है)** आह! ज़मीन कितनी सर्द है! शायद बर्फ़ गिरेगी। **(वह बेधड़क ज़र्द नर्गिसों की तरफ़ जाती है लेकिन गिरे हुए दरख़्त और चट्टान रास्ते में हायल हो जाते हैं।)** वह यहां हैं, लेकिन मैं

उन्हें नहीं पा सकती। वह तुम्हारी तरफ़ हैं।

छठवां नाबीना : मैं समझता हूं कि फूलों को चुन रहा हूं।

(इधर-उधर टटोलकर वह बचे हुए फूलों को तोड़ लेता है और नौजवान अंधी औरत को दे देता है। तायराने शब उड़ जाते हैं।)

नौजवान अंधी औरत : मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैंने कभी इन फूलों को देखा है....मैं इनका नाम भूल गयी हूं....लेकिन यह कितने बदनुमा हैं और उनकी डंठल कितनी कमज़ोर! मैं उन्हें बमुशकिल पहचान सकती हूं।....मेरा ख़याल है कि यह मज़ार के फूल हैं....**(वह नर्गिसों को अपने बालों में गूंध लेती है।)**

सबसे बुड्ढा नाबीना : मुझे तुम्हारे बालों की आवाज़ सुनायी देती है।

नौजवान अंधी औरत : यह फूलों की आवाज़ है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : हम तुम्हें न देखेंगे!

नौजवान अंधी औरत : मैं खुद अपने तईं न देखूंगी....मुझे सर्दी लग रही है!

(उसी वक़्त हवा जंगल में ज़ोर से चलने लगती है और समुंदर यकायक मुत्तसिल (पास के) **पहाड़ों से टकराकर मुहीब** (भयानक) **आवाज़ से गरजता है।)**

पहला नाबीना : बादल गरज रहा है!

दूसरा नाबीना : मेरा ख़याल है कि तूफ़ान आ रहा है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : शायद समुंदर की आवाज़ है।

तीसरा नाबीना : क्या समुंदर? यह समुंदर की आवाज़ है? लेकिन यह तो हमसे दो ही क़दम के फ़ासले पर मालूम होती है! बिल्कुल हमारे पास! चारों तरफ़ यही आवाज़ आ रही है! यह कुछ और होगा!

नौजवान अंधी औरत : मैं लहरों की आवाज़ अपने पैरों के पास सुन रही हूं।

पहला नाबीना : मेरे ख़याल में हवा सूखी पत्तियों को खड़खड़ा रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : मैं समझता हूं कि औरतें सही कहती हैं।

तीसरा नाबीना : तब तो वह यहां आता होगा।

पहला नाबीना : हवा कहां से आती है?

दूसरा नाबीना : समुंदर से।

सबसे बुड्ढा नाबीना : हवा हमेशा समुंदर की तरफ़ से आती है। समुंदर हमें चारों तरफ़ से घेरे हुए है। वह किसी दूसरी तरफ़ से नहीं आ सकती।

पहला नाबीना : भई, समुंदर का ख़याल मत करो।

दूसरा नाबीना : यह क्योंकर मुमकिन है। वह तो ज़रा देर में हमारे पास आ जायेगा!

पहला नाबीना : तुम्हें क्या मालूम कि यह समुंदर की ही आवाज़ है।

दूसरा नाबीना : मुझे उसकी लहरें ऐसी क़रीब मालूम होती हैं कि मैं उसमें

अपने हाथ डुबा सकता हूं। हम यहां नहीं ठहर सकते। कहीं वह हमें चारों तरफ़ से घेर न ले।

सबसे बुड्ढा नाबीना : तुम्हें कहां जाना चाहते हो?

दूसरा नाबीना : इसकी कुछ परवाह नहीं, इसकी कुछ परवाह नहीं। अब पानी की यह गरज नहीं सुन सकता। यहां से भाग चलो, चलो!

तीसरा नाबीना : मुझे ऐसा मालूम होता है कि कोई और आवाज़ भी है। कान लगाओ। **(तेज़ और दूर के क़दमों की आवाज़ सूखी पत्तियों में सुनायी देती है।)**

पहला नाबीना : कोई चीज़ हमारी तरफ़ आ रही है!

दूसरा नाबीना : साधू जी हैं। साधू जी हैं! वह वापस आ रहे हैं।

तीसरा नाबीना : वह छोटे-छोटे क़दम रख रहे हैं, बिल्कुल एक छोटे बच्चे की तरह....

दूसरा नाबीना : आज उन्हें कुछ बुरा-भला मत कहना!

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : मेरे ख़याल में यह आदमी के क़दम नहीं है।
(एक बड़ा कुत्ता जंगल में आता है और उनके सामने से गुज़रता है। सन्नाटा है।)

पहला नाबीना : यह कौन है? अरे तुम कौन हो? हमारे ऊपर रहम करो, हम बहुत देर से बैठे हुए हैं....**(कुत्ता रुक जाता है और लौटकर अपने अगले पंजे को पहले नाबीना की घुटनियों पर रख देता है।)** अरे! आह! तुमने मेरी घुटनियों पर क्या रख दिया? यह क्या है? अरे, यह तो कोई जानवर है! कुत्ता मालूम होता है....हां, हां कुत्ता ही है। यह हमारी ख़ानक़ाह का कुत्ता है। इधर आओ, इधर आओ। हमें रास्ता दिखाने आया है। इधर आ, इधर आ!

पहला नाबीना : यह हमें रास्ता दिखाने आया है। हमारे पैरों के निशान देखता चला आया है। यह मेरे हाथ चाट रहा है, गोया मुझे सदियों के बाद देखा है। खुशी के मारे गुर्रा रहा है, खुशी के मारे मर न जाये! सुनो, कान लगाओ!

और सबके सब : इधर आ! इधर आ!

सबसे बुड्ढा नाबीना : शायद वह किसी आदमी के आगे-आगे आया है....

पहला नाबीना : नहीं, नहीं बिल्कुल अकेला आया है। मुझे और किसी के आने की आहट नहीं मिलती। अब हमें किसी दूसरे मालिक की ज़रूरत नहीं। इससे अच्छा और कौन होगा। हम जहां जायेंगे वहीं ले जायगा, हमारा हुक्म मानेगा...

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : मैं इसके साथ नहीं जा सकती।

नौजवान अंधी औरत : मैं भी नहीं जा सकती।

पहला नाबीना : क्यों? हमारी निगाह से इसकी निगाह बेहतर है।

दूसरा नाबीना : इन औरतों को बकने दो।

तीसरा नाबीना : मेरा ख़याल है कि आसमान में कुछ तग़ैयुर (परिवर्तन) हो गया है। हवा अब साफ़ है....मैं खूब सांस ले सकता हूं।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : समुंदरी हवा हमारे चारों तरफ़ चल रही है।

छठवां नाबीना : मुझे ऐसा मालूम होता है कि रौशनी आ रही है। शायद आफ़ताब निकल रहा है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : मेरा ख़याल है कि सर्दी पड़ने वाली है।

पहला नाबीना : अब हमें रास्ता मिल जायेगा। कुत्ता मुझे खींच रहा है। वह खुशी से फूला नहीं समाता। मैं अब उसे रोक नहीं सकता। चलो, हमारे साथ चलो। हम लोग घर जा रहे हैं....**(कुत्ता उसे खींचकर बेजान साधू के पास ले जाता है और वहां रुक जाता है।)**

और सबके सब : तुम कहां हो?....कहां जा रहे हो?....होशियार रहना।

पहला नाबीना : ठहरो-ठहरो, अभी मेरे साथ मत आओ। मैं लौटा जाता हूं....साधू जी खामोश खड़े हैं....अरे यह क्या है....मुझे कोई बहुत ठंडी चीज़ महसूस हुई....

दूसरा नाबीना : तुम क्या कह रहे हो? मुझे अब तुम्हारी आवाज़ नहीं सुनायी देती।

पहला नाबीना : मैंने....शायद मेरा हाथ किसी के चेहरे पर पड़ा है....

तीसरा नाबीना : तुम क्या कह रहे हो! तुम्हारी बातें अब मुश्किल से समझ में आती हैं। तुम्हें क्या हो गया है? तुम कहां हो? क्या इतनी जल्द तुम हमसे इतनी दूर निकल गये?

पहला नाबीना : अरे अरे....कुछ समझ में नहीं आता कि यह क्या है...हमारे पास एक मुर्दा आदमी पड़ा हुआ है।

और सबके सब : क्या मुर्दा आदमी? तुम कहां हो? तुम कहां हो?

पहला नाबीना : मैं तुमसे सच कहता हूं। हमारे बीच में एक मुर्दा आदमी है....अरे....मैंने एक मुर्दा चेहरा छू लिया....तुम सब एक मुर्दे के पास बैठे हो....हममें से कोई यकायक मर गया....लेकिन बोलो....सबके सब बोलो ताकि मालूम हो कि हममें कौन-कौन से आदमी ज़िन्दा हैं!

(पगली औरत और बहरे मर्द के सिवा और सब बारी-बारी से जवाब देते हैं। तीनों बुड्ढी औरतों ने दुआ करना बंद कर दिया है।)

पहला नाबीना : मैं अब तुम्हारी आवाज़ों को नहीं पहचान सकता....तुम्हारी आवाज़ एक ही सी है....सबके सब कांप रहे हो।

तीसरा नाबीना : दो आदमियों ने जवाब नहीं दिया। वह कहां गये?

(वह अपनी छड़ी से पांचवें अंधे को छूता है।)

पांचवां नाबीना अरे अरे! मैं सो रहा था, मुझे सोने दो।

छठवां नाबीना बहरा तो नहीं मरा। क्या पगली तो नहीं मर गयी?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत वह मेरे क़रीब बैठी हुई है। मैं उसका सांस लेना सुन रही हूं।

पहला नाबीना मेरा ख़याल है....मेरा ख़याल है कि यह साधू जी हैं। वह खड़े हैं। आओ आओ।

दूसरा नाबीना क्या वह खड़े हैं?

तीसरा नाबीना तब वह मरे नहीं हैं।

सबसे बुड्ढा नाबीना कहां हैं?

छठवां नाबीना आकर देखो।

(पगली औरत और बहरे अंधे के सिवा सब उठते हैं और टटोलते हुए मुर्दे की तरफ़ जाते हैं।)

दूसरा नाबीना : क्या यही है? यही?

तीसरा नाबीना : हां, हां, मैं उन्हें पहचानता हूं।

पहला नाबीना : या खुदा, या खुदा, हमारा क्या हाल होगा!

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : स्वामी जी! क्या यह तुम्हीं हो? तुम्हें क्या हो गया है? हमारी बातों का कुछ जवाब दो। हम सब तुम्हारे पास जमा हैं। हाय! हाय!

सबसे बुड्ढा नाबीना : थोड़ा-सा पानी लाओ। शायद अभी कुछ जान है।

छठवां नाबीना : हां, उन्हें बचाना चाहिए....ग़ालिबन् वह हमें ख़ानक़ाह तक पहुंचाने के क़ाबिल हो जायेंगे।

तीसरा नाबीना : बिल्कुल बेकार....मुझे उनके दिल की आवाज़ नहीं सुनायी देती....बिल्कुल ठंडे हो गये।

पहला नाबीना : एक लफ़्ज भी न बोले....

तीसरा नाबीना : उन्हें लाज़िम था कि हमें जता देते।

दूसरा नाबीना : हाय, वह कितने बुड्ढे हो गये थे। मैंने अबकी पहली बार उनका चेहरा छुआ है....

तीसरा नाबीना : **(लाश को टटोलकर)** हम लोगों से लंबे हैं!

दूसरा नाबीना : इनकी आंखें खुली हुई हैं। हाथ बांधे हुए मरे हैं।

पहला नाबीना : उनके इस तरह मरने की कोई वजह नहीं थी....

दूसरा नाबीना : वह खड़े नहीं हैं। एक पत्थर पर बैठे हैं....

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : या खुदा !....मुझे यह सब न मालूम था....न मालूम था....वह इतने दिनों से बीमार थे....आज उन्हें बहुत तकलीफ़ हुई होगी....हाय-हाय! वह कभी शिकायत का एक हर्फ़ ज़बान पर नहीं लाये....सिर्फ़ हमारे हाथों को दबाकर अपना दर्देदिल ज़ाहिर किया....इंसान हमेशा इन बातों को नहीं समझता....कभी नहीं समझता....आओ मिलकर उनके लिए दुआए खैर

(मंगलकामना की प्रार्थना) करें।

(औरतें घुटनों के बल बैठकर कराहती हैं।)

पहला नाबीना मुझे झुकते हुए डर मालूम होता है....

दूसरा नाबीना क्या मालूम किस चीज़ पर घुटने पड़ें....

तीसरा नाबीना क्या वह बीमार थे। हमसे कभी नहीं बतलाया!

दूसरा नाबीना जाते वक़्त वह कुछ आहिस्ता-आहिस्ता कह रहे थे। शायद हमारी नौजवान बहन से कुछ कह रहे थे। क्या, उन्होंने क्या कहा?

पहला नाबीना वह जवाब न देंगी।

दूसरा नाबीना क्या अब तुम हमारी बातों का जवाब न दोगी? तुम कहां हो, बोलो!

सबसे बुढ्ढी औरत तुम लोगों ने उन्हें बहुत परीशान किया। तुम्हीं ने उन्हें मारा है। तुम आगे नहीं बढ़ते थे। तुम सड़क के किनारे पत्थरों पर बैठकर खाना चाहते थे। तुम सारे दिन भुनभुनाया करते थे। मैंने उन्हें आहें खींचते हुए सुना है....आखिर वह मायूस हो गये....

सबसे बुढ्ढी हमें कुछ नहीं मालूम था। हमने उनकी सूरत कभी नहीं देखी....हम इन फूटी आंखों वे क्या देख सकते हैं! उन्होंने कभी किसी का गिला नहीं किया....अब मौक़ा निकल गया....मैंने तीन आदमियों को मरते देखा....लेकिन इस तरह कोई नहीं मरा....अब हमारी बारी है....

पहला नाबीना मैंने उन्हें हरगिज़ नहीं परीशान किया....मैंने कभी कुछ नहीं कहा।

दूसरा नाबीना न मैंने ही। हम बेउज्र उनका हुक्म मानते थे।

तीसरा नाबीना वह पगली के वास्ते पानी लाने जा रहे थे, वहीं मर गये।

पहला नाबीना अब हम क्या करें। कहां जायें!

तीसरा नाबीना कुत्ता कहां गया?

पहला नाबीना यह बैठा है। वह लाश के पास से हटता ही नहीं।

तीसरा नाबीना उसे हटा दो, भगा दो, भगा दो!

पहला नाबीना वह इस लाश को नहीं छोड़ता।

दूसरा नाबीना हम एक मुर्दा आदमी के पास नहीं बैठ सकते....हम इस तरह तारीकी में नहीं मरना चाहते!

तीसरा नाबीना आओ हम लोग मिलकर बैठें, इधर-उधर न खिसकें, एक दूसरे के हाथ पकड़ लें। सब इसी पत्थर पर बैठें। और लोग कहां हैं? यहां आ जाओ, सब यहां आ जाओ।

सबसे बुढ्ढा नाबीना तुम कहां हो?

तीसरा नाबीना मैं यहां हूं! हम सब एक साथ हैं न? ज़रा और मेरे क़रीब आ जाओ। तुम लोगों के हाथ कहां हैं? सख़्त सर्दी है।

नौजवान अंधी औरत ओफ़! तुम लोगों के हाथ कितने सर्द हैं!

तीसरा नाबीना : तुम क्या कर रही हो?

नौजवान अंधी औरत : मैं आंखों पर हाथ फेर रही थी। मुझे ऐसा मालूम होता था कि मेरी आंखें खुला ही चाहती हैं!

पहला नाबीना : यह रो कौन रहा है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वही पगली सिसक रही है।

पहला नाबीना : और अभी तक उसे हक़ीक़त मालूम ही नहीं।

सबसे बुड्ढा नाबीना : मेरा ख़याल है कि हम सब यहीं मरेंगे!....

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : ग़ालिबन् कोई आयेगा....

सबसे बुड्ढा नाबीना : और कौन आने वाला है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : यह नहीं मालूम।

पहला नाबीना : मैं समझता हूं कि बैरागिनें ख़ानक़ाह से आयेंगी....

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वह शाम को बाहर नहीं निकलतीं।

नौजवान अंधी औरत : वह कभी बाहर नहीं निकलतीं।

दूसरा नाबीना : मेरा ख़याल है कि बड़ी रौशनी के मीनार से लोग हमें देख लेंगे।

सबसे बुड्ढा नाबीना : वह अपने मीनार से नीचे नहीं आते।

तीसरा नाबीना : मुमकिन है हमें देख लें।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : उनकी निगाह हमेशा समुंदर की तरफ़ रहती है।

तीसरा नाबीना : बड़ी सर्दी है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : सूखी पत्तियों की तरफ़ लगाओ। मेरा ख़्याल है कि बर्फ़ गिर रही है।

नौजवान अंधी औरत : उफ़, ज़मीन कितनी सख़्त है।

तीसरा नाबीना : मैं अपने बायीं तरफ़ एक ऐसा शोर सुन रहा हूं जो मेरी समझ में नहीं आता....

सबसे बुड्ढा नाबीना : समुंदर लहरों से टकरा रहा है।

तीसरा नाबीना : मेरा ख़याल था कि औरतें रो रही होंगी।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : मुझे बर्फ़ में लहरों से टूटने की आवाज़ सुनायी दे रही है।

पहला नाबीना : यह कौन इतनी ज़ोर से कांप रहा है। उसके मारे हम सब हिल रहे हैं।

दूसरा नाबीना : अब मैं अपने हाथों को नहीं खोल सकता।

सबसे बुड्ढा नाबीना : मुझे एक और ग़ैर-मानूस (अपरिचित्त) आवाज़ सुनायी दे रही है...

पहला नाबीना : यह हममें से कौन इस तरह कांप रहा है [illegible]ता है।

सबसे बुड्ढा नाबीना : शायद कोई औरत है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वही पगली सबसे ज़्यादा थरथरा [illegible]।

तीसरा नाबीना : मुझे लड़के की आवाज़ नहीं सुनायी [illegible]।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत शायद वह अभी तक दूध पी रहा है।

सबसे बुड्ढा नाबीना एक वही है जो देख सकता है कि हम कहां हैं।

पहला नाबीना मुझे शुमाली हवा की आवाज़ आ रही है।

छठवां नाबीना मेरा ख़याल है कि सितारे छिप गये। अब बर्फ़ गिरेगी।

दूसरा नाबीना तब तो हमारा काम ही तमाम हुआ।

तीसरा नाबीना अगर हममें से कोई सो जाये तो उसे फ़ौरन जगा देना चाहिए।

सबसे बुड्ढा नाबीना मुझे ज़ोर से नींद आ रही है।

(एक आंधी पत्तियों को उड़ा देती है।)

नौजवान अंधी औरत तुम लोग सूखी पत्तियों की आवाज़ सुन रहे हो? मेरा ख़याल है कोई हमारी तरफ़ आ रहा है।

दूसरा नाबीना हवा है, कान लगाकर सुनो!

तीसरा नाबीना अब कोई न आयेगा!

सबसे बुड्ढा नाबीना शायद काली सर्दी आ रही है।

नौजवान अंधी औरत मुझे किसी आदमी के दूरी पर चलने की आवाज़ सुनायी देती है।

पहला नाबीना मुझे सिर्फ़ सूखी पत्तियों की आवाज़ सुनायी देती है!

नौजवान अंधी औरत मुझे किसी के क़दमों की आहट मिल रही है।

दूसरा नाबीना मुझे सिर्फ़ शुमाली हवा की आवाज़ सुनायी देती है।

नौजवान अंधी औरत मैं तुमसे सच कहती हूं कोई हमारी तरफ़ आ रहा है!

सबसे बुड्ढी अंधी औरत मुझे भी किसी की बहुत धीमी चाल की आवाज़ सुनायी देती है।

सबसे बुड्ढा नाबीना मेरा ख़याल है कि औरतें ठीक कहती हैं।

(बर्फ़ के टुकड़े गिरने लगते हैं।)

पहला नाबीना उफ़-उफ़! यह मेरे हाथों पर इतनी ठंडी कौन-सी चीज़ गिर रही है!

छठवां नाबीना बर्फ़ है।

पहला नाबीना आओ और सिमटकर बैठें।

नौजवान अंधी औरत लेकिन क़दमों की आवाज़ की तरफ़ कान लगाओ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत खुदा के लिए एक लमहा चुप हो जाओ।

नौजवान अंधी औरत क़रीब होती जाती है। हां, क़रीब होती जाती है। सुनो!

(दफ़अतन् पगली औरत का बच्चा अंधेरे में ज़ोर से रोने लगता है।)

सबसे बुड्ढा नाबीना बच्चा रो रहा है!

नौजवान अंधी औरत वह देख रहा है, देख रहा है! तब ही इतनी ज़ोर से रोता है।

(वह बच्चे को अपनी गोद में ले लेती है और उस तरफ़ चलती है जिधर से क़दमों की आवाज़ आती



हुई मालूम होती है! दूसरी औरतें मुतफ़क्किर (चिन्तित) **अंदाज़ से उसके साथ चलती हैं और उसे घेर लेती हैं।) मैं इस आवाज़ की तरफ़ जाती हूं।**

सबसे बुड्ढा नाबीना : होशियार रहना।

नौजवान अंधी औरत : उफ़! कितनी ज़ोर से रोता है, क्या है! मत रो बेटे! डरो मत! डरने की कोई बात नहीं है, हम सब तुम्हारे पास हैं। तुम क्या रेख रहे हो? डरो मत! इस तरह मत रोओ! तुम क्या देखते हो? हमसे बतलाओ, आखिर यह क्या चीज़ है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : क़दमों की आवाज़ क़रीब आती जाती है, सुनो, ग़ौर से सुनो!

सबसे बुड्ढा नाबीना : मुझे सूखी पत्तियों में किसी के कपड़ों की सरसराहट सुनायी देती है।

छठवां नाबीना : क्या कोई औरत है!

सबसे बुड्ढा नाबीना : सिर्फ़ आदमियों की आवाज़ है।

पहला नाबीना : शायद समुंदर सूखी पत्तियों पर बह रहा है?

नौजवान अंधी औरत : नहीं, नहीं, क़दमों की आवाज़ है, क़दमों की आवाज़ है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : हमें अभी मालूम हुआ जाता है, सूखी पत्तियों की तरफ़ कान लगाये रहो।

नौजवान अंधी औरत : सुन रही हूं, सुन रही हूं! बिल्कुल पास! सुनो, सुनो। बच्चे, तुम क्या देख रहे हो? तुम क्या देख रहे हो?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : वह किस तरह ताक रहा है?

नौजवान अंधी औरत : क़दमों की आवाज़ ही की तरफ़ मुंह किये हुए है। देखो, देखो, जब मैं उसका मुंह फेर देती हूं वह फिर उसी तरफ़ ताकने लगता है। वह देख रहा है, हां देख रहा है! वह कोई अजीबो-ग़रीब चीज़ देख रहा है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : **(आगे बढ़कर)** उसे हमसे ऊपर उठा दो ताकि खूब देख सके।

नौजवान अंधी औरत : हट जाओ **(वह बच्चे को अंधों की जमात से ऊपर उठाती है)** कदमों की आवाज़ बिल्कुल हमारे सामने आकर रुक गयी है....

सबसे बुड्ढा नाबीना : हां, वह बिल्कुल हमारे सामने आ गयी, ठीक सामने।

नौजवान अंधी औरत : तुम कौन हो?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत : हमारे ऊपर रहम करो!

(खामोश)

(सन्नाटा है। बच्चा गला फाड़-फाड़कर रोने लगता है।)

●●●



सुखदास

प्रकाशनकाल : 1920

पहला अध्याय

एक ऐसा समय भी गुजरा है, जब भारत के गांव-गांव और छोटी-छोटी बस्तियों में स्त्रियां चरखा काता करती थीं। केवल साधारण श्रेणी की स्त्रियां ही नहीं, रेशमी वस्त्रों से विभूषित स्त्रियां भी इस काम के करने में संकोच न करती थीं। कभी-कभी दूरस्थ बस्तियों के साधारण प्रकार और पीले रंग के फेरी वाले भी दिखाई देते थे, जो हृष्ट-पुष्ट ग्रामीणों की अपेक्षा लघुत्तर मालूम होते थे, कृषकों के कुत्ते उन्हें अपरिचित मालूम होते थे। ये लोग या तो जुलाहे होते थे या बिसाती। उनकी पीठ पर सूत या बिसातबाने की वस्तुओं की गठरी होती थी, जिसके बोझ से वे झुके हुए चलते थे।

गत शताब्दी के आरम्भ में सुखदास नाम का एक जुलाहा पत्थर के मकान में अपना काम किया करता था, जो लालपुर में स्थित था। उसके करघे और चरखे में से इस प्रकार की भनभनाती हुई ध्वनि निकलती थी कि गांव के बालक अपने रोचक खेलों को छोड़कर उसके मकान की खिड़कियों में से यह कौतुक देखा करते थे। वे चरखे के भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वर और फिरकियों को देखकर आश्चर्य करते थे। कभी-कभी जब सुखदास टूटे हुए धागों को जोड़ने या और कोई दोष दूर करने के लिए अपने स्थान से उठता और बालकों को खिड़की में से झांकते हुए देखता, तो उनको भय दिखाने के लिए उनकी ओर आंखें निकालकर दौड़ता था। बेचारे बालक डर के मारे चम्पत हो जाते थे।

ग्राम के बालकों ने अपने माता-पिता से सुना था कि सुखदास चाहे तो गठिया आदि की औषधि कर सकता है। वह भूत-प्रेत आदि से भी परिचित बताया जाता था। उस समय के कृषकों के कुछ इसी प्रकार के विचार थे, और होने भी चाहिए थे; क्योंकि वे संसार की बातों से कोरे थे। उनके समीप दुःख और कष्ट का क्षेत्र आनन्द और सुख के क्षेत्र से अधिक विस्तीर्ण था। उनके मन और विचार उन बातों की कल्पना भी न कर सकते थे, जो इच्छाओं और आशाओं का स्रोत है। इसके प्रतिकूल उनके मस्तिष्क उन विचारों और श्रुतियों से परिपूर्ण थे, जो भयकारी होते थे।

लालपुर देश के उस भाग में स्थित था, जहां की भूमि सुरम्य थी और सड़क से एक घंटे के मार्ग पर होने के कारण वहां धर्म और भक्ति की चर्चा भी रहती थी। सुखदास इस गांव में पंद्रह वर्ष पूर्व आकर बसा था। यद्यपि नागरिकों के समीप इस मनुष्य में कोई अद्‌भुत बात न थी, तथापि ग्रामीणों के विचार में वह एक अद्‌भुत मनुष्य था। उसके रहन-सहन का ढंग निराला-सा था। न तो किसी के घर जाता और न किसी को अपने घर बुलाता। वह तम्बाकू या मदिरा आदि भी नहीं पीता था। वह केवल अपने जीविका-

सम्बन्धी कार्यों के वश तो दूसरों के पास जाता, बाकी समय अपने व्यवसाय और विश्राम में व्यतीत करता था।

सुखदास मध्य ऊंचाई का मनुष्य था। उसका रंग पीला था, उसके नेत्र अद्भुत प्रकार के थे, मानो किसी मुर्दे की आंखें हों। उसने अपनी मां से जड़ी-बूटियों का ज्ञान प्राप्त किया था और तन्त्र-मन्त्र भी वह जानता था। झाड़-फूंककर रोगियों को अच्छा कर देता था। इन्हीं बातों के कारण वह अद्भुत प्रकृति रखते हुए भी लोगों के अत्याचार से सुरक्षित रह सकता था।

पर पंद्रह वर्ष पहले, जब वह मधुवन नाम के गांव में रहता था, उसका जीवन ऐसा शुष्क और आनन्दविहीन न था। वहां उसका आदर किया जाता था और लोग उसे धार्मिक मनुष्य समझते थे। उसी गांव में एक बार कीर्तन के समय वह शिवाले में अचेत हो गया था। तब से उस पर लोगों की श्रद्धा और भी हो गई थी। वहां उसके मित्रों में गोपाल नाम का एक युवक था। सुखदास बहुधा उसके साथ आमोद-प्रमोद किया करता था। वे दोनों सदैव एक साथ भोजन करते थे। गोपाल भी सच्चरित्र समझा जाता था और रामायण आदि पढ़ सकता था, जिसके कारण वह शिवाले के पुजारी को भी तुच्छ समझता था।

दोनों मित्रों में प्रायः मुक्ति और उसके साधन के विषय में वार्त्ता हुआ करती थी। गोपाल ही के उद्योग से सुखदास का विवाह भी निश्चित हो गया था और उसकी तैयारियां की जा रही थीं। उन्हीं दिनों गांव के मन्दिर के महन्त रामदास बीमार हो गए। गांव के लोग उनको पूज्य समझते थे, अतएव बारी-बारी से उनकी सेवा-शुश्रूषा करने लगे। शनैः-शनैः सुखदास की बारी आई। एक रात्रि , जब कि वह अकेले महन्तजी के पास था, तो उनका देहान्त हो गया। उस दिन गोपाल की बारी थी, पर वह एक घण्टे के लिए भी न आया। प्रातःकाल गांव में यह समाचार फैला, तो लोग ज़मा होकर महन्तजी की दाह-क्रिया का प्रबन्ध करने लगे। वहां से लौटने पर सुखदास गोपाल के पास जाने ही वाला था कि मन्दिर के पुजारीजी उसे लिए स्वयं आ गए और बोले—कीर्तन के समय अवश्य आना। सुखदास ने इसका कारण पूछा, तो उन्होंने उत्तर में कहा कि कारण वहीं ज्ञात हो जायगा। यह कहकर गोपाल के साथ चले गए।

सुखदास जब नियमित समय पर मन्दिर में पहुंचा, तो गांव के कितने ही सज्जन जमा थे। पुजारी ने एक चाकू निकालकर सुखदास को दिखाया और पूछा—यह चाकू तुम कहां भूल गए थे?

सुखदास ने उत्तर दिया—यह तो मेरे जेब में था।

पुजारी—तो मेरे पास कैसे आ गया?

सुखदास—यह मैं नहीं बतला सकता।

पुजारी—तुम अपना दोष व्यर्थ छिपाते हो। यह चाकू महन्तजी के बिस्तर के नीचे मिला है, जहां मन्दिर की आमदनी एक थैली में भरी हुई रखी थी। किसी ने वह थैली वहां से उड़ा दी है और उड़ाने वाला इस चाकू के मालिक के सिवा और कौन हो सकता है?

सुखदास कई मिनट तक चुप खड़ा रहा। अन्त में उसने कहा—मैं निर्दोष हूं। मुझे न तो यह मालूम है कि मेरा चाकू वहां कैसे पहुंच गया और न यह जानता हूं कि रुपये

किसने लिये। तुम मेरी और मेरे घर की तलाशी ले लो। तुम्हें वहां केवल पचास रुपये रखे हुए मिलेंगे, जो हमने बचाकर रख छोड़े हैं। वे वहां छः महिने से रखे हुए हैं और यह बात गोपाल भी जानता है।

गोपाल यह सुनकर भुनभुनाने लगा, जिसका आशय यह था कि मैं किसी के घर का हाल क्या जानूं। पर पुजारी ने जोर देकर कहा—सुक्खू! मेरे पास पूरा प्रमाण है। रुपया गत रात को लोप हो गया। रात को तुम ही महन्तजी के पास थे। गोपाल वहां अस्वस्थ हो जाने के कारण नहीं गया, इसे तुम स्वीकार करते हो। अब तुम्हीं बताओ, किस पर सन्देह किया जाय?

सुखदास—सम्भव है, मैं सो गया हूंगा, या मुझे मूर्च्छा आ गई होगी, जैसा कि तुम देख चुके हो। कदाचित् उसी समय कोई चोर आ गया होगा। मैं निर्दोष हूं, तुम अभी चलकर मेरे घर की तलाशी ले लो, क्योंकि अभी तक मैं घर से कहीं गया भी नहीं।

निदान सुखदास के घर की तलाशी ली गई और गोपाल ने महन्तजी की खाली थैली सुखदास के दरवाजे के पीछे टंगी हुई पायी। उसने कहा—मित्र, अपराध स्वीकार कर लो, झूठ बोलने से क्या लाभ?

सुखदास ने गोपाल की ओर तुच्छ दृष्टि से देखकर कहा—तुम तो मुझे वर्षों से जानते हो। तुमने मुझे कभी झूठ बोलते देखा है? मैं झूठ से घृणा करता हूं। ईश्वर हमें अवश्य निर्दोष सिद्ध करेंगे।

गोपाल—मुझे क्या खबर कि तुम अपने मन में क्या-क्या गुप्त संकल्प करते हो और उसमें पिशाच को स्थान देते हो।

यह बात सुनकर सुखदास का चेहरा तमतमा गया। वह कुछ कहने को ही था कि किसी आन्तरिक दुःख के कारण रुक गया। उसके चेहरे का रंग उड़ गया और होंठ कांपने लगे। अन्त में उसने गोपाल की ओर देखकर कहा—अब मुझे याद आ रहा है कि जब मैं महन्तजी के पास गया, तो मेरे जेब में चाकू नहीं था।

गोपाल—मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कहते हो। इस छल-कपट से अब काम नहीं चलेगा।

सुखदास को कई आदमियों ने चारों तरफ से घेर लिया और वे उससे भिन्न-भिन्न प्रश्न पूछने लगे। पर उसने किसी को उत्तर न दिया। केवल यही कहता रहा कि मैं कुछ नहीं कह सकता। ईश्वर मुझे निर्दोष सिद्ध करेगा।

कानून का आश्रय लेना उस मन्दिर के नियम के विरुद्ध था। इस अपराध का जो बड़े-से-बड़ा दण्ड दिया जा सकता था, वह यह था कि सिर्फ जात से हुक्का-पानी बन्द कर दिया जाय और यह किया भी गया। कुछ लोगों ने चोर का पता लगाने के लिए चिट्ठियां डालीं और संयोगवश उसमें सुखदास ही का नाम निकला। अब उसके चोर होने में कोई सन्देह न रहा। पुजारी ने उसे बिरादरी में मिलने का अब भी एक अवसर दिया—इस शर्त पर कि रुपये वापस दे दे और फिर चोरी न करने का प्रण करे। पर सुखदास ने इसका कुछ भी उत्तर न दिया।

इसके पश्चात् सुखदास निराश होकर घर चला आया और अपने मन में इस दुर्घटना पर आलोचनाएं करने लगा। मैंने पिछली बार एक धागा काटने के लिए चाकू दिया था,

तब से फिर उसे मैंने जेब में नहीं रखा। वह अवश्य ही गोपाल के पास था। गोपाल ने मेरे साथ विश्वासघात किया। इस संसार पर न्यायकारी ईश्वर शासन नहीं करता है, बल्कि वह अन्यायी है, जो निर्दोषियों को दोषी सिद्ध करता है। वह दिन भर उदास बैठा रहा। दूसरे दिन इस चिन्ता को दूर करने के लिए उसने काम करना शुरू किया, पर उसका जी बिलकुल न लगा। वह एक मास तक उस गांव में और रहा—बिल्कुल उसी तरह जैसे कैदी कारावास करे। इसके बाद वह वहां से किसी स्थान पर चला गया।

दूसरा अध्याय

मधुवन से निकलकर वह जिस गांव में आया, उस गांव का नाम लालपुर था। यद्यपि उससे कोई परिचित न था, पर जमींदार की दयालुता से उसे छोटा-सा-मकान मिल गया था और वहां वह एकान्तवासी बनकर जीवन व्यतीत करने लगा। अधिकतर वह अपना समय करघे पर लगाता था। अपने हाथों से भोजन बनाता, अपना पानी आप भरता और अपने कपड़े भी आप धो लेता। वह लोगों से विलग रहने लगा। बीते हुए समय को भूलकर भी स्मरण न करता। भविष्य में भी उसे कुछ आशा न थी। उस मिथ्या दोषारोपण ने उसे धर्म तथा संसार दोनों से विमुख कर दिया।

वह अपने काम में अत्यन्त चतुर था। धीरे-धीरे उसके कपड़ों की मांग बढ़ने लगी। उस गांव में सुभागी नाम की एक ठकुराइन रहती थी। उसने सुखदास से एक ओढ़नी बनवायी और उसे मजूरी में एक मोहर दी। परन्तु उसके लिए वह अशर्फी किस काम की थी, जबकि उसका हृदय अविश्वास से पीड़ित हो रहा था।

एक दिन जबकि सुखदास अपने जूतों की मरम्मत कराने के लिए मोची के यहां गया, तो देखा कि उसकी स्त्री उसके पास बैठी हुई है। उसकी सूरत से जलोदर रोग के चिह्न प्रकट होते थे। उस समय उसे अपनी माता का स्मरण हो आया, जिसका देहान्त इसी रोग से हुआ था। अतः उसे दुःखिनी पर दया आ गई। उसने एक औषधि बनाकर उसे दी और संयोगवश उसे इससे लाभ हुआ। उस बेचारी को वैद्यों और हकीमों की औषधि से कोई लाभ न हुआ था। जब उसे सुखदास की औषधि से लाभ हुआ, तो लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वैद्यों की औषधि से स्वस्थ होना एक स्वाभाविक और साधारण बात थी, परन्तु एक जुलाहे की औषधि से स्वास्थ्य-लाभ करना आश्चर्यजनक था। उस गांव में यह पहला ही अवसर था कि एक जुलाहे की औषधि से असाध्य रोग जाता रहा। तब से सुखदास को लोग एक अद्भुत मनुष्य समझने लगे।

इस घटना से सुखदास चारों ओर प्रसिद्ध हो गया। माताएं आतीं, कोई बच्चे की खांसी के निवारणार्थ यन्त्र मांगतीं। कोई दूध उतरने का टोटका पूछती। कोई मनुष्य गठिया की औषधि मांगता और कोई पुट्ठे के दर्द की। यदि वह दवा देने में कुछ संकोच करता, तो उसे रुपये का लोभ दिया जाता। पर सुखदास रुपये का दास नहीं था और कभी नहीं हुआ। पर जब रोगियों की संख्या दिनों दिन बढ़ने लगी, तो सुखदास को इन लोगों से कष्ट होने लगा। अन्त में उसने एक दिन साफ कह दिया कि मेरे पास कोई रोगी न आये।

मुझे न तो कोई सिद्धि है और न जादू-टोने आते हैं। इसका यह फल हुआ कि सारे गांव के लोग सुखदास से अप्रसन्न हो गए। यदि किसी उच्च जाति के मनुष्य ने यह बात कही होती, तो वह क्ष्मय समझा जाता; पर एक जुलाहे को इतना घमण्ड हो, यह रोगियों की सहन-शक्ति से भी बाहर था। लोग उसकी सूरत से चिढ़ने लगे।

सुखदास को गांववालों की इस उपेक्षा से लेशमात्र भी खेद न हुआ। वह अपने काम में तन्मय हो गया। प्रतिदिन सोलह घंटे परिश्रम करता। रूखा और साधारण भोजन करता। उसे रुपया जमा करने की चाट पड़ गई। वह हरदम इस चिन्ता में रहता कि किसी तरह मोहरों की संख्या बढ़ जाय। यदि इस माह में पांच मोहरें हैं, तो दूसरे में बीस और फिर तीस हो जायं; इसी क्रम से उसकी इच्छा उत्तरोत्तर बढ़ती जाती थी। काम करते-करते भी उसे अपनी सम्पत्ति का ध्यान आ जाता था। काम से छुट्टी पाते ही वह हर रात्रि को वह बर्तन निकालता, जिसमें अशर्फियां रखी हुई थीं और उन्हें निकालकर गिनता। इस काम में उसे असीम आनन्द और सन्तोष होता था। मानो वह द्रव्य का उपासक था।

गिनने के बाद उन अशर्फियों को एक थैली में बन्द करके गड्ढे में रख देता था और ऊपर से बालू फैला देता था। उसे चोरों और डाकुओं का डर न था, क्योंकि उस समय के लोग ईमानदार होते थे।

प्रतिवर्ष सुखदास का धन बढ़ता गया और बर्तन अशर्फियों से भरता गया। उसके जीवन के अब केवल दो अवलम्बन थे—एक कपड़े बुनना, दूसरा धन-संचय। वह कठिन परिश्रम करता और धन-संचय करने में इस प्रकार लिप्त रहता, मानो यह उसके जीवन की महत्त्वाकांक्षा है। इस निरन्तर परिश्रम से वह दुबला हो गया। चालीस वर्ष की अवस्था में उसकी कमर झुक गई, रंग पीला पड़ गया और आंखों से कम दीखने लगा। अतएव गांव के बालक उसे बूढ़ा सुखदास कहने लगे।

इस सांसारिक विरक्ति के होने पर भी सुखदास में प्रेम का चिह्न शेष था, जो इस घटना से विदित होता है। जब से वह लालपुर आया था, तभी से उसके पास एक जल का घड़ा था जिसे वह बहुत चाहता था। स्वयं कुएं से जल लाता और नित्य घड़े को उसके नियमित स्थान पर रख देता। एक दिन जब वह घड़ा भरकर लौट रहा था, तो उसने ठोकर खायी, घड़ा गिरा और एक पत्थर से लगकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। सुखदास को बहुत खेद हुआ। यद्यपि फूटे घड़े से कोई काम न निकल सकता था, तथापि वह टुकड़ों को ले आया उसने उन्हें जोड़कर निश्चित स्थान पर रख दिया। फूटे घड़े को देखने से उसके चित्त को शान्ति होती थी।

सुखदास के जीवन के पन्द्रह वर्ष इसी भांति लालपुर में बीते। दिन भर काम करता, रात को भी काम करता। कच्चा-पक्का भोजन बनाकर खाता, तब अशर्फियों और रुपयों को गिनता। इसके बाद शयन करता। वह केवल चांदी के सिक्कों को व्यय करता था, अशर्फियों को कभी न भुनाता था। अशर्फियों को गिनते समय उसके नेत्रों से द्रव्य-प्रेम की ज्योति निकलती थी। जब धन अधिक बढ़ गया, तब उसने उसे चमड़े की थैली में रखना शुरू किया; पर उसका धनावलोकन और निरीक्षण पूर्ववत् जारी रहा। उसे द्रव्य से इतना प्रेम हो गया था कि रात को सोते समय भी वह रुपयों और अशर्फियों का ही स्वप्न

देखता। यद्यपि उसके पास बहुत धन जमा हो गया था, पर गांववालों को इसकी जरा भी खबर न थी।

तीसरा अध्याय

लालपुर में सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित ठाकुर नरेशसिंह थे। वे विशाल भवन में रहते थे। यद्यपि उनके पास भूमि बहुत थोड़ी थी और आसामी भी अधिक न थे, पर समय पड़ने पर वे उनके यहां इस प्रकार दोहाई मचाने जाते, मानो वे उनके राजा हों। जनता ने उन्हें राजा की पद्वी प्रदान कर दी थी। लालपुर में उस समय तक कबीर के उपदेशों का प्रभाव नहीं पड़ा था। वहां के निवासी आनन्द से जीवन व्यतीत करते थे।

ठाकुर नरेशसिंह एक तो स्वयं फिजूलखर्च आदमी थे, दूसरे उनकी स्त्री का देहान्त हो चुका था। इसलिए उनके घर में बहुत कुछ कु-प्रबन्ध था। उनके दो लड़के थे। बड़ा लड़का महीपसिंह एक सच्चरित्र युवक था, पर आलस्य में पड़े रहने के कारण वह घर के कामों में अपने पिता की सहायता न करता था। दूसरा पुत्र दिलीपसिंह शराबी और आवारा था। वह कभी-कभी अपने बड़े भाई से रुपया उधार लिया करता, पर देना न जानता था। और यद्यपि महीपसिंह को कई बार इसका अनुभव हो चुका था, पर वह सरल-स्वभाव होने के कारण दिलीपसिंह की बातों में आ जाता था।

एक दिन संध्या-समय महीपसिंह ने दिलीपसिंह को बुलाकर उन रुपयों का तकाजा किया, जो उसने एक आसामी से वसूल करके दिये थे। दिलीप उस वक्त शराब के नशे में था, अकड़ा हुआ आया और गर्व से बोला—आपने मुझे क्यों याद किया?

महीप—पिताजी को रुपयों की आजकल विशेष आवश्यकता है। करीम का लगान, जो मैंने तुमको दिया है, चटपट दे दो; नहीं तो पिताजी से साफ-साफ कह दूंगा कि मैंने रुपये तुम्हें दिये हैं। मैं तुम्हारे पीछे उनकी अप्रसन्नता नहीं सहना चाहता।

दिलीप—रुपये का प्रबन्ध तो आप ज्यादा असानी से कर सकते हैं।

महीप—यदि मैं प्रबन्ध कर सकता, तो तुम्हें कष्ट न देता। और मैं प्रबन्ध कर सकूं, तो भी तुम्हें रुपये देने चाहिए।

दिलीप—चाहिए तो, पर आएं कहां से?

महीप—लेने के समय तुम्हें स्वयं ही इस प्रश्न का उत्तर सोच लेना चाहिए था।

दिलीप—इतनी समझ होती, तो सबकी फटकार क्यों सहता? आपने जहां मुझ पर इतनी दया की है, वहां इतनी कृपा और कीजिए कि किसी से ऋण लेकर पिताजी को उनके रुपये दे दीजिए। हमारा और आपका लेखा फिर होता रहेगा।

महीप ने सोचकर कहा—एक बात हो सकती है। तुम मेरा घोड़ा बेच लाओ। इसके सिवा मुझे अन्य कोई उपाय नहीं सूझता। पर यह समझ लो कि मेरा और तुम्हारा यह अन्तिम व्यवहार है। अब मैं तुम्हें एक कौड़ी भी न दूंगा।

दिलीप—इतनी कठिन प्रतिज्ञा न कीजिए, पर आपका घोड़ा मैं बेच आने के लिए तैयार हूं, और आपको विश्वास दिलाता हूं कि एक रुपया भी शराब पीने में खर्च न करूंगा।

.यद्यपि महीप इस घोड़े को बहुत चाहता था, पर इस समय विवश होकर उसे बेचना पड़ा। दिलीप एक कुचरित्र युवक था। रात-दिन जुए, मदिरा-पान तथा कु-चेष्टाओं में आसक्त रहता था। महीप उसे अपना घोड़ा देते हुए डरता था कि कहीं वह उसे बेच कर उसके रुपये भी न उड़ा जाए, और चाहे इतना साहस न कर सके, पर इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं था कि पूरा मूल्य मेरे हाथ में न आएगा। पर वह स्वयं दस कोस तक घोड़े की पीठ पर बैठने का कष्ट सहने में असमर्थ था—आलस्यमय जीवन ने परिश्रम से उसके मन में घृणा पैदा कर दी थी। यहां तक कि घोड़े का मूल्य उड़ जाने तथा असावधानी से दौड़ाने के कारण उसके प्राणान्त हो जाने की शंका ने भी उसको उत्तेजित न किया।

प्रातः होते ही दिलीप घोड़े पर सवार होकर बाजार चला। जब वह उस मकान के निकट पहुंचा, जिसमें सुखदास रहता था, तो उसके मन में वह विचार उत्पन्न हुआ कि यह मूर्ख वृद्ध जुलाहा अवश्य बहुत धनी होगा। निःसन्देह उसका धन किसी जगह गड़ा होगा। आश्चर्य है कि मैंने महीप को यह बात कभी न सुझायी कि वह इस जुलाहे से विश्वास पर ऋण लेने का यत्न करे। इस विचार के उठते ही उसने घोड़े की बागडोर घर की ओर मोड़ दी। उसे विश्वास था कि महीप इस सम्मति को सहर्ष स्वीकार कर लेगा, पर न जाने उसके दिल में यकायक क्या आया कि वह पलटकर मार्ग पर चला आया और घोड़े को दौड़ाने लगा। वह रूपवान् था और घोड़े की सवारी में बहुत चतुर था। तेज घोड़े पर सवार होने में उसे बड़ा आनन्द मिलता था। जब राहगीर लोग खड़े हो-होकर उसे आश्चर्य से देखते, तो वह घोड़े को और तेज कर देता था। जब वह बाजार पहुंचा, तो सैकड़ों आंखें उसकी ओर उठ गई। वहां पर सैकड़ो मौजूद थे, पर इस शान का एक भी घोड़ा न था। वहां के सबसे बड़े व्यापारी का नाम साहब खां था। वह उसे देखते ही समीप आया और उसका स्वागत करके बोला—आज तो आप अपने भाई साहब के घोड़े पर सवार होकर आये हैं। यह नई बात है।

दिलीप—अब तो यह घोड़ा मेरा है, मैंने उनसे झपट लिया।

साहब खां—झपट कैसे लिया?

दिलीप—ऐसा ही मेरे-उनके बीच कुछ हिसाब था, जो एक घोड़ा लेकर तय हो गया।

यद्यपि दिलीप ने यह नहीं कहा कि मैं घोड़े को बेचना चाहता हूं, पर साहब खां ताड़ गया कि वह उसे बेचने ही के लिए आया है। उसने दिलीप से कहा--यदि आप इसे बेचना चाहें, तो आपको इसके अच्छे दाम भी मिल सकते हैं।

दिलीप—मुझे बेचने की इच्छा नहीं, मुझे इसके आज ही तीन सौ रुपये मिल रहे थे।

साहब खां—यह मत कहो। मैंने आज तक कोई ऐसा मनुष्य नहीं देखा, जो ड्योढ़े दाम पाकर घोड़े को बेच न डाले। दाम तो इसके वही तीन सौ रुपये होंगे, पर आपको पान खाने के लिए कुछ और मिल जायंगे।

साहब खां ने यह कहा ही था कि उसका एक मित्र घोड़े पर सवार हो गया और उसे दौड़ाकर उसकी चाल देखने लगा। अन्त में साढ़े तीन सौ रुपये पर सौदा तय हो गया, पर शर्त यह थी कि दिलीप घोड़े को साहब खां के अस्तबल में पहुंचा दे। दिलीप राजी हो गया। वह उसी वक्त अस्तबल की तरफ चला जो वहां से तीन मील पर था, ताकि शाम

होते-होते वह रुपये से जेब गर्म करके किराये के घोड़े पर सवार होकर घर पहुंच जाय। वह एक मील आया होगा कि उसे घुड़दौड़ का मैदान दिखाई दिया। वहां घोड़ों के कूदने के लिए टट्टियां लगी हुई थीं। दिलीप उमंग में आकर टट्टियां कुदाने लगा। दुर्भाग्यवश कई टट्टियां कूदने के पश्चात् घोड़ा एक टट्टी पर गिर पड़ा। टट्टी की लकड़ी उसके कण्ठ में घुस गई। दिलीप भी गिरा, पर उसे थोड़ी चोट लगी। घोड़ा दम तडप-तड़पकर मर गया।

दिलीप उन मनुष्यों में था जो किसी हानि पर केवल कुछ ही मिनट तक खेद करते हैं। वह पृथ्वी से उठा। पहले अपनी देख-भाल की कि कहीं उसे चोट तो नहीं आई। उसे घोड़े के मरने का इतना दुःख न हुआ, जितना यह कि घर क्योंकर पहुंचूं। उसे महीप के क्रोध का भय भी अवश्य था, पर उसने सोचा—जब मैं उन्हें सुखदास से ऋण की बात सुना दूंगा, तो वह मुझे क्षमा कर देंगे।

वह मन में सुखदास से रुपये लेने के विचार को आशा रूप में परिणित करता जाता था। यहां तक कि वह साहब खां के अस्तबल तक पहुंचा और उसने एक घोड़ा किराये पर लेना चाहा; परन्तु जिस मनुष्य ने अभी-अभी एक घोड़े की जान ली हो, उसे कौन अपना घोड़ा भाड़े पर देता? दिलीप को विवश होकर लालपुर तक पैदल आना पड़ा। उस समय दिन के चार बजे थे, आकाश में बादल घिरने लगे थे। उसने बूट कस कर हण्टर हाथ में लिया और तेजी के साथ पक्की सड़क पर चलने लगा।

बादल अधिक घिरते गए। दिलीप भी डग बढ़ाता हुआ लालपुर की सीमा तक आया। उस समय बादल इतने घने हो गए थे कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था। जब वह सुखदास के घर के पास पहुंचा, तो उसके दिल में उससे वार्तालाप करने का विचार उत्पन्न हुआ। वह केवल रुपये के विषय में उसका मन लेना नहीं चाहता था, बल्कि घिरते हुए बादलों से रक्षा भी चाहता था।

दरवाजे की दराज से निकलता हुआ प्रकाश उस अन्धकार में उसे बहुत आशाजनक मालूम हुआ। वह उसके घर की ओर चला। उसे आशा थी, सुखदास के यहां से एक लालटेन अवश्य मिल जायगी, जिससे वह अपने घर तक पहुंच सकेगा; क्योंकि उसका मकान अब भी कोई पौन मील की दूरी पर था। वह दो-ही चार पग चला था कि जोर से वर्षा होने लगी। तब वह दौड़ता हुआ सुखदास के दरवाजे पर जा पहुंचा और उसे उच्च स्वर से पुकारने लगा, पर भीतर से कोई उत्तर न आया। इस पर उसने और जोर से पुकारना शुरू किया, फिर भी उत्तर न मिला। तब उसने जोर से दरवाजे पर धक्का मारा। द्वार खुल गया और दिलीप ने अन्दर प्रवेश किया, पर देखा तो घर सूना था। सुखदास का कहीं पता नहीं। चूल्हें में आग जल रही थी और उस पर एक बटुली रखी हुई थी, जिसका बुदबुद शब्द उस सन्नाटे को भंग कर रहा था।

दिलीप ने सोचा, कदाचित् सुखदास कोई आवश्यक वस्तु लाने के लिए बाहर गया है। उस समय यकायक उसके दिल में ख्याल पैदा हुआ कि सुखदास के रुपये कहां रखे हैं। इस खयाल के आते ही और सारे विचार उसके दिल से दूर हो गए। ऐसे मकान में केवल तीन ही जगहें ऐसी थीं, जहां रुपया रखा जा सकता था। छप्पर, चारपाई या कोई बिल। सुखदास के मकान में कोई छप्पर था ही नहीं, अतः दिलीप ने बिछौने और पलंग को टटोलना आरम्भ किया। साथ ही भूमि पर दृष्टि दौड़ाई। पर कहीं कोई ऐसी जगह

न दिखाई दी, जहां रुपये रखने के गुप्त स्थान का संदेह हो सकता था। केवल एक जगह कुछ रेत पड़ी हुई थी, जिस पर अंगुलियों के चिह्न बने थे।

इस स्थान को देखते ही दिलीप चौंक पड़ा। उसे भावना हुई कि रुपया यहीं रखा होगा। वह वहां लपककर पहुंचा और रेत को हटाकर देखा तो ईंटें रखी हुई थीं। उसने शीघ्रता से उन ईंटों को निकाल दिया, तो एक बड़ा बिल दिखाई दिया। दिलीप ने बिल में हाथ डालकर इधर-उधर टटोला, तो उसे एक चमड़े की थैली मिल गई। उसने उसे बाहर निकाल लिया। उसके बोझ से उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि उसमें रुपये और अशर्फियों के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता। उसने थैली को एक ओर रखकर ईंटों को भीतर रखा और ऊपर रेत फैलाकर पूर्ववत् कर दिया। उसे यहां कुछ पांच मिनट लगे थे, पर यह पांच मिनट कई घंटों से अधिक मालूम हुए।

दिलीप मारे भय के कांप रहा था और हृदय वक्ष-स्थल में हाथों उछल रहा था। वह चमड़े की थैली को लेकर खड़ा हुआ और बाहर निकलते ही उसने द्वार बन्द कर दिया कि भीतर का प्रकाश बाहर न आ सके। इस थैली को लिये हुए वह आगे बढ़ा। उस समय अंधेरा भी बढ गया था और मूसलाधार पानी बरस रहा था। सुखदास के घर में जाने से पहले उसे यह अंधेरा बुरा मालूम होता था। पर इस समय बहुत ही भला लगा; क्योंकि वह उसके पाप को छिपा सकता था।

चौथा अध्याय

जब दिलीप यहां से चला, तो सुखदास उससे सौ पग की दूरी पर था। वह पीठ पर एक बोरा लादे था और हाथ में लालटेन लिये गांव से आ रहा था। यद्यपि वह थका-मांदा था, तो भी गर्म-गर्म भोजन की आशा उसे प्रसन्नचित्त बनाए हुए थी, आज भोजन की सामग्री उसे एक ग्राहक ने भेंट की थी, इसीलिए वह रूखा न था। सुखदास नियमानुसार रात का भोजन इच्छानुसार भरपेट करता था, क्योंकि उस समय सम्पत्ति उसकी आंखों के सामने रहती थी।

सुखदास घर से चलते समय ताला लगाना भूल गया था। उसे यह शंका ही न थी कि इस वर्षा में कोई चोर उस घर में आ सकता है, क्योंकि गत पंद्रह वर्षों में एक बार भी उसे इस प्रकार का खटका न हुआ। द्वार पर पहुंचकर उसने किवाड़ खोले और अन्दर गया। सब चीजें ज्यों-की-त्यों मिलीं। कोई परिवर्तन न दिखाई पड़ा। अग्नि प्रज्ज्वलित थी, खाना पक रहा था और दीपक प्रकाशमान था। उसने बोरा एक ओर रखा, लालटेन दूसरी ओर, और पगड़ी उतार कर खूंटी पर टांग दी। निश्चिन्त होकर इधर-उधर टहलने लगा जिससे वे पद-चिह्न मिट गए, जो दिलीप रेत पर छोड़ गया था। तब उसने पैर धोए और चौके में बैठकर खिचड़ी की बटुली अपने सामने रख ली।

यदि कोई मनुष्य उसके रूप को अग्नि के प्रकाश में देखता, तो अवश्य डर जाता। उसकी गोल, तीव्र आंखें, बिखरे हुए बाल, पीला चेहरा, दुर्बल शरीर उस प्रकाश में और भी भयकारी हो रहे थे। यद्यपि उसे लोग सन्देह की दृष्टि से देखते थे, पर वास्तव में वह

नितान्त सरल मनुष्य था। उसके सीधे-सादे हृदय-पटल पर कपट का कोई चिह्न नहीं था। चूंकि विश्वास का प्रकाश उसकी आत्मा में लुप्त हो चुका था, प्रेम में उसे असफलता हो चुकी थी, अतः वह संसार की सारी बातों को छोड़कर केवल परिश्रम करने और रुपये जमा करने में लिप्त रहता था। मानो यही दो काम उसके जीवन के दो मुख्य उद्देश्य थे।

जब अग्नि के पास बैठे हुए कुछ विलम्ब हुआ, तो उसने सोचा कि भोजन के बाद अपने धन का निरीक्षण करने में देर होगी। अतः उसने ईंटों को हटाकर बिल में हाथ डाला। वहां थैली का पता नहीं था। उसका दिल जोर ले उछल पड़ा, परन्तु उसे यह विश्वास न हुआ कि वास्तव में कोई अशर्फियों को चुरा ले गया है। केवल एक शंका का अनुभव हुआ और उस शंका को वह दूर कर देना चाहता था। अपने कांपते हाथों से बिल को खूब टटोला कि कहीं मुझे धोखा तो नहीं हो रहा है। तब उसने बत्ती को बिल में डाल दिया और सिर से पैर तक कांपते हुए उसे ध्यानपूर्वक देखा। अन्त में उसके शरीर में ऐसी कंपकंपी हुई कि लालटेन उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ी। उसने हाथ सिर पर रख लिया कि सावधान होकर विचार कर सके।

इस घबराहट की दशा में उसके मन में यह प्रश्न हुआ कि गत रात्रि को मैंने अपनी अशर्फियां किसी अन्य स्थान पर तो नहीं रख दीं। इस समय उसकी दशा उस डूबते हुए मनुष्य की-सी थी, जो अंधेरे में टटोल रहा हो और उसे कहीं से प्रकाश न मिलता हो। उसने मकान का कोना-कोना ढूंढ़ मारा, बिस्तर उलटकर देखा, करघे में हाथ डालकर देखा, पर अशर्फियों का पता न मिला। अन्त में उसने एक बार फिर बिल में हाथ डाला और उसे अच्छी तरह टटोला। भयंकर सच्चाई से उसे एक क्षण के लिए भी शरण न मिली।

जब कोई मनुष्य निराशा के पंजे में फंस जाता है, तो वह चारों ओर आशामय दृष्टि दौड़ाता है। सुखदास बड़ी कठिनता से उठा और उसने उस चौकी को देखा, जिस पर वह अपने बर्तन रखा करता था। तब मकान के दरवाजे पर आया, फिर पिछवाड़े की तरफ आंख फांड़-फाड़कर देखने लगा, अशर्फियां कहीं भी नज़र न आयीं। जब वह चारों तरफ से निराश हो गया, तो उसने अपने सिर पर हाथ रखकर एक दीर्घ सांस खींची। इसके पश्चात् वह कुछ देर तक स्थिर भाव से खड़ा रहा; फिर करघे की ओर लड़खड़ाता हुआ बढ़ा और उस स्थान पर बैठ गया, जहां बैठकर काम किया करता था।

सभी झूठी आशाओं के लुप्त हो जाने के बाद चोर का विचार उसके दिल में उठने लगा और इस विचार को उसने बलपूर्वक स्थिर किया; क्योंकि यहां उसकी आशाओं को ठहरने का स्थान मिल सकता था। चोर पकड़ा जा सकता था और उससे अशर्फियां वापस ली जा सकती थीं। वह करघे से उठकर द्वार तक आया। ज्योंही उसने किवाड़ खोले कि वर्षा का एक झोंका उसके मुंह पर लगा। वह सिर से पैर तक भीग गया। इतनी देर में उसमें विचार करने की शक्ति लौट आई थी।

वह सोचने लगा कि चोर किस समय आया। जब मैं दिन को बाहर गया था, तो मैंने किवाड़ बन्द कर दिये थे। मनुष्य के पद-चिह्न द्वार के सामने थे। संध्या-समय भी सब वस्तुएं वैसी ही थीं, जैसी कि दिन में। कोई नई बात न दिखाई दी। न तो घर के बाहर और न घर के भीतर। उसने फिर सोचा, यह कोई पैशाचिक लीला तो नहीं है, जिसने कि जीवन में दूसरी बार मुझे नष्ट किया। पर यहां से उसका विचार शीघ्र ही दूसरी ओर

फिरा। लालपुर में दुक्खी नाम का अहीर रहता था, जो एक बार चोरी का दण्ड पा चुका था। वह सुखदास के यहां आया-जाया करता और उसके धन के विषय में कभी-कभी हंसी भी किया करता था। सुखदास का सन्देह दुक्खी पर हुआ और उसे प्रबल इच्छा हुई कि उसके पास चलकर अपने रुपये वापस ले लूं। वह उसे दण्ड देना या दिलाना न चाहता था। वह न्यायालय से परिचित न था। वह केवल अपने रुपये चाहता था, इसलिए उसने संकल्प किया कि नरेशसिंह के पास चलकर दोहाई दे। वह नंगे सिर और मकान को खुला छोड़कर पानी में भीगता हुआ गांव की ओर भागा। परन्तु जब मार्ग में उसका श्वास फूलने लगा, तो वह धीरे-धीरे चलने लगा।

इस समय नरेशसिंह के चौपाल में गांव के धनी-मानी पुरुष बैठे हुए थे। इधर-उधर की गपशप हो रही थी। एक महाशय भूतों की कथा सुना रहे थे। चिलम-पर-चिलम भरी जाती थी और तम्बाकू की सुगन्ध उड़ रही थी। सुखदास कुछ देर तक द्वार पर खड़ा रहा। उसे अन्दर जाने का साहस न हुआ, पर अन्त में जी कड़ा करके चौपाल में घुस गया। भूत-पिशाच की चर्चा हो ही रही थी, अकस्मात् सुखदास हांफता हुआ नंगे सिर पहुंचा, तो लोग चौंक पड़े।

नरेशसिंह ने पूछा—कहो सुखदास, तुम कैसे चले आए?

सुखदास—सरकार, मैं लुट गया। मैं आप लोगों के सामने दोहाई करता हूं।

नरेशसिंह—दुक्खी, जरा इस जुलाहे को पकड़ तो लो। मालूम होता है कि यह सनक गया है।

यद्यपि दुक्खी सुखदास के सम्मुख ही बैठा था, पर उसने इस आज्ञा का पालन न किया और बोला—वह सनका नहीं है। उसकी चारी हो गई है और कदाचित् पीटा भी गया है।

सुखदास ने कहा—'दुक्खी!' और वह उसकी ओर विचित्र आंखों से देखने लगा।

दुक्खी ने पूछा—क्या मुझसे कुछ काम है?

सुखदास ने हाथ जोड़कर अत्यन्त दीन भाव से कहा- दुक्खी, यदि तुमने मेरे रुपये चुराए हैं तो मुझे दे दो; मैं तुमसे कुछ न बोलूंगा। मैं पुलिस में भी रपट न लिखाऊंगा। केवल मेरे रुपये लौटा दो। एक अशर्फी भी तुम्हें भेंट कर दूंगा।

दुक्खी के तेवरों पर बल पड़ गए। उसने सरोष होकर कहा—मैंने तेरे रुपये चुराए हैं? यदि ऐसी बात फिर मुंह से निकालेगा, तो इसी छड़ी से तेरी आंख फोड़ दूंगा।

नरेशसिंह बोले—यदि तुझे कुछ कहना है, तो सावधान होकर क्यों नहीं कहता? तेरी बातें कुछ समझ ही में नहीं आतीं।

कारिन्दा साहब बोले—यह इस तरह चिल्ला रहा है, मानो पागल हो गया।

कई मनुष्यों ने इस पर कहा—हां-हां, इसे बिठाओ।

नरेशसिंह ने सुखदास को अलग एक माचे पर बिठलाया और जब वह जरा सावधान हो गया, तब उससे पूछा—हां, सुक्खू, बताओ, अब कया कहते हो? तुम्हारी चोरी हो गई।

दुक्खी बोल उठा—कुशल इसी में है कि यह मुझ पर चोरी का दोष न लगाए।

नरेशसिंह—तुम अपनी जबान बन्द करो। हां सुक्खू, साफ-साफ बतलाओ।

सुखदास ने अपना वृत्तांत कह सुनाया। लोग उससे भांति-भांति के प्रश्न करने लगे।

उसने बहुत धैर्य से सबके उत्तर दिये, जिससे लोगों को उसकी चोरी हो जाने का विश्वास हुआ। नरेशसिंह बोले—सुक्खू, तुम्हारा रुपया चुराने वाला दुक्खी नहीं है। तुम उस पर व्यर्थ सन्देह न करो। वह कल से मेरे दरवाजे से नहीं टला।

कारिन्दा—हां, तुमको किसी निरपराध मनुष्य पर दोष न लगाना चाहिए।

यह सुनकर सुखदास को वह समय याद आया, जब वह स्वयं निरपराध था और उस पर चोरी का अपराध लगाया गया था। वह माचे से उठा और दुक्खी के पास जाकर अत्यन्त दीनता से बोला—दुक्खी, मुझे क्षमा करो। मुझसे बड़ी भूल हुई। मैंने तुम्हारा नाम केवल इसलिये लिया था कि तुम बहुधा मेरे घर आया करते हो। अब मैं तुमको दोषी नहीं ठहराता।

नरेशसिंह—तुम्हारी थैली में कितने रुपये थे?

सुखदास—कुल दो सौ सत्तर अशर्फियां थीं, मैंने कल शाम को गिनकर रखी थीं।

कारिन्दा—इतने रुपये तो बहुत भारी नहीं होते, इन्हें एक मनुष्य सरलता से ले जा सकता है। रही यह बात कि घर में किसी का पद-चिह्न नहीं है और वह स्थान भी ज्यों का त्यों है, जहां तुम्हारी अशर्फियां रखी हुई थीं—यह बात मेरी समझ में नहीं आती। मेरी राय तो यह है कि चलकर किसी ओझा से पूछना चाहिए। वह अपने मन्त्रों से अवश्य चोर का पता लगा लेगा।

नरेशसिंह—क्या व्यर्थ की बातचीत कर रहे हो। चोर पकड़ना ओझा का काम नहीं है, पुलिस का काम है। सुखदास के साथ टांड के थाने में जाओ और वहां रपट लिखाओ। इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं।

यद्यपि सुखदास थाने के नाम से डरता था, पर नरेशसिंह के आग्रह से विवश होकर थाने जाना पड़ा। उसकी आशाएं कोई-न-कोई सहारा ढूंढ़ती थीं। नरेशसिंह के यहां कोई स्थान न पाकर वे थाने की ओर फिरीं। पानी जोर से बरस रहा था। सुखदास कारिन्दा के साथ टांडे की तरफ चला।

पांचवां अध्याय

महीपसिंह रात को एक गांव में नेवता खाने गया हुआ था। सारी रात नाच-गाना देखता रहा। सुबह को जब वह अपने गांव में आया, तो देखा कि चारों तरफ हलचल मची हुई है। पूछने से विदित हुआ कि सुखदास की चोरी हो गई है। चोर उसकी अशर्फियां उठा ले गया है। महीप दयावान् आदमी था, उसे सुखदास पर दया आ गई। चोरी का पता लगाने में वह भी तत्पर हो गया।

प्रातःकाल थानेदार साहब कई कान्स्टेबिलों के साथ सुखदास के घर आ पहुंचे और उसके भीतर और बाहर प्रत्येक वस्तु को बड़े ध्यान से देखने लगे। फिर मन में कुछ विचारकर उस तालाब की ओर बढ़े, जो सुखदास के घर के पास ही था। तालाब के किनारे वहां उन्हें दियासलाई का एक बक्स दिखाई दिया। थानेदार ने लपककर वह बक्स उठा लिया और वे उसे इस भांति देखने लगे, मानो चोरी से उसका गहरा सम्बन्ध हो। गांव

के बहुत-से आदमी वहां जमा थे, उन सबको भी यही ख्याल हुआ। बहुत खोज-बीन करने पर यह पता चला कि वह डिबिया एक बिसाती की है, जो कई दिन हुए गांव में सौदा बेचने आया था। उसने सुखदास के घर हुक्का पिया था और उसके हाथ और कई चीजें बेची थीं। थानेदार अपनी बुद्धि की तीव्रता पर फूलकर बोले—क्या उस बिसाती के कानों में बालियां भी थीं।

कारिन्दा ने कहा—मुझे तो यह स्मरण है कि उसके सन्दूक में बालियां थीं, पर यह नहीं कह सकता कि कानों में थीं या नहीं।

थानेदार—जब बालियां बेचता था, तो अनुमान तो होता है कि पहनता भी होगा।

गांव में इस बात की जांच की गई, तो कई मनुष्यों ने कहा कि बिसाती के कानों में बालियां थीं। एक सत्यवक्ता स्त्री ने कहा कि "बालियां बड़ी-बड़ी थीं।" एक दूसरी स्त्री ने भी इसका समर्थन किया। इसके पश्चात् थानेदार साहब ने उन चीजों को इकट्ठा करना शुरू किया, जो उस बिसाती से गांववालों ने मोल ले ली थीं। उनमें बालियां भी निकलीं। तात्पर्य यह कि थानेदार साहब को पूरी तरह विश्वास हो गया कि बिसाती ही ने सुखदास की चोरी की है। ग्रामवासियों का भी यही विश्वास था, परन्तु जब सुखदास से पूछा गया, तो उसने कहा कि "बिसाती मेरे घर आया तो अवश्य था, पर जब मैंने कहा कि मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, तो वह बाहर-ही-बाहर चला गया था।"

जिन लोगों ने अपने विचार में बिसाती को पूर्णतः दोषी समझ लिया था, उन्हें सुखदास के वचन से बड़ी निराशा हुई। कुछ लोग तो उसे मूर्ख और पागल कहने लगे। उस समय नट जाति के लोग बहुधा बिसातियों का वेश धारण करके चोरी किया करते थे, और चोरी के साथ हत्या भी करते थे। वे बहुधा कानों में बालियां पहनते थे। पन्द्रह-बीस वर्ष पहले एक बालियां पहनने वाले मनुष्य को एक हत्या करने के दोष में फांसी दी गई थी। इन प्रमाणों को देखते हुए, ग्रामवासियों को यह निश्चय करना कठिन था कि वह बिसाती सुखदास का चोर नहीं है। उनके विचार में यह सुखदास की भूल मालूम होती थी। यह भी प्रसिद्ध था कि नट लोग जादू करने में बहुत निपुण होते हैं। अतएव सम्भव है, उस बिसाती-रूपी नट ने सुखदास पर कोई जादू करके उसके घर में प्रवेश किया हो और उसकी सम्पत्ति का पता लगाकर अवसर पाते ही उठा ले गया हो।

यद्यपि थानेदार और ग्रामवासियों का यह पूरा विश्वास था, तथापि महीपसिंह इसके विरुद्ध था। उसने कहा कि स्वयं मैंने इस विसाती से एक कलम खरीदा था। वह सीधा-आदमी मालूम होता था और उसके कानों में बालियां भी नहीं थीं।

इसके प्रतिकूल लगभग आधे दर्जन ऐसे भी मनुष्य थे, जो बालियों के सम्बन्ध में थानेदार के सम्मुख इससे कहीं सबल प्रमाण पेश करने को तैयार थे। लोगों को सन्देह था कि महीप कहीं थानेदार के पास जाकर यह न कहे कि वह उस बिसाती की गिरफ्तारी का वारण्ट रोक लें। यहां तक कि तीसरे दिन जब महीप टांडे की ओर चला, तो लोगों को भ्रम हुआ कि वह थानेदार के पास वारण्ट रोकवाने जा रहा है, और कई आदमी उसे रोकने के लिए वाद-विवाद करने लगे।

यद्यपि महीपसिंह को चोरी के विषय में विशेष उत्साह था, पर इस समय वह टांडा नहीं जा रहा था, बल्कि वह दिलीपसिंह की खोज में जा रहा था। उसको सन्देह हो रहा

था कि कहीं दिलीप मेरे घोड़े का मूल्य जुए में हार गया हो और अब कहीं लज्जा से मुंह छिपाए बैठा हो। दिलीप कभी-कभी एक-एक सप्ताह तक घर से गायब रहता था, इसलिए उसका तीन दिन तक घर से गायब रहना कोई चिन्ता की बात नहीं थी। पर अबकी वह घोड़े के साथ गायब था, इसलिए महीप को इस विषय में बड़ी चिन्ता हो रही थी। अकस्मात् उसे मार्ग में दूर से एक सवार आता दिखाई दिया। महीप ने समझा कि शायद दिलीप है और मेरे ही घोड़े पर सवार है। पर समीप पहुंचने पर विदित हुआ कि घोड़े का व्यापारी साहब खां है।

साहब खां बोला—कुंवर साहब! आपके दिलीपसिंह तो बड़े ही भाग्यवान आदमी हैं।

महीप—क्यों! क्या बात है?

साहब खां—क्या अभी तक वे घर नहीं पहुंचे?

महीप—अभी नहीं। क्या हुआ? उसने मेरे घोड़े को क्या किया?

साहब खां—मैं तो समझ गया था कि घोड़ा आपका है, पर उन्होंने तो उसे अपना बताया था।

महीप—उसने घोड़े को तो कुछ हानि नहीं पहुंचाई।

साहब खां ने मुस्कुराकर कहा—और तो कोई हानि नहीं पहुंचाई, सिर्फ उसकी गर्दन तोड़ दी।

यह कहकर साहब खां ने सारा वृत्तांत सुना दिया।

महीप—यह बहुत बुरा हुआ। मुझे सन्देह था कि घोड़े पर कोई-न-कोई विपत्ति जरूर आएगी, पर मैं उस दगाबाज के झांसे में आ गया।

साहब खां—मेरा ख्याल है कि वह उस वक्त तक न आएंगे, जब तक आपका गुस्सा ठंडा न हो जाए। वह कहीं बाहर नहीं, यहीं कहीं आस-पास गांव में छिपे बैठे हैं।

महीप—हां, दो-चार दिन में घूम-घामकर घर आएगा, और उसे ठिकाना ही कहां है?

साहब खां तो 'आदाब अरज' करके विदा हुआ और महीप घर की तरफ लौटा। उसने संकल्प किया कि सारा माजरा चलकर पिताजी से बयान कर दूं।

नरेशसिंह लम्बे-चौड़े बदन के हृष्ट-पुष्ट आदमी थे। यद्यपि उनकी अवस्था साठ वर्ष की हो चुकी थी, तथापि उनके मुख की कान्ति ज्यों-की-त्यों थी। उनकी आंखें बहुत तीव्र थीं। उनके वस्त्रों से गंवारपन टपकता था; तब भी उनकी बोली और रंग-ढंग में कोई ऐसी बात थी, जो दिल पर उनका रोब जमा देती थी। ठाकुर साहब समझते थे कि मेरा भवन, मेरी कुल-मर्यादा, मेरा गृह-प्रबन्ध, सब उत्तम है। चूंकि वे अपने से धनी मनुष्यों से सहवास न करते थे, इसलिए अपने को सर्वश्रेष्ठ समझते थे। अपनी वास्तविक दशा का ज्ञान उन्हें न होने पाता था।

ज्यों ही महीप उनके सामने पहुंचा, उन्होंने पूछा—कैसे चले?

महीप—मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूं।

नरेशसिंह मसनद लगाकर बैठ गए और बोले—कहो क्या बात है?

महीप—परसों मेरे घोड़े की बुरी गति हो गई।

नरेश—क्या हुआ? क्या उसकी टांगें टूट गईं? मैं तो समझता था कि तुम घोड़े की सवारी में निपुण हो। मैंने अपनी जिन्दगी में कभी ऐसा नहीं किया। यदि मैं ऐसा करता

भी, तो दूसरा घोड़ा मोल ले सकता था। मेरे पिता की ऐसी अवस्था थी कि वे इतनी हानि की कुछ परवाह न करते थे। रहा मैं, सो मेरी हालत तुम देख ही रहे हो। करीम आज ही कह रहा था कि मेरे ऋणग्रस्त होने की चर्चा समाचार-पत्रों में हो रही है। उस दुष्ट के यहां भी मेरे सौ रुपये आते हैं पर वह देने का नाम ही नहीं लेता। यदि तुम्हारे घोड़े की टांग टूट गई है, तो लंगड़े घोड़े पर सवार होना पड़ेगा।

ठाकुर साहब ये बातें एक साथ कहते चले गए। महीप को कुछ कहने का अवसर ही न मिला। वह बोला—उसकी टांग ही नहीं टूटी, बल्कि वह जान से भी गया।

नरेशसिंह—तो तुमने मुझसे यह बात पहले ही क्यों नहीं कही?

महीप—मैंने आपसे इसलिए छिपाया था कि मैं उस घोड़े को बेचकर आपको रुपये देना चाहता था, पर अब मैं असमर्थ हूं। दिलीप नरसों घोड़े को बेचने के लिए ले गया था। उसने साहब खां के हाथ उसे अच्छे दामों पर बेचा भी था पर घुड़दौड़ के मैदान में वह घोड़े को टट्टियां कुदाने लगा। घोड़ा गिरा और मर गया। यदि यह आपत्ति न आ जाती, तो मैं परसों ही आपको सब रुपये दे देता।

'महीपसिंह, तुम क्या कह रहे हो, मेरी समझ में नहीं आता। तुम मुझे कैसे रुपये देने वाले थे? ऐसी क्या बात हो गई कि तुम मुझसे रुपये लेने के बदले देना चाहते हो?

महीप—बात यह है कि मुझसे एक अपराध हो गया है। वह यह है कि करीम ने मुझे सब रुपये उसी दिन दिये थे, जिस दिन मैं उसके पास मांगने गया था। यह रुपये मैंने दिलीप की बातों में आकर उसको उधार दे दिये, पर अब वह लौटाने का नाम ही नहीं लेता। मैंने भी सब्र कर लिया और इरादा किया कि अपना घोड़ा बेचकर, भेद खुलने से पहले ही आपके रुपये अदा कर दूं, पर बीच में यह आफत टूट पड़ी।

अभी महीप अपनी बात समाप्त न करने पाया था कि ठाकुर का रंग क्रोध से लाल हो गया। बोले—हां, खूब तुमने रुपये दिलीप को दे दिये। क्या तुम भी उसके साथ आवारा हो गए? तुम्हारा उसके साथ इतना मेल-जोल कैसे हो गया? क्या तुम भी उसी रास्ते पर चलना चाहते हो? यदि तुम बाज न आये, तो मैं तुम दोनों को घर से बाहर निकाल दूंगा और अपनी शादी कर लूंगा। तुम्हें इस जायदाद की एक पाई भी न मिलेगी। आखिर तुमने दिलीप को रुपये क्यों दे दिये? इसमें कोई-न-कोई भेद अवश्य है।

महीप—इसमें भेद कुछ नहीं है। केवल मुझसे भूल हो गई कि मैंने दिलीप को रुपये दे दिये। मैं आपकी एक कौड़ी भी फिजूल नहीं खर्च करता । मेरा इरादा था कि रुपया आपका अदा कर दूं। मैंने रुपया खाया नहीं। बस, वास्तविक मच्ची बात यही है।

नरेशसिंह—दिलीप है कहां? खड़े-खड़े बातें क्यों बना रहे हो? जाकर उसे पकड़ क्यों नहीं लाते? मैं उससे पूछूं कि उसने किस काम के लिए रुपये लिये हैं? अगर उसने ठीक-ठीक जवाब न दिया तो घर से बाहर निकाल दूंगा। अवश्य निकाल दूंगा।

महीप—वह तो अभी लौटकर नहीं आया।

नरेशसिंह—तो क्या उसकी भी गर्दन टूट गई?

महीप—जी नहीं। उसके तो कहीं चोट भी नहीं आई। वह भय के मारे कहीं चला गया होगा। कुछ दिनों में स्वयं आ जायगा।

नरेश—उसने कुछ बताया नहीं कि किस काम के लिए रुपये ले रहा है।

महीप—उसने मुझे कुछ नहीं बतलाया।
नरेशसिंह—जब तक दिलीप न आये, इस विषय में मुझसे बातचीत न करो।

छठवां अध्याय

टांडे और लालपुर में थानेदार ईसा खां बहुत चतुर समझा जाता था। बिना साक्षी के मुकदमे की तह तक पहुंच जाता था। यद्यपि उस दियासलाई की डिबिया का सुखदास की चोरी से कुछ भी सम्बन्ध न था, पर ईसा खां के मन में यह डिबिया ही सब-कुछ थी। इतना चतुर होने पर भी वह ऐसे बिसाती को खेजता रहा, जिसका नाम तक न मालूम था। हां, उसके केश श्याम और घूंघरवाले थे, जो छुरी, कैंची और छोटे-मोटे गहने बेचता फिरता था और कानों में बालियां पहने हुए था। पर या तो खोज में बहुत तत्परता न थी, या यह हुलिया किसी विशेष बिसाती का नहीं, वरन् सभी बिसातियों का था, इसलिए किसी एक बिसाती पर दोषारोपण करना कठिन था। अतएवं लालपुर के लालबुझक्कड़ का उत्साह ठण्डा हो गया और थानेदार साहब भी हारकर बैठ रहे।

दिलीपसिंह पर किसी को भूलकर भी सन्देह न हो सका था कि वह सुखदास के घर चोरी करेगा। यद्यपि वह आवारा था, पर चोरी करने की आदत का कोई परिचय न था।

चोरी के पश्चात् सुखदास के विचारों में एक अद्‌भुत परिवर्तन हुआ। यद्यपि उसका करघा और घर वर्तमान थे, वह कपड़े भी बुनता था; पर वे अशर्फियां, जिन्हें रोज-रोज प्रति संध्या को देखकर प्रसन्न होता था, अब नहीं थीं; बल्कि चोरी गये धन का ध्यान दिलाकर दिल पर और भी चरके लगाती थीं। वह काम करने में बहुधा कराहने और ठण्डी सांस भरने लगा था। संध्या-समय जब वह काम से छुट्टी पाता, तो दोनों घुटनों पर कुहनियां टेककर और दोनों हाथों से सिर पकड़कर बैठा रहता, उस समय वह अकेला अपनी सम्पत्ति के विचार में मग्न रहता और कभी-कभी दबी हुई आहें भरता था।

नगर-निवासियों को भी उससे सहानुभूति हो गई थी। गांव में जाता, तो लोग उसे अपने पास बिठलाकर बात करते, उसकी चोरी का हाल पूछते और कहते कि यदि तुम दरिद्र हो, तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे। यहां तक कि लोग उसे कभी-कभी भोज्य पदार्थ भी दे देते थे।

लालपुर में एक छोटी-सी पाठशाला भी थी। अध्यापक का नाम सन्तसिंह था। वह ठाकुर नरेशसिंह का कोई दूर का रिश्तेदार भी था। उसकी स्त्री का नाम दयामयी था। एक दिन सन्तसिंह ने आकर सुखदास से कहा—भाई, मन्दिर क्यों नहीं आते हो? तुमसे और लोगों से मेल-मिलाप होगा, तुम्हारा शोक दूर हो जायगा।

सुखदास ने उत्तर दिया—मुझे मन्दिर में घुसने कौन देता है?,

सन्तसिंह—मैं तुम्हें भीतर जाने को थोड़े ही कहता हूं। बाहर सायवान में बैठे रहना, वहीं चरणामृत मिल जायगा।

अन्य कई सज्जनों ने भी सुखदास को मन्दिर आने के लिए जोर दिया। लोग किसी तरह उसके दुःख को भुलवाना चाहते थे, पर सबसे अधिक सहानुभूति दयामयी ने प्रकट

की। वह बड़ी दयावती स्त्री थी। एक दिन वह अपने पुत्र के साथ भोज्य-पदार्थ लेकर सुखदास के घर पर आयी। सुखदास ने उसकी आवाज सुनते ही किवाड़ खोल दिये और उसके बैठने को आसन डाल दिया। दयामयी ने बैठते ही कहा–सुक्खू, यह लो, मैं तुम्हारे लिए कुछ लायी हूं।

सुखदास ने अत्यन्त दीनता से हाथ फैलाया। उस समय दयामयी को उस पर बड़ा ही तरस आया। बोली–तुम्हारा यहां अकेले में बहुत जी घबराता होगा?

'हां, घबराता तो है, पर क्या करूं?'

दयामयी–क्यों, मन्दिर क्यों नहीं आया करते? मगर तुम इतनी दूर रहते हो कि शायद तुमको मन्दिर के घंटे का शब्द भी न सुनायी देता होगा।

सुखदास–नहीं, शब्द क्यों नहीं सुनायी देता, पर वहां जाने को हमारा जी नहीं चाहता। मुझे देवताओं पर श्रद्धा ही नहीं है।

दयामयी–हाय-हाय, कैसी बातें करते हो! तुम मन्दिर में आके देखो तो। दो-ही-चार दिन कीर्तन सुनोगे, तो तुम्हारी श्रद्धा जाग उठेगी। तुम्हारा दुःख दूर हो जायगा।

होली का दिन था। लालपुर में लोग भंग और शराब पी-पीकर नाचते-गाते फिरते थे। कहीं नकलें होनी थीं। नरेशसिंह के मकान पर भंग का पौसरा चल रहा था। मन्दिरों में भी आज भजन की जगह कबीर और फाग गायी जा रही थी। सारे गांव में ऐसा कोई भी मनुष्य न था, जो आमोद-प्रमोद में मग्न न हो। अगर कोई था, तो सुखदास था। सुखदास ने, जो प्रेम और विश्वास से वंचित हो चुका था, कभी किसी का अहित नहीं किया, कभी कुछ कपट नहीं किया। उसने केवल परिश्रम से धनोपार्जन करना ही अपने जीवन का अभीष्ट बना लिया था। पर हाय, ये रुपये भी, जो पंद्रह वर्ष की गाढ़ी कमाई के फल थे, उसके हाथ से निकल गए! आत्मिक सन्तोष का जो निर्बल सहारा रह गया था। वह भी जाता रहा।

संध्या हो चुकी थी। वह अपने द्वार पर उदास एवं मनमारे बैठा था। उस आनन्द और उल्लास में वह कभी नहीं शरीक हुआ और न अब हो सकता था। मालूम होता है कि मन से प्रेम और हर्ष का लोप हो गया, प्राण निकल गया; केवल मृत शरीर रह गया।

सुखदास उसी दशा में बैठा था कि दयामयी अपने छोटे लड़के को गोद में लिये आ पहुंची और बोली–कहो सुक्खू, कैसे उदास बैठे हो? जरा गांव में चले जाते तो चित्त बहलता। यह लो, मैं तुम्हारे वास्ते कुछ पकवान लेती आयी हूं।

सुखदास–(थाल लेने को हाथ बढ़ाते हुए) कहां जाऊं, कहीं जाने को जी नहीं चाहता। मेरी आदत ही ऐसी है।

दयामयी–एकान्त में बैठे-बैठे तुम्हारा जी घबराता होगा और हरदम उन्हीं रुपयों की ओर ध्यान रहता होगा। जो चीज हाथ से निकल गई, उसके लिए सोच करने से क्या होगा? भगवान की ऐसी ही इच्छा थी। वही देते भी हैं, वही छीन भी लेते हैं, हम माया के फेर में पड़कर नाना प्रकार के दुःख भोगते हैं।

सुखदास ने, पंद्रह वर्ष हुए, ईश्वर का ध्यान करना छोड़ दिया था। वह भूल गया था कि ईश्वर भी कोई चीज है। बिना किए हुए पाप के दण्ड ने श्रद्धा और भक्ति को उसके हृदय से मिटा दिया था। इस समय ईश्वर और माया की बात सुनकर उसके मन में श्रद्धा

का भाव जाग्रत नहीं हुआ। उसने उदासीनता से कहा—इन बातों से मेरे चित्त को शान्ति नहीं होती।

दयामयी—कैसी बात कहते हो सुक्खू! तुम्हारे चित्त को और किस बात से शान्ति होगी? संसार में कोई काम अपने मन से थोड़े ही हो जाता है। ईश्वर ही करते हैं और वह हमारे पूर्वजन्म के कर्मों का फल होता है। जिसे तुम हानि समझते हो, वह वास्तव में हानि है—यह कौन जानता है? सम्भव है, ईश्वर ने तुम्हारे मन से शोक को दूर करने के लिए ही यह लीला की हो। यह धन नहीं था, तुम्हारा वैरी था। इसी के कारण तुम ईश्वर से भी बेसुध हो गए थे और कौन जानता है, आज उसने तुम्हारा धन हर लिया तो कल तुमको उससे बहुमूल्य कोई चीज दे दे।

सुखदास उत्सुक होकर बोला—क्या सचमुच यह सम्भव है? वह मुझे मेरा गया हुआ धन दे देगा।

दयामयी—हां, उसकी लीला अपरम्पार है, पर पहले वह यह देखेगा कि तुम्हारे चित्त से लोभ गया या नहीं। जब तक तुम लोभ में पड़े रहोगे, वह तुम्हें कुछ न देगा। भक्ति करो, उपासना करो, वह तुमसे प्रसन्न हो जायगा।

सुखदास—कैसे भक्ति करूं?

दयामयी—मन्दिर में जाओ, कथा-पुराण सुनो, चरणामृत लो, अपने से जो कुछ बन पड़े, दूसरों की सेवा करो, यही उसकी उपासना है।

सुखदास—तब मेरे रुपये मिल जाएंगे?

दयामयी—अभी तुम रुपयों को लिये हो, वह न जाने तुमको क्या दे देगा। मेरा यही छोटा लड़का रामधन महीनों से बीमार था, कोई आशा ही नहीं थी। एक दिन मैं इसे लेकर ठाकुरजी के सामने गयी और विनय करके बोली—जब तक यह अच्छा न हो जायगा, मैं तुम्हारे द्वार से न हटूंगी। आधी रात तक वहीं बैठी रही। सब लोग चले गए। केवल पुजारीजी रह गए। मुझे भी थोड़ी झपकी आने लगी थी कि इतने में इसने आंखें खोल दीं और बोला—अम्मां, कुछ खाने को दो, भूख लगी है। पुजारी ने थोड़ा-सा प्रसाद दे दिया। इसने वहीं बैठे-बैठे खाया और बस, चंगा हो गया। तब से आज तक इसका सिर तक नहीं दुखा। वे भक्तवत्सल हैं। अपने भक्तों की सदा रक्षा करते हैं। बेटा धन्नी, सुक्खू को अपना एक भजन तो सुना दो।

रामधन ने सुखदास की ओर संदेहात्मक दृष्टि से देखा और वह मां के पीछे मुंह छिपाकर खड़ा हो गया।

दयामयी—सुना दो बेटा, अब यही अच्छा नहीं लगता। सुक्खू, तुम इसका भजन सुनकर प्रसन्न हो जाओगे। कोयल की तरह चहकता है।

रामधन की झिझक कुछ कम हुई। वह प्रशंसा सुनकर अपनी योग्यता प्रकट करने के लिये तैयार हो गया। जमीन पर पलथी मारकर बैठ गया और यह भजन गाने लगा—प्रभु मेरे अवगुन चित्त न धरो।

जब भजन समाप्त हो गया, तो दयामयी ने सुखदास से पूछा—इसकी आवाज कैसी प्यारी है?

सुखदास ने विरक्त भाव से कहा—हां, बहुत अच्छा गाता है।

दयामयी—तो आज ठाकुरद्वारे पर जाओगे? वहां खूब भजन होंगे। कई गांव से गवैये, भजनीक आये हुए हैं। ठाकुर नरेशसिंह आज दिल खोलकर खर्च कर रहे हैं।

यह कहकर दयामयी चली गयी। गांव से मृदंग की ध्वनि आ रही थी, पर सुखदास द्वार पर बैठा आकाश की ओर ताकता रहा। उसने किवाड़ भी न बन्द किए। अब किसलिए दरवाजे बन्द करता? वह अन्धकार, जो हृदय में हो गया था, ज्यों-का-त्यों छाया रहा।

सातवां अध्याय

दिलीपसिंह का विवाह तीन साल पहले एक बड़े जमींदार की लड़की से हुआ था। उसका नाम सबलसिंह था। नरेशसिंह को दहेज में कई हजार रुपये मिले थे। इतने उच्च-कुल में विवाह करके वे फूले न समाये थे। बहू विवाह ही में बिदा हो आयी थी और साल-भर ससुराल में रही थी, किन्तु इसी बीच में नरेशसिंह को उसके सम्बन्ध में कुछ ऐसी बातें मालूम हो गई कि उन्होंने बहू को एक दिन भी अपने घर में रखना पसन्द न किया। वह सबलसिंह की विवाहिता स्त्री से न थी, वरन् एक ब्राह्मणी से थी, जिसे सबल ने बैठा लिया था। इस दशा में नरेशसिंह उसे अपने घर में बहू बनाकर समाज के दोषी क्यों बनते? तुरन्त उसे मैके भेज दिया और दिलीपसिंह को कड़ी ताकीद कर दी कि वह अपनी ससुराल जाने का कभी नाम न ले। दिलीप उस स्त्री को चाहता था, पर समाज में दोषी बनने का साहस उसमें भी न था, अतएव वह अभागिन दो साल से मैके में रहती थी।

पर दुर्भाग्यवश उसके जाने के दो-तीन मास बाद उसकी ब्राह्मणी माता का देहान्त हो गया और छठे महीने सबलसिंह ने भी संसार त्याग दिया—उन्हें एक विषधर सर्प ने काट लिया। माता-पिता के उठ जाने के बाद इस अबला का मैके में कोई न रह गया। सबलसिंह के पुत्र और समस्त परिवार के लोग उससे पहले ही से जलते थे। अब उसे नाना प्रकार के दुःख देने लगे। मुसीबत-पर-मुसीबत पड़ी कि उसके एक पुत्री उत्पन्न हो गई। वह स्वयं प्रसूत-ज्वर से पीड़ित रहने लगी। न कोई वैद्य, न कोई औषधि, यहां तक कि कोई बातों से भी दिल को ढाढ़स देने वाला न था। उस पर नित्य जली-कटी बातें सुननी पड़तीं, इससे ज्वर की ज्वाला और भी तेज होती थी। दिनो-दिन ज्वर बढ़ता गया, वह क्षीण होती गई, यहां तक कि उठना-बैठना मुश्किल हो गया। बेचारी अकेले ज्वर में पड़ी हुई अपने नसीब को रोया करती। लड़की की चिन्ता और भी खाए जाती थी। मेरे पीछे इस अनाथ की क्या गति होगी, यह सोचकर उसकी आंखों आंसू की झड़ी लग जाती और हृदय तड़पने लगता।

अन्त में-जब उसे अपने जीवन की कोई आशा न रही, तो उसके मन में पति के अन्तिम दर्शन की प्रबल आकांक्षा हुई। वह उसके चरणों पर सिर रखकर इस कन्या को उसकी गोद में रख देना चाहती थी। यही एकमात्र उसकी जीवनाभिलाषा थी। उसका मन कहता था कि वहां इस कन्या पर लोगों को अवश्य दया आएगी। कम-से-कम उसका पिता तो रक्षा करेगा।

एक दिन, रात को वह उठी और लालपुर चली। लड़की को गोद में लिये हुए एक-एक पग चलना दुस्तर था, किन्तु पति-स्नेह और ममता, उसके पैरों को बढ़ाए लिये आती थी। वह दो-तीन कोस आयी होगी कि दिन निकल आया। उससे अब एक कदम भी नहीं चला जाता था। कुछ देर एक तालाब के किनारे दम लेकर वह फिर चली और संध्या होते-होते लालपुर के निकट आ पहुंची।

अंधेरा हो गया था, पैरों में खड़े होने की शक्ति न थी। भूख, प्यास और ज्वर की आंच ने शरीर को जर्जर कर दिया था। वह थककर एक वृक्ष के नीचे बैठ गई। उसे मालूम हो गया कि अब कुछ क्षणों की और मेहमान हूं। पर उस अंधकार में चारों ओर सन्नाटा था, उसकी निर्बल ध्वनि किसके कानों में पहुंचती? कितना विपदामय दृश्य है! अगर वह दो सौ कदम और चल सकती, तो उसे सुखदास का मकान मिल जाता। उसका दीपक अभी तक वहां से जलता हुआ दिखाई देता था। और यद्यपि वह अपने पति से भेंट न कर सकती, पर उस कन्या को सुरक्षा में छोड़ जाने का सन्तोष प्राप्त कर लेती। पर वह वहां से किसी प्रकार न उठ सकी। उसकी आंखें बन्द हो गईं, हाव-पांव ऐंठने लगे और कण्ठ रुंध गया। एक क्षण में उसके प्राण इस दुःखसागर से प्रस्थान कर गए। मन की आशा मन ही में रह गई।

अबोध बालिका कुछ देर तक तो 'अम्मां-अम्मां' पुकारती रही, पर जब वह जरा भी न मिनकी, तो लड़की को भय लगने लगा। माता के शुष्क स्तन को चबाते-चबाते वह निराश हो गई थी। निदान अंधकार का भय, क्षुधा और मनुष्यों के मिलने की आशा उसे उस दीपक की ओर ले चली, जो वह जलता हुआ देख रही थी।

यह कठिन है कि माता के जीवित रहते हुए वह इतनी बुद्धिमत्ता दिखा सकती, पर संकट में सोयी हुई शक्तियों को चैतन्य कर देने की विशेष शक्ति है। यह उस निःशब्द अन्धकार में गिरती-पड़ती, आशारूपी दीपक की ओर टकटकी लगाए चली आती थी। नहीं, इस कठिन यात्रा का कारण केवल स्वार्थ नहीं था। उसे अपनी माता के विषय में एक अव्यक्त शंका भी थी। उसका अज्ञान हृदय कह रहा था कि माता अवश्य बड़े संकट में है और उसे किसी की जरूरत है!

सुखदास लालटेन जलाए अपने दरवाजे पर चुपचाप बैठा हुआ था। यही समय उसके अशर्फियों के गिनने का था। इस वक्त वह नितान्त शोक में डूब जाया करता था। अकस्मात् उसने एक गोरी-गोरी नन्हीं-सी लड़की को प्रकाश में द्वार की तरफ आते देखा, तो वह चौंक पड़ा। वह अशर्फियों की चिंता में ऐसा मग्न था कि उसे भ्रम हुआ, मानो मेरी अशर्फियां ही वह रूप धारण करके मेरे पास आ रही हैं।

सुखदास को पहले एक-दो बार गुप्त शक्ति का अनुभव हो चुका था, जो उसके भाग्य की विधाता बनी हुई थी। अब फिर उसे भ्रम हुआ कि मानो वही दैविक शक्ति उसको यह अद्भुत चमत्कार दिखा रही है। उसने उस लड़की को गोद में उठाना चाहा, पर वह न आयी और उंगलियों से उस तरफ इशारा करने लगी, जिस तरफ उसकी मां पड़ी थी। सुखदास पहले तो कुछ समझ न सका, पर जब लड़की ने बार-बार उसका हाथ पकड़-पकड़कर उस तरफ इशारे करना शुरू किया, तो वह लड़की का मतलब समझ गया। वह उसके साथ हो लिया। लड़की फिर अन्धकार की तरफ चली, यहां तक कि वह उन

झाड़ों के पास पहुंच गयी, जहां उसकी माता पड़ी थी। यद्यपि माता प्रत्यक्षतः नींद में थी, पर वास्तव में सदैव के लिए सो गई थी। बालिका उसके पास खड़ी होकर 'अम्मां-अम्मां' कहने लगी। सुखदास ने झुककर ध्यानपूर्वक देखा तो उसे झाड़ी के नीचे एक स्त्री पड़ी हुई दिखाई पड़ी।

इधर तो वह बेचारी सुधर्मा मरी हुई पड़ी थी और उधर नरेशसिंह के घर पर उत्सव मनाया जा रहा था। सुखदास इस घटना की सूचना देने के लिए सीधा उनके भवन की ओर चल दिया। जिस कमरे में आनन्दोत्सव हो रहा था, उसमें दो दरवाजे थे। सुखदास ने एक द्वार से प्रवेश किया और वह लड़की को लिये हुए उनके सामने जाकर खड़ा हो गया। नरेशसिंह ने सुखदास को डांट बताकर कहा—अरे, तू इस समय यहां क्यों आया?

सुखदास—आप ही के पास आया हूं। जरा वैद्यजी को मेरे साथ कर दीजिए।

नरेशसिंह—क्यों, क्या बात है?

सुखदास—एक स्त्री तालाब के पास एक झाड़ी के नीचे बेसुध पड़ी हुई है।

कई आदमियों ने सुखदास को चारों ओर से घेर लिया और वे पूछने लगे—यह किसकी लड़की है? कौन स्त्री मर गई है? किसका बच्चा है?

सुखदास लड़की को हृदय से लगाए हुए चुपचाप खड़ा था, किसी को जवाब न देता था। इतने में ही वैद्यजी आ गए। उन्होंने सुखदास से कुछ बातें कीं और तब वे उसके साथ हो लिये। महीपसिंह को भी कुतूहल हुआ। वह भी उनके साथ चला।

वैद्यजी उस स्थान पर पहुंचे और उन्होंने उस स्त्री का निरीक्षण किया। उसका प्राणान्त हो चुका था। सुखदास ने चिन्तित होकर पूछा—क्या अब कोई आशा है?

वैद्यजी ने सिर हिलाकर जवाब दिया—अब ब्रह्मा भी आयें, तो कुछ नहीं कर सकेंगे।

महीप—कुछ मालूम होता है कि कैसे मरी?

वैद्यजी—मुझे तो ऐसा ज्ञात होता है कि बहुत दिनों से बीमार थी। इसका शरीर कितना दुर्बल है। पुराना ज्वर था। कोई बहुत दीन स्त्री है।

अब क्या हो सकता था, वहीं दाह-क्रिया का प्रबन्ध किया गया। कफन के लिए कपड़े न थे। सुखदास दौड़ा हुआ घर आया और कपड़े लाया। चिता तैयार हो गई। पर आग कौन दे, इस प्रश्न पर देर तक विवाद होता रहा। कोई कहता, यह ब्राह्मणों का काम है। पर वहां कोई ब्राह्मण न था। वैद्यजी खड़े मुंह ताकते रहे। महीप से भी कुछ न बन पड़ा। अन्त में महीपसिंह वैद्य के साथ चल दिए, तो सुखदास ने स्वयं जाकर चिता में आग लगा दी। एक क्षण में आग की ज्वाला उठी और सारा शरीर जलकर भस्म हो गया। किसी को यह खबर न हुई कि यह स्त्री कौन थी और कहां से आयी थी। उस समय, जब कि यहां चिता की ज्वाला का प्रकाश फैला हुआ था, ठाकुर साहब का दीवानखाना मोम की बत्तियों से जगमगा रहा था। यही संसार की गति है।

दस दिन तक सुखदास मृतक-संस्कारों में फंसा रहा। लोगों को कुतूहल होता था कि सुखदास जिसका किसी से रास-वास न था, क्यों एक अपरिचित स्त्री की दाह-क्रिया करने पर प्रस्तुत हो गया। इतना ही नहीं, वह उसका संस्कार भी प्रथानुसार कर रहा है। मगर सबसे बड़े आश्चर्य की बात यह थी कि वह उस छोटी-सी बालिका का पालन क्योंकर

करता है? वह, जो मनुष्य से भागता था, जिसकी सूरत देखकर गांव के बालक डर जाते थे, जो एकान्त में विरक्त जीवन व्यतीत करता था जिसने कि कभी शिशुपालन का अनुभव भी नहीं किया था, इस लड़की से क्योंकर इतना प्रेम करने लगा? उसे इस अनाथ पर क्यों इतनी दया आ गई?

दयामयी एक दिन सुखदास के घर पर यह विचित्र दशा देखने गयी। सन्ध्या का समय था, सुखदास चूल्हें के सामने बैठा हुआ खिचड़ी पका रहा था और बालिका कटोरे को लकड़ी से बजाकर प्रसन्न हो रही थी। आग की ज्योति से उसका फूल-सा चेहरा चमक रहा था। दयामयी ने उसे एक नारंगी दी। कृष्णा मां की गोद से उतरकर धीरे-धीरे लड़की के पास गया। पहले दोनों कुछ सकुचाते रहे, फिर साथ-साथ कटोरे को बजाने लगे। दयामयी बोली—सुक्खू, तुम्हें इस लड़की से बड़ा कष्ट होगा। लाओ, मैं इसे अपने घर ले जाऊं, वहां बच्चों के साथ इसका मन बहलता रहेगा।

सुखदास ने लड़की का नाम ज्ञानी रखा था। उसने पूछा—क्यों ज्ञानी, इनके घर जायगी?

ज्ञानी दौड़कर सुखदास से लिपट गई और उसने उसकी पीठ पर सिर रखकर मुंह छिपा लिया।

दयामयी—तुमसे बहुत जल्द हिल गई।

सुखदास—भगवान् की कुछ यही इच्छा है।

इसके पन्द्रहवें दिन महीपसिंह ने सुखदास के पास जाकर कहा—ऐ सुक्खू, मेरी बात मानो। इस लड़की को पुजारीजी के सुपुर्द कर दो।

सुखदास ने गम्भीर भाव से कहा—महाराज! मुझे यह लड़की भगवान् ने दी है। मैं इसे नहीं छोड़ सकता। मेरी अशर्फियां न जाने कहां चली गईं और यह लड़की न जाने कहां से आ गई। जिस ईश्वर ने मेरे रुपये हर लिये थे, उसी ने मुझ पर दया कर यह लड़की मेरे आंसू पोंछने के लिए भेज दी है। मानो मेरी अशर्फियों ही ने यह रूप धारण किया है। यह लड़की चली गई, तो मेरे प्राण भी चले जायंगे।

महीप ने अधिक आग्रह नहीं किया। चलते समय उन्होंने सुखदास को पंद्रह रुपये दिये और कहा—इसके लिए कुछ खिलौने-मिठाई आदि ले लेना। जब फिर जरूरत हो, मुझसे मांग लेना।

सुखदास महीपसिंह की दयालुता से गद्गद हो गया। वह रुपये न लेना चाहता था पर महीप न माना।

क्या वास्तव में महीप इतना दयाशील था? नहीं, यह बात न थी। आज दिलीपसिंह की ससुराल से एक नाई आया था, उससे महीप को सब समाचार मिल गया था। उसे अब कोई सन्देह न था कि यह स्त्री दिलीपसिंह की पत्नी थी और बालिका उसकी लड़की है। उसने नाई को अपने पिता के पास जाने न दिया था। क्योंकि इस समाचार से ठाकुर साहब को और भी लज्जा तथा दुःख होता। नाई को ऊपर-ही-ऊपर लौटा दिया था। यही कारण था कि उस लड़की पर, जो उसकी सगी भतीजी थी, उसे इतनी दया आई थी। उसमें इतना नैतिक बल न था कि लड़की को खुल्लम-खुल्ला अपना लेता, अतएव वह अपनी दुर्बलता को उसी अनाथ-रक्षा की आड़ में छिपाता था।

सुखदास जो कभी भूलकर भी मन्दिर न जाता था, अब उस बालिका की प्राण-रक्षा के लिए नित्य मन्दिर जाने लगा। उसकी अशर्फियां, जिन पर वह जान देता था, उसे प्रत्यक्ष कोई लाभ न पहुंचाती थीं, पर इस बालिका ने उसके जीवन में एक विशेष रंग पैदा कर दिया—उसका सम्बन्ध सांसारिक बातों से करा दिया।

बालिका ज्यों-ज्यों बढ़ती गई, सुखदास के जीवन में भी उसी प्रकार परिवर्तन होता गया। अब वह बहुत कम एकान्तवास करता है। नित्य संध्या समय उस लड़की को हवा खाने के लिए ले जाता, फूल चुनता और उसके बालों में गूंथता। और लोगों से भी उसका प्रेम बढ़ने लगा।

वयोवृद्धि के साथ-साथ ज्ञानी में चंचलता का भी प्रकाश होने लगा। वह भिन्न-भिन्न प्रकार से सुखदास को तंग करती। बहुधा घर से निकल जाती और सुखदास को घंटों परेशान करती। यद्यपि वह कभी-कभी उस पर झुंझलाकर मारने के लिए तैयार हो जाता, पर उसे उससे इतना प्रेम था कि एक ही क्षण में उस पर दया आ जाती और उसके हाथ न उठते।

पन्द्रह वर्ष के बाद सुखदास का लालपुर के निवासियों से मेल-जोल होने लगा। गांव के बच्चे, जो पहले सुखदास के पास आते हुए डरते थे, अब ज्ञानी के कारण उसके घर में घुसे रहते। वह अब किसी बच्चें को डराकर भगाता न था। ज्ञानी की तोतली बातों और उसके पालन-पोषण में वह ऐसा लिप्त हो गया कि उसे अपने लुप्त धन का ध्यान भी न रहा था।

यद्यपि लालपुर के अन्य लोग भी ज्ञानी पर तरस खाते थे, कयोंकि वह बालिका अनाथ थी, पर सबसे अधिक प्रेम महीपसिंह को था। वे बहुधा ज्ञानी के लिए कोई-न-कोई चीज भेजते ही रहते थे।

आठवां अध्याय

बसन्त ऋतु है और शिवरात्रि का शुभ दिन है। आज ज्ञानी को सुखदास के घर आये हुए पंद्रह वर्ष पूरे हो गए हैं। लोग तालाब में स्नान करके शिवजी को जल चढ़ाने के लिए जा रहे हैं। कुछ लोग पूजन करके निकले आते हैं। सुखदास और ज्ञानी भी उन्हीं में हैं। सुखदास के रूपरंग में बहुत अन्तर आ गया है। उसकी कमर झुक गई है। केश बहुत श्वेत हो गये हैं। उसके पीछे-पीछे एक नवयुवती सुन्दरी हाथों में लोटा लिये, सिर झुकाए चली आती है। यही ज्ञानी है। उसकी लटें कन्धों पर छिटकी हुई हैं। शरीर कोमल है, पर ख़ूब भरा हुआ।

ज्ञानी ने कहा—पिताजी, आज फूलों के लिए कितना कष्ट उठाना पड़ा। मैं चाहती हूं कि अपने मकान के आगे बगीचा लगाऊं, जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के फूल हों। मुझे दयामयी की बाटिका बहुत अच्छी लगती है।

सुखदास—बहुत अच्छी बात है। मैं संध्या-समय काम से छुट्टी मिलने के पश्चात् थोड़ी देर तुम्हारी वाटिका बनाया करूंगा। इसी तरह प्रातःकाल काम करने के पहले कुछ

देर काम कर दिया करूंगा। तुमने मुझसे पहले ही क्यों नहीं कहा?

ज्ञानी—तुमसे इतना परिश्रम कैसे होगा? जमीन खोदना, नई मिट्टी लाना, पांस डालना—यह सब तुमसे न होगा। मैं स्वयं यह सब करना चाहती हूं। तुम्हें कष्ट न दूंगी।

इतने ही में एक नवयुवक पीछे से आ गया। यह दयामयी का पुत्र कृष्णसिंह था। उसने कहा—क्या बात है, मैं भी सुनूं!

सुखदास—तुम भी आ गए। ज्ञानी मकान के सामने एक वाटिका लगाने की बातचीत कर रही थी।

कृष्ण—यह प्रस्ताव तो मैं आपसे करने वाला था। जब से महीपसिंह ने यह मकान बनवाया है, तभी से मेरे मन में यह बात आती रही है कि यहां एक वाटिका लग जाती, तो अच्छा होता।

सुखदास—पर इस गांव का तो हाल जानते हो। यहां मजदूर खोजने से भी नहीं मिलते।

कृष्ण—मजदूरों की जरूरत ही क्या है? मुझे बाग में काम करना बहुत अच्छा लगता है। प्रतिदिन आकर कुछ-न-कुछ काम कर दिया करूंगा।

ज्ञानी ने कृष्ण की ओर सप्रेम देखकर कहा—मैं किसी की मदद नहीं चाहती।

कृष्ण—तो क्या मैं भी कोई गैर हूं? इसमें कष्ट कौन-सा होगा। मुझे तो और भी आनन्द आएगा। पौधे जितने चाहूंगा, महीपसिंह के बाग से उखाड़ लाऊंगा। जब वे सुनेंगे तुम बाग लगा रही हो, तो वे सहर्ष पौधे दे देंगे। मैं तो समझता हूं कि अपने माली को भी भेज देंगे।

सुखदास—नहीं, तुम वहां से हमारे नाम से कोई वस्तु न लाना। उन्होंने हमारे लिए मकान बनवा दिया और नित्य कुछ न कुछ भेजते रहते हैं। मैं उन्हें अधिक कष्ट नहीं देना चाहता।

कृष्ण—पोधों में उनके कौन दाम लगते हैं। मैं कल अवश्य उनसे यह जिक्र करूंगा।

यह बात करते-करते ये लोग मार्ग के उस स्थान पर आ गए जहां दो शाखाएं हो गई थीं। कृष्ण विदा होकर एक तरफ चला गया, सुखदास और ज्ञानी ने अपने घर की राह ली। जब अकेले रह गए, तो ज्ञानी ने कहा—मैं अपनी वाटिका में तरकारियां भी लगाऊंगी। उससे हमारी बहुत-सी आवश्यकताएं पूरी हो जायंगी।

जब दोनों घर पहुंचे तो ज्ञानी ने आसन बिछाकर सुखदास के लिए थाली में कुछ फलाहार लाकर रख दिया। सुखदास भोजन करने लगा। जब वह भोजन कर चुका, तो धूप में जाकर नारियल पीने लगा। उसने कोई दो वर्ष से, लोगों के कहने से हुक्का शुरू कर दिया था। लोगों ने उसे बताया कि धूम्रपान से मूर्च्छा का रोग पास नहीं आता। इसका धुआं और भी कितने ही कीट-पतंगों का नाश कर देता है। वैद्यजी ने भी इसका समर्थन किया था। यद्यपि वह तम्बाकू पीने लगा था, पर उसको उसमें कुछ स्वाद न मिलता था। उसे आश्चर्य होता था कि लोग धूम्रपान के क्यों इतने अभ्यासी और इच्छुक होते हैं।

ज्ञानी ने यद्यपि वाटिका लगाने का मुख्य उद्देश्य सुखदास से छिपाया था, पर वास्तव में वह अपनी माता का एक स्मारक चिह्न बनाना चाहती थी, क्योंकि वह झाड़ी जहां, उसकी

माता का देहान्त हुआ था, उस प्रस्तावित वाटिका के ठीक मध्य में आती थी। ज्ञानी का विचार था कि उस झाड़ी के चारों ओर सुगन्धित पुष्प लगा दिए जायं। सुखदास ने कई साल पूर्व उसकी माता के मरने की कथा वयान कर दी थी। ज्ञानी प्रत्यक्षतः तो बहुत प्रसन्न-बदन रहती, पर उसके मन में यह शोकमय प्रश्न उठा करता था कि मेरी माता कौन थी? वह यहां कैसे आयी? क्यों आयी? उसका घर कहां था? उसका रंग-रूप कैसा था? इन प्रश्नों का उसे कोई उत्तर न मिलता था।

वह लोगों से सुना करती थी कि सुखदास ने मेरा लालन-पालन कितने कष्ट से किया है। अब भी वह सुखदास को अन्य साधारण पिताओं से कहीं बढ़कर पाती थी। वह उसके लिए इस बुढ़ापे में कितना परिश्रम करता था, उसके विवाह के निमित्त कितना कष्ट उठाकर धन-संचय करता था, उसके भोजन-वस्त्रादि का कितना ध्यान रखता था। गांव में किसी युवती के पास ऐसे अच्छे आभूषण न थे, जैसे ज्ञानी के पास। ज्ञानी को सगर्व अनुभव होता था कि वह उसके रूप-लावण्य और चाल-ढाल को देखकर कैसा मुदित हो जाता है! अतएव वह उसे पिता समझती थी और उससे प्रेम करती थी। वह कभी कोई ऐसी बात न करती, जिससे सुखदास को दुःख हो। उसकी प्रतयेक आज्ञा का पालन करती। पर पितृ-स्नेह, मातृप्रेम का स्थान न ले सकता था। जब वह अन्य माताओं का अपनी सन्तान के प्रति प्रेम देखती, तो उसका हृदय विदीर्ण हो जाता। वह सोचती, मेरी माता भी ऐसी ही स्नेहमयी होगी। उसकी दीनता और शोकमयी मृत्यु को स्मरण करके वह कभी-कभी रोती थी। उस झाड़ी के समीप से वह जब निकलती, तो उसे अपनी मां की याद आ जाती, रोंगटे खड़े हो जाते। वह कल्पना में कभी-कभी अपनी माता का चित्र खींचा करती थी।

तीसरा पहर था। सुखदास धूप में बैठा हुआ नारियल पी रहा था कि ज्ञानी आकर उसके समीप बैठ गई और बोली—पिताजी, हम उस झाड़ी को वाटिका में मिला लेंगे। मैं वहां ऐसे पौधे लगाऊंगी, जो कभी मुरझा न सकें।

सुखदास—यह बहुत उचित होगा। उस झाड़ी में जब पीले-पीले फूल खिलते हैं, तो कैसे सुहावने मालूम होते हैं! पर यह तो बताओ कि वाटिका की चहारदीवारी कैसे बनेगी? चहारदीवारी न रहेगी, तो गायों और गधों के मारे एक पौधा भी न बचेगा।

ज्ञानी—यहां बहुत से ऐसे पत्थर मिलेंगे, जिन्हें ऊपर-तले रखने से दीवार बन जायेगी।

सुखदास—यह तो ठीक है, पर तुम्हें पत्थरों के लाने में बहुत कष्ट होगा। तुम अत्यन्त सुकुमारी हो।

ज्ञानी (लजाकर)—आप जैसा समझते हैं, मैं उतनी निर्बल नहीं हूं। मैं तो पत्थर अवश्य लाऊंगी। अगर पत्थर काफी न होंगे तो लकड़ियां काट-काटकर बाड़ा बना दिया जायगा। देखो, इस खोह में कितने पत्थर पड़े हैं।

यह कहकर वह खोह की ओर चली और बोली—पिताजी? यहां आकर देखो, आज खोह में कल से बहुत कम पानी रह गया है।

सुखदास ने खोह में झांककर कहा—हां, पानी हट गया है। लोग इसके पानी से अपने खेत सींच रहे हैं।

ज्ञानी—तो हम लोगों को अब नहाने के लिए दूर जाना पड़ेगा।

यह कहकर उसने एक बड़ा-सा पत्थर उठाया और सुखदास के बहुत मना करने पर भी लाकर रख दिया।

नवां अध्याय

ठाकुर नरेशसिंह का कई साल पहले देहान्त हो गया था। अब महीपसिंह घर का स्वामी और उसकी स्त्री केसरी घर की स्वामिनी थी। यह स्त्री गृहकार्यों में बहुत कुशल थी। वह कुप्रबन्ध, जो नरेशसिंह के समय में था, अब नाम-मात्र को भी न रह गया।

पर महीपसिंह का जीवन उतना आनन्दमय न था, जितना होना चाहिए था। उसके अभी तक कोई सन्तान न हुई थी, हालांकि उसकी अवस्था चालीस की हो चुकी थी। वह बहुधा इसी चिन्ता में पड़ा रहता था। उसे इसके सिवाय और कोई आशा न थी कि किसी बालक को गोद ले ले। उसने अपने मन में दयामयी के पुत्र कृष्णसिंह को गोद लेने का निश्चय किया। यह नवयुवक बड़ा सुशील और सच्चरित्र था। पर महीपसिंह ने इस प्रस्ताव को बहुत दिनों तक अपने मन ही में गुप्त रखा कि कहीं केसरी इसे सुनकर दुःखी न हो। पर जब अन्त में दैविक और भौतिक उपायों से कोई काम न निकला, तो उसने विवश होकर केसरी से यह चर्चा की और जैसा भय था, वैसा ही हुआ। केसरी ने उसका विरोध किया। उसका विचार था कि जब ईश्वर ने कोई सन्तान नहीं दी, तो दूसरे की सन्तान को अपना बना लेना व्यर्थ है! उसको सन्देह था कि ऐसी सन्तान अच्छी नहीं होती। उसने महीप से कहा—मैं तुम्हें गोद लेने की कभी सलाह न दूंगी। इसका फल अच्छा नहीं होता है।

महीपसिंह—तुम्हारे मन में यह विचार क्योंकर पैदा हो गया कि ऐसी सन्तान अच्छी नहीं होती। देखो, दयामयी का लड़का कृष्णसिंह कैसा होनहार और सच्चरित्र लड़का है?

केसरी—हां, वह अध्यापक के घर रहकर बुरा नहीं हो सकता। पर तुम्हारे यहां रहे, तो अवश्य बुरा निकलेगा। तुम्हें उस स्त्री की बात याद नहीं है, जो अयोध्या-स्नान के समय मिली थी। उसने कहा था कि मैंने एक लड़के को रास पर बैठाया था। जब वह तेईस वर्ष का हुआ, तो उसने ऐसा अपराध किया कि देश से निकाल दिया गया। ऐसी ही और भी कई घटनाएं सुनने में आई हैं, इसी से मेरा मन हिचकता है।

ज्ञानी जब बारह वर्ष की थी, तभी से महीपसिंह ने यह संकल्प कर लिया था कि उसका कृष्ण से विवाह करूंगा और कृष्ण को गोद ले लूंगा। इस प्रकार ज्ञानी और उसकी सन्तान मेरी उत्तराधिकारिणी हो जायगी। केसरी का दुराग्रह उसके उस पुराने संकल्प को नष्ट कर रहा था। ज्ञानी को उसके पैतृक अधिकार को प्रदान करने का महीप को और कोई उपाय न सूझता था। उसने सोचा, स्त्रियां कितनी स्वार्थिनी होती हैं। केसरी इस काम से मुझे इसलिए रोकती है कि मेरे मरने के उपरान्त इसके हाथ में कोई अधिकार न रह जायगा। इस विचार ने महीप को बहुत शोकातुर कर दिया। यद्यपि उसका चित्त बहुत ही दुःखित हुआ, पर उसने अपने किसी वाक्य या भाव से अपने चित्त की दशा केसरी

पर प्रकट न होने दी। वह पूर्ववत् केसरी से प्रेम और उसका आदर करता रहा। केसरी को यद्यपि अपने पति से सहानुभूति थी, पर वह अपने मन को इस तर्क से समझा लेती कि संसार चिन्तासागर है। यहां चिन्ता से कौन मुक्त हो सकता है। महीप को यदि सन्तान की चिन्ता न होती, तो कोई दूसरी ही चिन्ता होती। इसके साथ ही वह महीप की सेवा-शुश्रूषा बड़े आनन्द और प्रेम से क्रिया करती। अतएव उसकी समझ में यह बात न आती थी कि इन बातों के होते हुए महीप को क्यों सन्तान की चिन्ता होती है।

पर ज्यों-ज्यों दिन गुजरते थे, केसरी को यह अनुभव होता था कि मेरी प्रेम-सेवा से अब पति का चित्त प्रसन्न नहीं होता। वह कोई ऐसा व्यक्ति चाहता है जो जमींदारी के प्रबन्ध में उसकी सहायता कर सके। कारिन्दे और सिपाहियों की निगरानी अब उससे न होती थी। वह प्रत्यक्ष देखता था कि नौकर मुझे लूट रहे हैं, पर वह न तो उन्हें पकड़ सकता था और न दण्ड दे सकता था। इसलिए मन-ही-मन कुड़बुड़ाकर रह जाता था।

एक दिन महीपसिंह किसी काम से बाहर गया हुआ था कि दयामयी की एक बहिन, जो समीप ही के किसी गांव में ब्याही हुई थी, उससे मिलने आयी। उसका नाम यशोदा था। बातों ही बातों में रास की भी चर्चा आ गई। यशोदा ने कहा—तो तुम उन्हें रास लेने से मना क्यों करती हो?

केसरी—मुझे यही शंका होती है कि कहीं वह लड़का हमसे विमुख हो जाय, तो हमारी क्या दशा होगी।

यशोदा—यह केवल तुम्हारा भ्रम है। तुम नहीं जानती हो, मनुष्य की अवस्था ज्यों-ज्यों अधिक होती जाती है, सन्तान की चिन्ता उनके दिल में प्रबल होती जाती है। निस्संतान मनुष्य को अपने सामने अन्धकार के सिवा और कुछ नहीं सूझता। वह सोचता है, मैं किसके लिए जीऊं, किसके लिए धन-संचय करूं, मेरी मुक्ति कौन करेगा, मुझे पिण्ड-पानी कौन देगा? मैं तुमको यह सलाह दूंगी कि तुम आज ही अपने पति को इस विषय में निश्चिन्त कर दो।

ये बातें केसरी के मन में बैठ गई। उसके मन मे प्रबल इच्छा हुई कि महीप शीघ्र ही घर आ जायं। अतः वह द्वार पर खड़ी होकर उसकी वाट देखने लगी।

उसे इस भांति खड़े बहुत देर हो गई। आखिर शाम होते-होते महीपसिंह घर आये। केसरी ने पूछा—आज क्यों बहुत देर हो गई? क्या कहीं और चले गए थे?

महीप ने इसका उत्तर न दिया। वह चुपचाप कपड़े उतारकर रखने लगा। उसका चेहरा बहुत उदास था, मानो हृदय पर कोई बड़ी चोट लगी है। अन्त में वह चारपाई पर बैठ गया और केसरी से बोला—दरवाजे बन्द कर दो। कह दो। इस घड़ी यहां कोई न आये।

जब द्वार बन्द हो गया, तो महीपसिंह ने कहा—मैं यथा शक्ति शीघ्र ही लौटा आया ताकि वह बात, जो मैं तुमसे कहने वाला हूं, कोई और न कह दे। इससे मेरे हृदय को बड़ा आघात पहुंचा है।

केसरी ने आशंकित होकर कहा—मेरे घर तो सब कुशल से हैं?

महीप—हां, सब कुशल से हैं। यह चोट किसी जीवित मनुष्य की ओर से नहीं, दिलीपसिंह की ओर से है। आज मुझे उसकी लाश एक खोह में मिल गई। सुखदास के

घर के पास जो तालाब है, वह खेतों की सिंचाई के कारण बिल्कुल सूख गया है। आज उसमें दिलीप की लाश दो पत्थरों के बीच में फंसी हुई मिली। मेरी घड़ी और मेरा शिकारी चाबुक भी वहीं पड़ा हुआ है।

केसरी पहले बहुत व्याकुल हो गई थी। वास्तविक बात के ज्ञात होने पर उसे ढाढ़स हुआ, किन्तु उसे उस आघात का अनुभव न हुआ, जिससे महीपसिंह का अन्तःकरण पीड़ित हो रहा था। बोली—क्या वे उसमें डूबकर मर गए?

महीपसिंह—ऐसा जान पड़ता है कि उसमें फिसल पड़ा होगा। सुखदास के रुपये भी उसी ने चुराए थे।

यह सुनकर केसरी चौंक पड़ी। अब अवाक् होकर पति की ओर ताकने लगी। या तो उसे अपने कानों पर विश्वास न आया, या वह यह निश्चय न कर सकी कि चित्त के भाव को क्योंकर प्रकट करूं।

महीप—शव के पास ही सुखदास के रुपये ज्यों-के-त्यों थैली में बन्द मिले हैं। कह नहीं सकता कि इस समय मुझे कितनी लज्जा और शोक है। मरे हुए आदमी को क्या कहूं! पर दिलीप ने कुल को कलंकित कर दिया। अब हम सिर उठाने के लायक न रहे। जब यह बात खुल गई, तो फिर अब परदा करने की क्या जरूरत? वह स्त्री, जिसकी लाश गढ़े के किनारे झाड़ी में मिली थी, दिलीपसिंह की पत्नी थी और ज्ञानी उसी की पुत्री है।

केसरी ने शोकातुर होकर कहा—भगवान् की यही इच्छा थी, तो कोई क्या कर सकता था? पर तुमने मुझसे यह भेद छिपाया, इससे ज्ञानी को बड़ी हानि हुई। यदि तुमने यह बात मुझसे पहले ही कही होती, तो हम उस बच्ची के लिए अब तक क्या कुछ न कर डालते? मैं प्रेम से उसका पालन करती। उसे कुल-रीत्यानुसार शिक्षा देती। मैं उसे इतना प्यार करती कि माता भी उससे अधिक न कर सकती। हमारी ही लड़की और हम उससे इतने दिन तक विलग रहे? शोक के मारे केसरी की आंखों से आंसू बहने लगे।

दसवां अध्याय

रात के आठ बजे थे। सुखदास ऐनक लगाए चिराग के सामने बैठा हुआ था। अशर्फियों की थैली उसके निकट एक चौकी पर रखी हुई थी। यद्यपि सुखदास एक समय इन अशर्फियों पर जान देता था, अपने जीवन का मुख्य अवलम्ब समझता था, पर अब उन्हें फिर पाकर उसे विशेष आनन्द नहीं हुआ। उसे केवल इतना ही सन्तोष हुआ कि ज्ञानी के विवाह के लिए मुझे अब रुपयों का तरद्दुद न रहेगा। खूब धूम-धाम से विवाह करूंगा और ऐसी उदारता से दान-दहेज दूंगा कि लोग दंग हो जायं।

रुपये अब उसके आनन्द की वस्तु न थे, उसे अब उनके उपयोग से आनन्द आता था। उसके सिवाय उसके मलिन होने का एक और कारण था। वह सरल धार्मिक सिद्धान्तों का मनुष्य था। वह समझ रहा था कि इन्हीं अशर्फियों के कारण दिलीपसिंह की जान गई। विश्वास था कि भगवान् या अन्य किसी दैविक शक्ति ने दिलीप को खोह

में ढकेल कर उसके कुकर्म का दण्ड दिया है।

इसी प्रकार कुछ देर तक सोच में डूबे रहने के बाद उसने ज्ञानी से कहा—जब अशर्फियां मेरे पास से चली गईं, तो मैं रात-दिन इसी आशा में रहता था कि वे मेरे पास फिर आ जायं। एक दिन मैंने तुम्हें यहां पाया। उस समय तुम बहुत छोटी थीं। तुम्हारा आना मेरे लिए अमृत हो गया, नहीं तो मैं अशर्फियों के शोक में पागल हो जाता।

इतने में ठाकुर महीपसिंह और उनकी स्त्री केसरी ने मकान में प्रवेश किया। ज्ञानी ने उनके लिए आसन बिछा दिया। सुखदास को विस्मय हुआ कि आज ठकुराइन यहां कैसे आयीं। ज्ञानी को भी यही आश्चर्य था।

महीपसिंह ने कहा—सुखदास, मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम्हारे खोए हुए रुपये इतने दिनों के बाद मिल गए। यद्यपि मुझे इसका अत्यन्त शोक और लज्जा है कि मेरे भाई के कारण तुमको यह दुःख सहना पड़ा था। उसके लिए मैं हर तरह से तुम्हारी क्षमाप्रार्थी हूं।

सुखदास—यह सब ईश्वर की गति है, इसमें आपको कोई खेद न करना चाहिए।

महीप—हां, इसके सिवाय मन को और कैसे बोध हो सकता है।

सुखदास—मैं आपसे सत्य कहता हूं कि अशर्फियों को पाकर मुझे आनन्द नहीं हुआ, क्योंकि मुझे भय होता है कि कहीं उनको पाकर मैं ज्ञानी को हाथ से न खो बैठूं। ज्ञानी मुझे इन्हीं अशर्फियों के बदले में तो मिली थी।

महीप ने मुस्कराकर कहा—तुम्हारी शंका बहुत ठीक है, क्योंकि वास्तव में ज्ञानी तुम्हारे पास बहुत दिनों तक न रहेगी। दोनों सुखों को एक साथ कैसे भोग सकोगे? ज्ञानी का विवाह तो करना ही पड़ेगा।

सुखदास—इसमें तो मुझे आप ही की सहायता का भरोसा है।

महीप—मैं इसीलिए तो इस समय तुम्हारे पास आया हूं। मुझे तुमसे एक भेद कहना है, जिसे सुनकर तुम चकित हो जाओगे। ज्ञानी मेरे भाई दिलीपसिंह की बेटी है। यह बात मुझे उसकी माता के मरने के दो-चार दिन पीछे ज्ञात हो गई थी, पर मैंने तुमसे इसका जिक्र नहीं किया, इसलिए कि तुम्हें दुःख होगा। यह तो जानते ही हो कि मेरे कोई सन्तान नहीं है। मैंने यह निश्चय किया है कि ज्ञानी को अब अपने घर ले चलकर रखूं और उसकी जायदाद उसके हवाले कर दूं। मैं दयामयी के पुत्र कृष्णसिंह को गोद लेने का विचार कर रहा हूं। उससे ज्ञानी का विवाह कर दूंगा। तुम भी वृद्ध हुए और तुम्हारी सम्पत्ति भी मिल गई। अब यह करघे का काम छोड़ दो। हमारे यहां चल कर आनन्दपूर्वक रहो। वहां ज्ञानी तुम्हारी आंखों के सामने रहेगी। तुम्हारा मन बहलता रहेगा।

केसरी ने कहा—इन्होंने कल तक मुझसे यह न बतलाया था कि ज्ञानी मेरी भतीजी है, नहीं तो मैं इसे यहां से कब की ले गयी होती। बेटी, तुम अब अपने घर चलकर रहो। मैं जब तक जीऊंगी, तुम्हें अपनी बेटी समझती रहूंगी।

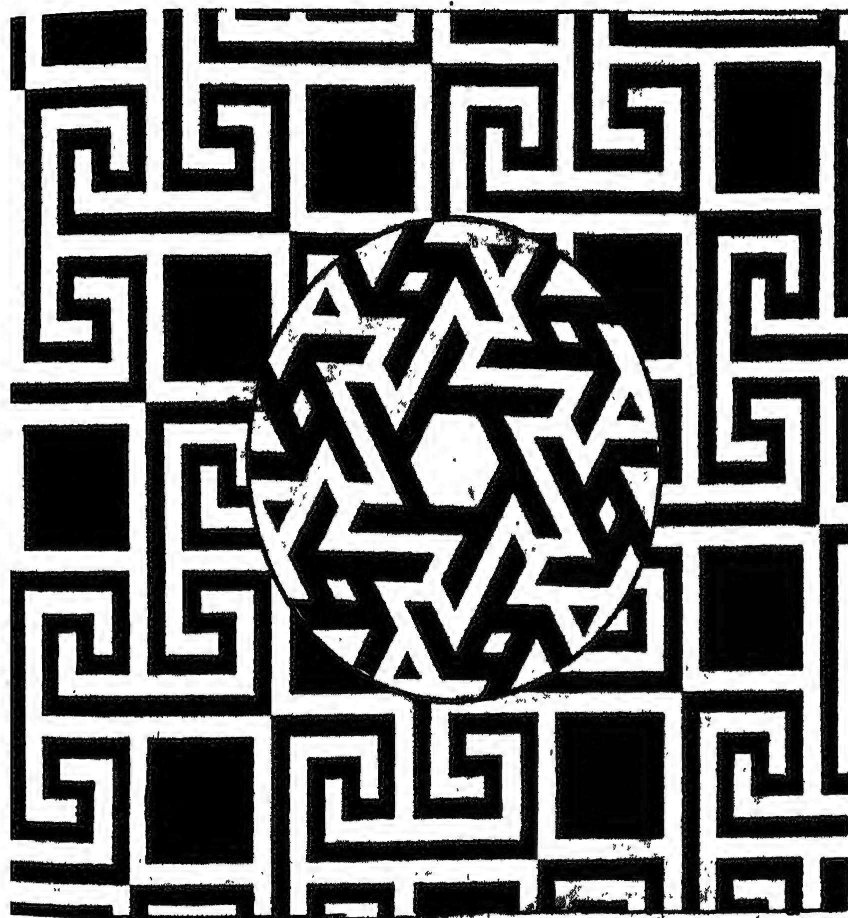
सुखदास ने सजल आंखों से ज्ञानी को देखकर कहा—बेटी तुम अब मेरी नहीं, ठाकुर साहब की पुत्री हो। तुम्हें यह सौभाग्य मुबारक हो, पर मैं ऐसा न जानता था। तुम अब अपने पिता के घर जाओ, मैं अपनी इसी कुटी में रहूंगा। जब तुम्हें देखने को जी चाहेगा, चला आया करूंगा। भगवान तुम्हारी लीला विचित्र है!

यह कह कर सुखदास ने एक दीर्घ निःश्वास लिया और वह आकाश की ओर देखने लगा। ज्ञानी को अब तक वह अपनी लड़की समझता था, पर अब अपने को धोखें में न रख सकता था।

ज्ञानी ने केसरी की ओर देखकर कहा—चाची, आप लोगों ने मुझ अनाथ पर बहुत दया की है और मुझे यह जानकर कि मैं आप ही लोगों की सन्तान हूं, बड़ा गौरव हो रहा है; पर मैं अपने सौभाग्य पर अपने धर्म-पिता के सुख और शान्ति का बलिदान न करूंगी। मुझे आगे चलकर भाग्य चाहे जहां ले जाय, पर मेरा घर यही है और मेरे पिता यही हैं।

केसरी ने गद्‌गद होकर कहा—बेटी, तुमने बहुत उचित बात कही। यही तुम्हारा धर्म है। तुम इस घर में उस समय तक सानन्द रहो, जब तक मैं तुम्हें बेटी के बदले बहू न बना ले जाऊं।

●●●



अहंकार

प्रकाशनकाल : 1923

अहंकार

फ्रांसके सर्वश्रेष्ठ उपन्यास लेखक—

अनाटोली फ्रांसके 'थायस' (Thias)

का हिन्दी अनुवाद,

अनुवादक -

उपन्यास सम्राट श्रीयुत 'प्रेमचन्द'

मिलनेका पता :—

कलकत्ता-पुस्तक-भण्डार,

१०१ ए, हरीसन रोड,

कलकत्ता।

दाम एक रुपया

एक

उन दिनों नील नदी के तट पर बहुत-से तपस्वी रहा करते थे। दोनों ही किनारों पर कितनी ही झोंपड़ियां थोड़ी-थोड़ी दूर पर बनी हुई थीं। तपस्वी लोग इन्हीं में एकान्तवास करते थे और जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे की सहायता करते थे। इन्हीं झोंपड़ियों के बीच में जहां-तहां गिरजे बने हुए थे। प्रायः सभी गिरजाघरों पर सलीब का आकार दिखाई देता था। धर्मोत्सवों पर साधु-सन्त दूर-दूर से वहां आ जाते थे। नदी के किनारे जहां-तहां मठ भी थे। जहां तपस्वी लोग अकेले छोटी-छोटी गुफाओं में सिद्धि प्राप्त करने का यत्न करते थे।

यह सभी तपस्वी बड़े-बड़े कठिन व्रत धारण करते थे, केवल सूर्यास्त के बाद एक बार सूक्ष्म आहार करते। रोटी और नमक के सिवाय और किसी वस्तु का सेवन न करते थे। कितने ही तो समाधियों या कन्दराओं में पड़े रहते थे। सभी ब्रह्मचारी थे, सभी मिताहारी थे। वह ऊन का एक कुरता और कनटोप पहनते थे; रात को बहुत देर तक जागते और भजन करने के पीछे भूमि पर सो जाते थे। अपने पूर्व-पुरुष के पापों का प्रायश्चित करने के लिए वह अपनी देह को भोग-विलास ही से दूर नहीं रखते थे, वरन् उसकी इतनी रक्षा भी न करते थे जो वर्तमान-काल में अनिवार्य समझी जाती है। उनका विश्वास था कि देह को जितना कष्ट दिया जाय, वह जितनी रुग्णावस्था में हो, उतनी ही आत्मा पवित्र होती है। उनके लिए कोढ़ और फोड़ों से उत्तम शृंगार की कोई वस्तु न थी।

इस तपोभूमि में कुछ लोग तो ध्यान और तप में जीवन को सफल करते थे, पर कुछ ऐसे लोग भी थे जो ताड़ की जटाओं को बटकर किसानों के लिए रस्सियां बनाते या फल के दिनों में कृषकों की सहायता करते थे। शहर के रहने वाले समझते थे कि यह चोरों और डाकुओं का गिरोह है, यह सब अरब के लुटेरों से मिलकरा काफिलों को लूट लेते हैं। किन्तु यह भ्रम था। तपस्वी धन को तुच्छ समझते थे, आत्मोद्धार ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। उनके तेज की ज्योति आकाश को भी आलोकित कर देती थी।

स्वर्ग के दूत युवकों या यात्रियों का वेश रहकर इन मठों में आते थे। इसी प्रकार राक्षस और दैत्य हब्शियों या पशुओं का रूप धरकर इस धर्माश्रम में तपस्वियों के बहकाने के लिए विचरा करते थे। जब ये भक्त गण अपने-अपने घड़े लेकर प्रातःकाल सागर की ओर पानी भरने जाते थे तो उन्हें राक्षसों और दैत्यों के पदचिह्न दिखाई देते थे। यह धर्माश्रम वास्तव में एक समरक्षेत्र था जहां नित्य और विशेषतः रात को स्वर्ग और नरक, धर्म और अधर्म में भीषण संग्राम होता रहता था। तपस्वी लोग स्वर्गदूतों तथा ईश्वर की सहायता से व्रत, ध्यान और तप से इन पिशाच-सेनाओं के आघातों का निवारण करते थे। कभी

इन्द्रियजनित वासनाएं उनके मर्मस्थल पर ऐसा अंकुश लगाती थीं कि वे पीड़ा से विकल होकर चीखने लगते थे और उनकी आर्तध्वनि वन-पशुओं की गरज के साथ मिलकर तारों से भूषित आकाश तक गूंजने लगती थी। तब वही राक्षस और दैत्य मनोहर वेश धारण कर लेते थे, क्योंकि यद्यपि उनकी सूरत बहुत भयंकर होती है पर वह कभी-कभी सुन्दर रूप धर लिया करते हैं जिसमें उनकी पहचान न हो सके। तपस्वियों को अपनी कुटियों में वासनाओं के ऐसे दृश्य देखकर विस्मय होता था जिन पर उस समय धुरन्धर विलासियों का चित्त मुग्ध हो जाता। लेकिन सलीब की शरण में बैठे हुए तपस्वियों पर उनके प्रलोभनों का कुछ असर न होता था, और यह दुष्टात्माएं सूर्योदय होते ही अपना यथार्थ रूप धारण करके भाग जाती थीं। कोई उनसे पूछता तो कहते 'हम इसलिए रो रहे हैं कि तपस्वियों ने हमको मारकर भगा दिया है।'

धर्माश्रम के सिद्धपुरुषों का समस्त देश के दुर्जनों और नास्तिकों पर आतंक-सा छाया हुआ था। कभी-कभी उनकी धर्मपरायणता बड़ा विकराल रूप धारण कर लेती थी। उन्हें धर्मस्मृतियों ने ईश्वर-विमुख प्राणियों को दण्ड देने का अधिकार प्रदान कर दिया था और जो कोई उनके कोप का भागी होता था उसे संसार की कोई शक्ति बचा न सकती थी। नगरों में, यहां तक कि इस्कन्द्रिया में भी, इन भषण यन्त्रणाओं की अद्भुत दन्तकथाएं फैली हुई थीं। एक महात्मा ने कई दुष्टों को अपने सोटे से मारा, जमीन फट गयी और वह उसमें समा गये। अतः दुष्टजन, विशेषकर मदारी, विवाहित पादरी और वेश्याएं, इन तपस्वियों से थर-थर कांपते थे।

इन सिद्ध-पुरुषों के योगबल के सामने वन-जन्तु भी शीश झुकाते थे। जब कोई योगी मरणासन्न होता तो एक सिंह आकर पंजों से उसकी कब्र खोदता था इससे योगी को मालूम होता था कि भगवान् उसे बुला रहे हैं। वह तुरन्त जाकर अपने सहयोगियों के मुख चूमता था। तब कब्र में आकर समाधिस्थ हो जाता था।

अब तक इस तपाश्रम का प्रधान एन्टोनी था। पर अब उसकी अवस्था सौ वर्ष की हो चुकी थी। इसीलिए वह इस स्थान को त्याग कर अपने दो शिष्यों के साथ जिनके नाम मकर और अमात्य थे, एक पहाड़ी में विश्राम करने चला गया था। अब इस आश्रम में पापनाशी नाम के एक साधू से बड़ा और कोई महात्मा न था। उसके सत्कर्मों की कीर्ति दूर-दूर फैली हुई थी और कई तपस्वी थे जिनके अनुयायियों की संख्या अधिक थी और जो अपने आश्रमों के शासन में अधिक कुशल थे। लेकिन पापनाशी व्रत और तप में सबसे बढ़ा हुआ था, यहां तक कि वह तीन-तीन दिन अनशन व्रत रखता था रात को और प्रातःकाल अपने शरीर को बाणों से छेदता था और वह घण्टों भूमि पर मस्तक नवाये पड़ा रहता था।

उसके चौबीस शिष्यों ने अपनी-अपनी कुटिया उसकी कुटी के आस-पास बना ली थीं और योगक्रियाओं में उसी के अनुगामी थे। इन धर्मपुत्रों में ऐसे-ऐसे मनुष्य थे जिन्होंने वर्षों डकैतियां डाली थीं, जिनके हाथ रक्त से रंगे हुए थे .। महात्मा पापनाशी के उपदेशों के वशीभूत होकर अब वह धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे और अपने पवित्र आचरणों से अपने सहवर्गियों को चकित कर देते थे। एक शिष्य, जो पहले हब्श देश की रानी का बावरची था, नित्य रोता रहता था। एक और शिष्य फलदा नाम का था जिसने पूरी बाइबिल

कंठस्थ कर ली थी और वाणी में भी निपुण था। लेकिन जो शिष्य आत्मशुद्धि में इन सबसे बढ़कर था वह पॉल नाम का एक किसान युवक था। उसे लोग मूर्ख पॉल कहा करते थे, क्योंकि वह अत्यन्त सरल हृदय था। लोग उसकी भोली-भाली बातों पर हंसा करते थे, लेकिन ईश्वर की उस पर विशेष कृपादृष्टि थी। वह आत्मदर्शी और भविष्यवक्ता था। उसे इलहाम हुआ करता था।

पापनाशी का जीवन अपने शिष्यों की शिक्षा-दीक्षा और आत्मशुद्धि की क्रियाओं में कटता था। वह रात भर बैठा हुआ बाइबिल की कथाओं पर मनन किया करता था कि उनमें दृष्टान्तों को ढूंढ निकाले। इसलिए अवस्था के न्यून होने पर भी वह नित्य परोपकारत रहता था। पिशाचगण जो अन्य तपस्वियों पर आक्रमण करते थे, उसके निकट जाने का साहस न कर सकते थे। रात को सात शृगाल उसकी कुटी के द्वार पर चुपचाप बैठे रहते थे। लोगों का विचार था कि यह सातों दैत्य थे जो उसके योगबल के कारण चौखट के अन्दर पांव न रख सकते थे।

पापनाशी का जन्मस्थान इस्कन्द्रिया था। उसके माता-पिता ने उसे भौतिक विद्या की ऊंची शिक्षा दिलाई थी। उसने कवियों के शृंगार का आस्वादन किया था और यौवनकाल में ईश्वर के अनादित्व, बल्कि अस्तित्व पर भी दूसरों से वाद-विवाद किया करता था। इसके पश्चात् कुछ दिन तक उसने धनी पुरुषों के प्रथानुसार ऐन्द्रिय सुख-भोग में व्यतीत किये, जिसे याद करके अब लज्जा और ग्लानि से उसको अत्यन्त पीड़ा होती थी। वह अपने सहचरों से कहा करता 'उन दिनों मुझ पर वासना का भूत सवार था।' इसका आशय यह कदापि न था कि उसने व्यभिचार किया था; बल्कि केवल इतना कि उसने स्वादिष्ट भोजन किया था और नाट्यशालाओं में तमाशा देखने जाया करता था। वास्तव में बीस वर्ष की अवस्था तब उसने उस काल के साधारण मनुष्यों की भांति जीवन व्यतीत किया था। वही भोगलिप्सा अब उसके हृदय में कांटे के समान चुभा करती थी। दैवयोग से उन्हीं दिनों उसे मकर ऋषि के सदुपदेशों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसकी कायापलट हो गयी। सत्य उसके रोम-रोम में व्याप्त हो गया, भाले के समान उसके हृदय में चुभ गया। बपतिस्मा लेने के बाद वह साल भर तक और भद्र पुरुषों में रहा, पुराने संस्कारों से मुक्त न हो सका। लेकिन एक दिन वह गिरजाघर में गया और वहां उपदेशक को यह पद गाते हुए सुना—'यदि तू ईश्वर-भक्ति का इच्छुक है तो जा, जो कुछ तेरे पास हो उसे बेच डाल और गरीबों को दे दे।' वह तुरन्त घर गया, अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर गरीबों को दान कर दी और धर्माश्रम में प्रविष्ट हो गया और दस साल तक संसार से विरक्त होकर वह अपने पापों का प्रायश्चित करता रहा।

एक दिन वह अपने नियमों के अनुसार उन दिनों का स्मरण कर रहा था, जब वह ईश्वर-विमुख था और अपने दुष्कर्मों पर एक-एक करके विचार कर रहा था। सहास याद आया कि मैंने इस्कन्द्रिया की एक नाट्यशाला में थायस नाम की एक रूपवती नटी देखी थी। वह रमणी रंगशालाओं में नृत्य करते समय अंग-प्रत्यंगों की ऐसी मनोहर छवि दिखाती थी कि दर्शकों के हृदय में वासनाओं की तरंगें उठने लगती थीं। वह ऐसा थिरकती थी, ऐसे भाव बताती थी, लालसाओं का ऐसा नग्न चित्र खीचंती थी कि सजीले युवक और धनी

वृद्ध कामातुर होकर उसके गृहद्वार पर फूलों की मालाएं भेंट करने के लिए आते। थायस उसका सहर्ष स्वागत करती और उन्हें अपनी अंकस्थली में आश्रय देती। इस प्रकार वह केवल अपनी ही आत्मा का सर्वनाश न करती थी, वरन् दूसरों की आत्माओं का भी खून करती थी।

पापनाशी स्वयं उसके मायापाश में फंसते-फंसते रह गया था। वह कामतृष्णा से उन्मत्त होकर एक बार उसके द्वार तक चला गया था। लेकिन वारांगना के चौखट पर वह ठिठक गया, कुछ तो उठती हुई जवानी की स्वाभाविक कातरता के कारण और कुछ इस कारण कि उसकी जेब में रुपये न थे, क्योंकि उसकी माता इसका सदैव ध्यान रखती थी कि वह धन का अपव्यय न कर सके। ईश्वर ने इन्हीं दो साधनों द्वारा उसे पाप के अग्निकुण्ड में गिरने से बचा लिया। किन्तु पापनाशी ने इस असीम दया के लए ईश्वर को धन्यवाद दिया; क्योंकि उस समय उसके ज्ञानचक्षु बन्द थे। वह न जानता था कि मैं मिथ्या आनन्द-भोग की धुन में पड़ा हूं। अब अपनी एकान्त कुटी में उसने पवित्र सलीब के सामने मस्तक झुका दिया और योग के नियमों के अनुसार बहुत देर तक थायस का स्मरण करता रहा क्योंकि उसने मूर्खता और अन्धकार के दिनों में उसके चित्त को इन्द्रिय-सुख-भोग की इच्छाओं से आन्दोलित किया था। कई घण्टे ध्यान में डूबे रहने के बाद थायस की स्पष्ट और सजीव मूर्ति उसके हृदयनेत्रों के आगे आ खड़ी हुई। अब भी उसकी रूपशोभा उतनी ही अनुपम थी जितनी उस समय जब उसने उसकी कुवासनाओं को उत्तेजित किया था। वह बड़ी कोमलता से गुलाब की सेज पर सिर झुकाये लेटी हुई थी। उसके कमलनेत्रों में एक विचित्र आर्द्रता, एक विलक्षण ज्योति थी। उसके नथुने फड़क रहे थे, अधर कली की भांति आधे खुले हुए थे और उसकी बांहें दो जलधाराओं के सदृश निर्मल और उज्ज्वल थीं। यह मूर्ति देखकर पापनाशी ने अपनी छाती पीटकर कहा—"भगवान् तू साक्षी है कि मैं पापों को कितना घोर और घातक समझ रहा हूं।"

धीरे-धीरे इस मूर्ति का मुख विकृत होने लगा, उसके होंठ के दोनों कोने नीचे को झुककर उसकी अन्तर्वेदना को प्रकट करने लगे। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें सजल हो गयीं। उसका वृक्ष उच्छ्वासों से आन्दोलित होने लगा मानो तूफान के पूर्व हवा सनसना रही हो! यह कुतूहल देखकर पापनाशी को मर्मवेदना होने लगी। भूमि पर सिर नवाकर उसने यों प्रार्थना की—'करुणामय ! तूने हमारे अन्तःकरण को दया से परिपूरित कर दिया है, उसी भांति उसे प्रभात के समय खेत हिमकणों से परिपूरित होते हैं। मैं तुझे नमस्कार करता हूं! तू धन्य है। मुझे शक्ति दे कि तेरे जीवों को तेरी दया की ज्योति समझाकर प्रेम करूं, क्योंकि संसार में सब कुछ अनित्य है, एक तू ही नित्य, अमर है। यदि इस अभागिनी स्त्री के प्रति मुझे चिन्ता है तो इसका कारण है कि वह तेरी ही रचना है। स्वर्ग के दूत भी उस पर दयाभाव रखते हैं। भगवान्, क्या यह तेरी ही ज्योति का प्रकाश नहीं है ? उसे इतनी शक्ति दे कि वह इस कुमारी को त्याग दे। तू दयासागर है, उसके पाप महाघोर, घृणित हैं और उनके कल्पनामात्र ही से मुझे रोमांच हो जाता है। लेकिन वह जितनी पापिष्ठा है, उतना ही मेरा चित्त उसके लिए व्यथित हो रहा है। मैं यह विचार करके व्यग्र हो जाता हूं कि नरक के दूत अन्तकाल तक उसे जलाते रहेंगे।'

वह यही प्रार्थना कर रहा था कि उसने अपने पैरों के पास एक गीदड़ को पड़े हुए देखा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसकी कुटी का द्वार बन्द था। ऐसा जान पड़ता था कि वह पशु उसके मनोगत विचारों को भांप रहा है वह कुत्ते की भांति पूंछ हिला रहा था। पापनाशी ने तुरन्त सलीब का आकार बनाया और पशु लुप्त हो गया। उसे तब ज्ञात हुआ कि आज पहली बार राक्षस ने मेरी कुटी में प्रवेश किया। उसने चित्तशान्ति के लिए छोटी-सी प्रार्थना की और फिर थायस का ध्यान करने लगा।

उसने अपने मन में निश्चय किया ? 'हरीच्छा से मैं अवश्य उसका उद्धार करूंगा।' तब उसने विश्राम किया।

दूसरे दिन ऊषा के साथ उसकी निद्रा भी खुली। उसने तुरन्त ईश-वंदना की और पालम सनत से मिलने गया जिनका आश्रम वहां से कुछ दूर था। उसने सन्त महात्मा को अपने स्वभाव के अनुसार प्रफुल्ल-चित्त से भूमि खोदते पाया। पालम बहुत वृद्ध थे। उन्होंने एक छोटी-सी फुलवाड़ी लगा रखी थी। वनजन्तु आकर उनके हाथों को चाटते थे और पिशाचादि कभी उन्हें कष्ट न देते थे।

उन्होंने पापनाशी को देखकर नमसकार किया।

पापनाशी ने उत्तर देते हुए कहा—'भगवान् तुम्हें शान्ति दे।'

पालम—'तुम्हें भी भगवान् शान्ति दे।' यह कहकर उन्होंने माथे का पसीना अपने कुरते की अस्तीन से पौंछा।

पापनाशी—बन्धुवर, जहां भगवान् की चर्चा होती है वहां भगवान् अवश्य वर्तमान रहते हैं। हमारा धर्म है कि अपने सम्भाषणों में भी ईश्वर की स्तुति ही किया करें। मैं इस समय ईश्वर की कीर्ति प्रसारित करने के लिए एक प्रस्ताव लेकर आपकी सेवा में उपस्थिति हुआ हूं।

पालम—'बन्धु पापनाशी, भगवान तुम्हारे प्रस्ताव को मेरे काहू के बेलों की भांति सफल करे। वह नित्य प्रभात को मेरी वाटिका पर ओस-बिन्दुओं के साथ अपनी दया की वर्षा करता है और उसके प्रदान किए हुए खोरों और खरबूजों का आस्वादन करके मैं उसके असीम वात्सल्य की जय-जयकार मानता हूं। उससे यही याचना करनी चाहिए कि हमें अपनी शान्ति की छाया में रखे क्योंकि मन को उद्विग्न करने वाले भीषण दुरावेगों से अधिक भयंकर और कोई वस्तु नहीं है। जब यह मनोवेग जागृत हो जाते हैं तो हमारी दशा मतवालों की-सी हो जाती है, हमारे पैर लड़खड़ाने लगते हैं और ऐसा जान पड़ता है कि अब औंधे मुंह गिरे ! कभी-कभी इन मनोवेगों के वशीभूत होकर हम घातक सुखभोग में मग्न हो जाते हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि आत्मवेदना और इन्द्रियों की अशांति हमें नैराश्य-नद में डुबा देती हैं, जो सुखभोग से कहीं सर्वनाशक है। बन्धुवर, मैं एक महान् पापी प्राणी हूं, लेकिन मुझे अपने दीर्घ जीवनकाल में यह अनुभव हुआ है कि योगी के लिए इस मलिनता से बड़ा और कोई शत्रु नहीं है। इससे मेरा अभिप्राय उस असाध्य उदासीनता और क्षोभ से है जो कुहरे की भांति आत्मा पर परदा डाले रहती है और ईश्वर की ज्योति को आत्मा तक नहीं पहुंचने देती। मुक्ति-मार्ग में इससे बड़ी और कोई बाधा नहीं है, और असुरराज की सबसे बड़ी जीत यही है कि वह एक साधु पुरुष के हृदय में क्षुब्ध और मलिन

विचार अंकुरित कर दे। यदि वह हमारे ऊपर मनोहर प्रलोभनों ही से आक्रमण करता तो बहुत भय की बात न थी। पर शोक ! वह हमें क्षुब्ध करके बाजी मार ले जाता है। पिता एन्टोनी को कभी किसी ने उदास या दुःखी नहीं देखा। उनका मुखड़ा नित्य फूल के समान खिला रहता था। उनके मधुर मुसकान ही से भक्तों के चित्त को शान्ति मिलती थी। अपने शिष्यों में कितने प्रसन्न मुसकान चित्त रहते थे। उनकी मुखकान्ति कभी मनोमालिन्य से धुंधली नहीं हुई। लेकिन हां, तुम किसी प्रस्ताव की चर्चा कर रहे थे ?'

पापनाशी—बन्धु पालम, मेरे प्रस्ताव का उद्देश्य केवल ईश्वर के माहात्म्य को उज्ज्वल करना है। मुझे अपने सदूपरामर्श से अनुगृहीत कीजिए, क्योंकि आप सर्वज्ञ है और पाप की वायु ने कभी आपको स्पर्श नहीं किया।

पालम—बन्धु पापनाशी, मैं इस योग्य भी नहीं हूं कि तुम्हारे चरणों की रज भी माथे पर लगाऊं और मेरे पापों की गणना मरुस्थल के बालुकणों से भी अधिक है। लेकिन मैं वृद्ध हूं और मुझे जो अनुभव है, उससे तुम्हारी सहर्ष सेवा करूंगा।'

पापनाशी—'तो फिर आपसे स्पष्ट कह देने में कोई संकोच नहीं है कि मैं इस्कन्द्रियः में रहने वाली थायस नाम की एक पवित्र स्त्री की अधोगति से बहुत दुःखी हूं। वह समस्त नगर के लिए कलंक है और अपने साथ कितनी ही आत्माओं का सर्वनाश कर रही है।

पालम—'बन्धु पापनाशी, यह ऐसी व्यवस्था है जिस पर हम जितने आंसू बहायें कम हैं। भद्रश्रेणी में कितनी ही रमणियों का जीवन ऐसा ही पापमय है। लेकिन इस दुरवस्था के लिए तुमने कोई निवारण-विधि सोची है ?'

पापनाशी—बन्धु पालम, मैं इस्कन्द्रिया जाऊंगा, इस वेश्या की तलाश करूंगा और ईश्वर की सहायता से उसका उद्धार करूंगा। यही मेरा संकल्प है। आप इसे उचित समझते हैं ?'

पालम—'प्रिय बन्धु, मैं एक अधम प्राणी हूं किन्तु हमारे पूज्य गुरु एन्टोनी का कथन था कि मनुष्य को अपना स्थान छोड़कर कहीं और जाने के लिए उतावली न करनी चाहिए।'

पापनाशी—'पूज्य बन्धु, क्या आपको मेरा प्रस्ताव पसन्द नहीं है ?'

पालम—'प्रिय पापनाशी, ईश्वर न करे कि मैं अपने बन्धु के विशुद्ध भावों पर शंका करूं, लेकिन हमारे श्रद्धेय गुरु एन्टोनी का यह भी कथन था कि जैसे मछलियां सूखी भूमि पर मर जाती हैं, वही दशा उन साधुओं की होती है जो अपनी कुटी छोड़कर संसार के प्राणियों से मिलते-जुलते हैं। वहां भलाई की कोई आशा नहीं।'

यह कहकर संत पालम ने फिर कुदाल हाथ में ली और धरती गोड़ने लगे। वह फल से लदे हुए एक अंजीर के वृक्ष की जड़ों पर मिट्टी चढ़ा रहे थे। वह कुदाल चला ही रहे थे कि झाड़ियों में सनसनाहट हुई और एक हिरन बाग के बाड़े के ऊपर से कूदकर अन्दर आ गया। वह सहमा हुआ था, उसकी कोमल टांगें कांप रही थीं। वह सन्त पालम के पास आया और अपना मस्तक उनकी छाती पर रख दिया।

पालम ने कहा—'ईश्वर को धन्य है जिसने इस सुन्दर वनजन्तु की सृष्टि की।'

इसके पश्चात् पालम सन्त अपने झोंपड़े में चले गये। हिरन भी उनके पीछे-पीछे चला। सन्त ने तब ज्वार की रोटी निकाली और हिरन को अपने हाथों से खिलायी।

पापनाशी कुछ देर तक विचार में मग्न खड़ा रहा। उसकी आंखें अपने पैरों के पास पड़े हुए पत्थरों पर जमी हुई थीं। तब वह पालम सन्त की बातों पर विचार करता हुआ धीरे-धीरे अपनी कुटी की ओर चला। उसके मन में इस समय भीषण संग्राम हो रहा था।

उसने सोचा—सन्त पालम की सलाह अच्छी मालूम होती है। वह दूरदर्शी पुरुष हैं। उन्हें मेरे प्रस्ताव के औचित्य पर संदेह है, तथापि थायस को घात पिशाचों के हाथों में छोड़ देना घोर निर्दयता होगी। ईश्वर मुझे प्रकाश और बुद्धि दे।

चलते-चलते उसने एक तीतर को जाल में फंसे हुए देखा जो किसी शिकारी ने बिछा रखा था। यह तीतरी मालूम होती थी, क्योंकि उसने एक क्षण में नर को जाल के पास उड़कर और जाल के फन्दे को चोंच से काटते देखा, यहां तक कि जाल में तीतरी के निकलने भर का छिद्र हो गया। योगी ने घटना को विचारपूर्ण नेत्रों से देखा और अपनी ज्ञानशक्ति से सहज में इसका आध्यात्मिक आशय समझ लिया। तीतरी के रूप में थामस थी, जो पापजाल में फंसी हुई थी, और जैसे तीतर ने रस्सी का जाल काटकर उसे मुक्त कर दिया था, वह भी अपने योगबल और सदुपदेश से उन अदृश्य बंधनों को काट सकता था जिनमें थामस फंसी हुई थी। उसे निश्चय हो गया कि ईश्वर ने इस रीति से मुझे परामर्श दिया है। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया। उसका पूर्व संकल्प दृढ़ हो गया; लेकिन फिर जो देखा, नर की टांग उसी जाल में फंसी हुई थी जिसे काटकर उसने मादा को निवृत्त किया था तो वह फिर भ्रम में पड़ गया।

वह सारी रात करवटें बदलता रहा। उषाकाल के समय उसने एक स्वप्न देखा, थायस की मूर्ति फिर उसके सम्मुख उपस्थित हुई। उसके मुखचन्द्र पर कलुषित विलास की आभा न थी, न वह अपने स्वभाव के अनुसार रत्नजटिल वस्त्र पहने हुए थी। उसका शरीर एक लम्बी-चौड़ी चादर से ढका हुआ था, जिससे उसका मुंह भी छिप गया था केवल दो आंखें दिखाई दे रही थीं, जिनमें से गाढ़े आंसू बह रहे थे।

यह स्वप्नदृश्य देखकर पापनाशी शोक से विह्वल हो रोने लगा और यह विश्वास करके कि यह दैवी आदेश है, उसका विकल्प शान्त हो गया। वह तुरन्त उठ बैठा, जरीब हाथ में ली जो ईसाई धर्म का एक चिह्न था। कुटी के बाहर निकला, सावधानी से द्वार बन्द किया, जिसमें वनजन्तु और पक्षी अन्दर जाकर ईश्वर-ग्रन्थ को गन्दा न कर दें जो उसके सिरहाने रखा हुआ था। तब उसने अपने प्रधान शिष्य फलदा को बुलाया और उसे शेष तेईस शिष्यों के निरीक्षण में छोड़कर, केवल एक ढीला-ढाला चोगा पहने हुए नील नदी की ओर प्रस्थान किया। उसका विचार था कि लाइबिया होता हुआ मकदूनिया नरेश (सिकन्दर) के बसाये हुए नगर में पहुंच जाऊं। वह भूख, प्यास और थकन की कुछ परवाह न करते हुए प्रातःकाल से सूर्यास्त तक चलता रहा। जब वह नदी के समीप पहुंचा तो सूर्य क्षितिज की गोद में आश्रय ले चुका था और नदी का रक्त-जल कंचन और अग्नि के पहाड़ों के बीच में लहरें मार रहा था।

वह नदी के तटवर्ती मार्ग से होता हुआ चला। जब भूख लगती किसी झोंपड़ी के द्वार पर खड़ा होकर ईश्वर के नाम पर कुछ मांग लेता। तिरस्कारों, उपेक्षाओं और कटुवचनों को प्रसन्नता से शिरोधार्य करता था। साधु को किसी से अमर्ष नहीं होता। उसे न डाकुओं का

भय था, न वन के जन्तुओं का, लेकिन जब किसी गांव या नगर के समीप पहुंचता तो कतराकर निकल जाता। वह डरता था कि कहीं बालवृन्द उसे आंखमिचौली खेलते हुए न मिल जायें अथवा किसी कुएं पर पानी भरने वाली रमणियों से सामना न हो जाय जो घड़ों को उतारकर उससे हास-परिहास कर बैठें। योगी के लिए यह सभी शंका की बातें हैं, न जाने कब भूत-पिशाच उसके कार्य में विघ्न डाल दें। उसे धर्मग्रन्थों में यह पढ़कर भी शंका होती है कि भगवान् नगरों की यात्रा करते थे और अपने शिष्यों के साथ भोजन करते थे। योगियों की आश्रम-वाटिका के पुष्प जितने सुन्दर हैं, उतने ही कोमल भी होते हैं, यहां तक कि सांसारिक व्यवहार का एक झोंका भी उन्हें झुलसा सकता है, उनकी मनोरम शोभा को नष्ट कर सकता है। इन्हीं कारणों से पापनाशी नगरों और बस्तियों से अलग-अलग रहता था कि अपने स्वजातीय भाईयों को देखकर उसका चित्त उनकी ओर आकर्षित न हो जाय।

वह निर्जन मार्गों पर चलता था। संध्या समय जब पक्षियों का मधुर कलरव सुनाई देता और समीर के मन्द झोंके आने लगते तो अपने कनटोप को आंखों पर खींच लेता कि उस पर प्रकृति-सौन्दर्य का जादू न चल जाय। इसके प्रतिकूल भारतीय ऋषि-महात्मा प्रकृति-सौन्दय के रसिक होते थे। एक सप्ताह की यात्रा के बाद वह सिलसिल नाम के स्थान पर पहुंचा। वहां नील नदी एक संकरी घाटी में होकर बहती है और उसके तट पर पर्वतश्रेणी की दुहरी मेंड़-सी बनी हुई है। इसी स्थान पर मिस्र-निवासी अपने पिशाच-पूजा के दिनों में मूर्तियां अंकित करते थे। पापनाशी को एक बृहदाकार 'स्फिक्स'* ठोस पत्थर का बना हुआ दिखाई दिया। इस भय से कि इस प्रतिमा में अब भी पैशाचिक विभूतियां संचित न हों, पापनाशी ने सलीब का चिह्न बनाया और प्रभु मसीह का स्मरण किया। तत्क्षण उसने प्रतिमा के एक कान में से एक चमगादड़ को उड़कर भागते देखा। पापनाशी को विश्वास हो गया कि मैंने उस पिशाच को भगा दिया जो शताब्दियों से इन प्रतिमा में अड्डा जमाये हुए था। उसका धर्मोत्साह बढ़ा, उसने एक पत्थर उठाकर प्रतिमा के मुख पर मारा। चोट लगते ही प्रतिमा का मुख इतना उदास हो गया कि पापनाशी को उस पर दया आ गयी। उसने उसे सम्बोधित करके कहा—हे प्रेत, तू भी उन प्रेतों की भांति प्रभु पर ईमान ला जिन्हें प्रातःस्मरणीय एन्टोनी ने वन में देखा था, और मैं ईश्वर, उसके पुत्र और अलख ज्योति के नाम पर तेरे उद्धार करूंगा।

यह वाक्य समाप्त होते ही स्फिक्स के नेत्रों में अग्निज्योति प्रस्फुटित हुई, उसकी पलकें कांपने लगीं और उसके पाषाण-मुख से 'मसीह' की ध्वनि निकली; माना पापनाशी के शब्द प्रतिध्वनित हो गये हों। अतएव पापनाशी ने दाहिना हाथ उठाकर उस मूर्ति को आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार पाषाणहृदय में भक्ति का बीज आरोपित करके पापनाशी ने अपनी राह ली। थोड़ी देर के बाद घाटी चौड़ी हो गयी। वहां किसी बड़े नगर के अवशिष्ट चिह्न दिखाई दिये। बचे हुए मन्दिर जिन खम्भों पर अवलम्बित थे, वास्तव के उन बड़ी-बड़ी पाषाण मूर्तियों ने ईश्वरीय प्रेरणा से पापनाशी पर एक लम्बी निगाह डाली। वह भय से कांप उठा।

*एक कल्पित जीव जिसका अंग सिंह का होता है और मुख स्त्री का।

इस प्रकार वह सत्रह दिन तक चलता रहा, क्षुधा से व्याकुल होता तो वनस्पतियां उखाड़कर खा लेता और रात को किसी भवन के खंडहर में, जंगली बिल्लियों और चूहों के बीच में सो रहता। रात को ऐसी स्त्रियां भी दिखायी देती थीं जिनके पैरों की जगह कांटेदार पूंछ थी। पापनाशी को मालूम था कि यह नारकीय स्त्रियां हैं और वह सलीब के चिह्न बनाकर उन्हें भगा देता था।

अठारहवें दिन पापनाशी को बस्ती से बहुत दूर एक दरिद्र झोंपड़ी दिखाई दी। वह खजूर के पत्तियों की थी और उसका आधा भाग बालू के नीचे दबा हुआ था। उसे आशा हुई कि इनमें अवश्य कोई सन्त रहता होगा। उसने निकट आकर एक बिल के रास्ते अन्दर झांका (उसमें द्वार न थे) तो एक घड़ा, प्याज का एक गट्ठा और सूखी पत्तियों का बिछावन दिखाई दिया। उसने विचार किया, यह अवश्य किसी तपस्वी की कुटिया है, और उनके शीघ्र ही दर्शन होंगे हम दोनों एक-दूसरे के प्रति शुभकामना-सूचक पवित्र शब्दों का उच्चारण करेंगे। कदाचित् ईश्वर अपने किसी कौए द्वारा रोटी का एक टुकड़ा हमारे पास भेज देगा और हम दोनों मिलकर भोजन करेंगे।

मन में यह बातें सोचता हुआ उसने सन्त को खोजने के लिए कुटिया की परिक्रमा की। एक सौ पग भी न चला होगा कि उसे नदी के तट पर एक मनुष्य पाल्थी मारे बैठा दिखाई दिया। वह नग्न था। उसके सिर और दाढ़ी के बाल सन हो गये थे और शरीर ईंट से भी ज्यादा लाल था। पापनाशी ने साधुओं के प्रचलित शब्दों में उसका अभिवादन किया—'बन्धु, भगवान् तुम्हें शान्ति दे, तुम एक दिन स्वर्ग के आनन्द-लाभ करो।'

पर उस वृद्ध पुरुष ने इसका कुछ उत्तर न दिया, अचल बैठा रहा। उसने मानो कुछ सुना ही नहीं। पापनाशी ने समझा कि वह ध्यान में मग्न है। वह हाथ बांधकर उकडूं बैठ गया और सूर्यास्त तक ईश-प्रार्थना करता रहा। जब अब भी वह वृद्ध पुरुष मूर्तिवत् बैठा रहा तो उसने कहा—'पूज्य पिता, अगर आपकी समाधि टूट गयी है तो मुझे प्रभु मसीह के नाम पर आशीर्वाद दीजिए।'

वृद्ध पुरुष ने उसकी ओर बिना ताके ही उत्तर दिया—

'पथिक, मैं तुम्हारी बात नहीं समझा और न प्रभु मसीह को ही जानता हूं।'

पापनाशी ने विस्मित होकर कहा—'अरे जिसके प्रति ऋषियों ने भविष्यवाणी की, जिसके नाम पर लाखों आत्माएं बलिदान हो गयीं, जिसकी सीजर ने भी पूजा की, और जिसका जयघोष सिलसिली की प्रतिमा ने अभी-अभी किया है, क्या उस प्रभु मसीह के नाम से भी तुम परिचित नहीं हो ? क्या यह सम्भव है ?'

वृद्ध—'हां मित्रवर, यह सम्भव है, और यदि संसार में कोई वस्तु निश्चित होती तो निश्चित भी होता !'

पापनाशी उस पुरुष की अज्ञानावस्था पर बहुत विस्मित और दुखी हुआ। बोला—'यदि तुम प्रभु मसीह को नहीं जानते तो तुम्हारा धर्म-कर्म सब व्यर्थ है, तुम कभी अनन्त-पद नहीं प्राप्त कर सकते।'

वृद्ध—'कर्म करना, या कर्म से हटना दोनों ही व्यर्थ हैं। हमारे जीवन और मरण में कोई भेद नहीं।'

पापनाशी—'क्या, क्या? क्या तुम अनन्त जीवन के आकांक्षी नहीं हो ? लेकिन तुम तो तपस्वियों की भांति वन्यकुटी में रहते हो ?'

'हां, ऐसा जान पड़ता है।'

'क्या मैं तुम्हें नग्न और विरत नहीं देखता ?'

'हां, ऐसा जान पड़ता है।'

'क्या तुम कन्दमूल नहीं खाते और इच्छाओं का दमन नहीं करते ?'

'हां, ऐसा जान पड़ता है।'

'क्या तुमने संसार के मायामोह को नहीं त्याग दिया है ?'

'हां, ऐसा जान पड़ता है। मैंने उन मिथ्या वस्तुओं को त्याग दिया है, जिन पर संसार के प्राणी जान देते हैं।'

'तुम मेरी भांति एकान्तसेवी, त्यागी और शुद्धाचरण हो। किन्तु मेरी भांति ईश्वर की भक्ति और अनन्त सुख की अभिलाषा से यह व्रत नहीं धारण किया है। अगर तुम्हें प्रभु मसीह पर विश्वास नहीं है तो तुम क्यों सात्विक बने हुए हो ? अगर तुम्हें स्वर्ग के अनन्त सुख की अभिलाषा नहीं है तो संसार के पदार्थों को क्यों नहीं भोगते ?'

वृद्ध पुरुष ने गम्भीर भाव से जवाब दिया—'मित्र, मैंने संसार की उत्तम वस्तुओं का त्याग नहीं किया है और मुझे इसका गर्व है कि मैंने जो जीवन-पथ ग्रहण किया है वह सामान्तयः सन्तोषजनक है, यद्यपि यथार्थ तो यह है कि संसार की उत्तम या निकृष्ट, भले या बुरे जीवन का भेद ही मिथ्या है। कोई वस्तु स्वतः भली या बुरी, सत्य या असत्य, हानिकर या लाभकर, सुखमय या दुखमय नहीं होती। हमारा विचार ही वस्तुओं को इन गुणों में आभूषित करता है, उसी भांति जैसे नमक भोजन को स्वाद प्रदान करता है।'

पापनाशी ने अपवाद किया—'तो तुम्हारे मतानुसार संसार में कोई वस्तु स्थायी नहीं है ? तुम उस थके हुए कुत्ते की भांति हो, जो कीचड़ में पड़ा सो रहा है—अज्ञान के अन्धकार में अपना जीवन नष्ट कर रहे हो। तुम प्रतिमावादियों से भी गये-गुजरे हो।'

'मित्र, कुत्तों और ऋषियों का अपमान करना समान ही व्यर्थ है। कुत्ते क्या हैं, हम यह नहीं जानते। हमको किसी वस्तु का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं।'

'तो क्या तुम भ्रांतिवादियों में हो ? क्या तुम उस निबुद्धि, कर्महीन सम्प्रदाय में हो, जो सूर्य के प्रकाश में और रात्रि के अन्धकार में कोई भेद नहीं कर सकते ?'

'हां मित्र, मैं वास्तव में भ्रमवादी हूं। मुझे इस सम्प्रदाय में शान्ति मिलती है, चाहे तुम्हें हास्यास्पद जान पड़ता हो। क्योंकि एक ही वस्तु भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में भिन्न-भिन्न रूप धारण कर लेती है। इस विशाल मीनारों ही को देखो। प्रभात के पती-प्रकाश में यह केशर के कंगूरों-से देख पड़ते हैं। सन्ध्या समय सूर्य की ज्योति दूसरी ओर पड़ती है और काले-काले त्रिभुजों के सदृश दिखाई देते हैं। यथार्थ में किस रंग के हैं, इसका निश्चय कौन करेगा ? बादलों ही को देखो। वह कभी अपनी दमक से कुन्दन को जलाते हैं, कभी अपनी कालिमा से अन्धकार को मात करते हैं। विश्व के सिवाय और कौन ऐसा निपुण है जो उनके विविध आवरणों की छाया उतार सके ? कौन कह सकता है कि वास्तव में इस मेघ-समूह का क्या रंग है ? सूर्य मुझे ज्योतिर्मय दीखता है, किन्तु मैं उसके तत्त्व को नहीं

जानता। मैं आग को जलते हुए देखता हूं, पर नहीं जानता कि कैसे जलती है और क्यों जलती है ? मित्रवर, तुम व्यर्थ मेरी उपेक्षा करते हो। लेकिन मुझे इसकी भी चिन्ता नहीं कि कोई मुझे क्या समझता है, मेरा मान करता है या निन्दा।'

पापनाशी ने फिर शंका की—'अच्छा एक बात और बता दो। तुम इस निर्जन वन में प्याज और छुहारे खाकर जीवन व्यतीत करते हो ? तुम इतना कष्ट क्यों भोगते हो। तुम्हारे ही समान मैं भी इन्द्रियों का दमन करता हूं और एकान्त में रहता हूं। लेकिन मैं यह सब कुछ ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए, स्वर्गीय आनन्द भोगने के लिए करता हूं। यह एक मार्जनीय उद्देश्य है, परलोक-सुख के लिए ही इस लोक में कष्ट उठाना बुद्धि-संगत है। इसके प्रतिकूल व्यर्थ बिना किसी उद्देश्य के संयम और व्रत का पालन करना, तपस्या से शरीर और रक्त तो घुलाना निरी मूर्खता है। अगर मुझे विश्वास न होता—हे अनादि ज्योति, इस दुर्वचन के लिए क्षमा कर—अगर मुझे उस सत्य पर विश्वास है, जिसका ईश्वर ने ऋषियों द्वारा उपदेश किया है, जिसका उसके परमप्रिय पुत्र ने स्वयं आचरण किया है, जिसकी धर्म सभाओं ने और आत्म-समर्पण करने वाले महान् पुरुषों ने साक्षी दी है—अगर मुझे पूर्ण विश्वास न होता कि आत्मा की मुक्ति के लिए शारीरिक संयम और निग्रह परमावश्यक है; यदि मैं भी तुम्हारी ही तरह अज्ञेय विषयों से अनभिज्ञ होता, तो मैं तुरन्त सांसारिक मनुष्यों में आकर मिल जाता, धनोपार्जन करता, संसार के सुखी पुरुषों की भांति सुख-भोग करता और विलासदेवी के पुजारियों से कहता—आओ मेरे मित्रो, मद के प्याले भर-भर पिलाओ, फूलों के सेज बिछाओ, इत्र और फुलेल की नदियां बहा दो। लेकिन तुम कितने बड़े मूर्ख हो कि व्यर्थ ही इन सुखों को त्याग रहे हो, तुम बिना किसी लाभ की आशा के यह सब कष्ट उठाते हो। देते हो, मगर पाने की आशा नहीं रखते। और नकल करते हो हम तपस्वियों की, जैसे अबोध बन्दर दीवार पर रंग पोतकर अपने मन में समझता है कि मैं चित्रकार हो गया। इसका तुम्हारे पास क्या जवाब है ?'

वृद्ध ने सहिष्णुता से उत्तर दिया—'मित्र, कीचड़ में सोने वाले कुत्ते और अबोध बन्दर का जवाब ही क्या ?'

पापनाशी का उद्देश्य केवल इस वृद्ध पुरुष को ईश्वर का भक्त बनाना था। उसकी शान्तिवृत्ति पर वह लज्जित हो गया। उसका क्रोध उड़ गया। बड़ी नम्रता से क्षमा-प्रार्थना की—'मित्रवर, अगर मेरा धर्मोत्साह औचित्य की सीमा से बाहर हो गया है तो मुझे क्षमा करो। ईश्वर साक्षी है कि मुझे तुमसे नहीं, केवल तुम्हारी भ्रान्ति से घृणा है ! तुमको इस अन्धकार में देखकर मुझे हार्दिक वेदना होती है, और तुम्हारे उद्धार की चिन्ता मेरे रोम-रोम में व्याप्त हो रही है। तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर दो, मैं तुम्हारी उक्तियों का खण्डन करने के लिए उत्सुक हूं।'

वृद्ध पुरुष ने शान्तिपूर्वक कहा—'मेरे लिए बोलना या चुप रहना एक ही बात है। तुम पूछते हो, इसलिए सुनो—जिन कारणों से मैंने वह सात्विक जीवन ग्रहण किया है। लेकिन मैं तुमसे इनका प्रतिवाद नहीं सुनना चाहता। मुझे तुम्हारी वेदना, शान्ति की कोई परवाह नहीं, और न इसकी परवाह है कि तुम मुझे क्या समझते हो। मुझे न प्रेम है न घृणा। बुद्धिमान पुरुष को किसी के प्रति ममत्व या द्वेष न होना चाहिए। लेकिन तुमने जिज्ञासा

की है, उत्तर देना मेरा कर्तव्य है। सुनो, मेरा नाम टिमाक्लीज है। मेरे माता-पिता धनी सौदागर थे। हमारे यहां नौकाओं का व्यापार होता था। मेरा पिता सिकन्दर के समान चतुर और कार्यकुशल था; पर वह उतना लोभी न था। मेरे दो भाई थे। वह भी जहाजों ही का व्यापार करते थे। मुझे विद्या का व्यसन था। मेरे बड़े भाई को पिताजी ने एक धनवान युवती से विवाह करने पर बाध्य किया, लेकिन मेरे भाई शीघ्र ही उससे असन्तुष्ट हो गये। उनका चित्त अस्थिर हो गया। इसी बीच में मेरे छोटे भाई का उस स्त्री से कुलषित सम्बन्ध हो गया। लेकिन वह स्त्री दोनों भाइयों में किसी को भी न चाहती थी। उसे एक गवैये से प्रेम था। एक दिन भेद खुल गया। दोनों भाइयों ने गवैये का वध कर डाला। मेरी भावज शोक से अव्यवस्थित-चित्त हो गयी। यह तीनों अभागे प्राणी बुद्धि को वासनाओं की बलिदेवी पर चढ़ाकर शहर की गलियों में फिरने लगे। नंगे, सिर के बाल बढ़ाये, मुंह से फिचकुर बहाते, कुत्ते की भांति चिल्लाते रहते थे। लड़के उन पर पत्थर फेंकते और उन पर कुत्ते दौड़ाते। अन्त में तीनों मर गये और मेरे पिता ने अपने ही हाथों से उन तीनों को कब्र में सुलाया। पिताजी को भी इतना शोक हुआ कि उनका दाना-पानी छूट गया और वह अपरिमित धन रहते हुए भी भूख से तड़प-तड़पकर परलोक सिधारे। मैं एक विपुल-सम्पति का वारिस हो गया। लेकिन घर वालों की दशा देखकर मेरा चित्त संसार से विरक्त हो गया था। मैंने उस सम्पत्ति को देशाटन में व्यय करने का निश्यच किया। इटली, यूनान, अफ्रीका आदि देशों की यात्रा की; पर एक प्राणी भी ऐसा न मिला जो सुखी या ज्ञानी हो। मैंने इस्कन्द्रिया और एथेन्स में दर्शन का अध्ययन किया और उसके अपवादों को सुनते मेरे कान बहरे हो गये। निदान देश-विदेश घूमता हुआ मैं भारतवर्ष में जा पहुंचा और वहां गंगा-तट पर मुझे एक नग्न पुरुष के दर्शन हुए जो वहीं तीस वर्षों से मूर्ति की भांति निश्चल पद्मासन लगाये बैठा हुआ था। उसके तृणवत् शरीर पर लताएं चढ़ गयी थीं और उसकी जटाओं में चिड़ियों ने घोंसले बना लिये थे, फिर भी वह जीवित था। उसे देखकर मुझे अपने दोनों भाइयों की, भावज की, गवैये की, पिता की याद आयी और तब मुझे ज्ञात हुआ कि यही एक ज्ञानी पुरुष है। मेरे मन में विचार उठा कि मनुष्यों के दुःख के तीन कारण होते हैं। या तो वह वस्तु नहीं मिलती जिसकी उन्हें अभिलाषा होती है अथवा उसे पाकर उन्हें उसके हाथ से निकल जाने का भय होता है अथवा जिस चीज को वह बुरा समझते हैं उसका उन्हें सहन करना पड़ता है। इन विचारों को चित्त से निकाल दो और सारे दुःख आप-ही-आप शांत हो जायेंगे। संसार के श्रेष्ठ पदार्थों का परित्याग कर दूंगा और उसी भारतीय योगी की भांति मौन और निश्चल रहूंगा।'

पापनाशी ने इस कथन को ध्यान से सुना और तब बोला—'टिमो, मैं स्वीकार करता हूं कि तुम्हारा कथन बिल्कुल अर्थ-शून्य नहीं है। संसार की धन-सम्पत्ति को तुच्छ समझना बुद्धिमानों का काम है। लेकिन अपने अनन्त सुख की उपेक्षा करना परले सिरे की नादानी है। इससे ईश्वर के क्रोध की आशंका है। मुझे तुम्हारे अज्ञान पर बड़ा दुःख है और मैं सत्य का उपदेश करूंगा जिसमें तुमको उसके अस्तित्व का विश्वास हो जाय और तुम आज्ञाकारी बालक के समान उसकी आज्ञा पालन करो।'

टिमाक्लीज ने बात काटकर कहा—'नहीं-नहीं, मेरे सिर अपने धर्म-सिद्धान्तों का बोझ

मत लादो। इस भूल में न पड़ो कि तुम मुझे अपने विचारों के अनुकूल बना सकोगे। यह तर्क-वितर्क सब मिथ्या है। कोई मत न रखना ही मेरा मत है। किसी सम्प्रदाय में न होना ही मेरा सम्प्रदाय है। मुझे कोई दुःख नहीं, इसलि कि मुझे किसी वस्तु की ममता नहीं। अपनी राह जाओ, और मुझे इस उदासीनावस्था से निकालने की चेष्टा न करो। मैंने बहुत कष्ट झेले हैं और यह दशा ठण्डे जल से स्नान करने की भांति सुखकर प्रतीत हो रही है।'

पापनाशी को मानव चरित्र का पूरा ज्ञान था। वह समझ गया कि इस मनुष्य पर ईश्वर की कृपादृष्टि नहीं हुई है और उसकी आत्मा के उद्धार का समय अभी दूर है। उसने टिमाक्लीज का खण्डन न किया कि कहीं उसकी उद्धारक-शक्ति घातक न बन जाय क्योंकि विधर्मियों से शास्त्रार्थ करने में कभी-कभी ऐसा हो जाता है कि उनके उद्धार के साधन उनके अपकार के यन्त्र बन जाते हैं। अतएव जिन्हें सद्ज्ञान प्राप्त है। उन्हें बड़ी चतुराई से उसका प्रचार करना चाहिए। उसने टिमाक्लीज को नमस्कार किया और एक लम्बी सांस खींचकर रात ही को फिर यात्रा पर चल पड़ा।

सूर्योदय हुआ तो उसने जल-पक्षियों को नदी के किनारे एक पैर पर खड़े देखा। उनकी पीली और गुलाबी गर्दनों को प्रतिबिम्ब जल में दिखाई देता था। कोमल बेत वृक्ष अपनी हरी-हरी पत्तियों को जल पर फैलाए हुए थे। स्वच्छ आकाश में सारसों का समूह त्रिभुज के आकर में उड़ रहा था और झाड़ियों में छिपे हुए बुगलों की आवाज सुनाई देती थी। जहां तक निगाह जाती थी नदी का हरा जल हिलकोरे मार रहा था। उजले पाल वाली नौकाएं चिड़ियों की भांति तैर रही थीं, और किनारों पर जहां-तहां श्वेत भवन जगमगा रहे थे। तटों पर हल्का कुहरा छाया हुआ था और द्वीपों के आड़ से जो, खजूर, फूल और फल के वृक्षों से ढके हुए थे; ये बत्तख, लालसर, हारिल आदि ये चिड़ियां कलरव करती हुई निकल रही थी। बाईं ओर मरुस्थल तक हरे-भरे खेतों और वृक्ष-पुंजों की शोभा आंखों को मुग्ध कर देती थी। पके हुए गेहूं के खेतों पर सूर्य की किरणें चमक रही थीं और भूमि से भीनी-भीनी सुगन्ध के झोके आते थे। यह प्रकृति-शोभा देखकर पापनाशी ने घुटनों पर गिरकर ईश्वर की वन्दना की—'भगवान्, मेरी यात्रा समाप्त हुई। तुझे धन्यवाद देता हूं। दयानिधि, जिस प्रकार तूने इन अंजीर के पौधों पर ओस की बूंदों की वर्षा की है, उसी प्रकार थायस पर, जिसे तूने अपने प्रेम से रचा है, अपनी दया की दृष्टि कर। मेरी हार्दिक इच्छा है कि वह तेरी प्रेममयी रक्षा के अधीन एक नवविकसित पुष्प की भांति स्वर्ग-तुल्य जेरुशलम में अपने यश और कीर्ति का प्रसार करे।'

और तदुपरान्त उसे जब कोई वृक्ष फूलों से सुशोभित अथवा कोई चमकीले परों वाला पक्षी दिखाई देता तो उसे थायस की याद आती। कई दिन तक नदी के बायें किनारे पर, एक उर्वर और आबाद प्रान्त में चलने के बाद, वह इस्कन्द्रिया नगर में पहुंचा, जिसे यूनानियों ने 'रमणीक' और 'स्वर्णमयी' की उपाधि दे रखी थी। सूर्योदय की एक घड़ी बीत चुकी थी, जब उसे एक पहाड़ी के शिखर पर वह विस्तृत नगर नजर आया, जिसकी छतें कंचनमयी प्रकाश में चमक रही थीं। वह ठहर गया और मन में विचार करने लगा—'यही वह मनोरम भूमि है जहां मैंने मृत्युलोक में पर्दापण किया, यहीं मेरे पापमय जीवन की उत्पत्ति हुई, यहीं मैंने विषाक्त वायु का आलिंगन किया, इसी विनाशकारी रक्तसागर में मैंने

जल-विहार किये ! वह मेरा पालना है जिसके घातक गोद में मैंने काम की मधुर लोरियां सुनीं। साधारण बोलचाल में कितना प्रतिभाशाली स्थान है, कितना गौरव से भरा हुआ। इस्कन्द्रिया ! मेरी विशाल जन्मभूमि ! तेरे बालक तेरा पुत्रवत् सम्मान करते हैं, यह स्वाभाविक है। लेकिन योगी प्रकृति को अवहेलनीय समझता है, साधु बहिरूप को तुच्छ समझता है, प्रभु मसीह का दास जन्मभूमि को विदेश समझता है, और तपस्वी इस पृथ्वी का प्राणी ही नहीं। मैंने अपने हृदय को तेरी ओर से फेर लिया है। मैं तुमसे घृणा करता हूं। मैं तेरी सम्पत्ति को, तेरी विद्या को, तेरे शास्त्रों को, तेरे सुख-विलास को, और तेरी शोभा को घृणित समझता हूं, तू पिशाचों का क्रीड़ा-स्थल है, तुझे धिक्कार है ! अर्थ-सेवियों की अपवित्र शय्या नास्तिकता का वितण्डा क्षेत्र, तुझे धिक्कार है ! और जिबरील, तू अपने पैरों से उस अशुद्ध वायु को शुद्ध कर दे जिसमें मैं सांस लेने वाला हूं, जिसमें यहां के विषैले कीटाणु मेरी आत्मा को भ्रष्ट न कर दें।'

इस तरह अपने विचारोद्‌गारों को शान्त करके पापनाशी शहर में प्रविष्ट हुआ। यह द्वार पत्थर का एक विशाल मण्डप था। उसके मेहराब की छांह में कई दरिद्र भिक्षुक बैठे हुए पथिकों के सामने हाथ फैला-फैलाकर खैरात मांग रहे थे।

एक वृद्धा स्त्री ने जो वहां घुटनों के बल बैठी थी, पापनाशी की चादर पकड़ ली और उसे चूमकर बोली—'ईश्वर के पुत्र, मुझे आशीर्वाद दो कि परमात्मा मुझसे सन्तुष्ट हो। मैंने परलौकिक सुख के निमित्त इस जीवन में अनेक कष्ट झेले। तुम देव पुरुष हो, ईश्वर ने तुम्हें दुःखी प्राणियों के कल्याण के लिए भेजा है, अतएव तुम्हारी चरण-रज कंचन से भी बहुमूल्य है।'

पापनाशी ने वृद्धा को हाथों से स्पर्श करके आशीर्वाद दिया। लेकिन वह मुश्किल से बीस कदम चला होगा कि लड़कों के एक गोल ने उसको मुंह चिढ़ाना और उस पर पत्थर फेंकना शुरू किया और तालियां बजाकर कहने लगे—'जरा अपनी विशालमूर्ति देखिए ! आप लंगूर से भी काले हैं, और आपकी दाढ़ी बकरे की ढाढ़ी से लम्बी है। बिल्कुल भुतना मालूम होता है। इसे किसी बाग में मारकर लटका दो, कि चिड़ियां हौवा समझकर उड़ें। लेकिन नहीं, बाग में गया तो सेंत में सब फूल नष्ट हो जायेंगे। उसकी सूरत ही मनहूस है। इसका मांस कौओं को खिला दो।' यह कहकर उन्होंने पत्थर की एक बाढ़ छोड़ दी।

लेकिन पापनाशी ने केवल इतना कहा—'ईश्वर, तू इस अबोध बालकों को सुबुद्धि दे, वह नहीं जानते कि वे क्या करते हैं।

वह आगे चला तो सोचने लगा—उस वृद्धा स्त्री ने मेरा कितना सम्मान किया और इन लड़कों ने कितना अपमान किया। इस भांति एक ही वस्तु को भ्रम में पड़े हुए प्राणी भिन्न-भिन्न भावों से देखते हैं। यह स्वीकार करना पड़ेगा कि टिमाक्लीज मिथ्यावादी होते हुए भी बिल्कुल निबुद्धि न था। वह अंधा तो इतना जानता था कि मैं प्रकाश से वंचित हूं। उसका वचन इन दुराग्रहियों से कहीं उत्तम था जो घने अंधकार में बैठे पुकारते हैं—'वह सूर्य है !' वह नहीं जानते कि संसार में सब कुछ माया, मृग-तृष्णा, उड़ता हुआ बालू है। केवल ईश्वर ही स्थायी है।

वह नगर में बड़े वेग से पांव उठाता हुआ चला। दस वर्ष के बाद देखने पर भी उसे

वहां का एक-एक पत्थर परिचित मालूम होता था, और प्रत्येक पत्थर उसके मन में किसी दुष्कर्म की याद दिलाता था। इसलिए उसने सड़कों से जड़े हुए पत्थरों पर अपने पैरों को पटकना शुरू किया और जब पैरों से रक्त बहने लगा तो उसे आनन्द-सा हुआ। सड़क के दोनों किनारों पर बड़े-बड़े महल बने हुए थे जो सुगन्ध की लपटों से अलसित जान पड़ते थे। देवदार, छुहारे आदि के वृक्ष सिर उठाये हुए इन भवनों को मानो बालाकों की भांति गोद में खिला रहे थे। अधखुले द्वारों में से पीतल की मूर्तियां संगरममर के गमलों में रखी हुई दिखाई दे रही थीं और स्वच्छ जल के हौज कुंजों की छाया में लहरें मार रहे थे। पूर्ण शान्ति छाई थी। शोरगुल का नाम न था। हां, कभी-कभी द्वार से आने वाली वीणा की ध्वनि कान में आ जाती थी। पापनाशी एक भवन के द्वार पर रुका जिसकी सायबान के स्तम्भ युवतियों की भांति सुन्दर थे। दीवारों पर यूनान के सर्वश्रेष्ठ ऋषियों की प्रतिमाएं शोभा दे रही थीं। पापनाशी ने अफलातूं, सुकरात अरस्तू, एपिक्युरस और जिनों की प्रतिमाएं पहचानीं और मन में कहा—इन मिथ्या-भ्रम में पड़ने वाले मनुष्यों को कीर्तियों को मूर्तियों को मूर्तिमान करना मूर्खता है। अब उनके मिय्या विचारों की कलई खुल गयी। उनकी आत्मा अब नरक में पड़ी सड़ रही है, और यहां तक कि अफलातूं भी, जिसने संसार को अपनी प्रगल्भता से गुंजरित कर दिया था, अब पिशाचों के साथ तू-तू मैं-मैं कर रहा है। द्वार पर एक हथौड़ी रखी हुई थी। पापनाशी ने द्वार खटखटाया। एक गुलाम ने तुरन्त द्वार खोल दिया और एक साधु को द्वार पर खड़े देखकर कर्कश स्वर में बोला—'दूर हो यहां से, दूसरा द्वार देख, नहीं तो मैं डंडे से खबर लूंगा।'

पापनाशी ने सरल भाव से कहा—'मैं कुछ भिक्षा मांगने नहीं आया हूं। मेरी केवल यही इच्छा है कि मुझे अपने स्वामी निसियास के पास ले चलो।'

गुलाम ने और भी बिगड़कर जवाब दिया—'मेरा स्वामी तुम-जैसे कुत्तों से मुलाकात नहीं करता !'

पापनाशी—'पुत्र, जो मैं कहता हूं वह करो, अपने स्वामी से इतना ही कह दो कि मैं उससे मिलना चाहता हूं।'

दरबान ने क्रोध के आवेश में आकर कहा—'चला जा यहां से, भिखमंगा कहीं का !' और अपनी छड़ी उठाकर उसने पापनाशी के मुंह पर जोर से लगाई। लेकिन योगी ने छाती पर हाथ बांधे, बिना जरा भी उत्तेजित हुए, शांत भाव से यह चोट सह ली और तब विनयपूर्वक फिर वही बात कही—'पुत्र, मेरी यावना स्वीकार करो।'

दरबान ने चकित होकर मन में कहा—यह तो विचित्र आदमी है जो मार से भी नहीं डरता और तुरन्त अपने स्वामी से पापनाशी का संदेशा कह सुनाया।

निसियास अभी स्नानागार से निकला था। दो युवतियां उसकी देह पर तेल की मालिश कर रही थीं। वह रूपवान पुरुष था, बहुत ही प्रसन्नचित्त। उसके मुख पर कोमल व्यंग की आभा थी। योगी को देखते ही वह उठ खड़ा हुआ और हाथ फैलाये हुए उसकी ओर बढ़ा—आओ मेरे मित्र, मेरे बन्धु, मेरे सहपाठी, आओ। मैं तुम्हें पहचान गया, यद्यपि तुम्हारी सूरत इस समय आदमियों की-सी नहीं, पशुओं की-सी है। आओ, मेरे गले से लग जाओ। तुम्हें वह दिन याद है जब हम व्याकरण, अलंकार और दर्शन शास्त्र पढ़ते थे ? तुम

उस समय भी तीव्र और उद्दण्ड प्रकृति के मनुष्य थे, पर पूर्ण सत्यवादी तुम्हारी तृप्ति एक चुटकी भर नमक में हो जाती थी पर तुम्हारी दानशीलता का वारापार न था। तुम अपने जीवन की भांति अपने धन की भी कुछ परवाह न करते थे। तुममें उस समय भी थोड़ी-सी झक थी जो बुद्धि की कुशलता का लक्षण है। तुम्हारे चरित्र की विचित्रता मुझे बहुत भली मालूम होती थी। आज तुमने उस वर्षों के बाद दर्शन दिये हैं। हृदय से मैं तुम्हारा स्वागत करता हूं। तुमने वन्यजीवन को त्याग दिया और ईसाइयों की दुर्मति को तिलांजलि देकर फिर अपने सनातन धर्म पर आरूढ़ हो गये, इसके लिए तुम्हें बधाई देता हूं। मैं सफेद पत्थर पर इस दिन का स्मारक बनाऊंगा।

यह कहकर उसने उन दोनों युवती सुन्दरियों को आदेश दिया—'मेरे प्यारे मेहमान से हाथों-पैरों और दाढ़ी में सुगन्ध लगाओ।'

युवतियां हंसीं और तुरन्त एक थाल, सुगन्ध की शीशी और आईना लायीं। लेकिन पापनाशी ने कठोर स्वर से उन्हें मना किया और आंखें नीची कर लीं कि उन पर निगाह न पड़ जाय क्योंकि दोनों नग्न थीं। निसियास ने तब उसके लिए गावत किये और बिस्तर मंगाये और नाना प्रकार के भोजन और उत्तम शराब उसके सामने रखी। पर उसने घृणा के साथ सब वस्तुओं को सामने से हटा दिया। तब बोला—'निसियास, मैंने उस सत्पथ का परित्याग नहीं किया जिसे तुमने गलती से 'ईसाइयों की दुर्मति' कहा है। वही तो सत्य की आत्मा और ज्ञान का प्राण है। आदि में केवल 'शब्द' था और 'शब्द' के साथ ईश्वर था, और शब्द ही ईश्वर था। उसी ने समस्त ब्रह्माण्ड की रचना की। वही जीवन का स्रोत है और जीवन मानव-जाति का प्रकाश है।'

निसियास ने उत्तर दिया—'प्रिय पापनाशी, क्या तुम्हें आशा है कि मैं अर्थहीन शब्दों के झंकार से चकित हो जाऊंगा ? क्या तुम भूल गये कि मैं स्वयं छोटा-मोटा दार्शनिक हूं? क्या तुम समझते हो कि मेरी शांति उन चिथड़ों से हो जायेगी जो कुछ निर्बुद्धि मनुष्यों ने इमलियस के वस्त्रों से फाड़ लिया है, जब इसलियस, फलातूं, और अन्य तत्त्वज्ञानियों से मेरी शांति न हुई ? ऋषियों के निकाले हुए सिद्धान्त केवल कल्पित कथाएं हैं जो मानव सरलहृदयता के मनोरंजन के निमित्त कही गयी है। उनको पढ़कर हमारा मनोरंजन उसी भांति होता है जैसे अन्य कथाओं को पढ़कर।'

इसके बाद अपने मेहमान का हाथ पकड़कर वह उसे एक कमरे में ले गया जहां हजारों लपेटे हुए भोजपत्र टोकरों में रखे हुए थे। उन्हें दिखाकर बोला—'यही मेरा पुस्तकालय है। इसमें उन सिद्धान्तों में से कितनों ही का संग्रह है जो ज्ञानियों ने सृष्टि के रहस्य की व्याख्या करने के लिए आविष्कृत किये हैं। सेरापियम* में भी अतुल धन के होते हुए; सब सिद्धान्तों का संग्रह नहीं है ! लेकिन शोक ! यह सब केवल रोगपीड़ित मनुष्यों के स्वप्न हैं !'

उसने तब अपने मेहमान को एक हाथीदांत की कुरसी पर जबरदस्ती बैठाया और खुद भी बैठ गया। पापनाशी ने इन पुस्तकों को देखकर त्यौरियां चढ़ायीं और बोला—'इन

---

*मिश्र के रहने वालों के आराध्य देव का मन्दिर।

सबको अग्नि की भेंट कर देना चाहिए।'

निसियास बोला—'नहीं प्रिय मित्र, यह घोर अनर्थ होगा; क्योंकि रुग्ण पुरुषों को मिटा दें तो संसार शुष्क और नीरस हो जायेगा और हम सब विचार-शैथिल्य के गढ़े में जा पड़ेंगे।

पापनाशी ने उसी ध्वनि में कहा—'यह सत्य है कि मूर्तिवादियों के सिद्धान्त मिथ्या और भ्रान्तिकारक हैं। किन्तु ईश्वर ने, जो सत्य का रूप है, मानव-शरीर धारण किया और अलौकिक विभूतियों द्वारा अपने को प्रकट किया और हमारे साथ रहकर हमारा कल्याण करता रहा।'

निसियास ने उत्तर दिया—प्रिय पापनाशी, तुमने यह बात अच्छी कही कि ईश्वर ने मानव-शरीर धारण किया। तब तो वह मनुष्य ही हो गया। लेकिन तुम ईश्वर और उसके रूपान्तरों का समर्थन करने तो नहीं आये ? बतलाओ तुम्हें मेरी सहायता तो न चाहिए ? मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं ?'

पापनाशी बोला—'बहुत कुछ ! मुझे ऐसा हीं सुगन्धित एक वस्त्र दे दो जैसा तुम पहने हुए हो। इसके साथ सुनहरे खड़ाऊं और एक प्याला तेल भी दे दो कि मैं अपनी दाढ़ी और बालों में चुपड़ लूं। मुझें एक हजार स्वर्ण मुद्राओं की एक थैली भी चाहिए निसियास ! मैं इंश्वर के नाम पर और पुरानी मित्रता के नाते तुमसे सहायता मांगने आया हूं।'

निसियास ने अपना सर्वोत्तम वस्त्र मंगवा दिया। उस पर किमख्वाब के बूटों में फूलों और पशुओं के चित्र बने हुए थे। दोनों युवतियों ने उंसे खोलकर उसका भड़कीला रंग दिखाया और प्रतीक्षा करने लगी कि पापनाशी अपना ऊनी लबादा उतारे तो पहनायें, लेकिन पापनाशी ने जोर देकर कहा कि यह कदापि नहीं हो सकता। मेरी खाल चाहे उतर जाय पर यह ऊनी लबादा नहीं उतर सकता। विवश होकर उन्होंने उस बहुमूल्य वस्त्र को लबादे के ऊपर ही पहना दिया। दोनों युवतियां सुन्दरी थीं, और वह पुरुषों से शरमाती न थीं। वह पापनाशी को इस दुरंगे भेष में देखकर खूब हंसी। एक ने उसे अपना प्यारा सामन्त कहा, दूसरी ने उसकी दाढ़ी खींच ली। लेकिन पापनाशी ने उन दृष्टिपात तक न किया। सुनहरी खड़ाऊं पैरों में पहनकर और थैली कमरे में बांधकर उसने निसियास से कहा, जो विनोद-भाव से उसकी ओर देख रहा था—निसियास, इन वस्तुओं के विषय में कुछ सन्देह मत करना, क्योंकि मैं इनका सदुपयोग करूंगा।

निसियास बोला—'पिय मित्र, मुझे कोई सन्देह नहीं हैं क्योंकि मेरा विश्वास है कि मनुष्य में न भले काम करने की क्षमता है न बुरे। भलाई व बुराई का आधार केवल प्रथा पर है। मैं उन सब कुत्सित व्यवहारों का पालन करता हूं जो इस नगर में प्रचलित हैं। इसलिए मेरी गणना सज्जन पुरुषों में है। अच्छा मित्र, अब जाओ और चैन करो।'

लेकिन पापनाशी ने उससे अपना उद्देश्य प्रकट करना अवश्यक समझा। बोला—'तुम थायस को जानते हो जो यहां की रंगशालाओं का शृंगार है ?'

निसियास ने कहा—'वह परम सुन्दरी है और किसी समय मैं उसके प्रेमियों में था। उसकी खातिर मैंने एक कारखाना और दो अनाज के खेत बेच डाले और उसके विरहवर्णन में निकृष्ट कविताओं से भरे हुए तीन ग्रन्थ लिख डाले। यह निर्विवाद है कि

रूप-लालित्य संसार की सबसे प्रबल शक्ति है, और यदि हमारे शरीर की रचना ऐसी होती कि हम यावज्जीवन उस पर अधिकृत रह सकते तो हम दार्शनिकों के जीवन और भ्रम, माया और मोह, पुरुष और प्रकृति की जरा भी परवाह न करते। लेकिन मित्र, मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि तुम अपनी कुटी छोड़कर केवल थायस की चर्चा करने के लिए आये हो।'

यह कहकर निसियास ने एक ठंडी सांस खींची। पापनाशी ने उसे भीतर नेत्रों से देखा। उसकी यह कल्पना ही असम्भव मालूम होती थी कि कोई मनुष्य इतनी सावधानी से अपने पापों को प्रकट कर सकता है। उसे जरा भी आश्चर्य न होता, अगर जमीन फट जाती और उसमें से अग्निज्वाला निकलकर उसे निगल जाती। लेकिन जमीन स्थिर बनी रही, और निसियास हाथ पर मसतक रखे चुपचाप बैठा हुआ अपने पूर्व जीवन की स्मृतियों पर म्लान-मुख से मुस्कराता रहा। योगी तब उठा और गम्भीर स्वर में बोला—

'नहीं निसियास, मैं अपना एकान्तवास छोड़कर इस पिशाच नगरी में थायस की चर्चा करने नहीं आया हूं। बल्कि, ईश्वर की सहायता से मैं इस रमणी को अपवित्र विलास के बन्धनों से मुक्त कर दूंगा और उसे प्रभु मसीह की सेवार्थ भेंट करूंगा। अगर निराकार ज्योति ने मेरा साथ न छोड़ा तो थायस अवश्य इस नगर को त्यागकर किसी वनिता-धर्माश्रम में प्रवेश करेगी।'

निसियास ने उत्तर दिया—'मधुर कलाओं और लालित्य की देवी वीनस को रुष्ट करते हो तो सावधान रहना। उसकी शक्ति अपार है और यदि तुम उसकी प्रधान उपासिका को ले जाओगे तो वह तुम्हारे ऊपर वज्रघात करेगी।'

पापनाशी बोला—'प्रभु मसीह मेरी रक्षा करेंगे। मेरी उनसे यह भी प्रार्थना है कि वह तुम्हारे हृदय में धर्म की ज्योति प्रकाशित करें और तुम उस अन्धकारमय कूप में से निकल आओ जिसमें पड़े हुए एड़ियां रगड़ रहे हो।'

यह कहकर वह गर्व से मस्तक उठाये बाहर निकला। लेकिन निसियास भी उसके पीछे चला। द्वार पर आते-आते उसे पा लिया और तब अपना हाथ उसके कन्धे पर रखकर उसके कान में बोला—'देखो वीनस को क्रुद्ध मत करना। उसका प्रत्याघात अत्यन्त भीषण होता है।'

किन्तु पापनाशी ने इस चेतावनी को तुच्छ समझा, सिर फेरकर भी न देखा। वह निसियास को पतित समझता था, लेकिन जिस बात से उसे जलन होती थी वह यह थी कि मेरा पुराना मित्र थायस का प्रेममात्र रह चुका है। उसे ऐसा अनुभव होता था कि इससे घोर अपराध हो ही नहीं सकता। अब से वह निसियास को संसार का सबसे अधम, सबसे घृणित प्राणी समझने लगा। उसने भ्रष्टाचार से सदैव नफरत की थी, लेकिन आज के पहले यह पाप उसे इतना नारकीय कभी न प्रतीत हुआ था। उसकी समझ में प्रभु मसीह के क्रोध और स्वर्ग दूतों के तिरस्कार का इससे निन्द्य और कोई विषय ही न था।

उसके मन में थायस को इन विलासियों से बचाने के लिए और भी तीव्र आकांक्षा जागृत हुई। अब बिना एक क्षण विलम्ब किये मुझे थामस से भेंट करनी चाहिए। लेकिन अभी मध्याह्न काल था और जब तक दोपहर की गरमी शान्त न हो जाये, थायस के घर

जाना उचित न था। पापनाशी शहर की सड़कों पर घूमता रहा। आज उसने कुछ भोजन न किया था जिसमें उस पर ईश्वर की दया दृष्टि रहे। कभी वह दीनता से आंखें जमीन की ओर झुका लेता था, और कभी अनुरक्त होकर आकाश की ओर ताकने लगता था। कुछ देर इधर-उधर निष्प्रयोजन घूमने के बाद वह बन्दरगाह पर जा पहुंचा। सामने विस्तृत बन्दरगाह था, जिसमें असंख्य जलयान और नौकाएं लंगर डाले पड़ी हुई थीं, और उनके आगे नीला समुद्र, श्वेत चादर ओढ़े हंस रहा था। एक नौका ने, जिसकी पतवार पर एक अप्सरा का चित्र बना हुआ था अभी लंगर खोला था। डांडें पानी में चलने लगे, मांझियों ने गाना आरम्भ किया और देखते-देखते वह श्वेतवस्त्रधारिणी जल-कन्या योगी की दृष्टि में केवल एक स्वप्न-चित्र की भांति रह गयी। बन्दरगाह से निकलकर, वह अपने पीछे जगमगाता हुआ जलमार्ग छोड़ती खुले समुद्र में पहुंच गयी।

पापनाशी ने सोचा—मैं भी किसी समय संसार-सागर पर गाते हुए यात्रा करने को उत्सुक था लेकिन मुझे शीघ्र ही अपनी भूल मालूम हो गयी। मुझ पर अप्सरा का जादू न चला।

इन्हीं विचारों में मग्न वह रस्सियों की गेंडुली पर बैठ गया। निद्रा से उसकी आंखें बन्द हो गयीं। नींद में उसे एक स्वप्न दिखाई दिया। उसे मालूम हुआ कि कहीं से तुरहियों की आवाज कान में आ रही है, आकाश रक्तवर्ण हो गया है। उसे ज्ञात हुआ कि धर्माधर्म के विचार का दिन आ पहुंचा। वह बड़ी तन्मयता से ईश-वन्दना करने लगा। इसी बीच में उसने एक अत्यन्त भयंकर जंतु को अपनी ओर आते देखा, जिसके माथे पर प्रकाश का एक सलीव लगा हुआ था। पापनाशी ने उसे पहचान लिया—सिलसिली की पिशाचमूर्ति थी। उस जन्तु ने उसे दांतों के नीचे दबा लिया और उसे लेकर चला, जैसे बिल्ली अपने बच्चे को लेकर चलती है। इस भांति वह जन्तु पापनाशी को कितने ही द्वीपों से होता, नदियों को पार करता, पहाड़ों को फांदता अन्त में एक निर्जन स्थान में पहुंचा, जहां दहकते हुए पहाड़ और झुलसते राख के ढेरों के सिवाय और कुछ नजर न आता था। भूमि कितने ही स्थलों पर फट गयी थी और उसमें से आग की लपट निकल रही थी। जन्तु ने पापनाशी को धीरे से उतार दिया और कहा—'देखो !'

पापनाशी ने एक खोह के किनारे झुककर नीचे देखा। एक आग की नदी पृथ्वी के अन्तस्थल में दो काले-काले पर्वतों के बीच से बह रही थी। वहां धुंधले प्रकाश में नरक के दूत पापात्माओं को कष्ट दे रहे थे। इन आत्माओं पर उनके मृत शरीर का हलका आवरण था, यहां तक कि वह कुछ वस्त्र भी पहने हुए थी। ऐसे दारुण कष्टों में भी यह आत्माएं बहुत दुःखी न जान पड़ती थीं। उनमें से एक जो लम्बी, गौरवर्ण, आंखें बन्द किये हुए थी, हाथ में एक तलवार लिये जा रही थी। उसके मधुर स्वरों से समस्त मरुभूमि गूंज रही थी। वह देवताओं और शूरवीरों की विरुदावली गा रही थी। छोटे-छोटे हरे रंग के दैत्य उनके होंठ और कंठ को लाल लोहे की सलाखों से छेद रहे थे। यह अमर कवि होमर की प्रतिच्छाया थी। वह इतना कष्ट झेलकर भी गाने से बाज न आती थी। उसके समीप ही अनकगोरस, जिसके सिर के बाल गिर गये थे, धूल में परकाल से शक्लें बना रहा था। एक दैत्य उसके कानों में खौलता हुआ तेल डाल रहा था; पर उसकी एकाग्रता को भंग न कर सकता था।

इसके अतिरिक्त पापनाशी को और कितनी ही आत्माएं दिखाई दीं जो जलती हुई नदी के किनारे बैठी हुई उसी भांति पठन-पाठन, वाद-प्रतिवाद, उपासना-ध्यान में मग्न थीं जैसे यूनान के गुरुकुलों में गुरु-शिष्य किंसी वृक्ष की छाया में बैठकर किया करते थे, वृद्ध टिमाक्लीज ही सबसे अलग था और भ्रान्तिवादियों की भांति सिर हिला रहा था। एक दैत्य उसकी आंखों के सामने एक मशाल हिला रहा था, किन्तु टिमाक्लीज आंखें ही न खोलता था।

इस दृश्य से चकित होकर पापनाशी ने उस भयंकर जन्तु की ओर देखा जो उसे यहां लाया था। कदाचित् उससे पूछना चाहता था कि यह क्या रहस्य है ? पर वह जन्तु अदृश्य हो गया था और उसकी जगह एक स्त्री मुंह पर नकाब डाले खड़ी थी। वह बोली—'योगी, खूब आंखें खोलकर देख ! इन भ्रष्ट आत्माओं का दुराग्रह इतना जटिल है कि नरक में भी उनकी भ्रान्ति शान्त नहीं हुई। यहां भी वह उसी माया के खिलौने बने हुए हैं। मृत्यु ने उनके भ्रमजाल को नहीं तोड़ा क्योंकि प्रत्यक्ष ही, केवल मर जाने से ही ईश्वर के दर्शन नहीं होते। जो लोग जीवन-भर अज्ञानान्धकार में पड़े हुए थे, वह मरने पर भी मूर्ख ही बने रहेंगे। यह दैत्यगण ईश्वरीय न्याय के यंत्र ही तो हैं। यही कारण है कि आत्माएं उन्हें न देखती हैं न उनस भयभीत होती हैं। वह सत्य के ज्ञान से शून्य थे, अतएव उन्हें अपने अकर्मों का भी ज्ञान न था। उन्होंने जो कुछ किया अज्ञान की अवस्था में किया। उन पर वह दोषारोपण नहीं कर सकता फिर वह उन्हें दण्ड भोगने पर कैसे मजबूर कर सकता है ?'

पापनाशी ने उत्तेजित होकर कहा—'ईश्वर सर्वशक्तिमान है, वह सब कुछ कर सकता है।

नकाबपोश स्त्री ने उत्तर दिया—'नहीं, वह असत्य को सत्य नहीं कर सकता। उसको दंड भोग के योग्य बनाने के लिए पहले उनको अज्ञान से मुक्त करना होगा, और जब वह अज्ञान से मुक्त हो जायेंगे तो वह धर्मात्माओं की श्रेणी में आ जायेंगे !'

पापनाशी उद्विग्न और मर्माहत होकर फिर खोह के किनारों पर झुका। उसने निसियास की छाया को एक पुष्पमाला सिर पर डाले, और एक झुलसे हुए मेंहदी के वृक्ष के नीचे बैठे देखा। उसकी बगल में एक अति रूपवती वेश्या बैठी हुई थी और ऐसा विदित होता था कि वह प्रेम की व्याख्या कर रहे हैं। वेश्या की मुखश्री मनोहर और अप्रितम थी। उन पर जो अग्नि की वर्षा हो रही थी वह ओस की बूंदों के समान सुखद और शीतल थी, और वह झुलसती हुई भूमि उनके पैरों से कोमल तृण के समान दब जाती थी। यह देखकर पापनाशी की क्रोधाग्नि जोर से भड़क उठी। उसने चिल्लाकर कहा—ईश्वर, इस दुराचारी पर वज्रघात कर ! यह निसियास है। उसे ऐसा कुचल कि वह रोये, कराहे और क्रोध से दांत पीसे। उसने थायस को भ्रष्ट किया है।

सहसा पापनाशी की आंखें खुल गईं। वह एक बलिष्ठ मांझी की गोद में था। मांझी बोला—'बस मित्र, शान्त हो जाओ। जल देवता साक्षी है कि तुम नींद में बुरी तरह चौंक पड़ते हो। अगर मैंने तुम्हें सम्हाल न लिया होता तो तुम अब तक पानी में डुबकियां खाते होते। आज मैंने तुम्हारी जान बचाई।'

पापनाशी बोला—'ईश्वर की दया है।'

वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ और इस स्वप्न पर विचार करता हुआ आगे बढ़ा। अवश्य

ही यह दुस्वप्न है। नरक को मिथ्या समझना ईश्वरीय न्याय का अपमान करना है। इस स्वप्न को प्रेषक कोई पिशाच है।

ईसाई तपस्वियों के मन में नित्य यह शंका उठती रहती कि इस स्वप्न का हेतु ईश्वर है या पिशाच। पिशाचादि उन्हें नित्य घेरे रहते थे। मनुष्यों से जो मुंह मोड़ता है, उसका गला पिशाचों से नहीं छूट सकता। मरुभूमि पिशाचों का क्रीड़ा-क्षेत्र है। वहां नित्य उनका शोर सुनाई देता है। तपस्वियों को प्रायः अनुभव से, स्वप्न की व्यवस्था से ज्ञान हो जाता है कि यह मर्द ईश्वरीय प्रेरणा है या पिशाचिक प्रलोभन। पर कभी-कभी बहुत यत्न करने पर भी उन्हें भ्रम हो जाता था। तपस्वियों और पिशाचों में निरन्तर और महाघोर संग्राम होता रहता था। पिशाचों को सदैव यह धुन रहती थी कि योगियों को किसी तरह धोखे में डालें और उनसे अपनी आज्ञा मनवा लें। सन्त जॉन एक प्रसिद्ध पुरुष थे। पिशाचों के राजा ने साठ वर्ष तक लगातार उन्हें धोखा देने की चेष्टा की, पर सन्त जॉन उसकी चालों को ताड़ लिया करते थे। एक दिन पिशाच-राजा ने एक वैरागी का रूप धारण किया और जॉन की कुटी में आकर बोला—'जॉन, कल शाम तक तुम्हें अनशन (व्रत) रखना होगा।' जॉन ने समझा, वह ईश्वर का दूत है और दो दिन तक निर्जल रहा। पिशाच ने उन पर केवल यही एक विजय प्राप्त की, यद्यपि इससे पिशाचराज का कोई कुत्सित उद्देश्य न पूरा हुआ, पर सन्त जॉन को अपनी पराजय का बहुत शोक हुआ। किन्तु पापनाशी ने जो स्वप्न देखा था उसका विषय ही कहे देता था कि इसका कर्ता पिशाच है।

वह ईश्वर से दीन शब्दों में कह रहा था—'मुझसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ जिसके दण्ड-स्वरूप तूने मुझे पिशाच के फन्दे में डाल दिया।' सहसा उसे मालूम हुआ कि मैं मनुष्यों के एक बड़े समूह में इधर-उधर धक्के खा रहा हूं। कभी इधर जा पड़ता हूं, कभी उधर। उसे नगरों की भीड़-भाड़ में चलने का अभ्यास न था। वह एक जड़ वस्तु की भांति इधर-उधर ठोकरें खाता फिरता था, और अपने कमख्वाब के कुरते के दामन से उलझकर वह कई बार गिरते-गिरते बचा। अन्त में उसने एक मनुष्य से पूछा—'तुम लोग सब-के-सब एक ही दिशा में इतनी हड़बड़ी के साथ कहां दौड़े जा रहे हो ? क्या किसी सन्त का उपदेश हो रहा है ?'

उस मनुष्य ने उत्तर दिया—'यात्री, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि शीघ्र ही तमाशा शुरू होगा और थायस रंगमंच पर उपस्थित होगी। हम सब उसी थियेटर में जा रहे हैं। तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी हमारे साथ चलो। इस अप्सरा के दर्शन मात्र ही से हम कृतार्थ हो जायेंगे।'

पापनाशी ने सोचा कि थायस को रंगशाला में देखना मेरे उद्देश्य के अनुकूल होगा। वह उस मनुष्य के साथ हो लिया। उनके सामने थोड़ी दूर पर रंगशाला स्थित थी। उसके मुख्य द्वार पर चमकते हुए परदे पड़े थे और उसकी विस्तृत वृत्ताकार दीवारें अनेक प्रतिमाओं से सजी हुई थीं। अन्य मनुष्यों के साथ यह दोनों पुरुष भी तंग गली में दाखिल हुए। गली के दूसरे सिरे पर अर्द्धचन्द्र के आकार का रंगमंच बना हुआ था जो इस समय प्रकाश से जगमगा रहा था। वे दर्शकों के साथ एक जगह पर बैठे। वहां नीचे की ओर किसी तालाब के घाट की भांति सीढ़ियों की कतार रंगशाला तक चली गयी थी। रंगशाला में अभी कोई

न था, पर वह खूब सजी हुई थी। बीच में कोई परदा न था। रंगशाला के मध्य में कब्र की भांति एक चबूतरा-सा बना हुआ था। चबूतरे के चारों तरफ रावटियां थीं। रावटियों के सामने भाले रखे हुए थे और लम्बी-लम्बी खूंटियों पर सुनहरी ढालें लटक रही थीं। स्टेज पर सन्नाटा छाया हुआ था। जब दर्शकों का अर्धवृत्त ठसाठस भर गया तो मधु-मक्खियों की भिनभिनाहट-सी दबी हुई आवाज आने लगी। दर्शकों की आंखें अनुराग से भरी हुई, वृहद् निस्तब्ध रंगमंच की ओर लगी हुई थीं। स्त्रियां हंसती थीं और नींबू खाती थीं और नित्यप्रति नाटक देखने वाले पुरुष अपनी जगहों से दूसरों को हंस-हंस पुकारते थे।

पापनाशी मन में ईश्वर की प्रार्थना कर रहा था और मुंह से एक भी मिथ्या शब्द नहीं निकलता था, लेकिन उसका साथी नाट्यकाल की अवनति की चर्चा करने लगा—'भाई, हमारी इस कला का घोर पतन हो गया है। प्राचीन समय में अभिनेता चेहरे पहनकर कवियों की रचनाएं उच्च स्वर से गाया करते थे। अब तो वह गूंगों की भांति अभिनय करते हैं। वह पुराने सामान भी गायब हो गये। न तो वह चेहरे रहे जिनमें आवाज को फैलाने के लिए धातु की जीभ बनी रहती थी, न वह ऊंचे खड़ाऊं ही रह गये जिन्हें पहनकर अभिनेतागण देवताओं की तरह लम्बे हो जाते थे, न वह ओजस्विनी कविताएं रहीं और न वह मर्मस्पर्शी अभिनयचातुर्य। अब तो पुरुषों की जगह रंगमंच पर स्त्रियों का दौरदौरा है, जो बिना संकोच के खुले मुंह मंच पर आती हैं। उस समय के यूनान-निवासी स्त्रियों को स्टेज पर देखकर न जाने दिल में क्या कहते। स्त्रियों के लिए जनता के सम्मुख मंच पर आना घोर लज्जा की बात है। हमने इस कुप्रथा को स्वीकार करके अपने माध्यात्मिक पतन का परिचय दिया है। यह निर्विवाद है कि स्त्री पुरुष का शत्रु और मानव-जाति का कलंक है।

पापनाशी ने इसका समर्थन किया—'बहुत सत्य कहते हो, स्त्री हमारी प्राणघातिका है। उससे हमें कुछ आनन्द प्राप्त होता है और इसलिए उससे सदैव डरना चाहिए।'

उसके साथी ने जिसका नाम डोरियन था, कहा—'स्वर्ग के देवताओं की शपथ खाता हूं; स्त्री से पुरुष को आनन्द नहीं प्राप्त होता, बल्कि चिन्ता, दुःख और अशान्ति। प्रेम ही हमारे दारुणतम कष्टों का कारण है। सुनो मित्र, जब मेरी तरुणावस्था थी तो मैं एक द्वीप की सैर करने गया था और वहां मुझे एक बहुत बड़ा मेंहदी का वृक्ष दिखाई दिया जिसके विषय में यह दन्तकथा प्रचलित है कि फीडरा जिन दिनों हिमोलाइट पर आशिक थी तो वह विरहदशा में इसी वृक्ष के नीचे बैठी रहती थी और दिल बहलाने के लिए अपने बालों की सुइयां निकालकर इन पत्तियों में चुभाया करती थी। सब पत्तियां छिद गयीं। फीडरा की प्रेमकथा तो तुम जानते ही होगे। अपने प्रेमी का सर्वनाश करने के पश्चात् वह स्वयं गले में फांसी डाल, एक हाथीदांत की खूंटी से लटकर मर गयी। देवताओं की ऐसी इच्छा हुई कि फीडरा की असह्य विरहवेदना के चिह्न-स्वरूप इस वृक्ष की पत्तियों में नित्य छेद होते रहें। मैंने एक पत्ती तोड़ ली और लाकर उसे अपने पलंग के सिरहाने लटका दिया कि वह मुझे प्रेम की कुटिलता की याद दिलाती रहे और मेरे गुरु, अमर एपिक्युरस के सिद्धान्तों पर अटल रखे, जिसका उद्देश्य था कि कुवासना से डरना चाहिए। लेकिन यथार्थ में प्रेम जिगर का एक रोग है और कोई यह नहीं कह सकता कि यह रोग मुझे नहीं लग सकता।'

पापनाशी ने प्रश्न किया—'डोरियन, तुम्हारे आनन्द के विषय क्या हैं ?'

डोरियन ने खेद से कहा—'मेरे आनन्द का केवल एक विषय है, और वह भी बहुत आकर्षक नहीं। वह ध्यान है जिसकी पाचनशक्ति दूषित हो गयी हो उसके लिए आनन्द का और क्या विषय हो सकता है ?'

पापनाशी को अवसर मिला कि वह इस आनन्दवादी को आध्यात्मिक सुख की दीक्षा दे जो ईश्वराधना से प्राप्त होता है। बोला—'मित्र डोरियन; सत्य पर कान धरो, और प्रकाश ग्रहण करो।'

लेकिन सहसा उसने देखा कि सबकी आंखें मेरी तरफ उठी हैं और मुझे चुप रहने का संकेत कर रहे हैं। नाट्यशाला में पूर्ण शान्ति स्थापित हो गयी और एक क्षण में वीरगान की ध्वनि सुनाई दी।

खेल शुरू हुआ। होमर की इलियड का एक दुःखान्त दृश्य था। ट्रोजन युद्ध समाप्त हो चुका था। यूनान के विजयी सूरमा अपनी छोलदारियों से निकलकर कूच की तैयारी कर रहे थे कि एक अद्भुत घटना हुई। रंगभूमि के मध्य-स्थित समाधि पर बादलों का एक टुकड़ा छा गया। एक क्षण के बाद बादल हट गया और एशिलीस का प्रेत सोने के शस्त्रों से सजा हुआ प्रकट हुआ। वह योद्धाओं की ओर हाथ फैलाये मानो कह रहा है, हेलास के सपूतो, क्या तुम यहां से प्रस्थान करने को तैयार हो ? तुम उस देश को जाते हो जहां जाना मुझे फिर नसीब न होगा और मेरी समाधि को बिना कुछ भेंट किये ही छोड़े जाते हो।

यूनान के वीर सामन्त, जिनमें वृद्ध नेस्टर, अगामेमनन, उलाइसेस आदि थे, समाधि के समीप आकर इस घटना को देखने लगे। पिर्रस ने जो एशिलीस का युवक पुत्र था, भूमि पर मस्तक झुका दिया। उलीस ने ऐसा संकेत किया जिससे विदित होता था वह मृतआत्मा की इच्छा से सहमत है। उसने अगामेमनन से अनुरोध किया—हम सबों को एशिलीस का यश मानना चाहिए, क्योंकि हेलास ही की मान-रक्षा में उसने वीरगति पायी है। उसका आदेश है कि प्रायम की पुत्री, कुमारी पॉलिक्सेना मेरी समाधि पर समर्पित की जाय। यूनान-वीरों, अपने नायक का आदेश स्वीकार करो !

किन्तु सम्राट् अगामेमनन ने आपत्ति की— 'ट्रोजन की कुमारियों की रक्षा करो। प्रायम का यशस्वी परिवार बहुत दुःख भोग चुका है।'

उसकी आपत्ति का कारण यह था कि वह उलाइसेस के अनुरोध से सहमत है। निश्चय हो गया कि पॉलिक्सेना एशिलीस को बलि दी जाय। मृत आत्मा इस भांति शान्त होकर यमलोक को चली गयी। चरित्रों के वार्त्तालाप के बाद कभी उत्तेजक और कभी करुण स्वरों में गाना होता था। अभिनय का एक भाग समाप्त होते ही दर्शकों ने तालियां बजायीं।

पापनाशी जो प्रत्येक विषय में धर्म-सिद्धान्तों का व्यवहार किया करता था, बोला—'अभिनय से सिद्ध होता है कि सत्तहीन देवताओं का उपासक कितने निर्दयी होते हैं।

डोरियन ने उत्तर दिया—'यह दोष प्रायः सभी मतवादों में पाया जाता है। सौभाग्य से महात्मा एपिक्यु रस ने, जिन्हें ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त था, मुझे अदृश्य की मिथ्या शंकाओं से मुक्त कर दिया।'

इतने में अभिनय फिर शुरू हुआ। हेक्युबा, जो पॉलिक्सेना की माता थी, उस छोलदारी से बाहर निकली जिसमें वह कैद थी। उसके श्वेत केश बिखरे हुए थे, कपड़े

फटकर तार-तार हो गये थे। उसकी शोकमूर्ति देखते ही दर्शकों ने वेदनापूर्ण आह भरी। हेक्युबा को अपनी कन्या के विषादमय अन्त का एक स्वप्न द्वारा ज्ञान हो गया था। अपने और अपनी पुत्री के दुर्भाग्य पर वह सिर पीटने लगी। उलाइसेस ने उसके समीप जाकर कहा–'पॉलिक्सेना पर से अपना मातृस्नेह अब उठा लो। वृद्धा स्त्री ने अपने बाल नोच लिये, मुंह का नखों से खसोटा और निर्दयी योद्धा उलाइसेस के हाथों को चूमा, जो अब भी दयाशून्य शान्ति से कहता जान पड़ता था–

'हेक्युबा, धैर्य से काम लो। जिस विपत्ति का निवारण नहीं हो सकता, उसके सामने सिर झुकाओ। हमारे देश में भी कितनी ही माताएं अपने पुत्रों के लिए रोती रही हैं जो आज यहां वृक्षों के नीचे मोहनिद्रा में मग्न हैं। और हेक्युबा ने, जो पहले एशिया के सबसे समृद्धिशाली राज्य की स्वामिनी थी और इस समय गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी, नैराश्य से धरती पर सिर पटक दिया।'

तब छोलदारियों में से एक के सामने का परदा उठा और कुमारी पॉलिक्सेना प्रकट हुई। दर्शकों में एक सनसनी-सी दौड़ गयी। उन्होंने थायस को पहचान लिया। पापनाशी ने उस वेश्या को फिर देखा जिसकी खोज में वह आया था। वह अपने गोरे हाथ से भारी परदे को ऊपर उठाये हुए थी। वह एक विशाल प्रतिमा की भांति स्थिर खड़ी थी। उसके अपूर्व लोचनों से गर्व और आत्मोत्सर्ग झलक रहा था और उसके प्रदीप्त सौन्दर्य से समस्त दर्शकवृन्द एक निरुपाय लालसा के आवेग से थर्रा उठे !

पापनाशी का चित्त व्यग्र हो उठा। छाती को दोनों हाथों से दबाकर उसने एक ठण्डी सांस ली और बोला–'ईश्वर ! तूने एक प्राणी को क्योंकर इतनी शक्ति प्रादान की है ?

किन्तु डोरियन जरा भी अशान्ति न हुआ। बोला–'वास्तव में जिन परमाणुओं के एकत्र हो जाने से इस स्त्री की रचना हुई है उसका संयोग बहुत ही नयनाभिराम है। लेकिन यह केवल प्रकृति की एक क्रीड़ा है, और परमाणु जड़वस्तु है। किसी दिन वह स्वाभाविक रीति से विच्छिन्न हो जाएंगे। जिन परमाणुओं से लैला और क्लियोपेट्रा की रचना हुई थी वह अब कहां हैं ? मैं मानता हूं कि स्त्रियां कभी-कभी बहुत रूपवती होती हैं, लेकिन वह भी तो विपत्ति और घृणोत्पादक अवस्थाओं के वशीभूत हो जाती हैं। बुद्धिमानों को यह बात मालूम है, यद्यपि मूर्ख लोग इस पर ध्यान नहीं देते।'

योगी ने भी थायस को देखा। दार्शनिक ने भी। दोनों के मन में भिन्न-भिन्न विचार उत्पन्न हुए। एक ने ईश्वर से फरियाद की, दूसरे ने उदासीनता से तत्त्व का निरूपण किया।

इतने में रानी हेक्युबा ने अपनी कन्या को इशारों से समझाया, मानो कह रही है–इस हृदयहीन उलाइसेस पर अपना जादू डाल ! अपने रूपलावण्य, अपने यौवन और अपने अश्रुप्रवाह का आश्रय ले।

थायस, या कुमारी पॉलिक्सेना ने छोलदारी का परदा गिरा दिया। तब उसने एक कदम आगे बढ़ाया, लोगों के दिल हाथ से निकल गये। और जब वह गर्व से तालों पर कदम उठाती हुई उलाइसेस की ओर चली तो दर्शकों को ऐसा मालूम हुआ मानो वह सौन्दर्य का केन्द्र है। कोई आपे में न रहा। सबकी आंखें उसी ओर लगी हुई थीं। अन्य सभी का रंग उसके सामने फीका पड़ गया। कोई उन्हें देखता भी न था।

उलाइसेस ने मुंह फेर लिया और मुंह चादर में छिपा लिया कि इस दया भिखारिनी के नेत्र-कटाक्ष और प्रेमालिंगन का जादू उस पर न चले। पॉलिक्सेना ने उससे इशारों से कहा—'मुझसे क्यों डरते हो ? मैं तुम्हें प्रेमपाश में फंसाने नहीं आयी हूं। जो अनिवार्य है, वह होगा। उसके सामने सिर झुकाती हूं। मृत्यु का मुझे भय नहीं है। प्रायम की लड़की और वीर हेक्टर की बहन, इतनी गयी-गुजरी नहीं है कि उसकी शय्या, जिसके लिए बड़े-बड़े सम्राट् लालायित रहते थे, किसी विदेशी पुरुष का स्वागत करे। मैं किसी की शरणागत नहीं होना चाहती।'

हेक्युबा जो अभी तक भूमि पर अचेत-सी पड़ी थी सहसा उठी और अपनी प्रिय पुत्री को छाती से लगा लिया। यह उसका अन्तिम नैराश्यपूर्ण आलिंगन था। पतिवंचित मातृहृदय के लिए संसार में कोई अवलम्ब न था। पॉलिक्सेना ने धीरे-से माता के हाथों से अपने को छुड़ा लिया, मानो उससे कह रही थी—

'माता, धैर्य से काम लो ! अपने स्वामी की आत्मा को दुखी मत करो। ऐसा क्यों करती हो कि यह लोग निदर्यता से जमीन पर गिरकर मुझे अलग कर लें ?'

थायस का मुखचन्द्र इस शोकावस्था में और भी मधुर हो गया था, जैसे मेघ के हलके आवरण से चन्द्रमा। दर्शकवृन्द को उसने जीवन के आवेशों और भावों का कितना अपूर्व चित्र दिखाया ! इससे सभी मुग्ध थे ! आत्मसम्मान, धैर्य, साहस आदि भावों का ऐसा अलौकिक, ऐसा मुग्धकर दिग्दर्शन कराना थायस का ही काम था। यहां तक कि पापनाशी को भी उस पर दया आ गयी। उसने सोचा, यह चमक-दमक अब थोड़े ही दिनों के और मेहमान हैं, फिर तो यह किसी धर्माश्रम में तपस्या करके अपने पापों का प्रायश्चित करेगी।

अभिनय का अन्त निकट आ गया। हेक्युबा मूर्छित होकर गिर पड़ी, और पॉलिक्सेना उलाइसेस के साथ समाधि पर आयी। योद्धागण उसे चारों ओर से घेरे हुए थे। जब वह बलिवेदी पर चढ़ी तो एशिलीज के पुत्र ने एक सोने के प्याले में शराब लेकर समाधि पर गिरा दी। मातमी गीत गाये जा रहे थे। जब बलि देने वाले पुजारियो ने उसे पकड़ने को हाथ फैलाया तो उसने संकेत द्वारा बतलाया कि मैं स्वच्छन्द रहकर मरना चाहती हूं, जैसाकि राजकन्याओं का धर्म है। तब अपने वस्त्रों को उतारकर वह वज्र को हृदयस्थल में रखने को तैयार हो गयी। पिर्रस ने सिर फेरकर अपनी तलवार उसके वक्षस्थल में भोंक दी। रुधिर की धारा बह निकली। कोई लाग रखी गयी थी। थायस का सिर पीछे को लटक गया, उसकी आंखें तिलमिलाने लगीं और एक क्षण में वह गिर पड़ी।

योद्धागण तो बलि को कफन पहना रहे थे। पुष्पवर्षा की जा रही थी। दर्शकों की आर्तध्वनि से हवा गूंज रही थी। पापनाशी उठ खड़ा हुआ और उच्चस्वर से उसने यह भविष्यवाणी की—'मिथ्यावादियों, और प्रेतों के पूजने वालों ! यह क्या भ्रम हो गया है ! तुमने अभी जो दृश्य देखा है वह केवल एक रूपक है। उस कथा का आध्यात्मिक अर्थ कुछ और है, और यह स्त्री थोड़े ही दिनों में अपनी इच्छा और अनुराग से, ईश्वर के चरणों में समर्पित हो जायेगी।

इसके एक घण्टे बाद पापनाशी ने थायस के द्वार पर जंजीर खटखटायी।

थायस उस समय रईसों के मुहल्ले में, सिकन्दर की समाधि के निकट रहती थी।

उसके विशाल भवन के चारों ओर सायेदार वृक्ष थे, जिनमें से एक जलधारा कृत्रिम चट्टानों के बीच से होकर बहती थी। एक बुढ़िया हब्शिन दासी ने जो मुंदरियों से लदी हुई थी, आकर द्वार खोल दिया और पूछा—'क्या आज्ञा है ?'

पापनाशी ने कहा—'मैं थामस से भेंट करना चाहता हूं। ईश्वर साक्षी है कि मैं यहां इसी काम के लिए आया हूं।'

वह अमीरों के-से वस्त्र पहने हुए था और उसकी बातों से रोब पटकता था। अतएव दासी उसे अन्दर ले गयी। और बोली—'थायस परियों के कुंज में विराजमान है।'

दो

थायस ने स्वाधीन, लेकिन निर्धन और मूर्तिपूजक माता-पिता के घर जन्म लिया था। जब वह बहुत छोटी-सी लड़की थी तो उसका बाप एक सराय का भटियारा था। उस सराय में प्रायः मल्लाह बहुत आते थे। बाल्यकाल की अशृंखल, किन्तु सजीव स्मृतियां उसके मन में अब भी संचित थीं। उसे अपने बाप की याद आती थी जो पैर पर पैर रखे अंगीठी के सामने बैठा रहता था। लम्बा, भारी-भरकम, शान्त प्रकृति का मनुष्य था, उन फिर ऊनों की भांति जिनकी कीर्ति सड़क के नुक्कड़ों पर भाटों के मुख से नित्य अमर होती रहती थी। उसे अपनी दुर्बल माता की भी याद आती थी जो भूखी बिल्ली की भांति घर में चारों ओर चक्कर लगाती रहती थी। सारा घर उसके तीक्ष्ण कंठ स्वर में गूंजता और उसके उद्दीप्त नेत्रों की ज्योति से चमकता रहता था। पड़ोस वाले कहते थे, यह डायन है, रात को उल्लू बन जाती है और अपने प्रेमियों के पास उड़ जाती है। यह अफीमचियों की गप थी। थामस अपनी मां से भली-भांति परिचित थी और जानती थी कि वह जादू-टोना नहीं करती। हां, उसे लोभ का रोग था और दिन की कमाई को रात-भर गिनती रहती थी। असली पिता और लोभिनी माता थायस के लालन-पालन की ओर विशेष ध्यान न देते थे। वह किसी जंगली पौधे के समान अपनी बाढ़ से बढ़ती जाती थी। वह मतवाले मल्लाहों के कमरबन्द से एक-एक करके पैसे निकालने में निपुण हो गयी। वह अपने अश्लील वाक्यों और बाजारी गीतों से उनका मनोरंजन करती थी, यद्यपि वह स्वयं इनका आशय न जानती थी। घर शराब की महक से भरा रहता था। जहां-तहां शराब के चमड़े के पीपे रखे रहते थे और वह मल्लाहों की गोद में बैठती फिरती थी। तब मुंह में शराब का लसका लगाये वह पैसे लेकर घर से निकलती और एक बुढ़िया मे गुलगुले लेकर खाती। नित्यप्रति एक ही अभिनय होता रहता था। मल्लाह अपनी जान-जोखिम यात्राओं की कथा कहते, तब चौसर खेलते, देवताओं को गालियां देते और उन्मत्त होकर 'शराब, शराब, सबसे उत्तम शराब !' की रट लगाते। नित्यप्रति रात को मल्लाहों के हुल्लड़ से बालिका की नींद उचट जाती थी। एक-दूसरे को वे घोंघे फेंककर मारते जिससे मांस कट जाता था और भयंकर कोलाहल मचता था। क़भी तलवारें भी निकल पड़ती थीं और रक्तपात हो जाता था।

थायस को यह याद करके बहुत दुःख होता था कि बाल्यावस्था में यदि किसी को

मुझसे स्नेह था तो वह सरल, सहृदय अहमद था। अहमद इस घर का हब्शी गुलाम था, तवे से भी ज्यादा काला, लेकिन बड़ा सज्जन, बहुत नेक जैसे रात की मीठी नींद। वह बहुधा थामस को घुटनों पर बैठा लेता और पुराने जमाने के तहखानों की अद्भुत कहानियां सुनाता जो धनलोलुप राजे-महाराजे बनवाते थे और बनवाकर शिल्पियों और कारीगरों का वध कर डालते थे कि किसी को बता न दें। कभी-कभी ऐसे चतुर चोरों की कहानियां सुनाता जिन्होंने राजाओं की कन्या से विवाह किया और मीनार बनवाये। बालिका थायस के लिए अहमद बाप भी था, मां भी था, दाई था और कुत्ता भी था। वह अहमद के पीछे-पीछे फिरा करती; जहां वह जाता, परछाईं की तरह साथ लगी रहती। अहमद भी उस पर जान देता था। बहुत रात को अपने पुआल के गद्दे पर सोने के बदले बैठा हुआ वह उसके लिए कागज के गुब्बारे और नौकाएं बनाया करता।

अहमद के साथ उसके स्वामियों ने घोर निर्दयता का बर्ताव किया था। एक कान कटा हुआ था और देह पर कोड़ों के दाग-ही-दाग थे। किन्तु उसके मुख पर नित्य सुखमय शान्ति खेला करती थी और कोई उससे न पूछता था कि इस आत्मा की शान्ति और हृदय के सन्तोष का स्रोत कहां था। वह बालक की तरह भोला था। काम करते-करते थक जाता तो अपने भद्दे स्वर में धार्मिक भजन गाने लगता जिन्हें सुनकर बालिका कांप उठती और वही बातें स्वप्न में भी देखती।

'हमसे बात मेरी बेटी, तू कहां गयी थी और क्या देखा था ?'

'मैंने कफन और सफेद कपड़े देखे। स्वर्गदूत कब्र पर बैंठे हुए थे और मैंने प्रभु मसीह की ज्योति देखी।

थायस उससे पूछती—'दादा, तुम कब्र में बैठै हुए दूतों का भजन क्यों गाते हो।'

अहमद जवाब देता—'मेरी आंखों की नन्ही पुतली, मैं स्वर्ग-दूतों के भजन इसलिए गाता हूं कि हमारे प्रभु मसीह स्वर्गलोक को उड़ गये हैं।'

अहमद ईसाई था। उसकी यथोचित रीति से दीक्षा हो चुकी थी और ईसाइयों के समाज में उसका नाम भी थियोडोर प्रसिद्ध था। वह रातों को छिपकर अपने सोने के समय में उनकी संगीतों में शामिल हुआ करता था।

उस समय ईसाई धर्म पर विपत्ति की घटाएं छाई हुई थीं। रूस के बादशाह की आज्ञा से ईसाइयों के गिरजे खोदकर फेंक दिये गये थे, पवित्र पुस्तकें जला डाली गयी थीं और पूजा की सामग्रियां लूट ली गयी थीं। ईसाइयों के सम्मानपद छीन लिये गये थे और चारों ओर उन्हें मौत-ही-मौत दिखाई देती थी। इस्कन्द्रिया में रहने वाले समस्त ईसाई समाज के लोग संकट में थे। जिसके विषय में ईसावलम्बी होने का जरा भी सन्देह होता, उसे तुरन्त कैद में डाल दिया जाता था। सारे देश में इन खबरों से हाहाकार मचा हुआ था कि स्याम, अरब, ईरान आदि स्थानों में ईसाई बिशपों और व्रतधारिणी कुमारियों को कोड़े मारे गये हैं, सूली दी गयी हैं और जंगल के जानवरों के समान डाल दिया गया है। इस दारुण विपत्ति के समय जब ऐसा निश्चय हो रहा था कि ईसाइयों का नाम निशान भी न रहेगा; एन्थोनी ने अपने एकान्तवास से निकलकर मानो मुरझाये हुए धान में पानी डाल दिया। एन्थोनी मिस्र-निवासी ईसाइयों का नेता, विद्वान्, सिद्धपुरुष था, जिसके अलौकिक कृत्यों की खबरें

दूर-दूर तक फैली हुई थीं। वह-आत्मज्ञानी और तपस्वी था। उसने समस्त देश में भ्रमण करके ईसाई सम्प्रदाय मात्र को श्रद्धा और धर्मोत्साह से प्लावित कर दिया। विधर्मियों से गुप्त रहकर वह एक समय में ईसाइयों की समस्त सभाओं में पहुंच जाता था, और सभी में उस शक्ति और विचारशीलता का संचार कर देता था जो उसके रोम-रोम में व्याप्त थी। गुलामों के साथ असाधारण कठोरता का व्यवहार किया गया था। इससे भयभीत होकर कितने ही धर्म-विमुख हो गये, और अधिकांश जंगल को भाग गये। वहां या तो वे साधु हो जायेंगे या डाके मारकर निर्वाह करेंगे। लेकिन अहमद पूर्ववत् इन सभाओं में सम्मिलित होता, कैदियों से भेंट करता, आहत पुरुषों का क्रिया-कर्म करता और निर्भय होकर ईसाई धर्म की घोषणा करता था। प्रतिभाशाली एन्थोनी अहमद की यह दृढ़ता और निश्चलता देखकर इतना प्रसन्न हुआ कि चलते समय उसे छाती से लगा लिया और बड़े प्रेम से आशीर्वाद दिया।

जब थायस सात वर्ष की हुई तो अहमद ने उसे ईश्वर-चर्चा करनी शुरू की। उसकी कथा सत्य और असत्य का विचित्र मिश्रण लेकिन बाल्य-हृदय के अनुकूल थी।

ईश्वर फिरऊन की भांति स्वर्ग में, अपने हरम के खेमों और अपने बाग के वृक्षों की छांह में रहता है। वह बहुत प्राचीन काल से वहां रहता है, और दुनिया से भी पुराना है। उसके केवल एक ही बेटा है, जिसका नाम प्रभु ईसू है। वह स्वर्ग के दूतों से और रमणी युवतियों से भी सुन्दर है। ईश्वर उसे हृदय से प्यार करता है। उसने एक दिन प्रभु मसीह से कहा—'मेरे भवन और हरम, मेरे छुहारे के वृक्षों और मीठे पानी की नदियों को छोड़कर पृथ्वी पर जाओ और दीन-दुःखी प्राणियों का कल्याण करो ! वहां तुझे छोटे बालक की भांति रहना होगा। वहां दुःख हो तेरा भोजन होगा और तुझे इतना रोना होगा कि तुझे आंसुओं से नदियां बह निकलें, जिनमें दीन-दुःखी जन नहाकर अपनी थकन को भूल जाएँ। जाओ प्यारे पुत्र !'

प्रभु मसीह ने अपने पूज्य पिता की आज्ञा मान ली और आकर बेथलेहम नगर में अवतार लिया। वह खेतों और जंगलों में फिरते थे और अपने साथियों से कहते थे—मुबारक हैं वे लोग जो भूखे रहते हैं, क्योंकि मैं उन्हें अपने पिता की मेज पर खाना खिलाऊंगा। मुबारक हैं वे लोग जो प्यासे रहते हैं, क्योंकि वह स्वर्ग की निर्मल नदियों का जल पियेंगे और मुबारक हैं वे जो रोते हैं, क्योंकि मैं अपने दामन से उनके आंसू पोंछूंगा।

यही कारण है कि दीन-हीन प्राणी उन्हें प्यार करते हैं और उन पर विश्वास करते हैं। लेकिन धनी लोग उनसे डरते हैं कि कहीं यह गरीबों को उनसे ज्यादा धनी न बना दें। उस समय क्लियोपेट्रा और सीजर पृथ्वी पर सबसे बलवान् थे। वे दोनों ही मसीह से जलते थे, इसीलिए पुजारियों और न्यायाधीशों को हुक्म दिया कि प्रभु मसीह को मार डालो। उनकी आज्ञा से लोगों ने एक सलीब खड़ी की और प्रभु को सूली पर चढ़ा दिया। किन्तु प्रभु मसीह ने कब्र के द्वार को तोड़ डाला और फिर अपने पिता ईश्वर के पास चले गये।

उसी समय से प्रभु मसीह के भक्त स्वर्ग को जाते हैं। ईश्वर प्रेम से उनका स्वागत करता है और उनसे कहता है—'आओ, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूं क्योंकि तुम मेरे बेटे को प्यार करते हो। हाथ धोकर मेज पर बैठ जाओ।' तब स्वर्ग अप्सराएं गाती हैं और जब तक

मेहमान लोग भोजन करते हैं, नाच होता रहता है। उन्हें ईश्वर अपनी आंखों की ज्योति से अधिक प्यार करता है, क्योंकि वे उसके मेहमान होते हैं और उनके विश्राम के लिए अपने भवन के गलीचे और उनके स्वादन के लिए अपने बाग का अनार प्रदान करता है।

अहमद इस प्रकार थायस से ईश्वर चर्चा करता था। वह विस्मित होकर कहती थी—'मुझे ईश्वर के बाग के अनार मिलें तो खूब खाऊं।'

अहमद कहता था—'स्वर्ग के फल वही प्राणी खा सकते हैं जो बपतिस्मा ले लेते हैं।'

तब थायस ने बपतिस्मा लेने की आकांक्षा प्रकट की। प्रभु मसीह में उसकी भक्ति देखकर अहमद ने उसे और भी धर्म-कथाएं सुनानी शुरू कीं।

इस प्रकार एक वर्ष तक बीत गया। ईस्टर का शुभ सप्ताह आया और ईसाइयों ने धर्मोत्सव मनाने की तैयारी की। इसी सप्ताह में एक रात को थायस नींद से चौंकी तो देखा कि अहमद उसे गोद में उठा रहा है। उसकी आंखों में इस समय अद्भुत चमक थी। वह और दिनों की भांति फटे हुए पाजामे नहीं, बल्कि एक श्वेत लम्बा ढीला चोगा पहने हुए था। उसके थायस को उसी चोगे में छिपा लिया और उसके कान में बोला—'आ, मेरी आंखों की पुतली, आ। और बपतिस्मा के पवित्र वस्त्र धारण कर।'

वह लड़की को छाती से लगाये हुए चला। थायस कुछ डरी, किन्तु उत्सुक भी थी। उसने सिर चोगे से बाहर निकाल लिया और अपने दोनों हाथ अहमद की मर्दन में डाल दिये। अहमद उसे लिये वेग से दौड़ा चला जाता था। वह एक तंग अंधेरी गली से होकर गुजरा; तब यहूदियों के मुहल्ले को पार किया, फिर एक कब्रिस्तान के गिर्द में घूमते हुए एक खुले मैदान में पहुंचा जहां, ईसाई, धर्माहतों की लाशें सलीबों पर लटकी हुई थीं। थायस ने अपना सिर चोगे में छिपा लिया और फिर रास्ते भर उसे मुंह बाहर निकालने का साहस न हुआ। उसे शीघ्र ज्ञात हो गया कि हम लोग किसी तहखाने में चले जा रहे हैं। जब उसने फिर आंखें खोलीं तो अपने को एक तंग खोह में पाया। राल की मशालें जल रही थीं। खोह की दीवारों पर ईसाई सिद्ध महात्माओं के चित्र बने हुए थे जो मशालों के अस्थिर प्रकाश में चलते-फिरते, सजीव मालूम होते थे। उनके हाथों में खजूर की डालें थीं और उनके इर्द-गिर्द मेमने, कबूतर, फाखते और अंगूर की बेलें चित्रित थीं। इन्हीं चित्रों में थायस ने ईसू को पहचाना, जिसके पैरों के पास फूलों का ढेर लगा हुआ था।

खोह के मध्य में, एक पत्थर के जलकुण्ड के पास, एक वृद्ध पुरुष लाल रंग का ढीला कुरता पहने खड़ा था। यद्यपि उसके वस्त्र बहुमूल्य थे, पर वह अत्यन्त दीन और सरल जान पड़ता था। उसका नाम बिशप जीवन था, जिसे बादशाह ने देश से निकाल दिया था। अब वह भेड़ का ऊन कातकर अपना निर्वाह करता था। उसके समीप दो लड़के खड़े थे। निकट ही एक बुढ़िया हब्शिन एक छोटा-सा सफेद कपड़ा लिये खड़ी थी। अहमद ने थायस को जमीन पर बैठा दिया और बिशप के सामने घुटनों के बल बैठकर बोला—'पूज्य पिता, यही वह छोटी लड़की है जिसे मैं प्राणों से भी अधिक चाहता हूं। मैं उसे आपकी सेवा में लाया हूं कि आप अपने वचनानुसार, यदि इच्छा हो तो, उसे बपतिस्मा प्रदान कीजिए।'

यह सुनकर बिशप ने हाथ फैलाया। उनकी उंगलियों के नाखून उखाड़ लिये गये थे क्योंकि आपत्ति के दिनों में वह राजाज्ञा की परवाह न करके अपने धर्म पर आरूढ़ रहे थे।

थायस डर गयी और अहमद की गोद में छिप गयी, किन्तु बिशप के इन स्नेहमय शब्दों ने उस आश्वस्त कर दिया—'प्रिय पुत्री, डरो मत। अहमद तेरा धर्म-पिता है जिसे हम लोग थियोडोरा कहते हैं, और यह वृद्धा स्त्री तेरी माता है जिसने अपने हाथों से तेरे लिए एक सफेद वस्त्र तैयार किया। इसका नाम नीतिदा है। यह इस जन्म में गुलाम है; पर स्वर्ग में यह प्रभु मसीह की प्रेयसी बनेगी।'

तब उसने थायस से पूछा—'थायस, क्या तू ईश्वर पर, जो हम सबों का परम पिता है, उसके इकलौते पुत्र प्रभु मसीह पर जिसने हमारी मुक्ति के लिए प्राण अर्पण किये, और मसीह के शिष्यों पर विश्वास करती हैं ?'

हब्शी और हब्शिन ने एक स्वर से कहा—'हां।'

तब बिशप के आदेश से नीतिदा ने थायस के कपड़े उतारे। वह नग्न हो गयी। उसके गले में केवल एक यन्त्र था। विशप ने उसे तीन बार जलकुण्ड में गोता दिया, और तब नीतिदा ने देह का पानी पोंछकर अपना सफेद वस्त्र पहना दिया। इस प्रकार वह बालिका ईसा शरण में आयी जो कितनी परीक्षाओं और प्रलोभनों के बाद अमर जीवन प्राप्त करने वाली थी।

जब यह संस्कार समाप्त हो गया और सब लोग खोह के बाहर निकले तो अहमद ने बिशप से कहा—'पूज्य पिता, हमें आज आनन्द मनाना चाहिए; क्योंकि हमने एक आत्मा को प्रभु मसीह के चरणों पर समर्पित किया। आज्ञा हो तो हम आपके शुभस्थान पर चलें और शेष रात्रि उत्सव मनाने में काटें।'

बिशप ने प्रसन्नता से इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। लोग बिशप के घर आये। इसमें केवल एक कमरा था। दो चरखे रखे हुए थे और एक फटी हुई दरी बिछी थी। जब यह लोग अन्दर पहुंचे तो बिशप ने नीतिदा से कहा—'चूल्हा और तेल की बोतल लाओ। भोजन बनायें।'

यह कहकर उसने कुछ मछलियां निकालीं, उन्हें तेल में भूना, तब सब-के-सब फर्श पर बैठकर भोजन करने लगे। बिशप ने अपनी यन्त्रणाओं का वृत्तान्त कहा और ईसाइयों की विजय पर विश्वास प्रकट किया। उसकी भाषा बहुत ही पेचदार, अलंकृत, उलझी हुई थी। तत्त्व कम, शब्दाडम्बर बहुत था। थायस मंत्र-मुग्ध-सी बैठी सुनती रही।

भोजन समाप्त हो जाने का बिशप ने मेहमानों को थोड़ी-सी शराब पिलाई। नशा चढ़ा तो वे बहक-बहककर बातें करने लगे। एक क्षण के बाद अहमद और नीतिदा ने नाचना शुरू किया। यह प्रेत-नृत्य था। दोनों हाथ हिला-हिलाकर कभी एक-दूसरे की तरफ लपकते, कभी दूर हट जाते। जब सेवा होने में थोड़ी देर रह गयी तो अहमद ने थायस को फिर गोद में उठाया और घर चला आया।

अन्य बालकों की भांति थायस भी आमोदप्रिय थी। दिनभर वह गलियों में बालकों के साथ नाचती-गाती रहती थी। रात को घर आती तब भी वह गीत गाया करती, जिनका सिर-पैर कुछ न होता।

अब उसे अहमद जैसे शान्त, सीधे-सीधे आदमी की अपेक्षा लड़के-लड़कियों की संगति अधिक रुचिकर मालूम होती ! अहमद भी उसके साथ कम दिखाई देता। ईसाइयों

पर अब बादशाह की क्रूर दृष्टि न थी, इसलिए वह अबाधरूप से धर्म संभाएं करने लगे थे। धर्मनिष्ठ अहमद इन सभाओं में सम्मिलित होने से कभी न चूकता। उसका धर्मोत्साह दिनों-दिन बढ़ने लगा। कभी-कभी वह बाजार में ईसाइयों को जमा करके उन्हें आने वाले सुखों की शुभ सूचना देता। उसकी सूरत देखते ही शहर के भिखारी, मजदूर, गुलाम, जिनका कोई आश्रय न था, जो रातों में सड़क पर सोते थे, एकत्र हो जाते और वह उनसे कहता—'गुलामों के मुक्त होने के बदन निकट हैं, न्याय जल्द आने वाला है, धन के मतवाले चैन की नींद न सो सकेंगे। ईश्वर के राज्य में गुलामों को ताजा शराब और स्वादिष्ट फल खाने को मिलेंगे, और धनी लोग कुत्तें की भांति दुबके हुए मेज के नीचे बैठे रहेंगे और उनका जूठन खायेंगे।'

यह शुभसन्देश शहर के कोने-कोने में गूंजने लगता और धनी स्वामियों को शंका होती कि कहीं उनके गुलाम उत्तेजित होकर बगावत न कर बैठें। थायस का पिता भी उससे जला करता था। वह कुत्सित भावों को गुप्त रखता।

एक दिन चांदी का एक नमकदान जो देवताओं के यज्ञ के लिए अलग रखा हुआ था, चोरी हो गया। अहमद ही अपराधी ठहराया गया। अवश्य अपने स्वामी को हानि पहुंचाने और देवताओं का अपमान करने के लिए उसने यह अधर्म किया है ! चोरी को साबित करने के लिए कोई प्रमाण नें था और अहमद पुकार-पुकारकर कहता था—मुझ पर व्यर्थ ही यह दोषारोपण किया जाता है। तिस पर भी वह अदालत में खड़ा किया गया। थायस के पिता ने कहा—'यह कभी मन लगाकर काम नहीं करता।' न्यायाधीश ने उसे प्राणदण्ड का हुक्म दे दिया। जब अहमद अदालत से चलने लगा तो न्यायधीश ने कहा—'तुमने अपने हाथों से अच्छी तरह काम नहीं लिया इसलिए अब यह सलीब में ठोंक दिये जायेंगे !'

अहमद ने शान्तिपूर्वक फैसला सुना, दीनता से न्यायाधीश को प्रणाम किया और तब कारागार में बन्द कर दिया गया। उसके जीवन के केवल तीन दिन और थे और तीनों दिनों दिन यह कैदियों को उपदेश देता रहा। कहते हैं उसके उपदेशों का ऐसा असर पड़ा कि सारे कैदी और जेल के कर्मचारी मसीह की शरण में आ गये। यह उसके अविचल धर्मानुराग का फल था।

चौथे दिन वह उसी स्थान पर पहुंचाया गया जहां से दो साल पहले, थायस को गोद में लिये वह बड़े आनन्द से निकला था। जब उसके हाथ सलीब पर ठोंक दिये गये, तो उसने 'उफ' तक न किया, और एक भी अपशब्द उसके मुंह से न निकला ! अन्त में बोला—'मैं प्यासा हूं !'

तीन दिन और तीन रात उसे असह्य प्राण-पीड़ा भोगनी पड़ी। मानव-शरीर इतना दुस्सह अगंविच्छेद सह सकता है, असम्भव-सा प्रतीत होता था। बारबार लोगों को खयाल होता था कि वह मर गया। मक्खियां आंखों पर जमा हो जातीं, किन्तु सहसा उसके रक्त-वर्ण नेत्र खुल जाते थे। चौथे दिन प्रातःकाल उसने बालकों के-से सरल और मृदुस्वर में गाना शुरू किया—मरियम, बता तू कहा गयी थी, और वहां क्या देखा? तब उसने मुस्कराकर कहा—

'वह स्वर्ग के दूत तुझे लेने को आ रहे हैं। उनका मुख कितना तेजस्वी है। वह अपने

साथ फल और शराब लिये आते हैं। उनके परों से कैसी निर्मल, सुखद वायु चल रही है।'

और यह कहते-कहते उसका प्राणान्त हो गया।

मरने पर भी उसका मुखमंडल आत्मोल्लास से उद्दीप्त हो रहा था। यहां तक कि वे सिपाही भी जो सलीब की रक्षा कर रहे थे, विस्मत हो गये। बिशप जीवन ने आकर शव का मृतक-संस्कार किया और ईसाई समुदाय ने महात्मा थियोडोर की कीर्ति को परमाज्ज्वल अक्षरों में अंकित किया।

अहमद के प्राणदण्ड के समय थायस का ग्यारहवां वर्ष पूरा हो चुका था। इस घटना से उसके हृदय को गहरा सदमा पहुंचा। उसकी आत्मा अभी इतनी पवित्र न थी कि वह अहमद की मृत्यु को उसके जीवन के समान ही मुबारक समझती, उसकी मृत्यु को उद्धार समझकर प्रसन्न होती। उसके अबोध मन में यह भ्रान्त बीज उत्पन्न हुआ कि इस संसार में वही प्राणी दया-धर्म का पालन कर सकता है जो कठिन-से-कठिन यातनाएं सहने के लिए तैयार रहे। यहां सज्जनता का दण्ड अवश्य मिलता है। उसे सत्कर्म से भय होता था कि कहीं मेरी भी यही दशा न हो। उसका कोमल शरीर पीड़ा सहने में असमर्थ था।

वह छोटी ही उम्र में बादशाह के युवकों के साथ क्रीड़ा करने लगी। संध्या समय वह बूढ़े आदमियों के पीछे लग जाती और उनसे कुछ-न-कुछ ले मरती थी। इस भांति जो कुछ मिलता उससे मिठाइयां और खिलौने मोल लेती। पर उसकी लोभिनी माता चाहती थी कि वह जो कुछ पाये वह मुझे दे। थायस इसे न मानती थी। इसलिए उसकी माता उसे मारा-पीटा करती थी। माता की मार से बचने के लिए वह बहुधा घर से भाग जाती और शहरपनाह की दीवार की दरारों में वन्य जन्तुओं के साथ छिपी रहती।

एक दिन उसकी माता ने इतनी निर्दयता से उसे पीटा कि वह घर से भागी और शहर के फाटक के पास चुपचाप पड़ी सिसक रही थी कि एक बुढ़िया उसके सामने जाकर खड़ी हो गयी। वह थोड़ी देर तक मुग्धभाव से उसकी ओर ताकती रही और तब बोली—'ओ मेरी गुलाब, मेरी गुलाब, मेरी फूल-सी बच्ची ! धन्य है तेरा पिता जिसने तुझे पैदा किया और धन्य है तेरी माता जिसने तुझे पाला।'

थायस चुपचाप बैठी जमीन की ओर देखती रही। उसकी आंखें लाल थीं, वह रो रही थी।

बुढ़िया ने फिर कहा—'मेरी आंखों की पुतली, मुन्नी, क्या तेरी माता तुझ-जैसी देवकन्या को पाल-पोसकर आनन्द से फूल नहीं जाती, और तेरा पिता तुझे देखकर गौरव से उन्मत्त नहीं हो जाता ?'

थायस ने इस तरह भुनभुनाकर उत्तर दिया, मानो मन ही में कह रही है—मेरा बाप शराब से फूला हुआ पीपा है और माता रक्त चूसने वाली जोंक है।

बुढ़िया ने दायें-बायें देखा कि कोई सुन तो नहीं रहा है, तब निश्शंक होकर अत्यन्त मृदु कंठ से बोली—'अरे मेरी प्यारी आंखों की ज्योति, ओ मेरी खिली हुई गुलाब की कली, मेरे साथ चलो। क्यों इतना कष्ट सहती हो ? ऐसे मां-बाप की झाड़ मारो। मेरे यहां तुम्हें नाचने और हंसने के सिवाय और कुछ न करना पड़ेगा। मैं तुम्हें शहद के रसगुल्ले खिलाऊंगी, और मेरा बेटा तुम्हें आंखों की पुतली बनाकर रखेगा। वह बड़ा सुन्दर सजीला

जबान है, उसकी दाढ़ी पर अभी बाल भी नहीं निकले, गोरे रंग का कोमल स्वभाव का प्यारा लड़का है।'

थायस ने कहा—'मैं शौक से तुम्हें साथ चलूंगी।' और उठकर बुढ़िया के पीछे शहर के बाहर चली गयी।

बुढ़िया का नाम मीरा था। उसके पास कई लड़के-लड़कियों की एक मंडली थी। उन्हें उसने नाचना, गाना, नकलें करना सिखाया था। इस मंडली को लेकर वह नगर-नगर घूमती थी, और अमीरों के जलसों में उनका नाच-गाना कराके अच्छा पुरस्कार लिया करती थी।

उसकी चतुर आंखों ने देख लिया कि यह कोई साधारण लड़की नहीं है। उसका उठान कहे देता था कि आगे चलकर वह अत्यन्त रूपवती रमणी होगी। उसने उसे कोड़े मारकर संगीत और पिंगल की शिक्षा दी। जब सितार के तालों के साथ उसके पैर न उठते तो वह उसकी कोमल पिंडलियों में चमड़े के तस्में से मारती। उसका पुत्र जो हिजड़ा था, थायस से द्वेष रखता था, जो उसे स्त्री मात्र से था। पर वह नाचने में, नकल करने में, मनोगत भावों को संकेत, सैन, आकृति द्वारा व्यक्त करने में, प्रेम की घातों के दर्शाने में, अत्यन्त कुशल था। हिजड़ों में यह गुण प्रायः ईश्वरदत्त होते हैं। उसने थायस को यह विद्या सिखाई, खुशी से नहीं, बल्कि इसलिए कि इस तरकीब से वह जी भरकर थायस को गालियां दे सकता था। जब उसने देखा कि थायस नाचने-गाने में निपुण होती जाती है और रसिक लोग उसके नृत्य-गान से जितने मुग्ध होते हैं उतना मेरे नृत्य-कौशल से नहीं होते तो उसकी छाती पर सांप काटने लगा। वह उसके गालों को नोच लेता, उसके हाथ-पैर में चुटकियां काटता। पर उसकी जलन से थायस को लेशमात्र भी दुःख न होता था। निर्दय व्यवहार का उसे अभ्यास हो गया था। अन्तियोकस उस समय बहुत आबाद शहर था। मीरा जब इस शहर में आयी तो उसने रईसों से थायस की खूब प्रशंसा की। थायस का रूप-लावण्य देखकर लोगों ने बड़े चाव से उसे अपनी राग-रंग की मजलिसों में निमन्त्रित किया, और उसके नृत्य-गान पर मोहित हो गये। शनैः-शनैः यही उसका नित्य का काम हो गया! नृत्य-गान समाप्त होने पर वह प्रायः सेठ-साहूकारों के साथ नदी के किनारे, घने कुञ्जों में विहार करती। उस समय तक उसे प्रेम के मूल्य का ज्ञान न था, जो कोई बुलाता उसके पास जाती, मानो कोई जौहरी का लड़का धनराशि को कौड़ियों की भांति लुटा रहा हो। उसका एक-एक कटाक्ष हृदय को कितना उद्विग्न कर देता है, उसका एक-एक कर स्पर्श कितना रोमांचकारी होता है, यह उसके अज्ञात यौवन को विदित न था।

एक रात को उसका मुजरा नगर के सबसे धनी रसिक युवकों के सामने हुआ। जब नृत्य बन्द हुआ तो नगर के प्रधान राज्य-कर्मचारी का बेटा, जवानी की उमंग और कामचेतना से विह्वल होकर उसके पास आया और ऐसे मधुर स्वर में बोला जो प्रेमरस में सनी हुई थी—

'थायस, यह मेरा परम सौभाग्य होता यदि तेरे अलकों में गुंथी हुई पुष्प-माला या तेरे कोमल शरीर का आभूषण, अथवा तेरे चरणों की पादुका मैं होता। यह मेरी परम लालसा है कि पादुका की भांति तेरे सुन्दर चरणों से कुचला जाता, मेरा प्रेमालिंगन तेरे सुकोमल शरीर का आभूषण और तेरी अलकराशि का पुष्प होता। सुन्दरी रमणी, मैं प्राणों को हाथ

में लिये तेरी भेंट करने को उत्सुक हो रहा हूं। मेरे साथ चल और हम दोनों प्रेम में मग्न होकर संसार को भूल जायें।'

जब तक वह बोलता रहा, थायस उसकी ओर विस्मित होकर ताकती रही। उसे ज्ञात हुआ कि उसका रूप मनोहर है। अकस्मात् उसे अपने माथे पर ठंडा पसीना बहता हुआ जान पड़ा। वह हरी घास की भांति आर्द्र हो गयी। उसके सिर में चक्कर आने लगे, आंखों के सामने मेघघटा-सी उठती हुई जान पड़ी। युवक ने फिर वही प्रेमाकांक्षा प्रकट की, लेकिन थायस ने फिर इनकार किया। उसके आतुर नेत्र, उसकी प्रेमयाचना बस निष्फल हुई, और जब उसने अधीर होकर उसे अपनी गोद में ले लिया और बलात् खींच ले जाना चाहा तो उसने निष्ठुरता से उसे हटा दिया। तब वह उसके सामने बैठकर रोने लगा। पर उसके हृदय में एक नवीन, अज्ञात और अलक्षित चैतन्यता उदित हो गयी थी। वह अब भी दुराग्रह करती रही।

मेहमानों ने सुना तो बोले—'यह कैसी पगली है ? लोलस कुलीन, रूपवान, धनी है, और यह नाचने वाली युवती उसका अपमान करती हैं !'

लोलस का रात घर लौटा तो प्रेममद तो मतवाला हो रहा था। प्रातःकाल वह फिर थायस के घर आया, तो उसका मुख विवर्ण और आंखें लाल थीं। उसने थायस के द्वार पर फूलों की माला चढ़ाई। लेकिन थायस भयभीत और अशान्त थी, और लोलस से मुंह छिपाती रहती थी। फिर भी लोलस की स्मृति एक क्षण के लिए भी उसकी आंखों से न उतरती। उसे वेदना होती थी पर वह इसका कारण न जानती थी। उसे आश्चर्य होता था कि मैं इतनी खिन्न और अन्यमनस्क क्यों हो गयी हूं। यह अन्य सब प्रेमियों से दूर भागती थी। उनसे उसे घृणा होती थी। उसे दिन का प्रकाश अच्छा न लगता, सारे दिन अकेले बिछावन पर पड़ी, तकिये में मुंह छिपाये रोया करती। लोलस कई बार किसी-न-किसी युक्ति से उसके पास पहुंचा, पर उसका प्रेमाग्रह, रोना-धोना, एक भी उसे न पिघला सका। उसके सामने वह ताक न सकती, केवल यही कहती—'नहीं, नहीं।'

लेकिन एक पक्ष के बाद उसकी जिद्द जाती रही। उसे ज्ञात हुआ कि मैं लोलस के प्रेमपाश में फंस गयी हूं। वह उसके घर गयी और उसके साथ रहने लगी। अब उनके आनन्द की सीमा न थी। दिन भर एक-दूसरे से आंखें मिलाये बैठे प्रेमलाप किया करते। संध्या को नदी के नीरव निर्जन तट पर हाथ-में-हाथ डाले टहलते। कभी-कभी अरुणोदय के समय उठकर पहाड़ियों पर सम्बुल के फूल बटोरने चले जाते। उनकी थाली एक थी। प्याला एक था, मेज एक थी। लोलस उसके मुंह के अंगूर निकालकर अपने मुंह में खा जाता।

तब मीरा लोलस के पास आकर रोने-पीटने लगी कि मेरी थायस को छोड़ दो। वह मेरी बेटी है, मेरी आंखों की पुतली ! मैंने इसी उदर से उसे निकाल, इस गोद में उसका लालन-पालन किया और अब तू उसे मेरी गोद से छीन लेना चाहता है।

लोलस ने उसे प्रचुर धन देकर विदा किया, लेकिन जब वह धनतृष्णा से लोलुप होकर फिर आयी तो लोलस ने उसे कैद करा दिया। न्यायाधिकारियों को ज्ञात हुआ कि वह कुटनी है, भोली लड़कियों को बहका ले जाना ही उसका उद्यम है तो उसे प्राणदण्ड दे दिया और

वह जंगली जानवरों के सामने फेंक दी गई।

लोलस अपनी अखंड, सम्पूर्ण कामना से थायस को प्यार करता था। उसकी प्रेम-कल्पना ने विराट् रूप धारण कर लिया था, जिससे उसकी किशोर चेतना सशंक हो जाती थी। थायस अन्तःकरण से कहती—'मैंने तुम्हारे सिवाय और किसी से प्रेम नहीं किया।'

लोलस जवाब देता—'तुम संसार में अद्वितीय हो।' दोनों पर छः महीने तक यह नशा सवार रहा। अन्त में टूट गया। थायस को ऐसा जान पड़ता कि मेरा हृदय शून्य और निर्जन है। वहां से कोई चीज गायब हो गयी है। लोलस उसकी दृष्टि में कुछ और मालूम होता था। वह सोचती—मुझमें सहसा यह अन्तर क्यों हो गया ? यह क्या बात है कि लोलस अब और मनुष्यों का-सा हो गया है, अपना-सा नहीं रहा ? मुझे क्या हो गया है ?

यह दशा उसे असह्य प्रतीत होने लगी। अखण्ड प्रेम के आस्वादन के बाद अब यह नीरस, शुष्क व्यापार उसकी तृष्णा को तृप्त न कर सका। वह अपने खोये हुए लोलस को किसी अन्य प्राणी में खोजने की गुप्त इच्छा को हृदय में छिपाये हुए, लोलस के पास से चली गयी। उसने सोचा प्रेम रहने पर भी किसी पुरुष के साथ रहना। उस आदमी के साथ रहने से कहीं सुखकर है जिससे अब प्रेम नहीं रहा। वह फिर नगर के विषयभोगियों के साथ उन धर्मोत्सवों में जाने लगी जहां वस्त्रहीन युवतियां मन्दिरों में नृत्य किया करती थीं, या जहां वेश्याओं के गोल-के-गोल नदी में तैरा करते थे। वह उस विलासप्रिय और रंगीले नगर के रागरंग में दिल खोलकर भाग लेने लगी। वह नित्य रंगशालाओं में आती जहां चतुर गवैये और नर्तक देश-देशान्तरों से आकर अपने करतब दिखाते थे और उत्तेजना के भूखे दर्शकवृन्द वाह-वाह की ध्वनि से आसमान सिर पर उठा लेते थे।

थायस गायकों, अभिनेताओं, विशेषतः उन स्त्रियों के चालढाल को बड़े ध्यान से देखा करती थी जो दुःखान्त नाटकों में मनुष्य से प्रेम करने वाली देवियों या देवताओं से प्रेम करने वाली स्त्रियों का अभिनय करती थीं। शीघ्र ही उसे वह लटके मालूम हो गये, जिनके द्वारा वह पात्राएं दर्शकों का मन हर लेती थीं, और उसने सोचा, क्या मैं जो उन सबों से रूपवती हूं, ऐसा ही अभिनय करके दर्शकों को प्रसन्न नहीं कर सकती? वह रंगशाला व्यवस्थापक के पास गयी और उससे कहा कि मुझे भी इस नाट्यमंडली में सम्मिलित कर लीजिए। उसके सौन्दर्य ने उसकी पूर्व-शिक्षा के साथ मिलकर उसकी सिफारिश की। व्यवस्थापक ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। और वह पहली बार रंगमंच पर आयी।

पहले दर्शकों ने उसका बहुत आशाजनक स्वागत न किया। एक तो वह इस काम में अभ्यस्त न थी, दूसरे उसकी प्रशंसा के पुल बांधकर जनता को पहले ही से उत्सुक न बनाया गया था। लेकिन कुछ दिनों तक गौण चरित्रों का पार्ट खेलने के बाद उसके यौवन ने वह हाथ-पांव निकाले कि सारा नगर लोटपोट हो गया। रंगशाला में कहीं तिल रखने भर की जगह न बचती। नगर के बड़े-बड़े हाकिम, रईस, अमीर, लोकमत के प्रभाव से रंगशाला में आने पर मजबूर हुए। शहर के चौकीदार, पल्लेदार, मेहतर, घाट के मजदूर, दिन-दिन भर उपवास करते थे कि अपनी जगह सुरक्षित करा लें। कविजन उसकी प्रशंसा में कवित्त कहते। लम्बी दाढ़ियों वाले विज्ञानशास्त्री व्यायामशालाओं में उसकी निन्दा और उपेक्षा करते। जब उसका तामझाम सड़क पर से निकलता तो ईसाई पादरी मुंह फेर लेते थे। उसके

द्वार की चौखट पुष्पमालाओं से ढकी रहती थी। अपने प्रेमियों से उसे इतना अतुल धन मिलता कि उसे गिनना मुश्किल था। तराजू पर तौल लिया जाता था। कृपण बूढ़ों की संग्रह की हुई समस्त सम्पत्ति उसके ऊपर कौड़ियों की भांति लुटाई जाती थी। पर उसे गर्व न था। ऐंठ न थी। देवताओं की कृपादृष्टि और जनता की प्रशंसाध्वनि से उसके हृदय को गौरवयुक्त आनन्द होता था। सबकी प्यारी बनकर वह अपने को प्यार करने लगी थी।

कई वर्ष तक ऐन्टिओकवासियों के प्रेम और प्रशंसा का सुख उठाने के बाद उसके मन में प्रबल उत्कंठा हुई कि इस्कन्द्रिया चलूं और उस नगर में अपना ठाट-बाट दिखाऊं, जहां बचपन में मैं नंगी और भूखी, दरिद्र और दुर्बल, सड़कों पर मारी-मारी फिरती थी और गलियों की खाक छानती थी। इस्कन्द्रियां आंखें बिछाये उसकी राह देखता था। उसने बड़े हर्ष से उसका स्वागत किया और उस पर मोती बरसाये। वह क्रीड़ाभूमि में आती तो धूम मच जाती। प्रेमियों और विलासियों के मारे उसे सांस न मिलती, पर वह किसी को मुंह न लगाती। दूसरा, लोलस उसे जब न मिला तो उसने उसकी चिन्ता ही छोड़ दी। उस स्वर्गसुख की अब उसे आशा न थी।

उसके अन्य प्रेमियों में तत्त्वज्ञानी निसियास भी था जो विरक्त होने का दावा करने पर भी उसके प्रेम का इच्छुक था। वह धनवान् था पर अन्य धनपतियों की भांति अभिमानी और मन्दबुद्धि न था। उसके स्वभाव में विनय और सौहार्द की आभा झलकती थी, किन्तु उसका मधुरहास्य और मृदुकल्पनाएं उसे रिझाने में सफल न होतीं। उसे निसियास से प्रेम न था, कभी-कभी उसके सुभाषितों से उसे चिढ़ होती थी। उसके शंकावाद से उसका चित्त व्यग्र हो जाता था, क्योंकि निसियास की श्रद्धा किसी पर न थी और थायस की श्रद्धा सभी पर थी। वह ईश्वर पर, भूत-प्रेतों पर जादू-टोने पर, जन्त्र-मन्त्र पर पूरा विश्वास करती थी। उसकी भक्ति प्रभु मसीह पर भी थी, स्याम वालों की पुनीता देवी पर भी उसे विश्वास था कि रात को जब अमुक प्रेत गलियों में निकलता है तो कुतियां भूंकती हैं। मारण, उच्चाटन, वशीकरण के विधानों पर और शक्ति पर उसे अटल विश्वास था। उसका चित्त अज्ञात न लिए उत्सुक रहता था। वह देवताओं की मनौतियां करती थी और सदैव शुभाशाओं में मग्न रहती थी भविष्य से यह शंका रहती थी, फिर भी उसे जानना चाहती थी। उसके यहां, ओझे, सयाने, तांत्रिक, मन्त्र जगाने वाले, हाथ देखने वाले जमा रहते थे। वह उनके हाथों नित्य धोखा खाती पर सतर्क न होती थी। वह मौत से डरती थी और उससे सतर्क रहती थी। सुख-भोग के समय भी उसे भय होता था कि कोई निर्दय कठोर हाथ उसका गला दबाने के लिए बढ़ा आता है और वह चिल्ला उठती थी।

निसियास कहता था—'प्रिये, एक ही बात है, चाहे हम रुग्ण और जर्जर होकर महारात्रि की गोद में समा जायें, अथवा यहीं बैठे, आनन्द-भोग करते, हंसते-खेलते, संसार से प्रस्थान कर जायें। जीवन का उद्देश्य सुख-भोग है। आओ जीवन की बाहार लूटें। प्रेम से हमारा जीवन सफल हो जायेगा। इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है। इसके सिवाय सब मिथ्या के लिए अपने जीवन सुख में क्यों बाधा डालें ?'

थायस सरोष होकर उत्तर देती—'तुम जैसे मनुष्यों से भगवान् बचाये, जिन्हें कोई आशा नहीं, कोई भय नहीं। मैं प्रकाश चाहती हूं, जिससे मेरा अन्तःकरण चमक उठे।'

जीवन के रहस्य को समझने के लिए उसे दर्शन-ग्रन्थों को पढ़ना शुरू किया, पर वह उसकी समझ में न आये। ज्यों-ज्यों बाल्यावस्था उससे दूर होती जाती थी, त्यों-त्यों उसकी याद उसे विकल करती थी। उसे रातों को भेष बदलकर उन सड़कों, गलियों, चौराहों पर घूमना बहुत प्रिय मालूम होता जहां उसका बचपन इतने दुःख से कटा था। उसे अपने माता-पिता के मरने का दुःख होता था, इस कारण और भी कि वह उन्हें प्यार न कर सकी थी।

जब किसी ईसाई पूजक से उसकी भेंट हो जाती तो उसे अपना बपतिस्मा याद आता और चित्त अशान्त हो जाता। एक रात को वह एक लम्बा लबादा ओढ़े, सुन्दर केशों को एक काले टोप से छिपाये, शहर के बाहर विचर रही थी कि सहसा वह एक गिरजाघर के सामने पहुंच गयी। उसे याद आया, मैंने इसे पहले भी देखा है। कुछ लोग अन्दर गा रहे थे और दीवार की दरारों से उज्ज्वल प्रकाश-रेखाएं बाहर झांक रही थीं। इसमें कोई नवीन बात न थी, क्योंकि इधर लगभग बीस वर्षों से ईसाई-धर्म में को विघ्नबाधा न थी, ईसाई लोग निरापद रूप से अपने धर्मोत्सव करते थे। लेकिन इन भजनों में इतनी अनुरक्ति, करुण स्वर्ग-ध्वनि थी, जो मर्मस्थल में चुटकियां लेती हुई जान पड़ती थीं। थायस अन्तःकरण के वशीभूत होकर इस तरह द्वार, खोलकर भीतर घुस गयी मानो किसी ने उसे बुलाया है। वहां उसे बाल, वृद्ध, नर-नारियों का एक बड़ा समूह एक समाधि के सामने सिजदा करता हुआ दिखाई दिया। यह कब्र केवल पत्थर की एक ताबूत थी, जिस पर अंगूर के गुच्छों और बेलों के आकार बने हुए थे। पर उस पर लोगों की असीम श्रद्धा थी। वह खजूर की टहनियों और गुलाब की पुष्पमालाओं से ढकी हुई थी। चारों तरफ दीपक जल रहे थे और उसके मलिन प्रकाश में लोबान, ऊद आदि का धुआं स्वर्गदूतों के वस्त्रों की तहों-सा दीखता था, और दीवार के चित्र स्वर्ग के दृश्यों के-से। कई श्वेत वस्त्रधारी पादरी कब्र के पैरों पर पेट के बल पड़े हुए थे। उनके भजन दुःख के आनन्द को प्रकट करते थे और अपने शोकोल्लास में दुःख और सुख, हर्ष और शोक का ऐसा समावेश कर रहे थे कि थायस को उनके सुनने से जीवन के सुख और मृत्यु के भय, एक साथ ही किसी जल-स्रोत की भांति अपनी सचिन्त-स्नायुओं में बहते हुए जान पड़े।

जब गाना बन्द हुआ तो भक्त-जन उठे और एक कतार में कब्र के पास जाकर उसे चूमा। यह सामान्य प्राणी थे; जो मजूरी करके निर्वाह करते थे। क्या ही धीरे-धीरे पग उठाते, आंखों में आंसू भरे, सिर झुकाये, वे आगे बढ़ते और बारी-बारी से कब्र की परिक्रमा करते थे। स्त्रियों ने अपने बालकों को गोद में उठाकर कब्र पर उनके होंठ रख दिये।

थायस ने विस्मित और चिन्तित होकर एक पादरी से पूछा—'पूज्य पिता, यह कैसा समारोह है ?'

पादरी ने उत्तर दिया—'क्या तुम्हें नहीं मालूम कि हम आज सन्त थियोडोर की जयन्ती मना रहे हैं ? उनका जीवन पवित्र था। उन्होंने अपने को धर्म की बलिवेदी पर चढ़ा दिया, और इसीलिए हम श्वेत वस्त्र पहनकर उनकी समाधि पर लाल गुलाब के फूल चढ़ाने आये हैं।'

यह सुनते ही थायस घुटनों के बल बैठ गयी और जोर से रो पड़ी। अहमद की

अर्ध-विस्मृत स्मृतियां जाग्रत हो गयीं। उस दीन, दुखी, अभागे प्राणी की कीर्ति कितनी उज्ज्वल है ! उसके नाम पर दीपक जलते हैं, गुलाब की लपटें आती हैं, हवन के सुगन्धित धुएं उठते हैं, मीठे स्वरों का नाद होता है और पवित्र आत्माएं मस्तक झुकाती हैं। थायस ने सोचा—अपने जीवन में वह पुण्यात्मा था, पर अब वह पूज्य और उपास्य हो गया हैं ! वह अन्य प्राणियों की अपेक्षा क्यों इतना श्रद्धास्पद है ? वह कौन-सी अज्ञात वस्तु है जो धन और भोग से भी बहुमूल्य है ?

वह आहिस्ता से उठी और उस सन्त की समाधि की ओर चली जिसने उसे गोद में खेलाया था। उसकी अपूर्व आंखों में भरे हुए अश्रुबिन्दु दीपक के आलोक में चमक रहे थे। तब वह सिर झुकाकर, दीनभाव से कब्र के पास गयी और उस पर अपने अधरों से अपनी हार्दिक श्रद्धा अंकित कर दी—उन्हीं अधरों से जो अगणित तृष्णाओं का क्रीड़ा-क्षेत्र थे !

जब वह घर आयी तो निसियास को बाल संवारे, वस्त्रों में सुगन्ध मले, कबा के बन्द खोले बैठे देखा। वह उसके इन्तजार में समय काटने के लिए एक नीतिग्रंथ पढ़ रहा था। उसे देखते ही वह बांहें खोले उसकी बढ़ा और मृदुहास्य से बोला—'कहां गयी थीं, चंचला देवी ? तुम जानती हो तुम्हारे इन्तजार में बैठा हुआ, मैं इस नीतिग्रंथ में क्या पढ़ रहा था?' नीति के वाक्य और शुद्धाचरण के उपदेश ?' 'कदापि नहीं। ग्रंथ के पन्नों पर अक्षरों की जगह अगणित छोटी-छोटी थायसें नृत्य कर रही थीं। उनमें से एक भी मेरी उंगली से बड़ी न थी, पर उनकी छवि अपार थी और सब एक ही थायस का प्रतिबिम्ब थीं। कोई तो रत्नजड़ित वस्त्र पहने अकड़ती हुई चलती थी, कोई श्वेत मेघसमूह के सदृश्य स्वच्छ आवरण धारण किये हुए थी; कोई ऐसी भी थीं जिनकी नग्नता हृदय में वासना का संचार करती थी। सबके पीछे दो, एक ही रंगरूप की थीं। इतनी अनुरूप कि उनमें भेद करना कठिन था। दोनों हाथ-में-हाथ मिलाये हुए थीं, दोनों ही हंसती थीं। पहली कहती थी—मैं प्रेम हूं। दूसरी कहती थी—मैं नृत्य हूं।'

यह कहकर निसियास ने थायस को अपने करपाश में खींच लिया। थायस की आंखें झुकी हुई थीं। निसियास को यह ज्ञान न हो सका कि उनमें कितना रोष भरा हुआ है। वह इसी भांति सूक्तियों की वर्षा करता रहा, इस बात से बेखबर कि थायस का ध्यान ही इधर नहीं है। वह कह रहा था—'जब मेरी आंखों के सामने यह शब्द आये—अपनी आत्मशुद्धि के मार्ग में कोई बाधा मत आने दो, तो मैंने पढ़ा 'थायस के अधरस्पर्श अग्नि से दाहक और मधु से मधुर हैं।' इसी भांति एक पण्डित दूसरे पण्डितों के विचारों को उलट-पलट देता है; और यह तुम्हारा ही दोष है। यह सर्वथा सत्य है कि जब तक हम वही हैं जो हैं, तब तक हम दूसरों के विचारों में अपने ही विचारों की झलक देखते रहेंगे।'

वह अब भी इधर मुखातिब न हुई। उसकी आत्मा अभी तक हब्शी की कब्र के सामने झुकी हुई थी। सहसा उसे आह भरते देखकर उसने उसकी गर्दन का चुम्बन कर लिया और बोला—'प्रिये, संसार में सुख नहीं है जब तक हम संसार को भूल न जायें। आओ, हम संसार से छल करें, छल करके उससे सुख लें—प्रेम में सब-कुछ भूल जायें।'

लेकिन उसने उसे पीछे हटा दिया और व्यथित होकर बोली—'तुम प्रेम का मर्म नहीं जानते ! तुमने कभी किसी से प्रेम नहीं किया। मैं तुम्हें नहीं चाहती, जरा भी नहीं चाहती।

यहां से चले जाओ, मुझे तुमसे घृणा होती है। अभी चले जाओ, मुझे तुम्हारी सूरत से नफरत है। मुझे उन सब प्राणियों से घृणा है, धनी है, आनन्दभोगी हैं। जाओ, जाओ। दया और प्रेम उन्हीं में है जो अभागे हैं। जब मैं छोटी थी तो मेरे यहां एक हब्शी था जिसने सलीब पर जान दी। वह सज्जन था, वह जीवन के रहस्यों को जानता था। तुम उसके चरण धोने योग्य भी नहीं हो। चले जाओ। तुम्हारा स्त्रियों का-सा शृंगार मुझे एक आंख नहीं भाता। फिर मुझे अपनी सूरत मत दिखाना।'

यह कहते-कहते वह फर्श पर मुंह के बल गिर पड़ी और सारी रात रोकर काटी। उसने संकल्प किया कि मैं सन्त थियोडोर की भांति और दरिद्र दशा में जीवन व्यतीत करूंगी।

दूसरे दिन वह फिर उन्हीं वासनाओं में लिप्त हो गयी जिनकी उसे चाट पड़ गयी थी। वह जानती थी कि उसकी रूप-शोभा अभी पूरे तेज पर है, पर स्थायी नहीं इसीलिए इसके द्वारा जितना सुख और जितनी ख्याति प्राप्त हो सकती थी उसे प्राप्त करने के लिए वह अधीर हो उठी। थियेटर में वह पहले की अपेक्षा और देर तक बैठकर पुस्तकावलोकन किया करती। वह कवियों, मूर्तिकारों और चित्रकारों की कल्पनाओं को सजीव बना देती थी, विद्वानों और तत्त्वज्ञानियों को उसकी गति, अगंविन्यास और उस प्राकृतिक माधुर्य की झलक नजर आती थी जो समस्त संसार में व्यापक है और उनके विचार में ऐसी अर्पूव शोभा स्वयं एक पवित्र वस्तु थी। दीन, दरिद्र, मूर्ख लोग्र उसे एक स्वर्गीय पदार्थ समझते थे। कोई किसी रूप में उसकी उपासना करता था, कोई किसी रूप में। कोई उसे भोग्य समझता था, कोई स्तुत्य और कोई पूज्य। किन्तु इस प्रेम, भक्ति और श्रद्धा की पात्रा होकर भी वह दुःखी थी, मृत्यु की शंका उसे अब और भी अधिक होने लगी। किसी वस्तु से उसे इस शंका से निवृत्ति न होती। उसका विशाल भवन और उपवन भी, जिनकी शोभा अकथनीय थी और जो समस्त नगर में जनश्रुति बने हुए थे, उसे आश्वस्त करने में असफल थे।

इस उपवन में ईरान और हिन्दुस्तान के वृक्ष थे, जिनके लाने और पालने में अपरिमित धन व्यय हुआ था। उनकी सिंचाई के लिए एक निर्मल जल धारा बहायी गयी थी। समीप ही एक झील बनी हुई थी। जिसमें एक कुशल कलाकार के हाथों सजाये हुए स्तम्भ-चिह्नों और कृत्रिम पहाड़ियों तक तट पर की सुन्दर मूर्तियों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता था। उपवन के मध्य में 'परियों का कुंज' था। यह नाम इसलिए पड़ा था कि उस भवन के द्वार पर तीन पूरे कद की स्त्रियों की मूर्तियां खड़ी थीं। वह सशंक होकर पीछे ताक रही थीं कि कोई देखता न हो। मूर्तिकार ने उनकी चितवनों द्वारा मूर्तियों में जान डाल दी थी। भवन में जो प्रकाश आता था वह पानी की पतली चादरों से छनकर मद्धिम और रंगीन हो जाता था। दीवारों पर भांति-भांति की झालरें, मालाएं और चित्र लटके हुए थे। बीच में एक हाथीदांत की परम मनोहर मूर्ति थी जो निसियास ने भेंट की थी। एक तिपाई पर एक काले पाषाण की बकरी की मूर्ति थी, जिसकी आंखें नीलम की बनी हुई थीं। उसके थनों को घेरे हुए छः चीनी के बच्चे खड़े थे, लेकिन बकरी अपने फटे हुए खुर उठाकर ऊपर की पहाड़ी पर उचक जाना चाहती थी। फर्श पर ईरानी कालीनें बिछी हुई थीं, मसनदों पर कैथे के बने हुए सुनहरे बेल-बूटे थे। सोने के धूपदान से सुगन्धित धुएं उठ रहे थे, और बड़े-बड़े चीनी गमलों में

फूलों से लदे हुए पौधे सजाये हुए थे। सिरे पर, ऊदी छाया में, एक बड़े हिन्दुस्तानी कछुए के सुनहरे नख चमक रहे थे जो पेट के बल उलट दिया गया था। यही थायस का शयनागार था। इसी कछुए के पेट पर लेटी हुई वह इस सुगन्ध और सजावट और सुषमा का आनन्द उठाती थी, मित्रों से बातचीत करती थी और या तो अभिनय-कला का मनन करती थी, या बीते हुए दिनों का।

तीसरा पहर था। थायस परियों के कुंज में शयन कर रही थी। उसने आईने में अपने सौन्दर्य की अवनति के प्रथम चिह्न देखे थे, और उसे इस विचार से पीड़ा हो रही थी कि झुर्रियों और श्वेत बालों का आक्रमण होने वाला है उसने इस विचार से अपने को आश्वासन देने की विफल चेष्टा की कि मैं जड़ी-बूटियों के हवन करके मंत्रों द्वारा अपने वर्ण की कोमलता को फिर से प्राप्त कर लूंगी। उसके कानों में इन शब्दों की निर्दय ध्वनि आयी—'थायस, तू बुढ़िया हो जायेगी !' भय से उसके माथे पर ठण्डा-ठण्डा पसीना आ गया। तब उसने पुनः अपने को संभालकर आईने में देखा और उसे ज्ञात हुआ कि मैं अब भी परम सुन्दरी और प्रेयसी बनने के योग्य हूं। उसने पुलकित मन से मुस्कराकर मन में कहा—आज भी इस्कन्द्रिया में काई ऐसी रमणी नहीं है जो अंगों की चपलता और लचक में मुझसे टक्कर ले सके। मेरी बांहों की शोभा अब भी हृदय को खींच सकती है, यथार्थ में यही प्रेम का पाश है !

वह इसी विचार में मग्न थी कि उसने एक अपरिचित मनुष्य को अपने सामने आते देखा। उसकी आंखों में ज्वाला थी, दाढ़ी बढ़ी हुई थी और वस्त्र बहुमूल्य थे। उसके हाथ में आईना छूटकर गिर पड़ा और वह भय से चीख उठी।

पापनाशी स्तम्भित हो गया। उसका अपूर्व सौन्दर्य देखकर उसने शुद्ध अन्तःकरण से प्रार्थना की—भगवान् मुझे ऐसी शक्ति दीजिए कि इस स्त्री का मुख मुझे लुब्ध न करे, वरन् तेरे इस दास की प्रतिज्ञा को और भी दृढ़ करे।

तब अपने को संभालकर वह बोला—'थायस, मैं एक दूर देश में रहता हूं, तेरे सौन्दर्य की प्रशंसा सुनकर तेरे पास आया हूं। मैंने सुना था तुमसे चतुर अभिनेत्री और तुमसे मुग्धकर स्त्री संसार में नहीं है। तुम्हारे प्रेम-रहस्यों और तुम्हारे धन के विषय में जो कुछ कहा जाता है वह आश्चर्यजनक है, और उससे 'रोडोप' की कथा याद आती है, जिसकी कीर्ति को नील के मांझी नित्य गाया करते हैं। इसलिए मुझे भी तुम्हारे दर्शनों की अभिलाषा हुई और अब मैं देखता हूं कि प्रत्यक्ष सुनी-सुनाई बातों से कहीं बढ़कर है। जितना मशहूर है उससे तुम हजार गुना चतुर और मोहिनी हो। वास्तव में तुम्हारे सामने बिना मतवालों की भांति डगमगाये आना असम्भव है।'

यह शब्द कृत्रिम थे, किन्तु योगी ने पवित्र भक्ति से प्रभावित होकर सच्चे जोश से उनका उच्चारण किया। थायस ने प्रसन्न होकर इस विचित्र प्राणी की ओर ताका जिससे वह पहले भयभीत हो गयी थी। उसके अभद्र और उद्दण्ड वेश ने उसे विस्मित कर दिया। उसे अब तक जितने मनुष्य मिले थे, यह उन सबों से निराला था। उसके मन में ऐसे अद्भुत प्राणी के जीवन-वृत्तान्त जानने की प्रबल उत्कंठा हुई। उसने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा—'महाशय, आप प्रेम-प्रदर्शन में बड़े कुशल मालूम होते हैं। होशियार रहियेगा कि

मेरी चितबनें आपके हृदय के पार न हो जायें। मेरे प्रेम के मैदान में जरा संभलकर कदम रखियेगा।'

पापनाशी बोला—'थामस, मुझे तुमसे अगाध प्रेम है। तुम मुझे जीवन और आत्मा से भी प्रिय हो। तुम्हारे लिए मैंने अपना वन्यजीवन छोड़ा है, तुम्हारे लिए मेरे होंठों से, जिन्होंने मौनव्रत धारण किया था, अपवित्र शब्द निकले हैं। तुम्हारे लिए मैंने वह देखा जो न देखना चाहिए था, वह सुना है जो मेरे लिए वर्जित था। तुम्हारे लिए मेरी आत्मा तड़प रही है, मेरा हृदय अधीर हो रहा है और जलस्रोत की भांति विचार की धाराएं प्रवाहित हो रहीं हैं। तुम्हारे लिए मैं अपने नंगे पैर सर्पों और बिच्छुओं पर रखते हुए भी नहीं हिचका हूं। अब तुम्हें मालूम हो गया होगा कि मुझे तुमसे कितना प्रेम है। लेकिन मेरा प्रेम उन मनुष्यों का-सा नहीं है जो वासना की अग्नि से जलते हुए तुम्हारे पास जीवभक्षी व्याघ्रों की, और उन्मत्त सांड़ों की भांति दौड़े आते हैं। उनका वही प्रेम होता है जो सिंह को मृग-शावक से। उनकी पाशविक कामलिप्सा तुम्हारी आत्मा को भी भस्मी-भूत कर डालेगी। मेरा प्रेम पवित्र है, अनन्त है, स्थायी है। मैं तुमसे ईश्वर के नाम पर, सत्य के नाम पर प्रेम करता हूं। मेरा हृदय पतितोद्धार और ईश्वरीय दया के भाव से परिपूर्ण है। मैं तुम्हें फलों से ढकी हुई शराब की मस्ती से और एक अल्परात्रि के सुख-स्वप्न से कहीं उत्तम पदार्थों का वचन देने आया हूं। मैं तुम्हें महाप्रसाद और सुधारसपान का निमन्त्रण देने आया हूं। मैं तुम्हें उस आनन्द का सुख-संवाद सुनाने आया हूं जो नित्य, अमर, अखण्ड है। मृत्युलोक के प्राणी यदि उसको देख लें तो आश्चर्य से भर जायें।'

थायस ने कुटिल हास्य करके उत्तर दिया—'मित्र, यदि वह ऐसा अद्भुत प्रेम है तो तुरन्त दिखा दो। एक क्षण भी विलम्ब न करो। लम्बी-लम्बी वक्तृताओं से मेरे सौन्दर्य का अपमान होगा। मैं आनन्द का स्वाद उठाने के लिए रो रही हूं। किन्तु जो मेरे दिल की बात पूछो, तो मुझे इस कोरी प्रशंसा के सिवा और कुछ हाथ न आयेगा। वादे करना आसान है; उन्हें पूरा करना मुश्किल है। सभी मनष्यों में कोई-न-कोई गुण विशेष होता है। ऐसा मालूम होता है कि तुम वाणी में निपुण हो। तुम एक अज्ञात प्रेम का वचन देते हो। मुझे यह व्यापार करते इतने दिन हो गये और उसका इतना अनुभव हो गया है कि अब उसमें किसी नवीनता की किसी रहस्य की आशा नहीं रही। इस विषय का ज्ञान प्रेमियों को दार्शनिकों से अधिक होता है।'

'थायस, दिल्लगी की बात नहीं है, मैं तुम्हारे लिए अछूता प्रेम लाया हूं।'

'मित्र, तुम बहुत देर में आये। मैं सभी प्रकार के प्रेमों का स्वाद ले चुकी हूं।'

'मैं जो प्रेम लाया हूं, वह उज्ज्वल है, श्रेय है! तुम्हें जिस प्रेम का अनुभव हुआ है वह निंद्य और त्याज्य है।'

थायस ने गर्व से गर्दन उठाकर कहा—'मित्र, तुम मुंहफट जान पड़ते हो। तुम्हें गृहस्वामिनी के प्रति मुख से ऐसे शब्द निकालने में जरा भी संकोच नहीं होता ? मेरी ओर आंख उठाकर देखो और तब बताओ कि मेरा स्वरूप निन्दित और पतित प्राणियों ही का-सा है। नहीं, मैं अपने कृत्यों पर लज्जित नहीं हूं। अन्य स्त्रियां भी, जिनका जीवन मेरे ही जैसा है, अपने को नीच और पतित नहीं समझतीं, यद्यपि, उनके पास न इतना धन है और न

इतना रूप। सुख मेरे पैरों के नीचे आंखें बिछाये रहता है, इसे सारा जगत् जानता है। मैं संसार के मुकुट-धारियों को पैर की धूलि समझती हूं। उन सबों ने इन्हीं पैरों पर शीश नवाये हैं। आंखें उठाओ। मेरे पैरों की ओर देखो। लाखों प्राणी उनका चुम्बन करने के लिए अपने प्राण भेंट कर देंगे। मेरा डील-डौल बहुत बड़ा नहीं है, मेरे लिए पृथ्वी पर बहुत स्थान की जरूरत नहीं। जो लोग मुझे देवमन्दिर के शिखर पर से देखते हैं, उन्हें मैं बालू के कण के समान दीखती हूं, पर इस कण ने मनुष्यों में जितनी ईर्ष्या, जितना द्वेष, जितनी निराशा, जितनी अभिलाषा और जितने पापों का संचार किया है उनके बोझ से अटल पर्वत भी दब जायेगा। जब मेरी कीर्ति समस्त संसार में प्रसारित हो रही है तो तुम्हारी लज्जा और निद्रा की बात करना पागलपन नहीं तो और क्या है ?'

पापनाशी ने अविचलित भाव से उत्तर दिया—'सुन्दरी, यह तुम्हारी भूल है। मनुष्य जिस बात की सराहना करते हैं वह ईश्वर की दृष्टि में पाप है। हमने इतने भिन्न-भिन्न देशों में जन्म लिया है कि यदि हमारी भाषा और विचार अनुरूप न हों तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। लेकिन मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूं कि मैं तुम्हारे पास से जाना नहीं चाहता। कौन मेरे मुख में ऐसे आग्नेय शब्दों को प्रेरित करेगा जो तुम्हें मोम की भांति पिघला दें कि मेरी उंगलियां तुम्हें अपनी इच्छा के अनुसार रूप दे सकें ? ओ नारीरत्न ! यह कौन-सी शक्ति है जो तुम्हें मेरे हाथों में सौंप देगी कि मेरे अन्तःकरण में निहित सद्प्रेरणा तुम्हारा पुनर्संस्कार करके तुम्हें ऐसा नया और परिष्कृत सौन्दर्य प्रदान करे कि तुम आनन्द से विह्वल हो पुकार उठो, मेरा फिर से नया संस्कार हुआ ? कौन मेरे हृदय में उस सुधास्रोत को प्रवाहित करेगा कि तुम उसमें नहाकर फिर अपनी मौलिक पवित्रता लाभ कर सको ? कौन मुझे मर्दन की निर्मल धारा में परिवर्तित कर देगा जिसकी लहरों का स्पर्श तुम्हें अनन्त सौन्दर्य से विभूषित कर दे ?'

थायस का क्रोध शान्त हो गया। उसने सोचा—यह पुरुष अनन्त जीवन के रहस्यों में परिचित है, और जो कुछ वह कह सकता है उसमें ऋषिवाक्यों की-सी प्रतिभा है। यह अवश्य कोई कीमियागर है और ऐसे गुप्तमन्त्र जानता है जो जीर्णावस्था का निवारण कर सकते हैं। उसने अपनी देह को उसकी इच्छाओं को समर्पित करने का निश्चय कर लिया। वह एक सशंक पक्षी की भांति कई कदम पीछे हट गयी और अपने पलंग पट्टी पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगी। उसकी आंखें झुकी हुई थीं और लम्बी पलकों की मलिन छाया कपालों पर पड़ रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि कोई बालक नदी के किनारे बैठा हुआ किसी विचार में मग्न है।

किन्तु पापनाशी केवल उसकी ओर टकटकी लगाये ताकता रहा, अपनी जगह से जौ भर भी न हिला। उसके घुटने थरथरा रहे थे और मालूम होता था कि वे उसे संभाल न सकेंगे। उसका तालू सूख गया था, कानों में तीव्र भनभनाहट की आवाज आने लगी। अकस्मात् उसकी आंखों के सामने अन्धकार छा गया, मानो समस्त भवन मेघाच्छादित हो गया है। उसे ऐसा भाषित हुआ कि प्रभु मसीह ने इस स्त्री को छिपाने के निमित्त उसकी आंखों पर परदा डाल दिया है। इस गुप्त करावलम्ब से आश्वस्त और सशक्त होकर उसने ऐसे गम्भीर भाव से कहा जो किसी वृद्ध तपस्वी के यथायोग्य था—क्या तुम समझती हो

कि तुम्हारा यह आत्महनन ईश्वर की निगाहों से छिपा हुआ है ?'

उसने सिर हिलाकर कहा—'ईश्वर ? ईश्वर से कौन कहता है कि सदैव परियों के कुंज पर आंखें जमाये रखे ? यदि हमारे काम उसे नहीं भाते तो वह यहां से चला क्यों नहीं जाता ? लेकिन हमारे कर्म उसे बुरे लगते ही क्यों हैं ? उसी ने हमारी सृष्टि की है। जैसा उसने बनाया है वैसे ही हम हैं। जैसी वृत्तियां उसने हमें दी हैं उसी के अनुसार हम आचरण करते हैं ! फिर उसे हमसे रुष्ट होने का, अथवा विस्मित होने का क्या अधिकार है ? उसकी तरफ से लोग बहुत-सी मनगढ़न्त बातें किया करते हैं और उसको ऐसे-ऐसे विचारों का श्रेय देते हैं जो उसके मन में कभी न थे। तुमको उसके मन की बातें जानने का दावा है। तुमको उसके चरित्र का यथार्थ ज्ञान है। तुम कौन हो कि उसके वकील बनकर मुझे ऐसी-ऐसी आशाएं दिलाते हो ?'

पापनाशी ने मंगनी के बहुमूल्य वस्त्र उतारकर नीचे का मोटा कुरता दिखाते हुए कहा—'मैं धर्माश्रम का योगी हूं। मेरा नाम पापनाशी है। मैं उसी पवित्र तपोभूमि से आ रहा हूं। ईश्वर की आज्ञा से मैं एकान्त-सेवन करता हूं। मैंने संसार से और संसार के प्राणियों से मुंह मोड़ लिया था। इस पापमय संसार में निर्लिप्त रहना ही मेरा उद्दिष्ट मार्ग है। लेकिन तेरी मूर्ति मेरी शान्तिकुटीर में आकर मेरे सम्मुख खड़ी हुई और मैंने देखा कि तू पाप और वासना में लिप्त है, मृत्यु तुझे अपना ग्रास बनाने को खड़ी है। मेरी दया जागृत हो गयी और तेरा उद्धार करने के लिए आ उपस्थित हुआ हूं। मैं तुझे पुकारकर कहता हूं—थायस, उठ, अब समय नहीं है।'

योगी के यह शब्द सुनकर थायस भय से थरथर कांपने लगी। उसका मुख श्रीहीन हो गया, वह केश छिटकाये, दोनों हाथ जोड़े रोती और विलाप करती हुई उसके पैरों पर गिर पड़ी और बोली—'महात्मा जी, ईश्वर के लिए मुझ पर दया कीजिए। आप यहां क्यों आये हैं ? आपकी क्या इच्छा है ? मेरा सर्वनाश न कीजिए। मैं जानता हूं कि तपोभूमि के ऋषिगण हम जैसी स्त्रियों से घृणा करते हैं, जिनका जन्म ही दूसरों को प्रसन्न रखने के लिए होता है। मुझे भय हो रहा है कि आप मुझसे घृणा करते हैं और मेरा सर्वनाश करने पर उद्यत हैं। कृपया यहां से सिधारिए। मैं आपकी शक्ति और सिद्धि के सामने सिर झुकाती हूं। लेकिन आपका मुझ पर कोप करना उचित नहीं है, क्योंकि मैं अन्य मनुष्यों की भांति आप लोगों की भिक्षावृत्ति और संयम की निन्दा नहीं करती। आप भी मेरे भोग-विलास को पाप न समझिए। मैं रूपवती हूं और अभिनय करने में चतुर हूं। मेरा काबू न अपनी दशा पर है, और न अपनी प्रकृति पर। मैं जिस काम के योग्य बनायी गयी हूं वही करती हूं। मनुष्यों को मुग्ध करने ही के निमित्त मेरी सृष्टि हुई है। आप भी तो अभी कह रहे थे कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं। अपनी सिद्धियों से मेरा अनुपकार न कीजिए। ऐसा मन्त्र न चलाइए कि मेरा सौन्दर्य नष्ट हो जाय, या मैं पत्थर तथा नमक की मूर्ति बन जाऊं। मुझे भयभीत न कीजिए। मेरे तो पहले ही से प्राण सूखे हुए हैं। मुझे मौत का मुंह न दिखाइए, मुझे मौत से बहुत डर लगता है।'

पापनाशी ने उसे उठने का इशारा किया और बोला—'बच्चा, डर मत। तेरे प्रति अपमान या घृणा का शब्द भी मेरे मुंह से न निकलेगा। मैं उस महान् पुरुष की ओर से

आया हूं, जो पापियों को गले लगाता था, वेश्याओं के घर भोजन करता था, हत्यारों से प्रेम करता था, पतितों को सान्त्वना देता था। मैं स्वयं पापमुक्त नहीं हूं कि दूसरों पर पत्थर फेंकूं। मैंने कितनी ही बार उस विभूति का दुरुपयोग किया है जो ईश्वर ने मुझे प्रदान की है। क्रोध ने मुझे यहां आने पर उत्साहित नहीं किया। मैं दया के वशीभूत होकर आया हूं। मैं निष्कपट भाव से प्रेम के शब्दों में तुझे आश्वासन दे सकता हूं, क्योंकि मेरा पवित्र धर्मस्नेह ही मुझे यहां लाया है। मेरे हृदय में वात्सल्य की अग्नि प्रज्वलित हो रही है और यदि तेरी आंखें जो विषय के स्थूल, अपवित्र दृश्यों के वशीभूत हो रही हैं, वस्तुओं को उनके आध्यात्मिक रूप में देखतीं तो तुझे विदित होता कि मैं उस जलती हुई झाड़ी का एक पल्लव हूं जो ईश्वर ने अपने प्रेम का परिचय देने के लिए मूसा को पर्वत पर दिखाई थी—जो समस्त संसार में व्याप्त है, और जो वस्तुओं को भस्म कर देने के बदले, जिस वस्तु में प्रवेश करती है उसे सदा के लिए निर्मल और सुगन्धमय बना देती है।'

थायस ने आश्वस्त होकर कहा—'महात्मा जी, अब मुझे आप पर विश्वास हो गया है। मुझे आपसे किसी अनिष्ट या अमंगल की आशंका नहीं है। मैंने धर्माश्रम के तपस्वियों की बहुत चर्चा सुनी है। ऐन्टोनी और पॉल के विषय में बड़ी अद्भुत कथाएं सुनने में आयी हैं। आपके नाम से भी मैं अपरिचित नहीं हूं और मैंने लोगों को कहते सुना है कि यद्यपि आपकी उम्र अभी कम है, आप धर्मनिष्ठा में उन तपस्वियों से भी श्रेष्ठ हैं जिन्होंने अपना समस्त जीवन ईश्वर आराधना में व्यतीत किया। यद्यपि मेरा अपसे परिचय न था, किन्तु आपको देखते ही मैं समझ गयी कि आप कोई साधारण पुरुष नहीं हैं। बताइये, आप मुझे वह वस्तु प्रदान कर सकते हैं जो सारे संसार के सिद्ध और साधु, ओझे और सयाने, कापालिक और वैतालिक नहीं कर सके ? आपके पास मौत की दवा है ? आप मुझे अमर जीवन दे सकते हैं ? यही सांसारिक इच्छाओं का सप्तम स्वर्ग है।'

पापनाशी ने उत्तर दिया—'कामिनी, अमर जीवन लाभ करना प्रत्येक प्राणी की इच्छा के अधीन है। विषय-वासनाओं को त्याग दे, जो तेरी आत्मा का सर्वनाश कर रहे हैं। उस शरीर को पिशाचों के पंजे से छुड़ा ले जिसे ईश्वर ने अपने मुंह के पानी से साना और अपने श्वास से जिलाया, अन्यथा प्रेत और पिशाच उसे बड़ी क्रूरता से जलायेंगे। नित्य के विलास से तेरे जीवन का स्रोत क्षीण हो गया है। आ, और एकान्त के पवित्र सागर में उसे फिर प्रवाहित कर दे। आ, और मरुभूमि में छिपे हुए सोतों का जल सेवन कर जिनका उफान स्वर्ग तक पहुंचता है। ओ चिन्ताओं में डूबी हुई आत्मा ! आ, अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त कर ! जो आनन्द की भूखी स्त्री ! आ, और सच्चे आनन्द का आस्वादन कर। दरिद्रता का, विराग का, त्याग कर, ईश्वर के चरणों में आत्म-समर्पण कर ! आ, ओ स्त्री, जो आज प्रभु मसीह की द्रोहिणी है, लेकिन कल उसको प्रेयसी होगी। आ, उसका दर्शन कर, उसे देखते ही तू पुकार उठेगी—मुझे प्रेमधन मिल गया !'

थामस भविष्य-चिन्तन में खोयी हुई थी। बोली—'महात्मा, अगर मैं जीवन के सुखों को त्याग दूं और कठिन तपस्या करूं तो क्या यह सत्य है कि मैं फिर जन्म लूंगी और मेरे सौन्दर्य को आंच न आयेगी ?'

पापनाशी ने कहा—'थायस, मैं तेरे लिए अनन्त-जीवन का सन्देश लाया हूं। विश्वास

कर, मैं जो कुछ कहता हूं, सर्वथा सत्य है।'

थायस–'मुझे उसकी सत्यता पर विश्वास क्योंकर आये ?'

पापनाशी–'दाऊद और अन्य नबी उसकी साक्षी देंगे, तुझे अलौकिक दृश्य दिखाई देंगे, वह इसका समर्थन करेंगे।'

थायस–'योगी जी, आपकी बातों से मुझे बहुत संतोष हो रहा है, क्योंकि वास्तव में मुझे इस संसार में सुख नहीं मिला। मैं किसी रानी से कम नहीं हूं, किन्तु फिर भी मेरी दुराशाओं और चिन्ताओं का अन्त नहीं है। मैं जीने से उकता गयी हूं। अन्य स्त्रियां मुझ पर ईर्ष्या करती हैं, पर मैं कभी-कभी उस दुःख की मारी, पोपली बुढ़िया पर ईर्ष्या करती हूं जो शहर के फाटक की छांह में बैठी तलाशे बेचा करती है। कितनी ही बार मेरे मन में आया है कि गरीब ही सुखी, सज्जन और सच्चे होते हैं, और दीन, हीन, निष्प्रभ रहने में चित्त को बड़ी शान्ति मिलती है। आपने मेरी आत्मा में एक तूफान-सा पैदा कर दिया है और जो नीचे दबी पड़ी थी उसे ऊपर कर दिया है। हां ! मैं किसका विश्वास करूं ? मेरे जीवन का क्या अन्त होगा–जीवन ही क्या है ?'

वह यह बातें कर रही थी कि पापनाशी के मुख पर तेज छा गया, सारा मुख-मंडल आदि ज्योति से चमक उठा, उसके मुंह से यह प्रतिभाशाली वाक्य निकले–'कामिनी, सुन, मैंने जब इस घर में कदम रखा तो मैं अकेला न था। मेरे साथ कोई और भी था और वह अब भी मेरे बगल में खड़ा है। तू अभी उसे नहीं देख सकती, क्योंकि तेरी आंखों में इतनी शक्ति नहीं है। लेकिन शीघ्र ही स्वर्गीय प्रतिभा से तू उसे आलोकित देखेगी और तेरे मुंह से आप-ही-आप निकल पड़ेगा–यही मेरा आराध्य देव है। तूने अभी उसकी आलौकिक शक्ति देखी ! अगर उसने मेरी आंखों के सामने अपने दयालु हाथ न फैला दिये होते तो अब तक मैं तेरे साथ पापाचरण कर चुका होता; क्योंकि स्वतः मैं अत्यन्त दुर्बल और पापी हूं। लेकिन उसने हम दोनों की रक्षा की। वह जितना ही शक्तिशाली है उतना ही दयालु है और उसका नाम है मुक्तिदाता। दाऊद और अन्य नबियों ने उसके आने की खबर दी थी, चरवाहों और ज्योतिषियों ने हिंडोले में उसके सामने शीश झुकाया था। फरीसियों ने उसे सलीब पर चढ़ाया, फिर वह उठकर स्वर्ग को चला गया। तुझे मृत्यु से इतना सशंक देखकर वह स्वयं तेरे घर आया है कि तुझे मृत्यु से बचा ले। प्रभु मसीह ! क्या इस समय तुम यहां उपस्थित नहीं हो, उसी रूप में जो तुमने गैलिली के निवासियों को दिखाया था। कितना विचित्र समय था बैतुलहम के बालक तारागण को हाथ में लेकर खेलते थे जो उस समय धरती के निकट ही स्थित थे। प्रभु मसीह, क्या यह सत्य नहीं है कि तुम इस समय यहां उपस्थित हो और मैं तुम्हारी पवित्र देह को प्रत्यक्ष देख रहा हूं ? क्या तेरी दयालु कोमल मुखारबिन्द यहां नहीं है ? और क्या वह आंसू जो तेरे गालों पर बह रहे हैं, प्रत्यक्ष आंसू नहीं हैं ? हां, ईश्वरीय न्याय का कर्त्ता उन मोतियों के लिए हाथ रोपे खड़ा है और उन्हीं मोतियों से थायस की आत्मा की मुक्ति होगी। प्रभु मसीह, क्या तू बोलने के लिए होंठ नहीं खोले हुए है ? बोल, मैं सुन रहा हूं ! और थायस, सुलक्षण थायस सुन, प्रभु मसीह तुझसे क्या कह रहे हैं–ऐ मेरी भटकी हुई मेषसुन्दरी, मैं बहुत दिनों से तेरी खोज में हूं। अन्त में मैं तुझे पा गया। अब फिर मेरे पास से न भागना। आ, मैं तेरा हाथ पकड़ लूं और अपने

कन्धों पर बिठाकर स्वर्ग के बाड़े में ले चलूं। आ मेरी थायस, मेरी प्रियतमा, आ ! और मेरे साथ रो।'

यह कहते-कहते पापनाशी भक्ति से विह्वल होकर जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आंखों से आत्मोल्लास की ज्योति-रेखाएं निकलने लगीं। और थायस को उसके चेहरे पर जीते-जागते मसीह का स्वरूप दिखाई दिया।

वह करुण क्रंदन करती हुई बोली--'ओ मेरी बीती हुई बाल्यावस्था, ओ मेरे दयालु पिता अहमद ! ओ सन्त थियोडोर, मैं क्यों न तेरी गोद में उसी समय मर गयी जब तू अरुणोदय के समय मुझे अपनी चादर में लपेटे लिये आता था और मेरे शरीर से वपतिस्मा के पवित्र जल की बूंदें टपक रही थीं।'

पापनाशी यह सुनकर चौंक पड़ा मानो कोई अलौकिक घटना हो गयी है और दोनों हाथ फैलाये हुए थायस की ओर यह कहते हुए बढ़ा—'भगवान्, तेरी महिमा अपार है। क्या तू बपतिस्मा के जल से प्लावित हो चुकी है ? हे परमपिता, भक्तवत्सल प्रभु, ओ बुद्धि के अगाध सागर ! अब मुझे मालूम हुआ कि वह कौन-सी शक्ति थी जो मुझे तेरे पास खींचकर लायी। अब मुझे ज्ञात हुआ कि वह कौन-सा रहस्य था जिसने तुझे मेरी दृष्टि में इतना सुन्दर, इतना चित्ताकर्षक बना दिया था। अब मुझे मालूम हुआ कि मैं तेरे प्रेमपाश में क्यों इस भांति जकड़ गया था कि अपना शान्तिवास छोड़ने पर विवश हुआ। इसी बपतिस्मा-जल की महिमा थी जिसने मुझे ईश्वर के द्वार को छुड़ाकर मुझे खोजने के लिए इस विषाक्त वायु से भरे हुए संसार में आने पर बाध्य किया जहां माया-मोह में फंसे हुए लोग अपना कलुषित जीवन व्यतीत करते हैं। उस पवित्र जल की एक बूंद—केवल एक ही बूंद मेरे मुख पर छिड़क दी गयी है जिसमें तूने स्नान किया था। आ, मेरी प्यारी बहिन, आ, और अपने भाई के गले लग जा जिसका हृदय तेरा अभिवादन करने के लिए तड़प रहा है।'

यह कहकर पापनाशी ने बारांगना के सुन्दर ललाट को अपने होंठों से स्पर्श किया।

इसके बाद वह चुप हो गया कि ईश्वर स्वयं मधुर, सांत्वनाप्रद शब्दों में थायस को अपनी दयालुता का विश्वास दिलाये। और 'परियों के रमणीक कुंज' में थायस की सिसकियों के सिवा, जो जलधारा की कलकल ध्वनि से मिल गयी थीं, और कुछ न सुनाई दिया।

वह इसी भांति देर तक रोती रही। अश्रुप्रवाह को रोकने का प्रयत्न उसने न किया। यहां तक कि उसके हब्शी गुलाम सुन्दर वस्त्र; फूलों के हार और भांति-भांति के इत्र लिये आ पहुंचे।

उसने मुस्कराने की चेष्टा करके कहा—'अरे रोने का समय बिल्कुल नहीं रहा। आंसुओं से आंखें लाल हो जाती हैं, और उनमें चित्त को विकल करने वाला पुष्प विकास नहीं रहता, चेहरे का रंग फीका पड़ जाता है, वर्ण की कोमलता नष्ट हो जाती है। मुझे आज कई रसिक मित्रों के साथ भोजन करना है। मैं चाहती हूं कि मेरी मुखचन्द्र सोलहों कला से चमके, क्योंकि वहां कई ऐसी स्त्रियां आयेंगी जो मेरे मुख पर चिन्ता या ग्लानि के चिह्न को तुरन्त भांप जायेंगी और मन में प्रसन्न होंगी कि अब इनका सौन्दर्य थोड़े ही दिनों का और मेहमान है, नायिका अब प्रौढ़ा हुआ चाहती है। ये गुलाम मेरा शृंगार करने आये हैं। पूज्य

पिता आप कृपया दूसरे कमरे में जा बैठिए और इन दोनों को अपना काम करने दीजिए। यह अपने काम में बड़े प्रवीण और कुशल हैं। मैं उन्हें यथेष्ट पुरस्कार देती हूं। वह जो सोने की अंगूठियां पहने हैं और जिनके मोती के-से दांत चमक रहे हैं, उसे मैंने प्रधानमन्त्री की पत्नी से लिया है।'

पापनाशी की पहले तो यह इच्छा हुई कि थायस को इस भोज में सम्मिलित होने से यथाशक्ति रोके। पर पुनः विचार किया तो विदित हुआ कि यह उतावली का समय नहीं है। वर्षों का जमा हुआ मनोमालिन्य एक रगड़ से नहीं दूर हो सकता। रोग का मूलनाश शनैः-शनैः, क्रम-क्रम से ही होगा। इसलिए उसने धर्मोत्साह के बदले बुद्धिमत्ता से काम लेने का निश्चय किया और पूछा—वाह किन-किन मनुष्यों से भेंट होगी ?

उसने उत्तर दिया—'पहले तो वयोवृद्ध कोटा से भेंट होगी जो यहां के जलसेना के सेनापति हैं। उन्हीं ने यह दावत दी है। निसियास और अन्य दार्शनिक भी आयेंगे जिन्हें किसी विषय की मीमांसा करने ही में सबसे अधिक आनन्द प्राप्त होता है। इनके अतिरिक्त कविसमाजभूषण कलिक्रान्त, और देवमन्दिर के अध्यक्ष भी आयेंगे। कई युवक होंगे जिनको घोड़े निकालने ही में परम आनन्द आता है और कई स्त्रियां मिलेंगी जिनके विषय में इसके सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता कि वे युवतियां हैं।'

पापनाशी ने ऐसी उत्सुकता से जाने की सम्मति दी मानो उसे आकाशवाणी हुई है। बोला—'तो अवश्य जाओ थायस, अवश्य जाओ। मैं तुम्हें सहर्ष आज्ञा देता हूं। लेकिन मैं तेरा साथ न छोड़ूंगा। मैं भी इस दावत में तुम्हारे साथ चलूंगा। इतना जानता हूं कि कहां बोलना और कहां चुप रहना चाहिए। मेरे साथ रहने से तुम्हें कोई असुविधा अथवा झेंप न होगी।'

दोनों गुलाम अभी उसको आभूषण पहना ही रहे थे कि थायस खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली—'वह धर्माश्रम के एक तपस्वी को मेरे प्रेमियों में देखकर कहेंगे ?'

तीन

जब थायस ने पापनाशी के साथ भोजशाला में पदार्पण किया तो मेहमान लोग पहले ही से आ चुके थे। वह गद्देदार कुरसियों पर तकिया लगाये, एक अर्द्धचन्द्राकार मेज के सामने बैठे हुए थे। मेज पर सोने-चांदी के बरतन जगमगा रहे थे। मेज के बीच में एक चांदी का थाल था जिसके चारों पायों की जगह चार परियां बनी हुई थीं जो करावों में से एक प्रकार का सिरका उंड़ेल-उंड़ेलकर तली हुई मछलियों को उनमें तैरा रही थीं। थायस के अन्दर कदम रखते ही मेहमानों ने उच्चस्वर से उसकी अभ्यर्थना की।

एक ने कहा—सूक्ष्म कलाओं की देवी को नमस्कार !

दूसरा बोला—उस देवी को नमस्कार जो अपनी मुखाकृति से मन के समस्त भावों को प्रकट कर सकती है।

तीसरा बोला—देवता और मनुष्य की लाड़ली को सादर प्रणाम !

चौथे ने कहा—उसको नमस्कार जिसकी सभी आकांक्षा करते हैं !

पांचवां बोला—उसको नमस्कार जिसकी आंखों में विष है और उसका उतार भी।

छठा बोला—स्वर्ग के मोती को नमस्कार !

सातवां बोला—इस्कन्द्रिया के गुलाब को नमस्कार !

थायस मन में झुंझला रही थी कि अभिवादनों का यह प्रवाह कब शान्त होता है। जब लोग चुप हुए तो उसने गृहस्वामी कोटा से कहा—'लूशियस, मैं आज तुम्हारे पास एक मरुस्थल-निवासी तपस्वी लायी हूं जो धर्माश्रम के अध्यक्ष हैं। इनका नाम पापनाशी है। यह एक सिद्धपुरुष हैं जिनके शब्द अग्नि की भांति उद्दीपक होते हैं।'

लूशियस ऑरेलियस कोटा ने, जो ज़लसेना का सेनापति था, खड़े होकर पापनाशी का सम्मान किया और बोला—'ईसाई धर्म के अनुगामी संत पापनाशी का मैं हृदय से स्वागत करता हूं। मैं स्वयं उस मत का सम्मान करता हूं जो अब साम्राज्यव्यापी हो गया है। श्रद्धेय महाराज कॉन्सटैनटाइन ने तुम्हारे सहधर्मियों को साम्राज्य के शुभेच्छकों की प्रथम श्रेणी में स्थान प्रदान किया है। लेटिन जाति की उदारता का कर्त्तव्य है कि वह तुम्हारे प्रभु मसीह को अपने देवमन्दिर में प्रतिष्ठत करे। हमारे पुरखों का कथन था कि प्रत्येक देवता में कुछ-न-कुछ अंश ईश्वर का अवश्य होता है। लेकिन यह इन बातों का समय नहीं है। आओ, प्याले उठायें और जीवन का सुख भोगें। इसके सवा और सब मिथ्या है।'

वयोवृद्ध कोटा बड़ी गम्भीरता से बोलते थे। उन्होंने आज एक नये प्रकार की नौका का नमूना सोचा था और अपने 'कार्थेज जाति का इतिहास' का छठवां भाग समाप्त किया था। उन्हें संतोष था कि आज का दिन सफल हुआ, इसलिए वह बहुत प्रसन्न थे।

एक क्षण के उपरान्त वह पापनाशी से फिर बोले—'सन्त पापनाशी, यहां तुम्हें कई सज्जन बैठे दिखाई दे रहे हैं जिनका सत्संग बड़े सौभाग्य से प्राप्त होता है—यह सरापीज मन्दिर के अध्यक्ष हरमोडोरस हैं; यह तीनों दर्शन के ज्ञाता निसियास, डोरियन और जेनी हैं; यह कवि कलिक्रान्त हैं, यह दोनों युवक चेरिया और अरिस्टो पुराने मित्रों के पुत्र हैं और उनके निकट दोनों रमणियां फिलिना और ड्रोसिया हैं जिनकी रूपछवि पर हृदय मुग्ध हो जाता है।'

निसियास ने पापनाशी से आलिंगन किया और उसके कान में बोला—'बन्धुवर मैंने तुम्हें पहले ही सचेत कर दिया था कि बीनस (शृंगार की देवी—यूनान के लोग शुक्र को वीनस कहते थे) बड़ी बलवती है। यह उसी की शक्ति है जो तुम्हें इच्छा न रहने पर भी यहां खींच लायी है। सुनो, तुम वीनस के आगे सिर न झुकाओगे, उसे सब देवताओं की माता न स्वीकार करोगे, तो तुम्हारा पतन निश्चित है। तुम उसकी अवहेलना करके सुखी नहीं रह सकते। तुम्हें ज्ञात नहीं है कि गणित-शास्त्र के उद्‌भट ज्ञाता मिलानथस का कथन था मैं वीनस की सहायता के बिना त्रिभुजों की व्याख्या भी नहीं कर सकता।'

डोरियन, जो कई पल तक इस नये आगन्तुक की ओर ध्यान से देखता रहा था, सहसा तालियां बजाकर बोला—'यह वही हैं, मित्रो, यह वही महात्मा हैं। इनका चेहरा इनकी दाढ़ी, इनके वस्त्र वही हैं। इसमें लेश-मात्र भी संदेह नहीं। मेरी इनसे नाट्यशाला में भेंट हुई थी जब हमारी थायस अभिनय कर रही थी। मैं शर्त बदकर कह सकता हूं कि इन्हें उस

समय बड़ा क्रोध आ गया था, और उस आवेश में इनके मुंह में उद्दण्ड शब्दों का प्रवाह-सा आ गया था। यह धर्मात्मा पुरुष हैं, पर हम सबों को आड़े हाथों लेंगे। इनकी वाणी में बड़ा तेज और विलक्षण प्रतिभा है। यदि मार्कस* ईसाईयों का प्लेटो** है तो पापनाशी निसन्देह डेमॉस्थिनीज*** है।'

किन्तु फिलिना और ड्रोसिया की टकटकी थायस पर लगी हुई थी, मानो वे उसका भक्षण कर लेंगी। उसने अपने केशों में बनफ्शे के पीले-पीले फूलों का हार गूंथा था, जिसका प्रत्येक फूल उसकी आंखों की हल्की आभा की सूचना देता था। इस भांति के फूल तो उसकी कोमल चितवनों के सदृश थीं। इस रमणी की छवि में यही विशेषता थी। इसकी देह पर प्रत्येक वस्तु खिल उठती थी। सजीव हो जाती थी। उसके चांदी के तारों से सजी हुई पेशवाज के पांयचे फर्श पर लहराते थे। उसके हाथों में न कंगन थे, न गले में हार। इस आभूषणहीन छवि में ज्योत्स्ना की म्लान शोभा थी, एक मनोहर उदासी, जो कृत्रिम बनाव-संवार से अधिक चित्ताकर्षक होती है ! उसके सौन्दर्य का मुख आधार उसकी दो खुली हुई नर्म, कोमल, गोरी-गोरी बांहें थी। फिलिना और ड्रोसिया को भी विवश होकर थायस के जूड़े और पेशवाज की प्रशंसा करनी पड़ी, यद्यपि उन्होंने थायस से इस विषय में कुछ नहीं कहा।

फिलिना ने थायस से कहा—'तुम्हारी रूपशोभा कितनी अद्भुत है ! जब तुम पहले-पहल इस्कन्द्रिया आयी थीं, उस समय भी तुम इससे अधिक सुन्दर न रही होगी। मेरी माता को तुम्हारी उस समय की सूरत याद है। यह कहती है कि उस समय समस्त नगर में तुम्हारे जोड़ की एक भी रमणी न थी। तुम्हारा सौन्दर्य अतुलनीय था।'

ड्रोसिया ने मुस्कराकर पूछा—'तुम्हारे साथ यह कौन नया प्रेमी आया है ? बड़ा विचित्र, भयंकर रूप है। अगर हाथियों के चरवाहे होते हैं तो इस पुरुष की सूरत अवश्य उनसे मिलती होगी। सच बताना बहन, यह वनमानुस तुम्हें कहां मिल गया ? क्या यह उन जन्तुओं में तो नहीं है जो रसातल में रहते हैं और वहां के धूम्र प्रकाश से काले हो जाते हैं।'

लेकिन फिलिना ने ड्रोसिया के होंठों पर उंगली रख दी और बोली—'चुप ! प्रणय के रहस्य अभेद्य होते हैं और उनकी खोज करना वर्जित है। लेकिन मुझसे कोई पूछे तो मैं इस अद्भुत मनुष्य के होठों की अपेक्षा, एटना के जलते हुए, अग्निप्रसारक मुख से चुम्बित होना अधिक पसन्द करूंगी। लेकिन बहन, इस विषय में तुम्हारा कोई वश नहीं। तुम देवियों की भांति रूपगुणशील और कोमल हृदय हो, और देवियों ही की भांति तुम्हें छोटे-बड़े, भले-बुरे, सभी का मन रखना पड़ता है, सभी के आंसू पोंछने पड़ते हैं। हमारी तरह केवल सुन्दर सुकुमार ही की याचना स्वीकार करने से तुम्हारा यह लोकसम्मान कैसे होगा ?'

थायस ने कहा—'तुम दोनों जरा मुंह संभाल कर बातें करो। यह सिद्ध और चमत्कारी पुरुष है। कानों में कहीं कई बातें ही नहीं, मनोगत विचारों को भी जान लेता है। कहीं उसे

---

*मार्कस अरिलियस बड़ा बुद्धिमान, नीतिज्ञ और मानवचरित्र का ज्ञान था।

**प्लेटो, यूनान का सर्वश्रेष्ठ फिलॉसफर और राजनीति तथा समाजनीति की व्यवस्था करने वाला।

***डेमॉस्थिनीज, यूनान का वाक्यवाचस्पति।

क्रोध आ गया तो सोते में हृदय को चीर निकालेगा और उसके स्थान पर एक स्पंज रख देगा, दूसरे दिन जब तुम् पानी पियोगी तो दम घुटने से मर जाओगी।'

थायस ने देखा कि दोनों युवतियों के मुख वर्णहीन हो गये हैं जैसे उड़ा हुआ रंग। तब वह उन्हें इसी दशा में छोड़कर पापनाशी के समीप एक कुर्सी पर जा बैठी सहसा कोटा की मृदु, पर गर्व से भरी हुई कण्ठध्वनि कनफुसकियों के ऊपर सुनाई दी—

'मित्रो, आप लोग अपने-अपने स्थानों पर बैठ जायें। ओ गुलामो ! वह शराब लाओ जिसमें शहद मिली है।'

तब भरा हुआ प्याला हाथ में लेकर वह बोला—'पहले देवतुल्य सम्राट् और साम्राज्य के कर्णधार सम्राट् कान्सटैनटाइन की शुभेच्छा का प्याला पियो। देश का स्थान सर्वोपरि है, देवताओं से भी उच्च, क्योंकि देवता भी इसी के उदर में अवतरित होते हैं।'

सब मेहमानों ने भरे हुए प्याले होंठों से लगाये; केवल पापनाशी ने न पिया, क्योंकि कान्सटैनटाइन ने ईसाई सम्प्रदाय पर अत्याचार किये थे, इसलि भी कि ईसाई मत मर्त्यलोक में अपने स्वदेश का अस्तित्व नहीं मानता।

डोरियन ने प्याला खाली करके कहा—'देश का इतना सम्मान क्यों ? देश है क्या ? एक बहती हुई नदी। किनारे बदलते रहते हैं और जल में नित नयी तरंगें उठती रहती हैं।

जलसेना-नायक ने उत्तर दिया—'डोरियन, मुझे मालूम है कि तुम नागरिक विषयों की परवाह नहीं करते और तुम्हारा विचार है कि ज्ञानियों को इन वस्तुओं से अलग-अलग रहना चाहिए। इसके प्रतिकूल मेरा विचार है कि एक सत्यवादी पुरुष के लिए सबसे महान इच्छा यही होनी चाहिए कि वह साम्राज्य में किसी पद पर अधिष्ठित हो। साम्राजय एक महत्वशाली वस्तु है।'

देवालय के अध्यक्ष हरमोडोरस ने उत्तर दिया—'डोरियन महाशय ने जिज्ञासा की है कि स्वदेश क्या है ? मेरा उत्तर है कि देवताओं की बलिवेदी और पितरों के समाधिस्तूप ही स्वदेश के पर्याप हैं। नागरिकता समृतियों और आशाओं के समावेश से उत्पन्न होती है।'

युवक एरिस्टोबोलस ने बात काटते हुए कहा—'भाई, ईश्वर जानता है, आज मैंने एक सुन्दर घोड़ा देखा। डेमोफून का था। उन्नत मस्तक है, छोटा मुंह और सुदृढ़ टांगें। ऐसा गर्दन उठाकर अलबेली चाल से चलता है जैसे मुर्गा।'

लेकिन चेरियास ने सिर हिलाकर शंका की—'ऐसा अच्छा घोड़ा तो नहीं है। एरिस्टोबोलस, जैसा तुम बतलाते हो। उसके सुम पतले हैं और गामचियां बहुत छोटी हैं। चाल का सच्चा नहीं, जल्द ही सुम लेने लगेगा, लंगड़े हो जाने का भय है।'

यह दोनों यही विवाद कर रहे थे। कि ड्रोसिया ने जोर से चीत्कार किया। उसकी आंखों में पानी भर आया, और वह जोर से खांसकर बोली—'कुशल हुई नहीं तो यह मछली का कांटा निगल गयी थी। देखो सलाई के बराबर है और उससे भी कहीं तेज। वह तो कहो, मैंने जल्दी से उंगली डालकर निकाल दिया। देवताओं की मुझ पर दया है। वह मुझे अवश्य प्यार करते हैं।'

निसियास ने मुस्कराकर कहा—'ड्रोसिया, तुमने क्या कहा कि देवगण तुम्हें प्यार करते हैं। तब तो वह मनुष्यों ही की भांति सुख-दुख का अनुभव कर सकते होंगे। यह निर्विवाद है कि प्रेम से पीड़ित मनुष्य को कष्टों का सामना अवश्य करना पड़ता है, और उसके वशीभूत हो जाना मानसिक दुर्बलता का चिह्न है। ड्रोसिया के प्रति देवगणों को जो प्रेम है, इससे उनकी दोषपूर्णता सिद्ध होती है।'

ड्रोसिया यह व्याख्या सुनकर बिगड़ गयी और बोली—'निसियास, तुम्हारा तर्क सर्वथा अनर्गल और तत्त्वहीन है। लेकिन वह तो तुम्हारा स्वभाव ही है। तुम बात तो समझते नहीं, ईश्वर ने इतनी बुद्धि ही नहीं दी, और निरर्थक शब्दों में उत्तर देने की चेष्टा करते हो।'

निसियास मुस्कराया—'हां, हां, ड्रोसिया, बातें किये जाओ चाहे वह गालियां ही क्यों न हों। जब-जब तुम्हारा मुंह खुलता है, हमारे नेत्र तृप्त हो जाते हैं। तुम्हारे दांतों की बत्तीसी कितनी सुन्दर है—जैसे मोतियों की माला !'

इतने में एक वृद्ध पुरुष, जिसकी सूरत से विचारशीलता झलकती थी और जो वेश-वस्त्र से बहुत सुव्यवस्थित न जान पड़ता था, मस्तिष्क गर्व से उठाये मन्दगति से चलता हुआ कमरे में आया। कोटा ने अपने ही गद्दे पर उसे बैठने का संकेत किया और बोला—'यूक्राइटीज, तुम खूब आये। तुम्हें यहां देखकर चित्तबहुत प्रसन्न हुआ। इस मास में तुमने दर्शन पर कोई नया ग्रन्थ लिखा? अगर मेरी गणना गलत नहीं है तो यह इस विषय का 92वां निबन्ध है जो तुम्हारी लेखनी से निकला है। तुम्हारी नरकट की कलम में बड़ी प्रतिभा है। तुमने यूनान को भी मात कर दिया।'

यूक्राइटीज ने अपनी श्वेत दाढ़ी पर हाथ फेरकर कहा—'बुलबुल का जन्म गाने के लिए हुआ है। मेरा जन्म देवताओं की स्तुति के लिए, मेरे जीवन का यही उद्देश्य है।'

डोरियन—'हम यूक्राइटीज को बड़े आदर के साथ नमस्कार करते हैं, जो विरागवादियों में जब अकेले ही बच रहे हैं। हमारे बीच में वह किसी दिव्य पुरुष की प्रतिभा की भांति गम्भीर, प्रौढ़, श्वेत खड़े हैं। उनके लिए मेला भी निर्जन, शान्त स्थान है और उनके मुख से जो शब्द निकलते हैं वह किसी के कानों में नहीं पड़ते।'

यूक्राइटीज—'डोरियन, यह तुम्हारा भ्रम है। सत्य विवेचन अभी संसार से लुप्त नहीं हुआ है। इस्कन्द्रिया, रोम, कुस्तुन्तुनिया आदि स्थानों में मेरे कितने ही अनुयायी हैं। गुलामों की एक बड़ी संख्या और कैसर के कई भतीजों ने अब यह अनुभव कर लिया है कि इन्द्रियों का क्योंकर दमन किया जा सकता है, स्वच्छन्द जीवन कैसे उपलब्ध हो सकता है ? वह सांसारिक विषयों से निर्लिप्त रहते हैं, और असीम आनन्द उठाते हैं। उनमें से कई मनुष्यों ने अपने सत्कर्मों द्वारा एपिक्टीटस और मार्कस ऑरेलियस का पुनः संस्कार कर दिया है। लेकिन अगर यही सत्य हो कि संसार से सत्कर्म सदैव के लिए उठ गया, तो इस क्षति से मेरे आनन्द में क्या बाधा हो सकती है, क्योंकि मुझे इसकी परवाह नहीं है कि संसार में सत्कर्म है या उठ गया। डोरियन, अपने आनन्द को अपने अधीन न रखना मूर्खों और मन्दबुद्धि वालों का काम है। मुझे ऐसी किसी वस्तु की इच्छा नहीं है जो विधाता की इच्छा के अनुकूल है। इस विधि से मैं अपने को उनसे अभिन्न बना लेता हूं और उनके निर्भ्रान्त सन्तोष में सहभागी हो जाता हूं। अगर सत्कर्मों का पतन हो रहा है तो हो, मैं प्रसन्न हूं,

मुझे कोई आपत्ति नहीं। यह निरापत्ति मेरे चित्त आनन्द से भर देती है, क्योंकि यह मेरे तर्क या साहस की परमोज्ज्वल कीर्ति है। प्रत्येक विषय में मेरी बुद्धि देवबुद्धि का अनुसरण करती है, और नकल असल से कहीं मूल्यवान होती है। वह अविश्रान्त सच्चिन्ता और सदुद्योग का फल होती है।'

निसियास–'आपका आशय समझ गया। आप अपने को ईश्वर इच्छा के अनुरूप बनाते हैं। लेकिन अगर उद्योग ही से सब कुछ हो सकता है, अगर लगन ही मनुष्य को ईश्वरतुल्य बना सकती, और साधनों से ही आत्मा परमात्मा में विलीन होती है, तो उस मेंढक ने, जो अपने को फुलाकर बैल बना लेना चाहता था, निस्सन्देह वैराग्य का सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त चरितार्थ कर दिया।'

युक्राइटीज–'निसियास, तुम मसखरापन करते हो। इसके सिवा तुम्हें और कुछ नहीं आता। लेकिन जैसा तुम कहते हो वही सही। अगर वह बैल जिसको तुमने उल्लेख किया है वास्तव में एपिस* की भांति देवता है या उस पाताललोक के बैल के सदृश है जिसके मन्दिर** के अध्यक्ष को हम यहां बैठे हुए देख रहे हैं। और उस मेढक ने सद्प्रेरणा से अपने को उस बैल के समतुल्य बना लिया, तो क्या वह बैल से अधिक श्रेष्ठ नहीं है ? यह सम्भव है कि तुम उस नन्हें से पशु के साहस और पराक्रम की प्रशंसा न करो।'

चार सेवकों ने एक जंगली सुअर, जिसके अभी तक बाल भी अलग नहीं किये गये थे, लाकर मेज पर रखा। चार छोटे-छोटे सुअर जो मैदे के बने थे, मानो उसका दूध पीने के लिए उत्सुक हैं। इससे प्रकट होता था कि सुअर मादा है।

जेनाथेमीज ने पापनाशी की ओर देखकर कहा–'मित्रो, हमारी सभा को आज एक नये मेहमान ने अपनी चरणों से पवित्र किया है। श्रद्धेय सन्त पापनाशी, जो मरुस्थल में एकान्त-निवासी और तपस्या करते हैं, आज संयोग से हमारे मेहमान हो गये हैं।'

कोटा–'मित्र जेनाथेमीज, इतना और बढ़ा दो कि उन्होंने बिना निमन्त्रित हुए यह कृपा की है, इसलिए उन्हीं को सम्मानपद की शोभा बढ़ानी चाहिए।

जेनाथेमीज–इसलिए मित्रवरो, हमारा कर्तव्य है कि उनके सम्मानार्थ वही बातें करें जो उनको रुचिकर हों। यह तो स्पष्ट है कि ऐसा त्यागी पुरुष मसालों की गन्ध को इतना रुचिकर नहीं समझता जितना पवित्र विचारों की सुगन्ध को। इसमें कोइे सन्देह नहीं है कि जितना आनन्द उन्हें ईसाई धर्मसिद्धान्तों के विवेचन से प्राप्त होगा, जिनके वह अनुयायी हैं, उतना और विषय से नहीं हो सकता। मैं स्वयं इस विवेचन का पक्षपाती हूं, क्योंकि इसमें कितने ही सर्वांगसुन्दर और विचित्र रूपकों का समावेश है जो मुझे अत्यन्त प्रिय हैं। अगर शब्दों से आशय का अनुमान किया जा सकता है, तो ईसाई सिद्धान्तों में सत्य की मात्रा प्रचुर है और ईसाई धर्मग्रन्थ ईश्वरज्ञान से परिपूर्ण है। लेकिन सन्त पापनाशी, मैं यहूदी धर्मग्रन्थों को इनके समान सम्मान के योग्य नहीं समझता। उनकी रचना ईश्वरीय ज्ञान द्वारा नहीं हुई है, वरन् एक पिशाच द्वारा जो ईश्वर का महान् शत्रु था। इसी पिशाच ने, जिसका

---

*एक गाय की मूर्ति जिसे प्राचीन मिश्र के लोग पूज्य समझते थे।

**सैरापीज, मृत्यु का देवता, जो बैल के आकार का था।

नाम आइवे था उन ग्रन्थों को लिखवाया। वह उन दुष्टात्माओं में से था जो नरकलोक में बसते हैं और उन समस्त विडम्बनाओं के कारण हैं जिनसे मनुष्य मात्र पीड़ित हैं। लेकिन आइवे अज्ञान, कुटिलता और क्रूरता में उन सबों से बढ़कर था। इसके विरुद्ध, सोने के परों का-सा सर्प जो ज्ञान-वृक्ष से लिपटा हुआ था, प्रेम और प्रकाश से बनाया था। इन दोनों शक्तियों में एक प्रकाश की थी और दूसरी अंधकार की थी–विरोध होना अनिवार्य था। यह घटना संसार की घटना-सृष्टि के थोड़े ही दिनों पश्चात् घटी। दोनों विरोधी शक्तियों से युद्ध छिड़ गया। ईश्वर अभी कठिन परिश्रम के बाद विश्राम न करने पाये थे; आदम और हौवा, आदि पुरुष, आदि स्त्री, अदन के बाग में नंगे घूमते और आनन्द से जीवन व्यतीत कर रहे थे। इतने में दुर्भाग्य से आइवे को सूझी कि इन दोनों प्राणियों पर और उनकी आने वाली सन्तानों पर आधिपत्य जमाऊं। तुरन्त अपनी दुरिच्छा को पूरा करने का प्रयत्न वह करने लगा। वह न गणित में कुशल था, न संगीत में; न उस शास्त्र से परिचित था। जो राज्य का संचालन करता है; न उस ललितकला से जो चित्त को मुग्ध करती है। उसने इन दोनों सरल बालकों की-सी बुद्धि रखने वाले प्राणियों को भयंकर पिशाच-लीलाओं से, शंकोत्पादक क्रोध से और मेघगर्जनों से भयभीत कर दिया। आदम और हौवा अपने ऊपर उसकी छाया का अनुभव करके एक-दूसरे से चिमट गये और भय ने उनके प्रेम को और भी घनिष्ठ कर दिया। उस समय उस विराट् संसार में कोई उनकी रक्षा करने वाला न था। जिधर आंख उठाते थे, उधर सन्नाटा दिखाई देता था। सर्प को उनकी यह निस्सहाय दशा देखकर दया आ गयी और उसने उनके अन्तःकरण को बुद्धि के प्रकाश से आलोकित करने का निश्चय किया, जिसमें ज्ञान से सतर्क होकर वह मिथ्या, भय, और भयंकर प्रेतलीलाओं से चिन्तित न हों। किन्तु इस कार्य को सुचारु रूप से पूरा करने के लिए बड़ी सावधानी और बुद्धिमत्ता की आवश्यकता थी और पूर्व दम्पति की सरलहृदयता ने इसे और भी कठिन बना दिया। किन्तु दयालु सर्प से न रहा गया। उसने गुप्त रूप से इन प्राणियों के उद्धार करने का निश्चय किया। आइवे डींग तो यह मारता था कि वह अन्तर्यामी है लेकिन यथार्थ में वह बहुत सूक्ष्मदर्शी न था। सर्प ने इन प्राणियों के पास आकर पहले उन्हें अपने पैरों की सुन्दरता और खाल की चमक से मुग्ध कर दिया। देह से भिन्न-भिन्न आकार बनाकर उसने उनकी विचारशक्ति को जागृत कर दिया। यूनान के गणित-आचार्यो ने उन आकारों के अद्भुत गुणों को स्वीकार किया है। आदम इन आकारों पर हौवा की अपेक्षा अधिक विचारता था, किन्तु जब सर्प ने उनसे ज्ञान-तत्त्वों का विवेचन करना शुरू किया–उन रहस्यों का जो प्रत्यक्ष-रूप से सिद्ध नहीं किये जा सकते–तो उसे ज्ञात हुआ कि आदम लाल मिट्टी से बनाये जाने के कारण इतना स्थूल बुद्धि था कि इन सूक्ष्म विवेचनों को ग्रहण नहीं कर सकता था, लेकिन हौवा अधिक चैतन्य होने के कारण इन विषयों को आसानी से समझ जाती थी। इसलिए सर्प से बहुधा अकेले ही इन विषयों का निरूपण किया करती थी, जिसमें पहले खुद दीक्षित होकर तब अपने पति को दीक्षित करे....'

डोरियन्र–'महाशय जेनाथेमीज, क्षमा कीजिएगा, आपकी बात काटता हूं। आपका यह कथन सुनकर मुझे शंका होती है कि सर्प उतना बुद्धिमान् और विचारशील न था जितना आपने उसे बताया है। यदि वह ज्ञानी होता तो क्या वह इस ज्ञान को हौवा के छोटे

से मस्तिष्क में आरोपित करता जहां काफी स्थान न था ? मेरा विचार है कि वह आइवे के समान ही मूर्ख और कुटिल था और हौवा को एकान्त में इसीलिए उपदेश देता था कि स्त्री को बहकाना बहुत कठिन न था। आदमी अधिक चतुर और अनुभवशील होने के कारण, उसकी बुरी नीयत को ताड़ लेता। यहां उसकी दाल न गलती इसलिए मैं सर्प की साधुता का कायल हूं, न कि उसकी बुद्धिमत्ता का।'

जेनाथेमीज—'डोरियन, तुम्हारी शंका निर्मूल है। तुम्हें यह नहीं मालूम है कि जीवन के सर्वोच्च और गूढ़तम रहस्य बुद्धि और अनुमान द्वारा ग्रहण नहीं किये जा सकते, बल्कि अन्तर्ज्योति द्वारा किये जाते हैं। यही कारण है कि स्त्रियां जो पुरुषों की भांति सहनशील नहीं होती हैं पर जिनकी चेतनाशक्ति अधिक तीव्र होती है, ईश्वर-विषयों को आसानी से समझ जाती है। स्त्रियों को सत्स्वप्न दिखाई देते हैं, पुरुषों को नहीं। स्त्री का पुत्र या पति दूर देश में किसी संकट में पड़ जाए तो स्त्री को तुरन्त उसकी शंका हो जाती है। देवताओं का वस्त्र स्त्रियों का-सा होता है, क्या इसका कोई आशय नहीं है ? इसलिए सर्प की यह दूरदर्शिता थी कि उसने ज्ञान का प्रकाश डालने के लिए मन्दबुद्धि आदम को नहीं; बल्कि चैतन्यशील हौवा को पसन्द किया, जो नक्षत्रों से उज्ज्वल और दूध से स्निग्ध थी। हौवा ने सर्प के उपदेश को सहर्ष सुना और ज्ञानवृक्ष के समीप जाने पर तैयार हो गयी, जिसकी शाखाएं स्वर्ग तक सिर उठाये हुए थीं और जो ईश्वरीय दया से इस भांति आच्छादित था, मानो ओस की बूंदों में नहाया हुआ हो। इस वृक्ष की पत्तियां समस्त संसार के प्राणियों की बोलियां बोलती थीं और उनके शब्दों के सम्मिश्रण से अत्यन्त मधुर संगीत की ध्वनि निकलती थी। जो प्राणी इसका फल खाता था, उसे खनिज पदार्थों का, पत्थरों का, वनस्पतियों का, प्राकृतिक और नैतिक नियमों का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता था। लेकिन इसके फल अग्नि के समान थे और संशयात्मा भीरु प्राणी भयवश उसे अपने होंठों पर रखने का साहस न कर सकते थे। पर हौवा ने तो सर्प के उपदेशों को बड़े ध्यान से सुना था इसलिए उसने इन निर्मूल शंकाओं को तुच्छ समझा और उस फल को चखने पर उद्यत हो गयी, जिससे ईश्वर ज्ञान प्राप्त हो जाता था। लेकिन आदम के प्रेमसूत्र में बंधे होने के कारण उसे यह कब स्वीकार हो सकता था कि उसका पति का हाथ पकड़ा और ज्ञानवृक्ष के पास आयी। तब उसने एक तपता हुआ फल उठाया, उसे थोड़ा-सा काटकर खाया और शेष अपने चिरसंगी को दे दिया। मुसीबत यह हुई कि आइवे उसी समय बगीचे में टहल रहा था। ज्योंही हौवा ने फल उठाया, वह अचानक उनके सिर पर आ पहुंचा और जब उसे ज्ञात हुआ कि इन प्राणियों को ज्ञानचक्षु खुल गये हैं तो उसके क्रोध की ज्वाला दहक उठी। अपनी समग्र सेना को बुलाकर उसने पृथ्वी के गर्भ में ऐसा भयंकर उत्पात मचाया कि यह दोनों शक्तिहीन प्राणी थरथर कांपने लगे। फल आदम के हाथ से छूट पड़ा और हौवा ने अपने पति की गर्दन में हाथ डालकर कहा—'मैं भी अज्ञानिनी बनी रहूंगी और अपने पति की विपत्ति में उसका साथ दूंगी।' विजयी आइवे आदम और हौवा और उनकी भविष्य सन्तानों को भय और कापुरुषता की दशा में रखने लगा। वह बड़ा कलानिधि था। वह बड़े वृहदाकार आकाशवज्रों के बनाने में सिद्धहस्त था। उसके कलानैपुण्य ने सर्प के शास्त्र को परास्त कर दिया अतएव उसने प्राणियों को मूर्ख, अन्यायी, निर्दय बना दिया और संसार

में कुकर्म का सिक्का चला दिया। तब से लाखों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी मनुष्य ने धर्मपथ नहीं पाया यूनान के कतिपय विद्वानों तथा महात्माओं ने अपने बुद्धिबल से उस मार्ग को खोज निकालने का प्रयत्न किया। पीथागोरस, प्लेटो आदि तत्त्व-ज्ञानियों के हम सदैव ऋणी रहेंगे, लेकिन वह अपने प्रयत्न में सफलीभूत नहीं हुए, यहां तक कि थोड़े दिन हुए नासरा के ईसू ने उस पथ को मनुष्यमात्र के लिए खोज निकाला।'

डोरियन–'अगर मैं आपका आश्रय ठीक समझ रहा हूं तो आपने यह कहा है कि जिस मार्ग को खोज निकालने में यूनान के तत्त्वज्ञानियों को सफलता नहीं हुई, उसे ईसू ने किन साधनों द्वारा पा लिया ? किन साधनों के द्वारा वह मुक्तिज्ञान प्राप्त कर लिया जो प्लेटो आदि आत्मदर्शी महापुरुषों को न प्राप्त हो सका।'

जेनाथेमीज–'महाशय डोरियन, क्या यह बार-बार बतलाना पड़ेगा कि बुद्धि और तर्क विद्या प्राप्ति के साधन हैं, किन्तु पराविद्या आत्मोल्लास द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। प्लेटो पीथागोरस अरस्तू आदि महात्माओं में अपार बुद्धिशक्ति थी, पर वह ईश्वर की उस अनन्य भक्ति से वंचित थे। जिसमें ईसू सराबोर थे। उनमें वह तन्मयता न थी। जो प्रभु मसीह में थी।'

हरमोड़ोरस–'जेनाथेमीज, तुम्हारा यह कथन सर्वथा सत्य है कि जैसे दूब ओस पीकर जीती और फैलती है, उसी प्रकार जीवात्मा का पोषण परंम आनन्द द्वारा होता है। लेकिन हम इसके आगे भी जा सकते हैं और कह सकते हैं कि केवल बुद्धि ही में परम आनन्द भोगने की क्षमता है। मनुष्य में सर्वप्रधान बुद्धि ही है। पंचभूतों का बना हुआ शरीर तो जड़ है, जीवात्मा अधिक सूक्ष्म है, पर वह भी भौतिक है, केवल बुद्धि ही निर्विकार और अखण्ड है। जब वह भवनरूपी शरीर से प्रस्थान करके–जो अकस्मात् निर्जन और शून्य हो गया हो–आत्मा के रमणीक उद्यान में विचरण करती हुई ईश्वर में समाविष्ट हो जाती है तो वह पूर्व निश्चित मृत्यु या पुनर्जन्म के आनन्द उठाती है, क्योंकि जीवन और मृत्यु में कोई अन्तर नहीं। और उस अवस्था में उसे स्वर्गीय पावित्र्य में मग्न होकर परम आनन्द और संपूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। वह उसमें ऐक्य प्रविष्ट हो जाती है जो सर्वव्यापी है। उसे परमपद या सिद्धि प्राप्त हो जाती है।'

निसियास–'बड़ी ही सुन्दर युक्ति है, लेकिन हरमोडोरस, सच्ची बात तो यह है कि मुझे 'अस्ति' और 'नास्ति' में कोई भिन्नता नहीं दीखती। शब्दों में इस भिन्नता को व्यक्त करने की सामर्थ्य नहीं है। 'अनन्त' और 'शून्य' की समानता किसी भयावह है। दोनों में से एक भी बुद्धिग्राह्य नहीं हैं मस्तिष्क इन दोनों ही की कल्पना में असमर्थ है। मेरे विचार में तो जिस परमपद या मोक्ष की आपने चर्चा की है वह बहुत ही महंगी वस्तु है। उसका मूल्य हमारा समस्त जीवन, नहीं, हमारा अस्तित्व है। उसे प्राप्त करने के लिए हमें पहले अपने अस्तित्व को मिटा देना चाहिए। यह एक ऐसी विपत्ति है जिससे परमेश्वर भी मुक्त नहीं, क्योंकि दर्शनों के ज्ञाता और भक्त उसे सम्पूर्ण और सिद्ध प्रमाणित करने में एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं। सारांश यह है कि यदि हमें 'अस्ति' का कुछ बोध नहीं तो, 'नास्ति' से भी हम उतने ही अनभिज्ञ हैं। हम कुछ जानते ही नहीं।'

कोटा–'मुझें भी दर्शन से प्रेम है और अवकाश के समय उसका अध्ययन किया

करता हूं। लेकिन इसकी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं। हां, सिसरो* के ग्रन्थों में अवश्य इसे खूब समझ लेता हूं। रासो, कहां मर गये, मधुमिश्रित वस्तु प्यालों में भरो।'

कलिक्रान्त—'यह एक विचित्र बात है, लेकिन न जाने क्यों जब मैं क्षुधातुर होता हूं तो मुझे उस नाटक रचने वाले कवियों की याद आती है जो बादशाहों की मेज पर भोजन किया करते थे और मेरे मुंह में पानी भर आता है। लेकिन जब मैं वह सुधारस पान करके तृप्त हो जाता हूं, जिसकी महाशय कोटा के यहां कोई कमी नहीं मालूम होती, और जिसके पिलाने में वह इतने उदार हैं, तो मेरी कल्पना वीररस में मग्न हो जाती है, योद्धाओं के वीरचरित्र आंखों में फिरने लगते हैं, घोड़ों की टापों और तलवार की झनकारों की ध्वनि कान में आने लगती है। मुझे लज्जा और खेद है कि मेरा जन्म ऐसी अधोगति के समय हुआ। विवश होकर मैं भावना के ही द्वार उस रस का आनन्द उठाता हूं, स्वाधीनना देवी की आराधना करता हूं और वीरों के साथ स्वयं वीर-गति प्राप्त कर लेता हूं।'

कोटा—'रोम के प्रजासत्तात्मक राज्य के समय मेरे पुरखों ने ब्रूट्स के साथ अपने प्राण स्वाधीनता देवी की भेंट किये थे। लेकिन यह अनुमान करने के लिए प्रमाणों की कमी नहीं है कि रोम निवासी जिसे स्वाधीनता कहते थे, वह केवल अपनी व्यवस्था आप करने का—अपने ऊपर आप शासन करने का अधिकार था। मैं स्वीकार करता हूं कि स्वाधीनता सर्वोत्तम वस्तु है, जिस पर किसी राष्ट्र को गौरव हो सकता है। लेकिन ज्यों-ज्यों मेरी आयु गुजरती जाती है और अनुभव बढ़ता जाता है, मुझे विश्वास होता है कि एक सशक्त और सुव्यवस्थित शासन ही प्रजा को यह गौरव प्रदान कर सकता है। गत चालीस वर्षो से मैं भिन्न-भिन्न उच्चपदों पर राज्य की सेवा कर रहा हूं और मेरे दीर्घ अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि जब शासक-शक्ति निर्बल होती है, तो प्रजा को अन्यायों का शिकर होना पड़ता है। अतएव वह वाणी कुशल, जमीन और आसमान के कुलाबे मिलाने वाले व्याख्याता जो शासन को निर्बल और अपंग बनाने की चेष्टा करते हैं, अत्यन्त निन्दनीय कार्य करते हैं, सम्भवतः कभी-कभी प्रजा को घोर संकट में डाल देता है, लेकिन अगर वह प्रजामत के अनुसार शासन करता है तो फिर उसके विष का मंत्र नहीं वह ऐसा रोग है जिसकी औषधि नहीं, रोमराज्य के शस्त्रबल द्वारा संसार में शान्ति स्थापित होने के पहले, वही राष्ट्र सुखी और समृद्ध थे, जिनका अधिकार कुशल विचारशील स्वेच्छाचारी राजाओं के हाथ में था।'

हरमोडोरस—'महाशय कोटा, मेरा तो विचार है कि सुव्यवस्थित शासन पद्धति केवल एक कल्पित वस्तु है और हम उसे प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकते, क्योंकि यूनान के लोग भी, जो सभी विषयों में इतने निपुण और दक्ष थे, निर्दोष शासन-प्रणाली का आविर्भाव न कर सके। अतएव इस विषय में हमें सफल होने की कोई आशा भी नहीं। हम अनतिदूर भविष्य में उसकी कल्पना नहीं कर सकते। निर्भ्रान्त लक्षणों से प्रकट हो रहा है कि संसार शीघ्र ही मूर्खता और बर्बरता के अन्धकार में मग्न हुआ चाहता है। कोटा, हमें अपने जीवन

---

*इटली का सर्वप्रसिद्ध राजनीत्याचार्य। उसके राजनैतिक निबन्ध बड़े महत्व के हैं और आदर्श माने जाते हैं। राजनीति का विद्वान् था। दर्शन का उसे अभ्यास न था। इस शास्त्र से उसे इतना ही प्रेम था कि सिसरों के ग्रंथों को समझ लेता था जिनमें यथास्थान दर्शन की आलोचना भी की गई है।

में इन्हीं आंखों से बड़ी-बड़ी भयंकर दुर्घटनाएं देखनी पड़ी हैं। विद्या, बुद्धि और सदाचरण से जितनी मानसिक सान्त्वनाएं उपलब्ध हो सकती हैं, उनमें अब जो शेष रह गया वह यही है कि अधःपतन का शोक दृश्य देखें।'

कोटा—'मित्रवर, यह सत्य है कि जनता की स्वार्थपरता और असभ्य म्लेच्छों की दद्दण्डता, नितान्त भयंकर सम्भावनाएं हैं, लेकिन यदि हमारे पास सुदृढ़ सेना, सुसंगठित नाविकशक्ति और प्रचुर धनबल हो तो....'

हरमोडोरस—'वत्स, क्यों अपने को भ्रम में डालते हो ? यह मरणासन्न साम्राज्य म्लेच्छों के पशुबल का सामना नहीं कर सकता। इनका पतन अब दूर नहीं है। आह ! वह नगर जिन्हें यूनान की विलक्षण बुद्धि या रोमनवासियों के अनुपम धैर्य ने निर्मित किया था; शीघ्र ही मदोन्मत्त नरपशुओं के पैरों तले रौंदे जायेंगे, लुटेंगे और ढाहे जायेंगे। पृथ्वी पर न कलाकौशल का चिह्न रह जायेगा, न दर्शन का, न विज्ञान का। देवताओं की मनोहर प्रतिमाएं देवालयों में तहस-नहस कर दी जायेंगी। मानवहृदय में भी उनकी स्मृति न रहेगी। बुद्धि पर अन्धकार छा जायेगा और यह भूमण्डल उसी अन्धकार में विलीन हो जायेगा। क्या हमें यह आशा हो सकती है कि म्लेच्छ जातियां संसार में सुबुद्धि और सुनीति का प्रसार करेंगी ? क्या जर्मन जाति संगीत और विज्ञान की उपासना करेगी ? क्या अरब के पशु अमर देवताओं का सम्मान करेंगे ? कदापि नहीं। हम विनाश की ओर भयंकर गति से फिसलते चले जा रहे हैं। हमारा प्यारा मित्र जो किसी समय संसार का जीवनदाता था, जो भूमण्डल में प्रकाश फैलाता था, उसका समाधिस्तूप बन जायेगा। वह स्वयं अंधकार में लुप्त हो जायेगा। मृत्युदेव रासेपीज मानव-भक्ति की अंतिम भेंट पायेगा और मैं अंतिम देवता का अन्तिम पुजारी सिद्ध हूंगा।'

इतने में एक विचित्र मूर्ति ने परदा उठाया और मेहमानों के सम्मुख एक कुबड़ा, नाटा मनुष्य उपस्थित हुआ जिसकी चांद पर एक बाल भी न था। वह एशिया निवासियों की भांति एक लाल चोगा और असभ्य जातियों की भांति लाल पाजामा पहने हुए था जिस पर सुनहरे बूटे बने हुए थे। पापनाशी उसे देखते ही पहचान गया और ऐसा भयभीत हुआ मानो आकाश से वज्र गिर पड़ेगा। उसने तुरन्त सिर पर हाथ रख लिये और थर-थर कांपने लगा यह प्राणी मार्कस एरियन था जिसने ईसाई धर्म में नवीन विचार का प्रचार किया था। वह ईसू के अनादित्व पर विश्वास नहीं करता था। उसका कथन था कि जिसने जन्म लिया, वह कदापि अनादि नहीं हो सकता। पुराने विचार के ईसाई, जिनका मुखपात्र नीसा था, कहते हैं कि यद्यपि मसीह ने देह धारण की किन्तु वह अनन्तकाल से विद्यमान है। अतएव नीसा के भक्त एरियन को विधर्मी कहते थे। और एरियन के अनुयायी नीसा को मूर्ख, मंदबुद्धि, पागल आदि उपाधियां देते थे। पापनाशी नीसा का भक्त था। उसकी दृष्टि में ऐसे विधर्मी को देखना भी पाप था। इस सभा को वह पिशाचों की सभा समझता था। लेकिन इस पिशाचसभा से प्रकृतिवादियों के उपवाद और विज्ञानियों का दुष्कल्पनाओं से भी वह इतना सशंक और चंचल न हुआ था। लेकिन इस विधर्मी की उपस्थिति मात्र ने उसके प्राण हर लिये। वह भागने वाला ही था कि सहसा उसकी निगाह थायस पर जा पड़ी और उसकी हिम्मत बंध गयी। उसने उसके लम्बे, लहराते हुए, लंहगे का किनारा पकड़ लिया और मन

में प्रभू मसीह की वन्दना करने लगा।

उपस्थित जनों ने उस प्रतिभाशली विद्वान् पुरुष का बड़े सम्मान से स्वागत किया, जिसे लोग ईसाई धर्म का प्लेटो कहते थे। हरमोडोरस सबसे पहले बोला—

'परम आदरणीय मार्कस, हम आपको इस सभा में पदार्पण करने के लिए हृदय से धन्यवाद देते हैं। आपका शुभागमन बड़े ही शुभ अवसर पर हुआ है। हमें ईसाई धर्म का उससे अधिक ज्ञान नहीं है, जितना प्रकट रूप से पाठशालाओं के पाठ्य-क्रम में रखा हुआ है। आप ज्ञानी पुरुष हैं, आपकी विचार शैली साधारण जनता की विचार शैली से अवश्य भिन्न होगी। हम आपके मुख से उस धर्म के रहस्यों की मीमांसा सुनने के लिए उत्सुक हैं जिनके आप अनुयायी हैं। आप जानते हैं कि हमारे मित्र जेनाथेमीज को नित्य रूपकों और दृष्टान्तों की धुन सवार रहती है, और उन्होंने अभी पापनाशी महोदय से यहूदी ग्रन्थों के विषय में कुछ जिज्ञासा की थी। लेकिन उक्त महोदय ने कोई उत्तर नहीं दिया और हमें इसका कोई आश्चर्य न होना चाहिए क्योंकि उन्होंने मौन व्रत धारण किया है। लेकिन आपने ईसाई धर्मसभाओं में व्याख्यान दिये हैं। बादशाह कांन्सटैनटाइन की सभा को भी आपने अपनी अमृतवाणी से कृतार्थ किया है। आप चाहें तो ईसाई धर्म का तात्त्विक विवेचन और उन गुप्त आशयों का स्पष्टीकरण करके, जो ईसाई दन्तकथाओं में निहित हैं, हमें सन्तुष्ट कर सकते हैं। क्या ईसाइयों का मुख सिद्धान्त तौहीन (अद्वैतवाद) नहीं है, जिस पर मेरा विश्वास होगा ?'

मार्कस—'हां, सुविज्ञ मित्रो, मैं अद्वैतवादी हूं ! मैं उस ईश्वर को मानता हूं जो न जन्म लेता है, न मरता है, जो अनन्त है, अनादि है, सृष्टि का कर्ता है।'

निसियास—'महाशय मार्कस, आप एक ईश्वर को मानते हैं, यह सुनकर हर्ष हुआ। उसी ने सृष्टि की रचना की, यह विकट समस्या है। यह उसके जीवन में बड़ा क्रान्तिकारी समय होगा। सृष्टि रचना के पहले भी वह अनन्तकाल से विद्यमान था। बहुत सोच-विचार के बाद उसने सृष्टि को रचने का निश्चय किया। अवश्य ही उस समय उसकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय रही होगी। अगर सृष्टि की उत्पत्ति करता है तो उसकी अखण्डता, सम्पूर्णता में बाधा पड़ती है। अकर्मण्य बना बैठा रहता है तो उसे अपने अस्तित्व ही पर भ्रम होने लगता है, किसी को उसकी खबर ही नहीं होती, कोई उसकी चर्चा ही नहीं करता। आप कहते हैं, उसने अन्त में संसार की रचना को ही आवश्यक समझा। मैं आपकी बात मान लेता हूं, यद्यपि एक सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए इतना कीर्तिलोलुप होना शोभा नहीं देता। लेकिन यह तो बताइए उसने क्योंकर सृष्टि की रचना की।'

मार्कस—'जो लोग ईसाई न होने पर भी, हरमोडोरस और जेनाथेमीज की भांति ज्ञान के सिद्धान्तों से परिचित हैं, वह जानते हैं कि ईश्वर ने अकेले, बिना सहायता के सृष्टि नहीं की। उसने एक पुत्र को जन्म दिया और उसी के हाथों सृष्टि का बीजारोपण हुआ।'

हरमोडोरस—'मार्कस, यह सर्वथा सत्य है। यह पुत्र भिन्न-भिन्न नामों से प्रसिद्ध है, जैसे हेरमीज, अपोलो और ईसू।'

मार्कस—'यह मेरे लिए कलंक की बात होगी अगर मैं क्राइस्ट, ईसू और उद्धारक के सिवाय और किसी नाम से याद करूं। वही ईश्वर का सच्चा बेटा है। लेकिन वह अनादि

नहीं है, क्योंकि उसने जन्म धारण किया। यह तर्क करना कि जन्म से पूर्व भी उसका अस्तित्व था, मिथ्यावादी नीसाई गधों का काम है।

यह कथन सुनकर पापनाशी अन्तर्वेदना से विकल हो उठा। उसके माथे पर पसीने की बूंदें आ गयीं। उसने सलीब का आकार बनाकर अपने चित्त को शान्त किया, किन्तु मुख से एक शब्द भी न निकाला।

मार्कस ने कहा—'यह निर्विवाद सिद्ध है कि बुद्धिहीन नीसाइयों ने सर्वशक्तिमान् ईश्वर को अपने करावलम्ब का इच्छुक बनाकर ईसाई धर्म को कलंकित और अपमानित किया है। वह एक है, अखंड है। पुत्र के सहयोग का आश्रित बन जाने से उसके यह गुण कहां रह जाते हैं ? निसियास, ईसाइयों के सच्चे ईश्वर का परिहास न करो। वह सागर के सप्तदलों के सदृश केवल अपने विकास की मनोहरता प्रदर्शित करता है, कुदाल नहीं चलाता, सूत नहीं कातता। सृष्टि रचना का श्रम उसने नहीं उठाया। यह उसके पुत्र ईसू का कृत्य था। उसी ने इस विस्तृत भूमण्डल को उत्पन्न किया और तब अपने श्रमफल का पुनर्सस्कार करने के निमित्त फिर संसार में अवतरित हुआ, क्योंकि सृष्टि निर्दोष नहीं थी, पुण्य के साथ पाप भी मिला हुआ था, धर्म के साथ अधर्म भी, भलाई के साथ बुराई भी।'

निसियास—'भलाई और बुराई में क्या अन्तर है ?'

एक क्षण के लिए सभी विचार में मग्न हो गये। सहसा हरमोडोरस ने मेज पर अपना एक हाथ फैलाकर एक गधे का चित्र दिखाया जिस पर दो टोकरे लदे हुए थे। एक में श्वेत जैतून के फूल थे; दूसरे में श्याम जैतूर के।

उन टोकरों की ओर संकेत करके उसने कहा—'देखो, रंगों की विभिन्नता आंखों को कितनी प्रिय लगती है। हमें यही पसन्द है कि एक श्वेत हो, दूसरा श्याम। दोनों एक ही रंग के होते तो उनका मेल इतना सुन्दर न मालूम होता। लेकिन यदि इन फूलों में विचार और ज्ञान होता तो श्वेत पुष्प कहते—जैतून के लिए श्वेत होना ही सर्वोत्तम है। इसी तरह काले फूल सफेद फूलों से घृणा करते। हम उनके गुण-अवगुण की परख निरपेक्ष भाव से कर सकते हैं, क्योंकि हम उनसे उतने ही ऊंचे हैं जितने देवतागण हमसे। मनुष्य के लिए, जो वस्तुओं का एक ही भाग देख सकता है, बुराई बुराई है। ईश्वर की आंखों में, जो सर्वज्ञ है; बुराई भलाई है। निस्सन्देह ही करूपता कुरूप होती है, सुन्दर नहीं होती, किन्तु यदि सभी वस्तुएं सुन्दर हो जाएं तो सुन्दरता का लोप हो जायेगा। इसलिए परमावश्यक है कि बुराई का नाश न हो; नहीं तो संसार रहने के योग्य न रह जायेगा।'

यूक्राइटीज—'इस विषय पर धार्मिक भाव से विचार करना चाहिए। बुराई बुराई है लेकिन संसार के लिए नहीं, क्योंकि इसका माधुर्य अनश्वर और स्थायी है, बल्कि उस प्राणी के लिए जो करता है और बिना किये रह नहीं सकता।'

कोटा—'जूपिटर साक्षी है, यह बड़ी सुन्दर युक्ति है !'

यूक्राइटीज—'एक मर्मज्ञ कवि ने कहा है कि संसार एक रंगभूमि है। इसके निर्माता ईश्वर ने हममें से प्रत्येक के लिए कोई-न-कोई अभिनय भाग दे रखा है। यदि उसकी इच्छा है कि तुम भिक्षुक, राजा या अपंग हो तो व्यर्थ रो-रोकर दिन मत काटो, वरन् तुम्हें जो काम सौंपा गया है, उसे यथासाध्य उत्तम रीति से पूरा करो।'

निसियास—'तब कोई झंझट ही नहीं रहा। लंगड़े को चाहिए कि लंगड़ाये, पागल को चाहिए कि खूब द्वन्द्व मचाये; जितना उत्पात कर सके, करे। कुलटा को चाहिए जितने घर घालते बने घाले; जितने घाटों का पानी पी सके, पिये; जितने हृदयों का सर्वनाश कर सके, करे। देशद्रोही को चाहिए कि देश में आग लगा दे, अपने भाइयों का गला कटवा दे, झूठे को झूठ का ओढ़ना-बिछौना बनवाना चाहिए, हत्यारे को चाहिए कि रक्त को नदी बहा दे, और अभिनय समाप्त हो जाने पर सभी खिलाड़ी, राजा हो या रंग, न्यायी हो या अन्यायी, खूनी जालिम, सती, कामनियां; कुलकलंकिनी स्त्रियां, सज्जन, दुर्जन, चोर, साहू सब-के-सब उन कवि महोदय के प्रशंसापात्र बन जायें, सभी समान रूप से सराहे जायें। क्या कहना !'

यूक्राइटीज—'निसियास, तुमने मेरे विचार को बिल्कुल विकृत कर दिया, एक तरुण युवती सुन्दरी को भयंकर पिशाचिनी बना दिया। यदि तुम देवताओं की प्रकृति, न्याय और सर्वव्यापी नियमों से इतने अपरिचित हो तो तुम्हारी दशा पर जितना खेद किया जाय, उतना कम है।'

जेनाथेमीज—'मित्रो, मेरा तो भलाई और बुराई, सुकर्म और कुकर्म दोनों ही का सत्ता पर अटल विश्वास है। लेकिन मुझे यह विश्वास है कि मनुष्य का एक भी ऐसा काम नहीं है—चाहे वह जूदा का पकट-व्यवहार ही क्यों न हो—जिसमें मुक्ति का साधन बीज रूप में प्रस्तुत न हो। अधर्म मानव जाति के उद्धार का कारण हो सकता है, और इस हेतु से, वह धर्म का एक अंश है और धर्म के फल का भागी है। ईसाई धर्मग्रन्थों में इस विषय की बड़ी सुन्दर व्याख्या की गयी है। ईसू के एक शिष्य ही ने उनका शान्ति चुम्बन करके उन्हें पकड़ा दिया। किन्तु ईसू के पकड़े जाने का फल क्या हुआ? वह सलीब पर खींचे गये और प्राणिमात्र के उद्धार की व्यावस्था निश्चित कर दी, अपने रक्त से मनुष्यमात्र के पापों का प्रायश्चित कर दिया। अंतएव मेरी निगाह में वह तिरस्कार और घृणा सर्वथा अन्यायपूर्ण और निन्दनीय है जो सेन्ट पॉल के शिष्य के प्रति लोग प्रकट करते हैं। वह यह भूल जाते हैं कि स्वयं मसीह ने इस चुम्बन के विषय में भविष्यवाणी की थी जो उन्हीं के सिद्धान्तों के अनुसार मानवजाति के उद्धार के लिए आवश्यक था और यदि जूदा तीस मुद्राएं न लिया होता तो ईश्वरीय व्यवस्था में बाधा पड़ती, पूर्वनिश्चित घटनाओं की शृंखला टूट जाती; दैवी विधानों में व्यतिक्रम उपस्थित हो जाता और संसार में अविद्या, अज्ञान और अधर्म की तूती बोलने लगती।'*

मार्कस—'परमात्मा को विदित था कि जूदा, बिना किसी के दबाव के कपट कर जायेगा, अतएवं उसने जूदा के पाप को मुक्ति के विशाल भवन का एक मुख्य स्तम्भ बना लिया।'

---

*यह माना हुआ सिद्धान्त है कि बुराई से भलाई होती है। कैकेयी को नाहक इतना बदनाम किया जाता है। अगर वह भी रामचन्द्र को वनवास न देतीं तो रावण का संहार कैसे होता और पृथ्वी पर से अधर्म का बीज क्योंकर हटता ? दुर्योधन को द्रौपदी के चीरहरण के लिए कोसा जाता है पर उसने यह अधर्म न किया होता तो महाभारत क्यों कर होता, अधर्मी कौरव जाति का नाश कैसे होता और संसार को गीता का ज्ञानामृत क्यों कर प्राप्त होता है ? —अनुवादक

जेनाथेमीज–'मार्कस महोदय, मैंने अभी जो कथन किया है, वह इस भाव से किया है मानो मसीह के सलीब पर चढ़ने से मानव जाति का उद्धार पूर्ण हो गया। इसका कारण है कि मैं ईसाइयों ही के ग्रन्थों और सिद्धान्तों से उन लोगों को भ्रांति सिद्ध करना चाहता था, जो जूदा को धिक्कारने से बाज नहीं आते ! लेकिन वास्तव में ईसा मेरी निगाह में तीन मुक्तिदाताओं में से केवल एक था। मुक्ति के रहस्य के विषय में यदि आप लोग जानने के लिए उत्सुक हो तो मैं बताऊं कि संसार में उस समस्या की पूर्ति क्यों कर हुई ?'

उपस्थित जनों ने चारों ओर से 'हां, हां' की। इतने में बारह युवती बालिकाएं, अनार, अंगूर, सेब आदि से भरे हुए टोकरे सिर पर रखे हुए, एक अंतर्हित वीणा के तालों पर पैर रखती हुई, मन्दगति से सभा में आयी और टोकरों को मेज पर रखकर उलटे पांव लौट गयीं। वीणा बन्द हो गयी और जेनाथेमीज ने यह कथा कहनी शुरू की–'जब ईश्वर की विचारशक्ति ने जिसका नाम योनिया है, संसार की रचना समाप्त कर ली तो उसने उसका शासनाधिकार स्वर्गदूतों को दे दिया। लेकिन इन शासकों में यह विवेक न था जो स्वामियों में होना चाहिए। जब उन्होंने मनुष्यों की रूपवती कन्याएं देखीं तो कामातुर हो गये, संध्या समय कुएं पर अचानक आकर उन्हें घेर लिया, और अपनी कामवासना पूरी की। इस संयोग से एक अपरड जाति उत्पन्न हुई जिसने संसार में अन्याय और क्रूरता से हाहाकार मचा दिया, पृथ्वी निरपराधियों के रक्त से तर हो गयी, बेगुनाहों की लाशों से सड़कें पट गयीं और अपनी सृष्टि की यह दुर्दशा देखकर योनियां उत्यन्त शोकातुर हुई।

'उसने वैराग्य से भरे हुए नेत्रों से संसार पर दृष्टिपात किया और लम्बी सांस लेकर कहा–यह सब मेरी करनी है, मेरे पुत्र विपत्ति-सागर में डूबे हुए हैं और मेरे ही अविचार से उन्हें मेरे पापों का फल भोगना पड़ रहा है और मैं इसका प्रायश्चित करूंगी। स्वयं ईश्वर, जो मेरे ही द्वारा विचार करता है, उनमें आदिम सत्यानिष्ठा का संचार नहीं कर सकता। जो कुछ हो गया, हो गया, यह सृष्टि अनन्तकाल तक दूषित रहेगी। लेकिन कम-से-कम मैं अपने बालकों को इस दशा में न छोड़ूंगी। उनकी रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है। यदि मैं उन्हें अपने समान सुखी नहीं बना सकती तो अपने को उनके समान दुःखी तो बना सकती हूं। मैंने ही देहधारी बनाया है, जिससे उनका अपकार होता है; अतएव मैं स्वयं उन्हीं की-सी देह धारण करूंगी और उन्हीं के साथ जाकर रहूंगी।'

'यह निश्चय करके योनिया आकाश से उतरी और यूनान की एक स्त्री के गर्भ में प्रविष्ट हुई। जन्म के समय वह नन्हीं-सी दुर्बल प्राणहीन शिशु थी। उसका नाम हेलेन रखा गया। उसकी बाल्यावस्था बड़ी तकलीफ से कटी, लेकिन युवती होकर वह अतीव सुन्दरी रमणी हुई, जिसकी रूपशोभा अनुपम थी। यही उसकी इच्छा थी, क्योंकि वह चाहती थी कि उसका नश्वर शरीर घोरतम लिप्साओं की परीक्षाग्नि में जले। कामलोलुप और उद्दण्ड मनुष्यों से अपहरित होकर उसने समस्त संसार के व्यभिचार, बलात्कार और दुष्टता के दण्डस्वरूप, सभी प्रकार की अमानुषीय यातनाएं सही; और अपने सौन्दर्य द्वारा राष्ट्रों का संहारा कर दिया, जिसमें ईश्वर भूमण्डल के कुकर्मो को क्षमा कर दे। और वह ईश्वरीय विचारशक्ति, वह योनिया, कभी इतनी स्वर्गीय शोभा को प्राप्त न हुई थी, अब–वह नारी रूप धारण करके योद्धाओं और ग्वालों को यथावसर अपनी शय्या पर स्थान देती थी। कविजनों

ने उससे दैवी महत्व का अनुभव करके ही उसके चरित्र का इतना शान्त, इतना सुन्दर, इतना घातक चित्रण किया है और इन शब्दों में उसका सम्बोधन किया है—तेरी आत्मा निश्चल सागर की भांति शान्त है !

'इस प्रकार पश्चात्ताप और दया ने योनिया से नीच-से-नीच कर्म कराये और दारुण दुःख झेलवाया। अन्त में उसकी मृत्यु हो गयी और उसकी जन्मभूमि में अभी तक उसकी कब्र मौजूद है। उसका मरना आवश्यक था, जिसमें वह भोग-विलास के पश्चात् मृत्यु की पीड़ा का अनुभव करे और लगाये हुए वृक्ष के कडुए फल चखे। लेकिन हेलेन के शरीर को त्याग करने के बाद उसने फिर स्त्री का जन्म लिया और फिर नाना प्रकार के अपमान और कलंक सहे। इसी भांति जन्म-जन्मान्तरों से वह पृथ्वी का पापभार अपने ऊपर लेती चली आती है। और उसका यह अनन्त आत्मसमर्पण निष्फल न होगा ! हमारे प्रेमसूत्र में बंधी हुई वह हमारी दशा पर रोती है, हमारे कष्टों से पीड़ित होती है, और अन्त में अपना और अपने साथ हमारा उद्धार करेगी और हमें अपने उज्ज्वल, उदार, दयामय हृदय से लगाये हुए स्वर्ग के शान्तिभवन में पहुंचा देगी।'

हरमोडोरस—'यह कथा मुझे मालूम थी। मैंने कहीं पढ़ा या सुना है कि अपने एक जन्म में यह सीमन जादूगर के साथ रही। मैंने विचार किया था कि ईश्वर ने उसे यह दण्ड दिया होगा।'

जेनाथेमीज—'यह सत्य है हरमोडोरस, कि जो लोग इन रहस्यों का मंथन नहीं करते, उनको भ्रम होता है कि योनिया ने स्वेच्छा से यह यंत्रणा नहीं झेली, वरन् अपने कर्मो का दण्ड भोगा। परन्तु यथार्थ में ऐसा नहीं है।'

कलिक्रान्त—'महाराज जेनाथेमीज, कोई बतला सकता है कि वह बार-बार जन्म लेने वाली हेलेन इस समय किस देश में, किस वेश में, किस नाम से रहती है ?'

जेनाथेमीज—'इस भेद को खोलने के लिए असाधारण बुद्धि चाहिए और नाराज न होना कलिक्रान्त, कवियों के हिस्से में बुद्धि नहीं आती। उन्हें बुद्धि लेकर करना ही क्या है ? वह तो रूप के संसार में रहते हैं और बालकों की भांति शब्दों और खिलौनों से अपना मनोरंजन करते हैं।'

कलिक्रान्त—'जेनाथेमीज, जरा जबान संभालकर बातें करो। जानते हो देवगण कवियों से कितना प्रेम करते हैं ? उनके भक्तों की निन्दा करोगे तो वह रुष्ट होकर तुम्हारी दुर्गति कर डालेंगे। अमर देवताओं ने स्वयं आदिम नीति पदों ही में घोषित की और उनकी आकाशवाणियां पदों ही में अवतरित होती हैं। भजन उनके कानों को कितने प्रिय हैं। कौन नहीं जानता कि कविजन ही आत्मज्ञानी होते हैं, उनसे कोई बात छिपी नहीं रहती ? कौन नबी, कौन पैगम्बर, कौन अवतार था जो कवि न रहा हो ? मैं स्वयं कवि हूं और कविदेव अपोलो का भक्त हूं। इसलिए मैं योनिया के वर्तमान रूप का रहस्य बतला सकता हूं। हेलेन हमारे समीप ही बैठी हुई है। हम सब उसे देख रहे हैं। तुम लोग उसी रमणी को देख रहे हो जो अपनी कुरसी पर तकिया लगाये बैठी हुई है—आंखों में आंसू की बूंदें मोतियों की तरह झलक रही हैं और अधरों पर अतृप्त प्रेम की इच्छा ज्योत्सना की भांति छाई हुई है। यह वही स्त्री है। वही अनुपम सौन्दर्य वाली योनिया, वही विशालरूपधारिणी हेलेन, इस

जन्म में मनमोहिनी थायस है !'

फिलिना–'कैसी बातें करते हो कलिक्रान्त ? थायस ट्रोजन की लड़ाई में ? क्यों थायस, तुमने एशिलीज आजक्स, पेरिस आदि शूरवीरों को देखा था? उस समय के घोड़े बड़े होते थे ?'

एरिस्टाबोलस–'घोड़ों की बातचीत कौन करता है ? मुझसे करो। मैं इस विद्या का अद्वितीय ज्ञाता हूं।'

चेरियास ने कहा–'मैं बहुत पी गया।' और वह मेज के नीचे गिर पड़ा।

कलिक्रान्त ने प्याला भरकर कहा–'जो पीकर गिर पड़े उन पर देवताओं का कोप हो ?'

वृद्ध कोटा निद्रा में मग्न थे।

डोरियन थोड़ी देर से बहुत व्यग्र हो रहे थे। आंखें चढ़ गयी थीं और नथुने फूल गये थे। वह लड़खड़ाते हुए थायस की कुरसी के पास आकर बोले–

'थायस, मैं तुमसे प्रेम करता हूं, यद्यपि प्रेमासक्त होना बड़ी निन्दा की बात है।'

थायस–'तुमने पहले क्यों मुझ पर प्रेम नहीं किया ?'

डोरियन–'तब तो पिया ही न था।'

थायस–'मैंने तो अब तक नहीं पिया, फिर तुमसे प्रेम कैसे करूं ?'

डोरियन उसके पास से ड्रोसिया के पास पहुंचा, जिसने उसे इशारे से अपने पास बुलाया था। उसके पास जाते ही उसके स्थान पर जेनाथेमीज आ पहुंचा और थायस के कपोलों पर अपना प्रेम अंकित कर दिया। थायस ने क्रुद्ध होकर कहा–'मैं तुम्हें इससे अधिक धर्मात्मा समझती थी !'

जेनाथेमीज–'लेकिन तुम्हें यह भय नहीं है कि स्त्री के आलिंगन से तुम्हारी आत्मा अपवित्र हो जायेगी।'

जेनाथेमीज–'देह के भ्रष्ट होने से आत्मा भ्रष्ट नहीं होती। आत्मा को पृथक् रखकर विषयभोग का सुख उठाया जा सकता है।'

थायस–'तो आप यहां से खिसक जाइए। मैं चाहती हूं कि जो मुझे प्यार करे वह तन-मन से प्यार करे। फिलॉसफर सभी बुड्ढे बकरे होते हैं।' एक-एक करके सभी दीपक बुझ गये। उषा की पीली किरणें जो परदों की दरारों से भीतर आ रही थीं, मेहमानों की चढ़ाई हुई आंखों और सौंलाए हुए चेहरों पर पड़ रही थीं। एरिस्टोबोलस चेरियास की बगल में पड़ा खर्राटे ले रहा था। जेनाथेमीज महोदय, जो धर्म और अधर्म की सत्ता के कायल थे, फिलिना को हृदय से लगाये पड़े हुए थे। संसार से विरक्त डोरियन महाशय ड्रोसिया के आवरणहीन वक्ष पर शराब की बूंदें टपकाते थे जो गोरी छाती पर लालों की भांति नाच रही थी और वह विरागी पुरुष उन बूंदों को अपने होंठ से पकड़ने की चेष्टा कर रहा था। ड्रोसिया खिलखिला रही थी और बूंदें गुदगुदे वक्ष पर, आया कि भांति डोरियन के होंठों के सामने से भागती थीं।

सहसा यूक्राइटीज उठा और निसियास के कन्धे पर हाथ रखकर उसे दूसरे कमरे के दूसरे सिरे पर ले गया।

उसने मुस्कराते हुए कहा—'मित्र, इस समय किस विचार में हो, अगर तुममें अब भी विचार करने की सामर्थ्य है।'

निसियास ने कहा—'मैं सोच रहा हूं कि स्त्रियों का प्रेम अडॉनिस* की वाटिका के समान है।'

'उससे तुम्हारा क्या आशय है ?'

निसियास—'क्यों, तुम्हें मालूम नहीं कि स्त्रियां अपने आंगन में वीनस के प्रेमी के स्मृतिस्वरूप, मिट्टी के गमलों में छोटे-छोटे पौधे लगाती हैं ? यह पौधे कुछ दिन हरे रहते हैं, फिर मुरझा जाते हैं।'

'इसका क्या मतलब है निसियास ? यही कि मुरझाने वाली नश्वर वस्तुओं पर प्रेम करना मूर्खता है।'

निसियास के गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—'मित्र यदि सौंदर्य केवल छाया मात्र है, तो वासना भी दामिनी की दमक से स्थिर नहीं। इसलिए सौन्दर्य की इच्छा करना पागलपन नहीं तो क्या है ? यह बुद्धिसंगत नहीं है। जो स्वयं स्थायी नहीं है उसका भी उसी के साथ अन्त हो जाना अस्थिर है। दामिनी खिसकती हुई छांह को निगल जाय, यही अच्छा है।'

यूक्राइटीज ने ठण्डी सांस खींचकर कहा—'निसियास, तुम मुझे उस बालक के समान जान पड़ते हो जो घुटनों के बल चल रहा हो। मेरी बात मानो—स्वाधीन हो जाओ। स्वाधीन होकर तुम मनुष्य बन जाते हो।'

'यह क्योंकर हो सकता है यूक्राइटीज, कि शरीर के रहते हुए मनुष्य मुक्त हो जाये?'

'प्रिय पुत्र, तुम्हें यह शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा। एक क्षण में तुम कहोगे यूक्राइटीज मुक्त हो गया।'

वृद्ध पुरुष एक संगमरमर के स्तम्भ से पीठ लगाये यह बातें कर रहा था और सूर्योदय की प्रथम ज्योतिरेखाएं उसके मुख को आलोकित कर रही थीं। हरमोडोरस और मार्कस भी उसके समीप आकर निसियास की बगल में खड़े थे और चारों प्राणी, मदिरा-सेवियों के हंसी-ठट्ठे की परवाह न करके ज्ञान-चर्चा में मग्न हो रहे थे। यूक्राइटीज का कथन इतना विचारपूर्ण और मधुर था कि मार्कस ने कहा—'तुम सच्चे परमात्मा को जानने के योग्य हो।'

यूक्राइटीज ने कहा—'सच्चा परमात्मा सच्चे मनुष्य के हृदय में रहता है।'

तब वह लोग मृत्यु की चर्चा करने लगे।

यूक्राइटीज ने कहा—'मैं चाहता हूं कि जब वह आये तो मुझे अपने दोषों को सुधारने और कर्त्तव्यों का पालन करने में लगा हुआ देखे। उसके सम्मुख मैं अपने निर्मल हाथों को आकाश की ओर उठाऊंगा और देवताओं से कहूंगा—पूज्य देवों, मैंने तुम्हारी प्रतिमाओं का लेशमात्र भी अपमान नहीं किया जो तुमने मेरी आत्मा के मन्दिर में प्रतिष्ठित कर दी हैं। मैंने वहीं अपने विचारों को, पुष्पमालाओं को, दीपकों को, सुगंध को तुम्हारी भेंट किया है। मैंने तुम्हारे ही उपदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत किया है, और अब जीवन से उकता गया हूं।'

---

*वीनस, यूनान की ललितकलाओं की देवी है और अडॉनिस उसका प्रेमी है।

यह कहर उसने अपने हाथों को ऊपर की तरफ उठाया और एक पल विचार में मग्न रहा। तब वह आनन्द से उल्लसित होकर बोला–'यूक्राइटीज, अपने को जीवन से पृथक् कर ले, उस पके फल की भांति जो वृक्ष से अलग होकर जमीन पर गिर पड़ता है, उस वृक्ष को धन्यवाद दे जिसने तुझे पैदा किया और उस भूमि को धन्यवाद दे जिसने तेरा पालन किया !'

यह कहने के साथ ही उसने अपने वस्त्रों के नीचे से नंगी कटार निकाली और अपनी छाती में चुभा ली।

जो लोग उसके सम्मुख खड़े थे, तुरन्त उसका हाथ पकड़ने दौड़े, लेकिन फौलादी नोक पहले ही हृदय के पार हो चुकी थी। यूक्राइटीज निर्वाणपद प्राप्त कर चुका था ! हरमोडोरस और निसियास ने रक्त मेंसनी हुई देह को एक पलंग पर लिटा दिया। स्त्रियां चीखने लगीं, नींद से चौंके हुए मेहमान गुर्राने लगे ! वयोवृद्ध कोटा; जो पुराने सिपाहियों की भांति कुकुरनींद सोता था, जागे पड़ा, शव के समीप आया, घाव को देखा और बोला–'मेरे वैद्य को बुलाओ।'

निसियास ने निराश से सिर हिलाकर कहा–'यूक्राइटीज का प्राणान्त हो गया। और लोगों को जीवन से जितना प्रेम होता है, उतना ही प्रेम इन्हें मृत्यु से था। हम सबों की भांति इन्होंने भी अपनी परम इच्छा के आगे सिर झुका दिया, और अब वह देवताओं के तुल्य हैं जिन्हें कोई इच्छा नहीं होती।'

कोटा ने सिर पीट लिया और बोला–'मरने की इतनी जल्दी ! अभी तो वह बहुत दिनों तक साम्राज्य की सेवा कर सकते थे। कैसी विडम्बना है !'

पापनाशी और थायस पास-पास स्तम्भित और अवाक्य बैठे रहे। उनके अन्तःकरण घृणा, भय और आशा से आच्छादित हो रहे थे।

सहसा पापनाशी ने थायस का हाथ पकड़ लिया और शराबियों को फांदते हुए, जो विषयभोगियों के पास ही पड़े हुए थे, और उस मदिरा और रक्त को पैरों से कुचलते हुए जो फर्श पर बहा हुआ था, वह उसे 'परियों के कुंज' की ओर ले चला।

चार

नगर में सूर्य का प्रकाश फैल चुका था। गलियां अभी खाली पड़ी हुई थीं। गली के दोनों तरफ सिकन्दर की कब्र तक भवनों के ऊंचे-ऊंचे सतून दिखाई देते थे। गली के संगीन फर्श पर जहां-तहां टूटे हुए हार और बुझी मशालों के टुकड़े पड़े हुए थे। समुद्र की तरफ से हवा के ताजे झोंके आ रहे थे। पापनाशी ने घृणा से अपने भड़कीले वस्त्र उतार फेंके और उसके टुकड़े-टुकड़े करके पैरों तले कुचल दिया।

तब उसने थायस से कहा–'प्यारी थायस, तूने इन कुमानुषों की बातें सुनीं ? ऐसे कौन से दुर्वचन और अपशब्द हैं जो उनके मुंह से न निकले हों, जैसे मोरी से मैला पानी निकलता है। इन लोगों ने जगत् के कर्त्ता परमेश्वर को नरक की सीढ़ियों पर घसीटा, धर्म

और अधर्म की सत्ता पर शंका की, प्रभु मसीह का अपमान किया, और जूदा का यश गया। और वह अन्धकार का गीदड़ वह दुर्गन्धमय राक्षस, जो इन सभी दुरात्माओं का गुरूघंटाल था, वह पापी मार्कस एरियन खुदी हुई कब्र की भांति मुंह खोल रहा था। प्रिय, तूने इन विष्ठामय गोबरैलों को अपनी ओर रेंगकर आते और अपने को उनके गन्दे स्पर्श से अपवित्र करते देखा है। तूने औरों को पशुओं की भांति अपने गुलामों के पैरों के पास सोते देखा है। तूने उन्हें पशुओं की भांति उसी फर्श पर संभोग करते देखा है जिस पर वह मदिरा से उन्मत्त होकर कै कर चुके थे ! तूने एक मन्दबुद्धि, सठियाये हुए बुड्ढे को अपना रक्त बहाते देखा है जो उस शराब से भी गन्दा था जो इन भ्रष्टाचारियों ने बहाई थी। ईश्वर को धन्य है ! तूने कुवासनाओं का दृश्य देखा और तुझे विदित हो गया कि यह कितनी घृणोत्पादक वस्तु है ? थायस, थामस, इन कुमार्गी दार्शनिकों की भ्रष्टाताओं को याद कर और तब सोच कि तू भी उन्हीं के साथ अपने को भ्रष्ट करेगी ? उन दोनों कुलटाओं के कटाक्षों को, हावभाव को, घृणित संकेतों को याद कर, वह कितनी निर्लज्जता से हंसती थीं, कितनी बेहयाई से लोगों को अपने पास बुलाती थीं और तब निर्णय कर कि तू भी उन्हीं के सदृश अपने जीवन का सर्वनाश करती रहेगी ? ये दार्शनिक पुरुष थे जो अपने को सभ्य कहते हैं, जो अपने विचारों पर गर्व करते हैं पर इन वेश्याओं पर ऐसे गिरे पड़ते थे जैसे कुत्ते हड्डियों पर गिरें !'

थायस ने रात को जो कुछ देखा और सुना था उससे उसका हृदय ग्लानित और लज्जित हो रहा था। ऐसे दृश्य देखने का उसे यह पहला ही अवसर न था, पर आज का-सा असर उसके मन पर कभी न हुआ था। पापनाशी की सतुत्तेजनाओं ने उसके सद्भाव को जगा दिया था। कैसे हृदयशून्य लोग हैं जो स्त्री को अपनी वासनाओं का खिलौना मात्र समझते हैं ! कैसी स्त्रियां हैं जो अपने देह-समर्पण का मूल्य एक प्याले शराब से अधिक नहीं समझतीं। मैं यह सब जानते और देखते हुए भी इसी अन्धकार में पड़ी हुई हूं। मेरे जीवन को धिक्कार है।

उसने पापनाशी को जवाब दिया—'प्रिय पिता, मुझमें अब जरा भी दम नहीं है। मैं ऐसी अशक्त हो रही हूं मानो दम निकल रहा है। कहां विश्राम मिलेगा, कहां एक घड़ी शान्ति से लेटूं ? मेरा चेहरा जल रहा है, आंखों से आंच-सी निकल रही है, सिर में चक्कर आ रहा है, और मेरे हाथ इतने थक गये हैं कि यदि आनन्द और शान्ति मेरे हाथों की पहुंच में भी आ जाय तो मुझमें उसके लेने की शक्ति न होगी।'

पापनाशी ने उस स्नेहमय करुणा से देखकर कहा—'प्रिय भगिनी ! धैर्य और साहस ही से तेरा उद्धार होगा। तेरी सुख-शान्ति का उज्ज्वल और निर्मल प्रकाश इस भांति निकल रहा है जैसे सागर और वन से भाप निकलती है।'

यह बातें करते हुए दोनों घर के समीप आ पहुंचे। सरो और सनोवर के वृक्ष जो 'परियों के कुंज' को घेरे हुए थे, दीवार के ऊपर सिर उठाये प्रभात-समीर से कांप रहे थे। उनके सामने एक मैदान था। इस समय सन्नाटा छाया हुआ था। मैदान के चारों तरफ योद्धाओं की मूर्तियां बनी हुई थीं और चारों सिरों पर अर्धचन्द्राकार संगमरमर की चौकियां बनी हुई थीं, जो दैत्यों की मूर्तियों पर स्थित थीं। थायस एक चौकी पर गिर पड़ी। एक क्षण

विश्राम लेने के बाद उसने सचिन्त नेत्रों से पापनाशी की ओर देखा पूछा—'अब मैं कहां जाऊ ?'

पापनाशी ने उत्तर दिया—'तुझे उसके साथ जाना चाहिए जो तेरी खोज में कितनी ही मंजिलें मारकर आया है। वह तुझे इस भ्रष्ट जीवन से पृथक् कर देगा जैसे अंगूर बटोरने वाला माली उन गुच्छों को तोड़ लेता है जो पेड़ में लगे-लगे सड़ जाते हैं और उन्हें कोल्हू में ले जाकर सुगंधपूर्ण शराब के रूप में परिणत कर देता है। सुन, इस्कन्द्रिया से केवल बारह घण्टे की राह पर, समुद्रतट के समीप वैरागियों का एक आश्रम है जिसके नियम इतने सुन्दर, बुद्धिमत्ता से इतने परिपूर्ण हैं कि उनको पद्य का रूप देकर सितार और तम्बूरे पर गाना चाहिए। यह कहना लेशमात्र भी अत्युक्ति नहीं है कि जो स्त्रियां यहां पर रहकर उन नियमों का पालन करती हैं उनके पैर धरती पर रहते हैं और सिर आकाश पर। वह धन से घृणा करती हैं जिसमें प्रभु मसीह उन पर प्रेम करें; लज्जाशील रहती हैं कि वह उन पर कृपादृष्टिपात करें, सती रहती हैं कि वह उन्हें प्रेयसी बनायें। प्रभु मसीह माली का वेश धारण करके, नंगे पांव, अपने विशाल बाहु को फैलाये, नित्य दर्शन देते हैं। उसी तरह उन्होंने माता मरियम को कब्र के द्वार पर दर्शन दिये थे। मैं आज तुझे उस आश्रम में ले जाऊंगा, और थोड़े ही दिन पीछे, तुझे इन पवित्र देवियों के सहवास में उनकी अमृतवाणी सुनने का आनन्द प्राप्त होगा। वह बहनों की भांति तेरा स्वागत करने को उत्सुक हैं। आश्रम के द्वार पर उसकी अध्यक्षिणी माता अलबीना तेरा मुख चूमेंगी और तुझसे सप्रेम स्वर से कहेंगी, बेटी, आ तुझे गोद में ले लूं, मैं तेरे लिए बहुत विकल थी।'

थायस चकित होकर बोली—'अरे अलबीना ! कैसर की बेटी, सम्राट केरस की भतीजी ! वह भोग-विलास छोड़कर आश्रम में तप कर रही है ?'

पापनाशी ने कहा—'हां, हां, वही ! अलबीना, जो महल में पैदा हुई और सुनहरे वस्त्र धारण करती रही, जो संसार के सबसे बड़े नरेश की पुत्री है, उसे मसीह की दासी का उच्चपद प्राप्त हुआ है। वह अब झोंपड़े में रहती है, मोटे वस्त्र पहनती है और कई दिन तक उपवास करती है। वह अब तेरी माता होगी, और तुझे अपनी गोद में आश्रय देगी।'

थायस चौकी पर से उठ बैठी और बोली—'मुझे इसी क्षण अलबीना के आश्रम में ले चलो।'

पापनाशी ने अपनी सफलता पर मुगध होकर कहा—'तुझे वहां अवश्य ले चलूंगा और वहां तुझे एक कुटी में रख दूंगा जहां तू अपने पापों का रो-रोकर प्रायश्चित करेगी, क्योंकि जब तक तेरे पाप आंसुओं से धुल न जायें, तू अलबीना की अन्य पुत्रियों से मिल-जुल नहीं सकती और न मिलना उचित ही है। मैं द्वार पर ताला डाल दूंगा, और तू वहां आंसुओं से आद्र होकर प्रभु मसीह की प्रतीक्षा करेगी, यहां तक कि वह तेरे पापों को क्षमा करने के लिए स्वयं आयेंगे और द्वार पर ताला खोलेंगे। और थायस, इसमें अणुमात्र भी संदेह न कर कि वह आयेंगे। आह ! जब वह अपनी कोमल, प्रकाशमय उंगलियां तेरी आंखों पर रखकर तेरे आंसू पोंछेंगे, उस समय तेरी आत्मा आनन्द से कैसी पुलकित होगी ! उनके स्पर्शमात्र से तुझे ऐसा अनुभव होगा कि कोई प्रेम के हिंडोले में झुला रहा है।'

थायस ने फिर कहा—'प्रिय पिता, मुझे अलबीना के घर ले चलो।'

पापनाशी का हृदय आनन्द से उत्फुल्ल हो गया। उसने चारों तरफ गर्व से देखा मानो कोई गंगाल कुबेर का खजाना पा गया हो। निश्शंक होकर सृष्टि की अनुपम सुषमा का उसने आस्वादन किया। उसकी आंखें ईश्वर के दिये हुए प्रकाश को प्रसन्न होकर पी रही थीं। उसके गालों पर हवा के झोंके न जाने किधर से आकर लगते थे। सहसा मैदान के एक कौने पर थायस के मकान का छोटा-सा द्वार देखकर और यह याद करके कि जिन पत्तियों की शोभा का वह आनन्द उठा रहा था वह थायस के बाग के पेड़ों की हैं। उसे उन सब अपावन वस्तुओं की याद आ गयी जो वहां की वायु को, जो आज इतनी निर्मल और पवित्र थी, दूषित कर रही थी, और उसकी आत्मा को इतनी वेदना हुई कि उसकी आंखों में आंसू बहने लगे।

उसने कहा—'थायस, हमें यहां से बिना पीछे मुड़कर देखे हुए भागना चाहिए। लेकिन हमें अपने पीछे तेरे संस्कार के साधनों, साक्षियों और सहयोगियों को भी न छोड़ना चाहिए। वह भारी-परदे, वह सुन्दर पलंग, वह कालीनें, वह मनोहर चित्र और मूर्तियां, वह धूप आदि जलाने के स्वर्णकुण्ड, यह सब चिल्ला-चिल्लाकर तेरे पापाचरण की घोषणा करेंगे। क्या तेरी इच्छा है कि ये घृणित सामग्रियां, जिनमें प्रेतों का निवास है, जिनमें पापात्माएं क्रीड़ा करती हैं मरुभूमि में भी तेरा पीछा करें, यही संस्कार वहां तेरी भी आत्मा को चंचल करते रहें ? यह निरी कल्पना नहीं है कि मेजें प्राणाघातक होती हैं, कुरसियां और गद्दे प्रेतों के यन्त्र बनकर बोलते हैं, चलते-फिरते हैं, हवा में उड़ते हैं, गाते हैं। उन समग्र वस्तुओं को, जो तेरी विलसलोलुपता के साथी हैं; मिआ दे, सर्वनाश कर दे। थायस, एक क्षण भी विलम्ब न कर अभी सारा नगर सो रहा है, कोई हलचल न मचेगी, अपने गुलामों को हुक्म दे कि वह स्थान के मध्य में एक चिता बनाये, जिस पर हम तेरे भवन की सारी सम्पदा की आहुति कर दें। उसी अग्निराशि में तेरे कुसंस्कार जलकर भस्मीभूत हो जायें !'

थायस ने सहमत होकर कहा—'पूज्य पिता, आपकी जैसी इच्छा हो, वह कीजिये। मैं भी जानती हूं कि बहुधा प्रेतगण निर्जीव वस्तुओं में रहते हैं। रात सजावट की कोई-कोई वस्तु बातें करने लगती हैं, किन्तु शब्दों में नहीं या तो थोड़ी-थोड़ी देर में खट-खट की आवाज से या प्रकाश की रेखाएं प्रस्फुटित करके। और एक विचित्र बात सुनिए। पूज्य पिता, आपने परियों के कुंज के द्वार पर, दाहिनी ओर एक नग्न स्त्री की मूर्ति को ध्यान से देखा है ? एक दिन मैंने आंखों से देखा कि उस मूर्ति ने जीवित प्राणी के समान अपना सिर फेर लिया और फिर एक पल में अपनी पूर्व दशा में आ गयी, मैं भयभीत हो गयी। जब मैंने निसियास से यह अद्भुत लीला बयान की तो वह मेरी हंसी उड़ाने लगा। लेकिन उस मूर्ति में कोई ज़ादू अवश्य है; क्योंकि उसने एक विदेशी मनुष्य को, जिस पर मेरे सौन्दर्य का जादू कुछ असर न कर सका था, अत्यन्त प्रबल इच्छाओं से परिपूरित कर दिया। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि घर की सभी वस्तुओं में प्रेतो का बसेरा है और मेरे लिए यहां रहना जान-जोखिम था, क्योंकि कई आदमी एक पीतल की मूर्ति से आलिंगन करते हुए प्राण खो बैठे हैं। तो भी उन वस्तुओं को नष्ट करना जो अद्वितीय कलानै पुण्य प्रदर्शित कर रही हैं और मेरी कालीनों और परदों को जलाना घोर अन्याय होगा। यह अद्भुत वस्तुएं सदैव के लिए संसार से लुप्त हो जाएंगी। उमें से कई इतने सुन्दर रंगों से सुशोभित हैं कि उनकी

शोभा अवर्णनीय है, और लोगों ने उन्हें मुझे उपहार देने के लिए अतुल धन व्यय किया था। मेरे पास अमूल्य प्याले, मूर्तियां और चित्र हैं। मेरे विचार में उनको जलाना भी अनुचित होगा। लेकिन मैं इस विषय में कोई आग्रह नहीं करती। पूज्य पिता, आपकी जैसी इच्छा हो कीजिए।'

यह कहकर वह पापनाशी के पीछे-पीछे अपने गृहद्वार पर पहुंची जिस पर अगणित मनुष्यों के हाथों से हारों और पुष्प-मालाओं की भेंट पा चुकी थी, और जब द्वार खुला तो उसने द्वारपाल से कहा कि घर के समस्त सेवकों को बुलाओ। पहले चार भारतवासी आये जो रसोई का काम करते थे। वह सब सांवले रंग के और काने थे। थायस को एक ही जाति के चार गुलाम, और चारों काने, बड़ी मुश्किल से मिले, पर यह उसकी एक दिल्लगी थी और जब तक चारों मिल न गये थे, उसे चैन न आता था। जब वह मेज पर भोज्य-पदार्थ चुनते थे तो मेहमानों को उन्हें देखकर बड़ा कुतूहल होता था। थायस प्रत्येक का वृत्तान्त उसके मुख से कहलाकर मेहमानों का मनोरंजन करती थी। इस चारों के उनके सहायक आये। तब बारी-बारी से साईस, शिकारी, पालकी उठाने वाले, हरकारे जिनकी मासपेशियां अत्यन्त सुदृढ़ थीं, दो कुशल माली, छः भयंकर रूप के हब्शी और तीन यूनानी गुलाम, जिनमें एक वैयाकरण था, दूसरा कवि और तीसरा गायक सब आकर एक लम्बी कतार में खड़े हो गये। उनके पीछे हब्शिनें आयीं जिनकी बड़ी-बड़ी गोल आंखों में शंका, उत्सुकता और उद्विग्नता झलक रही थी, और जिनके मुख कानों तक फटे हुए थे। सबके पीछे छः तरुणी रूपवती दासियां, अपनी नकाबों को संभालती और धीरे-धीरे बेड़ियों से जकड़े हुए पांव उठाती आकर उदासीन भाव से खड़ी हुईं।

जब सब-के-सब जमा हो गये तो थायस ने पापनाशी की ओर उंगली उठाकर कहा—'देखो, तुम्हें यह महात्मा जो आज्ञा दें उसका पालन करो। यह ईश्वर के भक्त हैं। जो इनकी अवज्ञा करेगा वह खड़े-खड़े मर जायेगा।'

उसने सुना था और इस पर विश्वास करती थी कि धर्माश्रम के संत जिस अभागे पुरुष पर कोप करके छड़ी से मारते थे, उसे निगलने के लिए पृथ्वी अपना मुंह खोल देती थी।

पापनाशी ने यूनानी दासों और दासियों को सामने से हटा दिया। वह अपने ऊपर उनका साया भी न पड़ने देना चाहता था और शेष सेवकों से कहा—'यहां बहुत-सी लकड़ी जमा करो, उसमें आग लगा दो और जब अग्नि की ज्वाला उठने लगे तो इस घर के सब साज-सामान मिट्टी के बर्तन से लेकर सोने के थालों तक, टाट के टुकड़े से लेकर, बहुमूल्य कालीनों तक, सभी मूर्तियां, चित्र, गमले, गड्ड-मड्ड करके इसी चिता में डाल दो, कोई चीज बाकी न बचे।'

यह विचित्र आज्ञा सुनकर सब-के-सब विस्मित हो गये, और अपनी स्वामिनी की ओर कातर नेत्रों से ताकते हुए मूर्तिवत् खड़े रह गये। वह अभी इसी अकर्मण्य दशा में अवाक् और निश्चल खड़े थे, और एक-दूसरे को कुहनियां गड़ाते थे, मानो वह इस हुक्म को दिल्लगी समझ रहे हैं कि पापनाशी ने रौद्ररूप धारण करके कहा—'क्यों बिलम्ब हो रहा है ?'

इसी समय थायस नंगे पैर, छिटके हुए केश कन्धों पर लहराती घर में से निकली। वह भद्दे मोटे वस्त्र धारण किये हुए थी, जो उसके देहस्पर्श मात्र से स्वर्गीय, कामोत्तेजक सुगन्धि से परिपूरित जान पड़ते थे। उसके पीछे एक माली एक छोटी-सी हाथीदांत की मूर्ति छाती से लगाये लिये आता था।

पापनाशी के पास आकर थायस ने मूर्ति उसे दिखाई और कहा—'पूज्य पिता, क्या इसे भी आग में डाल दूं ? प्राचीन समय की अद्‌भुत कारीगरी का नमूना है और इसका मूल्य शतगुण स्वर्ण से कम नहीं। इस क्षति की पूर्ति किसी भांति न हो सकेगी, क्योंकि संसार में एक भी ऐसा निपुर्ण मूर्तिकार नहीं है जो इतनी सुन्दर एरास (प्रेम का देवता) की मूर्ति बना सके। पिता, यह भी स्मरण रखिए कि यह प्रेम का देवता है; इसके साथ निर्दयता करना उचित नहीं। पिता, मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि प्रेम का अधर्म से कोई सम्बन्ध नहीं, और अगर मैं विषयभोग में लिप्त हुई तो प्रेम की प्रेरणा से नहीं, बल्कि उसकी अवहेलना करके, उसकी इच्छा के विरुद्ध व्यवहार करके। मुझे उन बातों के लिए कभी पश्चात्ताप न होगा जो मैंने उसके आदेश का उल्लंघन करके की हैं। उसकी कदापि यह इच्छा नहीं है कि स्त्रियां उन पुरुषों का स्वागत करें जो उसके नाम पर नहीं आते। इस कारण इस देवता की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। देखिए पिताजी, यह छोटा-सा एरास कितना मनोहर है। एक दिन निसियास ने, जो उन दिनों मुझ पर प्रेम करता था इसे मेरे पास लाकर कहा—आज तो यह देवता यहीं रहेगा और तुम्हें मेरी याद दिलायेगा। पर इस नटखट बालक ने मुझे निसियास की याद तो कभी नहीं दिलाई; हां, एक युवक की याद नित्य दिलाता रहा जो एन्टिओक में रहता था और जिसके साथ मैंने जीवन का वास्तविक आनन्द उठाया। फिर वैसा पुरुष नहीं मिला यद्यपि मैं सदैव उसकी खोज में तत्पर रही। अब इस अग्नि को शान्त होने दीजिए, पिताजी ! अतुल धन इसकी भेंट हो चुका। इस बालमूर्ति को आश्रय दीजिए और इसे स्वरक्षित किसी धर्मशाला में स्थान दिला दीजिए। इसे देखकर लोगों के चित्त ईश्वर की ओर प्रवृत्त होंगे, क्योंकि प्रेम स्वभावतः मन में उत्कृष्ट और पवित्र विचारों को जागृत करता है।'

थायस मन में सोच रही थी कि उसकी वकालत का अवश्य असर होगा और कम-से-कम यह मूर्ति तो बच जायेगी। लेकिन पापनाशी बाज की भांति झपटा, माली के हाथ से मूर्ति छीन ली, तुरन्त उसे चिता में डाल दिया और निर्दय स्वर में बोला—'जब यह निसियास की चीज है और उसने इसे स्पर्श किया है तो मुझसे इसकी सिफारिश करना व्यर्थ है। उस पापी का स्पर्शमात्र समस्त विकारों से परिपूरित कर देने के लिए काफी है।'

तब उसने चमकते हुए वस्त्र, भांति-भांति के आभूषण, सोने की पादुकाएं, रत्न-जटित कंघियां, बहुमूल्य आईने, भांति-भांति के गाने-बजाने की वस्तुएं सरोद, सितार, वीण, नाना प्रकार के फानूस, अंकवारों में उठा-उठाकर झोंकना शुरू किया। इस प्रकार कितना धन नष्ट हुआ, इसका अनुमान करना है। इधर तो ज्वाला उठ रही थी, चिनगारियां उड़ रही थीं, चटाक-पटाक की निरन्तर ध्वनि सुनाई देती थी, उधर हब्शी गुलाम इस विनाशक दृश्य से उन्मत्त होकर तालियां बजा-बजाकर और भीषण नाद से चिल्ला-चिल्लाकर नाच रहे थे। विचित्र दृश्य था, धर्मोत्साह का कितना भयंकर रूप !

,इन गुलामों में से कई ईसाई थे। उन्होंने शीघ्र ही इस प्रकार का आशय समझ लिया और घर में ईंधन और आग लाने गये। औरों ने भी उनका अनुकरण किया, क्योंकि यह सब दरिद्र थे और धन से घृणा करते थे और धन से बदला लेने की उनमें स्वाभाविक प्रवृत्ति थी—जो धन हमारे काम नहीं आता, उसे नष्ट ही क्यों न कर डालें ! जो वस्त्र हमें पहनने को नहीं मिल सकते, उन्हें जला ही क्यों न डालें ! उन्हें इस प्रवृत्ति को शांत करने का यह अच्छा अवसर मिला। जिन वस्तुओं ने हमें इतने दिनों तक जलाया है, उन्हें आज जला देंगे। चिता तैयार हो रही थी और घर की वस्तुएं बाहर लाई जा रही थीं कि पापनाशी ने थायस से कहा—पहले मेरे मन में यह विचार हुआ कि इस्कन्द्रिया के किसी चर्च के कोषाध्यक्ष को लाऊं (यदि अभी कोई ऐसा स्थान है जिसे चर्च कहा जा सके, और जिसे एरियन के भ्रष्टाचरण से भ्रष्ट न कर दिया।) और उसे तेरी सम्पूर्ण सम्पत्ति दे दूं कि वह उन्हें अनाथ विधवाओं और बालकों को प्रदान कर दे और इस भांति पापोपार्जित धन का पुनीत उपयोग हो जाये। लेकिन एक क्षण में यह विचार जाता रहा; क्योंकि ईश्वर ने इसकी प्रेरणा न की थी। मैं समझ गया कि ईश्वर को कभी मंजूर न होगा कि तेरे पाप की कमाई ईसू के प्रिय भक्तों को दी जाये। इससे उनकी आत्मा को घोर दुःख होगा। जो स्वयं दरिद्र रहना चाहते हैं, स्वयं कष्ट भोगना चाहते हैं, इसलिए कि इससे उनकी आत्मा शुद्ध होगी, उन्हें यह कलुषित धन देकर उनकी आत्म-शुद्धि के प्रत्यन को विफल करना उनके साथ बड़ा अन्याय होगा। इसलिए मैं निश्चय कर चुका हूं कि तेरा सर्वस्व अग्नि का भोजन बन जाये, एक धागा भी बाकी न रहे ! ईश्वर को कोटि धन्यवाद देता हूं कि तेरी नाकबें और चोलियां और कुर्तियां जिन्होंने समुद्र की लहरों से भी अगण्य चुम्बनों का आस्वादन किया है, आज ज्वाला के मुख और जिह्वा का अनुभव करेंगी। गुलामो, दौड़ो और लकड़ी लाओ, और आग लाओ, तेल के कुप्पे लाकर लुढ़का दो, अगर और कपूर और लोहबान छिड़क दो जिसमें ज्वाला और भी प्रचण्ड हो जाये ! और थायस, तू घर में जा, अपने घृणित वस्त्रों को उतार दे, आभूषणों को पैरों तले कुचल दे, और अपने सबसे दीन गुलाम से प्रार्थना कर कि वह तुझे अपना मोटा कुरता दे दे; यद्यपि तू इस दान को पाने योग्य नहीं है, जिसे पहनकर वह तेरे फर्श पर झाड़ लगाता है।

थायस ने कहा—'मैंने इस आज्ञा को शिरोधार्य किया।'

जब तक चारों भारतीय काने बैठकर आग झोंक रहे थे, हब्शी गुलामों ने चिता में बड़े-बड़े हाथीदांत, आबनूस और सागौन के सन्दूक डाल दिये जो धमाके से टूट गये और उनमें से बहुमूल्य रत्नजटित आभूषण निकल पड़े। अलाव में से धुएं के काले-काले बादल उठ रहे थे। तब अग्नि जो अभी तक सुलग रही थी, इतना भीषण शब्द करके धंधक उठी, मानो कोई भयंकर वनपशु गरज उठा, और ज्वाला-जिह्वा जो सूर्य के प्रकाश में बहुत धुंधली दिखाई देती थी, किसी राक्षस की भांति अपने शिकार को निगलने लगी। ज्वाला ने उत्तेजित होकर गुलामों को भी उत्तेजित किया। वे दौड़-दौड़कर भीतर से चीजें बाहर लाने लगे। कोई मोटी-मोटी कालीनें घसीटे चला आता था, कोई वस्त्र के गट्ठर लिये दौड़ा आता था। जिन नकाबों पर सुनहरा काम किया हुआ था, जिन परदों पर सुन्दर बेलबूटे बने हुए थे, सभी आग में झोंक दिये गये। अग्नि मुंह पर नकाब नहीं डालना चाहती और न उसे परदों से प्रेम

है। वह भीषण और नग्न रहना चाहती है। तब लकड़ी के सामानों की बारी आयी। भारी मेज, कुर्सियां, मोटे-मोटे गद्दे, सोने की परियों से सुशोभित पलंग गुलाभों से उठते ही न थे। तीन बलिष्ठ हब्शी परियों की मूर्तियां छाती से लगाये हुए लाये। इन मूर्तियों में एक इतनी सुन्दर थी कि लोग उससे स्त्री का-सा प्रेम करते थे। ऐसा जान पड़ता था कि तीन जंगली बन्दर तीन स्त्रियों को उठाये भागे जाते हैं ! और जब यह तीनों सुन्दर नग्न मूर्तियां, इन दैत्यों के हाथ से छूटकर गिरीं और टुकड़े-टुकड़े हो गयीं, तो गहरी शोकध्वनि कानों में आयी।

यह शोर सुनकर पड़ोसी एक-एक करके जागने लगे और आंखें मल-मलकर खिड़कियों से देखने लगे कि यह धुआं कहां से आ रहा है। तब उसकी अर्धनग्न दशा में बाहर निकल पड़े और अलाव के चारों ओर जमा हो गये।

यह माजरा क्या है ? यही प्रश्न एक दूसरे से करता था।

इन लोगों में वह व्यापारी थे जिनसे थायस इत्र, तेल, कपड़े आदि लिया करती थी, और वह सचिन्त भाव से मुंह लटकाये ताक रहे थे। उनकी समझ में कुछ न आता था कि यह क्या हो रहा है। कई विषयभोगी पुरुष जो रात भर के विलास के बाद सिर पर हार लपेटे, कुरते पहने गुलामों के पीछे जाते हुए उधर से निकले तो यह दृश्य देखकर ठिठक गये और जोर-जोर से तालियां बजाकर चिल्लाने लगे। धीरे-धीरे कुतूहलवश और लोग आ गये और बड़ी भीड़ जमा हो गयी। तब लोगों को ज्ञात हुआ कि थायस धर्माश्रम के तपस्वी पापनाशी के आदेश से अपनी समस्त सम्पत्ति जलाकर किसी आश्रम में प्रविष्ट होने आ रही है।

दुकानदानों ने विचार किया—थायस यह नगर छोड़कर चली जा रही है। अब हम किसके हाथ अपनी चीजें बेचेंगे ? कौन हमें मुंह-मांगे दाम देगा। यह बड़ा घोर अनर्थ है। थायस पागल हो गयी है क्या ? इस योगी ने अवश्य उस पर कोई मन्त्र डाल दिया है, नहीं तो इतना सुखविलास छोड़कर तपस्विनी बन जाना सहज नहीं है। उसके बिना हमारा निर्वाह क्योंकर होगा! वह हमारा सर्वनाश किये डालती है। योगी को क्यों ऐसा करने दिया जाये? आखिर कानून किसलिए है ? क्या इस्कन्द्रिया में कोई नगर का शासक नहीं ? थायस को हमारे बाल-बच्चों की जरा भी चिन्ता नहीं है उसे शहर में रहने के लिए मजबूर करना चाहिए। धनी लोग इसी भांति नगर छोड़कर चले जायेंगे तो हम रह चुके। हम राज्य-कर कहां से देंगे ?

युवकगण को दूसरे प्रकार की चिन्ता थी—अगर थायस इस भांति निर्दयता से नगर से जायेगी तो नाट्यशालाओं को जीवित कौन रखेगा ? शीघ्र ही उनमें सन्नाटा छा जायेगा, हमारे मनोरंजन की मुख्य सामग्री गायब हो जायेगी, हमारा जीवन शुष्क और नीरस हो जायेगा। वह रंगभूमि का दीपक, आनन्द, सम्मान, प्रतिभा और प्राण थी। जिन्होंने उसके प्रेम का आनन्द नहीं उठाया था, वह उसके दर्शन मात्र ही से कृतार्थ हो जाते थे। अन्य स्त्रियों से प्रेम करते हुए भी वह हमारे नेत्रों के सामने उपस्थित रहती थी। हम विलासियों की तो जीवनधारा थी। केवल यह विचार कि वह इस नगर में उपस्थित है, हमारी वासनाओं को उद्दीप्त किया करता था। जैसे जल की देवी वृष्टि करती है, अग्नि की देवी जलाती है,

उसी भांति यह आनन्द की देवी हृदय में आनन्द का संचार करती थी।

समस्त नगर में हलचल मची हुई थी। कोई पापनाशी को गालियां देता था, कोई ईसाई धर्म को और कोई स्वयं प्रभु मसीह को सलवातें सुनाता था। और थायस के त्याग की भी बड़ी तीव्र आलोचना हो रही थी। ऐसा कोई समाज न था जहां कुहराम न मचा हो।

'यों मुंह छिपाकर जाना लज्जास्पद है !'

'यह कोई भलमनसाहत नहीं है !'

'अजी, यह तो हमारे पेट की रोटियां छीने लेती है !'

'वह आने वाली सन्तान को अरसिक बनाये देती है। अब उन्हें रसिकता का उपदेश कौन देगा ?'

'अजी, उसने तो अभी हमारे हारों के दाम भी नहीं दिये।'

'मेरे भी पचास जोड़ों के दाम आते हैं।'

'सभी का कुछ-न-कुछ उस पर आता है।'

'जब वह चली जायेगी तो नायिकाओं का पार्ट कौन खेलेगा ?'

'इस क्षति की पूर्ति नहीं हो सकती।'

'उसका स्थान सदैव रिक्त रहेगा।'

'उसके द्वार बन्द हो जायेंगे तो जीवन का आनन्द ही जाता रहेगा।'

'वह इस्कन्द्रिया के गगन का सूर्य थी।'

इतनी देर में नगर भर के भिक्षुक, अपंग, लूले, लंगड़े, कोढ़ी, अन्धे सब उस स्थान पर जमा हो गये और जली हुई वस्तुओं को टटोलते हुए बोले—अब हमारा पालन कौन करेगा ? उसकी मेज का जूठन खाकर दो सौ अभागों के पेट भर जाते थे ? उसके प्रेमीगण चलते समय हमें मुट्ठियां भर रुपये-पैसे दान कर देते थे।

चोर-चकारों की भी बन आयी। वह भी आकर इस भीड़ में मिल गये और शोर मचा-मचाकर अपने पास के आदमियों को ढकेलने लगे कि दंगा हो जाये और उस गोल-माल में हम भी किसी वस्तु पर हाथ साफ करें। यद्यपि बहुत कुछ जल चुका था, फिर भी इतना शेष था कि नगर के सारे चोर-चंडाल अयाची हो जाते !

इस हलचल में केवल एक वृद्ध मनुष्य स्थिरचित्त दिखाई देता था। वह थायस के हाथों दूर देशों से बहुमूल्य वस्तु ला-लाकर बेचता था और थायस पर उसके बहुत रुपये आते थे। वह सबकी बातें सुनता था, देखता था कि लोग क्या करते हैं। रह-रहकर दाढ़ी पर हाथ फेरता था और मन में कुछ सोच रहा था। एकाएक उसने एक युवक को सुन्दर वस्त्र पहने पास खड़े देखा। उसने युवक से पूछा—'तुम थायस के प्रेमियों में नहीं हो !'

युवक—'हां, हूं तो बहुत दिनों से।'

वृद्ध—तो जाकर उसे रोकते क्यों नहीं ?'

युवक—'और क्या तुम समझते हो कि उसे जाने दूंगा ? मन में यही निश्चय करके आया हूं। शेखी तो नहीं मारता लेकिन इतना तो मुझे विश्वास है कि मैं उसके सामने जाकर खड़ा हो जाऊंगा तो वह इस बंदरमुंहे पादरी की अपेक्षा मेरी बातों पर अधिक ध्यान देगी।'

वृद्ध—'तो जल्दी जाओ। ऐसा न हो कि तुम्हारे पहुंचते-पहुंचते वह सवार हो जाये।'

युवक—'इस भीड़ को हटाओ।'

वृद्ध व्यापारी ने 'हटो, जगह दो' का गुल मचाना शुरू किया और युवक घूसों और ठोकरों से आदमियों को हटाता, वृद्धों को गिराता, बालकों को कुचलता, अन्दर पहुंच गया और थायस का हाथ पकड़कर धीरे-से बोला—'प्रिय, मेरी ओर देखो। इतनी निष्ठुरता ! याद करो, तुमने मुझसे कैसी-कैसी बातें की थीं, क्या-क्या वादे किये थे, क्या अपने वादों को भूल जाओगी ? क्या प्रेम का बन्धन इतना ढीला हो सकता है ?'

थायस अभी कुछ जवाब न दे पायी थी कि पापनाशी पलककर उसके और थामस के बीच में खड़ा हो गया और डांटकर बोला—'दूर हट, पापी कहीं का ! खबरदार जो उसकी देह को स्पर्श किया। वह अब ईश्वर की है, मनुष्य उसे नहीं छू सकता।'

युवक ने कड़ककर कहा—'हट यहां से, वनमानुष ! क्या तेरे कारण अपनी प्रियतमा से न बोलूं ? हट जाओ, नहीं तो यह दाढ़ी पकड़कर तुम्हारी गन्दी लाश को आग के पास खींच ले जाऊंगा और कबाब की तरह भून डालूंगा। इस भ्रम में मत रह कि तू मेरे प्राणाधार को यों चुपके से उठा ले जायेगा। उसके पहले मैं तुझे संसार से उठा दूंगा !'

यह कहकर उसने थायस के कन्धे पर हाथ रखा। लेकिन पापनाशी ने इतनी जोर से धक्का दिया कि वह कई कदम पीछे लड़खड़ाता हुआ चला गया और बिखरी हुई राख के समीप चारों खाने चित्त गिर पड़ा।

लेकिन वृद्ध सौदागर शान्त न बैठा। वह प्रत्येक मनुष्य के पास जा-जाकर गुलामों के कान खींचता, और स्वामियों के हाथों को चूमता और सभी को पापनाशी के विरुद्ध उत्तेजित कर रहा था कि थोड़ी देर में उसने एक छोटा-सा जत्था बना लिया जो इस बात पर कटिबद्ध था कि पापनाशी को कदापि अपने कार्य में सफल न होने देगा। "मजाल है कि यह पादरी हमारे नगर की शोभा को भगा ले जाये ! गर्दन तोड़ देंगे। पूछो, धर्माश्रम में ऐसी रमणियों की क्या जरूरत ? क्या संसार में विपत्ति की मारी बुढ़ियों की कमी है ? क्या उनके आंसुओं से इन पादरियों को सन्तोष नहीं होता कि युवतियों को भी रोने के लिए मजबूर किया जाये!

युवक का नाम सिरोन था। वह धक्का खाकर गिरा, किन्तु तुरन्त गर्द झाड़कर उठ खड़ा हुआ। उसका मुंह राख से काला हो गया था, बाल झुलस गये थे, क्रोध और धुएं से दम घुट रहा था। वह देवताओं को गालियां देता हुआ उपद्रवियों को भड़काने लगा। पीछे भिखारियों का दल उत्पात मचाने पर उद्यत था। एक क्षण में पापनाशी तने हुए घूंसों, उठी हुई लाठियों और अपमानसूचक अपशब्दों के बीच में घिर गया।

एक ने कहा—'मारकर कौवों को खिला दो !'

'नहीं जला दो, जीता आग में डाल दो, जलाकर भस्म कर दो !'

लेकिन पापनाशी जरा भी भयभीत न हुआ। उसने थायस को पकड़कर खींच लिया और मेघ की भांति गरजकर बोला—'ईश्वरद्रोहियों, इस कपोत को ईश्वरीय बीज के चंगुल से छुड़ाने की चेष्टा मत करो, तुम आज जिस आग में जल रहे हो, उसमें जलने के लिए उसे विवश मत करो बल्कि उसकी रीस करो और उसी की भांति अपने खोटे को भी खरा कंचन बना दो। उसका अनुकरण करो, उसके दिखाये हुए मार्ग पर अग्रसर हो, और उस ममता को त्याग दो जो तुम्हें बांधे हुए है और जिसे तुम समझते हो कि हमारी है। विलंब

न करो, हिसादा का दिन निकट है और ईश्वर की ओर से वज्राघात होने वाला ही है। अपने पापों पर पछताओ, उनका प्रायश्चित करो, तौबा करो, रोओ और ईश्वर से क्षमा-प्रार्थना करो। थायस के पदचिह्नों पर चलो। अपनी कुवासनाओं से घृणा करो जो उससे किसी भांति कम नहीं हैं। तुममें से कौन इस योग्य है, चाहे वह धनी हो या कंगाल, दास हो या स्वामी, सिपाही हो या व्यापारी, जो ईश्वर के सम्मुख खड़ा होकर दावे के साथ कह सके कि मैं किसी वेश्या से अच्छा हूं ? तुम सब-के-सब सजीव दुर्गन्ध के सिवा और कुछ नहीं हो और यह ईश्वर की महान दया है कि वह तुम्हें एक क्षण में कीचड़ की मोरियां नहीं बना डालता।'

जब तक वह बोलता रहा, उसकी आंखों से ज्वाला-सी निकल रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि उसके मुख से आग के अंगारे बरस रहे हैं। जो लोग वहां खड़े थे, इच्छा न रहने पर भी मन्त्र मुग्ध से खड़े उसकी बातें सुन रहे थे।

किन्तु वह वृद्ध व्यापारी ऊधम मचाने में अत्यन्त प्रवीण था। वह अब भी शांत न हुआ। उसने जमीन से पत्थर के टुकड़े और घोंघे चुन लिये और अपने कुरते के दामन में छिपा लिये, किन्तु स्वयं उन्हें फेंकने का साहस न करके उसने वह सब चीजें भिक्षुकों के हाथों में दे दीं। फिर क्या था ? पत्थरों की वर्षा होने लगी और एक घोंघा पापनाशी के चेहरे पर ऐसा आकर बैठा कि घाव हो गया। रक्त की धारा पापनाशी के चेहरे पर बह-बहकर त्यागिनी थायस के सिर पर टपकने लगी, मानो उसे रक्त के बपतिस्मा से पुनः संस्कृत किया जा रहा था। थायस को योगी ने इतनी जोर से भींच लिया था कि उसका दम घुट रहा था और योगी के खुरखुरे वस्त्र से उसका कोमल शरीर छिला जाता था। इस असमंजस में पड़े हुए, घृणा और क्रोध से उसका मुख लाल हो रहा था।

इतने में एक मनुष्य भड़कीले वस्त्र पहने, जंगली फूलों की एक माला सिर पर लपेटे भीड़ को हटाता हुआ आया और चिल्लाकर बोला—'ठहरो, ठहरो, यह उत्पात क्यों मचा रहे हो ? यह योगी मेरा भाई है।'

यह निसियास था, जो वृद्ध यूक्रसइटीज कसे कब्र में सुलाकर इस मैदान में होता हुआ घर लौटा जा रहा था। देखा तो अलाव जल रहा है, उसमें भांति-भांति की बहुमूल्य वस्तुएं पड़ी सुलग रही हैं, थायस एक मोटी चादर ओढ़े खड़ी है और पापनाशी पर चारों ओर से पत्थरों की बौछार हो रही है। वह यह दृश्य देखकर विस्मित तो नहीं हुआ, वह आवेशों से वशीभूत न होता था। हां, ठिठक गया और पापनाशी को इस आक्रमण से बचाने की चेष्टा करने लगा।

उसने फिर कहा—'मैं मना कर रहा हूं, ठहरो, पत्थर न फेंको। यह योगी मेरा प्रिय सहपाठी है। मेरे प्रिय मित्र पापनाशी पर अत्याचार मत करो।'

किन्तु उसकी ललकार का कुछ असर न हुआ। जो पुरुष नैयायिकों के साथ बैठा हुआ बाल की खाल निकालने ही में कुशल हो, उसमें वह नेतृत्वशक्ति कहां जिसके सामने जनता के सिर झुक जाते हैं। पत्थरों और घोंघों की दूसरी बौछार पड़ी, किन्तु पापनाशी थायस को अपनी देह से रक्षित किये हुए पत्थरों की चोटें खाता था और ईश्वर को धन्यवाद देता था जिसकी दयादृष्टि उनके घावों पर मरहम रखती हुई जान पड़ती थी। निसियास ने जब देखा कि यहां मेरी कोई नहीं सुनता और मन में यह समझकर कि मैं अपने मित्र की

रक्षा न तो बल से कर सकता हूं न वाक्-चातुरी से, उसने सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दिया। (यद्यपि ईश्वर पर उसे अणुमात्र भी विश्वास न था।) सहसा उसे एक उपाय सूझा। इन प्राणियों को वह इतना नीच समझता था कि उसे अपने उपाय की सफलता पर जरा भी सन्देह न रहा। उसने तुरन्त अपनी थैली निकाल ली, जिसमें रुपये और अशर्फियां भरी हुई थीं। वह बड़ा उदार, विलासप्रेमी पुरुष था, और उन मनुष्यों के समीप जाकर जो पत्थर फेंक रहे थे, उनके कानों के पास मुद्राओं को उसने खनखनाया। पहले तो वे उससे इतने झल्लाये हुए थे, लेकिन शीघ्र ही सोने की झंकार ने उन्हें लुब्ध कर दिया, उनके हाथ नीचे को लटक गये। निसियास ने जब देखा कि उपद्रवकारी उसकी ओर आकर्षित हो गए तो उसने कुछ रुपये और मोहरें उनकी ओर फेंक दीं। उनमें से जो ज्यादा लोभी प्रकृति के थे, वह झुक-झुककर उन्हें चुनने लगे। निसियास अपनी सफलता पर प्रसन्न होकर मुट्ठियां भर-भर रुपये आदि इधर-उधर फेंकने लगा। पक्की जमीन पर अशर्फियों के खनकने की आवाज सुनकर पापनाशी के शत्रुओं का दल भूमि पर सिजदे करने लगा। भिक्षु गुलाम छोटे-मोटे दुकानदार, सब-के-सब रुपये लूटने के लिए आपस में धींगामुश्ती करने लगे और सिरोन तथा अन्य भद्रसमाज के प्राणी देर से यह तमाशा देखते थे और हंसते-हंसते लोट जाते थे। स्वयं सिरोन का क्रोध शान्त हो गया। उसके मित्रों ने लूटने वाले प्रतिद्वन्द्वियां को भड़काना शुरू किया मानो पशुओं को लड़ा रहे हों। कोई कहता था, अब की यह बाजी मारेगा, इस पर शर्त बदता हूं, कोई किसी दूसरे योद्धा का पक्ष लेता था, और दोनों प्रतिपक्षियों में सैकड़ों की हार-जीत हो जाती थी। एक बिना टांगों वाले पंगुल ने जब एक मोहर पायी तो उसके साहस पर तालियां बजने लगीं। यहां तक कि सबने उस पर फूल बरसाये। रुपये लुटाने का तमाशा देखते-देखते यह युवक वृन्द इतने खुश हुए कि स्वयं लुटाने लगे और एक क्षण में समस्त मैदान में सिवाय पीठों के उठने और गिरने के और कुछ दिखाई ही न देता था, मानो समुद्र की तरंगें चांदी-सोने के सिक्कों के तूफान से आन्दोलित हो रही हों। पापनाशी को किसी की सुध ही न रही।

तब निसियास उसके पास लपककर गया, उसने अपने लबादे में छिपा लिया और थायस को उसके साथ एक पास की गली में खींच ले गया जहां विद्रोहियों से उनका गला छूटा। कुछ देर तक तो वह चुपचाप दौड़े, लेकिन जब उन्हें मालूम हो गया कि हम काफी दूर निकल आये और इधर कोई हमारा पीछा करने न आयेगा तो उन्होंने दौड़ना छोड़ दिया। निसियास ने परिहासपूर्ण स्वर में कहा—'लीला समाप्त हो गयी। अभिनय का अंत हो गया। थायस अब नहीं रुक सकती। वह अपने उद्धारकर्ता के साथ अवश्य जायेगी, चाहे वह उसे जहां ले जाये।'

थायस ने उत्तर दिया—'हां, निसियास, तुम्हारा कथन सर्वथा निर्मूल नहीं है। मैं तुम जैसे मनुष्यों के साथ रहते-रहते तंग आ गयी हूं, जो सुगन्ध से बसे, विलास में डूबे हुए, सहृदय आत्मसेवी प्राणी हैं। जो कुछ मैंने अनुभव किया है, उससे मुझे इतनी घृणा हो गई है कि अब मैं अज्ञात आनन्द की खोज में जा रही हूं। मैंने उस सुख को देखा है जो वास्तव में सुख नहीं था, और मुझे एक गुरु मिला है जो बतलाता है कि दुःख और शोक ही में सच्चा आनन्द है। मेरा उस पर विश्वास है क्योंकि उसे सत्य का ज्ञान है।'

'निसियास ने मुस्कराते हुए कहा—'और प्रिये, मुझे तो सम्पूर्ण सत्यों का ज्ञान प्राप्त है। वह केवल एक ही सत्य का ज्ञाता है, मैं सभी सत्यों का ज्ञाता हूं। इस दृष्टि से तो मेरा पद उसके पद से कहीं ऊंचा है, लेकिन सच पूछो तो इससे न कुछ गौरव प्राप्त होता है, न कुछ आनन्द।'

तब यह देखकर कि पापनाशी मेरी ओर तापमय नेत्रों से ताक रहा है, उसने सम्बोधित करके कहा—'प्रिय मित्र पापनाशी, यह मत सोचो कि मैं तुम्हें निरा बुद्धू, पाखण्डी या अन्धविश्वासी समझता हूं। यदि मैं अपने जीवन की तुम्हारे जीवन से तुलना करूं, तो मैं स्वयं निश्चय न कर सकूंगा कि कौन श्रेष्ठ है। मैं अभी यहां से जाकर स्नान करूंगा, दासों ने पानी तैयार कर रखा होगा, तब उत्तम वस्त्र पहनकर एक तीतर के डैनों का नाश्ता करूंगा, और आनन्द से पलंग पर लेटकर कोई कहानी पढ़ूंगा या किसी दार्शनिक के विचारों का आस्वादन करूंगा। यद्यपि ऐसी कहानियां बहुत पढ़ चुका हूं और दार्शनिकों के विचारों में भी कोई मौलिकता या नवीनता नहीं रही। तुम अपनी कुटी में लौटकर जाओगे और वहां किसी सिधाये हुए ऊंट की भांति झुंककर कुछ जुगाली-सी करोगे, कदाचित् कोई एक हजार बार के चबाये हुए शब्दाडम्बर को फिर से चबाओगे, और सन्ध्या समय बिना बघारी हुई भाजी खाकर ज़मीन पर लेटे रहोगे। किन्तु बन्धुवर, यद्यपि हमारे और तुम्हारे मार्ग पृथक् है, यद्यपि हमारे ओर तुम्हारे कार्यक्रम में बड़ा अन्तर दिखाई पड़ता है, लेकिन वास्तव में हम दोनों एक ही मनोभाव के अधीर कार्य कर रहे हैं—वही जो समस्त मानव कृत्यों का एकमात्र कारण है। हम सभी सुख के इच्छुक हैं, सभी एक ही लक्ष्य पर पहुंचना चाहते हैं। सभी का अभीष्ट एक ही है—आनन्द, अप्राप्त आनन्द, असम्भव आनन्द। यही मेरी मूर्खता होगी अगर में कहूं कि तुम गलती पर हो यद्यपि मेरा विचार है कि मैं सत्य पर हूं।

'और प्रिये थायस, तुमसे भी मैं यही कहूंगा कि जाओ और अपनी जिन्दगी के मजे उठाओ, और यदि यह बात असम्भव न हो, तो त्याग और तपस्या में उससे अधिक आनन्द-लाभ करो जितना तुमने भोग और विलास में किया है। सभी बातों का विचार करके मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे ऊपर लोगों को हसद होता था क्योंकि यदि पापनाशी ने और मैंने अपने समस्त जीवन में एक ही एक प्रकार के आनन्दों का आस्वादन किया है जो बिरले ही किसी मनुष्य को प्राप्त हो सकते हैं। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि एक घण्टे के लिए मैं बन्धु पापनाशी की तरह सन्त हो जाता। लेकिन यह सम्भव नहीं। इसलिए तुमको भी विदा करता हूं, जाओ जहां प्रकृति की गुप्त शक्तियां और तुम्हारा भाग्य तुम्हें ले जाय ! जाओ जहां तुम्हारी इच्छा हो, निसियास की शुभेच्छाएं तुम्हारे साथ रहेंगी। मैं जानता हूं कि इस समय अनर्गल बातें कर रहा हूं, इस पर असार शुभकामनाओं और निर्मूल पछतावे के सिवाय, मैं उस सुखमय भ्रांति का क्या मूल्य दे सकता हूं जो तुम्हारे प्रेम के दिनों में मुझ पर छायी रहती थीं और जिसकी स्मृति छाया की भांति मेरे मन में रह गयी है ? जाओ मेरी देवी, जाओ, तुम परोपकार की मूर्ति हो जिसे अपने अस्तित्व का ज्ञान नहीं, तुम लीलामयी सुषमा हो। नमस्कार है उस सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट मायामूर्ति को जो प्रकृति ने किसी अज्ञात कारण से इस असार, मायावी संसार को प्रदान की है।'

पापनाशी के हृदय पर इस कथन का एक-एक शब्द वज्र के समान पड़ रहा था।

अन्त में वह इन अपशब्दों से प्रतिध्वनित हुआ—हा ! दुर्जन, दुष्ट, पापी ! मैं तुझसे घृणा करता हूं और तुझे तुच्छ समझता हूं ! दूर हो यहां से, नरक के दूत, उन दुर्बल, दुःखी म्लेच्छों से भी हजार गुना निकृष्ट, जो अभी मुझे पत्थरों और दुर्वचनों का निशाना बना रहे थे ! वह अज्ञानी थे, मूर्ख थे; उन्हें कुछ ज्ञान न था कि हम क्या कर रहे हैं और सम्भव है कि कभी उन पर ईश्वर की दयादृष्टि फिरे और मेरी प्रार्थनाओं के अनुसार उनके अन्तःकरण शुद्ध हो जायें लेकिन निसियास, अस्पृश्य पतित निसियास, तेरे लिए कोई आशा नहीं है, तू घातक विष है। तेरे मुख से नैराश्य और नाश के शब्द ही निकलते हैं। तेरे एक हास्य से उससे कहीं अधिक नास्तिकता प्रवाहित होती है जितनी शैतान के मुख से सौ वर्षों में भी न निकलती होगी।

निसियास ने उसकी ओर विनोदपूर्ण नेत्रों से देखकर कहा—'बन्धुवर, प्रणाम ! मेरी यही इच्छा है कि अन्त तक तुम विश्वास, घृणा और प्रेम के पथ पर आरूढ़ रहो। इसी भांति तुम नित्य अपने शत्रुओं को कोसते और अपने अनुयायियों से प्रेम करते रहो। थायस, चिरंजीवी रहो। तुम मुझे भूल जाओगी, किन्तु मैं तुम्हें न भूलूंगा। तुम यावज्जीवन मेरे हृदय में मूर्तिमान रहोगी।'

उनसे बिदा होकर निसियास इस्कन्द्रिया की कब्रिस्तान के निकट पेचदार गलियों में विचारपूर्ण गति से चला। इस मार्ग में अधिकतर कुम्हार रहते थे, जो मुर्दों के साथ दफन करने के लिए खिलौने, बर्तन आदि बनाते थे। उनकी दुकानें मिट्टी की सुन्दर रंगों से चमकती हुई देवियों, स्त्रियों उड़ने वाले दूतों और ऐसी ही अन्य वस्तुओं की मूर्तियों से भरी हुई थीं। उसे विचार हुआ, कदाचित् इन मूर्तियों में कुछ ऐसी भी हों जो महानिद्रा में मेरा साथ दें और उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो एक छोटी प्रेम की मूर्ति मेरा उपहास कर रही है। मृत्यु की कल्पना ही से उसे दुःख हुआ। इस विवाद को दूर करने के लिए उसने मन में तर्क किया—इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि काल या समय कोई चीज नहीं। वह हमारी बुद्धि की भ्रांतिमात्र है, धोखा है। तो जब इसकी सत्ता ही नहीं तो वह मेरी मृत्यु को कैसे ला सकता है। क्या इसका यह आशय है कि अनन्तकाल तक मैं जीवित रहूंगा ? क्या मैं भी देवताओं की भांति अमर हूं ? नहीं, कदापि नहीं। लेकिन इससे यह अवश्य सिद्धि होता है कि वह इस समय है, सदैव से है, और सदैव रहेगा। यद्यपि मैं अभी इसका अनुभव नहीं कर रहा हूं, पर यह मुझमें विद्यमान है और मुझे उससे शंका न करनी चाहिए, क्योंकि उस वस्तु के आने से डरना, जो पहले ही आ चुकी है हिमाकत है। यह किसी पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ के समान उपस्थित है, जिसे मैंने पढ़ा है, पर अभी समाप्त नहीं कर चुका हूं।

उसका शेष रास्ता इस वाद में कट गया, लेकिन इससे उसके चित्त को शान्ति न मिली, और जब यह घर पहुंचा तो उसका मन विवादपूर्ण विचारों से भरा हुआ था। उसकी दोनों युवती दासियां प्रसन्न, हंस-हंसकर टेनिस खेल रही थीं। उनकी हास्य-ध्वनि ने अन्त में उसके दिल का बोझ हल्का किया।

पापनाशी और थामस भी शहर से निकलकर समुद्र के किनारे-किनारे चले। रास्ते में पापनाशी बोला—'थायस, इस विस्तृत सागर का जल भी तेरी कालिमाओं को नहीं धो सकता।' यह कहते-कहते उसे अनायास क्रोध आ गया। थायस को धिक्कारने लगा—'तू

कुतियों और शूकरियों से भी भ्रष्ट है, क्योंकि तूने उस देह को जो ईश्वर ने तुझे इस हेतु दिया था कि तू उसकी मूर्ति स्थापित करे, विधर्मियों और म्लेच्छों द्वारा दलित कराया है और तेरा दुराचरण इतना अधिक है कि तू बिना अन्तःकरण में अपने प्रति घृणा का भाव उत्पन्न किये न ईश्वर की प्रार्थना कर सकती है न वन्दना।'

धूप के मारे जमीन से आंच निकल रही थी और थायस आपने नये गुरु के पीछे सिर झुकाये पथरीली सड़कों पर चली जा रही थी। थकान के मारे उसके घुटनों में पीड़ा होने लगी और कंठ सूख गया। लेकिन पापनाशी के मन में दयाभाव का जागना तो दूर रहा, (जो दुरात्माओं को भी नर्म कर देता है) वह उलटे उस प्राणी के प्रायश्चित पर प्रसन्न हो रहा था जिस के पापों का वारापार न था। वह धर्मोत्साह से इतना उत्तेजित हो रहा था कि उसे देह को लोहे के सांगों से छेदने में भी उसे संकोच न होता जिसका सौन्दर्य उसकी कलुषता का मानो उज्ज्वल प्रमाण था। ज्यों-ज्यों वह विचार में मग्न होता था, उसका प्रकोप और भी प्रचण्ड होता जाता था। जब उसे याद आता था कि निसियास उसके साथ सहयोग कर चुका है तो उसका रक्त खौलने लगता था और ऐसा जान पड़ता था कि उसकी छाती फट जायेगी। अपशब्द उसके होंठों पर आ-आकर रुक जाते थे और वह केवल दांत पीस-पीसकर रह जाता था। सहसा वह उछलकर, विकराल रूप धारण किये हुए उसके सम्मुख खड़ा हो गया और उसके मुंह पर थूक दिया। उसकी तीव्र दृष्टि थायस के हृदय में चुभी जाती थी!

थायस ने शान्तिपूर्वक अपना मुंह पोंछ लिया और पापनाशी के पीछे चलती रही। पापनाशी उसकी ओर ऐसी कठोर दृष्टि से ताकता था मानो वह सन्देह नरक है। उसे यह चिन्ता हो रही थी कि मैं इससे प्रभु मसीह का बदला क्योंकर लूं, क्योंकि थायस ने मसीह को अपने कुकृत्यों से इतना उत्पीड़ित किया था कि उन्हें स्वयं उसे दण्ड देने का कष्ट न उठाना पड़े। अक्समात् उसे रुधिर की एक बूंद दिखाई दी जो थायस के पैरों से बहकर मार्ग पर गिरी थी। उसे देखते ही पापनाशी का हृदय दया से प्लावित हो गया, उसकी कठोर आकृति शान्त हो गयी। उसके हृदय में एक ऐसा भाव प्रविष्ट हुआ जिससे वह अभी अनभिज्ञ था। वह रोने लगा, सिसकियों का तार बंध गया, तब वह दौड़कर उसके सामने माथा ठोंककर बैठ गया और उसके चरणों पर गिरकर कहने लगा—'बहन, मेरी माता, मेरी देवी'—और उसके रक्त प्लावित चरणों को चूमने लगा।

तब उसने शुद्ध हृदय से यह प्रार्थना की—ऐ स्वर्ग के दूतो ! इस रक्त की बूंद को सावधानी से उठाओ और इसे परम पिता के सिंहासन के सम्मुख ले जाओ। ईश्वर की इस पवित्र भूमि पर, जहां यह रक्त बहा है, एक अलौकिक पुष्पवृक्ष उत्पन्न हो। उसमें स्वर्गीय सुगन्धयुक्त फूल लिखें और जिन प्राणियों की दृष्टि उस पर पड़े और जिनकी नाक में उसकी सुगन्ध पहुंचे, उनके हृदय शुद्ध और उनके विचार पवित्र हो जायें। थायस परमपूज्य थायस ! तुझे धन्य है; आज तूने वह पद प्राप्त कर लिया जिसके लिए बड़े-बड़े सिद्ध योगी भी लालायित रहते हैं।

जिस समय वह यह प्रार्थना और शुभाकांक्षा करने में मग्न था। लड़का गधे पर सवार जाता हुआ मिला। पापनाशी ने उसे उतरने की आज्ञा दी; थायस को गधे पर बिठा दिया और तब उसकी बागडोर पकड़कर ले चला। सूर्यास्त के समय वे एक नहर पर पहुंचे जिस

पर सघन वृक्षों का साया था। पापनाशी ने गधे को एक छुहारे के वृक्ष से बांध दिया और काई से ढकी हुई चट्टान पर बैठकर उसने एक रोटी निकाली और उसे नमक और तेल के साथ दोनों ने खाया, चिल्लू से ताजा पानी पिया और ईश्वरीय विषय पर सम्भाषण करने लगे।

थायस बोली—'पूज्य पिता, मैंने आज तक कभी ऐसा निर्मल जल नहीं पिया, और न ऐसी प्राणप्रद स्वच्छ वायु में सांस लिया। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि इस समीकरण में ईश्वर की ज्योति प्रवाहित हो रही है।'

पापनाशी बोला—'प्रिय बहन, देखो संध्या हो रही है। निशा की सूचना देने वाली श्यामला पहाड़ियों पर छाई हुई है। लेकिन शीघ्र ही मुझे ईश्वरीय ज्योति, ईश्वरीय उषा के सुनहरे प्रकाश में चमकती हुई दिखाई देगी, शीघ्र ही तुझे अनन्त प्रभाव के गुलाब-पुष्पों की मनोहर लालिमा आलोकित होती हुई दृष्टिगोचर होगी।

दोनों रात भर चलते रहे। अर्द्धचन्द्र की ज्योति लहरों के उज्ज्वल मुकुट पर जगमगा रही थी; नौकाओं के सफ़ेद पाल उस शान्तिमय ज्योत्स्ना में ऐसे जान पड़ते थे मानो पुनीत आत्माएं स्वर्ग को प्रयाण कर रही हैं। दोनों प्राणी स्तुति और भजन गाते हुए चले जाते थे। थायस के कण्ठ का माधुर्य, पापनाशी की पंचम ध्वनि के साथ मिश्रित होकर ऐसा जान पड़ता कि सुन्दर वस्त्र पर टाट का बखिया कर दिया गया है ! जब दिनकर ने अपना प्रकाश फैलाया, तो उनके सामने लाइबिया की मरुभूमि एक विस्तृत सिंह चर्म की भांति फैली हुई दिखाई दी। मरुभूमि के उस सिरे पर कई छुहारे के वृक्षों के मध्य में कई सफेद झोंपड़ियां प्रभात के मन्द प्रकाश में झलक रही थीं।

थायस ने पूछा—'पूज्य पिता, क्या वह ईश्वरीय ज्योति का मन्दिर है ?'

'हां प्रिय बहन, मेरी प्रिय पुत्री, वही मुक्तिगृह है, जहां मैं *तुझे अपने ही हाथों से बन्द करूंगा।'*

एक क्षण में उन्हें कई स्त्रियां झोंपड़ियों के आसपास कुछ काम करती हुई दिखाई दीं, मानो मधुमक्खियां अपने छत्तों के पास भिनभिना रही हों। कई स्त्रियां रोटियां पकाती थीं, कई शाकभाजी बना रही थीं, बहुत-सी स्त्रियां ऊन कात रही थीं और आकाश की ज्योति उन पर इस भांति पड़ रही थी मानो परम पिता की मधुर मुस्कान है, और कितनी ही तपस्विनियां झाऊ के वृक्षों के नीचे बैठी ईश्वरवन्दना कर रही थीं, उनके गोरे-गोरे हाथ दोनों किनारे लटके हुए थे क्योंकि ईश्वर के प्रेम से परिपूर्ण हो जाने के कारण वह हाथों से कोई काम न करती थीं; केवल ध्यान, आराधना और स्वर्गीय आनन्द में निमग्न रहती थीं। इसलिए उन्हें 'माता मरियम की पुत्रियां' कहते थे, और वह उज्ज्वल वस्त्र ही धारण करती थीं। जो स्त्रियां हाथों से काम-धन्धा करती थीं, वह 'माथी की पुत्रियां' कहलाती थीं और नीचे वस्त्र पहनती थीं। सभी स्त्रियां कनटोप लगाती थीं, केवल युवतियां बालों के दो-चार गुच्छे माथे पर निकाले रहती थीं—सम्भवतः वह आप-ही-आप बाहर निकल आते थे, क्योंकि बालों को संवारना या दिखाना नियमों के विरुद्ध था। एक बहुत लम्बी, गोरी, वृद्ध महिला, एक कुटी से निकलकर दूसरी कुटी में जाती थी। उसके हाथ में लकड़ी की एक जरीब थी। पापनाशी बड़े अदब के साथ उसके समीप गया, उसकी नकाब के किनारों का चुम्बन किया

और बोला—'पूज्या अलबीना, परम पिता तेरी आत्मा को शान्ति दें ! मैं उस छत्ते के लिए जिसकी तू रानी है, एक मक्खी लाया हूं जो पुष्पहीन मैदानों में इधर-उधर भटकती फिरती थी। मैंने इसे अपनी हथेली में उठा लिया और अपने श्वासोच्छ्वास से पुनर्जीवित किया। मैं इसे तेरी शरण में लाया हूं।'

यह कहकर उसने थायस की ओर इशारा किया। थायस तुरन्त कैसर की पुत्री के सम्मुख घुटनों के बल बैठ गयी।

अलबीना ने थायस पर एक मर्मभेदी दृष्टि डाली, उसे उठने को कहा, उसके मस्तक का चुम्बन किया और तब योगी से बोली—'हम इसे 'माता मरियम की पुत्रियों' के साथ रखेंगे।'

पापनाशी ने तब थायस के मुक्तिगृह में आने का पूरा वृत्तान्त कह सुनाया। ईश्वर ने कैसे उसे प्रेरणा की, कैसे वह इस्कन्द्रिया पहुंचा और किन-किन उपायों से उसके मन में उसने प्रभु मसीह का अनुराग उत्पन्न किया। इसके बाद उसने प्रस्ताव किया कि थायस को किसी कुटी में बन्द कर दिया जाय जिससे वह एकान्त में अपने पूर्वजीवन पर विचार करे, आत्मशुद्धि के मार्ग का अवलम्बन करे।

मठ की अध्यक्षिणी इस प्रस्ताव से सहमत हो गयी। वह थायस को एक कुटी में ले गयी जिसे कुमारी लीटा ने अपने चरणों से पवित्र किया था और जो उसी समय से खाली पड़ी हुई थी। इस तंग कोठरी में केवल एक चारपाई, एक मेज और एक घड़ा था, और जब थायस ने उसके अन्दर कदम रखा, तो चौखट को पार करते ही उसे कथनीय आनन्द का अनुभव हुआ।

पापनाशी ने कहा—'मैं स्वयं द्वार को बन्द करके उस पर एक मुहर लगा देना चाहता हूं, जिसे प्रभु मसीह स्वयं आकर अपने हाथों से तोड़ेंगे।'

वह उसी क्षण पास की जलधारा के किनारे गया, उसमें से मुट्ठी भर मिट्टी ली, उसमें अपने मुंह का थूक मिलाया और उसे द्वार के दरवाजों पर मढ़ दिया। तब खिड़की के पास आकर जहां थायस शान्तचित्त और प्रसन्नमुख बैठी हुई थी उसने भूमि पर सिर झुकाकर तीन बार ईश्वर की वन्दना की।

'ओ हो ! उस स्त्री के चरण कितने सुन्दर हैं जो सन्मार्ग पर चलती है ! हां, उसके चरण कितने सुन्दर, कितने कामल और कितने गौरवशील हैं, उसका मुख कितना कान्तिमय!'

यह कहकर वह उठा, कनटोप अपनी आंखों पर खींच लिया और मन्दगति से अपने आश्रम की ओर चला।

अलबीना ने अपनी एककुमारी को बुलाकर कहा—'प्रिय पुत्री, तुम थायस के पास आवश्यक वस्तु पहुंचा दो, रोटियां, पानी और एक तीन छिद्रों वाली बांसुरी।

पांच

पापनाशी ने एक नौका पर बैठकर, जो सिरापियन के धर्माश्रम के लिए खाद्य-पदार्थ लिये जा रही थी, अपनी यात्रा समाप्त की और निज स्थान को लौट आया। जब वह किश्ती पर

से उतरा तो उसके शिष्य उसका स्वागत करने के लिए नदी तट पर आ पहुंचे और खुशियां मनाने लगे। किसी ने आकाश की ओर हाथ उठाये, किसी ने धरती पर सिर झुकाकर गुरु के चरणों को स्पर्श किया। उन्हें पहले ही से अपनी गुरु के कृत-कार्य होने का आत्मज्ञान हो गया था। योगियों को किसी गुप्त और अज्ञात रीति से अपने धर्म की विजय और गौरव के समाचार मिल जाते थे, और इतनी जल्द कि लोगों को आश्चर्य होता था। यह समाचार भी समस्त धर्माश्रमों में, जो उस प्रान्त में स्थित थे, आंधी के वेग के साथ फैल गया।

जब पापनाशी बलुवे मार्ग पर चला तो उसके शिष्य उसके पीछे-पीछे ईश्वर-कीर्तन करते हुए चले। फ्लेवियन उस संस्था का सबसे वृद्ध सदस्य था। वह धर्मोन्मत्त होकर उच्चस्वर से यह स्वरचित गीत गाने लगा—

आज का शुभ दिन है,
कि हमारे पूज्य पिता ने फिर हमें गोद में लिया।
वह धर्म का सेहरा सिर बांधे हुए आये हैं,
जिसने हमारा गौरव बढ़ा दिया है।
क्योंकि पिता का धर्म ही,
सन्तान का यथार्थ धन है।
हमारे पिता की सुकीर्ति की ज्योति से,
हमारी कुटियों में प्रकाश फैल गया है।
हमारे पिता पापनाशी,
प्रभु मसीह के लिए नयी एक दुल्हन लाये हैं।
अपने अलौकिक तेज और सिद्धि से,
उन्होंने एक काली भेड़ को।
जो अंधेरी घाटियों से मारी-मारी फिरती थी,
उजली भेड़ बना दिया है।
इस भांति ईसाई धर्म की ध्वजा फहराते हुए,
वह फिर हमारे ऊपर हाथ रखने के लिए लौट आये हैं।
उन मधुमक्खियों की भांति,
जो अपने छत्तों से उड़ जाती है।
और फिर जंगलों से फूलों की,
मधु-सुधा लिये हुए लौटती हैं।
न्युबिया के मेष की भांति,
जो अपने ही ऊन का बोझ नहीं उठा सकता।
हम आज के दिन आनन्दोत्सव मनायें,
अपने भोजन में तेल को चुपड़कर।।

जब वह लोग पापनाशी की कुटी के द्वार पर आये तो सब-के-सब घुटने टेककर बैठ गये और बोले—'पूज्य पिता ! हमें आशीर्वाद दीजिए और हमें अपनी रोटियों को चुपड़ने के

लिए थोड़ा-सा तेल प्रदान कीजिए कि हम आपके कुशलपूर्वक लौट आने पर आनन्द मनायें।'

मूर्ख पॉल अकेला चुपचाप खड़ा रहा। उसने न घाट ही पर आनन्द प्रकट किया था, और न इस समय जमीन पर गिरा। वह पापनाशी को पहचानता ही न था और सबसे पूछता था, 'यह कौन आदमी है ?' लेकिन कोई उसकी ओर ध्यान नहीं देता था, क्योंकि सभी जानते थे कि यद्यपि यह सिद्धि प्राप्त है, पर है ज्ञान-शून्य।

पापनाशी जब अपनी कुटी में सावधान होकर बैठा तो विचार करने लगा—अन्त में मैं अपने आनन्द और शान्ति के उद्दिष्ट स्थान पर पहुंच गया। मैं अपने सन्तोष से सुरक्षित गढ़ में प्रविष्ट हो गया, लेकिन यह क्या बात है कि यह तिनकों का झोंपड़ा जो मुझे इतना प्रिय है, मुझे मित्रभाव से नहीं देखता और दीवारें मुझसे हर्षित होकर नहीं कहतीं—'तेरा आना मुबारक हो !' मेरी अनुपस्थिति में यहां किसी प्रकार का अन्तर होता हुआ नहीं दीख पड़ता। झोंपड़ा ज्यों-का-त्यों है, यही पुरानी मेज और मेरी पुरानी खाट है। वह मसालों से भरा सिर है, जिसने कितनी ही बार मेरे मन में पवित्र विचारों की प्रेरणा की है। वह पुस्तक रखी हुई है जिसके द्वारा मैंने सैकड़ों बार ईश्वर का स्वरूप देखा है। तिस पर भी यह सभी चीजें न जाने क्यों मुझे अपरिचित-सी जान पड़ती हैं, इनका वह स्वरूप नहीं रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी स्वाभाविकता शोभा का अपहरण हो गया है, मानो मुझ पर उनका स्नेह ही नहीं रहा। और मैं पहली ही बार उन्हें देख रहा हूं। जब मैं इस मेज और इस पलंग पर, जो मैंने किसी समय अपने हाथों से बनाये थे, इन मसालों से सुखाई खोपड़ी पर, इस भोजपत्र के पुलिन्दों पर जिन पर ईश्वर के पवित्र वाक्य अंकित हैं, निगाह डालता हूं तो मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि यह सब किसी मृत प्राणी की वस्तुएं हैं। इनसे इतना घनिष्ठ सम्बन्ध होने पर भी, इनसे रात-दिन का संग रहने पर भी मैं अब इन्हें पहचान नहीं सकता। आह ! यह सब चीजें ज्यों-की-त्यों हैं इनमें जरा भी परिवर्तन नहीं हुआ। अतएव मुझमें ही परिवर्तन हो गया है, मैं जो पहले था वह अब नहीं रहा। मैं कोई और ही प्राणी हूं। मैं ही मृत आत्मा हूं ! हे भगवान् ! यह क्या रहस्य है ? मुझमें से कौन-सी वस्तु लुप्त हो गयी है, मुझमें अब क्या शेष रह गया है ? मैं कौन हूं ?

और सबसे बड़ी आशंका की बात यह थी कि मन को बार-बार इस शंका की निर्मूलता का विश्वास दिलाने पर भी उसे ऐसा भाषित होता था कि उसकी कुटी बहुत तंग हो गयी यद्यपि धार्मिक भाव से उसे इस स्थान को अनंत समझना चाहिए था, क्योंकि अनन्त का भाग भी अनन्त ही होता है, क्योंकि यहीं बैठकर वह ईश्वर की अनन्तता में विलीन हो जाता था।

उसने इस शंका के दमनार्थ धरती पर सिर रखकर ईश्वर की प्रार्थना की और इससे उसका चित्त शान्त हुआ। उसे प्रार्थना करते हुए एक घण्टा भी न हुआ होगा कि थायस की छाया उसकी आंखों के सामने से निकल गयी। उसने ईश्वर को धन्यवाद देकर कहा—प्रभू मसीह, तेरी ही कृपा से मुझे उसके दर्शन हुए। यह तेरी असीम दया और अनुग्रह है, इसे मैं स्वीकार करता हूं। तू उस प्राणी को मेरे सम्मुख भेजकर, जिसे मैंने तेरी भेंट किया है, मुझे सन्तुष्ट, प्रसन्न और आश्वस्त करना चाहता है। तू उसे मेरी आंखों के सामने प्रस्तुत

करता है, क्योंकि अब उसकी मुस्कान निःशास्त्र, उसका सौन्दर्य निष्कलंक और उसके हावभाव उद्देश्यहीन हो गये हैं। मेरे दयालु पतितपावन प्रभु, तू मुझे प्रसन्न करने के निमित्त उसे मेरे सम्मुख उसी शुद्ध और परिमार्जित स्वरूप में लाता है जो मैंने तेरी इच्छाओं के अनुकूल उसे दिया है, जैसे एक मित्र प्रसन्न होकर दूसरे मित्र को उसके दिये हुए उपहार की याद दिलाता है। इस कारण मैं इस स्त्री को देखकर आनन्दित होता हूं, क्योंकि तू ही इसका प्रेक्षक है। तू इस बात को नहीं भूलता कि मैंने उसे तेरे चरणों पर समर्पित किया है। उससे तुझे आनन्द प्राप्त होता है, इसलिए उसे अपनी सेवा में रख और अपने सिवाय किसी अन्य प्राणी को उसके सौन्दर्य से मुग्ध न होने दे।

उसे रात भर नींद नहीं आयी और थायस को उसने उससे भी स्पष्ट रूप में देखा जैसे परियों के कुंज में देखा था। उसने इन शब्दों में अपनी आत्मस्तुति की—मैंने जो कुछ किया है, ईश्वर ही के निमित्त किया है।

लेकिन इस आश्वासन और प्रार्थना पर भी उसका हृदय विकल था। उसने आह भरकर कहा—'मेरी आत्मा, तू क्यों इतनी शोकासक्त है, और क्यों मुझे यह यातना दे रही है ?'

अब भी उसके चित्त की उद्विग्नता शान्त न हुई। तीन दिन तक वह ऐसे महान् शोक और दुःख की अवस्था में पड़ा रहा जो एकान्तवासी योगियों की दुस्सह परीक्षाओं का पूर्वलक्षण है। थायस की सूरत आठों पहर उसकी आंखों के आगे फिरा करती। वह इसे अपनी आंखों के सामने से हटाना भी न चाहता था, क्योंकि अब तक वह समझता था कि यह मेरे ऊपर ईश्वर की विशेष कृपा है और वास्तव में यह एक योगिनी की मूर्ति है। लेकिन एक दिन प्रभात की सुषुप्तावस्था में उसने थायस को स्वप्न में देखा। उसके केशों पर पुष्पों का मुकुट विराज रहा था और उसका माधुर्य ही भयावह ज्ञात होता था कि वह भयभीत होकर चीख उठा और जागा तो ठण्डे पसीने से तर था, मानो बर्फ के कुंड में से निकला हो। उसकी आंखें भय की निद्रा से भारी हो रही थीं कि उसे अपने मुख पर गर्म-गर्म सांसों के चलने का अनुभव हुआ। एक छोटा-सा गीदड़ उसकी चारपाई की पट्टी पर दोनों अगले पैर रखे हांफ-हांफकर अपनी दुर्गन्ध-युक्त सांसें उसके मुख पर छोड़ रहा था, और उसे दांत निकाल-निकालकर दिखा रहा था।

पापनाशी को अत्यन्त विस्मय हुआ। उसे ऐसा जान पड़ा, मेरे पैरों के नीचे की जमीन धंस गयी। और वास्तव में वह पतित हो गया था। कुछ देर तक तो उसमें विचार करने की शक्ति ही न रही और जब वह फिर सचेत भी हुआ तो ध्यान और विचार से उसकी अशान्ति और भी बढ़ गई।

उसने सोचा—इन दो बातों में से एक बात है या तो वह स्वप्न की भांति ईश्वर का प्रेरित किया हुआ था और शुभस्वप्न था, और यह मेरी स्वाभाविक दुर्बुद्धि है जिसने उसे यह भयंकर रूप दे दिया है, जैसे गन्दे प्याले में अंगूर का रस खट्टा हो जाता है, मैंने अपने अज्ञानवश ईश्वरीय आदेश को ईश्वरीय तिरस्कार का रूप दे दिया और इस गीदड़ रूपी शैतान ने मेरी शंकान्वित दशा से लाभ उठाया, अथवा इस स्वप्न का प्रेरक ईश्वर नहीं, पिशाच था। ऐसी दशा में यह शंका होती है कि पहले के स्वप्नों को देवकृत समझने में मेरी

भ्रांति थी। सारांश यह कि इस समय मुझमें वह धर्माधर्म का ज्ञान नहीं रहा जो तपस्वी के लिए परमावश्यक है और जिसके बिना उसके पग-पग पर ठोकर खाने की आशंका रहती है कि ईश्वर मेरे साथ नहीं रहा—जिसके कुफल मैं भोग रहा हूं, यद्यपि उसके कारण नहीं निश्चित कर सकता।

इस भांति तर्क करके उसने बड़ी ग्लानि के साथ जिज्ञासा की—दयालु पिता! तू अपने भक्त से क्या प्रायश्चित कराना चाहता है, यदि उसकी भावनाएं ही उसकी आंखों पर परदा डाल दें, दुर्भावनाएं ही उसे व्यथित करने लगें ? मैं क्यों ऐसे लक्षणों का स्पष्टीकरण नहीं कर देता जिसके द्वारा मुझे मालूम हो जाया करे कि तेरी इच्छा क्या है, और क्यों तेरे प्रतिपक्षी की ?

किन्तु ईश्वर ने, जिसकी माया अभेद्य है, अपने इस भक्त की इच्छा पूरी न की ओर उसे आत्मज्ञान न प्रदान किया तो उसने शंका और भ्रांति वशीभूत होकर निश्चय किया अब मैं थायस की ओर मन को जाने ही न दूंगा। लेकिन उसका यह प्रयत्न निष्फल हुआ। उससे दूर रहकर भी थायस नितय उसके साथ रहती थी। जब वह कुछ पढ़ता था, ईश्वर का ध्यान करता था तो वह सामने बैठी उसकी ओर ताकती रहती, वह जिधर निगाह डालता, उसे उसी की मूर्ति दिखाई देती, यहां तक कि उपासना के समय भी वह उससे जुदा न होती। ज्योंही वह पापनाशी के कल्पना क्षेत्र में पदार्पण करती, वह योगी के कानों में कुछ धीमी आवाज सुनाई देती, जैसी स्त्रियों के चलने के समय उनके वस्त्रों से निकलती है, और इन छायाओं में यथार्थ से भी अधिक स्थिरता होती थी। स्मृतिचित्र अस्थिर, आङ्गिक और अस्पष्ट होता है। इसके प्रतिकूल एकान्त में जो छाया उपस्थित होती है, वह स्थिर और सुदीर्घ होती है। इसके प्रतिकूल एकान्त में जो छाया उपस्थित होती है, वह स्थिर और सुदीर्घ होती है। वह नाना प्रकार के रूप बदलकर उसके सामने आती—कभी मलिनवदन केशों में अपनी अन्तिम पुष्पमाला गूंथे, वही सुनहरे काम के वस्त्र धारण किये जो उसने इस्कन्द्रिया में कोटा के प्रीति-भोज के अवसर पर पहने थे, कभी महीन वस्त्र पहने परियों के कुंज में बैठी हुई, कभी मोटा कुरता पहने, विरक्त और आध्यात्मिक आनन्द से विकसित, कभी शोक में डूबी आंखें मृत्यु की भयंकर आशंकाओं से डबडबाई हुई, अपना आवरणहीन हृदयस्थल खोले, जिस पर आहतहृदय से रक्तधारा प्रवाहित होकर जम गयी थी। इन छायामूर्तियों में उसे जिस बात का सबसे अधिक खेद और विस्मय होता था वह यह थी कि वह पुष्पमालाएं, वह सुन्दर वस्त्र, वह महीन चादरें, वह जरी के काम की कुर्तियां जो उसने जला डाली थीं, फिर जैसे लौट आयीं। उसे अब यह विदित होता था कि इन वस्तुओं में भी कोई अविनाशी आत्मा है और उसने अन्तर्वेदना से विकल होकर कहा—

'कैसी विपत्ति है कि थायस के असंख्य पापों की आत्माएं यों मुझ पर आक्रमण कर रही हैं।'

जब उसने पीछे की ओर देखा तो उसे ज्ञात हुआ कि थायस खड़ी है, और इससे उसकी अशान्ति और भी बढ़ गई। असह्य आत्मवेदना होने लगी लेकिन चूंकि इन सब शंकाओं और दुष्कल्पनाओं में भी उसकी छाया और मन दोनों ही पवित्र थे, इसलिए उसे ईश्वर पर विश्वास था। अतएव वह इन करुण शब्दों में अनुनय-विनय करता था—भगवान्,

तेरी मुझ पर यह अकृपा क्यों ? यदि मैं उनकी खोज में विधर्मियों के बीच गया, तो तेरे लिए, अपने लिए नहीं। क्या यह अन्याय नहीं है कि मुझे उन कर्मों का दण्ड दिया जाये जो मैंने तेरा माहात्म्य बढ़ाने के निमित्त किये हैं ? प्यारे मसीह, आप इस घोर अन्याय से मेरी रक्षा कीजिए। मेरे त्राता, मुझे बचाइए। देह मुझ पर जो विजय प्राप्त न कर सकी, वह विजयकीर्ति उसकी छाया को न प्रदान कीजिए। मैं जानता हूं कि मैं इस समय महासंकटों में पड़ा हुआ हूं। मेरा जीवन इतना शंकामय कभी न था। मैं जानता हूं और अनुभव करता हूं कि स्वप्न में प्रत्यक्ष से अधिक शक्ति है और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि स्वप्न में स्वयं आत्मिक वस्तु होने के कारण भौतिक वस्तु होने के कारण भौतिक वस्तुओं से उच्चतर है। स्वप्न वास्तव में वस्तुओं की आत्मा है। प्लेटो यद्यपि मूर्तिवादी था, तथापि उसने विचारों के अस्तित्व को स्वीकार किया है। भगवान् नरपिशाचों के उस भोज में जहां तू मेरे साथ था, मैंने मनुष्यों को—वह पाप-मलिन अवश्य थे, किन्तु कोई उन्हें विचार और बुद्धि से रहित नहीं कह सकता—इस बात पर सहमत होते सुना कि योगियों को एकान्त, ध्यान और परम आनन्द की अवस्था में प्रत्यक्ष वस्तुएं दिखाई देती हैं। परम पिता, आपने पवित्र ग्रन्थ स्वयं कितनी ही बार स्वप्न के गुणों को और छायामूर्तियों की शक्तियों को, चाहे वह तेरी ओर से हों या तेरे शत्रु की ओर से, स्पष्ट और कई स्थानों पर स्वीकार किया है। फिर यदि मैं भ्रांति में जा पड़ा तो मुझे क्यों इतना कष्ट दिया जा रहा है ?

पहले पापनाशी ईश्वर से तर्क न करता था। वह निरापद भाव से उसके आदेशों का पालन करता था। पर अब उसमें एक नये भाव का विकास हुआ—उसने ईश्वर से प्रश्न और शंकाएं करनी शुरू कीं, किन्तु ईश्वर ने उसे वह प्रकाश न दिखाया जिसका वह इच्छुक था। उसकी रातें एक दीर्घ स्वप्न होती थीं, और उसके दिन भी इस विषय में रातों ही के सदृश होते थे। एक रात वह जागा तो उसके मुख से ऐसी पश्चात्तापपूर्ण आहें निकल रही थीं, जैसी चांदनी रात में पापाहत मनुष्यों की कब्रों से निकला करती हैं। थायस आ पहुंची थी, और उसके जख्मी पैरों से खून बह रहा था। किन्तु पापनाशी रोने लगा कि वह धीरे से उसकी चारपाई पर आकर लेट गयी। अब कोई सन्देह न रहा, सारी शंकाएं निवृत्त हो गयीं। थायस की छाया वासनायुक्त थी।

उसके मन में घृणा की एक लहर उठी। वह अपनी अपवित्र शैया से झपटकर नीचे कूद पड़ा और अपना मुंह दोनों हाथों से छिपा लिया कि सूर्य का प्रकाश न पड़ने पाये। दिन की घड़ियां गुजरती जाती थीं, किन्तु उसकी लज्जा और ग्लानि शान्त न होती थी। कुटी में पूरी शान्ति थी। आज बहुत दिनों के पश्चात् प्रथम बार थायस को एकान्त मिला। आखिर में छाया ने भी उसका साथ छोड़ दिया, और अब उसकी विलीनता भी भयंकर प्रतीत होती थी। इस स्वप्न को विस्मृत करने के लिए, इस विचार से उसके मन को हटाने के लिए अब कोई अवलम्ब, कोई साधन, कोई सहारा नहीं था। उसने अपने को धिक्कारा—मैंने क्यों उसे भगा न दिया ? मैंने अपने को उसके घृणित आलिंगन और तापमय करों से क्यों न छुड़ा लिया ?

अब वह उस भ्रष्ट चारपाई के समीप ईश्वर का नाम लेने का भी साहस न कर सकता था, और उसे यह भय होता था कि कुटी के अपवित्र हो जाने के कारण पिशाचगण

स्वेच्छानुसार अन्दर प्रविष्ट हो जायेंगे, उनके रोकने का मेरे पास अब कौन-सा मन्त्र रहा ? और उसका भय निर्मूल न था। वह सातों गीदड़ जो कभी उसकी चौखट के भीतर न आ सके थे, अब कतार बांधकर आये और भीतर आकर उसके पलंग के नीचे छिप गये। संध्या प्रार्थना के समय एक और आठवां गीदड़ भी आया, जिसकी दुर्गन्ध असह्य थी। दूसरे दिन नवां गीदड़ भी उनमें आ मिला और उनकी संख्या बढ़ते-बढ़ते तीस से साठ और साठ से अस्सी तक पहुंच गयी। जैसे-जैसे उनकी संख्या बढ़ती थी, उनका आहार छोटा होता जाता था, यहां तक कि वह चूहों के बराबर हो गये और सारी कुटी में फैल गये—पलंग, मेज, तिपाई, फर्श एक भी उनसे खाली न बचा। उनमें से एक मेज पर कूद गया और उसके तकिये पर चारों पैर रखकर पापनाशी के मुख की ओर जलती हुई आंखों से देखने लगा। नित्य नये-नये गीदड़ आने लगे।

अपने स्वप्न के भीषण पाप का प्रायश्चित करने और भ्रष्ट विचारों से बचने के लिए पापनाशी ने निश्चय किया कि अपनी कुटी से निकल जाऊं तो अब पाप का बसेरा बन गयी है और मरुभूमि में दूर जाकर कठिन-से-कठिन तपस्याएं करूं, ऐसी-ऐसी सिद्धियों में रत हो जाऊं जो किसी ने सुनी भी न हों, परोपकार और उद्धार के पथ पर और भी उत्साह से चलूं। लेकिन इस निश्चय को कार्यरूप में लाने से पहले वह सन्त पालम के पास उससे परामर्श करने गया।

उसने पालम को अपने बगीचे में पौधों को सींचते हुए पाया। संध्या हो गयी थी। नील नदी की नीली धारा ऊंचे पर्वतों के दामन में बह रही थी। वह सात्त्विक हृदय वृद्ध साधु धीरे-धीरे चल रहा था कि कहीं वह कबूतर चौंककर उड़ न जाये जो उसके कन्धे पर आ बैठा था।

पापनाशी को देखकर उसने कहा—'भाई पापनाशी को नमस्कार करता हूं। देखो, परम पिता कितना दयालु है; वह मेरे पास अपने रचे हुए पशुओं को भेजता है कि मैं उनके साथ उनका कीर्तिगान करूं और हवा में उड़ने वाले पक्षियों को देखकर उनकी अनन्तलीला का आनन्द उठाऊं। इस कबूतर को देखो, उसकी गर्दन के बदलते हुए रंगों को देखो, क्या वह ईश्वर की सुन्दर रचना नहीं है ? लेकिन तुम तो मेरे पास किसी धार्मिक विषय पर बातें करने आये हो न ? यह लो, मैं अपना डोल रखे देता हूं और तुम्हारी बातें सुनने को तैयार हूं।'

पापनाशी ने वृद्ध साधु से अपनी इस्कन्द्रिया की यात्रा, थायस के उद्धार, वहां से लौटने—दिनों की दूषित कल्पनाओं और रातों के दुःस्वप्नों—का सारा वृत्तान्त कह सुनाया। उस रात के पापस्वप्न और गीदड़ों के झुंड की बात भी न छिपाई और तब उससे पूछा—'पूज्य पिता, क्या ऐसी-ऐसी असाधारण योग-क्रियाएं करनी चाहिए कि प्रेतराज भी चकित हो जायें ?'

पालम सन्त ने उत्तर दिया—'भाई पापनाशी, मैं क्षुद्र पापी पुरुष हूं और अपना सारा जीवन बगीचे में हिरनों, कबूतरों और खरहों के साथ व्यतीत करने के कारण, मुझे मनुष्यों का बहुत कम ज्ञान है। लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारी दुश्चिन्ताओं का कारण कुछ और ही है। तुम इतने दिनों तक व्यावहारिक संसार में रहने के बाद यकायक निर्जन

शांति में आ गये हों। ऐसे आकस्मिक परिवर्तनों से आत्मा का स्वास्थ्य बिगड़ जाये तो आश्चर्य की बात नहीं। बन्धुवर, तुम्हारी दशा उस प्राणी की-सी है जो एक ही क्षण में अत्याधिक ताप से शीत में आ पहुंचे। उसे तुरन्त खांसी और ज्वर घेर लेते हैं। बन्धु, तुम्हारे लिए मेरी यह सलाह है कि किसी निर्जन मरुस्थल में जाने के बदले, मन-बहलाव के ऐसे काम करो जो तपस्वियों और साधुओं के सर्वथा योग्य हैं। तुम्हारी जगह मैं होता तो समीपवर्ती धर्माश्रमों की सैर करता। इनमें से कई देखने के योग्य हैं, लोग उनकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। सिरैपियन के ऋषिगृह में एक हजार चार सौ बत्तीस कुटियां बनी हुई हैं, और तपस्वियों को उतने वर्गों में विभक्त किया गया है जितने अक्षर यूनानी लिपि में हैं। मुझसे लोगों ने यह भी कहा है कि इस वर्गीकरण में अक्षर, आकार और साधकों की मनोवृत्तियों में एक प्रकार की अनुरूपता का ध्यान रखा जाता है। उदाहरणतः वह लोग जो Z वर्ग के अन्तर्गत रखे जाते हैं चंचल प्रकृति के होते हैं, और जो लोग शान्तप्रकृति के हैं वह I के अन्तर्गत रखे जाते हैं। बन्धुवर, तुम्हारी जगह मैं होता तो अपनी आंखों से इस रहस्य को देखता और जब तक ऐसे अद्भुत स्थान की सैर न कर लेता, चैन न लेता। क्या तुम इसे अद्भुत नहीं समझते ? किसी की मनोवृत्तियों का अनुमान कर लेना कितना कठिन है और जो लोग निम्न श्रेणी में रखा जाना स्वीकार कर लेते हैं, वह वास्तव में साधु हैं, क्योंकि उनकी आत्मशुद्धि का लक्ष्य उनके सामने रहता है। वह जानते हैं कि हम किस भांति जीवन व्यतीत करने से सरल अक्षरों के अन्तर्गत हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त व्रतधारियों के देखने और मनन करने योग्य और भी कितनी ही बातें हैं। मैं भिन्न-भिन्न संगतों को जो नील नदी के तट पर फैली हुई हैं, अवश्य देखता, उनके नियमों और सिद्धान्तों का अवलोकन करता, एक आश्रम की नियमावली की दूसरे-से तुलना करता कि उनमें क्या अन्तर है, क्या दोष है, क्या गुण है। तुम जैसी धर्मात्मा पुरुष के लिए यह आलोचना सर्वथा योग्य है। तुमने लोगों से यह अवश्य ही सुना होगा कि ऋषि एन्फरेम ने अपने आश्रम के लिए बड़े उत्कृष्ट धार्मिक नियमों की रचना की है। उनकी आज्ञा लेकर तुम इस नियमावली की नकल कर सकते हो क्योंकि तुम्हारे अक्षर बड़े सुन्दर होते हैं। मैं नहीं लिख सकता क्योंकि मेरे हाथ फावड़ा चलाते-चलाते इतने कठोर हो गये हैं कि उनमें पतली कलम को भोजपत्र पर चलाने की क्षमता ही नहीं रही। लिखने के लिए हाथों का कोमल होना जरूरी है। लेकिन बन्धुवर, तुम तो लिखने में चतुर हो, और तुम्हें ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने तुम्हें यह विद्या प्रदान की, क्योंकि सुन्दर लिपियों की जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। ग्रन्थों की नकल करना और पढ़ना बुरे विचारों से बचने का बहुत ही उत्तम साधन हैं। बन्धु पापनाशी, तुम हमारे श्रद्धेय ऋषियों, पालम और एण्टोनी के सदुपदेशों को लिपिबद्ध क्यों नहीं कर डालते ? ऐसे धार्मिक कामों में लगे रहने से शनैः-शैनः तुम चित्त और आत्मा की शांति को पुनः लाभ कर लोगे, फिर एकांत तुम्हें मुखद जान पड़ेगा और शीघ्र ही तुम इस योग्य हो जाओगे कि आत्मशुद्धि की उन क्रियाओं में प्रवृत्त हो जाओगे जिनमें तुम्हारी यात्रा ने विघ्न डाल दिया था। लेकिन कठिन कष्टों और दमनकारी वेदनाओं के सहन से तुम्हें बहुत आशा न रखनी चाहिए। जब पिता एण्टोनी हमारे बीच में थे तो कहा करते थे—'बहुत व्रत रखने से दुर्बलता आती है औद दुर्बलता से

आलस्य पैदा होता है। कुछ ऐसे तपस्वी हैं जो कई दिनों तक लगातार अनशन व्रत रख अपने शरीर को चौपट कर डालते हैं। उनके विषय में यह कहना सर्वथा सत्य है कि वह अपने ही हाथों से अपनी छाती पर कटार मार लेते हैं और अपने को किसी प्रकार की रुकावट के शैतान के हाथों में सौंप देते हैं।' यह उस पुनीतात्मा एण्टोनी के विचार थे ! मैं अज्ञानी मूर्ख बुड्ढा हूं; लेकिन गुरु के मुख से जो कुछ सुना था वह अब तक याद है।'

पापनाशी ने पालम सन्त को इस शुभादेश के लिए धन्यवाद दिया और उस पर विचार करने का वादा किया। जब वह उससे विदा होकर नरकटों के बाड़े के बाहर आ गया जो बगीचे के चारों ओर बना हुआ था, तो उसने पीछे फिरकर देखा। सरल, जीवन्मुक्त साधु पालम पौधों को पानी दे रहा था, और उसकी झुकी हुई कमर पर कबूतर बैठा उसके साथ-साथ घूमता था। इस दृश्य को देखकर पापनाशी रो पड़ा।

अपनी कुटी में जाकर उसने एक विचित्र दृश्य देखा। ऐसा जान पड़ता था कि अगणित बालुकरण किसी प्रचण्ड आंधी से उड़कर कुटी में फैल गये हैं। जब उसने जरा ध्यान से देखा तो प्रत्येक बालुकरण यथार्थ में एक अति सूक्ष्म आकार का गीदड़ था, सारी कुटी शृंगालमय हो गयी थी।

उसी रात को पापनाशी ने स्वप्न देखा कि एक बहुत ऊंचा पत्थर का स्तम्भ है, जिसके शिखर पर एक आदमी का चेहरा दिखाई दे रहा है। उसके कान में कहीं से यह आवाज आयी—इस स्तम्भ पर चढ़ !

पापनाशी जागा तो उसे निश्चय हुआ कि यह स्वप्न मुझे ईश्वर की ओर से हुआ है। उसने अपने शिष्यों को बुलाया और उनको इन शब्दों में सम्बोधित किया—'प्रिय पुत्रो, मुझे आदेश मिला है कि तुमसे फिर विदा मांगू और जहां ईश्वर ले जाये वहां जाऊं। मेरी अनुपस्थिति में फ्लेवियन की आज्ञाओं को मेरी ही आज्ञाओं की भांति मानना और बन्धु पालम की रक्षा करते रहना। ईश्वर तुम्हें शांति दे। नमस्कार !'

जब वह चला तो उसके सभी शिष्य साष्टांग दण्डवत करने लगे और जब उन्होंने सिर उठाया तो उन्हें अपने गुरु की लम्बी, श्याममूर्ति क्षितिज में विलीन होती हुई दिखाई दी।

वह रात और दिन अविश्रान्त चलता रहा। यहां तक कि वह उस मन्दिर में जा पहुंचा, जो प्राचीन काल में मूर्तिपूजकों ने बनाया था और जिसमें वह अपनी विचित्र पूर्वयात्रा में एक रात सोया था। अब इस मन्दिर का भग्नावशेष मात्र रह गया था और सर्प, बिच्छू, चमगादड़ आदि जन्तुओं के अतिरिक्त प्रेत भी इसमें अपना अड्डा बनाये हुए थे। दीवारें जिन पर जादू के चिह्न बने हुए थे, अभी तक खड़ी थीं। तीस वृहदाकार स्तम्भ जिनके शिखरों पर मनुष्य के सिर अथवा कमल के फूल बने हुए थे, अभी तक एक भारी चबूतरे को उठाये हुए थे। लेकिन मन्दिर के एक सिरे पर एक स्तम्भ इस चबूतरे के बीच से सरक गया था और अब अकेला खड़ा था। इसका कलश एक स्त्री को मुस्कराता हुआ मुखमण्डल था। उसकी आंखें लम्बी थीं, कपोल भरे हुए, और मस्तक पर गाय की सींगें थीं।

पापनाशी ने स्तम्भ को देखते ही पहचान गया कि यह वह स्तम्भ है जिसे उसने स्वप्न में देखा था और उसने अनुमान किया कि इसकी ऊंचाई बत्तीस हाथों से कम न होगी। वह निकट गांव में गया और उतनी ही ऊंची एक सीढ़ी बनाई और जब सीढ़ी तैयार हो गयी

तो वह स्तम्भ से लगाकर खड़ी की गयी। वह उस पर चढ़ा और शिखर पर जाकर उसने भूमि पर मस्तक नवाकर यों प्रार्थना की–'भगवान्, यही वह स्थान है जो तूने मेरे लिए बताया है। मेरी परम इच्छा है कि मैं यहीं तेरी दया की छाया में जीवन-पर्यन्त रहूं।'

वह अपने साथ भोजन की सामग्रियां न लाया था। उसे भरोसा था कि ईश्वर मेरी सुधि अवश्य लेगा और यह आशा थी कि गांव के भक्तिपरायण जन मेरे खाने-पीने का प्रबन्ध कर देंगें और ऐसा भी। दूसरे दिन तीसरे पहर स्त्रियां अपने बालकों के साथ रोटियां, छुहारे और ताजा पानी लिये हुए आयीं, जिसे बालकों ने स्तम्भ के शिखर पर पहुंचा दिया।

स्तम्भ का कलश इतना चौड़ा न था कि पापनाशी उस पर पैर फैलाकर लेट सकता, इसलिए वह पैरों को नीचे-ऊपर किये, सिर छाती पर रखकर सोता था और निद्रा जागृत रहने से भी अधिक कष्टदायक थी। प्रातःकाल उकाब अपने पैरों से उसे स्पर्श करता था और वह निद्रा, भय तथा अंगवेदना से पीड़ित उठ बैठता था।

संयोग से जिस बढ़ई ने यह सीढ़ी बनायी थी, वह ईश्वर का भक्त था। उसे यह देखकर चिन्ता हुई कि योगी को वर्षा और धूप से कष्ट हो रहा है। और इस भय से कि कहीं निद्रा में वह नीचे न गिर पड़े, उस पुण्यात्मा पुरुष ने स्तम्भ के शिखर पर छत और कठघरा बना दिया।

थोड़े ही दिनों में उस असाधारण व्यक्ति की चर्चा गांवों में फैलने लगी और रविवार के दिन श्रमजीवियों के दल-के-दल अपनी स्त्रियों और बच्चों के साथ उसके दर्शनार्थ आने लगे। पापनाशी के शिष्यों ने जब सुना कि गुरुजी ने इस विचित्र स्थान में शरण ली है तो वह चकित हुए, और उसकी सेवा में उपस्थित होकर उससे स्तम्भ के नीचे अपनी कुटिया बनाने की आज्ञा प्राप्त की। नित्यप्रति प्रातःकाल वह आकर अपने स्वामी के चारों ओर खड़े हो जाते और उसके सदुपदेश सुनते थे।

वह उन्हें सिखाता था–प्रिय पुत्रो, उन्हीं नन्हें बालकों के समान बन रहो जिन्हें प्रभु मसीह प्यार किया करते थे। वही मुक्ति का मार्ग है। वासना ही सब पापों का मूल है। वह वासना से उसी भांति उत्पन्न होते हैं जैसे सन्तान पिता से। अहंकार, लोभ, आलस्य, क्रोध और ईर्ष्या उनकी प्रिय सन्तान हैं। मैंने इस्कन्द्रिया में यही कुटिल व्यापार देखा। मैंने धन-सम्पन्न पुरुषों को कुचेष्टाओं में प्रवाहित होते देखा है जो उस नदी की बाढ़ की भांति हैं जिसमें मैला जल भरा हो। वह उन्हें दुःख की खाड़ी में बहा ले जाता है।

एफरायम और सिरापियन के अधिष्ठाताओं ने इस अद्भुत तपस्या का समाचार सुना तो उसके दर्शनों से अपने नेत्रों को कृतार्थ करने की इच्छा प्रकट की। उनकी नौका के त्रिकोण पालों को दूर से नदी में आते देखकर पापनाशी के मन में अनिवार्यतः यह विचार उत्पन्न हुआ कि ईश्वर ने मुझे एकान्त से भी योगियों के लिए आदर्श बना दिया है। दोनों महात्माओं ने जब उसे देखा तो उन्हें बड़ा कुतूहल हुआ और आपस में पराभर्श करके उन्होंने सर्वसम्मति से ऐसी अमानुषिक को तपस्या का त्याज्य ठहराया। अतएव उन्होंने पापनाशी से नीचे उतर आने का अनुरोध किया।

वह बोला–'यह जीवनप्रणाली परम्परागत व्यवहार के सर्वथा विरुद्ध है। धर्म-सिद्धान्त इसकी आज्ञा नहीं देते।'

लेकिन पापनाशी ने उत्तर दिया—'योगी जीवन के नियमों और परम्परागत व्यवहारों की परवाह नहीं करता। योगी स्वयं असाधारण व्यक्ति होता है, इसलिए यदि उसका जीवन भी असाधारण हो तो आश्चर्य की क्या बात है। मैं ईश्वर की प्रेरणा से यहां चढ़ा हूं। उसी के आदेश से उतरूंगा।'

नित्यप्रति धर्म के इच्छुक आकर पापनाशी के शिष्य बनते और उसी स्तम्भ के नीचे अपनी कुटिया बनाते थे। उनमें से कई शिष्यों ने अपने गुरु का अनुकरण करने के लिए मन्दिर के दूसरे स्तम्भों पर चढ़कर तप करना शुरू किया। पर जब उनके अन्य सहचरों ने इसकी निन्दा की, और वह स्वयं धूप और कष्ट न सह सके, तो नीचे उतर आये।

देश के अन्य भागों से पापियों और भक्तों के जत्थे-के-जत्थे आने लगे। उनमें से कितने ही बहुत दूर से आते थे। उनके साथ भोजन की कोई वस्तु न होती थी। एक वृद्धा विधवा को सूझी कि उनके हाथ ताजा पानी, खरबूजे आदि फल बेचे जायें तो लाभ हो। स्तम्भ के समीप ही उसने मिट्टी के कुल्हड़ जमा किये। एक नीली चादर तानकर उसने नीचे फलों की टोकरियां सजाईं और पीछे खड़ी होकर हांक लगाने लगी—ठंडा पानी, ताजा फल, जिसे खाना या पानी पीना हो चला आवे। इसकी देखादेखी एक नानबाई थोड़ी-सी लाल ईंटें लाया और समीप ही अपना तन्दूर बनाया। इसमें सादी और खमीरी रोटियां सेंककर वह ग्राहकों को खिलाता था। यात्रियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। मिस्र देश के बड़े-बड़े शहरों से भी लोग आने लगे। यह देखकर एक लोभ आदमी ने मुसाफिरों और नौकरों, ऊंटों, खच्चरों आदि को ठहराने के लिए एक सराय बनवाई। थोड़े ही दिन में उस स्तम्भ के सामने एक बाजार लग गया जहां मदुए अपनी मछलियां और किसान अपने फल-मेवे ला-लाकर बेचने लगे। एक नाई भी आ पहुंचा जो किसी वृक्ष की छांह में बैठकर यात्रियों की हजामत बनाता था और दिल्लगी की बातें करके लोगों को हंसाता था। पुराना मन्दिर इतने दिन उजड़े रहने के बाद फिर आबाद हुआ। जहां रात-दिन निर्जनता और नीरवता का आधिपत्य रहता था, वहां अब जीवन के दृश्य और चिह्न दिखाई देने लगे। हरदम चहल-पहल रहती। भठियारों ने पुराने मन्दिर के तहखानों के शराबखाने बना दिये और स्तम्भ पर पापनाशी के चित्र लटकाकर उसके नीचे यूनानी और मिस्री लिपियों में यह विज्ञापन लगा दिये—'अनार की शराब, अंजीर की शराब और सिलिसिया की सच्ची जौ की शराब यहां मिलती है।' दुकानदारों ने उन दीवारों पर जिन पर पवित्र और सुन्दर बेलबूटे अंकित किये हुए थे, रस्सियों से गूंथकर प्याज लटका दिये। तली हुई मछलियां, मरे हुए खरहे और भेड़ों की लाशें सजाई हुई दिखाई देने लगीं। संध्या समय इस खंडहर के पुराने निवासी अर्थात् चूहे सफ बांधकर नदी की ओर दौड़ते और बगुले सन्देहात्मक भाव से मर्दन उठाकर ऊंची कारनिसों पर बैठ जाते; लेकिन वहां भी उन्हें पाकशालाओं के धुएं, शराबियों के शोरगुल और शराब बेचने वालों की हांक-पुकार से चैन न मिलता। चारों तरफ कोठी वालों ने सड़कें, मकान, चर्च धर्मशालाएं और ऋषियों के आश्रम बनवा दिये। छः महीने न गुजरने पाये थे कि वहां एक अच्छा-खासा शहर बस गया, जहां रक्षाकारी विभाग, न्याय, कारागार, सभी बन गये और वृद्ध मुंशी ने एक पाठशाला भी खोल ली। जंगल में मंगल हो गया, ऊसर में बाग लहराने लगा।

यात्रियों का रात-दिन तांता लगा रहता। शैनः-शैनः ईसाई धर्म के प्रधान पदाधिकारी भी श्रद्धा के वशीभूत होकर आने लगे। ऐन्टियोक का प्रधान जो उस समय संयोग से मिस्र में था, अपने समस्त अनुयायियों के साथ आया। उसने पापनाशी के असाधारण तप की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। मिस्र के अन्य उच्च महारथियों ने इस सम्मति का अनुमोदन किया। एफरायम और सिरापियन के अध्यक्षों ने यह बात सुनी तो उन्होंने पापनाशी के पास आकर उसके चरणों पर सिर झुकाया और पहले इस तपस्या के विरुद्ध जो विचार प्रकट किये थे उनके लिए लज्जित हुए और क्षमा मांगी। पापनाशी ने उत्तर दिया—'बन्धुओं, यथार्थ यह है कि मैं जो तपस्या कर रहा हूं वह केवल उन प्रलोभनों और दुरिच्छाओं के निवारण के लिए है जो सर्वत्र मुझे घेरे रहते हैं और जिनकी संख्या तथा शक्ति को देखकर मैं दहल उठता हूं। मनुष्य का बाह्यरूप बहुत ही सूक्ष्म और स्वल्प होता है। इस ऊंचे शिखर पर से मैं मनुष्यों की चींटियों के समान जमीन पर रेंगते देखता हूं। किन्तु मनुष्य को अन्दर से देखो तो यह अनन्त और अपार है। वह संसार के समाकार है क्योंकि संसार उसके अन्तर्गत है। मेरे सामने जो कुछ है—यह आश्रय, यह अतिथि-शालाएं, नदी पर तैरने वाली नौकाएं, यह ग्राम खेत, वन-उपवन, नदियां, नहरें, पर्वत, मरुस्थल वह उसकी तुलना नहीं कर सकते जो मुझमें है। मैं अपने विराट् अन्तस्थल में असंख्य नगरों और सीमाशून्य पर्वतों को छिपाये हुए हूं, और इस विराट् अन्तस्थल पर इच्छाएं उसी भांति आच्छादित हैं जैसे निशा पृथ्वी पर आच्छादित हो जाती है। मैं, केवल मैं, अविचार एक जगत हूं।'

सातवें महीने में इस्कन्द्रिया से बुबेस्तीस और सायम नाम की दो वंध्या स्त्रियां, इस लालसा में आयीं कि महात्मा के आशीर्वाद और स्तम्भ के अलौकिक गुणों से उनके संतान होगी। अपनी ऊसर देह को पत्थर से रगड़ा। इन स्त्रियों के पीछे जहां तक निगाह पहुंचती थी, रथों, पालकियों और डोलियों का एक जुलूस चला आता था जो स्तम्भ के पास आकर रुक गया और इस देवपुरुष के दर्शन के लिए धक्का-धक्का करने लगा। इन सवारियों में से ऐसे रोगी निकले जिनको देखकर हृदय कांप उठता था। माताएं ऐसे बालकों को लायी थीं जिनके अंग टेढ़े हो गये थे, आंखें निकल आयी थीं और गले बैठ गये थे। पापनाशी ने उनकी देह पर अपना हाथ रखा। तब अन्धे, हाथों से टटोलते, पापनाशी की ओर दो रक्तमय छिद्रों से ताकते हुए आये। पक्षाघात पीड़ित प्राणियों ने अपने गतिशून्य सूखे तथा संकुचित अंगों की पापनाशी के सम्मुख उपस्थित किया। लंगड़ों ने अपनी टांगें दिखायीं। कछुई के रोग वाली स्त्रियां दोनों हाथों से अपनी छाती को दबाये हुए आयी और उसके सामने अपने जर्जर वक्ष खोल दिये। जलोदर के रोगी, शराब के पीपों की भांति फूले हुए, उसके सममुख भूमि पर लेटाये गये। पापनाशी ने इन समस्त रोगी प्राणियों को आशीर्वाद दिया। फील-पांव से पीड़ित हब्शी संभल-संभलकर चलते हुए आये और उसकी ओर करुण नेत्रों से ताकने लगे। उसने उनके ऊपर सलीब का चिह्न बना दिया। एक युवती बड़ी दूर से डोली में लायी गयी थी। रक्त उगलने के बाद तीन दिन से उसने आंखें न खोली थीं। वह एक मोम की मूर्ति की भांति दीखती थी और उसके माता-पिता ने उसे मुर्दा समझकर उसकी छाती पर खजूर की एक पत्ती रख दी थी। पापनाशी ने ज्योंही ईश्वर से प्रार्थना की, युवती ने सिर उठाया और आंखें खोल दीं।

यात्रियों ने अपने घर लोटकर इन सिद्धियों की चर्चा की तो मिरगी के रोगी भी दौड़े। मिस्र के सभी प्रान्तों से अगणित रोगी आकर जमा हो गये। ज्योंही उन्होंने यह स्तम्भ देखा तो मूर्छित हो गये, जमीन पर लौटने लगे और उनके हाथ-पैर अकड़ गये। यद्यपि यह किसी को विश्वास न आयेगा, किन्तु वहां जितने आदमी मौजूद थे, सब-के-सब बौखला उठे और रोगियों की भांति कुलांचें खाने लगे। पंडित और पुजारी, स्त्री और पुरुष सब-के-सब तले-ऊपर लोटने-पोटने लगे। सबों के अंग अकड़े हुए थे, मुंह से फिचकुर बहता था, मिट्टी से मुट्ठियां भर-भरकर फांकते और अनर्गल शब्द मुंह से निकालते थे।

पापनाशी ने शिखर पर से यह कुतूहलजनक दृश्य देखा तो उसके समस्त शरीर में विप्लव-सा होने लगा। उसने ईश्वर से प्रार्थना की—'भगवान्', मैं ही छोड़ा हुआ बकरा हूं, और मैं अपने ऊपर इन सारे प्राणियों के पापों का भार लेता हूं, और यही कारण है कि मेरा शरीर प्रेतों और पिशाचों से भरा हुआ है।'

जब कोई रोगी चंगा होकर जाता था तो लोग उसका स्वागत करते थे, उसका लुजूस निकालते थे, बाजे बजाते, फूल उड़ाते और उसके घर तक पहुंचाते थे, और लाखों कंठों से यह ध्वनि निकलती थी—'हमारे प्रभु मसीह फिर अवतरित हुए !'

बैसाखियों के सहारे चलने वाले दुर्बल रोगी जब आरोग्य लाभ कर लेते थे तो अपनी बैसाखियां इसी स्तम्भ में लटका देते थे। हजारों बैसाखियां लटकती हुई दिखाई देती थीं और प्रतिदिन उनकी संख्या बढ़ती ही जाती थी। अपनी मुराद पाने वाली स्त्रियां फूल की माला लटका देती थीं। कितने ही यूनानी यात्रियों ने पापनाशी के प्रति श्रद्धामय दोहे अंकित कर दिये। जो यात्री आता था, वह स्तम्भ पर अपना नाम अंकित कर देता था। अतएव स्तम्भ पर जहां तक आदमी के हाथ पहुंच सकते थे, उस समय की समस्त लिपियों—लैटिन, यूनानी, मिस्री, इबरानी, सुरयानी और जन्दी—का विचित्र सम्मिश्रण दृष्टिगोचर था।

जब ईस्टर का उत्सव आया तो इस चमत्कारों और सिद्धियों के नगर में इतनी भीड़भाड़ हुई देश-देशान्तरों के यात्रियों का ऐसा जमघट हुआ कि बड़े-बड़े बुड्ढे कहते कि पुराने जादूगरों के दिन फिर लौट आये। सभी प्रकार के मनुष्य, नाना प्रकार के वस्त्र पहने हुए वहां नजर आते थे। मिस्र-निवासियों के धरीदार कपड़े, अरबों में ढीले पाजामे, हब्शियों के श्वेत जांघिए, यूनानियों के ऊंचे चुगे, रोम-निवासियों के नीचे लबादे, असभ्य जातियों के लाल सुथने और वेश्याओं की किमखाब की पेशवाजें, भांति-भांति की टोपियों, मुड़ासों, कमरबन्दों और जूतों—इन सभी कलेवरों की झांकियां मिल जाती थीं। कहीं कोई महिला मुंह पर नकाब डाले, गधे पर सवार चली जाती थी, जिसके आगे-आगे हब्शी खोजे मुसाफिरों को हटाने के लिए छड़ियां घुमाते, 'हटो, बचो, रास्ता दो' का शोर मचाते रहते थे। कहीं बाजीगरों के खेल होते थे। बाजीगर जमींन पर एक जाजिम बिछाये, मौन दर्शकों के समान अद्भुत छलांगें मारता और भांति-भांति के करतब दिखाता था। कभी रस्सी पर चढ़कर ताली बाजाता, कभी बांस गाड़कर उस पर चढ़ जाता और शिखर पर सिर नीचे पैर ऊपर करके खड़ा हो जाता। कहीं मदारियों के खेल थे, कहीं बन्दरों के नाच, कहीं भालुओं की भद्दी नकलें। सपेरे पिटारियों में से सांप निकालकर दिखाते, हथेली पर बिच्छू दिखाते और सांप का विष उतारने वाली जड़ी बेचते थे। कितना शोर था, कितना धूल, कितनी

चकम-दमक। कहीं ऊंटवान ऊंटों को पीट रहा है। और जोर-जोर से गालियां दे रहा है, कहीं फेहरी वाले गली में एक झोली लटकाये चिल्ला-चिल्लाकर कोढ़ की बातीजें और भूत-प्रेत आदि व्याधियों के मंत्र बेचते फिरते हैं, कहीं साधुगण स्वर मिलाकर बाइबिल के भजन गा रहे हैं, कहीं भेड़ें मिमिया रही हैं कहीं गधे रेंग रहे हैं, मल्लाह यात्रियों को पुकारते हैं 'देर मत करो !' कहीं भिन्न-भिन्न प्रान्तों की स्त्रियां अपने खोये हुए बालकों को पुकार रही हैं, कोई रोता है और कहीं खुशी में लोग आतिशबाजी छोड़ते हैं। इन समस्त ध्वनियों के मिलने से ऐसा शोर होता था कि कान के परदे फटे जाते थे। और इन सबसे प्रबल ध्वनि उन हब्शी लड़कों की थी जो गले फाड़कर खजूर बेचते फिरते थे। और इन समस्त जनसमूह को खुले हुए मैदान में भी सांस लेने को हवा न मयस्सर होती थी। स्त्रियों के कपड़ों की महक, हब्शियों के वस्त्रों की दुर्गन्ध, खाना पकाने के धुएं, और कपूर, लोहबान आदि की सुगन्ध से, जो भक्तजन महात्मा पापनाशी के सम्मुख जलाते थे, समस्त वायुमंडल दूषित हो गया था, लोगों के दम घुटने लगते थे।

जब रात आयी तो लोगों ने अलाव जलाये, मशालें और लालटेनें जलायी गयीं, किन्तु लाल प्रकाश की छाया और काली सूरतों के सिवा और कुछ न दिखाई देता था। मेले के एक तरफ एक वृद्ध पुरुष तेली धुआंती कुप्पी जलाये, पुराने जमाने की एक कहानी कह रहा था। श्रोता लोग घेरा बनाये हुए थे। बुड्ढे का चेहरा धुंधले प्रकाश में चमक रहा था। वह भाव बना-बनाकर कहानी कहता था, और उसकी परछाई उसके प्रत्येक भाव को बढ़ा-बढ़ाकर दिखाती थी। श्रोतागण परछाईं के विकृत अभिनय देख-देखकर खुश होते थे। यह कहानी बिट्रीऊ की प्रेमकथा थी। बिट्रीऊ ने अपने हृदय पर जादू कर दिया था और छाती से निकालकर एक बबूल के वृक्ष में रखकर स्वयं वृक्ष का रूप धारण कर लिया था। कहानी पुरानी थी। श्रोताओं ने सैकड़ों ही बार इसे सुना होगा, किन्तु वृद्ध की वर्णशैली बड़ी चित्ताकर्षक थी। इसने कहानी को मजेदार बना दिया था। शराबखानों में मद के प्यासे कुरसियों पर लेटे हुए भांति-भांति के सुधारस पान कर रहे थे और बोतलें खाली करते चले जाते थे। नर्तकियां आंखों में सुरमा लगाये और पेट खोले उनके सामने नाचती और कोई धार्मिक या शृंगार रस का अभिनय करती थीं।

एकांत कमरों में युवकगण चौपड़ या कोई खेल खेलते थे, और वृद्धजन वेश्याओं से दिल बहला रहे थे। इन समस्त दृश्यों के ऊपर वह अकेला, स्थिर, अटल स्तम्भ खड़ा था। उसका गोरूपी कलश प्रकाश की छाया में मुंह फैलाये दिखाई देता था, और उसके ऊपर पृथ्वी-आकाश के मध्य पापनाशी अकेला बैठा हुआ यह दृश्य देख रहा था। इतने में चांद ने नल के अंचल में से सिर निकाला, पहाड़ियां नीले प्रकाश में चमक उठीं और पापनाशी को ऐसा भासित हुआ मानो थायस की सजीव मूर्ति नाचते हुए जल के प्रकाश में चमकती, नीले गगन में निरालंब खड़ी है।

दिन गुजरते जाते थे और पापनाशी ज्यों का त्यों स्तम्भ पर आसन जमाये हुए था। वर्षाकाल आया तो आकाश का जल लकड़ी की छत से टपक-टपक उसे भिगोने लगा। इससे सरदी खाकर उसके हाथ-पांव अकड़ उठे, हिलना-डोलना मुश्किल हो गया। उधर दिन को धूप की जलन और रात को ओस की शीत खाते-खाते उसके शरीर की खाल फटने लगी

और समस्त देह में घाव, छाले और गिल्टियां पड़ गयीं। लेकिन थायस की इच्छा अब भी उसके अन्तःकरण में व्याप्त थी और वह अन्तर्वेदना से पीड़ित होकर चिल्ला उठता था—'भगवान् ! मेरी ओर भी सांसत कीजिए, और भी यातनाएं अभी पीछे पड़ी हुई हैं, विनाश वासनाएं अभी तक मन का मंथन कर रही हैं। भगवान्, मुझ पर प्राणिमात्र की विषय-वासनाओं का भार रख दीजिए, उन सबों को प्राशयिचत करूंगा। यद्यपि यह असत्य है कि यूनानी कुतिये ने समस्त संसार का पापभार अपने ऊपर लिया था, जैसा मैंने किसी समय एक मिथ्यावादी मनुष्य को कहते सुना था, लेकिन उस कथा में कुछ आशय अवश्य छिपा हुआ है जिसकी सचाई अब मेरी समझ में आ रही है, क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जनता के पाप धर्मात्माओं की आत्माओं में प्रविष्ट होते हैं और वह इस भांति विलीन हो जाते हैं, मानो कुएं में गिरे पड़े हों। यही कारण है कि पुण्यात्माओं के मन में जितना मल भरा रहता है, उतना पापियों के मन में कदापि नहीं रहता। इसलिए भगवान्, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं कि तूने मुझे संसार का मलकुंड बना दिया है।

एक दिन उस पवित्र नगर में यह खबर उड़ी, और पापनाशी के कानों में भी पहुंची कि एक उच्च राज्यपदाधिकारी, जो इस्कन्द्रिया की जलसेना का अध्यक्ष था, शीघ्र ही उस शहर की सैर करने आ रहा है—नहीं बल्कि रवाना हो चुका है।

यह समाचार सत्य था। वयोवृद्ध कोटा, जो उस साल नील सागर की नदियों और जलमार्गों का निरीक्षण कर रहा था, कई बार इस महात्मा और इस नगर को देखने की इच्छा प्रकट कर चुका था। इस नगर का नाम पापनाशी ही के नाम पर 'पापमोचन' रखा गया था। एक दिन प्रभातकाल इस पवित्र भूमि के निवासियों ने देखा कि नील नदी श्वेत पालों से आच्छन्न हो गयी है। कोटा एक सुनहरी नौका पर, जिस पर बैंगनी रंग के पाल लगे हुए थे, अपनी समस्त नाविक-शक्ति के आगे-आगे निशाना उड़ाता चला आता है। घाट पर पहुंचकर वह उतर पड़ा और अपने मन्त्री तथा अपने वैद्य अरिस्टीयस के साथ नगर की तरफ चला। मन्त्री के हाथ में नदी के मानचित्र आदि थे। और वैद्य से कोटा स्वयं बातें कर रहा था। वृद्धावस्था में उसे वैद्यराज की बातों में आनन्द मिलता था।

कोटा के पीछ सहस्रों मनुष्यों का जुलूस चला और जलतट पर सैनिकों की वर्दियां और राज्यकर्मचारियों के चुगे-ही-चुगे दिखाई देने लगे। इन चुगों में चौड़ी बैंगनी रंग की गांठ लगी थी, जो रोम की व्यवस्थापक-सभा के सदस्यों का सम्मान-चिह्न थी। कोटा उस पवित्र स्तम्भ के समीप रुक गया और महात्मा पापनाशी को ध्यान से देखने लगा। गरमी के कारण अपने चुगे के दामन से मुंह पर का पसीना वह पोंछता था। वह स्वभाव से विचित्र अनुभवों का प्रेमी था, और अपनी जलयात्राओं में उसने कितनी ही अद्भुत बातें देखी थीं। वह उन्हें स्मरण रखना चाहता था। उसकी इच्छा थी कि अपना वर्तमान इतिहास-ग्रन्थ समाप्त करने के बाद अपनी समस्त यात्राओं का वृत्तान्त लिखे और जो-जो अनोखी बातें देखी हैं उसका उल्लेख करे। यह दृश्य देखकर उसे बहुत दिलचस्पी हुई।

उसने खांसकर कहा—'विचित्र बात है ! और यह पुरुष मेरा मेहमान था। मैं अपने यात्रा-वृत्तान्त में वह अवश्य लिखूंगा। हां, गतवर्ष इस पुरुष ने मेरे यहां दावत खायी थी, और उसके एक ही दिन बाद एक वेश्या को लेकर भाग गया था।'

फिर अपने मन्त्री से बोला–'पुत्र, मेरे पत्रों पर इसका उल्लेख कर दो। इसे स्तम्भ की लम्बाई-चौड़ाई भी दर्ज कर देना। देखना, शिखर पर जो गाय की मूर्ति बनी हुई है, उसे न भूलना।'

तब फिर अपना मुंह पोंछकर बोला–'मुझसे विश्वस्त प्राणियों ने कहा है कि इस योगी ने साल भर से एक क्षण के लिए भी नीचे कदम नहीं रखा। क्यों अरिस्टीयस यह सम्भव है ! कोई पुरुष पूरे साल भर तक आकाश में लटका रह सकता है ?'

अरिस्टीयस ने उत्तर दिया–किसी अस्वस्थ या उन्मत्त प्राणी के लिए जो बात सम्भव है। आपको शायद यह बात न मालूम होगी कि कतिपय शरीरिक और मानसिक विकार न हो, असम्भव है। आपको शायद यह बात न मालूम होगी कि कतिपय शारीरिक और मानसिक विकारों से इतने अद्भुत शक्ति आ जाती है जो तन्दुरुस्त आदमियों में कभी नहीं आ सकती। क्योंकि यथार्थ में अच्छा स्वास्थ्य या बुरा स्वास्थ्य स्वयं कोई वस्तु नहीं है। वह शरीर के अंग-प्रत्यंग की भिन्न-भिन्न दशाओं का नाममात्र है। रोगों के निदान से मैंने वह बात सिद्ध की है कि वह भी जीवन की आवश्यक अवस्थाएं हैं। मैं बड़े प्रेम से उनकी मीमांसा करता हूं, इसलिए कि उन पर विजय प्राप्त कर सकूं। उनमें से कई बीमारियां प्रशंसनीय है और उनमें बहिर्विकार के रूप में अद्भुत आरोग्यवर्द्धक शक्ति छिपी रहती है। उदाहरणः कभी-कभी शारीरिक विकारों से बुद्धिशक्तियां प्रखर हो जाती हैं, बड़े वेग से उनका विकास होने लगता है। आप सिरोन को तो जानते हैं। जब वल बालक था तो वह तुतलाकर बोलता था और मन्दबुद्धि था। लेकिन जब एक सीढ़ी पर से गिर जाने के कारण उसकी कपालक्रिया हो गयी तो वह उच्चश्रेणी का वकील निकला, जैसाकि आप स्वयं देख रहे हैं। इस योगी का कोई गुप्त अंग अवश्य ही विकृत हो गया है। इनके अतिरिक्त इस अवस्था में जीवन व्यतीत करना इतनी असाधारण बात नहीं है, जितनी आप समझ रहे हैं। आपको भारतवर्ष के योगियों की याद है ? वहां के योगीगण इसी भांति बहुत दिनों तक निश्चल रह सकते हैं–एक-दो वर्ष नहीं, बल्कि बीस, तीस, चालीस वर्षो तक। कभी-कभी इससे भी अधिक। यहां तक कि मैंने तो सुना है कि वह निर्जल; निराहार सौ-सौ वर्षों तक समाधिस्थ रहते हैं।'

कोटा ने कहा–ईश्वर की सौगन्ध से कहता हूं, मुझे यह दशा अत्यन्त कुतूहलजनक मालूम हो रही है। यह निराले प्रकार का पागलपन है। मैं इसकी प्रशंसा नहीं कर सकता, क्योंकि मनुष्य का जन्म चलने और काम करने के निमित्त हुआ है और उद्योगहीनता साम्राज्य के प्रति अक्षम्य अत्याचार है। मुझे ऐसे किसी धर्म का ज्ञान नहीं है जो ऐसी आपत्तिजनक क्रियाओं का आदेश करता हो। सम्भव है, एशियाई सम्प्रदायों में इसकी व्यवस्था हो। जब मैं शाम (सीरिया) का सूबेदार था तो मैंने 'हेरा' नगर के द्वार पर एक ऊंचा चबूतरा बना हुआ देखा। एक आदमी साल में दो बार उस पर चढ़ता था और वहां सात दिनों तक चुपचाप बैठा रहता था। लोगों को विश्वास था कि यह प्राणी देवताओं से बातें करता था और शाम देश को धनधान्यपूर्ण रखने के लिए उनसे विनय करता था। मुझे यह प्रथा निरर्थक-सी जान पड़ी, किन्तु मैंने उसे उठाने की चेष्टा नहीं की। क्योंकि मेरा विचार है कि राज्यकर्मचारियों को प्रजा के रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप न करना चाहिए, बल्कि

इनको मर्यादित रखना उनका कर्तव्य है। शासकों की नीति कदापि न होनी चाहिए कि प्रजा को किसी विशेष मत की ओर खींचें, बल्कि उथको 'उसी मत की रक्षा करनी चाहिए जो प्रचलित हो, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, क्योंकि देश, काल और जाति की परिस्थिति के अनुसार ही उसका जन्म और विकास हुआ है। अगर शासन किसी मत को दमन करने की चेष्टा करता है, तो वह अपने को विचारों में क्रान्तिकारी और व्यवहारों में अत्याचारी सिद्ध करता है, और प्रजा उससे घृणा करे तो सर्वथा क्षम्य है। फिर आप जनता के मिथ्या विचारों का सुधार क्योंकर कर सकते हैं अगर तुम उनको समझने और उन्हें निरक्षेप भाव से देखने में असमर्थ हैं ? अरिस्टोयस, मेरा विचार है कि इस पक्षियों के बसाये हुए मेघनगर को आकाश में लटका रहने दूं। उस पर नैसर्गिक शक्तियों का कोप ही क्या कम है कि मैं भी उसको उजाड़ने में अग्रसर बनूं। उसके उजाड़ने से मुझे अपयश के सिवा और कुछ हाथ न लगेगा। हां, इस आकाश निवासी योगी के विचारों और विश्वासों को लेखबद्ध करना चाहिए।

यह कहकर उसने फिर खांसा और अपने मन्त्री के कन्धे पर हाथ रखकर बोला—'पुत्र, नोट कर लो कि ईसाई सम्प्रदाय के कुछ अनुयायियों के मतानुसार स्तम्भों के शिखर पर रहना और वेश्याओं को ले भागना सराहनीय कार्य है। इतना और बढ़ा दो कि यह प्रथाएं सृष्टि करने वाले देवताओं की उपासना के प्रमाण हैं। ईसाई धर्म ईश्वरवादी होकर देवताओं के प्रभाव को अभी तक नहीं मिटा सका। लेकिन इस विषय में हमें स्वयं इस योगी ही से जिज्ञासा करनी चाहिए।

तब फिर उठाकर और धूप से आंखों को बचाने के लिए हाथों की आड़ करके उसने उच्चस्वर में कहा—इधर देखो पापनाशी ! अगर तुम अभी यह नहीं भूले हो कि तुम एक बार मेरे मेहमान रह चुके हो तो मेरी बातों का उत्तर दो। तुम वहां आकाश पर बैठे क्या कर रहे हो ? तुम्हारे वहां जाने का और रहने का क्या उद्देश्य है ? क्या तुम्हारा विचार है कि इस स्तम्भ पर चढ़कर तुम देश का कुछ कल्याण कर सकते हो ?

पापनाशी ने कोटा को केवल प्रतिमावादी तुच्छ दृष्टि से देखा और उसे कुछ उत्तर देने योग्य न समझा। लेकिन उसका शिष्य फ्लेवियन समीप आकर बोला—'मान्यवर, वह ऋषि समस्त भूमण्डल के पापों को अपने ऊपर लेता और रोगियों को आरोग्य प्रदान करता है।'

कोटा—'कसम खुदा की, यह तो बड़ी दिल्लगी की बात है तुम कहते हो अरिस्टीयस, यह आकाशवासी महात्मा चिकित्सा करता है। यह तो तुम्हारा प्रतिवादी निकला। तुम ऐसे आकाशरोही वैद्य से क्योंकर पेश पा सकोगे ?'

अरिस्टीयस ने सिर हिलाकर कहा—यह बहुत सम्भव है कि वह बाजे-बाजे रोगों की चिकित्सा करने में मुझसे कुशल हो। अदाहरणतः मिरगी ही को ले लीजिए। गंवारी बोलचाल में लोग इसे 'देवरोग' कहते हैं, यद्यपि सभी रोग दैवी हैं, क्योंकि उनके सृजन करने वाले तो देवगण ही हैं। लेकिन इस विशेष रोग का कारण अंशतः कल्पनाशक्ति में है और आप यह रोगियों की कल्पना पर जितना प्रभाव डाल सकता है, उतना मैं अपने चिकित्सालय में खरल और दस्ते से औषधियों घोंटकर कदापि नहीं डाल सकता। महाशय, कितनी ही गुप्त शक्तियां हैं जो शास्त्र और बुद्धि से कहीं बढ़कर प्रभावोत्पादक हैं।'

कोटा—'वह कौन शक्तियां हैं ?'

अरिस्टीयस—'मूर्खता और अज्ञान।'

कोटा—'मैंने अपनी बड़ी-बड़ी यात्राओं में भी इससे विचित्र दृश्य नहीं देखा, और मुझे आशा है कि कभी कोई सुयोग्य इतिहास-लेखक 'मोचननगर' की उत्पत्ति का सविस्तार वर्णर करूंगा। लेकिन हम जैसी बहुधन्धी मनुष्यों को किसी वस्तु के देखने में चाहे वह कितनाही कुतूहलजनक क्यों न हो, अपना बहुत समय न गंवाना चाहिए। चलिए, अब नहरों का निरीक्षण करें। अच्छा पापनाशी, नमस्कार। फिर कभी आऊंगा। लेकिन अगर तुम फिर कभी पृथ्वी पर उतरो और इस्कन्द्रिया आने का संयोग हो तो मुझे न भूलना। मेरे द्वार तुम्हारे स्वागत के लिए नित्य खुले हैं। मेरे यहां आकर अवश्य भोजन करना।'

हजारों मनुष्यों ने कोटा के यह शब्द सुने। एक ने दूसरे से कहा—ईसाइयों में और भी नमक मिर्च लगाया। जनता किसी की प्रशंसा बड़े अधिकारियों के मुंह से सुनती है तो उसकी दृष्टि में उस प्रशंसित मनुष्य का आदर-सम्मान सतगुण अधिक हो जाता है। पापनाशी की ओर भी ख्याति होने लगी। सरल-हृदय मतानुरागियों ने इन शब्दों को और भी परिमार्जित और अतिशयोक्तिपूर्ण रूप दे दिया। किंवदन्तियां होने लगीं कि महात्मा पापनाशी ने स्तम्भ के शिखर पर बैठे-बैठे, जलसेना के अध्यक्ष को ईसाई धर्म का अनुगामी बना लिया। उसके उपदेशों में यह चमत्कार है कि सुनते ही बड़े-बड़े नास्तिक भी मस्तक झुका देते हैं। कोटा के अन्तिम शब्दों में भक्तों को गुप्त आशय छिपा हुआ प्रतीत हुआ। जिस स्वागत की उस उच्च अधिकारी ने सूचना दी थी वह साधारण स्वागत नहीं था। वह वास्तव में एक आध्यात्मिक भोज, एक स्वर्गीय सम्मेलन, एक पारलौकिक संयोग का निमंत्रण था। उस सम्भाषण की कथा का बड़ा अद्भुत और अलंकृत विस्तार किया गया। और जिन-जिन महानुभावों ने यह रचना की उन्होंने स्वयं पहले उस पर विश्वास किया। कहा जाता था कि जब कोटा ने विशद तर्क-वितर्क के पश्चात् सत्य को अंगीकार किया और प्रभु मसीह की शरण में आया तो एक स्वर्गदूत आकाश से उसके मुंह का पसीना पोंछने आया। यह भी कहा जाता था कि कोटा के साथ उसके वैद्य और मन्त्री ने भी ईसाई धर्म स्वीकार किया। मुख्य ईसाई संस्थाओं के अधिष्ठाताओं ने यह अलौकिक समाचार सुना तो ऐतिहासिक घटनाओं में उसका उल्लेख किया। इतने ख्यातिलाभ के बाद यह कहना किंचित मात्र भी अतिशयोक्ति न थी कि सारा संसार पापनाशी के दर्शनों के लिए उत्कंठित हो गया। प्राच्य और पाश्चात्य दोनों ही देशों के ईसाइयों की विस्मित आंखें उनकी ओर उठने लगीं। इटली के प्रधान नगरों ने उसके नाम अभिनन्दन-पत्र भेजे और रोम के कैंसर कॉन्स्टेनटाइन ने, जो ईसाई धर्म का पक्षपाती था उनके पास एक पत्र भेजा। ईसाई दूत इस पत्र को बड़े आदर-सम्मान के साथ पापनाशी के पास लाये। लेकिन एक रात को जब वह नवजात नगर हिम की चादर ओढ़े सो रहा था, पापनाशी के कानों में यह शब्द सुनाई दिये—पापनाशी, तू अपने कर्मों से प्रसिद्ध और अपने शब्दों से शक्तिशाली हो गया है। ईश्वर ने अपनी कीर्ति को उज्ज्वल करने के लिए तुझे इस सर्वोच्च पद पर पहुंचाया है। उसने तुझे अलौकिक लीलाएं दिखाने, रोगियों को आरोग्य प्रदान करने, नास्तिकों को सन्मार्ग पर लाने, पापियों का उद्धार करने, एरियन के मतानुयायियों के मुख में कालिमा

लगाने और ईसाई जगत् में शान्ति और सुख-साम्राज्य स्थापित करने के लिए नियुक्त किया है।'

पापनाशी ने उत्तर दिया—'ईश्वर की जैसी आज्ञा।'

फिर आवाज आयी थी—'पापनाशी, उठ जा, और विधर्मी कॉन्सटेन्स को उसके राज्यप्रासाद में सन्मार्ग पर ला, जो अपने पूज्य बन्धु कॉन्सटेनटाइन का अनुकरण न करके एरियस और मार्क्स के मिथ्यावाद में फंसा हुआ है। जा, विलम्ब न कर। अष्टधातु के फाटक तेरे पहुंचते ही आप-ही-आप खुल जायेंगे, और तेरी पादुकाओं की ध्वनि; कैसरों के सिंहासन के सम्मुख सजे भवन की स्वर्णभूमि पर प्रतिध्वनित होगी और तेरी प्रतिभामय वाणी कॉन्स्टेनटाइन के पुत्र के हृदय को परास्त कर देगी। संयुक्त और अखण्ड ईसाई साम्राज्य पर राज्य करेगा और जिस प्रकार जीव देह पर शासन करता है, उसी प्रकार ईसाई धर्म साम्राज्य पर शासन करेगा। धनी, रईस, राजयाधिकारी, राज्यसभा के सभासद सभी तेरे अधीन हो जायेंगे। तू जनता को लोभ से मुक्त करेगा और असभ्य जातियों के आक्रमणों का निवारण करेगा। वृद्ध कोटा जो इस समय नौका-विभाग का प्रधान है। तुझे शासन का कर्णधार बना हुआ देखकर तेरे चरण धोयेगा। तेरे शरीरान्त होने पर तेरी मृतदेह इस्कन्द्रिया जायेगी और वहां का प्रधान मठधारी उसे एक ऋषि का स्मारक-चिह्न समझकर उसका चुम्बन करेगा ! जा !'

पापनाशी ने उत्तर दिया—'ईश्वर की जैसी आज्ञा !'

यह कहकर उसने उठकर खड़े होने की चेष्टा की, किन्तु उस आवाज ने उसकी इच्छा को ताड़कर कहा—'सबसे महत्व की बात यह है कि तू सीढ़ी द्वारा मत उतर ! यह तो साधारण मनुष्यों की-सी बात होगी। ईश्वर ने तुझे अद्भुत शक्ति प्रदान की है। तुझ जैसे प्रतिभाशाली महात्मा को वायु में उड़ना चाहिए। नीचे कूद पड़, स्वर्ग के दूत तुझे संभालने के लिए खड़े हैं, तुरन्त कूद पड़।'

पापनाशी न उत्तर दिया—'ईश्वर की इस संसार में उसी भांति विषय हो जैसे स्वर्ग में है!'

अपनी विशाल बांहें फैलाकर, मानो कि बृहदाकर पक्षी ने अपने छिदरे पंख फैलाये हों, वह नीचे कूदने वाला ही था कि सहसा एक डरावनी, उपहास-सूचक हास्य-ध्वनि उसके कानों में आयी। भीत होकर उसने पूछा—यह कौन हंस रहा है।'

उस आवाज ने उत्तर दिया—'चौंकते क्यों हो ? अभी तो तुम्हारी मित्रता का आरम्भ हुआ है। एक दिन ऐसा आयेगा जब मुझसे तुम्हारा परिचय घनिष्ठ हो जायेगा। मित्रवर, मैंने ही तुझे इस स्तम्भ पर चढ़ने की प्रेरणा की थी और जिस निरापदभाव से तुमने मेरी आज्ञा शिरोधार्य की उससे मैं बहुत प्रसन्न हूं। पापनाशी, मैं तुमसे बहुत खुश हूं।'

पापनाशी ने भयभीत होकर कहा—'प्रभु, प्रभु ! मैं तुझे अब पहचान गया, खूब पहचान गया। तू ही वह प्राणी है जो प्रभु मसीह को मन्दिर के कलश पर ले गया था और भूमंडल के समस्त साम्राज्यों का दिग्दर्शन कराया था।'

'तू शैतान है ! भगवान्, तुम मुझसे क्यों पराङ्मुख हो ?'

वह थरथर कांपता हुआ भूमि पर गिर पड़ा और सोचने लगा—

मुझे पहले इसका ज्ञान क्यों न हुआ ? मैं उन नेत्रहीन, वधिर और अपंग मनुष्यों से भी अभागा हूं जो नित्य शरण आते हैं। मेरी अन्तर्दृष्टि सर्वथा ज्योतिहीन हो गयी है, मुझे देवी घटनाओं का अब लेशमात्र भी ज्ञान नहीं होता और अब मैं उन भ्रष्टबुद्धि पागलों की भांति हूं जो मिट्टी फांकते हैं और मुर्दों की लाशें घसीटते हैं। मैं अब नरक के अमंगल और स्वर्ग के मधुर शब्दों में भेद करने के योग्य नहीं रहा। मुझसे अब उस नवजात शिशु का नैसर्गिक ज्ञान भी नहीं रहा जो माता के स्तनों के मुंह से निकल जाने पर रोता है, उस कुत्ते का-सा भी, जो अपने स्वामी के पद चिह्नों की गन्ध पहचानता है, उस पौधे (सूर्यमुखी) का-सा भी जो सूर्य की ओर अपना मुख फेरता रहता है। मैं प्रेतों और पिशाचों के परिहास का केन्द्र हूं। यह सब मुझ पर तालियां बजा रहे हैं, जो अब ज्ञात हुआ, कि शैतान ही मुझे यहां खींचकर लाया। जब उसने मुझे इस स्तम्भ पर चढ़ाया तो वासना और अहंकार दोनों ही मेरे साथ चढ़ आये ! मैं केवल अपनी इच्छाओं के विस्तार ही से शंकायमान नहीं होता। एटोनी भी अपनी पर्वतगुफा में ऐसे ही प्रलोभनों से पीड़ित है। मैं चाहता हूं कि इन समस्त पिशाचों की तलवार मेरी देह को छेद स्वर्गदूतों के सम्मुख मेरी धज्जियां उड़ा दी जायें। अब मैं अपनी यातनाओं से प्रेम करना सीख गया हूं। लेकिन ईश्वर मुझसे नहीं बोलता, उसका एक शब्द भी मेरे कानों में नहीं आता। उसका यह निर्दय मौन, यह कठोर निस्तब्धता आश्चर्यजनक है। उसने मुझे त्याग दिया है—मुझे, जिसका उसके सिवा और कोई अवलम्ब न था। वह मुझे इस आफत में अकेला निस्सहाय छोड़े हुए है। वह मुझसे दूर भागता है, घृणा करता है। लेकिन मैं उसका पीछा नहीं छोड़ सकता। यहां मेरे पैर जल रहे हैं, मैं दौड़कर उसके पास पहुंचूंगा।

यह कहते ही उसने वह सीढ़ी थाम ली जो स्तम्भ के सहारे खड़ी थी, उस पर पैर रखे और एक डण्डा नीचे उतरा कि उसका मुख गोरूपी कलश के सम्मुख आ गया। उसे देखकर गोमूर्ति विचित्र रूप से मुस्कराई। उसे अब इसमें कोई सन्देह न था कि जिस स्थान को उसने शांतिलाभ और सत्कीर्ति के लिए पसंद किया था, वह उसके सर्वनाश और पतन का सिद्ध हुआ। वह बड़े वेग से उतरकर जमीन पर आ पहुंचा। उसके पैरों को अब खड़े होने का भी अभ्यास न था, वे डगमगाते थे। लेकिन अपने ऊपर इस पैशाचिक स्तंभ की परछाईं पड़ते देखकर वह जबरदस्ती दौड़ा, मानो कोइ कैदी भाग जाता हो। संसार निद्रा में मग्न था। वह सबसे छिपा हुआ उस चौक से होकर निकला जिसके चारों ओर शराब की दुकानें, सराएं, धर्मशालाएं बनी हुई थीं और एक गली में घुस गया, जो लाइबिया की पहाड़ियों की ओर जाती थी। विचित्र बात यह थी कि एक कुत्ता भी भूंकता हुआ उसका पीछा कर रहा था और जब एक मरुभूमि के किनारे तक उसे दौड़ा न ले गया, उसका पीछा न छोड़ा। पापनाशी ऐसे देहातों में पहुंचा जहां सड़कें या पगडंडियां न थीं, केवल वन-जन्तुओं के पैरों के निशान थे। इस निर्जन प्रदेश में वह एक दिन और रात लगातार अकेला भागता चला गया।

अन्त में जब वह भूख, प्यास और थकान से इतना बेदम हो गया कि पांव लड़खड़ाने लगे, ऐसा जान पड़ने लगा कि अब जीता न बचूंगा तो वह एक नगर में पहुंचा जो दायें-बायें इतनी दूर तक फैला हुआ था कि उसकी सीमाएं नीले क्षितिज में विलीन हो जाती थीं। चारों

ओर निस्तब्धता छायी हुई थी, किसी प्राणी का नाम न था। मकानों की कमी न थी, पर वह दूर-दूर पर बने हुए थे, और उन मिस्री मीनारों की भांति दीखते थे जो बीच में काट लिये गये हों। सबों की बनावट एक-सी थी, मानो एक ही इमारत की बहुत-सी नकलें की गयी हों। वास्तव में यह सब कब्रें थीं। उनके द्वार खुले ओर टूटे हुए थे, और उनके अन्दर भेड़ियों और लकड़बग्घों की चमकती हुई आंखें नजर आती थीं, जिन्होंने वहां बच्चे दिये थे। मुर्दे कब्रों के सामने बाहर पड़े हुए थे जिन्हें डाकुओं ने नोच-खसोट लिया था और जंगली जानवरों ने जगह-जगह चबा डाला था। इस मृतपुरी में बहुत देश तक चलने के बाद पापनाशी एक कब्र के सामने थककर गिर पड़ा, जो छुहारे के वृक्षों से ढंके हुए एक सोते के समीप थी। यह कब्र खूब सजी हुई थी, उसके ऊपर बेलबूटे बने हुए थे, किन्तु कोई द्वार न था। पापनाशी ने एक छिद्र में से झांका तो अन्दर एक सुन्दर, रंगा हआ तहखाना दिखाई पड़ा जिसमें सांपों के छोटे-छोटे बच्चे इधर-उधर रेंग रहे थे। उसे अब भी यही शंका हो रही थी कि ईश्वर ने मेरा हाथ छोड़ दिया है और मेरा कोई अवलम्ब नहीं है।

उसने एक दिन दीर्घ निःश्वास लेकर कहा—'इसी स्थान में मेरा निवास होगा, यही कब्र अब मेरे प्रायश्चित और आत्मदमन का आश्रयस्था न होगी।'

उसके पैर तो उठ न सकते थे, लेटे-लेटे खिसकता हुआ वह अन्दर चला गया, सांपों को अपने पैरों से भगा दिया और निरन्तर अठारह घण्टों तक पक्की भूमि पर सिर रखे हुए औंधे मुंह पड़ा रहा। इसके पश्चात् वह उस जलस्रोत पर गया और चिल्लू से पेट भर पानी पिया। तब उसने थोड़े छुहारे तोड़े और कई कमल की बेलें निकाकर कमल गट्टे जमा किये। यही उसका भोजन था। क्षुआ और तृषा शान्त होने पर उसे ऐसा अनुमान हुआ कि यहां वह सभी विघ्न-बाधाओं से मुक्त होकर कालक्षेप कर सकता है। अतएव उसने इसे अपने जीवन का नियम बना लिया। प्रातःकाल से संध्या तक वह एक क्षण के लिए भी सिर ऊपर न उठाता था।

एक दिन जब वह इस भांति औंधे मुंह पड़ा हुआ था तो उसके कानों में किसी के बोलने की आवाज आयी—पाषाणाचित्रों को देख, तुझे ज्ञान प्राप्त होगा।

यह सुनते ही उसने सिर उठाया और तहखाने की दीवारों पर दृष्टिपात किया तो उसे चारों ओर सामाजिक दृश्य अंकित दिखाई दिये। जीवन की साधारण घटनाएं जीती-जागती मूर्तियों द्वारा प्रकट की गयी थीं। यह बड़े प्राचीन समय की चित्रकारी थी और इतनी उत्तम कि जान पड़ता मूर्तियां अब बोलना ही चाहती हैं। चित्रकार ने उनमें जान डाल दी थी। कहीं कोई नानबाई रोटियां बना रहा था और गोलों को कुप्पी की तरह फुलाकर आग फूंकता था, कोई बतखों के पर नोंच रहा था और कोई पतीलियों में मांस पका रहा था। जरा और हटकर एक शिकारी कन्धों पर हिरन लिये जाता था जिसकी देह में बाण चुभे दिखाई देते थे। एक स्थान पर किसान खेती का कामकाज करते थे। कोई बोता था, कोई काटता था, कोई अनाज बखारों से भर रहा था। दूसरे स्थान पर कई स्त्रियां वीणा, बांसुरी और तम्बूरों पर नाच रही थीं। एक सुन्दर युवती सितार बजा रही थी। उसके केशों में कमल का पुष्प शोभा दे रहा था। केश बड़ी सुन्दरता से गुंथे हुए थे। उसके स्वच्छ महीन कपड़ों से उसके निर्मल अंगों की आभा झलकती थी। उसके मुख और वक्षस्थल की शोभा अद्वितीय थी।

उसका मुख एक ओर को फिरा हुआ था, पर कमलनेत्र सीधे ही ताक रहे थे। सर्वांग अनुपम, अद्वितीय, मुग्धकर था। पापनाशी ने उसे देखते ही आंखें नीची कर लीं और उस आवाज को उत्तर दिया—'तू मुझे इन तस्वीरों का अवलोकन करने का आदेश क्यों देता है। इसमें तेरी क्या इच्छा है ? यह सत्य है कि इन चित्रों में प्रतिमावादी पुरुष के सांसारिक जीवन का अंकन किया गया है जो यहां मेरे पैरों के नीचे* एक कुएं की तह में, काले पत्थर के सन्दूक में बन्द, गड़ा हुआ है। उनसे एक मरे हुए प्राणी की याद आती है, और यद्यपि उनके रूप बहुत चमकीले हैं, पर यथार्थ में वह केवल छाया नहीं, छाया की छाया है, क्योंकि मानव-जीवन स्वयं छायामात्र है। मृतदेह का इतना महत्व इतना गर्व !'

उस आवाज ने उत्तर दिया—'अब वह मर गया है लेकिन एक दिन जीवित था। लेकिन तू एक दिन मर जायेगा और तेरा कोई निशान न होगा। तू ऐसा मिट जायेगा मानो कभी तेरा जन्म ही नहीं हुआ था।'

उस दिन से पापनाशी का चित्त आठों पहर चंचल रहने लगा। एक पल के लिए उसे शान्ति न मिलती। उस आवाज की अविश्रान्त ध्वनि उसके कानों में आया करती। सितार बजाने वाली युवती अपनी लम्बी पलकों के नीचे सक उसकी ओर टकटकी लगाये रहती। आखिर एक दिन वह भी बोली—'पापनाशी, इधर देख ! मैं कितनी मायाविनी और रूपवती हूं ! मुझे प्यार क्यों नहीं करता ? मेरे प्रेमालिंगन में उस प्रेमदाह को शान्त कर दे जो तुझे विकल कर रहा है। मुझसे तू व्यर्थ आशंकित है। तू मुझसे बच नहीं सकता, मेरे प्रेमपाशों से भाग नहीं सकता ! मैं नारी सौन्दर्य हूं। हतबुद्धि ! मूर्ख ! तू मुझसे कहां भाग जाने का विचार करता है ? तुझे कहां शरण मिलेगी ? तुझे सुन्दर पुष्पों की शोभा में, खजूर के वृक्षों के फूलों में, उसकी फलों से लदी हुई डालियों में, कबूतरों के पर में, मृगाओं की छलांगों में, जलप्रपातों के मधुर कलरव में, चांद की मन्द ज्योत्स्ना में, तितलियों के मनोहर रंगों में, और यदि अपनी आंखें बंद कर लेगा, तो अपने अंतस्तल में, मेरा ही स्वरूप दिखाई देगा। मेरा सौंदर्य सर्वव्यापक है। एक हजार वर्षों से अधिक हुए कि उस पुरुष ने जो यहां महीन कफन में वेष्टित, एक काले पत्थर की शय्या पर विश्राम कर रहा है, मुझे अपने हृदय से लगाया था। एक हजार वर्षों से अधिक हुआ कि उसने मेरे सुधामय अधरों का अन्तिम बार रसास्वादन किया था और उसकी दीर्घ निद्रा अभी तक उसकी सुगन्ध से महक रही है। पापनाशी, तुम मुझे भली-भांति जानते हो ? तुम मुझे भूल कैसे गये ? मुझे पहचाना क्यों नहीं ! इसी पर आत्मज्ञानी बनने का दावा करते हो ? मैं थायस के असंख्य अवतारों में से एक हूं। तुम विद्वान् हो और जीवों के तत्त्व को जानते हो। तुमने बड़ी-बड़ी यात्राएं की हैं और यात्राओं ही से मनुष्य आदमी बनता है, उसके ज्ञान और बुद्धि का विकास होता है। यात्रा के दिनों में बहुधा इतनी नवीन वस्तुएं देखने में आ जाती हैं, जितनी घर पर बैठे हुए दस वर्ष में भी न आयेंगी। तुमने सुना है कि पूर्वकाल में थायस हेलेन के नाम से यूनान में रहती थी। उसने थीब्स में फिर दूसरा अवतार लिया। मैं ही थीब्स की थायस थी। इसका कारण क्या है कि तुम इतना भी न भांप सके। पहचानो, यह किसकी कब्र है ? क्या तुम

*मिस्र के प्राचीन निवासी मुर्दों को तहखानों के अन्दर, कुओं के नीचे गाड़ते थे।

बिल्कुल भूल गये कि हमने कैसे-कैसे विहार किये थे। जब मैं जीवित थी तो मैंने इस संसार के पापों का बड़ा भार अपने सिर पर लिया था और अब केवल छायामात्र रह जाने पर भी एक चित्र के रूप में भी, मुझमें इतनी समार्थ्य है कि मैं तुम्हारे पापों को अपने ऊपर ले सकूं। हां, मुझमें इतनी सामर्थ्य है। जिसने जीवन में समस्त संसार के पापों का भार उठाया, क्या उसका चित्र अब एक प्राणी के पापों को भार न उठा सकेगा। विस्मित क्यों होते हो? आश्चर्य की कोई बात नहीं। विधाता ही ने यह व्यवस्था कर दी कि तुम जहां जाओगे, थायस तुम्हारे साथ रहेगी। अब अपनी चिरसंगिनी थायस की क्यों अवहेलना करते हो ? तुम विधाता के नियम को नहीं तोड़ सकते।'

पापनाशी ने पत्थर के फर्श पर अपना सिर पटक दिया और भयभीत होकर चीख उठा। अब यह सितारवादिनी नित्यप्रति दीवार से न जाने किस तरह अलग होकर उसके समीप आ जाती और मन्दश्वास लेते हुए उससे स्पष्ट शब्दों में वार्तालाप करती। और जब वह विरक्त प्राणी उसकी क्षुब्ध चेष्टाओं का बहिष्कार करता तो वह उससे कहती—'प्रियतम! मुझे प्यार क्यों नहीं करते ? मुझसे इतनी निठुराई क्यों करते हो ? जब तक तुम मुझसे दूर भागते रहोगे, मैं तुम्हें विकल करती रहूंगी, तुम्हें यातनाएं देती रहूंगी। तुम्हें अभी यह नहीं मालूम है कि मृत स्त्री की आत्मा कितनी धैर्यशालिनी होती है। अगर आवश्यकता हो तो मैं उस समय तक तुम्हारा इन्तजार करूंगी जब तक तुम मर न जाओगे। मरने के बाद भी मैं तुम्हारा पीछा न छोडूंगी। मैं जादूगरनी हूं, मुझे मंत्रों का बहुत अभ्यास है। मैं तुम्हारी मृतदेह में नया जीव डाल दूंगी। जो उसे चैतन्य कर देगा और जो मुझे वह वस्तु प्रदान करके अपने को धन्य मानेगा जो मैं तुमसे मांगते-मांगते हार गयी और न पा सकी ! मैं उस पुनर्जीवित शरीर के साथ मनमाना सुख-भोग करूंगी। और प्रिय पापनाशी, सोचो, तुम्हारी दशा कितनी करुणाजनक होगी जब तुम्हारी स्वर्गवासिनी आत्मा उस ऊंचे स्थान पर बैठे हुए देखेगी कि मेरी ही देह की क्या छीछालेदर हो रही है। स्वयं ईश्वर जिसने हिसाब के दिन के बाद तुम्हें अनन्तकाल तक के लिए यह देह लौटा देने का वचन दिया है चक्कर में पड़ जायेगा कि क्या करूं। वह उस मानव शरीर को स्वर्ग के पवित्र धाम में कैसे स्थान देगा जिसमें एक प्रेत का निवास है और जिससे एक जादूगरनी की माया लिपटी हुई है ? तुमने उस कठिन समस्या का विचार नहीं किया। न ईश्वर ही ने उस पर विचार करने का कष्ट उठाया। तुमसे कोई परदा नहीं। हम तुम दोनों एक ही हैं ईश्वर बहुत विचारशील नहीं जान पड़ता। कोई साधारण जादूगर उसे धोखें में डाल सकता है; और यदि उसके पास आकाश, वज्र और मेघों की जलसेना न होती तो देहाती लौंडे उसकी दाढ़ी नोचकर भाग जाते, उससे कोई भयभीत न होता, और उसकी विस्तृत सृष्टि का अन्त हो जाता। यथार्थ में उसका पुराना शत्रु सर्प उससे कहीं चतुर और दूरदर्शी है। सर्पराज के कौशल का पारावार नहीं है। यह कलाओं में प्रवीण हैं यदि मैं ऐसी सुन्दरी हूं तो इसका कारण यह है कि उसने मुझे अपने ही हाथों से रचा और यह शोभा प्रदान की। उसी ने मुझे बालों का गूंथना, अर्धकुसुमित अधरों से हंसना और आभूषणों से अंगों को सजाना सिखाया। तुम अभी तक उसका माहात्म्य नहीं-जानते। जब तुम पहली बार इस कब्र में आये तो तुमने अपने पैरों से उन सर्पों को भगा दिया जो यहां रहते थे और उनके अंडों को कुचल डाला। तुम्हें इसकी

लेशमात्र भी चिन्ता न हुई कि यह सर्पराज के आत्मीय हैं। मित्र, मुझे भय है कि इस अविचार का तुमको कड़ा दंड मिलेगा। सर्पराज तुमसे बदला लिये बिना न रहेगा। तिस पर भी तुम इतना तो जानते ही थे कि वह संगीत में निपुण और प्रेमकला में सिद्धहस्त है। तुमने यह जानकर भी उसकी अवज्ञा की। कला और सौन्दर्य दोनों ही से झगड़ा कर बैठे, दोनों को ही पांव तले कुचलने की चेष्टा की। और अब तुम दैहिक और मानसिक आतंकों से ग्रस्त हो रहे हो। तुम्हारा ईश्वर क्यों तुम्हारी सहायता नहीं करता ? उसके लिए यह असम्भव है। उसका आकार भूमंडल के आकार के समान ही है, इसलिए उसे चलने की जगह ही कहां है, और अगर असम्भव को सम्भव मान लें, तो उसकी भूमंडलव्यापी देह के किंचितमात्र हिलने पर सारी सृष्टि अपनी जगह से खिसक जायेगी, संसार का नाम ही न रहेगा। तुम्हारे सर्वज्ञाता ईश्वर ने अपनी सृष्टि में अपने को कैद कर रखा है।

पापनाशी को मालूम था कि जादू द्वारा बड़े-बड़े अनैसर्गिक कार्य सिद्ध हो जाया करते हैं। यह विचार करके उसको बड़ी घबराहट हुई–

शायद वह मृत पुरुष जो मेरे पैरों के नीचे समाधिस्थ है उन मन्त्रों को याद रखे हुए है जो 'गुप्त ग्रंथ' में गुप्त रूप से लिखे हुए हैं। वह ग्रंथ अवश्य ही किसी बादशाह की कब्र निकट होगी। उन मन्त्रों के बल से मुर्दे वही देह धारण कर लेते हैं जो उन्होंने इस लोक में धारण किया था, और फिर सूर्य के प्रकाश और रमणियों की मन्द मुस्कान का आनन्द उठाते हैं।

उसको सबसे अधिक भय इस बात का था कि कहीं यह सितार बजाने वाली सुन्दरी और वह मृत पुरुष निकल न आये और उसके सामने उसी भांति संभोग न करने लगें, जैसे वह अपने जीवन में किया करते थे। कभी-कभी उसे ऐसा मालूम होता था कि चुम्बन का शब्द सुनाई दे रहा है।

वह मानसिक ताप से जला जाता था, और अब ईश्वर की दयादृष्टि से वंचित होकर उसे विचारों से उतना ही भय लगता था, जितना भावों से। न जाने मन में कब क्या भाव जागृत हो जाय।

एकदिन संध्या समय जब वह अपने नियमानुसार औंधे मुंह पड़ा सिजदा कर रहा था; किसी अपरिचित प्राणी ने उससे कहा–

'पापनाशी, पृथ्वी पर उससे कितने ही अधिक और कितने ही विचित्र प्राणी बसते हैं जितना तुम अनुमान कर सकते हो, और यदि मैं तुम्हें यह सब दिखा सकूं जिसका मैंने अनुभव किया है तो तुम आश्चर्य से भर जाओगे। संसार में ऐसे मनुष्य भी हैं जिनके ललाट के मध्य में केवल एक ही आंख होती है और वह जीवन का सारा काम उसी एक आंख से करते हैं। ऐसे प्राणी भी देखे गये हैं जिनके एक ही टांग होती है और वह उछल-उछलकर चलते हैं। इन एक टांगों से एक पूरा प्रान्त बसा हुआ। ऐसे प्राणी भी हैं जो इच्छानुसार स्त्री या पुरुष बन जाते हैं। उनके लिंगभेद नहीं होता। इतना ही सुनकर न चकराओ; पृथ्वी पर मानव वृक्ष हैं जिनकी जड़ें जमीन में फैलती हैं, बिना सिर वाले मनुष्य हैं। जिनकी छाती में मुंह, दो आंखें और एक नाक रहती है। क्या तुम शुद्ध मन से विश्वास करते हो कि प्रभु मसीह ने इन प्राणियों की मुक्ति के निमित्त ही शरीर-त्याग किया ? अगर उसने इन दुखियों

को छोड़ दिया है तो यह किसी शरण जायेंगे, कौन इनकी मुक्ति का दायी होगा ?'

इसके कुछ समय बाद पापनाशी को एक स्वप्न हुआ। उसने निर्मल प्रकाश में एक चौड़ी सड़क, बहते हुए नाले और लहलहाते हुए उद्यान देखे। सड़क पर अरिस्टोबोलस और चेरियास अपने अरबी घोड़ों को सरपट दौड़ाये चले जाते थे और इस चौगान दौड़ से उनका चित्त इतना उल्लसित हो रहा था कि उनमें मुंह अरुणवर्ण हुए जाते थे। उनके समीप ही के एक पेशताक में खड़ा कवि कलिक्रान्त अपने कवित्त पढ़ रहा था। सफल वर्ग उसके स्वर में कांपता था और उसकी आंखों में चमकता था। उद्यान में जेनाथेमीज पके हुए सेब चुन रहा था और एक सर्प को थपकियां दे रहा था जिसके नीले पर थे। हरमोडोरस श्वेत वस्त्र पहने, सिर पर एक रत्नजटित मुकुट रखे, एक वृक्ष के नीचे ध्यान में मग्न बैठा था। इस वृक्ष में फूलों की जगह छोटे-छोटे सिर लटक रहे थे जो मिस्र देश की देवियों की भांति गिद्ध; बाज या उज्ज्वल चन्द्र-मण्डल का मुकुट पहने हुए थे। पीछे की ओर एक जलकुण्ड के समीप बैठा हुआ निसियास नक्षत्रों की अनन्त गति का अवलोकन कर रहा था।

तब एक स्त्री मुंह पर नकाब डाले और हाथ में मेंहदी की एक टहनी लिये पापनाशी के पास आयी और बोली—'पापनाशी, इधर देख ! कुछ लोग ऐसे हैं जो अनन्त सौन्दर्य के लिए लालायित रहते हैं, और अपने नश्वर जीवन को अमर समझते हैं। कुछ ऐसे प्राणी भी हैं जो जड़ और विचार शून्य हैं, जो कभी जीवन के तत्त्वों पर विचार ही नहीं करते लेकिन दोनों ही केवल जीवन के नाते प्रकृति देवी की आज्ञाओं का पालन करते हैं; वह केवल इतने ही से सन्तुष्ट और सुखी हैं कि हम जीते हैं, और संसार के अद्वितीय कलानिधि का गुणगान करते हैं क्योंकि मनुष्य ईश्वर की मूर्तिमान स्तुति है। प्राणी मात्र का विचार है कि सुख एक निष्पाप, विशुद्ध वस्तु है, और सुख-भोग मनुष्य के लिए वर्जित नहीं है। अगर इन लोगों का विचार सत्य है तो पापनाशी, तुम कहीं के न रहे। तुम्हारा जीवन नष्ट हो गया। तुमने प्रकृति के दिये हुए सर्वोत्तम पदार्थ को तुच्छ समझा। तुम जानते हो, तुम्हें इसका क्या दण्ड मिलेगा?'

पापनाशी की नींद टूट गयी।

इसी भांति पापनाशी को निरन्तर शारीरिक तथा मानसिक प्रलोभनों का सामना करना पड़ता था। यह दुष्प्रेरणाएं उसे सर्वत्र घेरे रहती थीं। शैतान एक पल के लिए भी उसे चैन न लेने देता। उस निर्जन कब्र में किसी बड़े नगर की सड़कों से भी अधिक प्राणी बसे हुए जान पड़ते थे। भूत-पिशाच हंस-हंसकर शोर मचाया करते और अगणित प्रेत, चुड़ैल आदि और नाना प्रकार की दुरात्माएं जीवन का साधारण व्यवहार करती रहती थीं। संध्या समय जब वह जलधारा की ओर जाता तो परियां उसे चुड़ैले उसके चारों ओर एकत्र हो जातीं और उसे अपने कामोत्तेजक नृत्यों में खींच ले जाने की चेष्टा करतीं। पिशाचों को अब उससे जरा भी भय न होता था। वे उसका उपहास करते, उस पर अश्लील व्यंग करते और बहुधा उस पर मुष्टिप्रहार भी कर देते। वह इन अपमानों से अत्यन्त दुःखी होता था। एक दिन एक पिशाच, जो उसकी बांह से बड़ा नहीं था, उस रस्सी को चुरा ले गया जो वह अपनी कमर में बांधे था। अब वह बिल्कुल नंगा था। आवरण की छाया भी उसकी देह पर न थी। यह सबसे घोर अपमान था जो एक तपस्वी का हो सकता था।

पापनाशी ने सोचा—मन तू मुझे कहां लिये जाता है ?

उस दिन से उसने निश्चय किया कि अब हाथों से श्रम करेगा जिसमें विचारेंद्रियों को वह शान्ति मिले जिसकी उन्हें बड़ी आवश्यकता थी। आलस्य का सबसे बुरा फल कुप्रवृत्तियों को उकसाना है।

जलधारा के निकट, छुहारे के वृक्षों के नीचे कई केले के पौधे थे जिनकी पत्तियां बहुत बड़ी-बड़ी थीं। पापनाशी ने उनके तने काट लिये और उन्हें कब्र के पास लाया। उन्हें उसने एक पत्थर से कुचला और उनके रेशे निकाले। रस्सी बनाने वालों को उसने केले के तार निकालते देखा था। वह उस रस्सी की जगह जो एक पिशाच चुरा ले गया था कमरे में लपेटने के लिए दूसरी रस्सी बनाना चाहता था। प्रेतों ने उसकी दिनचार्य में यह परिवर्तन देखा तो क्रुद्ध हुए। किन्तु उसी क्षण से उनका शोर बन्द हो गया, और सितार वाली रमणी ने भी अपनी अलौकिक संगीतकला को बन्द कर दिया और पूर्ववत् दीवार से जा मिली और चुपचाप खड़ी हो गयी।

पापनाशी ज्यों-ज्यों केले के तनों को कुचलता था, उसका आत्मविश्वास, धैर्य और धर्मबल बढ़ता जाता था।

उसने मन में विचार किया—ईश्वर की इच्छा है तो अब भी इन्द्रियों का दमन कर सकता हूं। रही आत्मा, उसकी धर्मनिष्ठा अभी तक निश्चल और अभेद्य है। ये प्रेत, पिशाच, गण और वह कुलटा स्त्री, मेरे मन में ईश्वर के सम्बन्ध में भांति-भांति की शंकाएं उत्पन्न करते रहते हैं। मैं ऋषि जॉन के शब्दों में उनको यह उत्तर दूंगा—आदि में शब्द था और शब्द भी निराकार ईश्वर था। यह मेरा अटल विश्वास है, और यदि मेरा विश्वास मिथ्या और भ्रममूलक है तो मैं दृढ़ता से उस पर विश्वास करता हूं। वास्तव में इसे मिथ्या ही होना चाहिए। यदि ऐसा न होता तो मैं 'विश्वास' करता, केवल ईमान न लाता, बल्कि अनुभव करता, जानता। अनुभव से अंनन्त जीवन नहीं प्राप्त होता ज्ञान हमें मुक्ति नहीं दे सकता। उद्धार करने वाला केवल विश्वास है। अतः हमारे उद्धार की भित्ति मिथ्या और असत्य है।

यह सोचते-सोचते वह रुक गया। तर्क उसे न जाने किधर लिये जाता था।

वह इन बिखरे हुए रेशों को दिनभर धूप में सुखाता और रातभर ओस में भीगने देता। दिन में कई बार वह रेशों को फेरता था कि कहीं सड़ न जायें। अब उसे यह अनुभव करके परम आनन्द होता था कि बालकों के समान सरल और निष्कपट हो गया है।

रस्सी बट चुकने के बाद उसने चटाइयां और टोकरियां बनाने के लए नरकट काटकर जमा किया। वह समाधि-कुटी एक टोकरी बनाने वाले की दूकान बन गयी। और अब पापनाशी जब चाहता ईश-प्रार्थना करता, जब चाहता काम करता; लेकिन इतना संयम और यत्न करने पर भी ईश्वर की उस दयादृष्टि न हुई। एक रात को वह एक ऐसी आवाज सुनकर जाग पड़ा जिसने उसका एक-एक रोआं खड़ा कर दिया। यह उसी मरे हुए आदमी की आवाज थी जो उस कब्र के अन्दर दफन था। और कौन बोलने वाला था ?

आवाज सायं-सायं करती हुई जल्दी-जल्दी यों पुकार रही थी—हेलेन, हेलेन, आओ, मेरे साथ स्नान करो !'

एक स्त्री ने जिसका मुंह पापनाशी के कानों के समीप ही जान पड़ता था, उत्तर

दिया—प्रियतम, मैं उठ नहीं सकती। मेरे ऊपर एक आदमी सोया हुआ है।

सहसा पापनाशी को ऐसा मालूम हुआ कि वह अपना गाल किसी स्त्री के हृदय-स्थल पर रखे हुए है। वह तुरन्त पहचान गया कि वही सितार बजाने वाली युवती है। वह ज्योंही जरा-सा खिसका तो स्त्री का बोझ कुछ हलका हो गया और उसने अपनी छाती ऊपर उठायी। पापनाशी तब कामोन्मत्त होकर, उस कोमल, सुगंधमय, गर्म शरीर से चिमट गया और दोनों हाथों से उसे पकड़कर भींच लिया ! सर्वनाशी दुर्दमनीय वासना ने उसे परास्त कर दिया। गिड़गिड़ाकर वह कहने लगा—'ठहरो, ठहरो, प्रिये ! ठहरो, मेरी जान !'

लेकिन युवती एक छलांग में कब्र के द्वार पर जा पहुंची। पापनाशी को दोनों हाथ फैलाये देखकर वह हंस पड़ी और उसकी मुस्कराहट राशि की उज्ज्वल किरणों में चमक उठी।

उसने निष्ठुरता से कहा—'मैं क्यों ठहरूं ? ऐसे प्रेमी के लिए जिसकी भावनाशक्ति इतनी सजीव और प्रखर हो, छाया ही काफी है। फिर तुम अब पतित हो गये, तुम्हारे पतन में अब कोई कसर नहीं रही। मेरी मनोकामना पूरी हो गयी, अब मेरा तुमसे क्या नाता ?'

पापनाशी ने सारी रात रो-रोकर काटी और उषाकाल हुआ तो उसने प्रभु मसीह की वंदना की जिसमें भक्तिपूर्ण व्यंग भरा हुआ था—ईसू, प्रभू ईसू, तूने क्यों मुझसे आंखें फेर लीं ! तू देख रहा है कि मैं कितनी भयावह परिस्थितियों में घिरा हुआ हूं। मेरे प्यारे मुक्तिदाता आ, मेरी सहायता कर। तेरा पिता मुझसे नाराज है, मेरी अनुनय-विनय कुछ नहीं सुनता, इसलिए याद रख कि तेरे सिवाय मेरा अब कोई नहीं है। तेरे पिता से अब मुझे कोई आशा नहीं है मैं उसके रहस्य को समझ नहीं सकता और न उसे मुझ पर दया आती है। किन्तु तूने एक स्त्री के गर्भ से जन्म लिया है, तूने माता का स्नेह-भोग किया है और इसलिए तुझ पर मेरी श्रद्धा है। याद रख कि तू भी एक समय मानवदेहधारी था। मैं तेरी प्रार्थना करता हूं, इस कारण नहीं कि तू ईश्वर का ईश्वर, ज्योति की ज्योति परमपिता है, बल्कि इस कारण कि तूने इस लोक में, जहां अब मैं नाना यातनाएं भोग रहा हूं, दरिद्र और दीन प्राणियों का-सा जीवन व्यतीत किया है, इस कारण कि शैतान ने तुझे भी कुवासनाओं के भंवर में डालने की चेष्टा की है, और मानसिक वेदना ने तेरे भी मुख को पसीने से तर किया है। मेरे मसीह, मेरे बन्धु मसीह, मैं तेरी दया का, तेरी मनुष्यता का प्रार्थी हूं।

जब वह अपने हाथों को मल-मलकर यह प्रार्थना कर रहा था, तो अट्टाहास की प्रचंड ध्वनि से कब्र की दीवारें हिल गयीं और वही आवाज, जो स्तम्भ शिखर पर उसके कानों में आयी थी, अपमानसूचक शब्दों में बोली—'यह प्रार्थना तो विधर्मी मार्कस के मुख से निकलने के योग्य है! पापनाशी भी मार्कस का चेला हो गया। वाह वाह! क्या कहना ! पापनाशी विधर्मी हो गया !'

पापनाशी पर मानो वज्रघात हो गया। वह मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

जब उसने फिर आंखें खोलीं, तो उसने देखा कि तपस्वी काले कनटोप पहने उसके चारों ओर खड़े हैं, उसके मुख पर पानी के छींटे दे रहे हैं और उसकी झाड़-फूंक, यन्त्र-मन्त्र में लगे हुए हैं। कोई आदमी हाथों में खजूर की डालियां लिये बाहर खड़े हैं।

उनमें से एक ने कहा—'हम लोग इधर से होकर जा रहे थे तो हमने इस कब्र से

चिल्लाने की आवाज निकलती हुई सुनी, और जब अन्दर आये तो तुम्हें पृथ्वी पर अचेत पड़े देखा। निस्सन्देह प्रेतों ने तुम्हें पछाड़ दिया था और हमको देखकर भाग खड़े हुए।'

पापनाशी ने सिर उठाकर क्षीण स्वर में पूछा—'बन्धुवर, आप लोग कौन है ? आप लोग क्यों खजूर की डालियां लिये हुए हैं ? क्या मेरी मृतक-क्रिया करने तो नहीं आये हैं?'

उनमें से एक तपस्वी बोला—'बन्धुवर, क्या तुम्हें खबर नहीं कि हमारे पूज्यपिता एन्टोनी, जिनकी अवस्था अब एक सौ पांच वर्षों की हो गयी है, अपने अन्तिम काल की सूचना पाकर उस पर्वत से उतर आये हैं जहां वह एकांत सेवन कर रहे थे ? उन्होंने अपने अगणित शिष्यों और भक्तों को जो उनकी आध्यात्मिक सन्तानें हैं, आशीर्वाद देने के निमित्त यह कष्ट उठाया है। हम खजूर की डालियां लिये (जो शान्ति की सूचक हैं) अपने पिता की अभ्यर्थना करने जा रहे हैं। लेकिन बन्धुवर, यह क्या बात है कि तुमको ऐसी महान् घटना की खबर नहीं। क्या यह सम्भव है कि कोई देवदूत यह सूचना लेकर इस कब्र में नहीं आया ?'

पापनाशी बोला—'आह ! मेरी कुछ न पूछो। मैं अब इस कृपा के योगय नहीं हूं और इस मृत्युपुरी में प्रेतों और पिशाचों के सिवा और कोई नहीं रहता। मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करो। मेरा नाम पापनाशी है जो एक धर्माश्रम का अध्यक्ष था। प्रभु के सेवकों में मुझसे अधिक दुःखी और कोई न होगा।'

पापनाशी का नाम सुनते ही सब योगियों ने खजूर की डालियां हिलायीं और एक स्वर से उसकी प्रशंसा करने लगे। वह तपस्वी जो पहले बोला था, विस्मय से चौंककर बोला—'क्या तुम वही सन्त पापनाशी हो जिसकी उज्ज्वल कीर्ति इतनी विख्यात हो रही है कि लोग अनुमान करने लगे थे कि किसी दिन वह पूज्य एन्टोनी की बराबरी करने लगेगा? श्रद्धेय पिता, तुम्हीं ने थायस नाम की वेश्या को ईश्वर के चरणों में रत किया ? तुम्हीं को तो देवदूत उठाकर एक उच्च स्तम्भ के शिखर पर बिठा आये थे, जहां तुम नित्य प्रभु मसीह के भोज में सम्मिलित होते थे। जो लोग उस समय स्तम्भ के नीचे खड़े थे, उन्होंने अपने नेत्रों से तुम्हारा स्वर्गोत्थान देखा। देवदूतों के पास श्वेत मेघावरण की भांति तुम्हारे चारों ओर मंडल बनाये थे और तुम दाहिना हाथ फैलाये मनुष्यों को आशीर्वाद देते जाते थे। दूसरे दिन जब लोगों ने तुम्हें वहां न पाया तो उनकी शोकध्वनि उस मुकुटहीन स्तम्भ के शिखर पर जा पहुंची। चारों ओर हाहाकार मच गया। लेकिन तुम्हारे शिष्य फ्लेवियन ने तुम्हारे आत्मोत्सर्ग की कथा कही और तुम्हारे आश्रम का अध्यक्ष बनाया गया। किन्तु वहां पॉल नाम का एक मूर्ख भी था ! शायद वह भी तुम्हारे शिष्यों में था। उने जन-सम्मति के विरोध करने की चेष्टा की। उसका कहना था कि उसने स्वप्न देखा है कि पिशाच तुम्हें पकड़े लिये जाता है। जनता को यह सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने उसको पत्थर से मारना चाहा। चारों ओर से लोग दौड़ पड़े। ईश्वर ही जाने कैसे मूर्ख की जान बची। हां, वह बच अवश्य गया। मेरा नाम जोजीमस है। मैं इन तपस्वियों का अध्यक्ष हूं जो इस समय तुम्हारे चरणों पर गिरे हुए हैं। अपने शिष्यों की भांति मैं भी तुम्हारे चरणों पर सिर रखता हूं कि पुत्रों के साथ पिता को भी तुम्हारे शुभ शब्दों का फल मिल जाये। हम लोगों को अपने आशीर्वाद से शान्ति दीजिये। उसके बाद उन अलौकिक कृत्यों का भी वर्णन कीजिए जो ईश्वर आपके

द्वारा पूरा करना चाहता है। हमारा परम सौभाग्य है कि आप जैसे महान् पुरुष के दर्शन हुए।'

पापनाशी न उत्तर दिया—'बन्धुवर, तुमने मेरे विषय में जो धारणा बना रखी है वह यथार्थ से कोसों दूर है। ईश्वर की मुझ पर कृपादृष्टि होती तो दूर की बात है, मैं उसके हाथों कठोरतम यातनायें भोग रहा हूं। मेरी जो दुर्गति हुई है उसका वृत्तान्त सुनाना व्यर्थ है। मुझे स्तम्भ के शिखर पर देवदूत नहीं ले गये थे। यह लोगों की मिथ्या कल्पना है। वास्तव में मेरी आंखों के सामने एक पर्दा पड़ गया है और मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता मैं स्वप्नवत् जीवन व्यतीत कर रहा हूं। ईश्वर-विमुख होकर मानव-जीवन स्वप्न के समान है। जब मैंने इस्कंद्रिया की यात्रा की थी तो थोड़े ही समय में मुझे कितने ही वादों के सुनने का अवसर मिला और मुझे ज्ञात हुआ कि भ्रांति की सेवा गणना से परे है। वह नित्य मेरा पीछा किया करती है और मेरे चारों तरफ संगीनों की दीवार खड़ी है।'

जोजिमस ने उत्तर दिया—'पूज्य पिता, आपको स्मरण रखना चाहिए कि संतगण और मुख्यतः एकान्तसेवी सन्तगण भयंकर यातनाओं से पीड़ित होते रहते हैं। अगर यह सत्य नहीं है कि देवदूत तुम्हें ले गये तो अवश्य ही यह सम्मान तुम्हारी मूर्ति अथवा छाया का हुआ होगा, क्योंकि फ्लेवियन, तपस्वीगण और दर्शकों ने अपनी आंखों से तुम्हें विमान पर ऊपर जाते देखा।'

पापनाशी ने सन्त एन्टोनी के पास जाकर उनसे आशीर्वाद लेने का निश्चय किया। बोला—'बन्धु जोजीमस, मुझे भी खजूर की एक डाली दे दो और मैं भी तुम्हारे साथ पिता एन्टोनी का दर्शन करने चलूंगा।'

जोजीमस ने कहा—'बहुत अच्छी बात है। तपस्वियों के लिए सैनिक विधान हीं उपयुक्त है क्योंकि हम लोग ईश्वर के सिपाही हैं। हम और तुम अधिष्ठाता हैं, इसलिए आगे-आगे चलेंगे और यह लोग भजन गाते हुए हमारी पीछे-पीछे चलेंगे।'

जब सब लोग यात्रा को चले तो पापनाशी ने कहा—'ब्राह्मा एक है क्योंकि वह सत्य हे और संसार अनेक है क्योंकि वह असत्य है! हमें संसार की सभी वस्तुओं से मुंह मोड़ लेना चाहिए, उनमें भी जो देखने में सर्वदा निर्दोष जान पड़ती हैं। उनकी बहुरूपता उन्हें इतनी मनोहारिणी बना देती है जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वह दूषित हैं। इसी कारण मैं किसी कमल को भी शांत निर्मल सागर में हिलते हुए देखता हूं तो मुझे आत्मवेदना होने लगती है, और चित्त मलिन हो जाता है। जिन वस्तुओं का ज्ञान इन्द्रियों द्वारा होता है, वे सभी त्याज्य हैं। रेणुका का एक अणु भी दोषों से रहित नहीं, हमें उससे सशंक रहना चाहिए। सभी वस्तुएं हमें बहकाती हैं, हमें राग में रत कराती हैं। और स्त्री तो उन सारे प्रलोभनों का योग मात्र है जो वायुमंडल में फूलों से लहराती हुई पृथ्वी पर और स्वच्छ सागर में विचरण करते हैं। वह पुरुष धन्य है जिसकी आत्मा बन्द द्वार के समान है। वही पुरुष सुखी है जो गूंगा, बहरा, अन्धा होना जानता है, और जो इसलिए सांसारिक वस्तुओं से अज्ञात रहता है कि ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करे।'

जोजीमस ने इस कथन पर विचार करने के बाद उत्तर दिया—'पूज्य पिता, तुमने अपनी आत्मा मेरे सामने खोलकर रख दी है, इसलिए आवश्यक है कि मैं अपने पापों को

तुम्हारे सामने स्वीकार करूं। इस भांति हम अपनी धर्म-प्रथा के अनुसार परस्पर अपने-अपने अपराधों को स्वीकार कर लेंगे। यह व्रत धारण करने के पहले मेरा सांसारिक जीवन अत्यन्त दुर्वासनामय था। मदौरा नगर में, जो वेश्याओं के लिए प्रसिद्ध था, मैं नाना प्रकार के विलासभोग किया करता था। नित्यप्रति रात्रि समय जवान विषयगामियों और वीणा बजाने वाली स्त्रियों के साथ शराब पीता, और उनमें जो पसन्द आती उसे अपने साथ घर ले जाता। तुम जैसा साधु पुरुष कल्पना भी नहीं कर सकता कि मेरी प्रचण्ड कामातुरता मुझे किसी सीमा तक ले जाती थी, इस इतना ही कह देता पर्याप्त है कि मुझसे न विवाहित बचती थी न देवकन्या, और मैं चारों ओर व्यभिचार और अधर्म फैलाया करता था। मेरे हृदय में कुवासनाओं के सिवा किसी बात का ध्यान ही न आता था। मैं अपनी इन्द्रियों को मदिरा से उत्तेजित करता था और यथार्थ में मदिरा का सबसे बड़ा पियक्कड़ समझा जाता था। तिस पर मैं ईसाई धर्मावलम्बी था, और सलीब पर चढ़ाये गये मसीह पर मेरा अटल विश्वास था। अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति भोग-विलास में उड़ाने के बाद मैं अभाव की वेदनाओं से विकल होने लगा था कि मैंने रंगीले सहचरों में सबसे बलवान पुरुष को एकाएक एक भयंकर रोग में ग्रस्त होते देखा। उसका शरीर दिनोंदिन क्षीण होने लगा। उसकी टांगें अब उसे संभाल न सकतीं, उसके कांपते हुए हाथ शिथिल पड़ गये, उसकी ज्योतिहीन आंखें बन्द रहने लगीं। उसके कंठ से कराहने के सिवा और कोई ध्वनि न निकलती। उसका मन, जो उसकी देह में भी अधिक आलस्यप्रेमी था, निद्रा में मग्न रहता पशुओं की भांति व्यवहार करने के दण्डस्वरूप ईश्वर ने उसे पशु ही का अनुरूप बना दिया। अपनी सम्पत्ति के हाथ से निकल जाने के कारण मैं पहले ही से कुछ विचारशील और संयमी हो गया था। किन्तु एक परम मित्र की दुर्दशा से वह रंग और भी गहरा हो गया। इस उदाहरण ने मेरी आंखें खेल दीं। इसका मेरे मन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि मैंने संसार को त्याग दिया और इस मरुभूमि में चला आया। वहां गत बीस वर्षों से मैं ऐसी शान्ति का आनन्द उठा रहा हूं, जिसमें कोई विघ्न न पड़ा। मैं अपने तपस्वी शिष्यों के साथ यथासमय जुलाहे, राज, बढ़ई अथवा लेखक का काम किया करता हूं, लेकिन जो सच पूछो तो मुझे लिखने में कोई आनन्द नहीं आता, क्योंकि मैं कर्म को विचार से श्रेष्ठ समझता हूं। मेरे विचार हैं कि मुझ पर ईश्वर की दयादृष्टि है क्योंकि घोर से घोर पापों में आसक्त रहने पर भी मैंने कभी आशा नहीं छोड़ी। यह भाव मन से एक क्षण के लिए भी दूर हुआ कि परम पिता मुझ पर अवश्य अकृपा करेंगे। आशा-दीपक को जलाये रखने से अन्धकार मिट जाता है।

यह बातें सुनकर पापनाशी ने अपनी आंखें आकाश की ओर उठायीं और यों गिला की—'भगवान् ! तुम इस प्राणी पर दयादृष्टि रखते हो जिस पर व्यभिचार, अधर्म और विषय-भोग जैसे पापों की कालिमा पुती हुई है, और मुझ पर, जिसने सदैव तेरी आज्ञाओं का पालन किया, कभी तेरी इच्छा और उपदेश के विरुद्ध आचरण नहीं किया, तेरी इतनी अकृपा ? तेरा न्याय कितना रहस्यमय है और तेरी व्यवस्थाएं कितनी दुर्गाह्य ?'

जोजीमस ने अपने हाथ फैलाकर कहा—पूज्य पिता, देखिये, क्षितिज के दोनों ओर काली-काली शृंखलाएं चली आ रही हैं, मानो चीटियां किसी अन्य स्थान को जा रही हों। यह सब हमारे सहयात्री हैं जो पिता एन्टोनी के दर्शन को आ रहे हैं।'

जब यह लोग उन यात्रियों के पास पहुंचे तो उन्हें एक विशाल दृश्य दिखाई दिया। तपस्वियों की सेना तीन वृहद अर्धगोलाकार पंक्तियों में दूर तक फैली हुई थी। पहली श्रेणी में मरुभूमि के वृद्ध तपस्वी थे, जिनके हाथों में सलीबें थीं और जिनकी दाढ़ियां जमीन को छू रही थीं। दूसरी पंक्ति में एफ्रायम और सेरापियन के तपस्वी और नील के तटवर्ती प्रान्त के व्रतधारी विराज रहे थे। उनके पीछे के महात्मागण थे जो अपनी दूरवर्ती पहाड़ियों से आये थे ? कुछ लोग अपने संवलाये और सूखे हुए शरीर को बिना सिले हुए चीथड़ों से ढके हुए थे, दूसरे लोगों की देह पर वस्त्रों की जगह केवल नरकट की हड्डियां थीं जो बेंत की डालियों को ऐंठकर बांध ली गयी थीं। कितने ही बिल्कुल नंगे थे लेकिन ईश्वर ने उनकी नग्नता को भेड़ के घने-घने बालों में छिपा दिया था। सभी के हाथों में खजूर की डालियां थीं। उनकी शोभा ऐसी थी मानो पन्ने के इन्द्रधनुष हों अथवा उनकी उपमा स्वर्ग की दीवारों से जी सकती थी।

इतने विस्तृत जनसमूह में ऐसी सुव्यवस्था छाई हुई थी कि पापनाशी को अपने अधीनस्थ तपस्वियों को खोज निकालने में लेशमात्र भी कठिनाई न पड़ी। वह उनके समीप जाकर खड़ा हो गया, किन्तु पहले अपने मुंह को कनटोप से अच्छी तरह ढंक लिया कि उसे कोई पहचान न सके और उनकी धार्मिक आकांक्षा में बाधा न पड़े।

सहसा असंख्य कण्ठों से गगन भेदी नाद उठा—वह महात्मा, वह महात्मा आये! देखो वह मुक्तात्मा है जिसने नरक और शैतान को परास्त कर दिया है, जो ईश्वर का चहेता, हमारा पूज्य पिता एन्टोनी है !

तब चारों ओर सन्नाटा छा गया और प्रत्येक मस्तक पृथ्वी पर झुक गया।

उस विस्तीर्ण मरुस्थल में एक पर्वत के शिखर पर से महात्मा एन्टोनी अपने दो प्रिय शिष्यों के हाथों के सहारे, जिनके नाम मकेरियस और अमेथस थे आहिस्ता से उतर रहे थे। वह धीरे-धीरे चलते थे पर उनका शरीर अभी तक तीर की भांति सीधा था और उससे उनकी असाधारण शक्ति प्रकट होती थी। उनकी श्वेत दाढ़ी चौड़ी छाती पर फैली हुई थी और उनके मुंड़े हुए चिकने सिर पर प्रकाश की रेखाएं, यों जगमगा रही थीं मानो मूसा पैगम्बर का मस्तक हो। उनकी आंखों में उकाब की आंखों की-सी तीव्र ज्योति थी, और उनके गोल कपोलों पर बालकों की-सी मधुर मुस्कान थी। अपने भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए वह अपनी बाहें उठाये हुए थे, जो एक शताब्दी के असाधारण और अविश्रांत परिश्रम से जर्जर हो गयी थीं। अन्त में उनके मुख से यह प्रेममय शब्द उच्चरित हुए—'ऐ जेकब, तेरे मण्डप कितने विशाल, और ऐ इसराइल, तेरे शामियाने कितने सुखमय हैं।'

इसके एक क्षण के उपरान्त वह जीती-जागती दीवार एक सिरे से दूसरे सिरे तक मधुर मेघध्वनि की भांति इस भजन से गुञ्जरित हो गयी—धन्य है वह प्राणी जो ईश्वर भीरू है !

एन्टोनी अमेथस और मकेरियस के साथ वृद्ध तपस्वियों, व्रतधारियों और ब्रह्मचारियों के बीच में से होते हुए निकले। यह महात्मा जिसने स्वर्ग और नरक दोनों ही देखा था, यह तपस्वी जिसने एक पर्वत के शिखर पर बैठे हुए ईसाई धर्म का संचालन किया था, यह ऋषि जिसने विधर्मियों और नास्तिकों का काफिया तंग कर दिया था, इस समय अपने प्रत्येक पुत्र

से स्नेहमय शब्दों में बोलता था, और प्रसन्नमुख उसने विदा मांगता था किन्तु आज उसकी स्वर्गयात्रा का शुभ दिवस था। परमपिता ईश्वर ने आज अपने लाड़ले बेटे को अपने यहां आने का निमन्त्रण दिया था।

उसने एफ्रायम और सिरेपियन के अध्यक्षों से कहा—'तुम दोनों बहुसंख्यक सेनाओं के नेतृत्व और संचालन में कुशल हो, इसलिए तुम दोनों स्वर्ग में स्वर्ण के सैनिक-वस्त्र धारण करोगे और देवदूतों के नेता मीकायेल अपनी सेनाओं के सेनापति की पदवी तुम्हें प्रदान करेंगे।'

वृद्ध पॉल को देखकर उन्होंने उसे आलिंगन किया और बोले—'देखो, यह मेरे समस्त पुत्रों में सज्जन और दयालु है। इसकी आत्मा से ऐसी मनोहर सुरभि प्रस्फुटित होती है जैसी गुलाब की कलियों के फूलों से, जिन्हें वह नित्य बोता है।'

सन्त जोजीमस को उन्होंने इन शब्दों में सम्बोधित किया—'तू कभी ईश्वरीय दया और क्षमा से निराश नहीं हुआ, इसलिए तेरी आत्मा में ईश्वरीय शान्ति का निवास है। तेरी सुकीर्ति का कमल तेरे कुकर्मों के कीचड़ से उदय हुआ है।'

उनके सभी भाषाओं से देवबुद्धि प्रकट होती थी।

वृद्धजनों से उन्होंने कहा—ईश्वर के सिंहासन के चारों ओर अस्सी वृद्ध-पुरुष उज्ज्वल वस्त्र पहने, सिर पर स्वर्णमुकुट धारण किये बैठे रहते हैं।

युवकवृन्द को उन्होंने इन शब्दों में सान्त्वना दी—'प्रसन्न रहो, उदासीनता उस लोगों के लिए छोड़ दो जो संसार का सुख भोग रहे हैं!'

इस भांति सबसे हंस-हंसकर बातें करते, उपदेश देते वह अपने धर्मपुत्रों की सेना के सामने से चले जाते थे। सहसा पापनाशी उन्हें समीप आते देखकर उनके चरणों पर गिर पड़ा। उसका हृदय आशा और भय से विदीर्ण हो रहा था।

'मेरे पूज्य पिता, मेरे दयालु पिता!'—उसने मानसिक वेदना से पीड़ित होकर कहा—'प्रिय पिता, मेरी बांह पकड़िए, क्योंकि मैं भंवर में बहा जाता हूं। मैंने थायस की आत्मा को ईश्वर के चरणों पर समर्पित किया; मैंने एक ऊंचे स्तम्भ के शिखर पर और एक कब्र की कन्दरा में तप किया है, भूमि पर रगड़ खाते-खाते मेरे मस्तक में ऊंट के घुटनों के समान घट्ठे पड़ गये हैं, तिस पर भी ईश्वर ने मुझसे आंखें फेर ली हैं। पिता, मुझे आशीर्वाद दीजिए इससे मेरा उद्धार हो जायेगा।'

किन्तु एन्टोनी ने इसका उत्तर न दिया—उसने पापनाशी के शिष्यों को ऐसी तीव्र दृष्टि से देखा जिसके सामने खड़ा होना मुश्किल था। इतने में उनकी निगाह मूर्ख पॉल पर जा पड़ी। वह ज़रा देर उसकी तरफ देखते रहे, फिर उसे अपने समीप आने का संकेत किया। चूंकि सभी आदमियों को विस्मय हुआ कि वह महात्मा इस मूर्ख और पागल आदमी से बातें कर रहे हैं, अतएव उनकी शंका का समाधान करने के लिए उन्होंने कहा—'ईश्वर ने इस व्यक्ति पर जितनी वत्सलता प्रकट की है उतनी तुम में से किसी पर नहीं। पुत्र पॉल, अपनी आंखें ऊपर उठा और मुझे बतला कि तुझे स्वर्ग में क्या दिखाई देता है।'

बुद्धिहीन पॉल ने आंखें उठायीं। उसके मुख पर तेज छा गया और उसकी वाणी मुक्त हो गयी। बोला—'मैं स्वर्ग में एक शय्या बिछी हुई देखता हूं जिसमें सुनहरी और बैंगनी

चादरें लगी हुई हैं। उसके पास तीन देवकन्याएं बैठी हुई बड़ी चौकसी से देख रही हैं कि कोई अन्य आत्मा उसके निकट न आने पाये। जिस सम्मानित व्यक्ति के लिए शय्या बिछाई गयी है उसके सिवाय कोई निकट नहीं जा सकता।

पापनाशी ने यह समझकर कि यह शय्या उसकी सत्कीर्ति की परिचायक है, ईश्वर को धन्यवाद देना शुरू किया। किन्तु सन्त एन्टोनी ने उसे चुप रहने और मूर्ख पॉल की बातों को सुनने का संकेत किया। पॉल उसी आत्मोल्लास की धुन में बोला—'तीनों देवकन्याएं मुझसे बातें कर रही हैं। वह मुझसे कहती हैं कि शीघ्र ही एक विदुषी मृत्युलोक से प्रस्थान करने वाली है। इस्कन्द्रिया की थायस मरणासन्न है; और हमने यह शय्या उसके आदर-सत्कार के निमित्त तैयार की है, क्योंकि हम तीनों उसी की विभूतियां हैं। हमारे नाम हैं भक्ति, भय और प्रेम !'

एन्टोनी ने पूछा—'प्रिय पुत्र, तुझे और क्या दिखाई देता है ?'

मूर्ख पॉल ने अधः से ऊर्ध्व तक शून्य दृष्टि से देखा, एक क्षितिज से दूसरी क्षितिज तक नजर दौड़ायी। सहसा उसकी दृष्टि पापनाशी पर जा पड़ी। दैवी भय से उसका मुंह पीला पड़ गया और उसके नेत्रों से अदृश्य ज्वाला निकलने लगी।

उसने एक लम्बी सांस लेकर कहा—'मैं तीन पिशाचों को देख रहा हूं जो उमंग से भरे हुए इस मनुष्य को पकड़ने की तैयारी कर रहे हैं। उनमें से एक का आकार एक स्तम्भ की भांति है, दूसरे का एक स्त्री की भांति और तीसरे का एक जादूगर की भांति। तीनों के नाम गर्म लोहे से दाग दिये हैं—एक का मस्तक पर, दूसरे के पेट पर और तीसरे का छाती पर और वे नाम हैं—अहंकार, विलास-प्रेम और शंका। बस, मुझे और कुछ नहीं सूझता।'

गह कहने के बाद पॉल की आंखें फिर निष्प्रभ हो गयीं, मुंह नीचे को लटक गया और वह पूर्ववत् सीधा-सादा मालूम होने लगा।

जब पापनाशी ने शिष्यगण एन्टोनी की ओर सचिन्त और सशंक भाव से देखने लगे तो उन्होंने यह शब्द कहे—'ईश्वर ने अपनी सच्चाई व्यवस्था सुना दी। हमारा कर्तव्य है कि हम उसको शिरोधार्य करें और चुप रहें। असन्तोष और गिला उसके सेवकों के लिए उपयुक्त नहीं।

यह कहकर वह आगे बढ़ गये। सूर्य ने अस्ताचल को प्रयाण किया और उसे अपने अरुण प्रकाश से आलोकित कर दिया। सन्त एन्टोनी की छाया दैवी लीला से अत्यन्त दीर्घ रूप धारण करके उसके पीछे, एक अनन्त गलीचे की भांति फैली हुई थी, कि सन्त एन्टोनी की स्मृति भी इस भांति दीर्घजीवी होगी, और लोग अनन्तकाल तक उसका यश गाते रहेंगे।

किन्तु पापनाशी वज्राहत की भांति खड़ा रहा। उसे न कुछ सूझता था, न कुछ सुनाई देता था। यही शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे—थायस मरणासन्न है !

उसे कभी इस बात का ध्यान ही न आया था। बीस वर्षों तक निरन्तर उसने मोमियाई के सिर को देखा था, मृत्यु का स्वरूप उसकी आंखों के सम्मुख रहता था। पर यह विचार कि मृत्यु एक दिन थायस की आंखें बन्द कर देगी, उसे घोर आश्चर्य में डाल रहा था।

'थायस मर रही है !'—इन शब्दों में कितनी विस्मयकारी और भयंकर आशय है !

थायस मर रही है, वह अब इस लोक में न रहेगी, तो फिर सूर्य का, फूलों का, सरोवरों का और समस्त सृष्टि का उद्देश्य ही क्या ? इस ब्रह्माण्ड ही की क्या आवश्यकता है। सहसा वह झपटकर चला–'उसे देखूंगा, एक बार फिर उससे मिलूंगा !' वह दौड़ने लगा। उसे कुछ खबर न थी कि वह कहां जा रहा है, किन्तु अन्तःप्रेरणा उसे अविचल रूप से लक्ष्य की ओर लिये जाती थी, वह सीधे नील नदी की ओर चला जा रहा था। नदी पर उसे पालों का एक समूह तैरता हुआ दिखाई पड़ा। वह कूदकर एक नौका में जा बैठा, जिसे हब्शी चला रहे थे, और वहां नौका के मुस्तूल पर पीठ टेककर मुदित आंखों से यात्रा मार्ग का स्मरण करता हुआ, वह क्रोध और वेदना से बोला–आह ! मैं कितना मूर्ख हूं कि थायस को पहले ही अपना न कर लिया जब समय था ! कितना मूर्ख हूं कि समझा कि संसार में थायस के सिवा और भी कुछ है ! कितना पागलपन था ! मैं ईश्वर के विचार में, आत्मोद्धार की चिन्ता में, अनन्त जीवन की आकांक्षा में रत रहता; मानो थामस को देखने के बाद भी इन पाखण्डों में कुछ महत्व था। मुझे उस समय कुछ न सूझा कि उस स्त्री के चुम्बन में अनन्त सुख भरा हुआ है, और उसके बिना जीवन निरर्थक है, जिसका मूल्य एक दुःस्वप्न से अधिक नहीं। मूर्ख ! तूने उसे देखा, फिर भी तुझे परलोक के सुखों की इच्छा बनी रही ! अरे कायर, तू उसे देखकर भी ईश्वर से डरता रहा ! ईश्वर स्वर्ग ! अनादि ! यह सब क्या गोरखधन्धा है! उनमें रखा ही क्या है, और क्या वह उस आनन्द का अल्पांश नहीं दे सकते हैं जो तुझे उससे मिलता। अरे अभागे, निर्बुद्धि, मिथ्यावादी, मूर्ख जो थायस के अधरों को छोड़कर ईश्वरीय कृपा को अन्यत्र खोजता रहा ! तेरी आंखों पर किसने पर्दा डाल दिया था? उस प्राणी का सत्यानाश हो जाय जिसने उस समय तुझे अन्धा बना दिया था। तुझे दैवी कोप का क्या भय था जब तू उसके प्रेम का एक क्षण भी आनन्द उठा लेता। पर तूने ऐसा न किया। उसने तेरे लिए अपनी बांहें फैला दी थीं, जिनमें मांस के साथ फूलों की सुगन्ध मिश्रित थी, और तूने उसके उन्मुक्त वृक्ष के अनुपम सुधा-सागर में अपने को प्लावित न कर दिया। तू नित्य उस द्वेष-ध्वनि पर कान लगाये रहा जो तुझसे कहती थी, भाग-भाग ! अन्धे ! हा शोक ! पश्चात्ताप ! हा निराश ! नरक में उसे कभी न भूलने वाली घड़ी की आनन्दस्मृति ले जाने का और ईश्वर से यह कहने का अवसर हाथों से निकल गया कि 'मेरे मांस को जला मेरी धमनियों में जितना रक्त है उसे चूस ले, मेरी सारी हड्डियों को चूर-चूर कर दे, लेकिन तू मेरा हृदय से उस सुखद-स्मृति को नहीं निकाल सकता, जो चिरकाल तक मुझे सुगन्धित और प्रमुदित रखेगी ! थायस मर रही है ! ईश्वर तू कितना हास्यास्पद है ! तुझे कैसे बताऊं कि मैं तेरे नरकलोक को तुच्छ समझता हूं, उसकी हंसी उड़ाता हूं ! थायस मर रही है, वह मेरी कभी न होगी, कभी नहीं, कभी नहीं !

नौका तेज धारा के साथ बहती जाती थी और वह दिन-के-दिन पेट के बल पड़ा हुआ बार-बार कहता था–कभी नहीं ! कभी नहीं !! कभी नहीं !!

तब यह विचार आने पर कि उसने औरों को अपना प्रेमरस चखाया, केवल मैं ही वंचित रहा। उसने संसार को अपने प्रेम की लहरों से प्लावित कर दिया और मैं उसके होंठों को भी न तर कर सका। वह दांत पीसकर उठ बैठा और अन्तर्वेदना से चिल्लाने लगा। वह अपने नखों से अपनी छाती को खरोंचने और अपने हाथों को दातों से काटने लगा।

उसके मन में यह विचार उठा—यदि मैं उसके सारे प्रेमियों का संहारा कर देता तो कितना अच्छा होता।

इस हत्याकाण्ड की कल्पना ने उसे सरल हत्या-तृष्णा से आन्दोलित कर दिया। वह सोचने लगा कि वह निसियास का खूब आराम से मजे ले-लेकर वध करेगा और उसके चेहरे को बराबर देखता रहेगा कि कैसे उसकी जान निकलती है। तब अकस्मात् उसका क्रोधावेग द्रवीभूत हो गया। वह रोने और सिसकने लगा; वह दीन और नम्र हो गया। एक अज्ञात विनयशीलता ने उसके चित्त को कोमल बना दिया। उसे यह आकांक्षा हुई कि अपने बालपन के साथी निसियास के गले में बांहें डाल दे और उससे कहे—निसियास मैं तुम्हें प्यार करता हूं क्योंकि तुमने उससे प्रेम किया है। मुझसे उसकी प्रेमचर्चा करो। मुझसे वह बातें कहो जो वह तुमसे किया करती थी।

लेकिन अभी तक उसके हृदय में इन वाक्यबाण की नोक निरन्तर चुभ रही थी—थायस मर रही है !

फिर वह प्रेमोन्मत्त होकर कहने लगा—ओ दिन के उजाले ! ओ निशा के आकाश-दीपकों की रौप्य छटा, ओ आकाश, ओ झूमती हुई चोटियों वाले वृक्षों ! ओ वनजन्तुओं ! ओ गृह-पशुओं ! ओ मनुष्यों के चिन्तित हृदयों ! क्या तुम्हारे कान बहरे हो गये हैं ? तुम्हें सुनाई नहीं देता कि थायस मर रही है ? मन्द समीरण, निर्मल प्रकाश, मनोहर सुगन्ध ! इनकी अब क्या जरूरत है ? तुम भाग जाओ, लुप्त हो जाओ ! ओ भूमण्डल के रूप और विचार ! अपने मुंह छिपा लो, मिट जाओ ! क्या तुम नहीं जानते कि थायस मर रही है ? वह संसार के माधुर्य का केन्द्र थी जो वस्तु उसके समीप आती थी वह उसकी रूपज्योति से प्रतिबिम्बित होकर चमक उठती थी। इस्कन्द्रिया के भोज में जितने विद्वान्, ज्ञानी, वृद्ध उसके समीप बैठते थे उनके विचार कितने चित्ताकर्षक थे, उनके भाषण कितने सरस ! कितने हंसमुख लोग थे ! उनके अधरों पर मधुर मुस्कान की शोभा थी और उनके विचार आनन्दभोग की सुगन्ध में डूबे हुए थे। थायस की छाया उनके ऊपर थी, इसलिए उनके मुख से जो कुछ निकलता वह सुन्दर, सत्य और मधुर होता था ! उनके कथन एक शुभ्र अभक्ति से अलंकृत हो जाते थे। शोक ! वह शोक सब अब स्वप्न हो गया। उस सुखमय अभिनय का अन्त हो गया। थायस मर रही है ! वह मौत मुझे क्यों नहीं आती। उसकी मौत से मरना मेरे लिए कितना स्वाभाविक और सरल है ! लेकिन ओ अभागे, निकम्मे, कायर पुरुष, ओ निराश और विषाद में डूबी हुई दुरात्मा, क्या तू मरने के लिए ही बनायी गयी है ? क्या तू समझता है कि तू मृत्यु का स्वाद रख सकेगा ? जिसने अभी जीवन का मर्म नहीं जाना, वह मरना क्या जाने ? हां, अगर ईश्वर है, और मुझे दण्ड दे, तो मैं करने को तैयार हूं। सुनता है ओ ईश्वर, मैं तुझसे घृणा करता हूं सुनता है ! मैं तुझे कोसता हूं! मुझे अपने अग्निवज्रों से भस्म कर दे, मैं इसका इच्छुक हूं, यहां मेरी बड़ी अभिलाषा है। तू मुझे अग्निकुण्ड में डाल दे। तुझे उत्तेजित करने के लिए, देख, मैं तेरे मुख पर थूकता हूं। मेरे लिए अनन्त नरकवास की जरूरत है। इसके बिना यह अपार क्रोध शान्त न होगा जो मेरे हृदय में खड़क रहा है।

दूसरे दिन प्रातःकाल अलबीना ने पापनाशी को अपने आश्रम में खड़े पाया। वह

उसका स्वागत करती हुई बोली—'पूज्य पिता, हम अपने शान्तिभवन में तुम्हारा स्वागत करते हैं, क्योंकि आप अवश्य ही उस विदुषी की आत्मा को शान्ति प्रदान करने आये हैं जिसे अपने यहां आश्रम दिया है। आपको विदित होगा कि ईश्वर ने अपनी असीम कृपा से उसे अपने पास बुलाया है। यह समाचार आपसे क्योंकर छिपा रह सकता था जिसे स्वर्ग के दूतों ने मरुस्थल के इस सिरे से उस सिरे तक पहुंचा दिया है ? यथार्थ में थायस का शुभ अंत निकट है। उसके आत्मोद्धार की क्रिया पूरी हो गयी और मैं सूक्ष्मतः आप पर यह प्रकट कर देना उचित समझती हूं कि जब तक वह यहां रही, उसका व्यवहार और आचरण कैसा रहा। आपके चले जाने के पश्चात् जब वह अपनी मुहर लगाई हुई कुटी में एकान्त सेवन के लिए रखी गयी, तो मैंने उसके भोजन के साथ बांसुरी भी भेज दी. जो ठीक उसी प्रकार की थी जैसी नर्तकियां भोज के अवसरों पर बजाया करती हैं। मैंने यह व्यवस्था इसलिए की जिसमें उसका चित्त उदास न हो और वह ईश्वर के सामने उससे कम संगीत-चातुर्य और कुशाग्रता न प्रकट करे जितनी वह मनुष्यों के सामने दिखाती थी। अनुभव से सिद्ध हुआ कि मैंने व्यवस्था करने में दूरदर्षिता और चरित्र-परिचय से काम लिया, क्योंकि थायस दिनभर बांसुरी बजाकर ईश्वर का कीर्तिगान करती रहती थी और अन्य देवकन्याएं, जो उसकी वंशी की ध्वनि से आकर्षित होती थीं, कहतीं—हमें इस गान में स्वर्गकुंजों की बुलबुल की चहक का आनन्द मिलता है ! उसके स्वर्ग-संगीत से सारा आश्रम गुंजरित हो जाता था। पथिक भी अनायास खड़े होकर उसे सुनकर अपने कान पवित्र कर लेते थे। इस भांति थायस तपश्चर्या करती रही। यहां तक कि साठ दिनों के बाद वह द्वार जिस पर आपने मुंहर लगा दी थी, आप-ही-आप खुल गया और वह मिट्टी की मुहर टूट गयी। यद्यपि उसे किसी मनुष्य ने छुआ तक नहीं। इस लक्षण से मुझे ज्ञात हुआ कि आपने उसके लिए जो प्रायश्चित नियत किया था, वह पूरा हो गया और ईश्वर ने उसके सब अपराध क्षमा कर दिये। उसी समय से वह मेरी अन्य देवकन्याओं के साधारण जीवन में भाग लेने लगी है। उन्हीं के साथ काम-धन्धा करती है, उन्हीं के साथ ध्यान-उपासना करती है। वह अपने वचन और व्यवहार की नम्रता से उनके लिए एक आदर्शचरित्र थी, और उनके बीच में और व्यवहार की नम्रता से उनके लिए एक आदर्शचरित्र थी, और उनके बीच में पवित्रता की एक मूर्ति-सी जान पड़ती थी। कभी-कभी वह मन-मलिन हो जाती थी, किन्तु वे घटाएं जल्द ही कट जाती थीं और फिर सूर्य का विहसित प्रकाश फैल जाता था। जब मैंने देखा कि उसके हृदय में ईश्वर के प्रति भक्ति, आशा और प्रेम के भाव उदित हो गये हैं तो फिर मैंने उनके अभिनयकला-नैपुण्य का उपयोग करने में विलम्ब नहीं किया। यहां तक कि मैं उसके सौन्दर्य को भी उसकी बहनों की धर्मोन्नति के लिए काम में लाई। मैंने उससे सद्ग्रंथ में वर्णित देवकन्याओं और विदुषियों की कीर्तियों का अभिनय करने के लिए आदेश किया। उसने ईश्वर, डीबोरा, जूडिथ, लाजरस की बहन मरियम, तथा प्रभु मसीह की माता मरियम का अभिनय किया। पूज्य पिता, मैं जानती हूं कि आपका संयमशील मन इन कृत्यों के विचार ही से कम्पित होता है, लेकिन आपने भी यदि उसे इन धार्मिक दृश्यों में देखा होता तो आपका द्रदय पुलकित हो जाता। जब वह अपने खजूर के पत्तों से सुन्दर हाथ आकाश की ओर उठाती थी, तो उसके लोचनों से सच्चे आंसुओं की

वर्षा होने लगती थी। मैंने बहुत दिनों तक स्त्री-समुदाय पर शासन किया है और मेरा यह नियम है कि उनके स्वभाव और प्रवृत्तियों की अवहेलना न की जाय। सभी बीजों में एक समान फूल नहीं लगते, न सभी आत्माएं समान रूप में निवृत्त होती हैं। यह बात भी न भूलनी चाहिए कि थायस ने अपने को ईश्वर के चरणों पर उस समय अर्पित किया जब उसका मुखकमल पूर्ण विकास पर था और ऐसा आत्मसमर्पण अगर अद्वितीय नहीं, तो विरला अवश्य है। यह सौन्दर्य जो उसका स्वाभाविक आवरण है, तीस मास के विषम ताप पर भी अभी तक निष्प्रभ नहीं हुआ है। अपनी इस बीमारी में उसकी निरन्तर यही इच्छा रही है कि आकाश को देखा करे। इसलिए मैं नित्य प्रातःकाल उसे आंगन में कुएं के पास, पुराने अंजीरे के वृक्ष के नीचे, जिसकी छाया में इस आश्रम की अधिष्ठात्रियां उपदेश किया करती हैं, ले जाती हूं। दयालु पिता, वह आपको वहीं मिलेगी। किन्तु जल्दी कीजिए, क्योंकि ईश्वर का आदेश हो चुका है और आज की रात वह मुख कफन से ढंक जायेगा जो ईश्वर ने इस जगत् को लज्जित और उत्साहित करने के लिए बनाया है। यही स्वरूप आत्मा का संहार करता था, यही उसका उद्धार करेगा।

पापनाशी अलबीना के पीछे-पीछे आंगन में गया जो सूर्य के प्रकाश से आच्छादित हो रहा था। ईंटों की छत के किनारों पर श्वेत कपोतों की एक मुक्तामाला-सी बनी हुई थी। अंजीर के वृक्ष की छांह में एक शय्या पर थायस हाथ-पर-हाथ रखे लेटी हुई थी। उसका मुख श्रीविहीन हो गया था। उसके पास कई स्त्रियां मुंह पर नकाब डाले खड़ी अन्तिम संस्कार-सूचक गीत गा रही थीं—

'परम पिता, मुझ दीन प्राणी पर
अपनी सप्रेम वत्सलता से दया कर।
अपनी करुणा-दृष्टि से
मेरे अपराधों को क्षमा कर।'

पापनाशी ने पुकारा—'थायस !'

थायस ने पलकें उठायी और अपनी आंखों की पुतलियां उस कंठध्वनि की ओर फेरीं।

अलबीना ने देवकन्याओं को पीछे हट जाने की आज्ञा दी, क्योंकि पापनाशी पर उनकी छाया पड़ना भी धर्म-विरुद्ध था।

पापनाशी ने फिर पुकारा—'थायस।'

उसने अपना सिर धीरे-से उठाया। उसके पीले होंठों से एक हल्की सांस निकल आयी।

उसने क्षीण स्वर में कहा—'पिता, क्या आप हैं ? आपको याद है कि हमने सोते से पानी पिया था और छुहारे तोड़े थे ? पिता, उसी दिन मेरे हृदय में प्रेम का अभ्युदय हुआ—अनन्त जीवन के प्रेम का !'

यह कहकर वह चुप हो गयी। उसका सिर पीछे को झुक गया।

यमदूतों ने उसे घेर लिया था और इन्तिम प्राणवेदना श्वेत बूंदों ने उसके माथे को आर्द्र कर दिया था। एक कबूतर अपने अरुण क्रन्दन से उस स्थान की नीरवता भंग कर रहा था। तब पापनाशी की सिसकियां देवकन्याओं के भजनों के साथ सम्मिश्रित हो गयीं।

'मुझे मेरी कालिमाओं से भली-भांति पवित्र कर दे और मेरे पापों को धो दे, क्योंकि मैं अपने कुकर्मों को स्वीकार करती हूं, और मेरे पातक मेरे नेत्रों के सम्मुख उपस्थित हैं।'

सहसा थायस उठकर शय्या पर बैठ गयी। उसकी बैंगनी आंखें फैल गयीं, और वह तल्लीन होकर बांहों को फैलाये हुए दूर की पहाड़ियों की ओर ताकने लगी। तब उसने स्पष्ट और उत्फुल्ल स्वर में कहा—'वह देखो, अनन्त प्रभात के गुलाब खिले हैं।'

उसकी आंखों में एक विचित्र स्फूर्ति आ गयी, उसके मुख पर हल्का-सा रंग छा गया। उसकी जीवन-ज्योति चमक उठी थी, और वह पहले से भी अधिक सुन्दर और प्रसन्नवदन हो गयी थी।

पापनाशी घुटनों के बल बैठ गया; अपनी लम्बी, पतली बांहें उसके गले में डाल दीं, और बोला—ऐसे स्वरों में जिसे स्वयं न पहचान सकता था कि यह मेरी ही आवाज है—'प्रिये, अभी मरने का नाम न ले ! मैं तुझ पर जान देता हूं। अभी न मर ! थायस, सुन, कान धरकर सुन, मैंने तेरे साथ छल किया है, तुझे दगा दिया है। मैं स्वयं भ्रांति में पड़ा हुआ था। ईश्वर, स्वर्ग आदि यह सब निरर्थक शब्द हैं, मिथ्या हैं। इस ऐहिक जीवन से बढ़कर और कोई वस्तु; और कोई पदार्थ नहीं है। मानव-प्रेम ही संसार में सबसे उत्तम रत्न है। मेरा तुझ पर अनन्त प्रेम है। अभी न मर। यह कभी नहीं हो सकता, तेरा महत्त्व इससे कहीं अधिक है, तू मरने के लिए बनाई ही नहीं गयीं। आ, मेरे साथ चल ! यहां से भाग चलें। मैं तुझे अपनी गोद में उठाकर पृथ्वी की उस सीमा तक ले जा सकता हूं। आ, हम प्रेम में मग्न हो जायें। प्रिये, सुन, मैं क्या कहता हूं। एक बार कह दे, मैं जिऊंगी—मैं जीना चाहती हूं ! थायस उठ, उठ !'

थायस ने एक शब्द भी न सुना। उसकी दृष्टि अनन्त की ओर लगी हुई थी।

अन्त में वह निर्बल स्वर में बोली—'स्वर्ग के द्वार खुल रहे हैं, मैं देवदूतों को, नबियों को और सन्तों को देख रही हूं—मेरा सरल हृदय थियोडर उन्हीं में है। उसके सिर पर फूलों का मुकुट है, वह मुस्कराता है, मुझे पुकार रहा है। दो देवदूत मेरे पास आये हैं, वह इधर चले आ रहे हैं....वह कितने सुन्दर हैं ! मैं ईश्वर के दर्शन कर रही हूं !'

उसने एक प्रफुल्ल उच्छ्वास लिया और उसका सिर तकिये पर पीछे गिर पड़ा। थायस का प्राणान्त हो गया ! सब देखते ही रह गये, चिड़िया उड़ गयी।

पापनाशी ने अंतिम बार, निराश होकर, उसको गले से लगा लिया। उसकी आंखें उसे तृष्णा, प्रेम और क्रोध से फाड़े खाती थीं।

अलबीना ने पापनाशी से कहा—'दूर हो, पापी पिशाच !'

और उसने बड़ी कोमलता से अपनी उंगलियां मृत बालिका की पलकों पर रखीं। पापनाशी पीछे हट गया, जैसे किसी ने धक्का दे दिया हो। उसकी आंखों में ज्वाला निकल रही थी। ऐसा मालूम होता था कि उसके पैरों के तले पृथ्वी फट गयी है।

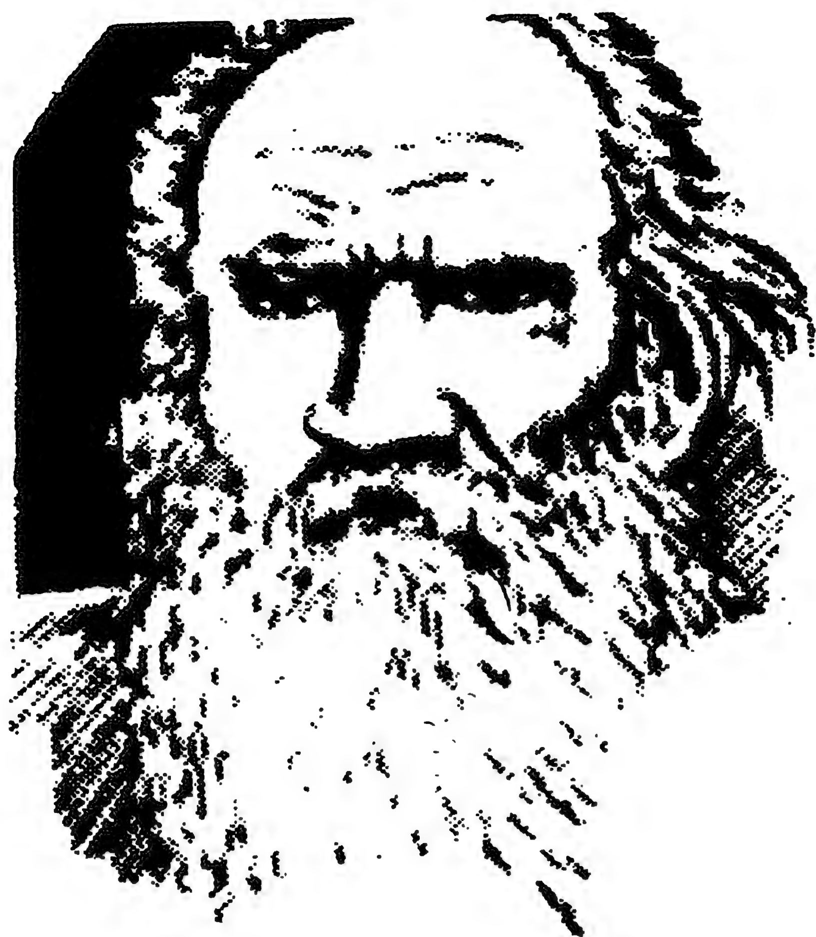
देवकन्याएं जकरिया का भजन गा रही थीं—

'इजराइलियों के खुदा को कोटि धन्यवाद !'

अकस्मात् उनके कंठ अवरुद्ध हो गये, मानो किसी ने गला बन्द कर दिया। उन्होंने दादुर!!!

वह इतना घिनौना हो गया था कि जब उसने अपना हाथ अपने मुंह पर फेरा, तो उसे स्वयं ज्ञात हुआ कि उसका स्वरूप कितना विकृत हो गया है !

●●●



टॉलस्टॉय की कहानियां

प्रकाशनकाल : 1923

अनुक्रम

क्षमादान

दिल्ली नगर में भागीरथ नाम का युवक सौदागर रहता था। वहां उसकी अपनी दो दुकानें और एक रहने का मकान था। वह सुन्दर था। उसके बाल कोमल, चमकीले और घुंघराले थे। वह हंसोड़ और गाने का बड़ा प्रेमी था। युवावस्था में उसे मद्य पीने की बान पड़ गई थी। अधिक पी जाने पर कभी-कभी हल्ला भी मचाया करता था, परन्तु विवाह कर लेने पर मद्य पीना छोड़ दिया था।

गरमी में एक समय वह कुम्भ पर गंगा जाने को तैयार हो, अपने बच्चों और स्त्री से विदा मांगने आया।

स्त्री—प्राणनाथ, आज न जाइए, मैंने बुरा सपना देखा है।

भागीरथ—प्रिये, तुम्हें भय है कि मैं मेले में जाकर तुम्हें भूल जाऊंगा ?

स्त्री—यह तो मैं नहीं जानती कि मैं क्यों डरती हूं, केवल इतना जानती हूं कि मैंने बुरा स्वप्न देखा है। मैंने देखा है कि जब तुम घर लौटे हो तो तुम्हारे बाल श्वेत हो गए हैं।

भागीरथ—यह तो सगुन है। देख लेना मैं सारा माल बेच, मेले से तुम्हारे लिए अच्छी—अच्छी चीजें लाऊंगा।

यह कह गाड़ी पर बैठ, वह चल दिया। आधी दूर जाकर उसे एक सौदागर मिला, जिससे उसकी जान-पहचान थी। वे दोनों रात को एक ही सराय में ठहरे। संध्या समय भोजन कर पास की कोठरियों में सो गए।

भागीरथ को सबेरे जाग उठने का अभ्यास था। उसने यह विचार करके कि ठंडे-ठंडे राह चलना सुगम होगा, मुंह-अंधेरे उठ, गाड़ी तैयार करायी और भटियारे के दाम चुकाकर चलता बना। पच्चीस कोस जाने पर घोड़ों को आराम देने के लिए एक सराय में ठहरा और आंगन में बैठकर सितार बजाने लगा।

अचानक एक गाड़ी आयी—पुलिस का एक कर्मचारी और दो सिपाही उतरे। कर्मचारी उसके समीप आकर पूछने लगा कि तुम कौन हो और कहां से आये हो ? वह सब-कुछ बतलाकर बोला कि आइए, भोजन कीजिए। परन्तु कर्मचारी बार-बार यही पूछता था कि तुम रात को कहां ठहरे थे ? अकेले थे या कोई साथ था ? तुमने साथी को आज सवेरे देखा या नहीं। तुम मुंह-अंधेरे क्यों चले आये?

भागीरथ को अचम्भा हुआ कि बात क्या है ? यह प्रश्न क्यों पूछे जा रहे हैं ? बोला—आप तो मुझसें इस भांति पूछते हैं, जैसे मैं कोई चोर या डाकू हूं। मैं तो गंगास्नान करने जा रहा हूं। आपको मुझसे क्या मतलब है ?

कर्मचारी—मैं इस प्रान्त का पुलिस अफसर हूं, और यह प्रश्न इसलिए करता हूं कि जिस सौदागर के साथ तुम कल रात सराय में सोए थे, वह मार डाला गया। हम तुम्हारी तलाशी लेने आये हैं।

यह कह वह उसके असबाब की तलाशी लेने लगा। एकाएक थैले में से एक छुरा निकला, वह खून से भरा हुआ था। यह देखकर भागीरथ डर गया।

कर्मचारी—यह छुरा किसका है ? इस पर खून कहां से लगा ?

भागीरथ चुप रह गया, उसका कंठ रुक गया। हिचकता हुआ कहने लगा—मेरा नहीं मैं नहीं जानता।

कर्मचारी—आज सवेरे हमने देखा कि वह सौदागर गला कटे चारपाई पर पड़ा है। कोठरी अन्दर से बंद थी, सिवाय तुम्हारे भीतर कोई न था। अब यह खून से भरा हुआ छुरा इस थैले में से निकला है। तुम्हारा मुख ही गवाही दे रहा है। बस, तुमने ही उसे मारा है। बतलाओ, किस तरह मारा और कितने रुपये चुराए हैं ?

भागीरथ ने सौगन्ध खाकर कहा—मैंने सौदागर को नहीं मारा। भोजन करने के पीछे फिर मैंने उसे नहीं देखा। मेरे पास अपने आठ हजार रुपये हैं। यह छुरा मेरा नहीं।

परन्तु उसकी बातें उखड़ी हुई थीं, मुख पीला पड़ गया था और वह पापी की भांति भय से कांप रहा था।

पुलिस अफसर ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इसकी मुस्कें कसकर गाड़ी में डाल दो। जब सिपाहियों ने उसकी मुस्कें कसीं, तो वह रोने लगा। अफसर ने पास के थाने पर ले जाकर उसका रुपया-पैसा छीन, उसे हवालात में दे दिया।

इसके बाद दिल्ली में उसके चाल-चलन की जांच की गई। सब लोगों ने यही कहा कि पहले वह मद्य पीकर बक-झक किया करता था, पर अब उसका आचार बहुत अच्छा है। अदालत में तहकीक़ात होने पर उसे रामपुर-निवासी सौदागर का वध करने और बीस हजार रुपये चुरा लेने का अपराधी ठहराया गया।

भागीरथ की स्त्री को इस बात पर विश्वास न होता था। उसके बालक छोटे-छोटे थे। एक अभी दूध पीता था। वह सबको साथ लेकर पति के पास पहुंची। पहले तो कर्मचारियों ने उसे उससे मिलने की आज्ञा न दी, परन्तु बहुत विनय करने पर आज्ञा मिल गई। और पहरे वाले उसे कैद घर में ले गए। ज्योंही उसने अपने पति को बेड़ी पहने हुए चोरों और डाकुओं के बीच में बैठा देखा, वह बेसुध होकर धरती पर गिर पड़ी। बहुत देर में सुध आई। वह बच्चों-सहित पति के निकट बैठ गई और घर का हाल कहकर पूछने लगी कि यह क्या बात है ? भागीरथ ने सारा वृतांत कह सुनाया।

स्त्री—तो अब क्या हो सकता है ?

भागीरथ—हमें महाराज से विनय करनी चाहिए कि वह निरपराधी को जान से न मारें।

स्त्री—मैंने महाराज से विनय की थी, परन्तु वह स्वीकार नहीं हुई।

भागीरथ ने निराश होकर सिर झुका लिया।

स्त्री—देखा, मेरा सपना कैसा सचं निकला ! तुम्हें याद है न, मैंने तुमको उस दिन मेले जाने से रोका था। तुम्हें उस दिन न चलना चाहिए था, लेकिन मेरी बात न मानी। सच-सच बताओ, तुमने तो उस सौदागर को नहीं मारा न ?

भागीरथ—क्या तुम्हें भी मेरे ऊपर संदेह है ?

यह कहकर वह मुंह ढांप रोने लगा। इतने में सिपाही ने आकर स्त्री को वहां से हटा दिया और भागीरथ सदैव के लिए अपने परिवार से विदा हो गया।

घर वालों के चले जाने पर जब भागीरथ ने यह विचारा कि मेरी स्त्री भी मुझे अपराधी समझती है तो मन में कहा—बस, मालूम हो गया, परमात्मा के बिना और कोई नहीं जान सकता कि मैं पापी हूं या नहीं। उसी से दया की आशा रखनी चाहिए। फिर उसने छूटने का कोई यत्न नहीं किया। चारों ओर से निराश होकर ईश्वर के ही भरोसे बैठा रहा।

भागीरथ को पहले तो कोड़े मारे गए। जब घाव भर गए तो उसे लोहगढ़ के बन्दी-खाने में भेज दिया गया।

वह छब्बीस वर्ष बन्दीखाने में पड़ा रहा। उसके बाल पककर सन के से हो गए, कमर टेढ़ी हो गई, देह घुल गयी, सदैव उदास रहता। न कभी हंसता, न बोलता, परन्तु भगवान् का भजन नित्य किया करता था।

वहां उसने दरी बुनने का काम सीखकर कुछ रुपया जमा किया और भक्तमाल मोल ले ली। दिन-भर काम करने के बाद सांझ को जब तक सूरज का प्रकाश रहता, वह पुस्तक को पढ़ा करता और इतवार के दिन बन्दीखाने के निकट वाले मन्दिर में जाकर पूजा-पाठ भी कर लेता था। जेल के कर्मचारी उसे सुशील जानकर उसका मान करते थे। कैदी लोग उसे बूढ़े बाबा अथवा महात्मा कहकर पुकारा करते थे। कैदियों को जब कभी कोई अर्जी भेजनी होती, तो वे उसे अपना मुखिया बनाते और अपने झगड़े भी उसी से चुकाया करते।

उसे घर का कोई समाचार न मिलता था। उसे यह भी न मालूम था कि स्त्री-बालक जीते हैं या मर गए।

एक दिन कुछ नये कैदी आये। संध्या समय पुराने कैदी उनके पास आकर पूछने लगे कि भाई, तुम कहां से आये हो और तुमने क्या-क्या अपराध किए हैं ? भागीरथ उदास बैठा सुनता रहा। नये कैदियों में एक साठ वर्ष का हट्टा-कट्टा आदमी, जिसके दाढ़ी-बाल खूब छटे हुए थे, अपनी रामकहानी यों सुना रहा था !

'भाइयो, मेरे मित्र का घोड़ा एक पेड़ से बंधा हुआ था। मुझे घर जाने की जल्दी पड़ी हुई थी। मैं उस घोड़े पर सवार होकर चला गया। वहां जाकर मैंने घोड़ा छोड़ दिया। मित्र कहीं चला गया था। पुलिस वालों ने चोर ठहराकर मुझे पकड़ लिया। यद्यपि कोई यह नहीं बतला सका कि मैंने किसका घोड़ा चुराया और कहां से, फिर भी चोरी के अपराध में मुझे यहां भेज दिया है। इससे पहले एक बार मैंने ऐसा अपराध किया था कि मैं लोहगढ़ में भेजे जाने लायक था, परंतु मुझे उस समय कोई नहीं पकड़ सका। अब बिना अपराध ही यहां भज दिया गया हूं।

एक कैदी—तुम कहां से आये हो?

नया कैदी—दिल्ली से। मेरा नाम बलदेवसिंह है।

भागीरथ—भला बलदेवसिंह, तुम्हें भागीरथ के घर वालों को कुछ हाल मालूम है, जीते हैं कि मर गए?

बलदेव—जानना क्या? मैं उन्हें भली-भांति जानता हूं। अच्छे मालदार हैं। हां उनका

पिता यहीं कहीं कैद है। मेरे ही जैसा अपराध उनका भी था। बूढ़े बाबा, तुम यहां कैसे आये?

भगीरथ अपनी विपत्ति-कथा न कही। केवल हाय कहकर बोला—मैं अपने पापों के कारण छब्बीस वर्ष से यहां पड़ा सड़ रहा हूं।

बलदेव—क्या पाप, मैं भी सुनूं?

भागीरथ—भाई, जाने दो, पापों का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

वह और कुछ न कहना चाहता था, परंतु दूसरे कैदियों ने बलदेव को सारा हाल कह सुनाया कि वह एक सौदागर का वध करने के अपराध में यहां कैद है। बलदेव ने यह हाल सुना तो भागीरथ को ध्यान से देखने लगा। घुटने पर हाथ मारकर बोला—वाह-वाह, बड़ा अचरज है! लेकिन दादा, तुम तो बिल्कुल बूढ़े हो गए।

दूसरे कैदी बलदेव से पूछने लगे कि तुम भागीरथ को देखकर चकित क्यों हुए, तुमने क्या पहले कहीं उसे देखा है? परंतु बलदेव ने उत्तर नहीं दिया।

भागीरथ के चित्त में यह संशय उत्पन्न हुआ कि शायद बलदेव रामपुरी सौदागर के असली मारने वाले को जानता है। बोला—बलदेवसिंह, क्या तुमने यह बात सुनी है और मुझे भी पहले कहीं देखा है।

बलदेव—वह बातें तो सारे संसार में फैल रही हैं। मैं किस तरह न सुनता; बहुत दिन बीत गए, मुझे कुछ याद नहीं रहा।

भागीरथ—तुम्हें मालूम है कि उस सौदागर को किसने मारा था?

बलदेव—(हंसकर) जिसके थैले में छुरा निकला, वही उसका मारने वाला। यदि किसी ने थैले में छुरा छिपा भी दिया हो, तो जब तक कोई पकड़ा न जाए, उसे चोर कौन कह सकता है? थैला तुम्हारे सिरहाने धरा था। यदि कोई दूसरा पास आकर छुरा थैले में छिपाता तो तुम अवश्य जाग उठते।

यह बातें सुनकर भागीरथ को निश्चय हो गया कि सौदागर को इसी ने मारा है। वह उठकर वहां से चल दिया, पर सारी रात जागता रहा। दुःख से उसका चित्त व्याकुल हो रहा था। उसे अनेक प्रकार की बातें याद आने लगीं। पहले स्त्री की उस समय की सूरत दिखाई दी जब वह उसे मेले जाने को मना कर रही थी। सामने ऐसा जान पड़ा कि वह खड़ी है। उसकी बोली और हंसी तक सुनाई दी। फिर बालक दिखाई पड़े, फिर युवावस्था की याद आयी, कितना प्रसन्नचित्त था, कैसा आनन्द से द्वार पर बैठा सितार बजाया करता था। फिर वह सराय दिखाई दी, जहां वह पकड़ा गया था। तब वह जगह सामने आयी, जहां उस पर कोड़े लगे थे। फिर बेड़ी और बंदीखाना, फिर बुढ़ापा और छब्बीस वर्ष का दुःख। यह सब बातें उसकी आंखों में फिरने लगीं। वह इतना दुःखी हुआ कि जी में आया कि अभी प्राण दे दूं।

'हाय, इस बलदेव चंडाल ने यह क्या किया! मैं तो अपना सर्वनाश करके भी इससे बदला अवश्य लूंगा।'

सारी रात भजन करने पर भी उसे शांति नहीं हुई। दिन में उसने बलदेव को देखा तक नहीं। पंद्रह दिन बीत गए, भागीरथ की यह दशा थी कि न रात को नींद, न दिन को चैन। क्रोधाग्नि में जल रहा था।

एक रात वह जेलखाने में टहल रहा था कि उसने कैदियों के सोने के चबूतरे के नीचे से मिट्टी गिरते देखी। वह वहीं ठहर गया कि देखूं मिट्टी कहां से आ रही है। सहसा बलदेव चबूतरे के नीचे से निकल आया और भय से कांपने लगा। भागीरथ आंखें मूंदकर आगे जाना चाहता था कि बलदेव ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोला—देखो, मैंने जूतों में मिट्टी भर के बाहर फेंककर यह सुरंग लगायी है, चुप रहना। मैं तुमको यहां से भगा देता हूं। यदि शोर करोगे तो जेल के अफसर मुझे जान से मार डालेंगे, परंतु याद रखो कि तुम्हें मारकर मरूंगा, यों नहीं मरता।

भागीरथ अपने शत्रु को देखकर क्रोध से कांप उठा और हाथ छुड़ाकर बोला—मुझे भागने की इच्छा नहीं, और मुझे मारे तो तुम्हें छब्बीस वर्ष हो चुके। रही यह हाल प्रकट करने की बात, जैसी परमात्मा की आज्ञा होगी, वैसा होगा।

अगले दिन जब कैदी बाहर काम करने गये तो पहरे वालों ने सुरंग की मिट्टी बाहर पड़ी देख ली। खोज लगाने पर सुरंग का पता चल गया। हाकिम सब कैदियों से पूछने लगे। किसी ने न बतलाया, क्योंकि वे जानते थे कि यदि बतला दिया तो बलदेव मारा जाएगा। अफसर भागीरथ को सत्यवादी जानते थे, उससे पूंछने लगे—बूढ़े बाबा, तुम सच्चे आदमी हो सच बताओ कि यह सुरंग किसने लगायी है?

बलदेव पास ही ऐसे खड़ा था कि कुछ जानता ही नहीं। भागीरथ के होंठ और हाथ कांप रहे थे। चुपचाप विचार करने लगा कि जिसने मेरा सारा जीवन नाश कर दिया, उसे क्यों छिपाऊं? दुःख का बदला दुःख उसे अवश्य भोगना चाहिए, परन्तु बतला देने पर फिर वह बच नहीं सकता। शायद यह सब मेरा भ्रम मात्र हो, सौदागर को किसी और ने ही मारा हो। यदि इसने ही मारा तो इसे मरवा देने से मुझे क्या लाभ होगा?

अफसर—बाबा, चुप क्यों हो गए? बतलाते क्यों नहीं?

भागीरथ—मैं कुछ नहीं बतला सकता, आप जो चाहें सो करें।

हाकिम ने बार-बार पूछा, परंतु भागीरथ ने कुछ भी नहीं बतलाया। बात टल गई।

उसी रात भागीरथ जब अपनी कोठरी में लेटा हुआ था, बलदेव चुपके से भीतर आकर बैठ गया। भागीरथ ने देखा और कहा—बलदेवसिंह, अब और क्या चाहते हो? यहां तुम क्यों आये?

बलदेव चुप रहा।

भागीरथ—तुम क्या चाहते हो? यहां से चले जाओ, नहीं तो मैं पहरे वाले को बुला लूंगा।

बलदेव—(पांव पर पड़कर) भागीरथ, मुझे क्षमा करो, क्षमा करो।

भागीरथ—क्यों?

बलदेव—मैंने ही उस सौदागर को मारकर छुरा तुम्हारे थैले में छिपाया था। मैं तुम्हें भी मारना चाहता था। परंतु बाहर से आहट हो गई, मैं छुरा थैले में रखकर भाग निकला।

भागीरथ चुप हो गया, कुछ नहीं बोला।

बलदेव—भाई भागीरथ, भगवान् के वास्ते मुझ पर दया करो, मुझे क्षमा करो। मैं कल अपना अपराध अंगीकार कर लूंगा। तुम छूटकर अपने घर चले जाओगे।

भागीरथ—बातें बनाना सहज़ है। छब्बीस वर्ष के इस दुःख को देखो, अब मैं कहां जा

सकता हूं? स्त्री मर गई, लड़के भूल गए, अब तो मेरा कहीं ठिकाना नहीं है।

बलदेव धरती से माथा फोड़, रो-रोकर कहने लगा—मुझे कोड़े लगने पर भी इतना कष्ट नहीं हुआ था, जो अब तुम्हें देखकर हो रहा है। तुमने दया करके सुरंग की बात नहीं बतलायी। क्षमा करो, क्षमा करो, मैं अत्यन्त दुःखी हो रहा हूं!

यह कह बलदेव धाड़ मारकर रोने लगा। भागीरथ के नेत्रों से भी जल की धारा बह निकली। बोला—पूर्ण परमात्मा, तुम पर दया करें, कौन जाने कि मैं अच्छा हूं अथवा तुम अच्छे हो। मैंने तुम्हें क्षमा किया।

अगले दिन बलदेवसिंह ने स्वयं कर्मचारियों के पास जाकर सारा हाल सुनाकर अपना अपराध मान लिया, परंतु भागीरथ को छोड़ देने का जब परवाना आया, तो उसका देहान्त हो चुका था।

राजपूत कैदी

धर्मसिंह नामी राजपूत राजपूताना की सेना में एक अफसर था। एक दिन माता की पत्री आयी कि मैं बूढ़ी होती जाती हूं, मरने से पहले एक बार तुम्हें देखने की अभिलाषा है, यहां आकर मुझे विदा कर आशीर्वाद लो और क्रिया-कर्म करके आनंदपूर्वक नौकरी पर लौट जाना। तुम्हारे वास्ते मैंने एक कन्या खोज रखी है, वह बड़ी बुद्धिमती और धनवान् है। यदि तुम्हें भाये तो उससे विवाह करके सुखपूर्वक घर ही पर रहना।

उसने सोचा—ठीक है, माता दिनोंदिन दुर्बल होती जा रही है, सम्भव है कि फिर मैं उसके दर्शन न कर सकूं। इस कारण चलना ही ठीक है। कन्या यदि सुंदर हुई तो विवाह करने में क्या हानि है। वह सेनापति से छुट्टी लेकर, साथियों से विदा हो, चलने को प्रस्तुत हो गया।

उस समय राजपूतों और मरहठों में युद्ध हो रहा था। रास्ते में सदैव भय रहता था। यदि कोई राजपूत अपना किला छोड़कर कुछ दूर बाहर निकल जाता था, तो मरहठे उसे पकड़कर कैद कर लेते थे। इस कारण यह प्रबन्ध किया गया था कि सप्ताह में दो बार सिपाहियों की एक कम्पनी मुसाफिरों को एक किले से दूसरे किले तक पहुंचा आया करती थी।

गरमी की रात थी। दिन निकलते ही किले के नीचे असबाब की गाड़ियां लादकर तैयार हो गईं। सिपाही बाहर आ गए और सबने सड़क की राह ली। धर्मसिंह घोड़े पर सवार हो, आगे चल रहा था। सोलह मील का सफर था, गाड़ियां धीरे-धीरे चलती थीं। कभी सिपाही ठहर जाते थे, कभी गाड़ी का पहिया निकल जाता था तो कभी कोई घोड़ा अड़ जाता था।

दोपहर ढल चुकी थी। रास्ता आधा भी नहीं कटा था। गरम रेत उड़ रही थी। धूप आग का काम कर रही थी। छाया कहीं नहीं थी। साफ मैदान था। सड़क पर न कोई वृक्ष, न झाड़ी। धर्मसिंह आगे था और कभी-कभी इस कारण ठहर जाता था कि गाड़ियां आकर मिल जायं। मन में विचारने लगा कि आगे क्यों न चलूं। घोड़ा तेज है, यदि मरहठे धावा

करेंगे, तो घोड़ा दौड़ा कर निकल जाऊंगा। यह सोच ही रहा था कि चरनसिंह बन्दूक हाथ में लिये उसके पास आया और बोला—आओ, आगे चलें। इस समय बड़ी गरमी है। भूख के मारे व्याकुल हो रहा हूं। सभी कपड़े पसीने में भीग रहे हैं। चरनसिंह भारी-भरकम आदमी था। उसका मुंह लाल था।

धर्मसिंह—तुम्हारी बन्दूक भरी हुई है?

चरनसिंह—हां, भरी हुई है।

धर्मसिंह—अच्छा चलो, पर बिछुड़ न जाना।

यह दोनों चल दिए, बातें करते जाते थे, पर ध्यान दाएं-बाएं था। साफ मैदान होने के कारण दृष्टि चारों ओर जा सकती थी। आगे चलकर सड़क दो पहाड़ियों के बीच से होकर निकलती थी।

धर्मसिंह—उस पहाड़ी पर चढ़कर चारों ओर देख लेना उचित है। ऐसा न हो कि अचानक महरठे कहीं से आकर हमें पकड़ लें।

चरनसिंह—अजी, चले भी चलो।

धर्मसिंह—नहीं, आप यहां ठहरिए, मैं जाकर देख आता हूं।

धर्मसिंह ने घोड़ा पहाड़ी की ओर फेर दिया। घोड़ा शिकारी था, उसे पक्षी की भांति ले उड़ा। वह अभी पहाड़ी की चोटी पर नहीं पहुंचा था कि सौ कदम आगे तीस मरहठे दिखाई पड़े। धर्मसिंह लौट पड़ा, परन्तु मरहठों ने उसे देख लिया और बन्दूकें संभालकर घोड़े दौड़ा, उस पर लपके। धर्मसिंह बेतहाशा नीचे उतरा और चरनसिंह को पुकारकर कहने लगा—बन्दूकें तैयार रखो और घोड़े से बोला—प्यारे, अब समय है। देखना, ठोकर न खाना नहीं तो झगड़ा समाप्त हो जायगा, एक बार बन्दूक ले लेने दे....फिर मैं किसी के बांधने का नहीं। उधर चरनसिंह मरहठों को देखकर घोड़े को चाबुक मार, ऐसा भागा कि गरदे में घोड़े की पूंछ ही पूंछ दिखाई दी, और कुछ नहीं।

धर्मसिंह ने देखा कि बचने की आशा नहीं है, खाली तलवार से क्या बनेगा, वह किले की ओर भाग निकला; परन्तु छह मरहठे उस पर टूट पड़े। धर्मसिंह का घोड़ा तेज था, पर उनके घोड़े उससे भी तेज थे। तिस पर यह बात हुई कि वे सामने से आ रहे थे। धर्मसिंह चाहता था कि घोड़े की बाग मोड़कर उसे दूसरे रास्ते पर डाल दे, परन्तु घोड़ा इतना तेज जा रहा था कि रुक नहीं सका। सीधा मरहठों से जा टकराया। सजे घोड़े पर सवार बन्दूक उठाए लाल दाढ़ी वाला एक मरहठा दांत निकालता हुआ उसकी ओर लपका। धर्मसिंह ने कहा कि मैं इन दुष्टों को भली-भांति जानता हूं। यदि वे मुझे जीता पकड़ लेंगे तो किसी कन्दरा में फेंककर कोड़े मारा करेंगे, इसलिए या तो आगे निकलो, नहीं तो तलवार से एक-दो को ढेर कर दो। मरना अच्छा है, कैद होना ठीक नहीं। धर्मसिंह और मरहठों में दस हाथ का ही अन्तर रह गया था कि पीछे से गोली चली। धर्मसिंह का घोड़ा घायल होकर गिरा और वह भी उसके साथ ही धरती पर आ रहा।

धर्मसिंह उठना चाहता था कि दो मरहठे आकर उसकी मुस्कें कसने लगे। धर्मसिंह ने धक्का देकर उन्हें दूर गिरा दिया, परन्तु दूसरों ने आकर बन्दूक के कुन्दों से उसे मारना शुरू किया और वह घायल होकर फिर पृथ्वी पर गिर पड़ा। मरहठों ने उसकी मुस्कें कस लीं, कपड़े फाड़ दिए, रुपया-पैसा सब छीन लिया। धर्मसिंह ने देखा कि घोड़ा जहां गिरा था,

वहीं पड़ा है। एक मरहठे ने पास जाकर जीन उतारनी चाही। घोड़े के सिर में एक छेद हो गया था। उसमें से काला रक्त बह रहा था। दो हाथ इधर-उधर की धरती कीचड़ हो गई थी। घोड़ा चित्त पड़ा हवा में पैर पटक रहा था। मरहठे ने गले पर तलवार फेंक दी, घोड़ा मर गया। उसने जीन उतार ली।

लाल दाढ़ी वाला मरहठा घोड़े पर सवार हो गया। दूसरों ने धर्मसिंह को उसके पीछे बिठाकर उसे उसकी कमर से बांध दिया और जंगल का रास्ता लिया।

धर्मसिंह का बुरा हाल था। मस्तक फटा था, लहू बहकर आंखों पर जम गया था। मुस्कों के मारे कंधा फटा जाता था। वह हिल नहीं सकता था। उसका सिर बार-बार मरहठे की पीठ से टकराता था। मरहठे पहाड़ियों पर ऊपर-नीचे होते हुए एक नदी पर पहुंचे, उसे पार करके एक घाटी मिली। धर्मसिंह यह जानना चाहता था कि वे किधर जा रहे हैं। परन्तु उसके नेत्र बंद थे, वह कुछ न कुछ देख सका।

शाम होने लगी, मरहठे दूसरी नदी पार करके एक पथरीली पहाड़ी पर चढ़ गए। यहां धुआं और कुत्तों का भूंकना सुनायी दिया, मानो कोई बस्ती है। थोड़ी देर चलकर गांव आ गया। मरहठों ने गांव छोड़ दिया, धर्मसिंह को एक ओर धरती पर बिठा दिया। बालक आकर उस पर पत्थर फेंकने लगे। परन्तु एक मरहठे ने उन्हें वहां से भगा दिया। लाल दाढ़ी वाले ने एक सेवक को बुलाया, वह दुबला-पतला आदमी फटा हुआ कुरता पहने था। मरहठे ने उससे कुछ कहा, वह जाकर बेड़ी उठा लाया। मरहठों ने धर्मसिंह की मुस्कें खोलकर उसके पांव में बेड़ी डाल दी और उसे कोठरी में कैद करके ताला लगा दिया।

2

उस रात धर्मसिंह जरा भी नहीं सोया। गरमी की ऋतु में रातें छोटी होती हैं, शीघ्र प्रातःकाल हो गया। दीवार में एक झरोखा था, उसी से अन्दर उजाला आ रहा था। झरोखे के द्वारा धर्मसिंह ने देखा कि पहाड़ी के नीचे एक सड़क उतरी है, दायीं ओर एक मरहठे का झोंपड़ा है। उसके सामने दो पेड़ हैं। द्वार पर एक काला कुत्ता बैठा हुआ है। पास एक बकरी और उसके बच्चे पूंछ हिलाते फिर रहे हैं। एक स्त्री चमकीले रंग की साड़ी पहने पानी की गागर सिर पर धरे हुए एक बालक की उंगली पकड़े झोंपड़े की ओर आ रही है। वह अन्दर गयी कि लाल दाढ़ी वाला मरहठा रेशमी कपड़े पहने, चांदी के मुट्ठे की तलवार लटकाए हुए बाहर आया और सेवक से कुछ बात करके चल दिया। फिर दो बालक घोड़ों को पानी पिलाकर लौटते हुए दिखाई पड़े। इतने में कुछ बालक कोठरी के निकट आकर झरोखे में टहनियां डालने लगे। प्यास के मारे धर्मसिंह का कंठ सूखा जाता था। उसने उन्हें पुकारा, परन्तु वे भाग गए।

इतने में किसी ने कोठरी का ताला खोला। लाल दाढ़ी वाला मरहठा भीतर आया। उसके साथ एक नाटा पुरुष था। उसका सांवला रंग, निर्मल काले नेत्र, गोल कपोल, कतरी हुई महीन दाढ़ी थी। वह प्रसन्न-मुख हंसोड़ था। यह पुरुष लाल दाढ़ी वाले मरहठे से बहुत बढ़िया वस्त्र पहने हुए था, सुनहरी गोट लगी हुई नीले रंग की रेशमी अचकन थी। चांदी के म्यान वाली तलवार, कलाबत्तू का जूता था। लाल दाढ़ीवाला मरहठा कुछ बड़बड़ाता

धर्मसिंह को कनखियों से देखता द्वार पर खड़ा रहा। सांवला पुरुष आकर धर्मसिंह के पास बैठ गया और आंखें मटकाकर जल्दी-जल्दी अपनी मातृभाषा में कहने लगा—बड़ा अच्छा राजपूत है।

धर्मसिंह ने एक अक्षर भी न समझा—हां, पानी मांगा। सांवला पुरुष हंसा, तब धर्म ने होंठ और हाथों के संकेत से जताया कि मुझे प्यास लगी है। सांवले पुरुष ने पुकारा—सुशीला!

एक छोटी-सी कन्या दौड़ती हुई भीतर आयी। तेरह वर्ष की अवस्था, सावंला रंग, दुबली-पतली, नेत्र काले और रसीले, सुन्दर बदन, नीली साड़ी, गले में स्वर्णहार पहने हुए। सांवले पुरुष की पुत्री मालूम पड़ती थी। पिता की आज्ञा पाकर वह पानी का एक लोटा ले आई और धर्मसिंह को भौंचक्की होकर देखने लगी कि वह कोई वनचर है।

फिर खाली लोटा लेकर सुशीला ने ऐसी छलांग मारी कि सांवला पुरुष हंस पड़ा। तब पिता के कहने से कुछ रोटी ले आई। इसके पीछे वे सब बाहर चले गए और कोठरी का ताला बंद कर दिया।

कुछ देर पीछे एक सेवक आकर मराठी में कुछ कहने लगा। धर्म ने समझा कि कहीं चलने को कहता है। वह उसके पीछे हो लिया, बेड़ी के कारण लंगड़ाकर चलता था। बाहर आकर धर्म ने देखा कि दस घरों का एक गांव है। एक घर के सामने तीन लड़के तीन घोड़े पकड़े खड़े हैं। सांवला पुरुष बाहर आया और धर्म को भीतर आने को कहा। धर्म भीतर चला गया, देखो कि मकान स्वच्छ है, गोबरी फिरी हुई है, सामने की दीवार को आगे गद्दा बिछा हुआ है। तकिये लगे हुए हैं। दायी-बायीं दीवारों पर परदे गिरे हुए हैं। उन पर चांदी के काम की बन्दूकें, पिस्तौलें और तलवारें लटकी हुई हैं। गद्दे पर पांच मरहठे बैठे हैं। एक सांवला पुरुष दूसरा लाल दाढ़ी वाला और तीन अतिथि—सब भोजन कर रहे हैं।

धर्मसिंह धरती पर बैठ गया। भोजन से निश्चिंत होकर एक मरहठा बोला—देखो राजपूत, तुम्हें दयाराम ने पकड़ा है, (सांवले पुरुष की ओर उंगली करके) और सम्पतराव के हाथ बेच डाला है, अतएव अब सम्पतराव तुम्हारा स्वामी है।

धर्मसिंह कुछ न बोला। सम्पतराव हंसने लगा।

मरहठा—वह यह कहता है कि तुम घर से रुपये मंगवा लो, दण्ड दे देने पर तुमको छोड़ दिया जाएगा।

धर्मसिंह—कितने रुपये?

मरहठा—तीन हजार।

धर्मसिंह—मैं तीन हजार नहीं दे सकता।

मरहठा—कितना दे सकते हो?

धर्मसिंह—पांच सौ।

यह सुनकर मरहठे सिटपिटाए। सम्पतराव दयाराम से तकरार करने लगा और इतनी जल्दी-जल्दी बोलने लगा कि उसके मुंह से झाग निकल आया। दयाराम ने आंखें नीची कर लीं थोड़ी देर में मरहठे शांत हुए और फिर मोल-तोल करने लगे। एक मरहठे ने कहा—पांच सौ रुपये से काम नहीं चल सकता। दयाराम को सम्पतराव का रुपया देना है। पांच सौ रुपये में तो सम्पतराव ने तुम्हें मोल ही लिया है, तीन हजार से कम नहीं हो सकता। यदि

रुपया न मंगाओगे तो तुम्हें कोड़े मारे जायेंगे।

धर्म ने सोचा कि जितना डरोगे, यह दुष्ट उतना ही डरायेंगे। वह खड़ा होकर बोला—इस भलेमानुस से कह दो कि यदि मुझे कोड़ों का भय दिखायेगा तो मैं घर वालों को कुछ नहीं लिखूंगा। मैं तुम चाण्डालों से नहीं डरता।

सम्पतराव—अच्छा, एक हजार मंगाओ।

धर्मसिंह—पांच सौ से एक कौड़ी ज्यादा नहीं। यदि तुम मुझे मार ड़ालोगे तो इस पांच सौ से भी हाथ धो बैठोगे।

यह सुनकर मरहठे आपस में सलाह करने लगे। इतने में एक सेवक एक मनुष्य को लिये हुए भीतर आया। यह मनुष्य मोटा था, नंगे पैर, बेड़ी पड़ी हुई। धर्मसिंह उसे देखकर चकित हो गया। वे पुरुष चरनसिंह था। सेवक ने चरनसिंह को धर्म के पास बैठा दिया। वे एक-दूसरे से अपनी बिथा करने लगे। धर्मसिंह ने अपना वृत्तांत कह सुनाया। चरनसिंह बोला—मेरा घोड़ा अड़ गया, बन्दूक रंजक चाट गई और सम्पतराव ने मुझे पकड़ लिया।

सम्पतराव—(फिर) अब तुम दोनों एक ही स्वामी के वश में हो। जो पहले रुपया दे देगा, वही छोड़ दिया जाएगा। (धर्मसिंह की ओर देखकर) देखा, तुम कैसे क्रोधी हो और तुम्हारा साथी कैसा सुशील है। उसने पांच हजार रुपये भेजने को घर लिख दिया है, इस कारण उसका पालन-पोषण भली-भांति किया जाएगा।

धर्मसिंह -मेरा साथी जो चाहे सो करे, वह धनवान है, और मैं तो पांच सौ रुपये से अधिक नहीं दे सकता, चाहे मारो, चाहे छोड़ो।

मरहठे चुप हो गए। सम्पतराव झट से कलमदान उठा लाया। कागज, कमल, दवात निकालकर धर्म की पीठ ठोंक, उसे लिखने को कहा। वह पांच सौ रुपये लेने पर राजी हो गया था।

धर्मसिंह—जरा ठहरो। देखो, हमारा पालन-पोषण भली-भांति करना, हमें एक साथ रखना, जिससे हमारा समय अच्छी तरह कट जाए। बेड़ियां भी निकाल दो।

सम्पतराव—जैसा चाहे वैसा भोजन करो। बेड़ियां नहीं निकाल सकता। शायद तुम भाग जाओ। हां, रात को निकाल दिया करूंगा।

धर्मसिंह ने पत्र लिख दिया। परन्तु पता सब झूठ लिखा, क्योंकि मन में निश्चय कर चुका था कि कभी न कभी भाग जाऊंगा।

तब मरहठों ने चरनसिंह और धर्मसिंह को एक कोठरी में पहुंचाकर एक लोटा पानी, कुछ बाजरे की रोटियां देकर ऊपर से ताला बंद कर दिया।

3

धर्मसिंह और चरनसिंह को इस प्रकार रहते-रहते एक महीना गुजर गया। सम्पतराव उनको देखकर सदैव हंसता रहता था, पर खाने को बाजरे की अधपकी रोटी के सिवाय और कुछ न देता था। चरनसिंह उदास रहता और कुछ न करता। दिन-भर कोठरी में पड़ा सोया रहता और दिन गिनता रहता था कि रुपया कब आए कि छूटकर अपने घर पहुंचूं। धर्म तो जानता था कि रुपया कहां से आना है। जो कुछ घर भेजता था, माता उसी पर निर्वाह

करती थी। वह बेचारी पांच सौ रुपये कैसे भेज सकती है। ईश्वर की दया होगी तो मैं भाग जाऊंगा। वह घात में लगा हुआ था। कभी सीटी बजाता हुआ गांव का चक्कर लगाता, कभी बैठकर मिट्टी के खिलौने और टोकरियां बनाता। वह हाथों का चतुर था।

एक दिन उसने एक गुड़िया बनाकर छत पर रख दी। गांव की स्त्रियां जब पानी भरने आयीं, तो सुशीला ने उनको बुलाकर गुड़िया दिखलायी। वे सब हंसने लगीं। धर्मसिंह ने गुड़िया सबके आगे कर दी, परन्तु किसी ने नहीं ली। वह उसे बाहर रखकर कोठरी में चला गया कि देखें क्या होता है। सुशीला गुड़िया उठाकर भाग गई।

अगले दिन धर्म ने देखा कि सुशीला द्वार पर बैठी गुड़िया के साथ खेल रही है। एक बुढ़िया आयी। उसने गुड़िया छीनकर तोड़ डाली, सुशीला भाग गयी। धर्मसिंह ने और गुड़िया बनाकर सुशीला को दे दी। फल यह हुआ कि वह एक दिन छोटा-सा लोटा लायी, भूमि पर रखा और धर्म को दिखाकर भाग गई। धर्म ने देखा तो उसमें दूध था। अब सुशीला नित्य अच्छे-अच्छे भोजन लाकर धर्म को देने लगी।

एक दिन आंधी आयी। एक घंटा मूसलाधार मेंह बरसा, नदिधां-नाले भर गए। बांध पर सात-फुट पानी चढ़ आया। जहां-तहां झरने झरने लगे, धार ऐसी प्रबल थी कि पत्थर लुढ़के जाते थे। गांव की गलियों में नदियां बहने लगीं। आंधी थम जाने पर धर्मसिंह ने सम्पतराव से चाकू मांगकर एक पहिया बना, उसके दोनों ओर दो गुड़िया बांधकर पहिए को पानी में छोड़ दिया, वह पानी के बल से चलने लगा। सारा गांव इकट्ठा हो गया और गुड़ियों को नाचते देखकर तालियां बजाने लगा। सम्पतराव के पास एक पुरानी बिगड़ी हुई घड़ी पड़ी थी। धर्मसिंह ने उसे ठीक कर दिया। उसके पीछे और लोग अपने घंटे, पिस्तौल, घड़ियां ला-लाकर धर्म से ठीक कराने लगे। इस कारण सम्पतराव ने प्रसन्न होकर धर्मसिंह को एक चिमटी, एक बरमी और एक रेती दे दी।

एक दिन एक मरहठा रोगी हो गया। सब लोग धर्मसिंह के पास आकर दवा-दारू मांगने लगे। धर्म कुछ वैद्य तो था ही नहीं, पर उसने पानी में रेता मिलाकर कुछ मन्त्र-सा पढ़कर कहा कि जाओ, यह पानी रोगी को पिला दो। पानी पिलाने पर रोगी चंगा हो गया। धर्म के भाग्य अच्छे थे। अब बहुत से मरहठे उसके मित्र बन गए। हां, कुछ लोग अब भी उस पर संदेह करते थे।

दयाराम धर्मसिंह से चिढ़ता था। जब उसे देखता, मुंह फेर लेता। पहाड़ी के नीचे एक और बूढ़ा रहता था। मंदिर में आने के समय धर्मसिंह उसे देखा करता था। यह बूढ़ा नाटा था। दाढ़ी-मूंछ बर्फ की भांति श्वेत, मुंह लाला, उसमें झुर्रियां पड़ी हुईं, नाक नुकीली, नेत्र निर्दयी, दो दाढ़ों के सिवाय सब दांत टूटे हुए। वहीं लकड़ी टेकता, चारों ओर भेड़िए की तरह झांकता हुआ मंदिर में जाने के समय जब कभी धर्मसिंह को देख पाता था तो जलकर राख हो जाता और मुंह फेर लेता था।

एक दिन धर्मसिंह बूढ़े का घर देखने के लिए पहाड़ी के नीचे उतरा। कुछ दूर जाने पर एक बगीचा मिला। चारों ओर पत्थर की दीवार बनी हुई थी। बीच में मेवे के वृक्ष लगे हुए थे। वृक्षों में एक झोंपड़ा था। धर्मसिंह आगे बढ़कर देखना चाहता था कि उसकी बेड़ी खड़की। बूढ़ा चौंका। कमर से पिस्तौल निकालकर उसने धर्मसिंह पर गोली चलाई, पर वह दीवार की ओट में हो गया। बूढ़े को आकर सम्पतराव से कहते सुना कि धर्मसिंह बड़ा दुष्ट

है। सम्पतराव ने धर्म को बुलाकर पूछा—तुम बूढ़े के घर क्यों गये थे?

धर्मसिंह बोला—मैंने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा। मैं केवल यह देखने लगा था कि वह बूढ़ा कहां रहता है। सम्पत ने बूढ़े को शांत करने का बहुत यत्न किया, पर वह बड़बड़ाता ही रहा। धर्मसिंह केवल इतना ही समझ सका कि बूढ़ा यह कह रहा है कि राजपूतों का गांव में रहना अच्छा नहीं, उन्हें मार देना चाहिए। बूढ़ा चल दिया, तो धर्मसिंह ने सम्पतराव से पूछा कि बूढ़ा कौन है?

सम्पतराव—यह बड़ा आदमी है, इसने बहुत राजपूत मारे हैं। पहले यह बड़ा धनाढ्य था। इसके तीन स्त्रियां और आठ पुत्र थे। सब एक ही गांव में रहा करते थे। एक दिन राजपूतों ने धावा करके गांव जला दिया। इसके सात पुत्र तो मर गए, आठवां कैद हो गया। यह बूढ़ा राजपूतों के पास जाकर और उनके संग रहकर अपने पुत्र की खोज लगाने लगा। अन्त में उसे पाकर अपने हाथ से उसका वध करके भाग आया। फिर विरक्त होकर तीर्थ-यात्रा को चला गया। अब यह पहाड़ी के नीचे रहता है। यह बूढ़ा कहता था कि तुम्हें मार डालना उचित है; परंतु मैं तुमको मार नहीं सकता, फिर रुपया कहां से मिलेगा? इसके सिवाय मैं तुम्हें यहां से जाने भी न दूंगा।

इस तरह धर्म यहां एक महीना रहा। दिन को वह इधर-उधर फिरा करता या कोई चीज़ बनाता, लेकिन रात को वह दीवार में छेद किया करता। दीवार पत्थर की थी, खोदना सहज नहीं था। लेकिन वह पत्थरों को रेती से काटता था। यहां तक कि अन्त में उसने अपने निकलने भर को एक छेद बना लिया। बस, अब उसे यह चिन्ता हुई कि रास्ता मालूम हो जाय।

एक दिन सम्पतराव शहर गया हुआ था। धर्मसिंह भोजन करके तीसरे पहर रास्ता देखने की इच्छा से सामने वाली पहाड़ी की ओर चल दिया। सम्पतराव बाहर जाते समय अपने पुत्र से सदैव कह जाया करता था कि धर्मसिंह को आंखों से परे न होने देना। इस कारण बालक उसके पीछे दौड़ा और चिल्लाकर कहने लगा—मत जाओ, मेरे पिता की आज्ञा नहीं है यदि तुम नहीं लौटोगे, तो मैं गांव वालों को बुला लूंगा।

धर्मसिंह बालक को फुसलाने लगा—मैं दूर नहीं जाता, केवल उस पहाड़ी पर जाने की इच्छा है। रोगियों के वास्ते मुझे एक बूटी की जरूरत है, तुम भी साथ चलो। बेड़ी के होते कैसे भागूंगा? असम्भव है। आओ, कल मैं तुमको तीर-कमान बना दूंगा।

बालक मान गया। पहाड़ी की चोटी कुछ दूर न थी। बेड़ी के कारण चलना कठिन था, परन्तु ज्यों-त्यों करके धर्मसिंह चोटी पर पहुंचकर चारों ओर देखने लगा। दक्षिण दिशा में एक घाटी दिखायी दी। उसमें घोड़े चल रहे थे। घाटी के नीचे एक गांव था। उससे परे एक ऊंची पहाड़ी थी, फिर एक और पहाड़ी थी। इन पहाड़ियों के बीचोंबीच जंगल था, उससे परे पहाड़ थे, एक से एक ऊंचे। पूर्व और पश्चिम दिशा में भी ऐसी ही पहाड़ियां थीं। कन्दराओं में से जहां-तहां गांवों का धुआं उठ रहा था। वास्तव में यह मरहठों का देश था। उत्तर की ओर देखा, तो पैरों-तले एक नदी बह रही है और वहीं गांव है, जिसमें वह रहा करता था। गांव के चारों ओर बगीचे लगे हुए थे और स्त्रियां नदी पर बैठी वस्त्र धो रही थीं, और ऐसी जान पड़ती थीं मानो गुड़िया बैठी हैं। गांव से परे एक पहाड़ी थी, परन्तु दक्षिण दिशा वाली पहाड़ी से नीची। उससे परे दो पहाड़ियां और थीं, उन पर घना जंगल

था। इनके बीच में मैदान था। मैदान के पार बहुत दूर पर कुछ धुआं-सा दिखाई दिया। अब धर्मसिंह को याद आया कि किले में रहते हुए सूर्य कहां से उदय होता और कहां अस्त हुआ करता था। उसे निश्चय हो गया कि धुएं का बादल हमारा किला है और उसी मैदान में से जाना होगा।

अंधेरा हो गया। मंदिर का घंटा बजने लगा। पशु घर लौट आये। धर्मसिंह भी अपनी कोठरी में आ गया। रात अंधेरी थी। उसने उसी रात भागने का विचार किया पर दुर्भाग्य से सन्ध्या समय मरहठे घर लौट आये। आज उसके साथ एक मुर्दा था। मालूम होता था कि कोई मरहठा युद्ध में मारा गया है।

मरहठे उस शव को स्नान कराकर श्वेत वस्त्र लपेट, अर्थि बना 'राम नाम सत्त' कहते हुए गांव से बाहर जाकर शमशान-भूमि में दाह करके घर लौट आये। तीन दिन उपवास करने के बाद चौथे दिन बाहर चले गए। सम्पतराव घर ही में रहा। रात अंधेरी थी, शुक्ल पक्ष अभी लगा ही था।

धर्मसिंह ने सोचा कि रात को भागना ठीक है। चरनसिंह से कहा—भाई चरन सुरंग तैयार है। चलो, भाग चलें।

चरनसिंह—(भयभीत होकर) रास्ता तो जानते ही नहीं, भागेंगे कैसे?

धर्मसिंह—रास्ता मैं जानता हूं।

चरनसिंह—माना कि तुम रास्ता जानते हो, परन्तु एक रात में किले तक नहीं पहुंच सकते।

धर्मसिंह—यदि किले तक नहीं पहुंच सकेंगे तो रास्ते में कहीं जंगल में छिपकर दिन काट लेंगे। देखो, मैंने भोजन का प्रबन्ध भी कर लिया है। यहां पड़े-पड़े सड़ने में क्या लाभ है? यदि घर में रुपया न आया तो क्या बनेगा? राजपूतों ने एक मरहठा मार डाला है। इस कारण यह सब बहुत बिगड़े हुए हैं। भागना ही उचित है।

चरनसिंह—अच्छा, चलो।

4

गांव में जब सन्नाटा हो गया, तो धर्मसिंह सुरंग से बाहर निकल आया। पर चरनसिंह के पैर से एक पत्थर गिर पड़ा। धमाका हुआ तो सम्पतराव का कुत्ता भूंका, लेकिन धर्मसिंह ने उसे पहले ही हिला लिया था, उसका शब्द सुनकर वह चुप हो गया।

रात अंधेरी थी। तारे निकले हुए थे। चारों ओर सन्नाटा था। घाटियां धुन्ध से ढंकी हुई थीं। चलते-चलते रास्ते में किसी छत पर से एक बूढ़े के राम नाम जपने की आवाज सुनाई दी। दोनों दुबक गए। थोड़ी देर में फिर सन्नाटा छा गया, तब वे आगे बढ़े।

धुन्ध बहुत छा गई। धर्मसिंह तारों की ओर देखकर राह चलने लगा। ठंड के कारण चलना सहज न था, धर्मसिंह कूदता-फांदता चला जाता था, चरनसिंह पीछे रहने लगा।

चरनसिंह—भाई धर्म, जरा ठहरो, जूतों ने मेरे पैरों में छाले डाल दिए।

धर्मसिंह—जूते निकालकर फेंक दो, नंगे पैर चलो।

चरनसिंह ने जूते निकालकर फेंक दिए, पत्थरों ने उसके पांव घायल कर दिए। वह

ठहर-ठहरकर चलने लगा।

धर्मसिंह—देखों चरन, पांव तो फिर चंगे हो जायेंगे, पर यदि मरहठों ने आ पकड़ा तो फिर समझ लो कि जान गई।

चरनसिंह चुप होकर पीछे चलने लगा। थोड़ी दूर जाने पर धर्मसिंह बोला—हाय, हाय, हम रास्ता भूल गए, हमें तो बायीं ओर की पहाड़ी पर चढ़ना चाहिए था।

चरनसिंह—ठहरो, दम जरा लेने दो। मेरे पैर घायल हो गए हैं। देखो, रक्त बह रहा है।

धर्मसिंह—कुछ चिन्ता नहीं, ये सब ठीक हो जायेंगे, तुम चले चलो।

वे लौटकर बायीं ओर की पहाड़ी पर चढ़ गए। आगे जंगल मिला। झाड़ियों ने उनके सब वस्त्र फाड़ डाले। इतने में कुछ आहट हुई, वे डर गए। समीप जाने पर मालूम हुआ कि बारहसिंगा भागा जा रहा है।

प्रातःकाल होने लगा। किला यहां से अभी सात मील पर था। मैदान में पहुंचकर चरनसिंह बैठ गया और बोला—मेरे पांव थक गए, मैं अब नहीं चल सकता।

धर्मसिंह—(क्रोध से) अच्छा तो राम-राम, मैं अकेला ही चलता हूं।

चरनसिंह उठकर साथ हो लिया। तीन मील चलने पर अचानक सामने से घोड़े की टाप सुनाई दी। वे भागकर जंगल में घुस गए।

धर्मसिंह ने देखा कि घोड़े पर चढ़ा हुआ एक मरहठा जा रहा है। जब वह निकल गया तो धर्म बोला कि भगवान् ने बड़ी दया की कि उसने हमें नहीं देखा। चरन भाई, अब चलो।

चरनसिंह—मैं नहीं चल सकता, मुझमें ताकत नहीं।

चरनसिंह मोटा आदमी था, ठंड के मारे उसके पैर अकड़ गए। धर्मसिंह उसे उठाने लगा, तो चरनसिंह ने चीख मारी।

धर्मसिंह—हैं-हैं! यह क्या, मरहठा तो अभी पास ही जा रहा है, कहीं सुन न ले अच्छा, यदि तुम नहीं चल सकते हो, तो मेरी पीठ पर बैठ जाओ।

धर्मसिंह ने चरनसिंह को पीठ पर बिठलाकर किले की राह ली।

धर्मसिंह—भाई चरनसिंह, सीधी तरह बैठे रहो, गला क्यों घोंटते हो?

5

अब उधर की बात सुनिए। मरहठे ने चरनसिंह का शब्द सुन लिया। उसने गोली चलायी, परन्तु खाली गई। मरहठा दूसरे साथियों को लेने के लिए घोड़ा दौड़ाकर चल दिया।

धर्मसिंह—चरन, मालूम होता है कि उस दुष्ट ने तुम्हारी आवाज सुन ली। वह अपने साथियों को बुलाने गया है। यदि उसके आने से पहले-पहले हम दूर नहीं निकल जायेंगे, तो समझो कि जान गई। (मन में) यह बोझा मैंने क्यों उठाया, यदि मैं अकेला होता तो अब तक कभी का निकल गया होता।

चरनसिंह—तुम अकेले चले जाओ, मेरे कारण प्राण क्यों खोते हो?

धर्मसिंह—कदापि नहीं, साथी को छोड़कर चल देना धर्म के विरुद्ध है।

धर्मसिंह फिर चरनसिंह को कन्धे पर लादकर चलने लगा। आधा मील चलने पर एक झरना मिला। धर्मसिंह बहुत थक गया था। चरनसिंह को कन्धे से उतारकर विश्राम करने

लगा। पानी पीना ही चाहता था कि पीछे से घोड़ों की टापें सुनाई दीं। दोनों भागकर झाड़ियों में छिप गए।

मरहठे ठीक वहीं आकर ठहरे, जहां दोनों छिपे हुए थे। उन्होंने सूंघ लेने को कुत्ता छोड़ा। फिर क्या था, दोनों पकड़े गए। मरहठों ने दोनों को घोड़ो पर लाद लिया। राह में सम्पतराव मिल गया, अपने कैदियों को पहचाना। तुरन्त उन्हें अपने साथ वाले घोड़ों पर बैठाया और दिन निकलते-निकलते वे सब ग्राम में पहुंच गए।

उसी समय बूढ़ा भी वहां आ गया। सब मरहठे विचार करने लगे कि क्या किया जाए। बूढ़े ने कहा कि कुछ मत करो, इन दोनों का तुरन्त वध कर दो।

सम्पतराव—मैंने तो उन पर रुपया लगाया है, मार कैसे डालूं?

बूढ़ा—राजपूतों को पालना पाप है। वे तुम्हें सिवाय दुःख के और कुछ न देंगे, मारकर झगड़ा समाप्त करो।

मरहठे इधर-उधर चले गए। सम्पतराव धर्मसिंह के पास आया और बोला—देखो धर्मसिंह, पन्द्रह दिन के अन्दर यदि रुपया न आया, और तुमने फिर भागने का साहस किया, तो मैं तुम्हें अवश्य मार डालूंगा, इसमें सन्देह नहीं। अब शीघ्र घर वालों को पत्र लिख डालो कि तुरन्त रुपया भेज दें।

दोनों ने पत्र लिख दिए। फिर वे पहले की भांति कैद कर दिए गए, परन्तु कोठरी में नहीं, अब की बार छः हाथ चौड़े गड्ढे में बंद किए गए।

6

अब उन्हें अत्यन्त कष्ट दिया जाने लगा। न बाहर जा पाते थे, न बेड़ियां निकाली जाती थीं। कुत्तों के समान अधपकी रोटी, एक लोटे में पानी पहुंचा दिया जाता था, और कुछ नहीं। गढ़ा सीला था, उसमें अंधेरा और अति दुर्गंध थी। चरनसिंह का सारा शरीर-सूख गया, धर्मसिंह मन-मलीन, तन-छीन रहने लगा। करे तो क्या करे?

धर्म एक दिन बहुत उदास बैठा था कि ऊपर से रोटी गिरी, देखा तो सुशीला बैठी हुई है।

धर्मसिंह ने सोचा, क्या सुशीला इस काम में मेरी सहायता कर सकती है। अच्छा, इसके लिए कुछ खिलौने बनाता हूं। कल जब आयेगी, तब इसे देकर फिर बात करूंगा।

दूसरे दिन सुशीला नहीं आयी। धर्मसिंह के कान में घोड़ों के टापों की आवाज आयी। कई आदमी घोड़ों पर सवार उधर से निकल गए। वे सब बातें करते जाते थे। धर्मसिंह को और तो कुछ न समझ में आया—हां, 'राजपूत' शब्द बार-बार सुनायी दिया। इससे उसने अनुमान किया कि राजपूतों की सेना कहीं निकट आ पहुंची है।

तीसरे दिन सुशीला फिर आयी और दो रोटियां गढ़े में फेंक दीं, तब धर्मसिंह बोला—तू कल क्यों नहीं आयी? देख, मैंने तेरे वास्ते ये खिलौने बनाये हैं।

सुशीला—खिलौने लेकर क्या करूंगी; मुझे खिलौने नहीं चाहिए। उन्होंने तुम्हें मार डालने का विचार कल पक्का कर लिया है। सब मरहठे इकट्ठे हुए थे, इसी कारण मैं कल नहीं आ सकी।

धर्मसिंह—कौन मारना चाहता है?

सुशीला—मेरा पिता। बूढ़ों ने यह सलाह दी है कि राजपूतों की सेना निकट आ गई है, तुम्हें मार डालना ही ठीक है। मुझे तो यह सुनकर रोना आता है।

धर्मसिंह—यदि तुम्हें दया आती है, तो एक बांस ला दो।

सुशीला—यह नहीं हो सकता।

धर्मसिंह—सुशीला, दया कर, मैं हाथ जोड़कर कहता हूं कि एक बांस ला दो।

सुशीला—बांस कैसे लाऊं, वे सब घर पर बैठे हैं, देखे लेंगे। यह कहकर वह चली गई।

सूर्य अस्त हो गया। तारे चमकने लगे। चांद अभी नहीं निकला था, मन्दिर का घंटा बजा, बस फिर सन्नाटा हो गया। धर्मसिंह इस विचार में बैठा था कि सुशीला बांस लायेगी अथवा नहीं।

अचानक ऊपर से मिट्टी गिरने लगी। देखा तो सामने की दीवार में बांस लटक रहा है। धर्मसिंह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बांस को नीचे खींच लिया।

बाहर आकाश में तारे चमक रहे थे। गढ़े के किनारे पर मुंह रखकर धीरे से सुशीला ने कहा—धर्मसिंह, सिवाय दो के और सब बाहर चले गये हैं।

धर्मसिंह ने चरनसिंह से कहा—भाई चरन! आओ, एक बार फिर यत्न कर देखें, हिम्मत न हारो। चलो, मैं तुम्हारी सहायता करने को तैयार हूं।

चरनसिंह—मुझमें तो करवट लेने की शक्ति नहीं, चलना तो एक ओर रहा। मैं नहीं भाग सकता।

धर्मसिंह—अच्छा, राम-राम, परन्तु मुझे निर्दयी मत समझना।

धर्मसिंह चरनसिंह से गले मिला, बांस का एक सिरा सुशीला ने पकड़ा, दूसरा सिरा धर्मसिंह ने। इस भांति वह बाहर निकल आया।

धर्मसिंह—सुशीला, तुम्हें भगवान् कुशल से रखें। मैं जन्म-भर तुम्हारा जस गाऊंगा। अच्छा, जीती रहो, मुझे भूल मत जाना।

धर्मसिंह ने थोड़ी दूर जाकर पत्थरों से बेड़ी तोड़ने का बहुत ही यत्न किया, पर वह न टूटी। वह उसे हाथ में उठाकर चलने लगा। वह चाहता था कि चन्द्रमा उदय होने से पहले जंगल में पहुंच जाय, परन्तु पहुंच न सका। चन्द्रमा निकल आया, चारों ओर उजाला हो गया, पर सौभाग्य से जंगल में पहुंचने तक राह में कोई न मिला।

धर्मसिंह फिर बेड़ी तोड़ने लगा, पर सारा यत्न निष्फल हुआ। वह थक गया, हाथ-पांव घायल हो गए। विचारने लगा, अब क्या करूं? बस, चलो, ठहरने का काम नहीं। यदि एक बार बैठ गया, तो फिर उठना कठिन हो जायेगा। माना कि प्रातःकाल से पहले किले में नहीं पहुंच सकता, न सही, दिन-भर जंगल में काट दूंगा, रात आने पर फिर चल दूंगा सहसा पास से दो मरहठे निकले, वह झट झाड़ी में छिप गया।

चांद फीका पड़ गया, सवेरा होने लगा। जंगल पीछे छूट गया, साफ मैदान आ गया। किला दिखाई देने लगा। बायीं ओर देखने पर मालूम हुआ कि थोड़ी दूर पर कुछ राजपूत सिपाही खड़े हैं। धर्मसिंह मग्न हो गया और बोला—अब क्या है, परन्तु ऐसा न हो कि मरहठे पीछे से आ पकड़ें, मैं सिपाहियों तक न पहुंच सकूं, इस कारण जितना भागा जाए भागो।

इतने में बायीं ओर दो सौ कदम की दूरी पर कुछ मरहठे दिखाई दिए। धर्म निराश हो गया, चिल्ला उठा—भाइयो, दौड़ो, दौड़ो! मुझे बचाओ, बचाओ!

राजपूत सिपाहियों ने धर्मसिंह की पुकार सुन ली। मरहठे समीप थे, सिपाही दूर थे। वे दौड़े, धर्मसिंह भी बेड़ी उठाकर 'भाइयो, भाइयो' कहता हुआ ऐसा भागा कि झट सिपाहियों से जा मिला, मरहठे डरकर भाग गए।

राजपूत पूछने लगे कि तुम कौन हो और कहां से आये हो, परन्तु धर्मसिंह घबराया हुआ 'भाइयो, भाइयो' पुकारता चला जाता था। निकट आने पर सिपाहियों ने उसे पहचान लिया। धर्मसिंह सारा वृत्तान्त कहकर बोला—भाइयो, इस तरह मैं घर गया और विवाह किया। विधाता की यही लीला थी।

एक महीना पीछे पांच हजार मुद्रा देकर चरनसिंह छूटकर किले में आया। वह उस समय अधमुए के समान हो रहा था।

ध्रुव-निवासी रीछ का शिकार

हम एक दिन रीछ के शिकार को निकले। मेरे साथी ने एक रीछ पर गोली चलायी। वह गहरी नहीं लगी। रीछ भाग गया। बर्फ पर लहू के चिह्न बाकी रह गए।

हम एकत्र होकर यह विचार करने लगे कि तुरन्त पीछा करना चाहिए या दो-तीन दिन ठहरकर उसके पीछे जाना चाहिए। किसानों से पूछने पर एक बूढ़ा बोला—तुरन्त पीछा करना ठीक नहीं, रीछ को टिक जाने दो। पांच दिन पीछे शायद वह मिल जाए। अभी पीछा करने पर तो वह डरकर भाग जायेगा।

इस पर एक दूसरा जवान बोला—नहीं-नहीं, हम आज ही रीछ को मार सकते हैं। वह बहुत मोटा है, दूर नहीं जा सकता। सूर्य अस्त होने से पहले कहीं न कहीं टिक जाएगा, नहीं तो मैं बर्फ पर चलने वाले जूते पहनकर ढूंढ़ निकालूंगा।

मेरा साथी तुरन्त रीछ का पीछा करना नहीं चाहता था, पर मैंने कहा—झगड़ा करने से क्या मतलब। आप सब गांव को जाइए। मैं और दुर्गा (मेरे सेवक का नाम) रीछ का पीछा करते हैं। मिल गया तो वाह-वाह! दिन-भर और करना ही क्या है?

और सब तो गांव को चले गए, मैं और दुर्गा जंगल में रह गए। अब हम बन्दूकें संभालकर, कमर कस, रीछ के पीछे हो लिये।

रीछ का निशान दूर से दिखाई पड़ता था। प्रतीत होता था कि भागते समय कभी तो वह पेट तक बर्फ में धंस गया है, कभी बर्फ चीरकर निकला है। पहले-पहले तो हम उसकी खोज के पीछे बड़े-बड़े वृक्षों के नीचे चलते रहे, परन्तु घना जंगल आ जाने पर दुर्गा बोला—अब यह राह छोड़ देनी चाहिए, वह यहीं कहीं बैठ गया है। धीरे-धीरे चलो, ऐसा न हो कि डरकर भाग जाए।

हम राह छोड़कर बायीं ओर लौट पड़े। पांच सौ कदम जाने पर सामने वही चिह्न फिर दिखाई दिए। उसके पीछे चलते-चलते एक सड़क पर जा निकले। चिह्नों से जान पड़ता था कि रीछ गांव की ओर गया है।

दुर्गा—महाराज, सड़क पर खोज लगाने से अब कोई लाभ नहीं। वह गांव की ओर नहीं गया। आगे चलकर चिह्नों से पता लग जायेगा कि वह किस ओर गया है।

एक मील आगे जाने पर चिह्नों से ऐसा प्रकट होता था कि रीछ सड़क से जंगल की ओर नहीं, जंगल से सड़क की ओर आया है। उसकी उंगलियां सड़क की तरफ थीं। मैंने पूछा कि दुर्गा, क्या यह कोई दूसरा रीछ है?

दुर्गा—नहीं, यह वही रीछ है, उसने धोखा दिया है। आगे चलकर दुर्गा का कहना सत्य निकला, क्योंकि रीछ दस कदम सड़क की ओर आकर फिर जंगल की ओर लौट गया था।

दुर्गा—अब हम उसे अवश्य मार लेंगे। आगे दलदल है, वह वहीं जाकर बैठ गया है, चलिए।

हम दोनों आगे बढ़े। कभी तो मैं किसी झांड़ी में फंस जाता था, बर्फ पर चलने का अभ्यास न होने के कारण कभी जूता पैर से निकल जाता था। पसीने से भीगकर मैंने कोट कंधे पर डाल लिया, लेकिन दुर्गा बड़ी फुर्ती से चला जा रहा था। दो मील चलकर हम झील के उस पार पहुंच गए।

दुर्गा—देखो, सुनसान झाड़ी पर चिड़ियां बोल रही हैं, रीछ वहीं है। चिड़िया रीछ की महक पा गई हैं।

हम वहां से हटकर आधा मील चले होंगे कि फिर रीछ का खुर दिखाई दिया। मुझे इतना पसीना आ गया कि मैंने साफा भी उतार दिया। दुर्गा को पसीना आ गया था।

दुर्गा—स्वामी, बहुत दौड़-धूप की, अब जरा विश्राम कर लीजिए।

संध्या हो चली थी। हम जूते उतारकर धरती पर बैठ गए और भोजन करने लगे। भूख के मारे रोटी ऐसी अच्छी लगी कि मैं कुछ कह नहीं सकता। मैंने दुर्गा से पूछा कि गांव कितने दूर है?

दुर्गा—कोई आठ मील होगा, हम आज ही वहां पहुंच जायेंगे। आप कोट पहन लें, ऐसा न हो सर्दी लग जाए।

दुर्गा ने बर्फ ठीक करके उस पर कुछ झाड़ियां बिछाकर मेरे लिए बिछौना तैयार कर दिया। मैं ऐसा बेसुध सोया कि इसका ध्यान ही न रहा कि कहां हूं। जागकर देखता हूं कि एक बड़ा भारी दीवानखाना बना हुआ है, उसमें बहुत से उजले-चमकते हुए खम्भे लगे हुए है, उसकी छत तवे की तरह काली है, उसमें रंगदार अनन्त दीपक जगमगा रहे हैं। मैं चकित हो गया। परन्तु तुरन्त मुझे याद आई कि यह तो जंगल है, यहां दीवानखाना कहां? असल में श्वेत खम्भे तो बर्फ से ढंके हुए वृक्ष थे, रंगदार दीपक उनकी पत्तियों में से चमकते हुए तारे थे।

बर्फ गिर रही थी, जंगल में सन्नाटा था। अचानक हमें किसी जानवर के दौड़ने की आहट मिली। हम समझे कि रीछ है, परन्तु पास जाने पर मालूम हुआ कि जंगली खरहा है। हम गांव की ओर चल दिए। बर्फ ने सारा जंगल श्वेत बना रखा था। वृक्षों की शाखाओं में से तारे चमकते और हमारा पीछा करते ऐसे दिखाई देते थे कि मानो सारा आकाश चलायमान हो रहा है।

जब हम गांव पहुंचे तो मेरा साथी सो गया था। मैंने उसे जगाकर सारा वृत्तांत कह सुनाया और जमींदार से अगले दिन के लिए शिकारी एकत्र करने को कहा। भोजन करके

सो रहे। मैं इतना थक गया था कि यदि मेरा साथी मुझे न जगाता, तो मैं दोपहर तक सोया पड़ा रहता। जागकर मैंने देखा कि साथी वस्त्र पहने तैयार है और अपनी बन्दूक ठीक कर रहा है।

मैं—दुर्गा कहां है?

साथी—उसे गये देर हुई। वह कल के निशान पर शिकारियों को इकट्ठा करने गया है।

हम गांव के बाहर निकले। धुन्ध के मारे सूर्य दिखाई न पड़ता था! दो मील चलकर धुआं दिखाई पड़ा। समीप जाकर देखा कि शिकारी आलू भून रहे हैं और आपस में बातें करते जाते हैं। दुर्गा भी वहीं था। हमारे पहुंचने पर वे सब उठ खड़े हुए। रीछ को घेरने के लिए दुर्गा उन सबको लेकर जंगल की ओर चल दिया। हम भी उसके पीछे हो लिये। आधा मील चलने पर दुर्गा ने कहा कि अब कहीं बैठ जाना उचित है। मेरे बायीं ओर ऊंचे-ऊंचे वृक्ष थे। सामने मनुष्य के बराबर ऊंची बर्फ से ढंकी हुई घनी झाड़ियां थीं, इनके बीच से होकर एक पगडंडी सीधी वहां पहुंचती थी, जहां मैं खड़ा हुआ था। दायीं ओर साफ मैदान था। वहां मेरा साथी बैठ गया।

मैंने अपनी दोनों बन्दूकों को भली-भांति देखकर विचारा कि कहां खड़ा होना चाहिए। तीन कदम पीछे हटकर एक ऊंचा वृक्ष था। मैंने एक बन्दूक भरकर तो उसके सहारे खड़ी कर दी, दूसरी घोड़ा चढ़ाकर हाथ में ले ली। म्यान से तलवार निकालकर देख ही रहा था कि अचानक जंगल में से दुर्गा का शब्द सुनाई दिया—"वह उठा, वह उठा!" इस पर सब शिकारी बोल उठे, सारा जंगल गूंज पड़ा। मैं घात में था कि रीछ दिखाई पड़ा और मैंने तुरंत गोली छोड़ी।

अकस्मात् बायीं ओर बर्फ पर कोई काली चीज दिखाई दी। मैंने गोली छोड़ी, परंतु खाली गई और रीछ भाग गया।

मुझे बड़ा शोक हुआ कि अब रीछ इधर नहीं आएगा। शायद साथी के हाथ लग जाए। मैंने फिर बन्दूक भर ली, इतने में एक शिकारी ने शोर मचाया—"यह है, यह है यहां आओ!"

मैंने देखा कि दुर्गा भागकर मेरे साथी के पास आया और रीछ को उंगली से दिखाने लगा। साथी ने निशाना लगाया। मैंने समझा, उसने मारा, परंतु वह गोली भी खाली गई, क्योंकि यदि रीछ गिर जाता तो साथी अवश्य उसके पीछे दौड़ता। वह दौड़ा नहीं, इससे मैंने जाना कि रीछ मरा नहीं।

हैं! क्या आपत्ति आयी, देखता हूं कि रीछ डरा हुआ अंधाधुन्ध भागा मेरी ओर आ रहा है। मैंने गोली मारी, परन्तु खाली गई। दूसरी छोड़ी, वह लगी तो सही, परन्तु रीछ गिरा नहीं। मैं दूसरी बन्दूक उठाना ही चाहता था कि उसने झपटकर मुझे दबा लिया और लगा मेरा मुंह नोंचने। जो कष्ट मुझे उस समय हो रहा था, मैं उसे वर्णन नहीं कर सकता। ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई छुरियों से मेरा मुंह छील रहा है।

इतने में दुर्गा और साथी रीछ को मेरे ऊपर बैठा देखकर मेरी सहायता को दौड़े। रीछ उन्हें देख, डरकर भाग गया। सारांश यह कि मैं घायल हो गया, पर रीछ हाथ न आया और हमें खाली हाथ गांव लौटना पड़ा।

एक मास पीछे हम फिर उस रीछ को मारने के लिए गये, मैं फिर भी उसे न मार सका उसे दुर्गा ने मारा, वह बड़ा भारी रीछ था। उसकी खाल अब तक मेरे कमरे में बिछी हुई है।

मनुष्य का जीवन-आधार क्या है

माधो नामी एक चमार जिसके न घर था, न धरती, अपनी स्त्री और बच्चों-सहित एक झोंपड़े में रहकर मेहनत-मजदूरी द्वारा पेट पालता था। मजूरी कम थी, अन्न महंगा था। जो कमाता था, खा जाता था। सारा घर एक ही कम्बल ओढ़कर जाड़ों के दिन काटता था और वह कम्बल भी फटकर तार-तार रह गया था। पूरे एक वर्ष से वह इस विचार में लगा हुआ था कि दूसरा वस्त्र मोल ले। पेट मार-मारकर उसने तीन रुपये जमा किए थे, और पांच रुपये पास के गांव वालों पर आते थे।

एक दिन उसने यह विचारा कि पांच रुपये गांव वालों से उगाहकर वस्त्र ले आऊं। वह घर से चला, गांव में पहुंचकर वह पहले एक किसान के घर गया। किसान तो घर में नहीं था, उसकी स्त्री ने कहा कि इस समय रुपया मौजूद नहीं, फिर दे दूंगी। फिर वह दूसरे के घर पहुंचा, वहां से भी रुपया न मिला। फिर वह बनिये की दुकान पर जाकर वस्त्र उधार मांगने लगा। बनिया बोला—हम ऐसे कंगालों को उधार नहीं देते। कौन पीछे-पीछे फिरे? जाओ, अपनी राह लो।

वह निराश होकर घर को लौट पड़ा। राह में सोचने लगा—कितने अचरज की बात है कि मैं सारे दिन काम करता हूं, उस पर भी पेट नहीं भरता। चलते समय स्त्री ने कहा था कि वस्त्र अवश्य लाना। अब क्या करूं, कोई उधार भी तो नहीं देता। किसानों ने कह दिया, अभी हाथ खाली है, फिर ले लेना। तुम्हारा तो हाथ खाली है, पर मेरा काम कैसे चले? तुम्हारे पास घर, पशु, सब-कुछ है, मेरे पास तो यह शरीर ही शरीर है। तुम्हारे पास अनाज के कोठे भरे पड़े हैं, मुझे एक-एक दाना मोल लेना पड़ता है। सात दिन में तीन रुपये तो केवल रोटी में खर्च हो जाते हैं। क्या करूं, कहां जाऊं? हे भगवान्! सोचता हुआ मन्दिर के पास पहुंचकर देखता क्या है कि धरती पर कोई श्वेत वस्तु पड़ी है। अंधेरा हो गया, साफ न दिखाई देता है। माधो ने समझा कि किसी ने इसके वस्त्र छीन लिये हैं, मुझसे क्या मतलब? ऐसा न हो, इस झगड़े में पड़ने से मुझ पर कोई आपत्ति खड़ी हो जाए, चल दो।

थोड़ी दूर गया था कि उसके मन में पछतावा हुआ। मैं कितना निर्दयी हूं। कहीं यह बेचारा भूखों न मर रहा हो। कितने शर्म की बात है कि मैं उसे इस दशा में छोड़, चला जाता हूं। वह लौट पड़ा और उस आदमी के पास जाकर खड़ा हो गया।

2

पास पहुंचकर माधो ने देखा कि वह मनुष्य भला-चंगा जवान है। केवल शीत से दुःखी हो रहा है। उस मनुष्य को आंख भरकर देखना था कि माधो को उस पर दया आ गई। अपना

कोट उतारकर बोला—यह समय बातें करने का नहीं, यह कोट पहन लो और मेरे संग चलो।

मनुष्य का शरीर स्वच्छ, मुख दयालु, हाथ-पांव सुडौल थे। वह प्रसन्न बदन था। माधो ने उसे कोट पहना दिया और बोला—मित्र, अब चलो, बातें पीछे होती रहेंगी।

मनुष्य ने प्रेम-भाव से माधो को देखा और कुछ न बोला।

माधो—तुम बोलते क्यों नहीं? यहां ठंड है, घर चलो। यदि तुम चल नहीं सकते, तो यह लो लकड़ी, इसके सहारे चलो।

मनुष्य माधो के पीछे-पीछे हो लिया।

माधो—तुम कहां रहते हो?

मनुष्य—मैं यहां का रहने वाला नहीं।

माधो—मैंने भी यही समझा था, क्योंकि यहां तो मैं सबको जानता हूं। तुम मन्दिर के पास कैसे आ गए?

मनुष्य—यह मैं नहीं बतला सकता।

माधो—क्या तुमको किसी ने दुःख दिया है?

मनुष्य—मुझे किसी ने दुःख नहीं दिया, अपने कर्मों का भोग है। परमात्मा ने मुझे दंड दिया है।

माधो—निस्संदेह परमेश्वर सबका स्वामी है, परन्तु खाने को अन्न और रहने को घर तो चाहिए। तुम अब कहां जाना चाहते हो?

मनुष्य—जहां ईश्वर ले जाए।

माधो चकित हो गया। मनुष्य की बातचीत बड़ी प्रिय थी। वह ठग प्रतीत न होता था, पर अपना पता कुछ नहीं बताता था। माधो ने सोचा, अवश्य इस पर कोई बड़ी विपत्ति पड़ी है। बोलो—भाई, घर चलकर जरा आराम करो, फिर देखा जायेगा।

दोनों वहां से चल दिए। राह में माधो विचार करने लगा, मैं तो वस्त्र लेने आया था, यहां अपना भी दे बैठा। एक नंगा मनुष्य साथ है, क्या यह सब बातें देखकर मालती प्रसन्न होगी! कदापि नहीं, मगर चिन्ता ही क्या है? दया करना मनुष्य का परम धर्म है।

3

उधर माधो की स्त्री मालती उस दिन जल्दी-जल्दी लकड़ी काटकर पानी लायी, फिर भोजन बनाया, बच्चों को खिलाया, आप खाया, पति के लिए भोजन अलग रखकर कुरते में टांका लगाती हुई यह विचार करने लगी—ऐसा न हो, बनिया मेरे पति को ठग ले, वह बड़ा सीधा है, किसी से छल नहीं करता, बालक भी उसे फंसा सकता है। आठ रुपये बहुत होते हैं, इतने रुपये में तो अच्छे वस्त्र मिल सकते हैं। पिछली सर्दी किस कष्ट से कटी। जाते समय उसे देर हो गई थी, परन्तु क्या हुआ, अब तक उसे आ जाना चाहिए था।

इतने में आहट हुई। मालती बाहर आयी, देखा कि माधो है। उसके साथ नंगे सिर एक मनुष्य है। माधो का कोट उसके गले में पड़ा है। पति के हाथों में कोई गठरी नहीं है, वह शर्म से सिर झुकाए खड़ा है। यह देखकर मालती का मन निराशा से व्याकुल हो गया। उसने समझा, कोई ठग है, त्योरी चढ़ाकर खड़ी हो देखने लगी कि वह क्या करता है।

माधो बोला—यदि भोजन तैयार हो तो ले आओ।

मालती जलकर राख हो गई, कुछ न बोली। चुपचाप वहीं खड़ी रही। माधो ताड़ गया कि स्त्री क्रोधग्नि में जल रही है।

माधो—क्या भोजन नहीं बनाया?

मालती—(क्रोध से) हां, बनाया है, परन्तु तुम्हारे वास्ते नहीं, तुम तो वस्त्र मोल लेने गए थे? यह क़्या किया, अपना कोट भी दूसरे को दे दिया? इस ठग को कहां से लाए? यहां कोई सदाबरत थोड़े ही चलता है।

माधो—मालती, बस-बस! बिना सोचे-समझे किसी को बुरा कहना उचित नहीं है। पहले पूछ तो लो कि यह कैसा....

मालती—पहले यह बताओ कि रुपये कहां फेंके?

माधो—यह लो अपने तीनों रुपये, गांव वालों ने कुछ नहीं दिया।

मालती—(रुपये लेकर) मेरे पास संसार भर के नंगे-लुच्चों के लिए भोजन नहीं है।

माधो—फिर वही बात! पहले इससे पूछ तो लो, क्या कहता है।

मालती—बस-बस! पूछ चुकी। मैं तो विवाह ही करना नहीं चाहती थी, तुम तो घरखोऊ हो।

माधो ने बहुतेरा समझाया वह एक न मानी। दस वर्ष के पुराने झगड़े याद करके बकवाद करने लगी, यहां तक कि क्रोध में आकर माधो की जाकेट फाड़ डाली और घर से बाहर जाने लगी। पर रास्ते में रुक गई और पति से बोली—अगर यह भलामानस होता तो नंगा न होता। भला तुम्हारी भेंट इससे कहां हुई?

माधो—बस, यही तो मैं तुमको बतलाना चाहता हूं। यह गांव के बाहर मन्दिर के पास नंगा बैठा था। भला विचार तो कर, यह ऋतु बाहर नंगा बैठने की है? दैवगति से मैं वहां जा पहुंचा, नहीं तो क्या जाने यह मरता या जीता। हम क्या जानते हैं कि इस पर क्या विपत्ति प्रड़ी है। मैं अपना कोट पहनाकर इसे यहां ले आया हूं। देख, क्रोध मत कर, क्रोध पाप का मूल है। एक दिन हम सबको यह संसार छोड़ना है।

मालती कुछ कहना चाहती थी, पर मनुष्य को देखकर चुप हो गई। वह आंखें मूंदे, घुटनों पर हाथ रखे, मौन धारण किए स्थिर बैठा था।

माधो—प्यारी! क्या तुममें ईश्वर का प्रेम नहीं?

यह वचन सुन, मनुष्य को देखकर मालती का चित्त तुरन्त पिघल गया, झट से उठी और भोजन लाकर उसके सामने रख दिया और बोली—खाइए।

मालती की यह दशा देखकर मनुष्य का मुखारविंद खिल गया और वह हंसा। भोजन कर लेने पर मालती बोली—तुम कहां से आये हो?

मनुष्य—मैं यहां का रहने वाला नहीं।

मालती—तुम मन्दिर के पास किस प्रकार पहुंचे?

मनुष्य—मैं कुछ नहीं बता सकता।

मालती—क्या किसी ने तुम्हारा माल चुरा लिया?

मनुष्य—किसी ने नहीं। परमेश्वर ने यह दंड दिया है!

मालती—क्या तुम वहां नंगे बैठे थे?

मनुष्य—हां, शीत के मारे ठिठुर रहा था। माधो ने देखकर दया की, कोट पहनाकर मुझे यहां ले आया, तुमने तरस खाकर मुझे भोजन खिला दिया। भगवान् तुम दोनों का भला करे।

मालती ने एक कुरता और दे दिया। रात को जब वह अपने पति के पास जाकर लेटी तो यह बातें करने लगी—

मालती—सुनते हो?

माधो—हां।

मालती—अन्न तो चुक गया। कल भोजन कहां से करेंगे? शायद पड़ोसिन से गांगना पड़े।

माधो—जिएंगे तो अन्न भी कहीं से मिल ही जाएगा।

मालती—वह मनुष्य अच्छा आदमी मालूम होता है। अपना पता क्यों नहीं बतलाता?

माधो—क्या जानूं। कोई कारण होगा।

मालती—हम औरों को देते हैं, पर हमको कोई नहीं देता?

माधे ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया, मुंह फेरकर सो गया।

4

प्रातःकाल हो गया। माधो जागा, बच्चे अभी सोये पड़े थे। मालती पड़ोसिन से अन्न मांगने गयी थी। अजनबी मनुष्य भूमि पर बैठा आकाश की ओर देख रहा था, परन्तु उसका मुख अब प्रसन्न था।

माधो—मित्र, पेट रोटी मांगता है, शरीर वस्त्र; अतएव काम करना आवश्यक है। तुम कोई काम जानते हो?

मनुष्य—मैं कोई काम नहीं जानता।

माधो—अभ्यास बड़ी वस्तु है, मनुष्य यदि चाहे तो सब-कुछ सीख सकता है।

मनुष्य—मैं सीखने को तैयार हूं, आप सिखा दीजिए।

माधो—तुम्हारा नाम क्या है?

मनुष्य—मैकू।

माधो—भाई मैकू, यदि तुम अपना हाल सुनाना नहीं चाहते तो न सुनाओ, परन्तु कुछ काम अवश्य करो। जूते बनाना सीख लो और यहीं रहो।

मैकू—बहुत अच्छा।

अब माधो ने मैकू को सूत बांटना, उस पर मोम चढ़ाना, जूते सीना आदि काम सिखाना शुरू कर दिया। मैकू तीन दिन में ही ऐसे जूते बनाने लगा, मानो सदा से चमार का ही काम करता रहा हो। वह घर से बाहर नहीं निकलता था, बोलता भी बहुत कम था। अब तक वह केवल एक बार उस समय हंसा था जब मालती ने उसे भोजन कराया था, फिर वह कभी नहीं हंसा।

5

धीरे-धीरे एक वर्ष बीत गया। चारों ओर धूम मच गई कि माधो का नौकर मैकू जैसे पक्के-मजबूत जूते बनाता है, दूसरा कोई नहीं बना सकता। माधो के पास बहुत काम आने लगा और उसकी आमदनी बहुत बढ़ गई।

एक दिन माधो और मैकू बैठे काम कर रहे थे कि एक गाड़ी आयी, उसमें से एक धनी पुरुष उतरकर झोंपड़े के पास आया। मालती ने झट से किवाड़ खोल दिए; वह भीतर आ गया।

माधो ने उठकर प्रणाम किया। उसने ऐसा सुन्दर पुरुष पहले कभी नहीं देखा था। वह स्वयं दुबला था, मैकू और भी दुबला और मालती तो हड्डियों का पिंजरा थी। यह पुरुष तो किसी दूसरे ही लोक का वासी जान पड़ता था—लाल मुंह, चौड़ी छाती, तनी हुई गर्दन; मानो सारा शरीर लोहे में ढला हुआ है।

पुरुष—तुममें उस्ताद कौन है?

माधो—हुजूर, मैं।

पुरुष—(चमड़ा दिखाकर) तुम यह चमड़ा देखते हो?

माधो—हां, हुजूर।

पुरुष—तुम जानते हो कि यह किस जात का चमड़ा है?

माधो—महाराज, यह चमड़ा बहुत अच्छा है।

पुरुष—अच्छा, मूर्ख कहीं का! तुमने शायद ऐसा चमड़ा कभी नहीं देखा होगा। यह जर्मन देश का चमड़ा है, इसका मोल बीस रुपये है।

माधो—(भय से) भला महाराज, ऐसा चमड़ा मैं कहां से देख सकता था?

पुरुष—अच्छा, तुम इसका बूट बना सकते हो।

माधो—हां, हुजूर, बना सकता हूं।

पुरुष—हां, हुजूर की बात नहीं, समझ लो कि चमड़ा कैसा है और बनवाने वाला कौन है। यदि साल भर के अन्दर कोई टांका उखड़ गया अथवा जूते का रूप बिगड़ गया तो तुझे बंदीखाने जाना पड़ेगा, नहीं तो दस रुपये मजूरी मिलेगी।

माधो ने मैकू की ओर कनखियों से देखकर धीरे से पूछा कि काम ले लूं? उसने कहा—हां, ले लो। माधो नाप लेने लगा।

पुरुष—देखो, नाप ठीक लेना, बूट छोटा न पड़ जाए। (मैकू की तरफ देखकर) यह कौन है?

माधो—मेरा कारीगर।

पुरुष—(मैकू से) हो-हो, देखो बूट एक वर्ष चलना चाहिए। पूरा एक वर्ष, कम नहीं।

मैकू का उस पुरुष की ओर ध्यान ही नहीं था। वह किसी और ही धुन में मस्त बैठा हंस रहा था।

पुरुष—(क्रोध से) मूर्ख! बात सुनता है कि हंसता है। देखो, बूट बहुत जल्दी तैयार करना, देर न होने पाए।

बाहर निकलते समय पुरुष का मस्तक द्वार से टकरा गया। माधो बोला सिर है कि लोहा, किवाड़ ही तोड़ डाला था।

मालती बोली—धनवान ही बलवान होते हैं। इस पुरुष को यमराज भी हाथ नहीं लगा सकता, और की तो बात ही क्या है?

उस आदमी के जाने के बाद माधो ने मैकू से कहा—भाई, काम तो ले लिया है, कोई झगड़ा न खड़ा हो जाए। चमड़ा बहुमूल्य है और यह आदमी बड़ा क्रोधी है, भूल न होनी चाहिए। तुम्हारा हाथ साफ हो गया है, बूट काट तुम दो, सी मैं दूंगा।

मैकू बूट काटने लगा। मालती नित्य अपने पति को बूट काटते देखा करती थी। मैकू की काट देखकर चकरायी कि वह यह कर क्या रहा है। शायद बड़े आदमियों के बूट इसी प्रकार काटे जाते हों, यह विचार कर चुप रह गई।

मैकू ने चमड़ा काटकर दोपहर तक स्लीपर तैयार कर लिये। माधो जब भोजन करके उठा तो देखता क्या है कि बूट की जगह स्पीलर बने रखे हैं। वह घबरा गया और मन में कहने लगा—इस मैकू को मेरे साथ रहते एक वर्ष हो गया, ऐसी भूल तो उसने कभी नहीं की। आज इसे क्या हो गया! उस पुरुष ने तो बूट बनाने को कहा था, इसने तो स्लीपर बना डाले। अब उसे क्या उत्तर दूंगा, ऐसा चमड़ा और कहां से मिल सकता है! (मैकू से)—मित्र, यह तुमने क्या किया? उसने तो बूट बनाने को कहा था न! अब मेरे सिर के बाल न बचेंगे।

यह बातें हो ही रही थी कि द्वार पर एक आदमी ने आकर पुकारा। मालती ने किवाड़ खोल दिए। यह उस धनी आदमी का वही नौकर था, जो उसके साथ यहां आया था। उसने आते ही कहा—राम-राम, तुमने बूट बना तो नहीं डाले?

माधो—हां, बना रहा हूं।

नौकर—मेरे स्वामी का देहान्त हो गया, अब बूट बनाना व्यर्थ है।

माधो—अरे!

नौकर—वह तो घर तक भी पहुंचने नहीं पाये, गाड़ी में ही प्राण त्याग दिए। स्वामिनी ने कहा है कि उस चमड़े के स्लीपर बना दो।

माधो—(प्रसन्न होकर) यह लो स्लीपर।

आदमी स्लीपर लेकर चलता बना।

6

मैकू को माधो के साथ रहते-रहते छः वर्ष बीत गए। अब तक वह केवल दो बार हंसा था, नहीं तो चुपचाप बैठा अपना काम किए जाता था। माधो उस पर अति प्रसन्न था और डरता रहता था कि कहीं भाग न जाए। इस भय से फिर माधो ने उससे पता-बता कुछ नहीं पूछा।

एक दिन मालती चूल्हे में आग जल रही थी, बालक आंगन में खेल रहे थे, माधो और मैकू बैठे जूते बना रहे थे कि एक बालक ने आकर कहा—चाचा मैकू, देखो, वह स्त्री दो लड़कियां संग लिये आ रही हैं।

मैकू ने देखा कि एक स्त्री चादर ओढ़े, छोटी-छोटी कन्याएं संग लिए चली आ रही है। कन्याओं का एक-सा रंग-रूप है, भेद केवल यह है कि उनमें एक लंगड़ी है। बुढ़िया भीतर आयी तो माधो ने पूछा—माई, क्या काम है?

उसने कहा—इन लड़कियों के जूते बना दो।

माधो बोला—बहुत अच्छा।

वह नाप लेने लगा तो देखा कि मैकू इन लड़कियों को इस प्रकार ताक रहा है, मानो पहले कहीं देखा है।

बुढ़िया—इस लड़की का एक पांव लुंजा है, एक नाप इसका ले लो। बाकी तीन पैर एक जैसे हैं। ये लड़कियां जुड़वां है।

माधो—(नाप लेकर) यह लंगड़ी कैसे हो गई, क्या जन्म से ही ऐसी है?

बुढ़िया—नहीं, इसकी माता ने ही इसकी टांग कुचल दी थी।

मालती—तो क्या तुम इनकी माता नहीं हो?

बुढ़िया—नहीं, बहन, न इनकी माता हूं, न सम्बन्धी। ये मेरी कन्याएं नहीं। मैंने इन्हें पाला है।

मालती—तिस पर भी तुम इन्हें बड़ा प्यार करती हो?

बुढ़िया—प्यार क्यों न करूं, मैंने अपना दूध पिला-पिलाकर इन्हें बड़ा किया है। मेरा अपना भी बालक था, परन्तु उसे परमात्मा ने ले लिया। मुझे इनके साथ उससे भी अधिक प्रेम है।

मालती—तो ये किसकी कन्याएं हैं?

बुढ़िया—छह वर्ष हुए कि एक सप्ताह के अंदर इनके माता-पिता का देहांत हो गया। पिता की मंगल के दिन मृत्यु हुई, माता की शुक्रवार को। पिता के मरने के तीन दिन पीछे ये पैदा हुई। इनके मां-बाप मेरे पड़ोसी थे। इनका पिता लकड़हारा था। जंगल में लकड़ियां काटते-काटते वृक्ष के नीचे दबकर मर गया। उसी सप्ताह में इनका जन्म हुआ। जन्म होते ही माता भी चल बसी। दूसरे दिन जब मैं उससे मिलने गयी तो देखा कि बेचारी मरी पड़ी है। मरते समय करवट लेते हुए इस कन्या की टांग उसके नीचे दब गई। गांव वालों ने उसका दाह-क्रर्म किया। इनके माता-पिता रंक थे, कौड़ी पास न थी। सब लोग सोचने लगे कि कन्याओं का कौन पाले। उस समय वहां मेरी गोद में दो महीने का बालक था। सबने यही कहा कि जब तक कोई प्रबन्ध न हो, तुम्हीं इनको पालो। मैंने इन्हें संभाल लिया। पहले-पहल मैं इस लंगड़ी को दूध नहीं पिलाया करती थी, कयोंकि मैं समझती थी कि यह मर जायेगी, पर फिर मुझे इस पर दया आ गई और इसे भी दूध पिलाने लगी। उस समय परमात्मा की कृपा से मेरी छाती में इतना दूध था कि तीनों बालकों को पिलाकर भी बह निकलता था। मेरा बालक मर गया, ये दोनों पल गईं। हमारी दशा पहले से अब बहुत अच्छी है। मेरा पति एक बड़े कारखाने में नौकर है। मैं इन्हें प्यार कैसे न करूं, ये तो मेरा जीवन-आधार हैं।

यह कहकर बुढ़िया ने दोनों लड़कियों को छाती से लगा लिया।

मालती—सत्य है, मनुष्य माता-पिता के बिना जी सकता है, परन्तु ईश्वर के बिना जीता नहीं रह सकता।

ये बातें हो रही थीं कि सारा झोंपड़ा प्रकाशित हो गया। सबने देखा कि मैकू कोने में बैठा हंस रहा है।

7

बुढ़िया लड़कियों को लेकर बाहर चली गयी, तो मैकू ने उठकर माधो और मालती को प्रणाम किया और बोला—स्वामी, अब मैं विदा होता हूं। परमात्मा ने मुझ पर दया की। यदि कोई भूल-चूक हुई हो तो क्षमा करना।

माधो और मालती ने देखा कि मैकू का शरीर तेजोमय हो रहा है।

माधो दंडवत् करके बोला—मैं जान गया कि तुम साधारण मनुष्य नहीं। अब मैं तुम्हें नहीं रख सकता, न कुछ पूछ सकता हूं। केवल यह बता दो कि जब मैं तुम्हें अपने घर लाया था तो तुम बहुत उदास थे। जब मेरी स्त्री ने तुम्हें भोजन दिया तो तुम हंसे। जब वह धनी आदमी बूट बनवाने आया था तब तुम हंसे। आज लड़कियों के संग बुढ़िया आयी, तब तुम हंसे। यह क्या भेद है? तुम्हारे मुख पर इतना तेज क्यों है?

मैकू—तेज का कारण तो यह है कि परमात्मा ने मुझ पर दया की, मैं अपने कर्मों का फल भोग चुका। ईश्वर ने तीन बातों को समझाने के लिए मुझे इस मृतलोक में भेजा था, तीनों बातें समझ गया। इसलिए मैं तीन बार हंसा। पहली बार जब तुम्हारी स्त्री ने मुझे भोजन दिया, दूसरी बार धनी पुरुष के आने पर, तीसरी बार आज बुढ़िया की बात सुनकर।

माधो—परमेश्वर ने यह दंड तुम्हें क्यों दिया था? वे तीन बातें कौन-सी हैं, मुझे भी बतलाओ?

मैकू—मैंने भगवान् की आज्ञा न मानी थी, इसलिए यह दंड मिला था। मैं देवता हूं, एक समय भगवान् ने मुझे एक स्त्री की जान लेने के लिए मृत्युलोक में भेजा। जाकर देखता हूं कि स्त्री अति दुर्बल है और भूमि पर पड़ी है। पास तुरन्त की जन्मी दो जुड़वां लड़कियां रो रही हैं। मुझे यमराज का दूत जानकर वह बोली—मेरा पति वृक्ष के नीचे दबकर मर गया है। मेरे न बहन है, न माता, इन लड़कियों का कौन पालन करेगा? मेरी जान न निकाल, मुझे इन्हें पाल लेने दे। बालक माता-पिता बिना पल नहीं सकता। मुझे उसकी बातों पर दया आ गई। यमराज के पास लौट आकर मैंने निवेदन किया कि महाराज, मुझे स्त्री की बातें सुनकर दया आ गई। उसकी जुड़वां लड़कियों को पालने-वाला कोई नहीं था, इसलिए मैंने उसकी जान नहीं निकाली, क्योंकि बालक माता-पिता के बिना पल नहीं सकता। यमराज बोले—जाओ, अभी उसकी जान निकाल लो, और जब तक ये तीन बातें न जान लोगे कि (1) मनुष्य में क्या रहता है, (2) मनुष्य को क्या नहीं मिलता, (3) मनुष्य का जीवन-आधार क्या है, तब तक तुम स्वर्ग में न आने पाओगे। मैंने मृत्युलोक में आकर स्त्री की जान निकाल ली। मरते समय करवट लेते हुए उसे एक लड़की की टांग कुचल दी। मैं स्वर्ग को उड़ा, परन्तु आंधी आयी मेरे पंख उखड़ गए और मैं मन्दिर के पास आ गिरा।

8

अब माधो और मालती समझ गए कि मैकू कौन है। दोनों बड़े प्रसन्न हुए कि अहोभाग्य, हमने देवता के दर्शन किए।

मैकू ने फिर कहा—जब तक मनुष्य मनुष्य-शरीर धारण नहीं किया था, मैं शीत-गर्मी, भूख-प्यास का कष्ट न जानता था, परन्तु मृत्युलोक में आने पर प्रकट हो गया कि दुःख क्या

वस्तु है। मैं भूख और जाड़े का मारा मन्दिर में घुसना चाहता था, लेकिन मन्दिर बंद था। मैं हवा की आड़ में सड़क पर बैठ गया। संध्या-समय एक मनुष्य आता दिखाई दिया। मृत्युलोक में जन्म लेने पर यह पहला मनुष्य था, जो मैंने देख था, उसका मुख ऐसा भयंकर था कि मैंने नेत्र मूंद लिये। उसकी ओर देख न सका। वह मनुष्य यह कह रहा था कि स्त्री-पुत्रों का पालन-पोषण किस भांति करें, वस्त्र कहां से लाये इत्यादि। मैंने विचारा, देखो, मैं तो भूख और शीत से मर रहा हूं, यह अपना ही रोना रो रहा है, मेरी कुछ सहायता नहीं करता। वह पास से निकल गया। मैं निराश हो गया। इतने में मेरे पास लौट आया, अब दया के कारण उसका मुख सुंदर दिखने लगा। माधो, वह मनुष्य तुम थे। जब तुम मुझे घर लाये, मालती का मुख तुमसे भयंकर था, क्योंकि उसमें दया का लेशमात्र न था, परन्तु जब वह दयालु होकर भोजन लायी तो उसके मुख की कठोरता जाती रही! तब मैंने समझा कि मनुष्य में तत्त्व-वस्तु प्रेम है। इसीलिए पहली बार हंसा।

एक वर्ष पीछे वह धनी मनुष्य बूट बनवाने आया। उसे देखकर मैं इस कारण हंसा कि बूट तो एक वर्ष के लिए बनवाता है और यह नहीं जानता कि संध्या होने से पहले मर जाएगा। तब दूसरी बात का ज्ञान हुआ कि मनुष्य जो चाहता है सो नहीं मिलता, और मैं दूसरी बार हंसा।

छह वर्ष पीछे आज यह बुढ़िया आयी तो मुझे निश्चय हो गया कि सबका जीवन-आधार परमात्मा है, दूसरा कोई नहीं, इसलिए तीसरी बार हंसा।

9

मैकू प्रकाशस्वरूप हो रहा था, उस पर आंख नहीं जमती थी। वह फिर कहने लगा—देखो, प्राणि मात्र प्रेम द्वारा जीते हैं, केवल पोषण से कोई नहीं जी सकता। वह स्त्री क्या जानती थी कि उसकी लड़कियों को कौन पालेगा, वह धनी पुरुष क्या जानता था कि गाड़ी में ही मर जाऊंगा, घर पहुंचना कहां! कौन जानता था कि कल क्या होगा, कपड़े की जरूरत होगी कि कफन की।

मनुष्य शरीर में मैं केवल इस कारण जीता बचा कि तुमने और तुम्हारी स्त्री ने मुझसे प्रेम किया। वे अनाथ लड़कियां इस कारण पलीं कि एक बुढ़िया ने प्रेमवश होकर उन्हें दूध पिलाया। मतलब यह है कि प्राणी केवल अपने जतन से नहीं जी सकते। प्रेम ही उन्हें जिलाता है। पहले मैं समझता था कि जीवों का धर्म केवल जीना है, परन्तु अब निश्चय हुआ कि धर्म केवल जीना नहीं, किन्तु प्रेम-भाव से जीना है। इसी कारण परमात्मा किसी को यह नहीं बतलाता कि तुम्हें क्या चाहिए, बल्कि हर एक को यही बतलाता है कि सबके लिए क्या चाहिए। वह चाहता है कि प्राणि मात्र प्रेम से मिले रहें। मुझे विश्वास हो गया कि प्राणों का आधार प्रेम है, प्रेमी पुरुष परमात्मा में, और परमात्मा प्रेमी पुरुष में सदैव निवास करता है। सारांश यह है कि प्रेम और पमेश्वर में कोई भेद नहीं।

यह कहकर देवता स्वर्गलोक को चला गया।

एक चिनगारी घर को जला देती है

एक समय एक गांव में रहीम खां नामक एक मालदार किसान रहता था। उसके तीन पुत्र थे, सब युवक और काम करने में चतुर थे। सबसे बड़ा ब्याहा हुआ था, मंझला ब्याहने को था छोटा क्वांरा था। रहीम की स्त्री और बहू चतुर और सुशील थीं। घर के सभी प्राणी अपना-अपना काम करते थे, केवल रहीम का बूढ़ा बाप दमे के रोग से पीड़ित होने के कारण कुछ काम-काज न करता था। सात बरसों से वह केवल खाट पर पड़ा रहता था। रहीम के पास तीन बैल, एक गाय, एक बछड़ा, पंद्रह भेड़ें थीं। स्त्रियां खेती के काम में सहायता करती थीं। अनाज मुफ्त पैदा हो जाता था। रहीम और उसके बाल-बच्चे बड़े आराम से रहते; अगर पड़ोसी करीम के लंगड़े पुत्र कादिर के साथ इनका एक ऐसा झगड़ा न छिड़ गया होता जिससे सुख-चैन जाता रहा था।

जब तक बूढ़ा करीम जीता रहा और रहीम का पिता घर का प्रबंध करता रहा, कोई झगड़ा नहीं हुआ। वह बड़े प्रेम-भाव से, जैसा कि पड़ोसियों में होना चाहिए, एक-दूसरे की सहायता करते रहे। लड़कों का घरों को संभालना था कि सब-कुछ बदल गया।

अब सुनिए कि झगड़ा किस बात पर छिड़ा। रहीम की बहू ने कुछ मुर्गियां पाल रखी थीं। एक मुर्गी नित्य पशुशाला में जाकर अंडा दिया करती थी। बहू शाम को वहां जाती और अंडा उठा लाती। एक दिन दैवगति से वह मुर्गी बालकों से डरकर पड़ोसी के आंगन में चली गयी और वहां अंडा दे आई। शाम को बहु ने पशुशाला में जाकर देखा तो अंडा वहां न था। सास से पूछा, उसे क्या मालूम था। देवर बोला कि मुर्गी पड़ोसिन के आंगन में कुड़कुड़ा रही थी, शायद वहां अंडा दे आयी हो।

बहू वहां पहुंचकर अंडा खोजने लगी। भीतर से कादिर की माता निकलकर पूछने लगी—बहू, क्या है?

बहू—मेरी मुर्गी तुम्हारे आंगन में अंडा दे गई है, उसे खोजती हूं। तुमने देखा हो तो बता दो।

कादिर की मां ने कहा—मैंने नहीं देखा। क्या हमारी मुर्गियां अंडे नहीं देतीं कि हम तुम्हारे अंडे बटोरती फिरेंगी। दूसरों के घर जाकर अंडे खोजने की हमारी आदत नहीं।

यह सुनकर बहू आग हो गई, लगी बकने। कादिर की मां कुछ कम न थी, एक-एक बात के सौ-सौ उत्तर दिये। रहीम की स्त्री पानी लाने बाहर निकली थी। गाली-गलौच का शोर सुनकर वह भी आ पहुंची। उधर से कादिर की स्त्री भी दौड़ पड़ी। अब सब-की-सब इकट्ठी होकर लगीं गालियां बकने और लड़ने। कादिर खेत से आ रहा था, वह भी आकर मिल गया। इतने में रहीम भी आ पहुंचा। पूरा महाभारत हो गया। अब दोनों गुंथ गए। रहीम ने कादिर की दाढ़ी के बाल उखाड़ डाले। गांव वालों ने आकर बड़ी मुश्किल से उन्हें छुड़ाया। पर कादिर ने अपनी दाढ़ी के बाल उखाड़ लिए और हाकिम परगना के इजलास में जाकर कहा—मैंने दाड़ी इसलिए नहीं रखी थी जो यों उखाड़ी जाए। रहीम से हरजाना लिया जाए। पर रहीम के बूढ़े पिता ने उसे समझाया—बेटा, ऐसी तुच्छ बात पर लड़ाई करना मूर्खता नहीं तो क्या है। जरा विचार तो करो, सारा बखेड़ा सिर्फ एक अंडे से फैला है। कौन जाने शायद किसी बालक ने उठा लिया हो, और फिर अंडा था कितने का?

परमात्मा सबका पालन-पोषण करता है। पड़ोसी यदि गाली दे भी दे, तो क्या गाली के बदले गाली देकर अपनी आत्मा को मलिन करना उचित है? कभी नहीं, खैर! अब तो जो होना था, वह हो ही गया, उसे मिटाना उचित है, बढ़ाना ठीक नहीं। क्रोध पाप का मूल है। याद रखो, लड़ाई बढ़ाने से तुम्हारी ही हानि होगी।

परन्तु बूढ़े की बात पर किसी ने कान न धरा। रहीम कहने लगा कि कादिर को धन का घमंड है, मैं क्या किसी का दिया खाता हूं? बड़े घर न भेज दिया तो कहना। उसने भी नालिश ठोंक दी।

यह मुकदमा चल ही रहा था कि कादिर की गाड़ी की एक कील खो गई। उसके परिवार वालों ने रहीम के बड़े लड़के पर चोरी की नालिश कर दी।

अब कोई दिन ऐसा न जाता था कि लड़ाई न हो। बड़ों को देखकर बालक भी आपस में लड़ने लगे। जब कभी वस्त्र धोने के लिए स्त्रियां नदी पर इकट्ठी होती थीं, तो सिवाय लड़ाई के कुछ काम न करती थीं।

पहले-पहल तो गाली-गलौज पर ही बस हो जाती थी, पर अब वे एक-दूसरे का माल चुराने लगे। जीना दुर्लभ हो गया। न्याय चुकाते-चुकाते वहां के कर्मचारी थक गए। कभी कादिर रहीम को कैद करा देता, कभी वह उसको बंदीखाने भिजवा देता। कुत्तों की भांति जितना ही लड़ते थे, उतना ही क्रोध बढ़ता था। छह वर्ष तक यही हाल रहा। बूढ़े ने बहुतेरा सिर पटका कि 'लड़को, क्या करते हो बदला लेना छोड़ दो, बैर भाव त्यागकर अपना काम करो। दूसरों को कष्ट देने से तुम्हारी ही हानि होगी।' परंतु किसी के कान पर जूं तक न रेंगती थी।

सातवें वर्ष गांव में किसी के घर विवाह था। स्त्री-पुरुष जमा थे। बातें करते-करते रहीम की बहू ने कादिर पर घोड़ा चुराने का दोष लगाया। वह आग हो गया, उठकर बहू के ऐसा मुक्का मारा कि वह सात दिन चारपाई पर पड़ी रही। वह उस समय गर्भवती थी। रहीम बड़ा प्रसन्न हुआ कि अब काम बन गया। गर्भवती स्त्री को मारने के अपराध में इसे बंदीखाने न भिजवाया तो मेरा नाम रहीम ही नहीं। झट जाकर नालिश कर दी। तहकीकात होने पर मालूम हुआ कि बहू को कोई बड़ी चोट नहीं आयी, मुकदमा खारिज हो गया। रहीम कब चुप रहने वाला था। ऊपर की कचहरी में गया और मुंशी को घूस देकर कादिर को बीस कोड़े मारने का हुक्म लिखवा दिया।

उस समय कादिर कचहरी से बाहर खड़ा था, हुक्म सुनते ही बोला—कोड़ों से मेरी पीठ तो जलेगी ही, परन्तु रहीम को भी भस्म किए बिना न छोडूंगा।

रहीम तुरन्त अदालत में गया और बोला—हुजूर, कादिर मेरा घर जलाने की धमकी देता है। कई आदमी गवाह हैं।

हाकिम ने कादिर को बुलाकर पूछा कि क्या बात है।

कादिर—सब झूठ, मैंने कोई धमकी नहीं दी। आप हाकिम हैं। जो चाहें सो करें, पर क्या न्याय इसी को कहते हैं कि सच्चा मारा जाए और झूठा चैन करे?

कादिर की सूरत देखकर हाकिम को निश्चय हो गया कि वह अवश्य रहीम को कोई न कोई कष्ट देगा। उसने कादिर को समझाते हुए कहा—देखो भाई, बुद्धि से काम लो। भला कादिर, गर्भवती स्त्री को मारना क्या ठीक था? यह तो ईश्वर की बड़ी कृपा हुई कि

चोट नहीं आयी, नहीं तो क्या जाने, क्या हो जाता। तुम विनय करके रहीम से अपना अपराध क्षमा करा लो, मैं हुक्म बदल डालूंगा।

मुंशी—दफा एक सौ सत्रह के अनुसार हुक्म नहीं बदला जा सकता।

हाकिम—चुप रहो। परमात्मा को शांति प्रिय है, उसकी आज्ञा पालन करना सबका मुख्य धर्म है।

कादिर बोला—हुजूर, मेरी अवस्था अब पचास वर्ष की है। मेरे एक ब्याहा हुआ पुत्र भी है। आज तक मैंने कभी कोड़े नहीं खाए। मैं और उससे क्षमा? कभी नहीं मांग सकता। वह भी मुझे याद करेगा।

यह कहकर कादिर बाहर चला गया।

कचहरी गांव से सात मील पर थी। रहीम को घर पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो गया। उस समय घर में कोई न था। सब बाहर गए हुए थे। रहीम भीतर जाकर बैठ गया और विचार करने लगा। कोड़े लगने का हुक्म सुनकर कादिर का मुख कैसा उतर गया था! बेचारा दीवार की ओर मुंह करके रोने लगा था। हम और वह कितने दिन तक एक साथ खेले हैं, मुझे उस पर इतना क्रोध न करना चाहिए था। यदि मुझे कोड़े मारने का हुक्म सुनाया जाता, तो मेरी क्या दशा होती!

इस पर उसे कादिर पर दया आयी। इतने में बूढ़े पिता ने आकर पूछा—कादिर को क्या दंड मिला?

रहीम—बीस कोड़े।

बूढ़ा—बुरा हुआ। बेटा, तुम अच्छा नहीं करते। इन बातों में कादिर की उतनी ही हानि होगी जितनी तुम्हारी। भला, मैं यह पूछता हूं कि कादिर पर कोड़े पड़ने से तुम्हें क्या लाभ होगा?

रहीम—वह फिर ऐसा काम नहीं करेगा।

बूढ़ा—क्या नहीं करेगा, उसने तुमसे बढ़कर कौन-सा बुरा काम किया है?

रहीम—वाह-वाह, आप विचार तो करें कि उसने मुझे कितना कष्ट दिया है। स्त्री मरने से बची, अब घर जलाने की धमकी देता है, तो क्या मैं उसका जस गाऊं?

बूढ़ा—(आह भरकर) बेटा, मैं घर में पड़ा रहता हूं और तुम सर्वत्र घूमते हो, इसलिए तुम मुझे मूर्ख समझते हो। लेकिन द्रोह ने तुम्हें अंधा बना रखा है। दूसरों के दोष तुम्हारे नेत्रों के सामने हैं, अपने दोष पीठ पीछे हैं। भला, मैं पूछता हूं कि कादिर ने क्या किया! एक के करने से भी कभी लड़ाई हुआ करती है? कभी नहीं, दो बिना लड़ाई नहीं हो सकती। यदि तुम शान्त स्वभाव होते, लड़ाई कैसे होती? भला जवाब तो दो, उसकी दाढ़ी के बाल किसने उखाड़े! उसका भूसा किसने चुराया? उसे अदालत में किसने घसीटा? तिस पर सारे दोष कादिर के माथे ही थोप रहे हो! तुम आप बुरे हो, बस यही सारे झगड़े की जड़ है। क्या मैंने तुम्हें यही शिक्षा दी है? क्या तुम नहीं जानते कि मैं और कादिर का पिता किस प्रेम-भाव से रहते थे। यदि किसी के घर में अन्न चुक जाता था, तो एक-दूसरे से उधार लेकर काम चलता था; यदि कोई किसी और काम में लगा होता था, तो दूसरा उसके पशु चरा लाता था। एक को किसी वस्तु की जरूरत होती थी, तो दूसरा तुरन्त दे देता था। न कोई लड़ाई न झगड़ा, प्रेम-प्रीतिपूर्वक जीवन व्यतीत करता था। अब? अब तो तुमने महाभारत बना

रखा है, क्या इसी का नाम जीवन है? हाय! हाय! यह तुम क्या पाप कर्म कर रहे हो? तुम घर के स्वामी हो, यमराज के सामने तुम्हें उत्तर देना होगा—बालकों और स्त्रियों को तुम क्या शिक्षा दे रहे हो, गाली बकना और ताने देना! कल तारावती पड़ोसिन धनदेवी को गालियां दे रही थी। उसकी माता पास बैठी सुन रही थी। क्या यही भलमनसी है? क्या गाली का बदला गाली होना चाहिए? नहीं बेटा, नहीं, महापुरुषों का वचन है कि कोई तुम्हें गाली दे तो सह लो, वह स्वयं पछताएगा। यदि कोई तुम्हारे गाल पर एक चपत मारे, तो दूसरा गाल उसके सामने कर दो, वह लज्जित और नम्र होकर तुम्हारा भक्त हो जायेगा। अभिमान ही सब दुःख का कारण है—तुम चुप क्यों हो गए! क्या मैं झूठ कहता हूं?

रहीम चुप रह गया, कुछ नहीं बोला।

बूढ़ा—महात्माओं का वाक्य क्या असत्य है, कभी नहीं। उसका एक-एक अक्षर पत्थर की लकीर है। अच्छा, अब तुम अपने इस जीवन पर विचार करो। जब से यह महाभारत आरम्भ हुआ है, तुम सुखी हो अथवा दुःखी! जरा हिसाब तो लगाओ कि इन मुकदमों, वकीलों और जाने-आने में कितना रुपया खर्च हो चुका है। देखो, तुम्हारे पुत्र कैसे सुन्दर और बलवान हैं, लेकिन तुम्हारी आमदनी घटती जाती है। क्यों? तुम्हारी मूर्खता से। तुम्हें चाहिए कि लड़कों सहित खेती का काम करो। पर तुम पर तो लड़ाई का भूत सवार है, वह चैन लेने नहीं देता। पिछले साल जयी क्यों नहीं उगी, इसलिए कि समय पर नहीं बोयी गई। मुकदमे चलाओ कि जयी बोओ। बेटा, अपना काम करो, खेती-बारी को संहालो। यदि कोई कष्ट दे तो उसे क्षमा करो, परमात्मा इसी से प्रसन्न रहता है। ऐसा करने पर तुम्हारा अंतःकरण शुद्ध होकर तुम्हें आनन्द प्राप्त होगा।

रहीम कुछ नहीं बोला।

बूढ़ा—बेटा, अपने बूढ़े, मूर्ख पिता का कहना मानो। जाओ, कचहरी में जाकर आपस में राजीनामा कर लो। कल शबेरात है, कादिर के घर जाकर नम्रतापूर्वक उसे नेवता दो और घर वालों को भी यही शिक्षा दो कि बैर छोड़कर आपस में प्रेम बढ़ाएं।

पिता की बातें सुनकर रहीम के मन में विचार हुआ कि पिताजी सच कहते हैं। इस लड़ाई-झगड़े से हम मिट्टी में मिले जाते हैं। लेकिन इस महाभारत को किस प्रकार समाप्त करूं? बूढ़ा उसके मन की बात जानकर बोला—बेटा, मैं तुम्हारे मन की बात जान गया। लज्जा, त्याग परन्तु जाकर कादिर से मित्रता कर लो। फैलने से पहले ही चिनगारी को बुझा देना उचित है, फैल जाने पर फिर कुछ नहीं बनता।

बूढ़ा कुछ और कहना चाहता था कि स्त्रियां कोलाहल करती हुई भीतर आ गई, उन्होंने कादिर के दंड का हाल सुन लिया था। हाल में पड़ोसिन से लड़ाई करके आयी थीं, आकर कहने लगीं कि कादिर यह भय दिखाता है कि मैंने घूस देकर हाकिम को अपनी ओर फेर लिया है, रहीम का सारा हाल लिखकर महाराज की सेवा में भेजने के लिए विनय-पत्र तैयार किया है। देखो, क्या मजा चखाता हूं। आधी जायदाद न छीन ली तो बात ही क्या है? यह सुनना था कि रहीम के चित्त में फिर आग दहक उठी।

आषाढ़ी बोने की ऋतु थी। करने को काम बहुत था। रहीम भुसौल में गया और पशुओं को भूसा डालकर कुछ काम करने लगा। इस समय वह पिता की बातें और कादिर के साथ लड़ाई सब कुछ भूला हुआ था। रात को घर में आकर आराम करना ही चाहता

था कि पास से शब्द सुनायी दिया—वह दुष्ट वध करने ही योग्य है, जीकर क्या बनाएगा। इन शब्दों ने रहीम को पागल बना दिया। वह चुपचाप खड़ा कादिर को गालियां सुनाता रहा। जब वह चुप हो गया, तो वह घर में चला गया।

भीतर आकर देखा कि बहू बैठी ताक रही है, स्त्री भोजन बना रही है, बड़ा लड़का दूध गर्म कर रहा है, मंझला झाड़ू लगा रहा है, छोटा भैंस चराने बाहर जाने को तैयार है। सुख की यह सब सामग्री थी, परन्तु पड़ोसी के साथ लड़ाई का दुःख सहा न जाता था।

वह जला-कुढ़ा भीतर आया। उसके कान में पड़ोसी के शब्द गूंज रहे थे, उसने सबसे लड़ना आरम्भ किया। इतने में छोटा लड़का भैंस चराने बाहर जाने लगा। रहीम भी उसके साथ बाहर चला आया। लड़का तो चल दिया, वह अकेला रह गया। रहीम मन में सोचने लगा—कादिर बड़ा दुष्ट है, हवा चल रही है, ऐसा न हो पीछे से आकर मकान में आग लगाकर भाग जाए। क्या अच्छा हो कि जब वह आग लगाने आये, तब उसे मैं पकड़ लूं। बस फिर कभी नहीं बच सकता, अवश्य उसे बन्दीखाने जाना पड़े।

यह विचार करके वह गली में पहुंच गया। सामने उसे कोई चीज़ हिलती दिखाई दी। पहले तो वह समझा कि कादिर है, पर वहां कुछ न था—चारों ओर सन्नाटा था।

थोड़ी दूर आगे जाकर देखता क्या है कि पशुशाला के पास एक मनुष्य जलता हुआ फूस का पूला हाथ में लिये खड़ा है। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि कादिर है। फिर क्या था, जोर से दौड़ा कि उसे जाकर पकड़ ले।

रहीम अभी वहां पहुंचने न पाया था कि छप्पर में आग लगी, उजाला होने पर कादिर प्रत्यक्ष दिखाई देने लगा। रहीम बाज की तरह झपटा, लेकिन कादिर उसकी आहट पाकर चम्पत हो गया।

रहीम उसके पीछे दौड़ा। उसके कुरते का पल्ला हाथ में आया ही था कि वह छुड़ाकर फिर भागा। रहीम धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ा, उठकर फिर दौड़ा। इतने में कादिर अपने घर पहुंच गया। रहीम वहां जाकर उसे पकड़ना चाहता था कि उसने ऐसा लट्ठ मारा कि रहीम चक्कर खाकर बेसुध हो धरती पर गिर पड़ा। सुध आने पर उसने देखा कि कादिर वहां नहीं है, फिरकर देखता है तो पशुशाला का छप्पर जल रहा है, ज्वाला प्रचंड हो रही है और लपटें निकल रही हैं।

रहीम सिर पीटकर पुकराने लगा—भाइयो, यह क्या हुआ! हाय, मेरा सत्यानाश हो गया! चिल्लाते-चिल्लाते उसका कंठ बैठ गया। वह दौड़ना चाहता था, परन्तु उसकी टांगें लड़खड़ा गईं। वह धम से धरती पर गिर पड़ा, फिर उठा, घर के पास पहुंचते-पहुंचते आग चारों ओर फैल गई। अब क्या बन सकता है? भय से पड़ोसी भी अपना असबाब बाहर फेंकने लगे। वायु के वेग से कादिर के घर में भी आग जा लगी, यहां तक कि आधा गांव जलकर राख का ढेर हो गया। रहीम और कादिर दोनों का कुछ न बचा। मुर्गियां, हल, गाड़ी, पशु, वस्त्र, अन्न, भूसा आदि सब कुछ स्वाहा हो गया। इतना अच्छा हुआ कि किसी की जान नहीं गई।

आग रात भर जलती रही। वह कुछ असबाब उठाने भीतर गया, परन्तु ज्वाला ऐसी प्रचंड थी कि जा न सका। उसके कपड़े और दाढ़ी के बाल झुलस गए।

प्रातःकाल गांव के चौधरी का बेटा उसके पास आया और बोला—रहीम, तुम्हारे पिता

की दशा अच्छी नहीं है। वह तुम्हें बुला रहे हैं। रहीम तो पागल हो रहा था, बोला–कौन पिता जी ?

चौधरी का बेटा–तुम्हारे पिता। इसी आग में उनका काम तमाम कर दिया है। हम उन्हें यहां से उठाकर अपने घर ले गये थे। अब वह बच नहीं सकते। चलो, अंतिम भेंट कर लो।

रहीम उसके साथ हो लिया। वहां पहुंचने पर चौधरी ने बूढ़े को खबर दी कि रहीम आ गया है।

बूढ़े ने रहीम को अपने निकट बुलाकर कहा–बेटा, मैं तुमसे क्या कहा था। गांव किसने जलाया?

रहीम–कादिर ने। मैंने आप उसे छप्पर में आग लगाते देखा था। यदि मैं उसी समय उसे पकड़कर पूले को पैरों तले मल देता, तो आग कभी न लगती।

बूढ़ा–रहीम, मेरा अन्त समय आ गया। तुमको भी एक दिन अवश्य मरना है, पर सच बतलाओ कि दोष किसका है?

रहीम चुप हो गया।

बूढ़ा–बताओ, कुछ बोलो तो, फिर यह सब किसकी करतूत है, किसका दोष है?

रहीम–(आंखों में आंसू भरकर) मेरा! पिताजी, क्षमा कीजिए, मैं खुदा और आप दोनों का अपराधी हूं।

बूढ़ा–रहीम!

रहीम–हां, पिताजी।

बूढ़ा–जानते हो अब क्या करना उचित है?

रहीम–मैं क्या जानूं, मेरा तो अब गांव में रहना कठिन है।

बूढ़ा–यदि तू परमेश्वर की आज्ञा मानेगा तो तुझे कोई कष्ट न होगा। देख, याद रख, अब किसी से न कहना कि आग किसने लगाई थी। जो पुरुष किसी का एक दोष क्षमा करता है, परमात्मा उसके दो दोष क्षमा करता है।

यह कहकर खुदा को याद करते हुए बूढ़े ने प्राण त्याग दिए।

रहीम का क्रोध शांत हो गया। उसने किसी को न बतलाया कि आग किसने लगायी थी। पहले-पहल तो कादिर डरता रहा कि रहीम के चुप रह जाने में भी कोई भेद है, फिर कुछ दिनों पीछे उसे विश्वास हो गया कि रहीम के चित्त में अब कोई बैर-भाव नहीं रहा।

बस, फिर क्या था–प्रेम में शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। वे पास-पास घर बनाकर पड़ोसियों की भांति रहने लगे।

रहीम अपने पिता का उपदेश कभी न भूलता था कि फैलने से पहले ही चिनगारी को बुझा देना उचित है। अब यदि कोई कष्ट देता, तो वह बदला लेने की इच्छा नहीं करता। यदि कोई उसे गाली देता, तो सहन करके वह यह उपदेश करता कि कुवचन बोलना अच्छा नहीं। अपने घर के प्राणियों को भी वह यही उपदेश दिया करता। पहले की अपेक्षा अब उसका जीवन बड़े आनन्दपूर्वक कटता है।

दो वृद्ध पुरुष

एक गांव में अर्जुन और मोहन नाम के दो किसान रहते थे। अर्जुन धनी था, मोहन साधारण पुरुष था। उन्होंने चिरकाल से बद्रीनारायण की यात्रा का इरादा कर रखा था।

अर्जुन बड़ा सुशील, सहासी और दृढ़ था। दो बार गांव का चौधरी रहकर उसने बड़ा अच्छा काम किया था। उसके दो लड़के तथा एक पोता था। उसकी साठ वर्ष की अवस्था थी, परन्तु दाढ़ी अभी तक नहीं पकी थी।

मोहन प्रसन्न बदन, दयालु और मिलनसार था। उसके दो पुत्र थे, एक घर में था, दूसरा बाहर नौकरी पर गया हुआ था। वह खुद घर में बैठा-बैठा बढ़ई का काम करता था।

बद्रीनारायण की यात्रा का संकल्प किए उन्हें बहुत दिन हो चुके थे। अर्जुन को छुट्टी ही नहीं मिलती थी। एक काम समाप्त होता था कि दूसरा आकर घेर लेता था। पहले पोते का ब्याह करना था, फिर छोटे लड़के का गौना आ गया, इसके पीछे मकान बनना प्रारम्भ हो गया। एक दिन बाहर लकड़ी पर बैठकर दोनों बूढ़ों में बातें होने लगी।

मोहन—क्यों भाई, अब यात्रा करने का विचार कब है?

अर्जुन—ज़रा ठहरो। अब की वर्ष अच्छा नहीं लगा। मैंने यह समझा था कि सौ रुपये में मकान तैयार हो जाएगा। तीन सौ रुपये लगा चुके हैं अभी दिल्ली दूर है। अगले वर्ष चलेंगे।

मोहन—शुभ कार्य में देरी करना अच्छा नहीं होता। मेरे विचार में तो तुरंत चल देना ही उचित है, दिन बहुत अच्छे हैं।

अर्जुन—दिन तो अच्छे हैं, पर मकान को क्या करूं! इसे किस पर छोड़ूं?

मोहन—क्या कोई संभालने वाला ही नहीं, बड़े लड़के को सौंप दो।

अर्जुन—उसका क्या भरोसा है।

मोहन—वाह-वाह, भला बताओ तो कि मरने पर कौन संभालेगा? इससे तो यह अच्छा है कि जीते-जी संभाल लें। और तुम सुख से जीवन व्यतीत करो।

अर्जुन—यह सत्य है, पर किसी काम में हाथ लगाकर उसे पूरा करने की इच्छा सभी की होती है।

मोहन—तो काम कभी पूरा नहीं होता, कुछ न कुछ कसर रह ही जाती है। कल ही की बात है कि रामनवमी के लिए स्त्रियां कई दिन से तैयारी कर रही थीं—कहीं लिपाई होती थी, कहीं आटा पीसा जाता था। इतने में रामनवमी आ पहुंची। बहू बोली, परमेश्वर की बड़ी कृपा है कि त्योहार बिना बुलाए ही आ जाते हैं, नहीं तो हम अपनी तैयारी ही करती रहें।

अर्जुन—एक बात और है, इस मकान पर मेरा बहुत रुपया खर्च हो गया है। इस समय रुपये का भी तोड़ा है। कम-से-कम सौ रुपये तो हों, नहीं तो यात्रा कैसे होगी।

मोहन—(हंसकर) अहा हा! जो जितना धनवान होता है, वह उतना ही कंगाल होता है तुम और रुपये की चिंता! जाने दो। मैं सच कहता हूं, इस समय मेरे पास एक सौ रुपये भी नहीं, परन्तु जब चलने का निश्चय हो जायेगा, तो रुपया भी कहीं न कहीं से अवश्य आ ही जाएगा। बस, यह बतलाओ कि चलना कब है?

अर्जुन—तुमने रुपये जोड़ रखे होंगे, नहीं तो कहां से आ जाएगा, बताओ तो सही।

मोहन—कुछ घर में से, कुछ माल बेचकर। पड़ोसी कुछ चौखट आदि मोल लेना चाहता है, उसे सस्ती दे दूंगा।

अर्जुन—सस्ती बेचने पर पछतावा होगा।

मोहन—मैं सिवाय पाप के और किसी बात पर नहीं पछताता। आत्मा से कौन चीज़ प्यारी है!

अर्जुन—यह सब ठीक है, परन्तु घर के काम-काज बिसराना भी उचित नहीं।

मोहन—और आत्मा को बिसारना तो और भी बुरा है। जब कोई बात मन में ठान ली तो उसे बिना पूरा किए न छोड़ना चाहिए।

2

अन्त में चलना निश्चय हो गया। चार दिन पीछे जब विदा होने का समय आया, तो अर्जुन बड़े लड़के को समझाने लगा कि मकान पर छत इस प्रकार डालना, भूसी बखार में इस भांति जमा कर देना, मंडी में जाकर अनाज इस भाव से बेचना, रुपये संभालकर रखना, ऐसा न हो खो जावें, घर का प्रबन्ध ऐसा रखना कि किसी प्रकार की हानि न होने पावे। उसका समझाना समाप्त ही न होता था।

इसके प्रतिकूल मोहन ने अपनी स्त्री से केवल इतना ही कहा कि तुम चतुर हो, सावधानी से काम करती रहना।

मोहन तो घर से प्रसन्न मुख बाहर निकला और गांव छोड़ते ही घर के सारे बखेड़े भूल गया। साथी को प्रसन्न रखना, सुखपूर्वक यात्रा कर घर लौट आना उसका मन्तव्य था। राह चलता था तो ईश्वर-सम्बन्धी कोई भजन गाता था या किसी महापुरुष की कथा कहता। सड़क पर अथवा सराय में जिस किसी से भेंट हो जाती, उससे बड़ी नम्रता से बोलता।

अंर्जुन भी चुपके-चुपके चल तो रहा था, परन्तु उसका चित्त व्याकुल था। सदैव घर की चिंता लगी रहती थी। लड़का अनजान है, कौन जाने क्या कर बैठे। अमुक बात कहना भूल आया। ओहो, देखू, मकान की छत पड़ती है या नहीं। यही विचार उसे हरदम घेरे रहते थे यहां तक कि कभी-कभी लौट जाने को तैयार हो जाता था।

3

चलते-चलते एक महीना पीछे वे पहाड़ पर पहुंच गए। पहाड़ी बड़े अतिथि-सेवक होते हैं अब तक यह मोल का अन्न खाते रहे थे। अब उनकी खातिरदारी होने लगी।

आगे चलकर वे ऐसे देश में पहुंचे, जहां दुर्घट अकाल पड़ा हुआ था। खेतियां सब सूख गई थीं, अनाज का एक दाना भी नहीं उगा था। धनवान कंगाल हो गए थे धनहीन देश को छोड़कर भीख मांगने बाहर भाग गए थे।

यहां उन्हें कुछ कष्ट हुआ, अन्न कम मिलता था और वह भी बड़ा महंगा। रात को उन्होंने एक जगह विश्राम किया। अगले दिन चलते-चलते एक गांव मिला। गांव के बाहर

एक झोंपड़ा था। मोहन थक गया था, बोला—मुझे प्यास लगी है। तुम चलो, मैं इस झोंपड़े से पानी पीकर अभी तुम्हें आ मिलता हूं। अर्जुन बोला—अच्छा, पी आओ। मैं धीरे-धीरे चलता हूं।

झोंपड़े के पास जाकर मोहन ने देखा कि उसके आगे धूप में एक मनुष्य पड़ा है। मोहन ने उससे पानी मांगा, उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मोहन ने समझा कि कोई रोगी है।

समीप जाने पर झोंपड़े के भीतर एक बालक के रोने का शब्द सुनायी दिया। किवाड़ खुले हुए थे। वह भीतर चला गया।

4

उसने देखा कि नंगे सिर केवल एक चादर ओढ़े एक बुढ़िया धरती पर बैठी है, पास में भूख का मारा हुआ एक बालक बैठा रोटी, रोटी, पुकार रहा है। चूल्हे के पास एक स्त्री तड़प रही है, उसकी आंखें बन्द हैं, कंठ रुका हुआ है।

मोहन को देखकर बुढ़िया ने पूछा—तुम कौन हो? क्या मांगते हो? हमारे पास कुछ नहीं हैं।

मोहन—मुझे प्यास लगी है, पानी मांगता हूं।

बुढ़िया—यहां न बर्तन है, न कोई लाने वाला। यहां कुछ नहीं। जाओ, अपनी राह लो।

मोहन—क्या तुममें से कोई उस स्त्री की सेवा नहीं कर सकता?

बुढ़िया—कोई नहीं। बाहर मेरा लड़का भूख से मर रहा है, यहां हम भूख से मर रहे हैं।

यह बातें हो ही रही थीं कि बाहर से वह मनुष्य भी गिरता-पड़ता भीतर आया और बोला—काल और रोग दोनों ने हमें मार डाला। यह बालक कई दिन से भूखा है क्या करूं—यह कहकर रोने लगा और उसकी हिचकी बंध गई।

मोहन ने तुरन्त अपने थैले में से रोटी निकालकर उनके आगे रख दी।

बुढ़िया बोली—इनके कंठ सूख गए हैं, बाहर से पानी ले आओ। मोहन बुढ़िया से कुएं का पता पूछकर बाहर गया और पानी ले आया। सबने रोटी खाकर पानी पिया, परन्तु चूल्हें के पास वाली स्त्री पड़ी तड़पती रही। मोहन गांव में जाकर कुछ दाल, चावल मोल ले आया और खिचड़ी पाकर सबको खिलायी।

5

तब बुढ़िया बोली—भाई, क्या सुनाऊं, निर्धन तो हम पहले ही थे, उस पर पड़ा अकाल। हमारी और भी दुर्गति हो गई। पहले-पहल तो पड़ोसी अन्न उधार देते रहे, परन्तु वे क्या करते। वे आप भूखों मरने लगे, हमें कहां से देते।

मनुष्य ने कहा—मैं मजूरी करने निकला, दो-तीन दिन तो कुछ मिला, फिर किसी ने

नौकर न रखा बुढ़िया और लड़की भीख मांगने लगीं। अन्न का अकाल था, कोई भीख भी न देता था। बहुतेरे यत्न किए, कुछ न बन सका। भूख के मारे घास खाने लगे, इसी कारण यह मेरी स्त्री चूल्हे के पास पड़ी तड़प रही है।

बुढ़िया—पहले कई दिनों तक तो मैं चल-फिरकर कुछ धंधा करती रही, परन्तु कहां तक? भूख और रोग ने जान ले ली। जो हाल है, तुम अपने नेत्रों से देख रहे हो।

उनकी बिथा सुनकर मोहन ने विचारा कि आज रात यहीं रहना उचित हैं साथी से कल मिल लेंगे।

प्रातःकाल उठकर वह गांव में गया और खाने-पीने की जिन्स ले आया। घर में कुछ न श्ग। वह वहां ठहरकर इस तरह काम करने लगा कि मानो अपना ही घर है। दो-तीन दिन पीछे सब चलने-फिरने लगे और वह स्त्री उठ बैठी।

6

चौथे दिन एकादशी थी। मोहन ने विचारा कि आज सन्ध्या को इन सबके साथ बैठकर फलाहार करके कल प्रातःकाल चल दूंगा।

वह गांव में जाकर दूध, फल सब सामग्री लाकर बुढ़िया को दे, आप पूजा-पाठ करने मन्दिर में चला गया। इन लोगों ने अपनी जमीन एक जमींदार के यहां गिरवी रखकर अकाल के समय अपना निर्वाह किया था। मोहन जब मन्दिर गया, तब किसान युवक जमींदार के पास पहुंचा और विनयपूर्वक बोला—चौधरी जी, इस समय रुपये देकर खेत छुड़ाना मेरे काबू के बाहर है। यदि आप इस चौमासे में मुझे खेत बोने की आज्ञा दे दें, तो मेहनत-मजदूरी करके आपका ऋण चुका दे सकता हूं।

परन्तु चौधरी कब मानता था? वह बोला—बिना रुपये दिए खेत नहीं बो सकते जाओ, अपना काम करो। वह निराश होकर घर लौट आया। इतने में मोहन भी पहुंच गया। जमींदार की बात सुनकर वह मन में विचार करने लगा कि जब यह जमींदार खेत नहीं बोने देता, तो इन किसानों की प्राण-रक्षा क्या करेगा! यदि मैं इन्हें इसी दशा में छोड़कर चल दिया, तो यह सब काल के कौर बन जायेंगे कल नहीं परसों जाऊंगा।

मोहन अब बड़ी दुविधा में पड़ा था। न रहते ही बनता था, न जाते ही बनता था। रात को पड़ा-पड़ा सोचने लगा, यह तो अच्छा बखेड़ा फैला। पहले अन्न-पानी, अब खेत छुड़ाना, फिर गाय और बैलों की जोड़ी मोल लेना। मोहन तुम किस जंजाल में फंस गए?

जी चाहता था कि वह उन्हें ऐसे ही छोड़कर चल दे, परन्तु दया जाने न देती थी। सोचते-सोचते आंख लग गई। स्वप्न में देखता क्या है कि वह जाना चाहता है, किसी ने उसे पकड़ लिया है। लौटकर देखा तो बालक रोटी मांग रहा है। वह तुरन्त उठ बैठा और मन में कहने लगा—नहीं, अब मैं नहीं जाता। यह स्वप्न शिक्षा देता है कि मुझे इनका खेत छुड़ाना, गाय-बैल मोल लेना और सारा प्रबन्ध करके जाना उचित है।

प्रातःकाल उठकर जमींदार के पास गया और रुपया देकर उनका खेत छुड़ा दिया। जब एक किसान से एक गाय और दो बैल मोल लेकर लौट रहा था कि राह में स्त्रियों को बातें करते सुना।

'बहन, पहले तो हम उसे साधारण मनुष्य जानते थे। वह केवल पानी पीने आया था, पर अब सुना है कि खेत छुड़ाने और गाय-बैल मोल लेने गया है। ऐसे महात्मा के दर्शन करने चाहिए।' मोहन अपनी स्तुति सुनकर वहां से टल गया। गाय-बैल लेकर जब झोंपड़े पर पहुंचा तो किसान ने पूछा–पिताजी, यह कहां से लाये?

मोहन–अमुक किसान से यह बड़े सस्ते मिल गए हैं। जाओ, पशुशाला में बांधकर इनके आगे कुछ भूसा डाल दो।

उसी रात जब सब सो गए, तो मोहन चुपके से उठकर घर से बाहर निकल बद्रीनारायण की राह ली।

7

तीन मील चलकर मोहन एक वृक्ष के नीचे बैठकर बटुआ निकाल, रुपये गिनने लगा तो थोड़े ही रुपये बाकी थे। उसने सोचा–

इतने रुपयों में बद्रीनाराण पहुंचना असम्भव है, भीख मांगना पाप है। अर्जुन वहां अवश्य पहुंचेगा और आशा है कि मेरे नाम पर कुछ चढ़ावा भी चढ़ा ही देगा। मैं तो अब इस जीवन में यह यात्रा करने का संकल्प पूरा नहीं कर सकता। अच्छा, परमात्मा की इच्छा, वह बड़ा दयालु है। मुझ-जैसे पापियों को निस्संदेह क्षमा कर देगा।

यह विचार करके गांव का चक्कर काटकर कि कोई देख न ले, वह घर की ओर लौट पड़ा।

गांव में पहुंचा जाने पर घर वाले उसे देखकर अति प्रसन्न हुए और पूछने लगे कि लौट क्यों आये? मोहन ने यही उत्तर दिया कि अर्जुन से साथ छूट गया और रुपये चोरी हो गए, इस कारण लौट आना पड़ा। घर में कुशल-क्षेम थी। कोई कष्ट न था।

मोहन का आना सुनकर अर्जुन के घर वाले उससे पूछने लगे कि अर्जुन को कहां छोड़ा उनसे भी उसने यही कहा कि बद्रीनारायण पहुंचने से तीन दिन पहले मैं अर्जुन से पिछड़ गया, रुपया किसी ने चुरा लिया, बद्रीनारायण जाना असम्भव था, मुझे लौटना ही पड़ा।

सब लोग मोहन की बुद्धि पर हंसने लगे कि बद्रीनारायण पहुंचा ही नहीं, रास्ते में रुपये खो दिए। मोहन घर के धंधे में लग गया, बात बीत गई।

8

अब उधर का हाल सुनिए–

मोहन जब पानी पीने चला गया तब थोड़ी दूर जाकर अर्जुन बैठ गया और साथी की बाट देखने लगा। सन्ध्या हो गई, पर मोहन न आया।

अर्जुन सोचने लगा–क्या हुआ, साथी क्यों नहीं आया? मेरी आंखें लग गई थीं। कहीं आगे न निकल गया हो। पर यहां से जाता तो क्या दिखायी नहीं देता? पीछे लौटकर देखूं, कहीं आगे न चला गया हो, फिर तो मिलना ही असम्भव है। आगे ही चलो, रात को चट्टी

पर अवश्य भेंट हो जाएगी।

रास्ते में अर्जुन ने कई मनुष्यों से पूछा कि तुमने कोई नाटा, सांवले रंग का आदमी देखा है? परन्तु कुछ पता न चला। रात चट्टी पर भी मोहन से भेंट न हुई। अगले दिन यह विचार कर कि वह देवप्रयाग पर अवश्य मिल जाएगा, वह आगे चल दिया।

रास्ते में अर्जुन को एक साधु मिल गया। वह जगन्नाथ की यात्रा करके आया था। अब दूसरी बार बद्रीनारायण के दर्शन को जा रहा था। रात को चट्टी में वे दोनों इकट्ठे ही रहे और फिर एक साथ यात्रा करने लगे।

देवप्रयाग में पहुंचकर अर्जुन ने मोहन के विषय में पंडे से बहुत पूछ-ताछ की, कुछ पता न चला। यहां सब यात्री एकत्र हो गए। देवप्रयाग से आगे चलकर सब लोग रात को एक चट्टी में ठहरे। वहां मूसलाधार मेंह बरसने लगा। बिजली की कड़क, बादल की गरज से सब कांप गए। सारी रात जागते कटी। त्राहि-त्राहि करते दिन निकला।

अन्त को दोपहर के समय सब लोग बद्रीनारायण पहुंच गए। पंडे देवप्रयाग से ही साथ हो लिये थे। बद्रीनारायण में यही रीति है कि पहले दिन यात्रियों को मन्दिर की ओर से भोजन कराया जाता है और उसी दिन यात्रियों को अटका अथवा चढ़ावा बतला देना पड़ता है कि कौन कितना चढ़ाएगा, कम से कम सवा रुपया नियत है। उस समय तो सबने पंडों के घरों में जाकर विश्राम किया। दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर दर्शन-परसन में लग गए। अर्जुन औ' साधु एक ही स्थान में टिके थे। सांझ की आरती के दर्शन करके लौटकर जब घर आये, तब साधु बोला कि मेरा तो किसी ने रुपये का बटुआ निकाल लिया।

9

अर्जुन के मन में यह पाप उत्पन्न हुआ कि यह साधु झूठा है। किसी ने इसका रुपया नहीं चुराया। इसके पास रुपया था ही नहीं।

लेकिन् तुरन्त ही उसको पश्चाताप हुआ कि किसी पुरुष के विषय में ऐसी कल्पना करना महापाप है। उसने मन को बहुतेरा समझाया, परंतु उसका ध्यान साधु में ही लगा रहा। पवित्र स्थान में रहने पर भी चित्त की मलिनता दूर नहीं हुई। इतने में शयन की आरती का घंटा बजा। दोनों दर्शनार्थ मन्दिर में चले गए। भीड़ बहुत थी, अर्जुन नेत्र मूंदकर भगवान् की स्तुति करने लगा, परंतु हाथ बटुए पर था, क्योंकि साधु के रुपये खो जाने से संस्कार चित्त में पड़े हुए थे। अन्तःकरण का शुद्ध हो जाना क्या कोई सहज बात है!

10

स्तुति समाप्त करके नेत्र खोलकर अर्जुन जब भगवान् के दर्शन करने लगा, तब देखता क्या है कि मूर्ति के अति समीप मोहन खड़ा है। ऐ—मोहन! नहीं-नहीं, मोहन यहां कैसे पहुंच सकता है? सारे रास्ते तो ढूंढता आया हूं।

मोहन को साष्टांग दण्डवत् करते देखकर अर्जुन को निश्चय हो गया कि मोहन ही है। स्यात् किसी दूसरी राह से यहां आ पहुंचा है। चलो, अच्छा हुआ, साथी तो मिल गया।

आरती हो गई। यात्री बाहर निकलने लगे। अर्जुन का हाथ बटुए पर था कि कोई रुपये न चुरा ले। वह मोहन को खोजने लगा, पर उसका कहीं पता नहीं चला।

दूसरे दिन प्रातःकाल मन्दिर में जाने पर अर्जुन ने फिर देखा कि मोहन हाथ जोड़े भगवान् के सम्मुख खड़ा है। वह चाहता था कि आगे बढ़कर मोहन को पकड़ ले, परन्तु ज्योंही वह आगे बढ़ा, मोहन लोप हो गया।

तीसरे दिन भी अर्जुन को वही दृश्य दिखाई दिया। उसने विचारा कि चलकर द्वार पर खड़े हो जाओ। सब यात्री वहीं से निकलेंगे, वहीं मोहन को पकड़ लूंगा। अतएव उसने ऐसा ही किया, लेकिन सब यात्री निकल गए, मोहन का कहीं पता ही नहीं।

एक सप्ताह बद्रीनारायण में निवास करके अर्जुन घर लौट पड़ा।

11

राह चलते अर्जुन के चित्त में वही पुराने घर के झमेले बार-बार आने लगे। साल-भर बहुत होता है। इतने दिनों में घर की दशा न जाने क्या हुई हो। कहावत है—छाते लगे छः मास और छिन में होय उजाड़। कौन जाने लड़के ने क्या कर छोड़ा हो? फसल कैसी हो? पशुओं का पालन-पोषण हुआ है कि नहीं?

चलते-चलते अर्जुन जब उस झोपड़े के पास पहुंचा, जहां मोहन पानी पीने गया था, तो भीतर से एक लड़की ने आकर उसका कुरता पकड़ लिया और बोली—बाबा, बाबा भीतर चलो।

अर्जुन कुरता छुड़ाकर जाना चाहता था कि भीतर से एक स्त्री बोली—महाशय! भोजन करके रात्रि को यहीं विश्राम कीजिए। कल चले जाना। वह अंदर चला गया और सोचने लगा कि मोहन यहीं पानी पीने आया था। स्यात् इन लोगों से उसका कुछ पता चल जाए।

स्त्री ने अर्जुन के हाथ-पैर धुलाकर भोजन परस दिया। अर्जुन उसको आशीष देने लगा।

स्त्री बोली—दादा, हम अतिथि-सेवा करना क्या जानें? यह सब कुछ हमें एक यात्री ने सिखाया है। हम परमात्मा को भूल गए थे। हमारी यह दशा हो गई थी कि यदि वह बूढ़ा यात्री न आता तो हम सब-के-सब मर जाते। वह यहां पानी पीने आया था। हमारी दुर्दशा देखकर यहीं ठहर गया। हमारा खेत रेहन पड़ा था, वह छुड़ा दिया। गाय-बैल मोल ले दिए और सामग्री जुटाकर एक दिन न जाने कहां चला गया।

इतने में एक बुढ़िया आ गई और यह बात सुनकर बोल उठी—वह मनुष्य नहीं था, साक्षात् देवता था। उसने हमारे ऊपर दया की, हमारा उद्धार कर दिया, नहीं तो हम मर गए होते वह पानी मांगने आया। मैंने कहा, जाओ, यहां पानी नहीं। जब मैं वह बात स्मरण करती हूं, तो मेरा शरीर कांप उठता है।

छोटी लड़की बोल उठी—उसने अपनी कांवर खोली और उसमें से लोटा निकाला कुएं की ओर चला।

इस तरह सब-के-सब मोहन की चर्चा करने लगे। रात को किसान भी आ पहुंचा और

वही चर्चा करने लगा—निस्संदेह उस यात्री ने हमें जीवन-दान दिया। हम जान गए कि परमेश्वर क्या है और परोपकार क्या। वह हमें पशुओं से मनुष्य बना गया।

अर्जुन ने अब समझा कि बद्रीनारायण के मंदिर में मोहन के दिखायी देने का कारण क्या था। उसे निश्चय हो गया कि मोहन की यात्रा सफल हुई।

कुछ दिनों पीछे अर्जुन घर पहुंच गया। लड़का शराब पीकर मस्त पड़ा था। घर का हाल सब गड़बड़ था। अर्जुन लड़के को डांटने लगा। लड़के ने कहा—तो यात्रा पर जाने को किसने कहा था? न जाते। इस पर अर्जुन ने उसके मुंह पर तमाचा मारा।

दूसरे दिन अर्जुन जब चौधरी से मिलने जा रहा था, तो राह में मोहन की स्त्री मिल गई।

स्त्री—भाई जी, कुशल से तो हो? बद्रीनारायण हो आये?

अर्जुन—हां, हो आया। मोहन मुझसे रास्ते में बिछुड़ गए थे। कहो, वह कुशल से घर तो पहुंच गए?

स्त्री—उन्हें आये तो कई महीने हो गए। उनके बिना हम सब उदास रहा करते थे। लड़के को तो घर काटे खाता था। स्वामी बिना घर सूना होता है।

अर्जुन—घर में हैं कि कहीं बाहर गये हैं?

स्त्री—नहीं, घर में हैं।

अर्जुन भीतर चला गया और मोहन से बोला—राम-राम, भैया मोहन, राम-राम!

मोहन—राम-राम! आओ भाई! कहो, दर्शन कर आये!

अर्जुन—हां, कर तो आया, पर मैं यह नहीं कह सकता कि यात्रा सफल हुई अथवा नहीं। लौटते समय मैं उस झोंपड़े में ठहरा था, जहां तुम पानी पीने गये थे।

मोहन ने बात टाल दी और अर्जुन भी चुप हो गया, परंतु उसे दृढ़ विश्वास हो गया कि उत्तम तीर्थयात्रा यही है कि पुरुष जीवन पर्यन्त प्रत्येक प्राणी के साथ प्रेम-भाव रखकर सदैव उपकार में तत्पर रहे।'

प्रेम में परमेश्वर

किसी गांव में मूरत नाम का एक बनिया रहता था। सड़क पर उसकी छोटी-सी दुकान थी। वहां रहते उसे बहुत काल हो चुका था, इसलिए वहां के सब निवासियों को भली-भांति जानता था। वह बड़ा सदाचारी, सत्यवक्ता, व्यावहारिक और सुशील था। जो बात कहता, उसे जरूर पूरा करता। कभी धेले भर भी कम न तोलता और न घी-तेल मिलाकर बेचता। चीज़ अच्छी न होती, तो ग्राहक से साफ-साफ कह देता, धोखा न देता था।

चौथेपन में वह भगवत्-भजन का प्रेमी हो गया था। उसके और बालक तो पहले ही मर चुके थे, अंत में तीन साल का बालक छोड़कर उसकी स्त्री भी जाती रही। पहले तो मूरत ने सोचा, इसे ननिहाल भेज दूं, पर फिर उसे बालक से प्रेम हो गया। वह स्वयं उसका पालन करने लगा। उसके जीवन का आधार अब यही बालक था। इसी के लिए वह रात-दिन काम किया करता था। लेकिन शायद संतान का सुख उसके भाग्य में लिखा ही

न था।

पल-पलाकर बीस वर्ष की अवस्था में यह बालक भी यमलोक को सिधार गया। अब मूरत के शोक की कोई सीमा न थी। उसका विश्वास हिल गया। सदैव परमात्मा की निन्दा कर वह कहा करता था कि परमेश्वर बड़ा निर्दयी और अन्यायी है; मारना बूढ़े को चाहिए था, मार डाला युवक को। यहां तक कि उसने ठाकुर के मंदिर में जाना भी छोड़ दिया।

एक दिन उसका पुराना मित्र, जो आठ वर्ष से तीर्थयात्रा को गया हुआ था, उससे मिलने आया। मूरत बोला—मित्र देखो, सर्वनाश हो गया। अब मेरा जीना अकारथ है। मैं नित्य परमात्मा से यही विनती करता हूं कि वह मुझे जल्दी इस मृत्युलोक से उठा ले, मैं अब किस आशा पर जीऊं।

मित्र—मूरत, ऐसा मत कहो। परमेश्वर की इच्छा को हम नहीं जान सकते। वह जो करता है, ठीक करता है। पुत्र का मर जाना और तुम्हारा जीते रहना विधाता के वश है, और कोई इसमें क्या कर सकता है! तुम्हारे शोक का मूल कारण यह है कि तुम अपने सुख में सुख मानते हो। पराए सुख से सुखी नहीं होते।

मूरत—तो मैं क्या करूं?

मित्र—परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से अन्तःकरण शुद्ध होता है। जब सब काम परमेश्वर को अर्पण करके जीवन व्यतीत करोगे तो तुम्हें परमानंद प्राप्त होगा।

मूरत—चित्त स्थिर करने का कोई उपाय तो बतलाइए।

मित्र—गीता, भक्तमालादि ग्रन्थों का श्रवण, पाठन, मनन किया करो। ये ग्रन्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों फलों को देने वाले हैं। इनका पढ़ना आरम्भ कर दो, चित्त को बड़ी शांति प्राप्ति होगी।

मूरत ने इन ग्रन्थों को पढ़ना आरम्भ किया। थोड़े ही दिनों में इन पुस्तकों से उसे इतना प्रेम हो गया कि रात को बारह-बारह बजे तक गीता आदि पढ़ता और उसके उपदेशों पर विचार करता रहता था। पहले तो वह सोते समय छोटे पुत्र को स्मरण करके रोया करता था, अब सब भूल गया। सदा परमात्मा में लवलीन रहकर आनंदपूर्वक अपना जीवन बिताने लगा। पहले इधर-उधर बैठकर हंसी-ठट्ठा भी कर लिया करता था, पर अब वह समय व्यर्थ न खोता था। या तो दुकान का काम करता था या रामायण पढ़ता था। तात्पर्य यह कि उसका जीवन सुधर गया।

एक रात रामायण पढ़ते-पढ़ते उसे ये चौपाइयां मिलीं—

एक पिता के विपुल कुमारा। होइ पृथक गुण शील अचारा॥
कोई पंडित कोइ तापस ज्ञाता। कोई धनवंत शूर कोइ दाता॥
कोइ सर्वज्ञ धर्मरत कोई। सब पर पितहिं प्रीति सम होई॥
अखिल विश्व यह मम उपजाया। सब पर मोहि बराबर दाया॥

मूरत पुस्तक रखकर मन में विचारने लगा कि जब ईश्वर सब प्राणियों पर दया करते हैं, तो क्या मुझे सभी पर दया न करनी चाहिए? तत्पश्चात् सुदामा और शबरी की कथा पढ़कर उसके मन में यह भाव उत्पन्न हुआ कि क्या मुझे भी भगवान् के दर्शन हो सकते हैं!

यह विचारते-विचारते उसकी आंख लग गई। बाहर से किसी ने पुकारा—मूरत! बोला—मूरत! देख, याद रख, मैं कल तुझे दर्शन दूंगा।

यह सुनकर वह दुकान से बाहर निकल आया। वह कौन था? वह चकित होकर कहने लगा, यह स्वप्न है अथवा जागृति। कुछ पता न चला। वह दुकान के भीतर जाकर सो गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल उठ, पूजा-पाठ कर, दुकान में आ, भोजन बना मूरत अपने काम-धंधे में लग गया; परंतु उसे रात वाली बात नहीं भूलती थी।

रात्रि को पाला पड़ने के कारण सड़क पर बर्फ के ढेर लग गए थे। मूरत अपनी धुन में बैठा था। इतने में बर्फ हटाने को कोई कुली आया। मूरत ने समझा कृष्णचन्द्र आते हैं, आंखें खोलकर देखा कि बूढ़ा लालू बर्फ हटाने आया है, हंसकर कहने लगा—आवे बूढ़ा लालू और मैं समझूं कृष्ण भगवान्, वाह री बुद्धि!

लालू बर्फ हटाने लगा। बूढ़ा आदमी था। शीत के कारण बर्फ न हटा सका। थककर बैठ गया और शीत के मारे कांपने लगा। मूरत ने सोचा कि लालू को ठंड लग रही है, इसे आग तपा दूं।

मूरत—लालू भैया, यहां आओ, तुम्हें ठंड सता रही है। हाथ सेंक लो।

लालू दुकान पर आकर धन्यवाद करके हाथ सेंकने लगा।

मूरत—भाई, कोई चिंता मत करो। बर्फ मैं हटा देता हूं। तुम बूढ़े हो, ऐसा न हो कि ठंड खा जाओ।

लालू—तुम क्या किसी की बाट देख रहे थे?

मूरत—क्या कहूं, कहते हुए लज्जा आती है। रात मैंने एक ऐसा स्वप्न देखा है कि उसे भूल नहीं सकता। भक्तमाल पढ़ते-पढ़ते मेरी आंख लग गई। बाहर से किसी ने पुकारा—'मूरत!' मैं उठकर बैठ गया। फिर शब्द हुआ, 'मूरत! मैं तुम्हें दर्शन दूंगा!' बाहर जाकर देखता हूं तो वहां कोई नहीं। मैं भक्तमाल में सुदामा और शबरी के चरित पढ़कर यह जान चुका हूं कि भगवान् ने प्रमेवश होकर किस प्रकार साधारण जीवों को दर्शन दिए हैं। वही अभ्यास बना हुआ है। बैठा कृष्णचन्द्र की राह देख रहा था कि तुम आ गए।

लालू—जब तुम्हें भगवान् से प्रेम है तो अवश्य दर्शन होंगे। तुमने आग न दी होती, तो मैं मर ही गया था।

मूरत—वाह भाई लालू, यह बात ही क्या है! इस दुकान को अपना घर समझो। मैं सदैव तुम्हारी सेवा करने को तैयार हूं।

लालू धन्यवाद करके चल दिया। उसके पीछे दो सिपाही आये। उनके पीछे एक किसान आया। फिर एक रोटी वाला आया। सब अपनी राह चले गए। फिर एक स्त्री आयी। वह फटे-पुराने वस्त्र पहने हुए थी। उसकी गोद में एक बालक था। दोनों शीत के मारे कांप रहे थे।

मूरत—माई, बाहर ठंड में क्यों खड़ी हो? बालक को जाड़ा लग रहा है, भीतर आकर कपड़ा ओढ़ लो।

स्त्री भीतर आई। मूरत ने उसे चूल्हे के पास बिठाया और बालक को मिठाई दी।

मूरत—माई, तुम कौन हो?

स्त्री—मैं एक सिपाही की स्त्री हूं। आठ महीने से न जाने कर्मचारियों ने मेरे पति को कहां भेज दिया है, कुछ पता नहीं लगता। गर्भवती होने पर मैं एक जगह रसोई का काम

करने पर नौकर थी। ज्योंही यह बालक उत्पन्न हुआ, उन्होंने इस भय से कि दो जीवों को अन्न देना पड़ेगा, मुझे निकाल दिया। तीन महीने से मारी-मारी फिरती हूं। कोई टहलनी नहीं रखता। जो कुछ पास था, सब बेचकर खा गई। इधर साहूकारिन के पास जाती हूं। स्यात् नौकर रख ले।

मूरत—तुम्हारे पास कोई ऊनी वस्त्र नहीं है?

स्त्री—वस्त्र कहां से हो, छदाम भी तो पास नहीं।

मूरत—यह लो लोई, इसे ओढ़ लो।

स्त्री—भगवान् तुम्हारा भला करे। तुमने बड़ी दया की। बालक शीत के मारे मरा जाता था।

मूरत—मैंने दया कुछ नहीं की। श्री कृष्णचन्द्र की इच्छा ही ऐसी है।

फिर मूरत ने स्त्री को रात वाला स्वप्न सुनाया।

स्त्री—क्या अचरज है, दर्शन होने कोई असम्भव तो नहीं।

स्त्री के चले जाने पर सेव बेचने वाली आयी। उसके सिर पर सेवों की टोकरी थी और पीठ पर अनाज की गठरी। टोकरी धरती पर रखकर खम्भे का सहारा ले वह विश्राम करने लगी कि एक बालक टोकरी में से सेव उठाकर भागा। सेव वाली ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और सिर के बाल खींचकर मारने लगी। बालक बोला—मैंने सेव नहीं उठाया।

मूरत ने उठकर बालक को छुड़ा दिया।

मूरत—माई, क्षमा कर, बालक है।

सेव वाली—यह बालक बड़ा उत्पाती है। मैं इसे दंड दिये बिना कभी न छोडूंगी।

मूरत—माई, जाने दे, दया कर। मैं इसे समझा दूंगा। वह ऐसा काम फिर नहीं करेगा।

बुढ़िया ने बालक को छोड़ दिया। वह भागना चाहता था कि मूरत ने उसे रोका और कहा—बुढ़िया से अपना अपराध क्षमा कराओ और प्रतिज्ञा करो कि चोरी नहीं करोगे। मैंने आप तुम्हें सेव उठाते देखा है। तुमने यह झूठ क्यों कहा?

बालक ने रोकर बुढ़िया से अपना अपराध क्षमा कराया और प्रतिज्ञा की कि फिर झूठ नहीं बोलूंगा। इस पर मूरत ने उसे एक सेव मोल ले दिया।

बुढ़िया—वाह-वाह, क्या कहना है! इस प्रकार तो तुम गांव के समस्त बालकों का सत्यानाश कर डालोगे। यह अच्छी शिक्षा है! इस तरह तो सब लड़के शेर हो जायेंगे।

मूरत—माई, यह क्या कहती हो! बदला और दंड देना तो मनुष्यों का स्वभाव है, परमात्मा का नहीं, वह दयालु है। यदि इस बालक को एक सेव चुराने का कठिन दंड मिलना उचित है, तो हमको हमारे अनन्त पापों का क्या दंड मिलना चाहिए? माई, सुनो, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं। एक कर्मचारी पर राजा के दस हजार रुपये आते थे। उसके बहुत विनय करने पर राजा ने वह ऋण छोड़ दिया। उस कर्मचारी की भी अपने सेवकों से सौ-सौ रुपये पावने थे, वह उन्हें बड़ा कष्ट देने लगा। उन्होंने बहुतेरा कहा कि हमारे पास पैसा नहीं, ऋण कहां से चुकावें? कर्मचारी ने एक न सुनी। वे सब राजा के पास जाकर फरियादी हुए। राजा ने उसी दम कर्मचारी को कठिन दंड दिया। तात्पर्य यह कि हम जीवों पर दया नहीं करेंगे, तो परमात्मा भी हम पर दया नहीं करेगा।

बुढ़िया—यह सत्य है, परंतु ऐसे बर्ताव से बालक बिगड़ जाते हैं।

मूरत—कदापि नहीं। बिगड़ते नहीं, वरंच सुधरते हैं।

बुढ़िया टोकरा उठाकर चलने लगी कि उसी बालक ने आकर विनय की कि माई, यह टोकरा तुम्हारे घर तक मैं पहुंचा आता हूं।

रात्रि होने पर मूरत भोजन करने के बाद गीता-पाठ कर रहा था कि उसकी आंख झपकी और उसने यह दृश्य देखा—

'मूरत! मूरत!'

मूरत—कौन हो?

'मैं—लालू।' इतना कहकर लालू हंसता हुआ चला गया।

फिर आवाज आयी—'मैं हूं।' मूरत देखता है कि दिन वाली स्त्री लोई ओढ़े, बालक को गोद में लिये, सम्मुख आकर खड़ी हुई, हंसी और लोप हो गई। फिर शब्द सुनाई दिया—'मैं हूं।' देखा कि सेव बेचने वाली और बालक हंसते-हंसते सामने आये और अन्तर्धान हो गए!

मूरत उठकर बैठ गया। उसे विश्वास हो गया कि कृष्णचन्द्र के दर्शन हो गए, क्योंकि प्राणि-मात्र पर दया करना ही परमात्मा का दर्शन करना है।

मूर्ख सुमन्त

एक समय एक गांव में एक धनी किसान रहता था। उसके तीन पुत्र थे—विजय सिपाही, तारा वणिक, सुमन्त मूर्ख। गूंगी-बहरी मनोरमा नाम की एक कुंवारी कुन्या भी थी। विजय तो जाकर किसी राजा की सेना में भर्ती हो गया। तारा ने किसी प्रसिद्ध नगर में सौदागरी की कोठी खोल ली। मूर्ख समुन्त और मनोरमा माता-पिता के पास रहकर खेती का काम करने लगे।

विजय ने सेना में ऊंची पदवी प्राप्त करके एक इलाका मोल ले लिया और एक मालदार पुरुष की कन्या से विवाह कर लिया। उसकी आमदनी का कुछ ठिकाना न था, परन्तु फिर भी कुछ न बचता था।

विजय एक समय इलाके पर पहुंचकर किसानों से बटाई मांगने लगा। किसान बोले कि महाराज हमारे पास न बैल हैं, न हल, न बीज। बटाई कहां से दें? पहले यह सामग्री जमा कर दो, फिर आपको इलाके से बहुत अच्छी आमदनी होने लगेगी। यह सुनकर विजय अपने पिता के पास पहुंचा और बोला—पिताजी, इतना धनी होने पर भी आपने मेरी कुछ सहायता नहीं की। मैंने सेना में काम किया और राजा को प्रसन्न कर एक इलाका मोल लिया। उसके बन्धन के लिए धन की जरूरत है। मैं तीसरे भाग का हिस्सेदार हूं, इसलिए मेरा भाग मुझे दे दीजिए कि अपना इलाका ठीक करूं।

पिता—भला मैं पूछता हूं कि तुमने नौकरी पर रहते हुए कभी कुछ धन भी भेजा? सब काम सुमन्त करता है। मेरी समझ में तुम्हें तीसरा भाग देना सुमन्त और मनोरमा के साथ अन्याय करना है।

विजय—सुमन्त तो मूर्ख है। मनोरमा गूंगी और बहरी है। उन्हें धन का क्या काम है।

वे धन से क्या लाभ उठा सकते हैं?

पिता—अच्छा, सुमन्त से पूछ लूं।

पिता के पूछने पर सुमंत ने प्रसन्नतापूर्वक यही कहा कि विजय को उसका तीसरा भाग दे देना चाहिए।

विजय तीसरा भाग लेकर राजा के पास चला गया।

तारा ने भी व्यापार में बहुत धन संचय करके एक धनी पुरुष की पुत्री से विवाह किया। परन्तु धन की लालसा फिर भी बनी रही। वह भी पिता के पास आकर तीसरा भाग मांगने लगा।

पिता—मैं तुम्हें एक कौड़ी भी देना नहीं चाहता। विचारो तो, तुमने सौदागरी की कोठी खोलकर इतना धन इकट्ठा किया, कभी पिता को भी पूछा? यहां जो कुछ है, सब सुमंत की कमाई का फल है। उसका पेट काटकर तुम्हें दे देना अनुचित है।

तारा—मूर्ख सुमन्त को धन लेकर करना ही क्या है? आपके विचार में सुमन्त जैसे मूर्ख से कोई भी पुरुष अपनी कन्या ब्याह देगा? कदापि नहीं! रही मनोरमा, वह गूंगी और बहरी है। मैं सुमन्त से पूछ लेता हूं कि वह क्या कहता है!

तारा के पूछने पर सुमन्त ने तीसरा भाग देना तुरन्त स्वीकार कर लिया और तारा भी अपना भाग लेकर चम्पत हुआ। सुमन्त के पास जो कुछ सामान बच रहा, उसी से खेती का काम करके माता-पिता की सेवा करने लगा।

2

यह कौतुक देखकर अधर्म बड़ा दुःखी हुआ कि भाइयों ने प्रीति-सहित धन बांट लिया। जूती-पैजार कुछ भी न हुई। तीन भूतों को बुलाकर कहने लगा—देखो विजय, तारा, सुमन्त तीन भाई हैं। धन बांटते समय उन्हें आपस में झगड़ा करना उचित था, परन्तु मूर्ख सुमन्त ने सब काम बिगाड़ डाला। उसी की मूढ़ता से तीनों भाई आनन्द से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। तुम जाओ और एक-एक के पीछे पड़कर ऐसा उत्पात मचाओ कि सब-के-सब आपस में लड़ मरें। देखना, बड़ी चतुराई से काम करना।

तीनों भूत—धर्मावतार! जो तीनों को आपस में लड़ा-लड़ाकर मार न डाला, तो हमारा नाम अधर्मराज के भूत ही नहीं।

अधर्म—वाह-वाह, शाबास! जाओ, मगर जो बिना काम पूरा किए लौटे तो खाल खींच लूंगा। इतना समझ लो।

तीनों भूत चलकर एक झील के किनारे बैठ गए और यह निश्चय किया कि कौन-कौन किस-किस भाई के पीछे लगे और साथ ही नियम बांध दिया कि जिस भूत का कार्य पहले समाप्त हो जाए, वह तुरन्त दूसरे भूतों की सहायता करे।

कुछ दिन पीछे वे तीनों फिर उसी झील पर जमा हुए और अपनी-अपनी कथा कहने लगे।

पहला—भाई साहब, मेरा काम तो बन गया। विजय भागकर पिता की शरण लेने के सिवाय अब और कुछ नहीं कर सकता।

दूसरा—बताओ तो उसे कैसे फांसा?

पहला—मैंने विजय को इतना घमंडी बना दिया कि वह एक दिन राजा से कहने लगा कि महाराज, यदि आप मुझे सेनापति की पदवी पर नियत कर दें तो मैं आपको सारे जगत् का चक्रवर्ती राजा बना दूं। राजा ने उसे तुरन्त सेनापति बनाकर आज्ञा दी कि लंका के राजा को पराजित कर दो। बस फिर क्या था, लगी युद्ध की तैयारियां होने। लड़ाई छिड़ने से एक रात पहले मैंने विजय का सारा बारूद गीला कर दिया। उधर लंका के राजा के लिए घास के अनगिनत सिपाही बना दिये। दोनों सेनाओं के सम्मुख होने पर विजय के सिपाहियों ने घास के बने हुए अनन्त योद्धाओं को देखा तो उनके छक्के छूट गए। विजय ने गोले फेंकने का हुक्म दिया। बारूद गीली हो ही चुकी थी, तोपें आग कहां से देतीं? फल यह हुआ कि विजय की सेना को भागना ही पड़ा। राजा ने क्रोध करके उसका बड़ा अपमान किया। उसका इलाका छिन गया। इस समय वह बन्दीखाने में कैद है। बस, केवल यह काम शेष रह गया, कि उसे बन्दीखाने से निकालकर उसको पिता के घर पहुंचा दूं। फिर छुट्टी है, जो चाहे उसकी सहायता के लिए तैयार हूं।

दूसरा—मेरा कार्य भी सिद्ध हो गया है। तुम्हारी सहायता की कोई आवश्यकता नहीं। तारा को पहले तो मोटा करके आलसी बनाया। फिर इतना लोभी बना दिया कि वह संसार-भर का माल ले-लेकर कोठरी भरने लगा। उसकी खरीद अभी तक जारी है। उसका सब धन खर्च हो गया और अब उधार रुपया लेकर माल ले रहा है। एक सप्ताह में उसका सब माल सत्यानाश कर दूंगा और तब उसे सिवाय पिता की शरण जाने के और कोई उपाय न रहेगा।

तीसरा—भाई, हमारा हाल तो बड़ा पतला है। पहले मैंने सुमन्त के पीने के पानी में पेट में दर्द उत्पन्न करने वाली बूटी मिलायी, फिर खेत में जाकर धरती को ऐसा कड़ा कर दिया कि उस पर हल न चल सके। मैं समझता था कि पीड़ा के कारण वह खेत बाहने न आएगा। परन्तु वह तो बड़ा ही मूढ़ है। आया और हल चलाने लगा। हाय-हाय करता जाता था, परन्तु हल हाथ से न छोड़ता था। मैंने हल तोड़ दिया, वह घर जाकर दूसरा ले आया। मैंने धरती में घुसकर हल की आनी पकड़ ली, उसने ऐसा धक्का मारा कि मेरे हाथ कटते-कटते बचे। उसने केवल एक टुकड़े के सिवाय बाकी सारा खेत बाह लिया है। यदि तुम मेरी सहायता न करोगे तो सारा खेल बिगड़ जाएगा; क्योंकि यदि वह इस प्रकार खेतों को बाहता और बोता रहा, तो उसके भाई भूखे नहीं मर सकते। फिर बैर-भाव किस भांति उत्पन्न हो सकता है? सुखपूर्वक उनका पालन-पोषण करता रहेगा।

पहला—कुछ चिंता नहीं। देखा जाएगा। घबराओ नहीं। कल अवश्य तुम्हारे पास आऊंगा।

3

सुमंत हल चला रहा था, अचानक पैर एक झाड़ी में फंस गया। उसे अचम्भा हुआ कि खेत में तो कोई झाड़ी न थी, यह कहां से आयी। बात यह थी कि भूत ने झाड़ी बनाकर सुमंत की टांग पकड़ ली थी।

सुमंत ने हाथ डालकर झाड़ी को जड़ से उखाड़ डाला, देखा तो उसमें काले रंग का एक भूत बैठा हुआ है।

सुमंत—(गला दबाकर) बोला, दबाऊं गला?

भूत—मुझे छोड़ दो। मुझसे जो कहोगे, वही करूंगा।

सुमंत—तुम क्या कर सकते हो?

भूत—सब कुछ।

सुमंत—मेरे पेट में दर्द हो रहा है, उसे अच्छा कर दो।

भूत—बहुत अच्छा।

भूत ने धरती में से तीन बूटियां लाकर एक बूटी सुमंत को खिला दी, दर्द बंद हो गया और दूसरी दो बूटियां सुमंत को देकर बोला—जिसको एक बूटी खिला दोगे, उसके सब रोग तत्काल दूर हो जायेंगे। अब मुझे जाने की आज्ञा दो। मैं फिर कभी न आऊंगा।

सुमंत—हां, जाओ, परमात्मा तुम्हारा भला करे।

परमात्मा का नाम सुनते ही भूत रसातल चला गया। केवल वहां एक छेद रह गया।

सुमंत ने दूसरी दो बूटियां पगड़ी में बांध लीं और घर चला आया, देखा कि विजय और उसकी स्त्री आये हुए हैं। बड़ा प्रसन्न हुआ।

विजय बोला—भाई सुमंत, जब तक मुझे नौकरी न मिले, तुम हम दोनों को यहां रख सकते हो?

सुमंत—क्यों नहीं, आपका घर है। आप आनन्द से रहिए।

भोजन करते समय विजय की सभ्य स्त्री पति से बोली कि सुमंत के शरीर से मुझे दुर्गन्ध आती है, इसे बाहर भेज दो।

विजय—सुमंत, मेरी स्त्री कहती है कि तुम्हारे शरीर से दुर्गंध आती है। पास बैठा नहीं जाता। तुम बाहर जाकर भोजन कर लो।

सुमंत—बहुत अच्छा, तुम्हें कष्ट न हों

4

दूसरे दिन विजय वाला भूत खेत में आकर सुमंत वाले भूत को खोजने लगा। कहीं पता नहीं मिला, खेत के एक कोने पर छेद दिखाई दिया।

भूत जान गया कि साथी काम आया और खेत जुत चुका। क्या हुआ, चरावर में चलकर इस मूर्ख को देखता हूं। सुमंत के चरावर में पहुंचकर उसने इतना पानी छोड़ा कि सारी घास उसमें डूब गई।

इतने में सुमंत वहां आकर हंसुवे से घास काटने लगा। हंसुवे का मुंह मुड़ गया, घास किसी तरह न कटती थी। सुमंत ने सोचा कि यहां वृथा समय गंवाने से क्या लाभ होगा, पहले हंसुवा तेज करना चाहिए। रहा काम, यह तो मेरा धर्म है। एक सप्ताह क्यों न लग जाए, मैं घास काटे बिना यहां से चला जाऊं मेरा नाम सुमंत नहीं।

सुमंत घर जाकर हंसुवा ठीक कर लाया। भूत ने हंसुवा को पकड़ने का साहस किया, परंतु पकड़ न सका, क्योंकि सुमंत लगातार घास काटे जाता था। जब केवल घास का एक

छोटा-सा टुकड़ा शेष रह गया तो भूत भागकर उसमें जा छिपा।

सुमंत कब रुकने वाला था! वह वहां पहुंच-कर घास काटने लगा। भूत वहां से भागा भागते समय उसकी पूंछ कट गई।

भूत ने विचारा कि चलो, जयी के खेतों में चलें, देखें जयी कैसे काटता है। वहां जाकर देखा तो जयी कटी पड़ी है।

भूत ने विचार किया कि यह मूर्ख बड़ा चांडाल है। दिन निकलने नहीं दिया। रात-रात में सारी जयी काट डाली। यह दुष्ट तो रात को भी काम में लगा रहता है। अच्छा, खलिहान में चलकर इसका भूसा सड़ाता हूं।

भूत भागकर चरी में छिप गया। सुमंत गाड़ी लेकर चरी लादने के लिए खलिहान में पहुंचा। एक-एक पूली उठाकर गाड़ी में रखने लगा कि एक पूला में से भूत निकल पड़ा।

सुमंत—अरे दुष्ट, तू फिर आया?

भूत—मैं दूसरा हूं, पहला मेरा भाई था।

सुमंत—कोई हो, अब जाने न पाओगे।

भूत—कृपा करके मुझे छोड़ दीजिए। आप जो आज्ञा दें, वही करने को तैयार हूं।

सुमंत—तुम क्या कर सकते हो?

भूत—मैं भूसे के सिपाही बना सकता हूं।

सुमंत—सिपाही क्या काम देते हैं?

भूत—तुम उनसे जो चाहो, सो काम करा सकते हो।

सुमंत—वे गाना गा सकते हैं?

भूत—क्यों नहीं!

सुमंत—अच्छा, बनाओ।

भूत—तुम चरी के पूले लेकर यह मंत्र पढ़ो—'हे पूले, मेरी आज्ञा से सिपाही बन जा' और फिर पूले को धरती पर मारो, सिपाही बन जाएगा।

सुमंत ने वैसा ही किया, पूले सिपाही बनने लगे। यहां तक कि पूरी पलटन बन गई और मरू बाजा बजने लगा।

सुमंत—(हंसकर) वाह भाई, वाह! यह तो खूब तमाशा है, इसे देखकर बालक बहुत प्रसन्न होंगे।

भूत—आज्ञा है, अब जाऊं?

सुमंत—नहीं, अभी मुझे फिर पूले बना देने का मंत्र भी सिखा दो, नहीं तो ये हमारा सारा अनाज ही चट कर जायेंगे।

भूत बस, यह मंत्र पढ़ो—'हे सिपाही, मेरे सेवक, मेरी आज्ञा से फिर पूले बन जाओ।' तब यह सब फिर पूले बन जायेंगे।

सुमंत ने मंत्र पढ़ा, सब-के-सब पूले बन गए।

भूत—अब जाऊं? आज्ञा है।

सुमंत—हां जाओ, भगवान् तुम पर दया करे।

भगवान् का नाम सुनते ही भूत धरती में समा गया। पहले की भांति एक छेद शेष रह गया।

सुमंत जब घर लौटा तो देखा कि स्त्री सहित मंझला भाई तारा आया हुआ है। वह सुमंत से बोला—भाई सुमंत, लेहनेदारों के डर से भागकर तुम्हारे पास आये हैं। जब तक कोई रोजगार न करें, यहां ठहर सकते हैं कि नहीं?

सुमंत—क्यों नहीं, घर किसका और मैं किसका? आप आनंद से रहिए।

भोजन परसे जाने पर तारा की स्त्री ने तारा से कहा कि मैं गंवार के पास बैठकर भोजन नहीं कर सकती।

तारा—भाई सुमंत, मेरी स्त्री तुमसे घिन करती है। बाहर जाकर भोजन कर लो।

सुमंत—अच्छी बात है। आपका चित्त प्रसन्न चाहिए।

5

दूसरे दिन तारा वाला भूत सुमंत को दुःख देने के वास्ते खेत में पहुंचकर साथियों को ढूंढने लगा, पर किसी का पता न चला। खोजते-खोजते एक छेद तो खेत के कोने में मिला, दूसरा खलिहान में। उसे मालूम हो गया कि दोनों के दोनों यमलोक जा पहुंचे। अब मुझी से इस मूर्ख की बनेगी। देखूं कहां बचकर जाता है।

अतएव वह सुमंत की खोज लगाने लगा। सुमंत उस समय मकान बनाने के वास्ते जंगल में वृक्ष काट रहा था। दोनों भाइयों के आ जाने से घर में आदमियों के लिए जगह न थी। भाई यह चाहते थे कि अलग-अलग मकान में रहें, इसलिए मकान बनाना आवश्यक हो गया था।

भूत वृक्ष पर चढ़कर शाखाओं में बैठ, सुमंत के काम में विघ्न डालने लगा। सुमंत कब टलने वाला था, संध्या होते-होते उसने कई वृक्ष काट डाले। अंत में उसने उस वृक्ष को भी काट दिया, जिस पर भूत चढ़ा बैठा था। टहनियां काटते समय भूत उसके हाथ में आ गया।

सुमंत—हैं! तुम फिर आ गए?

भूत—नहीं-नहीं, मैं तीसरा हूं। पहले दोनों मेरे भाई थे।

सुमंत—कुछ भी हो, अब मैं नहीं छोड़ने का।

भूत—तुम जो कुछ कहोगे, वही करूंगा। कृपा करके मुझे जान से न मारिए।

सुमंत—तुम क्या कर सकते हो?

भूत—मैं वृक्ष के पत्तों से सोना बना सकता हूं।

सुमंत—अच्छा, बनाओ।

भूत ने वृक्ष के सूखे पत्ते लेकर हाथ से मले और मंत्र पढ़कर सोना बना दिया। सुमंत ने मंत्र सीख लिया और सोना देखकर प्रसन्न हुआ।

सुमंत—भाई भूत, इसका रंग तो बड़ा सुन्दर है, बालकों के खिलौने इसके अच्छे बन सकते हैं।

भूत—अब आज्ञा है, जाऊं?

सुमंत—जाओ, परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करें।

परमेश्वर का नाम सुनते ही यह भूत भी भूमि में समा गया, केवल छेद ही छेद बाकी रह गया।

6

घर बनाकर तीनों भाई सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। जन्माष्टमी के त्योहार पर सुमंत ने भाइयों को भोजन करने को नेवता भेजा। उन्होंने उत्तर दिया कि हम गवारों के साथ प्रीति-भोजन नहीं कर सकते।

सुमंत ने इस पर कुछ बुरा नहीं माना। गांव के स्त्री-पुरुष, बालक और बालिकाओं को एकत्र करके भोजन करने लगा।

भोजन करने के उपरांत सुमंत बोला—क्यों भाई मित्रो, एक तमाशा दिखलाऊं?

सब—हां, दिखालाइए।

सुमंत ने सूखे पत्ते लेकर सोने का एक टोकरा भर दिया और लोगों की ओर फेंकने लगा। किसान लोग सोने के टुकड़े लूटने लगे। आपस में इतना धक्कम-धक्का हुआ कि एक बेचारी बुढ़िया कुचल गई।

समंत ने सबको धिक्कार कर कहा—तुम लोगों ने बूढ़ी माता को क्यों कुचल दिया शांत हो जाओ तो और सोना दूं। यह कहकर टोकरी का सब सोना लुटा दिया। फिर सुमंत ने स्त्रियों से कहा कि कुछ गाओ। स्त्रियां गाने लगीं।

सुमंत—हूं, तुम्हें गाना नहीं आता।

स्त्रियां—हमें तो ऐसा ही आता है, और अच्छा सुनना हो तो किसी और को बुला लो।

सुमंत ने तुरंत ही भूसे के सिपाही बनाकर पलटन खड़ी कर दी, बैंड बजने लगा। गंवार लोगों को बड़ा ही अचम्भा हुआ। सिपाही बड़ी देर तक गाते रहे, तब सुमंत ने उनको फिर भूसा बना दिया और सब लोग अपने-अपने घर चले गए।

7

प्रातःकाल विजय ने यह चर्चा सुनी तो हांफता-हांफता सुमंत के पास आया, बोला—भाई सुमंत, यह सिपाही तुमने किस रीति से बनाए थे?

सुमंत—क्यों? आपको क्या काम है?

विजय—काम की एक ही कही। सिपाहियों की सहायता से तो हम राज्य जीत सकते हैं।

सुमंत—यह बात है! तुमने पहले क्यों नहीं कहा? खलिहान में चलिए, वहां चलकर जितने कहो, उतने सिपाही बना देता हूं, परंतु शर्त यह है कि उन्हें तुरंत ही यहां से बाहर ले जाना, नहीं तो वे गांव का गांव चट कर जायेंगे।

अतएव खलिहान में जाकर उसने कई पलटनें बना दीं और पूछा—बस कि और?

विजय—(प्रसन्न होकर) बस बहुत है, तुमने बड़ा एहसान किया।

सुमंत—एसान की कौन-सी बात है। अब के वर्ष भूसा बहुत हुआ है यदि कभी टोटा पड़ जाय तो फिर आ जाना, फिर सिपाही बना दूंगा।

अब विजय धरती पर पांव नहीं रखता था। सेना लेकर उसने तुरंत युद्ध करने के वास्ते प्रस्थान कर दिया।

विजय के जाते ही तारा भी आ पहुंचा और सुमंत से बोला—भाई साहब, मैंने सुना

है कि तुम सोना बना लेते हो। हाय-हाय! यदि थोड़ा-सा सोना मुझे मिल जाए तो मैं सारे संसार का धन खींच लूं।

सुमंत—अच्छा, सोने में यह गुण है! तुमने पहले क्यों नहीं कहा? बतलाओ, कितना सोना बना दूं?

तारा—तीन टोकरे बना दो।

सुमंत ने तीन टोकरे सोना बना दिया।

तारा—आपने बड़ी दया की।

सुमंत—दया की कौन बात है, जंगल में पत्ते बहुत हैं। यदि कमी हो जाय तो फिर आ जाना, जितना सोना मांगोगे, उतना ही बना दूंगा।

सोना लेकर तारा व्यापार करने चल दिया।

विजय ने सेना की सहायता से एक बड़ा भारी राज्य विजय कर लिया। उधर तारा के धन का भी पारावार न रहा। एक दिन दोनों में मुलाकात हुई। बातें होने लगीं।

विजय—भाई तारा, मैंने तो अपना राज्य अलग बना लिया और अब चैन करता हूं, परंतु इन सिपाहियों का पेट कहां से भरूं? रुपये की कमी है, सदैव यही चिंता बनी रही है।

तारा—तो क्या आप समझते हैं कि मुझे चिन्ता नहीं है, मेरे धन की गिनती नहीं, पर उसकी रख वाली करने को सिपाही नहीं मिलते। बड़ी विपत्ति में पड़ा हूं।

विजय—चलिए, सुमंत मूर्ख के पास चलें। मैं तुम्हारे वास्ते थोड़े से सिपाही बनवा दूं और तुम मेरे लिए थोड़ा-सा सोना बनवा दो।

तारा—हां, ठीक है, चलिए।

दोनों भाई सुमंत के पास पहुंचे।

विजय—भाई सुमंत, मेरी सेना में कुछ कमी है, कुछ सिपाही और बना दो।

सुमंत—नहीं, अब मैं और सिपाही नहीं बनाता।

विजय—पर तुमने वचन जो दिया था, नहीं तो मैं आता ही क्यों? कारण क्या है? क्यों नहीं बनाते?

सुमंत—कारण यह कि तुम्हारे सिपाहियों ने एक मनुष्य को मार डाला। कल जब मैं अपना खेत जोत रहा था, तो पास से एक अरथी देखी। मैंने पूछा, कौन मर गया? एक स्त्री ने कहा कि विजय के सिपाहियों ने युद्ध में मेरे पति को मार डाला। मैं तो आज तक केवल यह समझता था कि सिपाही बैंड बजाया करते हैं, परन्तु वे तो मनुष्य की जान मारने लगे। ऐसे सिपाही बनाने से तो संसार का नाश हो जाएगा।

तारा—अच्छा, यदि सिपाही नहीं बनाते, तो मेरे लिए सोना तो थोड़ा-सा और बना दो। तुमने वचन दिया था कि कमी हो जाने पर फिर बना दूंगा।

सुमंत—हां, वचन तो दिया था, पर मैं अब सोना भी न बनाऊंगा।

तारा—क्यों?

सुमंत—इसलिए कि तुम्हारे सोने ने बसंत की लड़की से उसकी गाय छीन ली।

तारा—यह कैसे?

सुमंत—बसंत की पुत्री के पास एक गाय थी। बालक उसका दूध पीते थे। कल वे

बालक मेरे पास दूध मांगने आए। मैंने पूछा कि तुम्हारी गाय कहां गई, तो कहने लगे कि तारा का एक सेवक आकर तीन टुकड़े सोने के देकर हमारी गाय ले गया। मैं तो यह जानता था कि सोना, बनवा-बनवाकर तुम बालकों को बहलाया करोगे, परंतु तुमने तो उनकी गाय ही छीन ली। बस, सोना अब नहीं बन सकता।

दोनों भाई निराश होकर लौट पड़े। राह में यह समझौता हुआ कि विजय तारा को कुछ सिपाही दे दे और तारा विजय को कुछ सोना। कुछ दिन बाद धन के बल से तारा ने भी एक राज्य मोल ले लिया और दोनों भाई राजा बनकर आनंद करने लगे।

8

सुमंत गूंगी बहन के सहित खेती का काम करते हुए अपने माता-पिता की सेवा करने लगा। एक दिन उसकी कुतिया बीमार हो गई, उसने तत्काल पहले भूत की दी हुई बूटी उसे खिला दी। वह निरोग होकर खेलने-कूदने लगी। यह हाल देखकर माता-पिता ने इसका ब्यौरा पूछा। सुमंत ने कहा कि मुझे एक भूत ने दो बूटियां दी थीं। वह सब प्रकार के रोगों को दूर कर सकती हैं। उनमें से एक बूटी मैंने कुतिया को खिला दी।

उसी समय दैवगति से वहां के राजा की कन्या बीमार हो गई। राजा ने यह डोंडी पिटवायी थी कि जो पुरुष मेरी कन्या को अच्छा कर देगा, उसके साथ उसका विवाह कर दिया जाएगा। माता-पिता ने सुमंत से कहा कि यह तो बड़ा अच्छा अवसर है। तुम्हारे पास एक बूटी बची है। जाकर राजा की कन्या को अच्छा कर दो और उम्र भर चैन करो।

सुमंत जाने पर राजी हो गया। बाहर आने पर देखा कि द्वार पर कंगाल बुढ़िया खड़ी है।

बुढ़िया—सुमंत, मैंने सुना है कि तुम रोगियों का रोग दूर कर सकते हो। मैं रोग के हाथों बहुत दिनों से कष्ट भोग रही हूं। पेट को रोटियां मिलती ही नहीं, दवा कहां से करूं? तुम मुझे कोई दवा दे दो तो बड़ा यश होगा।

सुमंत तो दया का भंडार था, बूटी निकालकर तुरंत बुढ़िया को खिला दी। वह चंगी होकर उसे आशीष देती हुई घर को चली गई।

माता-पिता यह हाल सुनकर बड़े दुःखी हुए और कहने लगे कि सुमंत, तुम बड़े मूर्ख हो। कहां राजकन्या और कहां यह कंगाल बुढ़िया! भला इस बुढ़िया को चंगा करने से तुम्हें क्या मिला?

सुमंत—मुझे राजकन्या के रोग दूर करने की भी चिन्ता है। वहां भी जाता हूं।

माता—बूटी तो है ही नहीं, जाकर क्या करोगे?

सुमंत—कुछ चिन्ता नहीं, देखो तो सही क्या होता है।

समदर्शी पुरुष देवरूप होता है। सुमंत के राजमहल पर पहुंचते ही राजकन्या निरोग हो गई। राजा ने अति प्रसन्न होकर उसका विवाह सुमंत के साथ कर दिया।

इसके कुछ काल पीछे राजा का देहान्त हो गया। पुत्र न होने के कारण वहां का राज सुमंत को मिल गया।

अब तीनों भाई राज-पदवी पर पहुंच गए।

9

विजय का प्रभाव सूर्य की भांति चमकने लगा। उसने भूसे के सिपाहियों से सचमुच के सिपाही बना दिए। राज्य भर में यह हुक्म जारी कर दिया कि दस घर पीछे एक मनुष्य सेना में भरती किया जाए और कवायद-परेड कराकर सेना को अस्त्र-शस्त्र विद्या में ऐसा चतुर कर दिया, कि जब कोई शत्रु सामना करता, तो वह तुरंत उसका विध्वंस कर देता। सारे राजा उसके भय से कांपने लगे, वह अखंड राज करने लगा।

तारा बड़ा बुद्धिमान था। उसने धन संचय करने के निमित्त मनुष्यों, घोड़ों, गाड़ियों, जूतों, जुराबों, वस्त्रों तात्पर्य यह कि जहां तक हो सका, सब व्यावहारिक वस्तुओं पर कर बैठा दिया। धन रखने को लोहे की सलाखों वाले पक्के खजाने बना दिये और चौरी-चकारी, लूट-मार, धन सम्बन्धी झगड़े बन्द करने के निमित्त अनगिनत कानून जारी कर दिए। संसार में रुपया ही सब-कुछ है। रुपये की भूख से सब लोग आकर उसकी सेवा करने लगे।

अब सुमंत मूर्ख की करतूत सुनिए। ससुर का क्रिया-कर्म करके उसने राजसी रत्न-जटित वस्त्रों को उतारकर, सन्दूक में बन्द कर अलग धर दिए। मोटे-झोटे कपड़े पहन लिये और किसानों की भांति खेती का काम करने का विचार किया। बैठे-बैठे उसका जी ऊबता था।

भोजन न पचता, बदन में चर्बी बढ़ने लगी, नींद और भूख दोनों जाती रही। उसने अपनी गूंगी बहन और माता-पिता को अपने पास बुला लिया और ठीक पहले की भांति खेती का काम करना आरंभ कर दिया।

मंत्री—आप तो राजा हैं, आप यह क्या काम करते हैं!

सुमंत—तो क्या मैं भूखा मर जाऊं? मुझे तो काम के बिना भूख ही नहीं लगती। करूं तो क्या करूं?

दूसरा मंत्री—(सामने आकर) महाराज, राज्य का प्रबंध किस प्रकार किया जाए? नौकरों को तलब कहां से दें? रुपया तो एक नहीं।

सुमंत—यदि रुपया नहीं तो तलब मत दो।

मंत्री—तलब लिये बिना काम कौन करेगा?

सुमंत—काम कैसा, न करने दो। करने को खेतों में क्या काम थोड़ा है। खाद संभालना, समय पर खेती करना, यह सब काम ही हैं कि और कुछ?

इतने में एक मुकदमे वाले सामने आये।

किसान—महाराज, उसने मेरे रुपये चुरा लिये।

सुमंत—कोई बात नहीं, उसको रुपये की जरूरत होगी।

सब लोग जान गये कि सुमंत महामूर्ख है। एक दिन रानी बोली—'प्राणनाथ, सब लोग यही कहते हैं कि आप मूर्ख हैं।

सुमंत—तो इसमें हानि ही क्या है?

रानी ने विचारा कि धर्मशास्त्र की यही आज्ञा है कि स्त्री का परमेश्वर पति है। जिसमें वह प्रसन्न रहे, वही काम करना धर्म है। अतएव वह भी राजा सुमंत के साथ खेती का काम करने लगी।

यह दशा देखकर बुद्धिमान पुरुष सब-के-सब अन्य देशों में चले गये। केवल मूर्ख ही

मूर्ख यहां रह गए। इस राज्य में रुपया प्रचलित न था। राजा से लेकर रंक तक खेती का काम करते, आप खाते और दूसरों को खिलाकर प्रसन्न होते।

10

इधर अधर्मराज बैठे देख रहे हैं कि तीनों भाइयों का सर्वनाश करके भूत अब आते हैं, अब आते हैं; परंतु वहां आता कौन? अधर्म को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह क्या बात है। अंत में सोच-विचारकर स्वयं खोज लगाने के लिए चला।

सुमंत के पुराने गांव में जाने पर ढूंढ़ने से तीन छेद मिले। अधर्म को मालूम हो गया कि तीनों भूल मारे गए। वह भाइयों की खोज में चला। जाकर देखा तो तीनों भाई राजा बने बैठे हैं। फिर क्या था, जल-भुनकर राख ही तो हो गया। दांत पीसकर बोला—देखूं यह सब मेरे हाथ से बचकर कहां जाते हैं? वह एक सेनापति का वेश बदलकर पहले विजय के पास पहुंचा और हाथ जोड़कर विनय की—महाराज, मैंने सुना है कि आप महा शूरवीर हैं। मैं अस्त्र-शस्त्र विद्या में अति निपुण हूं। इच्छा है कि आपकी सेवा करके अपना गुण प्रकट करूं।

विजय उसकी चितवनों से ताड़ गया कि आदमी चतुर और बुद्धिमान है, उसे झट सेनापति की पदवी पर नियुक्त कर दिया।

नवीन सेनापति सेना को बढ़ाने का प्रबन्ध करने लगा। विजय से बोला—महाराज, मेरे ध्यान में राज्य में बहुत लोग ऐसे हैं जो कुछ नहीं करते। राज्य की स्थिरता सेना से ही होती है। इसलिए एक तो सब युवक पुरुषों को रंगरूट भरती करके सेना पहले से पांचगुनी कर देनी चाहिए, दूसरे नये नमूने की बन्दूकें और तोपें बनाने के वास्ते राजधानी में कारखाने खोलने चाहिए। मैं एक फायर में सौ गोली चलाने वाली बन्दूक और घोड़े, मकान, पुल इत्यादि नष्ट कर देनें वाली तोपें बना सकता हूं।

विजय ने प्रसन्नापूर्वक झट सारी राजधानी में एक आज्ञा-पत्र जारी कर दिया कि सब लोग रंगरूट भरती किए जायं। नये नमूने की तोपें और बंदूकें बनाने के वास्ते जगह-जगह कारखाने खोल दिए। युद्ध की समस्त सामग्री जमा होने पर पहले उसने पड़ोसी राजा को जीता, फिर मैसूर के राजा पर चढ़ाई का डांका बजा दिया।

पर सौभाग्य से मैसूर के राजा ने विजय का सारा वृत्तांत सुन रखा था। विजय ने तो पुरुषों को ही भरती किया था, उसने स्त्रियों को भी सेना में भरती कर लिया। नये से नये नमूने की बन्दूकें और तोपें बना डालीं, सेना विजय से चौगुनी कर दी और नवीन कल्पना यह की कि बम के ऐसे गोले बनाए जाएं जो आकाश से छोड़े जाएं और धरती पर फटकर शत्रु की सेना का नाश कर दें।

विजय ने समझा था कि पड़ोसी राजा की भांति छिन में मैसूर के राजा को जीतकर उसकी राज्य छीन लूंगा, परन्तु यहां रंगत ही कुछ और हुई। सेना अभी गोली की मार में भी नहीं पहुंची थी की शत्रु की सेना की स्त्रियों ने आकाश से बम के गोले बरसाने आरम्भ कर दिए विजय की सारी सेना काई की भांति फट गई। आधी वहीं काम आयी, आधी भयभीत होकर भाग गयी। विजय अकेला क्या कर सकता था? भागते ही बनी। मैसूर के

राजा ने उसके राज्य पर अपना अधिकार कर लिया।

विजय का सर्वनाश करके अधर्म तारा के राज्य में पहुंचा और सौदागर का वेश धारण करके वहां एक कोठी खोल दी। जो पुरुष कोई माल बेचने आता, उसे चौगुने-पचगुने दाम पर ले लेता। शीघ्र ही वहां की प्रजा मालदार हो गई। तारा यह हाल देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि व्यापार बड़ी वस्तु है। इस सौदागर के आने से मेरा कोष धन से भर गया। किसी बात की कमी नहीं रही।

अब तारा ने एक महल बनाना शुरू किया। उसे विश्वास था कि रुपये के लालच से राज, मजदूर, मसाला सब कुछ सामग्री शीघ्र ही मिल जायेगी कोई कठिनाई न होगी। परन्तु राजा का महल बनाने के वास्ते कोई न आया। अधर्म सौदागर के पास रुपये की गिनती न थी। उसकी अपेक्षा राजा उससे अधिक मजूरी और दाम नहीं दे सकता। उसका महल न बन सका। तारा को साधारण मकान में ही रहना पड़ा।

इसके पीछे उसने एक बाग लगाना आरम्भ किया। उस सौदागर ने तालाब खुदवाना शुरू कर दिया। सब लोग रुपया अधिक होने के कारण सौदागर के वश में थे। राजा का काम कोई न करता था। बाग भी बीच में ही रह गया। शीतकाल आने पर तारा ने ऊनी वस्त्र आदि खरीदने का विचार किया। सारा संसार छान डाला। जहां पूछा, यही उत्तर मिला कि सौदागर ने कोई वस्त्र नहीं छोड़ा, सारे के सारे खरीदकर ले गया।

यहां तक कि रुपये के प्रभाव से अधर्म ने राजा के सब नौकर अपने पास खींच लिये। राजा भूखों मरने लगा। क्रुद्ध होकर उसने सौदागर को अपनी राजधानी से निकाल दिया। अधर्म ने सीमा पर जाकर डेरा जमाया। तारा को कुछ करते-धरते नहीं बनता था। उसे उपवास किए तीन दिन बीत चुके थे कि विजय आकर सम्मुख खड़ा हो गया।

विजय—भाई तारा, मैं तो मर चुका। मेरी सेना, राजपाट सब नष्ट हो गया। मैसूर के राजा ने मेरी राजधानी पर अपना अधिकार कर लिया, भागकर तुम्हारे पास आया हूं, मेरी कुछ सहायता कीजिए।

तारा—सहायता की एक ही कही। यहां आप अपनी जान पर आ बनी है। उपवास किए तीन दिन हो चुके हैं, खाने को अन्न तक तो मिलता नहीं, तुम्हारी सहायता किस प्रकार करूं?

11

विजय और तारा की यह दशा करके अधर्म फिर कर्नल का वेश बदलकर सुमंत के पास पहुंचा और निवेदन किया—

'महाराज, सेना के बिना राजा की शोभा नहीं होती, न राज्य की रक्षा होती है यदि आज्ञा हो तो चतुरंगिनी सेना तैयार कर दूं?'

सुमंत—बहुत अच्छा, सेना तैयार करो और उसे गाना-बजाना सिखाओ। मुझे गाना बहुत पसंद है। मारू बाजा मुझे बड़ा प्रिय लगता है। सेना तैयार करके उन्हें केवल बाजा बजाना सिखलाना, और कुछ नहीं।

अधर्म लोगों के पास जाकर समझाने लगा कि तुम लोग सिपाही बन जाओ, तुम्हें

वस्त्र और अन्न दिया जायेगा।

लोग—हमारे पास अन्न बहुत है, स्त्रियां कपड़े सी लेती हैं, हमें कुछ नहीं चाहिए। जाओ; अपना काम करो, हम सिपाही नहीं बनते।

अधर्म ने सुमंत के पास आकर कहा—महाराज, आपकी प्रजा बड़ी ही मूर्ख है। मुझे निश्चय हो गया कि वे बिना सरकारी हुक्म के सिपाही न बनेंगे। यह हुक्म जारी कर दिया जाए कि जो कोई सिपाही न बनेगा, उसे फांसी दे दी जायेगी।

सुमंत ने अधर्म का कहना मानकर वैसा ही हुक्म जारी कर दिया। लोग अधर्म के पास आकर बोले—

'तुम कहते हो कि यदि हम फौज में भरती नहीं होंगे तो जान से मार दिये जायेंगे। हम पूछते हैं कि भरती होकर हमारा क्या बनेगा? हमने सुना है कि युद्ध में सिपाहियों को मार डाला जाता है।'

अधर्म—हां, कभी-कभी ऐसा हो जाता है।

लोग—जब मरना ही ठहरा तो घर में रहकर ही क्यों न मरें? युद्ध में प्राण देने से क्या लाभ है? हम सिपाही नहीं बनते।

अधर्म—तुम महामूर्ख हो। युद्ध में जाकर तुम मारे ही जाओगे, यह बात नहीं है, बच भी सकते हो। परंतु सिपाही न बनने से तुम्हें फांसी जरूर ही हो जाएगी।

लोग डरकर सुमंत के पास पहुंचे और बोले—महाराज, एक सेनापति हमें अचरज की बात सुनाता है। उसका कथन है कि यदि हम सिपाही न बनेंगे तो महाराज हमको अवश्य फांसी दे देंगे! क्या यह बात सत्य है?

सुमंत—(हंसकर) भला सोचो तो, मैं अकेला तुम सबको कैसे फांसी दे सकता हूं?

लोग—तो हम सिपाही क्यों बनें?

सुमंत—मत बनो।

लोग अपने-अपने घरों को चले गये। अधर्म बहुत निराश हुआ कि यह मंत्र तो न चला। अच्छा, पड़ोसी राजा के पास जाकर उसे यह उपदेश करता हूं कि ऐसे मूर्ख राजा का देश छीन ले।

अतएव एक दूसरे राजा के दरबार में जाकर उसने विनय की—महाराज, सुमंत के राज्य में अन्न और पशु बहुत हैं, रुपया न हुआ तो क्या है, बस चढ़ाई करके उसका राज्य छीन लीजिए।

राजा ने अधर्म का कहना मानकर युद्ध की तैयारी कर दी।

उधर सुमंत की प्रजा खबर पाकर सुमंत के पास पहुंची कि महाराज, उत्तर देश का राजा युद्ध करने के वास्ते आता है।

सुमंत ने कहा—आने दो, हमारी कुछ हानि नहीं।

उत्तर-देशाधिपति ने सुमंत की सेना का भेद लेने के लिए कुछ सिपाही भेजे। वहां सेना कहां थी, भेद किसका लें? वे लौट गये। तब उस राजा ने सेना को यह आज्ञा दी कि जाकर देश लूट ले। सिपाही गांव में पहुंचकर अन्न, वस्त्र, पशु इत्यादि लूटने लगे। सुमंत की प्रजा ने किसी का सामना नहीं किया, कुछ न बोले, वरन सिपाहियों की सेवा करने लगे और कहने लगे—भाइयो, यदि अपने देश में रहने से तुम्हें कोई कष्ट होता है तो यहां आकर

हमारे पास रहो।

अब सिपाही सोचने लगे कि युद्ध करें तो किससे करें? यहां तो यह सब लोग आप-से-आप सब कुछ देने को तैयार हैं। अपने राजा के पास जाकर बोले कि महाराज, सुमंत की प्रजा तो स्वयं सब कुछ देने को तैयार है, लड़ाई किसके साथ की जाए?

राजा ने कहा–कुछ चिंता नहीं। जाओ, गांव जला दो, सब पशु मार डालो, हम लड़ाई अवश्य करेंगे। यदि मेरा कहा नहीं मानोगे, तो तुम्हें तोप के मुंह पर बांधकर उड़ा दूंगा।

सिपाही भयभीत होकर फिर लौटे और गांव आदि जलाने लगे। सुमंत की प्रजा ने उनसे प्रेमपूर्वक कहा–ऐसी अच्छी चीज़ों को भस्म करने से आप लोगों को क्या फल मिलेगा? यदि इच्छा है तो यह सब पदार्थ अपने देश को ले जाओ। हमें कोई शोक नहीं होगा, परन्तु इस प्रकार पशुओं को वध करने से हमें क्लेश होता है।

अंत में सेना को प्रजा पर दया आ गई। सिपाही राजा की नौकरी छोड़कर अपने-अपने घर चले गए। सुमंत आनंद से राज्य करता रहा।

अधर्म सोचने लगा कि अब क्या करें, इस मूर्ख ने तो बड़ा कष्ट दिया। सच है, बुद्धिमानों को वश में कर लेना सहज है, मूर्ख को समझाना कठिन है। अच्छा, एक भद्र पुरुष का वेश बनाकर सुमंत के पास चलते हैं, शायद कहना मान जाए।

वह तुरंत वेश बदलकर सुमंत मूर्ख की सेवा में आया और बोला–महाराज, मेरी इच्छा है कि आपकी राजधानी में व्यापार फैलाऊं। व्यापार करने से पुरुष बुद्धिमान और चतुर हो जाता है।

सुमंत–बहुत अच्छा। आइए, व्यापार फैलाइए।

दूसरे दिन अधर्म स्वर्ण मुद्रा की थैली लेकर चौराहे पर पहुंचा और मोहरें दिखला कर लोगों से कहने लगा कि जो कोई मेरा काम करेगा, उसे यह मोहरें दी जायेंगी। वहां की मूर्ख प्रजा मोहरों का नाम तक नहीं जानती थी। सोने के सुन्दर-सुन्दर टुकड़े देखकर वे लोग प्रसन्न हो गए और अधर्म का काम करने लगे।

अधर्म ने समझा, तारा वाला मंत्र चल गया!

थोड़े दिन लोग अधर्म का काम करते रहे, उसे अन्न-वस्त्र भी देते रहे। जब उनके पास मोहरें बहुत हो गईं और उन्होंने अपनी स्त्रियों और बालकों को गहने बना दिए, तब उन्होंने अधर्म का काम करना छोड़ दिया, यहां तक कि उसके हाथ आटा-दाल भी बेचना बंद कर दिया।

अधर्म की विचित्र गति बनी। एक दिन एक किसान के घर जाकर वह कहने लगा–भाई, इस मोहर के बदले आधा सेर आटा तो दे दो।

किसान बोला–मोहर लेकर क्या करूंगा? मोहर तो पहले की ही बहुत पड़ी हैं। आटा नहीं बेचता। हां, परमेश्वर के नाम पर मांगो तो देने को तैयार हूं। भगवान् का नाम सुन, अधर्म कांप उठा और भागकर दूसरे किसान के घर पहुंचा। वहां भी यही हाल हुआ। अंत में रात को वह भूखा ही सोया।

प्रजा के लोग सुमंत के पास आकर कहने लगे–महाराज, एक धनी आदमी आया है, कोट-पतलून डाटे रहता है, खाता-पीता खूब है, काम कुछ नहीं करता। मोहरें लिये फिरता है। यदि हम परमेश्वर के नाम पर उसे अन्न देना चाहते हैं तो नहीं लेता, मोहरें दिखलाता

है। अन्न बेचने की हमें आवश्यकता नहीं, उसे भूखा रखना भी उचित नहीं, क्या उपाय करें? इस तरह तो वह भूखों मर जाएगा।

सुमंत—उसे भोजन तो देना ही पड़ेगा। घर पीछे एक दिन बांध दो।

अब अधर्म महाराज घर-घर जाकर रोटी मांगकर खाने लगे। होते-होते एक दिन राजा सुमंत के घर की बारी आ गई। वहां जाकर देखता क्या है कि सुमंत की गूंगी बहन रोटी पका रही है।

बहुधा ऐसा हो चुका था कि निकम्मे पुरुष यहां रसोई में आकर भोजन पा जाया करते थे। इस कारण मनोरमा ने यह नियम बांध दिया था कि जिनके हाथ काम करने के कारण कठोर हो गए हों, वही लोग रसोई में बैठकर भोजन पाया करें, दूसरा कोई नहीं।

अधर्म को यह बात मालूम न थी, वह झट से रसोईघर में जाकर बैठ गया। गूंगी मनोरमा ने उसे वहां से उठा दिया। रानी बोली—महाशय, बुरा न मानिए। यहां की यह रीति है कि कोमल हाथों वाले को बचा-खुचा भोजन दिया जाता है, आप बाहर ठहरें। जो कुछ अन्न बचेगा, आपको मिल जायेगा।

यह बातें हो ही रही थीं कि सुमंत भी वहां आ गया।

अधर्म—(सुमंत से) आपके राज्य में यह अनोखा नियम है कि प्रत्येक प्राणी को हाथों से काम करना चाहिए। काम क्या केवल हाथों से ही किया जाता है? आपको स्यात् मालूम नहीं कि चतुर पुरुष कैसे काम करते हैं?

सुमंत—भला हम मूर्ख क्या जानें, हम तो प्रायः हाथों से ही काम करते हैं।

अधर्म—इसी कारण आप लोग मूर्ख हैं। अब मैं आपको मस्तक द्वारा काम करना बतलाऊंगा, तब आपको विदित हो जाएगा कि मस्तक द्वारा काम करना, हाथों द्वारा काम करने से कहीं अधिक फलदायक है।

सुमंत—ओहो, तो हम लोग निस्संदेह मूर्ख हैं।

अधर्म—मस्तक द्वारा काम करना सहज नहीं। मुझे आप रसोई में बिठाकर इस कारण भोजन नहीं कराते कि मेरे हाथ कोमल हैं और मैं हाथों से काम नहीं करता, परंतु मैं आपसे सत्य कहता हूं कि मस्तक द्वारा काम करना अति कठिन है, यहा तक कि कभी-कभी मस्तक फटने लग जाता है।

सुमंत—तो मित्र, ऐसा कष्ट क्यों उठाते हो? मस्तक फटना क्या अच्छा मालूम होता है? हाथों से सहज में काम क्यों नहीं कर लेते?

अधर्म—मुझे आप लोगों की यह गति देखकर दया आती है, इस कारण चाहता हूं कि आप लोगों को भी यह काम सिखा दूं।

सुमंत—बहुत अच्छा, सिखा दीजिए। काम करते-करते जब हमारे हाथ थक जाया करेंगे, तो हम मस्तक से काम लिया करेंगे।

दूसरे दिन सुमंत ने अपनी समस्त राजधानी में ढिंढोरा पिटवा दिया कि एक महात्मा मस्तक द्वारा काम करना बतलायेंगे; क्योंकि इस प्रकार काम करना अति लाभदायक है। सब लोग आकर उनका उपदेश सुनें।

लोगों के दल के दल आने लगे। सुमंत ने चतुर पुरुष को एक बड़े ऊंचे बुर्ज पर चढ़ा दिया कि लोग उसे भली प्रकार देख सकें। उस बुर्ज पर एक लालटेन गड़ी हुई थी।

अधर्म चोटी पर पहुंचकर व्याख्यान देने लगा। लोग समझे थे कि वह मस्तक द्वारा काम करना बतलाएगा, परन्तु वह खाली गपोड़े हांकने लगा कि हाथों से काम किए बिना मनुष्य बहुत चैन से रह सकता है। यह जरूरी नहीं कि सभी लोग हाथों से काम करें। लोग एक अक्षर न समझे और निराश होकर अपने घरों को लौट गए।

अधर्म कई दिन बुर्ज पर बैठा बकवाद करता रहा। उसे भूख सताने लगी। लोग समझते थे कि जब मस्तक द्वारा काम करना हाथों से काम करने से उत्तम है, तो उसे भोजन की क्या कमी हो सकती है। इस कारण उन्होंने भोजन नहीं पहुंचाया।

सुमंत ने प्रजा से पूछा कि क्या महात्मा ने मस्तक द्वारा काम करना प्रारम्भ कर दिया? सबने यही उत्तर दिया कि महाराज, हमारी तो कुछ समझ में नहीं आता। वह तो कोरा गाल बजाए चला जाता है, दिखाता-विखाता कुछ नहीं।

तीसरे दिन अधर्म भूख और प्यास के मारे व्याकुल होकर गिर पड़ा और चोटी पर से लुढकता-लुढ़कता धरती पर आ गिरा और उसका मस्तक फट गया।

लोगों ने दौड़कर रानी से ये बातें कहीं। रानी दौड़ी हुई खेत में गयी। मूर्ख सुमन्त उस समय खेत में हल चला रहा था।

रानी—महाराज! शीघ्र चलिए, वह महात्मा मस्तक द्वारा काम करने लगा है।

राजा—अच्छा तो चलो।

सुमंत ने आकर देखा कि महाशय जी धरती पर पड़े हैं और उनका मस्तक फट गया है।

सुमंत—भाइयो, महात्मा सत्य कहता था कि काम करते-करते मस्तक फट जाया करता है। देखो, अंत में बेचारे का मस्तक फट ही गया।

सुमंत चाहता था कि पास जाकर देखे कि उसने कितना काम किया है, परन्तु अधर्म अपनी मूर्खता के प्रभाव से धरती में समा गया, केवल एक छेद बाकी रह गया।

सुमंत—ओहो, यह तो भूत था। मालूम होता है, यह तीनों का पिता था।

सुमंत अभी जीता है। राजधानी की बस्ती नित्य बढ़ती जाती है। विजय और तारा भी उसके पास आकर रहने लगे हैं। अतिथि-सेवा करना सुमंत ने परम धर्म मान रखा है।

इस राजधानी में यही एक विलक्षण रीति है कि लोगों के साथ रसोई में बैठकर केवल वही पुरुष भोजन कर सकता है, जिसके हाथ कठोर हों, दूसरों को बचा-खुचा भोजन दिया जाता है।

दयालु स्वामी

एक समय किसी नगर में एक सदाचारी, दयालु और धनी पुरुष रहता था। उसके बहुत से सेवक थे। एक दिन सब सेवक आपस में बातें करने लगे कि हमारे स्वामी से बढ़कर दूसरा सज्जन आज पृथ्वी पर कोई नहीं। और धनी लोग अपने को देवता मानते हैं, सेवकों को पशु समझते हैं और उन्हें अति कष्ट देते हैं। हमारा स्वामी कभी खोटा वचन मुख से नहीं निकालता, तिस पर पिता समान हमारा पालन-पोषण करता है। हमारे साथ उसका अथाह

प्रेम है, ऐसे स्वामी के घर में रहकर हम बहुत सुखी हैं।

अधर्म को स्वामी और सेवकों में इस तरह प्रीति देखकर यह दुःख हुआ कि संसार में यदि इसी प्रकार स्वामीभक्ति फैल गई तो हमारा तो जगत् में से राज्य ही उठ जायेगा, कोई उपद्रव खड़ा करना चाहिए। उसने गोपाल नाम के एक सेवक को अपने वश मैं कर लिया।

कई दिन पीछे जब सब सेवक एकत्र होकर फिर स्वामी की बड़ाई करने लगे तो गोपाल बोला—स्वामी की इतनी बड़ाई करना तुम्हारी मूर्खता है। जितना हम काम उसका करते हैं, यदि किसी राक्षस का भी करते, तो वह भी प्रसन्न हो जाता। हम उसके इशारों पर काम करते हैं, उसके हुक्म की राह नहीं देखते। हम उसकी कोई आज्ञा न मानें तब तो वह अप्रसन्न हो। हां, कोई काम बिगाड़कर देखो कि कैसा दंड देता है। एक क्षण में निकाल देगा।

काम बिगाड़ने की किसी नौकर ने हामी नहीं भरी। गोपाल ने कहा कि देखो, कल क्या तमाशा दिखाता हूं।

गोपाल स्वामी की गाय-भेड़ चराया करता था। स्वामी गायों का बड़ा प्रेमी था। प्रातःकाल स्वामी अपने मित्रों को जब गायें दिखलाने लाया, तो गोपाल ने नौकरों को आंख मारी कि देखते रहना क्या होता है। अधर्म भी वृक्ष पर बैठा तमाशा देख रहा था।

स्वामी अपने मित्रों को गायें दिखाता फिरता था कि गोपाल ने रेवड़ को डरा दिया वे इधर-उधर भागने लगीं। रेवड़ में कजरी आंखों वाला एक बछड़ा बड़ा सुन्दर था और स्वामी उसे बहुत चाहता था।

स्वामी बोला—गोपाल, जरा वह बछड़ा तो पकड़ लो, मेरे मित्र उसे देखना चाहते हैं।

गोपाल झपटकर बछड़े को इस भांति पकड़ा कि उसकी एक टांग टूट गई। अधर्म बड़ा प्रसन्न हुआ कि अब लड़ाई होगी। सेवक भी खड़े देखते थे कि क्या होता है। स्वामी ने बछड़े की यह दशा देखी तो उसकी आंखों से ज्वाला निकलने लगी। कटु शब्द जिह्वा पर आयें। सारे शरीर में रोमांच हो गया। पर एक क्षण में उसने अंगड़ाई ली और लम्बी सांस खींचकर बोला—गोपाल, तुम्हारे स्वामी ने तुम्हें यह आज्ञा दी थी कि मुझे क्रोधित करो, परन्तु मेरा स्वामी तुम्हारे स्वामी से कहीं अधिक बलवान है। मैं तुम पर क्रोध नहीं करता, वरंच तुम्हारे स्वामी को अप्रसन्न करता हूं। तुम्हें दंड का भय है, तुम मेरी नौकरी छोड़ना चाहते हो। मैं तुम्हें नहीं रोकता, जहां चाहो, जाओ। यह लो वस्त्र।

यह कहकर दयालु स्वामी मित्र सहित अपने घर लौट गया और अधर्म निराश होकर लोप हो गया।

बाल-लीला

होली के दिन थे। रात को वर्षा हो जाने के कारण गांव की गलियों में पानी बह रहा था। एक गांव में दो छोटी-छोटी लड़कियां नवीन वस्त्र पहने गली में आकर खेलने लगीं। माया ने धरती पर ऐसा पैर मारा कि देवकी की आंखों में छींटे पड़ गए और उसका कुरता खराब

हो गया। माया डरकर भागना चाहती थी कि देवकी की मां आ गई। उसने देवकी को रोते देख, माया के मुंह पर थप्पड़ मारा।

माया जोर से रोने लगी। उसकी मां उसके रोने का शब्द सुनकर बाहर आ गई और बोली—क्यों, क्या हुआ? मेरी लड़की को क्यों मार रही हो?

माया ने रोकर कहा—हूं-हूं, देवकी की मां ने मारा। बस फिर क्या था, वह लगी देवकी की मां को कोसने।

शनैः-शनैः दोनों घर के और लोग आ गए और लगे आपस में लड़ने। एक बुढ़िया बोली कि क्या करते हो? होली का दिन है, यह लड़ाई कैसी? जाने दो, चुप करो। परन्तु कौन सुनता था? अंत में माया और देवकी ने ही लड़ाई बंद की और वह इस प्रकार की—इधर तो स्त्री-पुरुष लड़ाई कर रहे थे, उधर देवकी माया को मनाकर फिर वहीं जाकर खेलने लगी। उन दोनों ने गढ़े में से एक नाली बनाकर उसमें घास के तिनके तैराने शुरू किए। एक तिनका बहरा निकला। वे दोनों उसके पीछे दौड़ती-दौड़ती वहां पहुंच गईं, जहां यह महाभारत छिड़ा हुआ था।

बुढ़िया लड़कियों को आते देखकर बोली—तुम्हें लज्जा नहीं आती, इन्हीं लड़कियों के कारण लड़ाई हो रही है कि और भी कुछ? ये बेचारी तो प्रेम भाव से सब कुछ भूलकर अपने खेल में लगी हुई हैं, तुमने युद्धयज्ञ रच रखा है। तुमसे अधिक बुद्धि इन लड़कियों में है।

सब-के-सब चुप हो गए और महात्माओं का यह वचन स्मरण करने लगे कि बालकों की भांति जब तक पुरुष अपना अन्तःकरण शुद्ध नहीं करता, परमात्मा में नहीं मिल सकता।

सुख त्याग में है

अवध राज्य में चतरसिंह नामक एक किसान रहता था। विवाह होने के एक वर्ष पीछे उसके पिता का देहांत हो गया। उस समय उसके पास धन-दौलत न थी—दो गायें, दो बैल, एक घोड़ी और दस भेड़ें थीं। लेकिन पशुपालन में कुशल होने के कारण पैंतीस वर्ष के लगातार परिश्रम से अब उसके पास दो सौ गायें, डेढ सौ बैल, बारह सौ भेड़ें हो गई थीं। वह बड़े प्रतिष्ठित पुरुषों में गिना जाने लगा।

जैसा कि संसार की रीति है, बहुत लोग उससे डाह करते और कहते थे—चतरसिंह बड़ा भाग्यवान् है। धन-दौलत सब कुछ उसके पास है, संसार अब उसे सुखरूप हो रहा है। चतरसिंह को अतिथि-सेवा का प्रेम था। उसके दो पुत्र और एक कन्या थी। वे सब ब्याहे हुए थे। गरीबी की दशा में तो सब मिलकर काम किया करते थे, धनवान हो जाने पर दशा बिगड़ गई। बड़ा लड़का तो मद्य का सेवन करते-करते एक दिन किसी लड़ाई में काम आया, छोटा लड़का एक कलहारी स्त्री से विवाह करके पिता से अलग रहने लगा।

विपत्ति के दिन फिर आये। पशुओं में मरी पड़ी, सब पशु मर गए, एक न बचा। धन कुछ चोरों ने हर लिया, कुछ जों ही निबट गया। यहां तक कि चतरसिंह के पास कौड़ी न

बची। पड़ोसी आनंदसिंह ने तरस खाकर उसे और उसकी स्त्री को अपने घर में नौकर रख लिया।

आनंदसिंह को इनके नौकर रख लने में बड़ा लाभ हुआ, क्योंकि पुरुष-स्त्री दोनों बड़े सदाचारी और स्वामीभक्त थे।

एक दिन आनंदसिंह के घर में उसके कुछ सम्बन्धी आये। भोजन करते समय आनंदसिंह ने अपने सम्बन्धी से कहा कि तुमने उस बूढ़े को देखा?

सम्बन्धी—क्यों, उस बूढ़े में क्या बात है?

आनंदसिंह—वह इस प्रान्त में कभी सबसे अधिक मालदार था, उसका नाम चतरसिंह है।

सम्बन्धी—हैं, चतरसिंह! मैंने उसका नाम तो सुन रखा था, देखा उसे आज ही है।

आनंदसिंह—अब वह इतना कंगाल हो गया है कि उसे नौकरी करनी पड़ी।

सम्बन्धी—भावी बड़ी प्रबल है, लक्ष्मी कभी स्थिर नहीं रहती! मेरे विचार में चतरसिंह पिछली बात याद करके बहुत दुःखी रहता होगा।

आनंदसिंह—मुझे कुछ मालूम नहीं। मेरे सामने कभी कुछ नहीं बोलता, चुपके-चुपके काम किए जाता है।

सम्बन्धी—भला पूछूं तो कि क्या हाल है।

आनंदसिंह—हां, पूछ देखो।

सम्बन्धी—(चतरसिंह से) बाबा, तुम हमें इस भांति आनंद से गद्दे-तकिए पर लेटते, नाना प्रकार के व्यंजन खाते देखकर अवश्य दुःखी होंगे, क्योंकि एक समय था कि तुम भी धनी थे।

चतरसिंह—(हंसकर) अपने सुख-दुःख का ब्योरा यदि मैं तुम्हें सुनाऊंगा, तो तुम्हें विश्वास नहीं होगा। हां, मेरी स्त्री से पूछ देखो कि वह क्या कहती है, क्योंकि स्त्रियों को अपनी बहन लक्ष्मी से बड़ा प्यार होता है।

स्त्री पिछली ओर किवाड़ों की ओट में बैठी थी। सम्बन्धी ने उससे पूछा—माई, सत्य कहो कि पहले सुख था कि अब है?

स्त्री—सुनिए, मैं और मेरा पति दोनों पचास वर्ष तक यथार्थ सुख को खोजते रहे, वह नहीं मिला। जब से इस घर में नौकर हुए हैं, तब से कुछ सुख प्राप्त हुआ है। अब हमें किसी बात की अभिलाषा नहीं।

सिवाय चतरसिंह के सब उपहास करने लगे।

स्त्री—मैं सत्य कहती हूं, हंसी नहीं करती। धनवान होने पर जरा भी सुख न था, सुख अब है।

सम्बन्धी—क्यों?

स्त्री—धन होने पर हम सदैव ऐसे चिंताग्रस्त रहते थे कि परमात्मा को कभी स्मरण भी नहीं करते थे। आज कोई बड़ा आदमी आ गया, उसकी सेवा में कोई त्रुटि न रह जाए, नहीं तो अपमान होगा। नौकर काम नहीं करते, क्या करें! गायें बहुत हैं, रात को कहीं कोई बाघ न उठा ले जाए! सदा चोरों का भय रहता था, सारी रात जागते कटती थी। फिर कभी मेरी और पति की किसी न किसी बात पर लड़ाई भी चल जाती थी। तात्पर्य यह कि कोई

क्षण ऐसा न था कि चैन से बैठे हों।

सम्बन्धी—भला, अब?

स्त्री—अब लड़ाई है न चिन्ता। जब कांटा न रहा तो पीड़ा क्यों हो? स्वामी का काम किया और छुट्टी हुई। ऊधो का लेना न माधो का देना। दुःख का अब लेश नहीं।

वे सब हंसने लगे।

चतरसिंह—यह बात हंसने की नहीं, मनुष्य-जीवन में सत्य वचन है तो यही हैं। धन नष्ट हो जाने पर पहले हम विलाप किया करते थे। जब से ज्ञानचक्षु खुल गए हैं, तब से हम मोह के बन्धन से छूट गए। संसारी विषय में लिप्त होने से सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

वहीं एक पंडित भी बैठा हुआ था, वह बोला—बहुत सत्य है, निस्संदेह सुख त्याग में ही है, राग में नहीं।

भूत और रोटी

एक दिन प्रातःकाल एक गरीब किसान घर से दो रोटी पल्ले बांधकर हल जोतने चला। खेत में पहुंचकर रोटी तो उसने एक झाड़ी तले रख दी और आप हल चलाने लगा। दुपहरी होने पर उसने बैलों को चरने छोड़ दिया और आकर जब रोटी उठाने लगा तो रोटी नदारद!

इधर देखा, उधर देखा, कुछ पता नहीं। कोई जाता भी दिखाई नहीं दिया। फिर रोटी किसने उठा ली?

वास्तव में रोटी एक भूत ने उठा ली थी। वह झाड़ी के पीछे छिपा बैठा था।

किसान बोला—क्या हुआ, एक दिन रोटी न खायी तो मर नहीं जाऊंगा। किसी भूखे ने ही उठायी है, भगवान् उसका भला करें।

यह कहकर कुएं पर पानी पी, उसने फिर खेत जोतना आरम्भ कर दिया। भूत उदास होकर अधर्म के पास पहुंचा और उसे सारा वृत्तांत कह सुनाया।

अधर्म—(क्रोध से) तुम मूर्ख हो, काम करना क्या जानो! यदि संसारी लोग इस प्रकार संतोष करके जीवन व्यतीत करने लगेंगे तो हमारा बेड़ा ही डूब जाएगा। जाओ, तुरन्त जाकर कोई ऐसा उपाय करो कि मनुष्यों में संतोष और दया-भाव का लोप हो जाए, नहीं तो तुम्हें फांसी पर लटका दिया जायेगा।

भूत लौटकर विचार करने लगा कि क्या यत्न किया जाए। सोचते-सोचते उसे उपाय सूझ ही गया।

उसने एक किसान का रूप धर लिया और उसी किसान के पास जाकर नौकर हो गया पहले वर्ष तो उसने किसान को यह सलाह दी कि दलदल में खेती बोओ। दैवगति से उस साल चौमासा न लगा, सब लोगों की खेतियां जल गईं। इस किसान को बड़ा लाभ हुआ। खाल की धरती होने के कारण काफी अनाज उगा।

दूसरे वर्ष उसने किसान से कहकर एक ऊंचे टीले पर खेती बुवायी। कालवश अति-वृष्टि होने के कारण सब खेतियां पानी में डूबकर सड़ गईं। इस किसान को कोई हानि नहीं पहुंची।

अब किसान के पास इतना जौ पैदा हुआ कि कोठे भर गए। करे तो क्या करे? भूत ने उसे जौ से मद्य बनाना सिखला दिया। बस, फिर क्या था, किसान मद्य बना-बनाकर मित्रों-सहित उसका सेवन करने लगा।

भूत ने अधर्मराज के पास पहुंचकर विनय की—महाराज अब चलकर देखिए कि मैंने कैसा मंत्र चलाया है, अब किसान कदापि नहीं बच सकता। अतएव वे दोनों किसान के घर पर पहुंचे।

देखा कि वहां आस-पास के किसान एकत्र हैं। किसान की स्त्री उन सबको मद्य पिला रही है। इतने में उसने ठोकर खायी और मद्य का प्याला उसके हाथ से छूट गया।

किसान—(क्रोधातुर) फूहड़ कहीं की! क्या तू इसे डाब का पानी समझती है?

भूत ने अधर्म से कहा—यह वही किसान है, जो रंक होने पर भी रोटी खाने की कुछ भी चिंता नहीं किया करता था।

स्त्री को झिड़क-कर किसान आप मद्य पिलाने लगा। उसी समय वहां कोई साधु भोजन मांगने आ गया। किसान उसे दुत्कारकर बोला—जाओ यहां से, क्यों भीतर घुस आते हो? यहां भोजन-वोजन कुछ नहीं।

अधर्म बड़ा प्रसन्न हुआ। भूत बोला—अभी क्या है, देखते जाइए, क्या-क्या होता है!

सब किसान पहला प्याला पीकर मस्त हो गए और आपस में चिकनी-चुपड़ी बातें करने लगे।

अधर्म—वाह भाई भूत, क्या कहना है, यदि ये लोग मद्य के भक्त बनकर एक-दूसरे से लोमड़ियों की तरह कपट की बात करने लगेंगे तो हमारा राज्य अचल हो जाएगा।

भूत—महाराज, अभी तो पहला ही प्याला है, दूसरा प्याला पीने दीजिए, फिर इनको आप बाघ के रूप में देखेंगे।

दूसरा प्याला पीने की देर थी कि वे लोग लगे आपस में कोलाहल और हाथापाई करने। किसी ने किसी की नाक काट ली, किसी ने किसी का कान। स्वयं घर के मालिक पर बे-भाव की पड़ी।

अधर्म—(अति प्रसन्नता से) वाह-वाह, क्या खूब!

भूत—बस, तीसरा प्याला पेट में गया कि सब-के-सब सूअर बने।

किसानों ने तीसरा प्याला पी लिया। दृश्य ही और हो गया। वे पशु समान नंगे होकर नाचने लगे। कोई इधर भागा, कोई उधर। कोई कहीं गिर पड़ा, कोई कहीं। किसान दौड़कर मोरी में गिर पड़ा और सूअर की भांति वही पड़ा हल्ला मचाता रहा।

अधर्म—भाई भूत, तुमने तो बड़ा काम किया, यह मंत्र तो एक ही है। मेरी समझ में तुमने मद्य बनाते समय उसमें लोमड़ी, बाघ और सूअर का रुधिर अवश्य मिला दिया है, जिससे यह बारी-बारी लोमड़ी, बाघ और सूअर बन गए।

भूत—महाराज, यह बात नहीं। यह नियम है कि मनुष्य को नित्य केवल क्षुधा-निवारण करने को अन्न मिलता रहता है, तो वह कोई उपद्रव नहीं करता। ज्योंही उसे अधिक मिला कि उसने धूम मचायी। बस यही मंत्र मैंने इस किसान पर चलाया है। जब तक वह निर्धन था, संतोष से जीवन व्यतीत करता था। मैंने इसे इतना अन्न दिया कि उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। मद्य बनाना सीखकर उसने परमेश्वर के दिये हुए गुणकारक पदार्थों को विषय-भोग

के निमित्त मादक बना डाला। लोमड़ी, बाघ और सूअर का अंश उसमें पहले से उपस्थित था। अवसर पाते ही सब कुछ प्रकट हो गया। अब वह मद्य-भक्त होकर सदैव पशु बना रहेगा।

अधर्म ने अति प्रसन्न होकर भूत को प्रधान की पदवी दे दी।

एक आदमी को कितनी भूमि चाहिए

एक दिन उर्मिला अपनी छोटी बहन निर्मला से गांव में मिलने आयी। उर्मिला एक धनी सौदागर को ब्याही थी और निर्मला गांव में एक गरीब किसान के साथ। भोजन करते समय उनमें यों बातचीत होने लगी!

उर्मिला—निर्मला, मुझे गांव में रहना पड़े तो जरा भी जी न लगे। देखो, हम नगर में रहकर कैसे सुन्दर वस्त्र पहनती हैं, नाना प्रकार के व्यंजन खाती हैं, नाटक-तमाशे देखती हैं, बाग-बगीचों में सैर करती हैं और सदैव रंग-रेलियां मनाती हैं।

निर्मला—(अभिमान से) मुझसे कहती हो? मैं तो कभी भी तुम्हारे साथ अदला-बदली न करूं। माना कि हम मोटा-झोंटा खाते हैं, लेकिन हमें रात-दिन चिंता तो नहीं घेरे रहती। तुम्हें तो सदैव लगी रहती है। हानि-लाभ दो जुड़वां भाई हैं। जो आज राजा है, वही कल कंगाल है। यहां तो सदैव एक-रस रहते हैं। किसान धनवान नहीं बन सकते, लेकिन अन्न-वस्त्र की तो उनको कमी हो ही नहीं सकती।

उर्मिला—अन्न की एक ही कही। तुम तो पशु हो। रीति-नीति, आचार-व्यवहार क्या जानो? कितना ही मरो-खपो, तुम और तुम्हारी संतान एक दिन इसी खाद के ढेर पर प्राण-त्याग कर देगी और बस।

निर्मला—इससे क्या! मरना तो एक दिन सभी को है। खेती का काम कठिन है, पर हमें किसी का भय नहीं, न किसी को मस्तक झुकाना पड़ता है। नगर में रहते हुए मनुष्य का चित्त चंचल रहता है। क्या जाने, कल तुम्हारा पति मद्य-सेवी बनकर जुआरी और वेश्यागामी हो जाए। ऐसी बातें आये दिन सुनने में आया करती हैं।

मथुरा चारपाई पर पड़ा हुआ यह बातें सुन रहा था। मन में सोचने लगा, मेरी स्त्री कहती तो सच है। हम बालपन से ही खेतों के काम में लगे रहते हैं कि हमें कुकर्म करने का ध्यान तक नहीं आता, पर दुःख यही है कि हमारे पास कुछ नहीं। हमारे पास खेत नहीं हैं। यदि मेरे पास धरती काफी हो जाए तो फिर चांदी है।

संयोग से अधर्म भी वहां बैठा यह बातें सुन रहा था। मथुरा में धरती की लालसा उत्पन्न होते देखकर प्रसन्न हो कहने लगा कि इसी तृष्णा के वश एक दिन इसका सर्वनाश करूंगा।

2

इस गांव के समीप एक जमींदारिन रहती थी, जिसके पास दो सौ बीघे भूमि थी। उसने एक

बूढ़ा सिपाही कारिंदा रख छोड़ा था। वह कारिंदा असामियों को बड़ा दुःख देता था। मथुरा अपने पशुओं को संभाल-संभालकर रखता था, पर कभी-कभी वे उसके खेत-खलिहान में चले ही जाते थे। कई बार उसकी ओर कारिंदे की लड़ाई हुई। मथुरा अत्यंत दुःखी हो गया था।

कुछ दिन उपरांत यह चर्चा फैली कि बुढ़िया अपनी रियासत बेचती है और गांव का बनिया उसे मोल लेने को तैयार है। गांव वाले डरे कि यदि बनिया मालिक बन गया, तो उसके सिपाही कारिंदे से भी अधिक दुःख देंगे। उचित यह है कि सब मिलकर रियासत खरीद लें, परन्तु अधर्म ने उनमें ऐसी फूट डाली कि वे लोग कोई निश्चय न कर सके। तब उन्होंने फैसला किया कि लोग अपने-अपने नाम से भूमि खरीदें। बुढ़िया इस पर भी राजी हो गई। एक किसान ने पचास बीघा धरती बुढ़िया से इस शर्त पर मोल ली कि आधा दाम तुरन्त दूंगा और आधा एक वर्ष पीछे।

यह सुनकर मथुरा के मन में भी ईर्ष्या उत्पन्न हुई। उसने विचारा कि कुछ भी हो, चालीस बीघा धरती अवश्य मोल लेनी चाहिए। सौ रुपये घर में जमा थे, बाकी कुछ अनाज और बैल बेचकर चालीस बीघा धरती खरीद ही ली। आधा दाम पहले दे दिया, आधा दो वर्ष पीछे चुका देने का वचन दिया।

मथुरा बड़ा पुरुषार्थी था। खूब मेहनत से खेत जोते-बोए। फसल अच्छी लगी। दो वर्ष के भीतर-भीतर ऋण चुक गया। अब वह अपने खेतों, पशुओं, भूसे, खलिहान, चरांद को देखकर फूला न समाता। यह खेत वहां पहले भी थे और मथुरा उन्हें नित्य देखा भी करता था, परन्तु ममत्व हो जाने के कारण उनको देखने में अब कुछ और ही आनन्द मिलता था।

3

अब मथुरा के पास अपनी जमीन थी और उसके दिन सुख के कट सकते थे; परन्तु पड़ोसी बड़ा दुःख देने लगे। कभी कोई खेत में बैल छोड़ देता, कभी गांव के बालक चरांद में डंगर चराने लगते। पहले-पहले तो वह सब सहन करता रहा, पर कहां तक करे? उसने विचारा कि यदि इस प्रकार चुप लगाए रहूंगा तो यह चैन न लेने देंगे। आखिर उसने नालिश करके कई मनुष्यों पर दंड लगवा दिया। लोग इससे जलकर और भी दुःख देने लगे।

एक रात दयाराम ने मथुरा की धरती में से सारे वृक्ष काट डाले। उसने प्रातःकाल जाकर देखा कि सारे वृक्ष कटे पड़े हैं। आग हो गया। सोचने लगा, यह किसकी शरारत है? कोई एक-आध वृक्ष काट लेता तो खैर, कुछ बात न थी, पर इस चांडाल ने तो एक भी वृक्ष न छोड़ा। हो न हो, यह उपद्रव तो दयाराम ने किया है।

बस, क्रोध से भरा हुआ वह दयाराम के घर पहुंचा और बोला—तुमने वृक्ष क्यों काटे। दयाराम लड़ने-मरने पर तैयार हो गया—कैसे वृक्ष? किसने काटे? जाओ, नहीं तो अभी सिर फोड़ देता हूं। मथुरा भला यह बातें कब सह सकता था? तुरन्त कचहरी में पहुंचा और नालिश ठोंक दी। फैसला होने पर दयाराम कोरा बच गया। वृक्ष काटने का कोई साक्षी न था। मथुरा जल-भुनकर हाकिमों को गालियां देने लगा कि तुम चोरों को छोड़ देते हो, तुम स्वयं चोर हो इत्यादि।

तात्पर्य यह है कि अब कोई दिन ऐसा न था कि पड़ोसियों से उसका लड़ाई-झगड़ा न हो। पहले जब घर की एक बिस्वा धरती पास न थी, तो वह बड़ा सुखी था। अब नित्य क्लेश रहता था। कुछ समझ में न आता था कि क्या करूं।

इन्हीं दिनों गांव में यह चर्चा हुई कि लोग घर-बार छोड़कर किसी नये देश में जाने का विचार कर रहे हैं। मथुरा बड़ा प्रसन्न हुआ कि उजाड़ हो जाने पर बहुत-सी धरती मिल जाएगी, आनन्दपूर्वक दिन काटूंगा।

एक दिन मथुरा के घर में एक अतिथि आया। मथुरा ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। रात्रि को भोजन करते समय अतिथि बोला कि सरकार ने पंजाब में एक नई बस्ती बसाई है। मनुष्य पीछे पच्चीस बीघा जमीन मिलती है। जमीन बड़ी सुंदर है। अभी एक मनुष्य खाली हाथ वहां आया था, दो वर्ष के अंदर मालामाल हो गया।

यह सुनकर मथुरा को तृष्णा ने आ घेरा। कहने लगा—मैं इस अंधकूप में क्यों सड़ूं। घर-बार बेचकर उस नई बस्ती में ही क्यों न चला जाऊं? यहां तो पड़ोसियों ने विपत्ति में जान डाल रखी है। परंतु पहले जाकर देख आऊं।

उन दिनों रेल न थी। तीन सौ मील पैदल चलने का कष्ट उठाकर वहां पहुंचा। देखा कि अतिथि सच कहता था। मनुष्य पीछे पच्चीस बीघा जमीन मिली हुई है। यदि कोई चाहे तो एक रुपया बीघा पर अधिक धरती भी मोल ले सकता है।

बस फिर क्या था, देख-भाल करके तुरंत घर को लौट आया और धरती, मकान, पशु आदि सब बेच-बाचकर नवीन बस्ती को चल दिया। हाय तृष्णा!

4

मथुरा कुटुम्ब सहित नई बस्ती में पहुंचा और चौधरियों से मित्रता करके एक सौ पैंतीस बीघा धरती ले ली और मकान बनाकर वहां निवास करने लगा।

इस बस्ती में यह रीति थी कि एक ही खेत को लगातार दो वर्ष बाहने-बोने के पीछे धरती छोड़ना पड़ता था कि ताकि धरती निकम्मी न होने पावे। लोभ पाप का मूल है। पहले-पहले तो मथुरा आनंद-सहित अपना काम करता रहा, परन्तु अब उसके ध्यान में 135 बीघा धरती भी थोड़ी थी। उसकी लालसा तो यह थी कि सारी धरती में गेहूं बोए। धरती परती छोड़े तो कहां से छोड़े? फिर उसने देखा कि बहुत लोग पंचायत से अलग जमीन लेकर खेती करके धन-संचय करने लगे हैं। अतएव वह सदा चिंताग्रस्त रहने लगा।

फल यह हुआ कि वह दूसरों से खेत लेकर बटाई पर खेती करने लगा। यद्यपि बहुत-सा धन एकत्र कर चुका था, तिस पर भी तृष्णा बढ़ती ही जाती थी। तीसरे वर्ष ठीक फसल के समय जब बटाई वाली धरती में गेहूं पके खड़े थे, तो मालिक ने अपनी धरती छुड़ा ली। फिर तो मथुरा के क्लेश की कोई सीमा न रही। कहने लगा कि यदि आज यह धरती मेरी अपनी होती, तो क्या ऐसा हो सकता था।

दूसरे दिन मालूम हुआ कि पड़ोसी अपनी तेरह सौ बीघा धरती पंद्रह सौ रुपये में बेचता है। सौदा पंक्का हो रहा था कि अकस्मात् एक अतिथि आ पहुंचा।

अतिथि—(मथुरा से) तुम बड़े ही मूर्ख हो कि पंद्रह सौ रुपये में तेरह सौ बीघा धरती

मोल लेते हो। गुजरात देश में क्यों नहीं चले जाते? वहां धरती बड़ी सस्ती है। मैंने वहां एक हजार रुपये में तेरह हजार बीघा धरती मोल ली है। वहां का राजा बड़ा सीधा-सादा है। बस, वहां जाकर उसे प्रसन्न कर लो, जितनी धरती चाहोगे, मिल जाएगी।

मथुरा ने उसका कहना मान लिया और इस बस्ती में धरती लेने का विचार छोड़ दिया।

5

दूसरे दिन मथुरा कुटुम्ब को बस्ती में छोड़कर एक नौकर साथ ले, एक हजार रुपये पल्ले बांध, गुजरात को चल दिया। पांच सौ मील चलने पर वहां पहुंचकर उसने देखा कि सब लोग डेरों में रहते हैं, न कोई धरती बोता है, न अन्न खाता है। गाय, भैस, घोड़े इत्यादि तराई में चरते-फिरते हैं। स्त्रियां दूध दुहकर मक्खन आदि बना लेती हैं, यही उनकी जीविका है। सब लोग हंसते-खेलते, गाते-बजाते, आनन्द-सहित काल व्यतीत कर रहे हैं। कोई झगड़ा है, न लड़ाई। सब-के-सब अनपढ़ और मूर्ख हैं। परन्तु कपट का नाम नहीं।

मथुरा को देखकर वे लोग बड़े आनन्दित हुए और बड़ी आव-भगत से उसे एक डेरे में ले गए। मथुरा ने उन्हें कुछ पदार्थ भेंट किए।

लोग–(भेंट लेकर) महाशय, यहां की यह रीति है कि जो कोई हमें भेंट देता है, उसके बदले में हम उसे कुछ अवश्य देते हैं, इस कारण आप बतालइए कि आप क्या चाहते हैं।

मथुरा–मुझे केवल धरती की अभिलाषा है। हमारे देश में बस्ती बढ़ जाने के कारण माता ने फल देना छोड़ दिया है। तुम्हारी धरती अच्छी मालूम होती है।

लोग–(हंसकर) हां-हा! यह बात तो नहीं। धरती जितनी चाहो ले लो, परन्तु हम अपने राजा से पूछ लें।

6

इतने में राजा भी वहां आ गया। यह बातें सुनकर मथुरा से कहने लगा–हां, जितनी भूमि चाहो ले लो।

मथुरा–मैं आपको धन्यवाद देता हूं, मुझे बहुत नहीं चाहिए। हां, इतनी बात है कि धरती नापकर पट्टा लिख दीजिए। मरना-जीना बना हुआ है, लिखा-पढ़ी बिना सौदा ठीक नहीं होता। आज़ आप दे दें, कल स्यात् आपकी संतान मुझसे धरती छीन ले तो क्या बना लूंगा?

राजा–बहुत ठीक, धरती नाप-कर पट्टा लिख देंगे।

मथुरा–दामं क्या होंगे?

राजा–हम एक बात जानते हैं, दूसरी नहीं। बस एक दिन की एक सहस्र मुद्रा।

मथुरा–दिन का क्या हिसाब है, मैंने नहीं समझा।

राजा–भाई साहब, बीघा-सीघा हम कुछ नहीं जानते, हम तो एक दिन की एक सहस्र मुद्रा लेते हैं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक जितना चक्कर कोई मनुष्य काट लें, उतनी ही धरती

उसकी हो जाती है।

मथुरा–क्या कहा? एक दिन में तो मनुष्य बड़ा भारी चक्कर काट सकता है।

राजा–हां, तो क्या हुआ। परन्तु एक बात यह है कि जहां से चलोगे, सूर्यास्त से पहले-पहले तुम्हें वहीं आना पड़ेगा।

मथुरा–भला चक्कर का चिह्न कौन लगाएगा?

राजा–तुम एक कुदाल ले जाना और गढ़े देते जाना, परन्तु यह याद रहे कि जहां से चलो सूर्यास्त से पहले वहीं आ जाओ।

मथुरा–बहुत अच्छा।

यह बातें सुनकर मथुरा अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

7

निद्रा कहां? मथुरा रात-भर इसी सोच-विचार में रहा कि मैं पैंतीस मील का चक्कर सहज में काट सकता हूं। ओ हो, पैंतीस मील! फिर तो मैं बड़ा इलाकेदार बन जाऊंगा। सौभाग्य से दिन भी बड़े हैं। पैंतीस मील धरती बहुत होती है! घटिया धरती बेच डालूंगा, अच्छे-अच्छे खेत आप रख लूंगा।

दिन निकलने के पहले मथुरा की एक क्षण के लिए आंखें झपक गईं। क्या स्वप्न देखता है कि गुजरात देश का राजा सम्मुख खड़ा हंस रहा है। पास जाकर हंसने का कारण पूछा तो जान पड़ा कि राजा नहीं, वह तो गुजरात देश का सूचना देने वाला अतिथि है। तुम कहां! पर मालूम हुआ, वह तो नवीन बस्ती की बात बतलाने वाला बटुक है। समीप जाकर देखने लगा तो बटुक कहां! वहां तो साक्षात् अधर्मराज मुंह बाये खड़े हैं और उनके पैरों के नीचे धोती-कुरता पहने एक पुरुष चित्त मरा पड़ा है। झुककर देखा तो मथुरा! वह भयभीत होकर उठ बैठा। ओ हो, स्वप्न में भी क्या-क्या भयंकर दृश्य दिखाई पड़ते हैं।

सूर्य उगते ही वह राजा-सहित जंगल को चल दिया।

8

जंगल में पहुंचकर राजा ने कहा कि जहां तक दृष्टि जाती है, हमारा ही देश है। कहीं से चक्कर काटना आरम्भ कर दो। देखो, मैं यह छड़ी रख देता हूं। बस, सूर्यास्त से पहले यहीं आ जाना।

मथुरा छड़ी पर एक हजार रुपये रखकर, रोटी पल्ले बांध, छड़ी हाथ में ले, चक्कर काटने लगा। तीन मील चलने पर एक पहर दिन चढ़ आया। उसे गरमी सताने लगी।

मथुरा ने मन में कहा, दिन के चार पहर होते हैं, अभी तो तीन पहर शेष हैं। अभी लौटना उचित नहीं। जूते उतार डालूं, नंगे पैर चलने में सुभीता होगा। तीन मील और जाकर बायीं ओर फिर जाऊंगा। अहा हा! यह टुकड़ा तो बहुत ही अच्छा है, भला यह कहीं छोड़ने योग्य है! यहां तो ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता हूं, अच्छी ही अच्छी धरती आती जाती है। (फिर कर) ओ हो! राजा आदि तो कोई दिखाई नहीं पड़ता, शायद दूर निकल आया। अब लौटना

चाहिए। गरमी बढ़ गई है। प्यास से गला सूखा जाता है। उसके बायीं ओर लौटते-लौटते दोपहर हो गई, तब वह जरा दम लेने को बैठ गया। रोटी निकालकर खायी, पानी पिया और फिर चल खड़ा हुआ। सूर्य का तेज सहा न जाता था। गरमी इतनी थी कि शरीर झुलसा जाता था। परन्तु तृष्णा का भूत सिर पर सवार था। करे तो क्या करे! कहने लगा, क्या चिन्ता है! अभी दुःख फिर सुख; चलो। चलते-चलते दूर निकल गया, तब उसे ध्यान आया, यह तो बुरा हुआ। मैंने बड़ी चूक की, अब यदि पूरा घेरा देकर धरती को ठीक चौकोर बनाऊंगा तो सूर्यास्त से पहले छड़ी पर पहुंचना असम्भव है। अच्छा तिकोना ही रहने दो। यहीं से लौट चलो। ऐसा न हो कि सूर्य अस्त हो जाए और में बीच में ही रह जाऊं।

9

मथुरा नाक की सीध में छड़ी की ओर चलने लगा। गरमी के मारे उसका मुंह सूख गया, शरीर जल उठा, पांव घायल हो गए, टांगें थक गईं। ठहरे कैसे? सूर्य उसका चाकर तो था नहीं कि उसके लिए खड़ा रह जाता।

सोचने लगा—हाय-हाय! यह मैंने किया? मुझे क्या लालच ने मार गिराया। सूर्य डूबने आया, छड़ी का अभी तक कहीं पता ही नहीं, करूं तो क्या करूं! हे भगवान्!

अब साफा सिर से फेंक, लाठी छोड़कर वह दौड़ने लगा।

दौड़ते-दौड़ते छाती लोहार की धौंकनी बन गई। उसका हृदय धड़कने लगा। वह सिर से पैरों तक पसीने में डूब गया। उसकी टांगें लड़खड़ा गईं। उसने समझा कि अब प्राण गये। चिल्ला पड़ा—हाय, सारी के लालच में आधी भी खो बैठा! परन्तु इतना कष्ट उठाकर यदि ठहर जाऊंगा, तो लोग मुझे महामूर्ख समझेंगे। दौड़ो; जैसे बन सके, छड़ी पर पहुंचो।

इतने में उसे विराट देशवासियों का शब्द सुनायी देने लगा। सूर्य डूबने को हुआ, लाली छा गई। छड़ी सामने दिखाई देने लगी, पास राजा बैठा है, छड़ी पर एक सहस्र मुद्रा पड़ी हुई है। उसे रात्रि वाला स्वप्न स्मरण हुआ। निराश होकर बोला—धरती तो मिल गई, परन्तु क्या मैं छड़ी तक पहुंच सकता हूं?

इतने में सूर्य अस्त हो गया। टीले पर वे किस प्रकार पहुंचे? वह चिल्ला उठा—हाय-हाय! मेरा सारा परिश्रम निष्फल हुआ, सूर्य अस्त हो गया।

लोग टीले पर बैठे हुए पुकारने लगे—नहीं-नहीं; सूर्य अभी अस्त नहीं हुआ, दौड़ो।

वह जी तोड़कर दौड़ा और अन्त में टीले पर चढ़ गया। देखा कि छड़ी पड़ी है, राजा पास बैठा हंस रहा है। फिर स्वप्न याद आया, उसकी टांगे कांप गईं। वह मुंह के बल पृथ्वी पर गिर पड़ा।

गिरते हुए उसका हाथ छड़ी को जा लगा। राजा बोला—बड़ा उद्यमी है, इसने कितनी धरती पर अधिकार जमा लिया !

नौकर जाकर उठाने लगा तो देखा कि मथुरा के मुख से रुधिर की धारा बह रही है और वह मरा पड़ा है।

फिर क्या था, सबने वहीं जंगल से लकड़ियां एकत्र करके उसका दाह-कर्म किया और सबको विदित हो गया कि उसे केवल डेढ़ गज भूमि की आवश्यकता थी।

अंडे के बराबर दाना

एक समय खेलते-खेलते नदी में से बालकों को अंडे के बराबर अनाज का एक दाना मिला। पास से एक राही जा रहा था, उसने एक आने में मोल लेकर उस दाने को किसी राजा के हाथ बेच डाला।

राजा देखकर बड़ा चकित हुआ। सारे मंत्रियों को एकत्र करके पूछने लगा कि यह क्या है? कोई न बता सका। राजा ने उसे खिड़की में रख दिया। एक दिन मुर्गी ने आकर उस दाने में छेद कर दिया, तब मंत्रियों ने जाना कि वह अनाज का दाना है।

राजा ने अपने राज्य के समस्त विद्वानों को आज्ञा दी कि खोज लगाएं कि ऐसा दाना किस देश में उगता है। विद्वानों ने पुस्तकें छान मारीं, कुछ पता न चला। उन्होंने आकर राजा से निवेदन किया कि महाराज, हमारी पुस्तकों में इस दाने की कहीं व्याख्या नहीं मिलती, किसी किसान को बुलाकर पूछना चाहिए।

राजा ने सेवक भेजकर एक किसान को बुलाया। किसान बूढ़ा, कुबड़ा, पीत बदन, मुंह में दांत न पेट में आंत, आंखों से अंधा, कानों से बहरा, दोनों हाथों में लाठियां लिये, गिरता-पड़ता राजा के सामने आया।

राजा—(हाथ में दाना लेकर) तुम बतला सकते हो कि ऐसा दाना किस देश में उत्पन्न होता है? तुमने ऐसा दाना कभी मोल लिया है अथवा अपने खेत में बोया है?

किसान—(दाना टटोलकर) पृथ्वीनाथ, मैंने ऐसा दाना कभी नहीं देखा, न कभी मैंने मोल लिया, न कभी बोया। मैंने तो यही साधारण दाने देखे हैं। स्यात् मेरे पिता को कुछ मालूम हो, उनसे पूछ देखिए।

राजा ने उसके पिता को बुला भेजा। पिता के हाथ में एक लाठी थी। वह बेटे से अच्छा था। आंख-कान ने भी जवाब न दिया था।

राजा—(दाना दिखाकर) बाबा, यह दाना किस देश का है? तुमने ऐसा दाना कभी खरीदा अथवा बोया है?

पिता—महाराज, मैंने ऐसा दाना कभी नहीं बोया। मोल लेने के विषय में मेरी यह विनती है कि मेरे समय में रुपये की चाल न थी। अनाज के बदले में ही सब व्यवहार चलता था। हां, इतना कह सकता हूं कि हमारे समय में आजकल से दाना बड़ा पैदा होता था। स्यात् मेरे पिता को कुछ मालूम हो, उन्हें बुलवा भेजिए।

राजा ने उसके पिता को बुलाया। वह हट्टा-कट्टा, नख-शिख से ठीक, हाथ में लाठी न सोटा, राजा के सामने आया। राजा ने उसे दाना दिखाया और पहले की भांति वही प्रश्न किया।

बूढ़ा—(हाथ में दाना लेकर) स्वामी, यह दाना मैंने बहुत दिनों से देखा है। (चखकर) हां, ठीक वही है।

राजा—भला यह तो बतलाओ कि ऐसा दाना कब और कहां होता था? तुमने ऐसा दाना मोल लेकर कभी अपने खेत में बोया था?

बूढ़ा—मेरे समय में सब जगह ऐसा ही दाना होता था, मैं ऐसे ही दानों से पला हूं। हमारे खेत में सर्वदा ऐसे ही दाने उगा करते थे।

राजा—परन्तु उन्हें तुम कहीं से मोल लाया करते थे क्या?

बूढ़ा—(हंसकर) महाराज, उस समय मोल लेने अथवा बेचने का पापकर्म कोई नहीं करता था। हम रुपये का नाम तक भी नहीं जानते थे। सबके पास काफी अनाज होता था।

राजा—तुम्हारे खेत कहां थे?

बूढ़ा—परमात्मा की पृथ्वी हमारे खेत थे। जो जहां चाहता था, हल चला सकता था। धरती किसी एक आदमी की न थी। सब लोग अपने हाथों की कमाई से पेट भरते थे।

राजा—अच्छा, पहले यह बतलाओ कि उस समय धरती ऐसा बड़ा दाना क्यों उत्पन्न करती थी, अब क्यों नहीं करती? दूसरे, तुम्हारा पोता दो लाठियों के सहारे चलता है, तुम्हारा बेटा एक लाठी के सहारे, और तुम बिना सहारे चलते हो। तुम्हारी आंखें अच्छी हैं, दांत एक भी नहीं टूटा। यह बात क्या है?

बूढ़ा—स्वामी, इसका कारण यह है कि इस समय मनुष्यों ने अपना काम करना छोड़ दिया है। दूसरों की कमाई से अपना उदर पालन करते हैं। प्राचीन समय में लोग परमात्मा की आज्ञा पालन करके अपने हाथों से प्राप्त की हुई वस्तु को अपनी वस्तु समझते थे, दूसरों की कमाई पर हाथ नहीं बढ़ाते थे।

धर्मपुत्र

किसी महात्मा के वरदान से एक अति निर्धन किसान के एक पुत्र हुआ। महात्मा ने यह बतला दिया था कि जन्म होते ही किसी पुरुष को बालक का धर्मपिता और किसी स्त्री को उसकी धर्ममाता बना देना, नहीं तो बालक को जान की जोखिम है।

पुत्र-जन्म के अगले दिन किसान ने एक पड़ोसी से कहा कि मेरे बालक के धर्मपिता बन जाइए। उसने उत्तर दिया कि मैं ऐसे कंगाल के पुत्र का धर्मपिता नहीं बनता। इस पर बेचारा किसान सारे गांव में फिरा, पर किसी ने उसके पुत्र का धर्मपिता बनना स्वीकार न किया। तब वह निराश होकर दूसरे गांव चल दिया। राह में एक महापुरुष से उसकी भेंट हुई।

महात्मा—बच्चा, कहां जाते हो?

किसान—महाराज, कहां जाते हो? परमात्मा ने इस बुढ़ापे में आंखों का तारा, जीवन का सहारा, नाम लेवा, पानी देवा एक पुत्र दिया है। उसके धर्मपिता-माता बनाए बिना उसका जीना कठिन है। महात्मा का वरदान ही ऐसा है। मेरे निर्धन होने के कारण कोई उसका धर्मपिता नहीं बनता। अब किसी दूसरे गांव में जाता हूं, शायद कोई दया करके बालक का धर्मपिता बन जाए।

महात्मा—ओह, यह बात है। मैं बन जाता हूं।

किसान—(प्रसन्न होकर) आपने मुझ पर बड़ी दया की, मगर अब उसकी धर्ममाता कौन बने?

महात्मा—यहां से थोड़ी दूर पर एक नगर है। चौराहे पर एक धनी वणिक का घर है, वहां चले जाओ। द्वार पर ही तुम्हारी उससे भेंट हो जाएगी। यह सब वृत्तांत सुनाकर कहना

कि आप अपनी पुत्री से कह दीजिए कि मेरे पुत्र की धर्ममाता बन जाए।

किसान—ऐसे धनी पुरुष से यह बात कैसे कह सकता हूं? वह मुझसे शायद बात न करे।

महात्मा—नहीं, ऐसी बात नहीं। तुम तुरन्त चले जाओ।

किसान उस सौदागर के पास पहुंचा। उसने बड़े हर्ष से अपनी पुत्री को उसके पुत्र की धर्म-माता बनाना मंजूर कर लिया।

2

यह बालक बड़ा पराक्रमी और बुद्धिमान था। दस वर्ष की अवस्था में उसकी बुद्धि ऐसी अच्छी थी कि जो विद्या अन्य बालक पांच वर्ष में सीख सकते थे, वह एक वर्ष में सीख लेता था।

एक बार दीपमाला के अवसर पर बालक माता-पिता की आज्ञा लेकर नगर में अपनी धर्ममाता को प्रणाम करने गया। संध्या समय घर लौट आने पर व पिता से कहने लगा—

पिताजी. अपनी धर्ममाता को तो प्रणाम कर आया, पर धर्मपिता के दर्शन करना भी आवश्यक है। कृपा करके मुझे बताइए, उनका स्थान कहां है?

पिता—बेटा, हमें स्वयं इसका बड़ा दुःख है कि हम उनका निवास-स्थान नहीं जानते। तुम्हारे नामकरण के बाद हमने उन्हें कभी नहीं देखा। क्या जाने मर गए कि जीते हैं!

बालक—मैं उनके दर्शन करूंगा। आज कृपा कर मुझे आज्ञा दीजिए। उद्योग करने से कहीं न कहीं भेंट हो ही जाएगी।

माता-पिता ने बालक को आज्ञा दे दी और उसने घर से बाहर निकलकर जंगल की राह ली।

3

अकस्मात् राह में एक महात्मा दिखाई पड़े।

महात्मा—बेटा, कहां जाते हो?

बालक—अपने धर्मपिता की खोज में। मैंने आज तक कभी उनके दर्शन नहीं किए। मुझे उनके दर्शन की बड़ी अभिलाषा है, पर मेरे माता-पिता की आज्ञा लेकर मैं अपने धर्मपिता को ढूंढ़ने जाता हूं।

महात्मा—वाह-वाह! लो, तुम्हारा काम बन गया। मैं ही तुम्हारा धर्मपिता हूं।

बालक ने प्रसन्न होकर उनके चरण छुए और पूछा—तो अब आप किधर जा रहे हैं? यदि मेरे घर चलने का विचार है तो अहोभाग्य, नहीं तो मैं आपके साथ चलूंगा।

महात्मा—मुझे इस समय तुम्हारे घर चलने का अवकाश नहीं, और बहुत काम करने हैं। मैं कल निज-स्थान को लौटूंगा। तुम कल वहां आ जाना।

बालक—मैं आपका घर नहीं जानता, आऊंगा कहां?

महात्मा—कल प्रातःकाल अपने घर से बाहर निकलकर सीधे पूर्व दिशा की राह लेना।

कुछ दूर चलकर तुम्हें जंगल मिलेगा। वहां एक घाटी है। उस घाटी में बैठकर तनिक विश्राम करके देखना कि क्या होता है। जो कुछ देखो, उसे भूलना नहीं। फिर वहां से आगे चल देना। जंगल निकल जाने पर एक बाग आएगा। उसमें सुनहरी छत वाला स्थान मेरा घर है मैं द्वार पर ही तुम्हें मिल जाऊंगा।

बालक–जो आज्ञा।

यह कहकर धर्मपिता अन्तर्धान हो गए और बालक अपने घर लौट आया।

4

दूसरे दिन प्रातःकाल बालक ने जंगल की राह ली। पूर्व दिशा की ओर चलते-चलते वह घाटी में पहुंच गया। देखा कि बीच में चीड़ का एक वृक्ष है, उसी शाखा में रस्से से बंधा हुआ एक बड़ा शहतीर लटक रहा है और ठीक उसके नीचे शहर से भरा हुआ एक कुंड है। बालक बैठकर देखने लगा। इतने में बच्चों के संग उसे एक रीछनी आती दिखाई दी। वे सब दौड़कर मधुकुंड के पास पहुंचे। रीछनी लटकते हुए शहतीर को सिर से ढकेलकर मधु खाने लगी और बच्चों ने भी वैसा ही किया। इतने में शहतीर उलटकर बच्चों को लगी। रीछनी ने उसे फिर धक्का दिया। वह उलटकर एक बच्चे की पीठ पर लगी, बच्चे भाग गए। रीछनी ने शहतीर को फिर बड़े जोर से धक्का दिया। उस समय बच्चे आकर मधु खाने लगे थे। बल्ली उलटकर एक बच्चे को ऐसी लगी कि वह मर गया। रीछनी को क्रोध आ गया। उसने बल्ली को ऐसा झटका दिया कि रस्सा टूट गया, बल्ली रीछनी के सिर पर गिरी और वह मर गई।

5

बालक इस दृश्य का अर्थ कुछ न समझा और वहां से चल दिया। बाग में पहुंचकर फाटक पर धर्मपिता से उसकी भेंट हो गई। वह बालक को भीतर ले गया। बालक ने ऐसा सुन्दर और रमणीक स्थान कभी नहीं देखा था। धर्मपिता ने उसे सारा महल दिखाया और तब एक द्वार पर खड़ा होकर कहने लगा–

'बेटा, देखो, इस द्वार में ताला नहीं, केवल मोहर लगी हुई है। यह द्वार खुल सकता है, परन्तु तुम कभी इसे खोलने का इरादा न करना। जब तक चाहो, इस घर में रहो, पर इस द्वार को कभी न खोलना। यदि भूलकर कभी खोल बैठो तो रीछनी वाला दृश्य याद रखना, भूल न जाना।

अगले दिन धर्मपिता तो कहीं बाहर चला गया, धर्मपुत्र वहां आनन्दपूर्वक निवास करने लगा। रहते-रहते तीन वर्ष बीत गए। एक दिन मोहर वाले द्वार पर खड़ा होकर वह विचार करने लगा कि धर्मपिता ने इस द्वार को खोलने का निषेध क्यों किया है, देखूं तो इसके भीतर है क्या?

धक्का देने पर मोहर टूट गई, द्वार खुल गया। देखा कि अन्दर बड़ा दालान है। बीच में एक सिंहासन पड़ा हुआ है और उस पर एक गदा रखी हुई है। धर्मपुत्र ने झट से सिहासन

पर चढ़कर गदा उठा ली। गदा उठाते ही दालान तो लोप हो गया, उसे सारा संसार दृष्टिगोचर होने लगा। कहीं समुद्र, कहीं धरती, कहीं जंगल, कहीं बस्ती, कहीं उजाड़, कहीं पुण्यात्मा, कही पापात्मा—सब-के-सब आंखों के सामने आ गए। अब धर्मपुत्र ने विचारा कि चलो, अपने खेत तो देखें कि अनाज कैसा पैदा हुआ है। देखता क्या है कि खेती पकी खड़ी है और दूलो चोर रात को चोरी से फसल काटकर अपने घर ले जाना चाहता है। धर्मपुत्र ने सोचा कि यह तो सारी खेती ही चुरा ले जाएगा, मुझे पिता को जगा देना उचित है। उसने अपने पिता को जगा दिया। पिता ने पड़ोसियों को जगाकर खेत में पहुंचकर दूलो को पकड़ लिया और उसे कारागार में भिजवा दिया।

तब धर्म-पुत्र ने विचारा कि चलो, अपनी धर्ममाता को देखें कि वह क्या करती हैं। धर्ममाता का विवाह एक सौदागर से हो चुका था। इस समय वह सोयी पड़ी थी। उसका पति उसे सोती छोड़कर किसी परस्त्री के पास चल दिया था। धर्मपुत्र ने यह दशा देखकर धर्ममाता को जगा दिया और कहा कि तुम्हारा पति इस समय अमुक स्त्री के पास गया है। धर्ममाता उस स्त्री के घर जाकर अपने पति को निकाल लायी और अपनी सौत को बहुत मारा।

6

इसके बाद धर्मपुत्र ने देखा कि उसकी माता झोंपड़े में सोयी हुई है, एक चोर भीतर घुसकर उसका सन्दूक तोड़ने लगा है। माता जाग उठी, चोर मारने दौड़ा। धर्मपुत्र ने क्रोध से चोर को गदा मारी, चोर तुरन्त मर गया और गदा हाथ से छूट गई।

गदा छूटते ही संसार का दृश्य जाता रहा। फिर वही दालान था और बाहर से धर्मपिता आकर खड़ा था। उसने धर्मपुत्र को सिंहासन से नीचे उतारकर कहा—

'आखिर तुमने मेरी आज्ञा भंग की। देखो, पहला पाप तुमने यह किया कि मोहर तोड़ी, दूसरा पाप यह कि सिंहासन पर बैठकर मेरी गदा हाथ में ली, तीसरा पाप यह कि गदा हाथ में लेकर तुमने जगत् में इतना पाप फैला दिया कि यदि तुम आधा घंटा और बैठे रहते तो आधा संसार नष्ट हो जाता। देखो, मैं स्वयं सिंहासन पर बैठकर तुम्हें दिखाता हूं कि तुमने क्या कर डाला।'

यह कह, उसने सिंहासन पर बैठकर गदा हाथ में ले ली। फिर संसार आंखों के सामने आ गया।

धर्मपिता—देख, तूने अपने पिता की क्या दुर्दशा कर दी है! दूलो चोर कारागार में रहकर सब प्रकार के दुष्कर्म सीख आया है। अब उसका सुधार असम्भव है। वह तेरे पिता के दो बैल चुरा चुका है। इस समय वह खलिहान में आग जलाने को तैयार है। यह सब तेरी ही करतूत है।

धर्मपुत्र अपने पिता का खलिहान जलता दखकर शोकातुर हुआ।

धर्मपिता—देख, अब इधर देख, यह तेरी धर्ममाता का पति है। इसने परस्त्री-गामी होकर अपनी विवाहिता स्त्री को त्याग दिया। इसकी पहली प्रिया वेश्या बन गई है। तेरी धर्ममाता दुःख से पीड़ित होकर मद्यसेवनी हो गई है। देख, अच्छा अब यह अपनी माता को

देख कि वह क्या कर रही है–

माता कह रही थी–क्या अच्छा होता यदि चोर उस रात मुझे मार डालता, मैं इन पापों से बच जाती।

तब धर्मपिता ने धर्मपुत्र को कारागार का दृश्य दिखाया कि दो सिपाही एक डाकू को पकड़े खड़े हैं।

धर्मपिता–देख, इस डाकू ने दस मनुष्यों का वध किया है। उचित यह था कि वह अपने पाप-कर्मों पर आप पश्चाताप करता, परंतु तूने उसे मारकर उसके सारे पाप अपने ऊपर ले लिये। पाप-कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा। यदि तू रीछनी वाला दृश्य स्मरण रखता तो तेरी यह दशा न होती। देख, रीछनी ने पहली बार शहतीर ढकेला तो बच्चे डर गए, फिर ढकेला तो एक बच्चा मर गया, तीसरी बार ढकेला तो आप प्राण खो बैठी। वही तूने किया। अब उपाय यही है कि तीस वर्ष तप करके तू डाकू के पापों के प्रायश्चित कर, नहीं तो उसके बदले तुझे नरक भोगना पड़ेगा।

धर्मपुत्र–डाकू के पापों का प्रायश्चित मैं किस भांति कर सकता हूं?

धर्मपिता–जितना पाप तूने जगत् में फैलाया है, उसको दूर कर देना ही डाकू और अपने पापों का प्रायश्चित कर देना है।

धर्मपुत्र–मैं संसार से पाप कैसे दूर कर सकता हूं?

धर्मपिता–पूर्व दिशा को जाने पर तुझे खेत में कुछ मनुष्य मिलेंगे। निज बुद्धि अनुसार उन्हें शिक्षा देना और रास्ते में जो कुछ देखो, उसे स्मरण रखना। चौथे दिन तुझे एक जंगल मिलेगा। वहां एक कुटिया है। उसमें एक साधु निवास करता है। उसे सारा वृत्तांत सुना देना। वह तुझे प्रायश्चित करने की क्रिया बतला देगा। उसकी आज्ञानुसार तप करने से तेरे पाप दूर हो जायेंगे।

धर्मपुत्र यह बातें सुनकर वहां से चल दिया।

7

राह में धर्मपुत्र यह विचार करता जा रहा था कि बिना अपने ऊपर पाप लिये, संसार से पाप किस प्रकार नष्ट हो सकता है। पापियों को कारागार भेजने या वध करने से ही जगत् से पाप दूर हो सकता है, और कोई उपाय नहीं।

देखता क्या है कि खेत में एक बछड़ा घुसा है। लोग उसे बाहर निकाल रहे हैं, वह निकलता नहीं। एक बुढ़िया बाहर खड़ी पुकार रही है कि मेरे बछड़े को क्यों मारते हो।

धर्मपुत्र ने किसानों से कहा कि तुम क्यों व्यर्थ हल्ला मचाते हो? बाहर आ जाओ। बुढ़िया आप अपने बछड़े को बुला लेगी।

किसान बाहर निकल आए। बुढ़िया ने बछड़े को पुकारा। वह झट दौड़कर बाहर आ गया और बुढ़िया के हाथ चाटने लगा।

धर्मपुत्र इतना तो समझ गया कि पाप पाप से बढ़ता है बढ़ता है। मनुष्य पाप-कर्म द्वारा पाप नष्ट करने का जितना यत्न करते हैं, उतना ही पाप फैलता है, परंतु इसे नष्ट क्यों करूं? देखो, बुढ़िया के पुकारने पर बछड़ा बाहर न निकलता तो क्या होता।

8

अगले दिन धर्मपुत्र एक गांव में पहुंचा और एक किसान के घर में जाकर चारपाई पर बैठ गया। एक स्त्री मैले वस्त्र से पत्थर की चौकी साफ कर रही थी। वह जितना साफ करती थी, चौकी उतनी ही मैली हो जाती थी।

धर्मपुत्र–माई, यह क्या करती हो?

स्त्री–चौकी साफ करती हूं। मैं तो थक गई, यह किसी तरह साफ ही नहीं होती।

धर्मपुत्र–शुद्ध कैसे हो, वस्त्र तो मैला है। पहले वस्त्र धोकर स्वच्छ कर लो, फिर चौकी तुरन्त साफ हो जाएगी।

स्त्री ने वैसा ही किया, चौकी साफ हो गई। अगले दिन धर्मपुत्र एक जंगल में पहुंचा, देखा कि कुछ मनुष्य एक लोहे की छड़ को मोड़ रहे हैं, पर वह नहीं मुड़ती। लोग अपना चक्कर खाए चले जाते हैं।

बात यह थी कि जिस खम्भे के साथ उन्होंने छड़ का सिरा बांध रखा था, वह स्वयं घूमता था। छड़ मुड़े कैसे? छड़ के साथ-साथ खम्भा चक्कर खाता था और उसके साथ-साथ मनुष्य भी चक्कर खाते जाते थे।

धर्मपुत्र–तुम यह क्या करते हो?

लोग–तुम देखते नहीं कि हम क्या करते हैं। हम छड़ मोड़ रहे हैं। हम परिश्रम करते-करते हार गए, परंतु यह छड़ मुड़ती ही नहीं।

धर्मपुत्र–तुम यह क्या करते हो?

धर्मपुत्र–मुड़े कैसे, खम्भा तो घूम जाता है? यदि पहले खम्भे को स्थिर कर लो, तो छड़ तुरंत मुड़ जाएगी।

किसानों ने वैसा ही किया और छड़ मुड़ गई। अगले दिन धर्मपुत्र को कुछ चरवाहे मिले, देखा कि वे शीत-निवारण के लिए आग जला रहे थे। उन्होंने सूखी लकड़ियां एकत्रित करके आग जलायी। अभी आग जली ही थी कि उन्होंने ऊपर से गीली घास डाल दी। आग बुझ गई। चरवाहों ने कई बार ऐसा ही किया, परंतु आग न जली।

धर्मपुत्र–भाई, कुछ धैर्य धारण करो। पहले आग को भली-भांति दहक लेने दो, प्रचंड हो जाने पर जो डालोगे, भस्म हो जाएगा।

चरवाहों ने वैसा ही किया। आग जलने लगी, परंतु धर्मपुत्र ने इन दृश्यों का तात्पर्य कुछ नहीं समझा।

9

चौथे दिन धर्मपुत्र साधु की कुटिया पर पहुंच गया।

साधु–कौन?

धर्मपुत्र–पापी और महान् पापी। मैं अपने और दूसरों के पापों का प्रायश्चित करने आपके पास आया हूं।

साधु–(बाहर् आकर) कौन-से पाप?

धर्मपुत्र ने आदि से लेकर अंत तक सारा वृत्तांत साधु को कह सुनाया और

बोला—प्रभो, मैं यह तो समझ गया कि पाप से पाप दूर नहीं होता, किन्तु बढ़ता ही है; परन्तु आप कृपा कर यह उपदेश कीजिए कि पाप नष्ट किस प्रकार हो सकता है?

साधु—अच्छा, मेरे साथ आओ।

साधु ने जंगल में जाकर धर्मपुत्र को एक कुठार देकर कहा कि इस वृक्ष को काटकर इसके तने के तीन टुकड़े करके उन्हें आग से झुलस दो। धर्मपुत्र ने वैसा ही किया। तब साधु बोला—अच्छा, अब इन्हें यहां धरती में गाड़ दो। सामने पहाड़ी के नीचे एक नदी बहती है, वहां से मुंह में भर-भरकर पानी लाओ और इन तीनों टुकड़ों को सींचते रहो। पहला टुंड स्त्री, दूसरा किसानों और तीसरा चरवाहों वाला है। जब तीनों टुंड हरे हो जायं तो जान लेना कि तेरी तपस्या पूर्ण हो गई।

यह कहकर साधु अपनी कुटिया में चला गया।

10

जब धर्मपुत्र टुंडों को पानी देकर संध्या के समय कुटिया में पहुंचा, तो देखा कि साधु मरा हुआ पड़ा है। उसने साधु का दाह-कर्म किया।

लोगों में यह बात प्रसिद्ध हो गई कि साधु का देहान्त हो गया और उसने धर्मपुत्र को अपना शिष्य बनाकर छोड़ दिया है। साधु की उस प्रांत में बड़ी प्रतिष्ठा थी, इस कारण धर्मपुत्र को अन्न-पानी का घाटा न रहा।

एक वर्ष के पश्चात् दूर-दूर यह चर्चा फैल गई कि धर्मपुत्र नित्य मुंह में पानी भर-भकर लाता है और उससे टुंडों को सींचकर कठिन तपस्या करता है। फिर क्या था, चढ़ावा चढ़ने लगा। संसारी पुरुष स्वार्थ के वश दूर-दूर से उसके पास आने लगे और धर्मपुत्र पुजने लगा। परंतु उसका यह नियम था कि जो कुछ आता, अनाथों को बांट देता, अपने लिए केवल उदर-पूरण योगय अन्न ही रखता और कुछ नहीं।

यद्यपि उसे टुंड सींचते-सींचते कई वर्ष हो गए, परंतु हरा एक भी नहीं हुआ। एक दिन कुटिया के बाहर उसे घोड़े पर सवार कोई मनुष्य जाता दिखाई दिया। धर्मपुत्र ने बाहर जाकर पूछा—तुम कौन हो?

पुरुष—मैं डाकू हूं। मनुष्यों को मारकर, उनका धन चुराकर मौज करता हूं।

धर्मपुत्र—(भय से स्वगत) इसका सुधार असम्भव है और लोग तो मेरे पास आकर अपने पापों पर पश्चाताप करते हैं, किंतु यह तो अपने पापों की प्रशंसा करता है। हाय-हाय, यदि यह डाकू यहां आया-जाया करेगा तो लोग डर के मारे मेरे पास आना छोड़ देंगे फिर मुझे अन्न-पानी भी न मिलेगा। (प्रकट) तेरी वार्ता सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। लोग तो मेरे पास आकर अपने पाप-कर्मों का स्मरण करके पश्चात् करते हैं, किन्तु तू उन पर घमंड करता है। स्वभावतः तुझे परमेश्वर का भय नहीं है। देख, यहां तेरे आने से लोग भय खाकर मेरे पास आना छोड़ देंगे। इस कारण तू यहां से चला जा और फिर यहां न आना।

डाकू—मैं परमात्मा से नहीं डरता। रही चोरी, सो इसमें पाप ही क्या है? तू तपस्या से पेट भरता है, मैं चोरी से। पेट पालन सबको ही करना पड़ता है। ये बातें तू उन्हीं मूर्खों को सिखलाना, मुझे क्या सिखलाता है। मैं तो परमात्मा के नाम पर कल और दो मनुष्यों

का वध कर डालूंगा। बस कि और कुछ भी? मैं तेरे रुधिर से अपने हाथ रंगना नहीं चाहता। देख फिर मेरे मुंह न लगना।

यह कहकर डाकू वहां से चल दिया।

11

धर्मपुत्र को वहां रहते-रहते आठ वर्ष व्यतीत हो गए। डाकू से भय से लोगों ने कुटिया पर आना छोड़ दिया। धर्मपुत्र को इसका बड़ा खेद हुआ। एक समय उसने चित्त में सोचा—

डाकू सत्य कहता था, मैंने तो निस्संदेह तपस्या को जीविका बना रखा है। साधु ने तो तप करने को कहा था, किंतु मैंने अच्छा तप किया कि महंत बनकर अपने को पुजवाने लगा। जब लोग यहां आकर स्तुति करते हैं तो प्रसन्न होता हूं, जब नहीं आते तो दुःख मानता हूं। क्या इसी का नाम तपस्या है? मान और प्रतिष्ठा के लोभ में हूं। पाप नष्ट तो क्या करता, उल्टा और संचय कर लिये। बस, अब उत्तम यही है कि विरक्त होकर एकांत में बैठकर पहले अंतःकरण शुद्ध करूं, तब कुछ बनेगा अन्यथा नहीं।

यह निश्चय करके वह कुटिया छोड़कर जंगल को चल दिया। मार्ग में उसकी फिर डाकू से भेंट हुई।

डाकू—क्यों, आज कहां चले?

धर्मपुत्र—एकांत सेवन करने, क्योंकि अब मैं ऐसे स्थान पर निवास करना चाहता हूं, जहां कोई न आए।

डाकू—तो पेट कहां से भरोगे?

धर्मपुत्र—जैसी ईश्वरेच्छा, देखा जाएगा।

डाकू तो चल दिया। धर्मपुत्र सोचने लगा, मैंने उसे उपदेश क्यों न किया? आज तो उसका मुख शांत था। संभवतः कुछ सुनकर वह सन्मार्ग पर चलने का उद्योग करता।

धर्मपुत्र—(डाकू को पुकारकर) ओ भाई डाकू, सुनो, परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। अब भी मान जाओ, यह दुष्ट कर्म त्याग दो।

डाकू यह सुनकर छुरा निकालकर धर्मपुत्र को मारने दौड़ा। धर्मपुत्र डरकर झट से जंगल में भाग गया।

डाकू—जा! चला जा! छोड़ देता हूं। यदि फिर कभी मेरे सामने आया तो मार ही डालूंगा।

संध्या समय धर्मपुत्र जब टुंड सींचने गया तो उसने देखा कि स्त्री वाला टुंड हरा हो गया।

12

अब धर्मपुत्र विरक्त होकर एकांत-सेवन करने लगा। एक दिन जब वह क्षुधावश होकर कंद-मूल-फल खाने गुफा से बाहर निकला, तो देखता क्या है कि सामने के वृक्ष पर साफे में बंधी रोटी लटक रही है। रोटी लेकर वह गुफा में लौट आया।

जब कभी भूख सताती और वह गुफा से बाहर आता, तब उसे वृक्ष से रोटी मिल जाती। वह सुखपूर्वक काल व्यतीत करने लगा। उसे केवल यह भय बना रहता कि ऐसा न हो कि तपस्या पूर्ण होने से पहले ही डाकू मुझे मार डाले। यदि कभी डाकू की आहट पाता, तो वह गुफा में छिप जाता। दस वर्ष बीत जाने पर वह एक दिन जब टुंडों को पानी दे रहा था, तो उसके चित्त में यह विचार उत्पन्न हुआ; मैं मृत्यु से डरता हूं, यह भी पाप है। कौन जाने कि मैं प्राणांत होने से ही पापों से निवृत्त हो जाऊं। हानि-लाभ सब परमात्मा के हाथ है, मनुष्य किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

इस विवेक के उत्पन्न होते ही वह अभय होकर डाकू की खोज में चला। थोड़ी दूर जाने पर उसे सामने से डाकू आता दिखाई पड़ा। देखता क्या है कि डाकू ने हाथ-पैर बांधे एक मनुष्य को घोड़े पर अपने पीछे बिठा रखा है।

धर्मपुत्र—भाई डाकू, यह कौन है? इसे कहां लिये जाते हो?

डाकू—यह एक धनाढ्य सौदागर का पुत्र है, अपने पिता के धन का पता नहीं बतलाता। मैं इसे जंगल में ले जाकर किसी वृक्ष से बाधंकर इतने चाबुक मारूंगा कि यह आप ही बतला देगा।

धर्मपुत्र—नहीं-नहीं, ऐसा मत करो, इसे छोड़ दो।

डाकू—क्यों, क्या तुम्हारा जी भी मार खाने को चाहता है? हटो, अपना रास्ता लो, नहीं तो अभी मार डालूंगा।

धर्मपुत्र—(निडर होकर) मैं अभय हूं, मरने से नहीं डरता। बस, परमात्मा की यही आज्ञा है कि इस मनुष्य को छोड़ दो।

डाकू—अच्छा, छोड़ देता हूं। देखो, मैंने कितनी बार तुमसे कहा है कि तुम मेरे सामने न आया करो, परन्तु तुम नहीं मानते।

धर्मपुत्र—भाई, अब भी लूटमार छोड़ दो।

डाकू ने कुछ न सुना। वह घोड़ा दौड़ाकर वहां से चल दिया। मनुष्य प्रसन्न होकर धर्मपुत्र का धन्यवाद करता हुआ अपने घर लौट गया।

संध्या समय धर्मपुत्र ने जाकर देखा कि किसानों वाला टुंड हरा हो गया है।

13

दस वर्ष बीत गए। धर्मपुत्र शांत-स्वरूप, राग-द्वेष से रहित, अभय पद को प्राप्त होकर आनंद में मग्न बैठा एक दिन यह विचार करने लगा।

अहा, परमात्मा कैसा कृपालु और दयालु है! उसने मनुष्यों के लिए क्या-क्या अद्‌भुत पदार्थ उपस्थित किए हैं! तिस पर भी मनुष्य दुःख से क्लेशित क्यों है? मेरी समझ में नहीं आता कि मनुष्य सुख से जीवन क्यों व्यतीत नहीं करते? मेरे ध्यान में तो केवल अज्ञान ही इसका मूल कारण है। यदि प्रेम-भाव से प्राणियों को सदुपदेश दिया जाए तो उन्हें सुख मिल सकता है। एकांत में रहना पाप है। मेरा धर्म है कि इस तप से जो कुछ मुझे प्राप्त हुआ है, दूसरों पर उसको प्रकट करूं।

उस समय उसका चित्त दया से परिपूर्ण हो गया। इतने में उसे डाकू दिखाई पड़ा।

पहले तो उसने विचारा कि डाकू को उपदेश करना व्यर्थ है, इतनी बार समझा चुका हूं। परन्तु उसने सोचा कि क्या हुआ, मेरा तो धर्म ही यह है कि प्राणि-मात्र में प्रेम और दया-भाव उत्पन्न करूं।

धर्मपुत्र ने देखा कि डाकू नेत्र नीचे किए मलिन मन उसकी ओर आ रहा है। वह दौड़कर डाकू के चरणों में गिर पड़ा और बोला—भाई, ऐ भाई प्यारे, अपने स्वरूप को विचारो। देखो, तुम्हारे भीतर सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप, शुद्ध, नित्य, मुक्त परमात्मा विराजमान हैं। अज्ञान के कारण क्यों दूसरों को कष्ट देते और आप कष्ट भोगते हो? क्यों जन्म-जन्मान्तर के लिए पाप का बोझा इकट्ठा करते हो? भाई, मेरा कहना मानो, अपना सर्वनाश मत करो। मान जाओ, भाई, मान जाओ!

डाकू—(क्रोध से) बस-बस! इस बकवास को छोड़ो। जाओ, अपना काम करो।

परंतु अब धर्मपुत्र वहां से टलने वाला न था। वह डाकू को आलिंगन करके रोने लगा। डाकू का चित्त उसकी यह दशा देखकर तुरंत द्रवित हो गया। वह झट धर्मपुत्र के चरणों में गिर पड़ा और बोला—धर्मपुत्र, आज तुमने मुझे पराजित किया। बीस वर्ष तक मैं तुम्हारा सामना करता रहा। मैंने तुम्हारी एक न सुनी। परन्तु आज बेबस हूं। देखो, पहली बार जब तुमने मुझे उपदेश किया था, मैंने बड़ा क्रोध किया था। फिर जब तुम गुफा में निवास करने लगे, तो मैं समझ गया कि तुम पूर्ण वैरागी हो गए। उसी दिन से मैं तुम्हारे भोजनार्थ वृक्ष में रोटी लटकाने लगा।

तब धर्मपुत्र ने समझा कि स्त्री चौकी तभीं शुद्ध कर सकी जब उसने पहले वस्त्र शुद्ध कर लिया, अर्थात् अपना अंतःकरण शुद्ध किए बिना दूसरों का अंतःकरण शुद्ध करना असंभव है।

डाकू—जब तुम मृत्यु से अभय हो गए तो मेरा चित्त फिर गया।

धर्मपुत्र जान गया कि जिस प्रकार खंभे को स्थिर किए बिना छड़ नहीं मुड़ सकती थी, उसी प्रकार अपना चित्त स्थिर किए बिना दूसरों के चित्त को अपनी ओर मोड़ना कठिन है।

डाकू—परन्तु देखो, जब तक तुम दयामय नहीं बने, मेरा चित्त भी द्रवित नहीं हुआ। परन्तु तुम्हारा प्रेम-रूप बनना था कि मैं तुम्हारे अधीन हो गया।

धर्मपुत्र परमानंद को प्राप्त होकर डाकू-सहित टुंडों के पास गया। देखा कि चरवाहों वाला टुंड भी हरा हो गया है। तब धर्मपुत्र को निश्चय हो गया कि जिस प्रकार मध्यम अग्नि गीली घास को नहीं जला सकती थी, उसी प्रकार जब तक पुरुष का अपना चित्त प्रकाशस्वरूप नहीं हो जाता, तब तक वह दूसरे को प्रकाशित नहीं कर सकता।

तीनों टुंडों के हरा-भरा हो जाने पर धर्मपुत्र के आनन्द की कोई सीमा न रही। उसे विश्वास हो गया कि मेरी तपस्या पूर्ण हुई। उसने डाकू को दीक्षित करके तुरन्त समाधि ले ली। अब डाकू बड़े उत्साह से अपने गुरु के आज्ञानुसार जगत् में भक्ति-मार्ग का उपदेश करके जीवन व्यतीत करने लगा।

दयामय की दया

किसी समय एक मनुष्य ऐसा पापी था कि अपने 70 वर्ष के जीवन में उसने एक भी अच्छा काम नहीं किया था। नित्य पाप करता था, लेकिन मरते समय उसके मन में ग्लानि हुई और वह रो-रोकर कहने लगा—हे भगवान् मुझ पापी का बेड़ा कैसे पार होगा? आप भक्तवत्सल, कृपा और दया के समुद्र हो, क्या मुझ जैसे पापी को क्षमा न करोगे?

इस पश्चाताप का यह फल हुआ कि वह नरक में न गया, स्वर्ग के द्वार पर पहुंचा दिया गया। उसने कुंडी खड़कायी।

भीतर से आवाज आयी—स्वर्ग के द्वार पर कौन खड़ा है? चित्रगुप्त, इसने क्या-क्या कर्म किए हैं?

चित्रगुप्त—महाराज, यह बड़ा पापी है। जन्म से लेकर मरण-पर्यन्त इसने एक भी शुभ कर्म नहीं किया।

भीतर से—जाओ, पापियों को स्वर्ग में आने की आज्ञा नहीं हो सकती।

मनुष्य—महाशय, आप कौन हैं?

भीतर से—योगेश्वर।

मनुष्य—योगेश्वर, मुझ पर दया कीजिए और जीव की अज्ञानता पर विचार कीजिए। आप ही अपने मन में सोचिए कि किस कठिनाई से आपने मोक्ष पद प्राप्त किया है। माया-मोह से रहित होकर मन को शुद्ध करना क्या कुछ खेल है? निस्संदेह मैं पापी हूं, परन्तु परमात्मा दयालु हैं, मुझे क्षमा करेंगे।

भीतर की आवाज बन्द हो गई। मनुष्य ने फिर कुंडी खटखटायी।

भीतर से फिर आवाज आयी—कौन है? मृत्युलोक में इसने क्या काम किए हैं?

चित्रगुप्त—स्वामी, इसने जीवन-पर्यन्त एक काम भी अच्छा नहीं किया।

भीतर से—जाओ, तुम्हारे सरीखे पापियों के लिए स्वर्ग नहीं बना है।

मनुष्य—महाराज, आप कौन हैं?

भीतर से—बुद्ध।

मनुष्य—महाराज, केवल दया के कारण आप अवतार कहलाए। राज-पाट, धन-दौलत, सब पर लात मारकर प्रणि-मात्र का दुःख-निवारण करने के हेतु आपने वैराग्य धारण किया। आपके प्रेममय उपदेश ने संसार को दयामय बना दिया। मैंने माना कि मैं पापी हूं, परन्तु अंत समय प्रेम का उत्पन्न होना निष्फल नहीं हो सकता।

बुद्ध महाराज मौन हो गए।

पापी ने फिर द्वार हिलाया।

भीतर से—कौन है?

चित्रगुप्त—स्वामी, यह बड़ा दुष्ट है।

भीतर से—जाओ, भीतर आने की आज्ञा नहीं।

पापी—महाराज, आपका नाम?

भीतर से—कृष्ण।

पापी (अति प्रसन्नता से)—अहा हा! अब मेरे भीतर चले जाने में कोई संदेह नहीं।

आप स्वयं प्रेम की मूर्ति हैं, प्रेमवश होकर आप क्या नाच नाचे हैं, अपनी कीर्ति को विचारिए, आप तो सदैव प्रेम के वशीभूत रहते हैं। आप ही का उपदेश तो है–**'हरि को भजे सो हरि का होई।'** अब मुझे कोई चिन्ता नहीं।

स्वर्ग का द्वार खुल गया और पापी भीतर चला गया।

सूरत का चायखाना

बम्बई सूबे के सूरत नगर में चाय की एक दुकान थी, जहां देश-देशान्तर के निवासी चाय पीने आया करते थे। एक दिन वहां फारस देश का एक विद्वान् मुल्ला चाय पीने आया। उसने सारा जीवन परमेश्वर का सच्चा स्वरूप जानने और इसी विषय में पुस्तकें लिखने और पढ़ने में व्यतीत किया था। फल यह हुआ कि वह नास्तिक हो गया था। फारस के बादशाह ने इसे बहुत बुरा माना और उसे अपने राज्य से निकाल दिया।

जन्म-भर आदिकारण की खोज करते-करते यह अभागा मुल्ला अन्त में बुद्धिहीन होकर यह मानने पर उतर आया कि इस संसार का कोई कर्त्ता ही नहीं।

इस मुल्ला के साथ एक हब्शी गुलाम था। मुल्ला तो दुकान में चला गया, हब्शी बाहर बैठकर धूप खाने लगा। मुल्ला ने अफीम फांककर चाय की प्याली पी और गुलाम से बातचीत करने लगा।

मुल्ला–अबे ओ नालायक, भला बता, खुदा है कि नहीं?

हब्शी–खुदा के न होने में भी शक हो सकता है? कभी नहीं, खुदा है। (काठ की मूर्ति दिखाकर) देखिए, यह मेरा खुदा है। यह हमेशा मेरी हिफाजत करता है। हमारे मुल्क में इस लकड़ी को पाक माना जाता है।

उस समय दुकान में और भी लोग उपस्थित थे। स्वामी-सेवक में यह बातें देखकर एक ब्राह्मण देवता बोले–हब्शी, तू अत्यन्त मूर्ख है। परमात्मा कहीं जेब में समा सकता है? वह तो संसार का कर्त्ता-धर्ता और हर्ता है। उस सर्वशक्तिमान परब्रह्म के मन्दिर श्रीगंगाजी के तट पर बने हुए हैं, वहां के पुजारी ही उस परमात्मा का वास्तविक स्वरूप जानते हैं, दूसरा कोई नहीं जानता। सहस्त्रों वर्षों के उलट-फेर से उन पुजारियों के सम्मान अथवा अधिकार और प्रतिष्ठा में कोई न्यूनता नहीं हुई, जिससे सिद्ध होता है कि भगवान् स्वयं उनकी रक्षा करते रहते हैं।

यहूदी–हरगिज नहीं, सच्चे खुदा का घर हिन्दुस्तान में नहीं, न वह ब्राह्मणों की हिफाजत करता है। ब्राह्मणों का खुदा सच्चा नहीं हो सकता। सच्चा खुदा तो इब्राहीम, इसहाक और याकूब का है। यह सिवा बनी इसराइल के और किसी कौम की हिफाजत नहीं करता। हमेशा से हमारी कौम खुदा को प्यारी है। आजकल जो हम गिरे हुए दिखाई देते हैं, यह दरअसल हमारा इम्तहान हो रहा है, क्योंकि खुदा हमें कौल दे चुका है कि वह एक दिन हम सबको येरूशलम में जमा कर देगा। उस वक्त वहां के पुराने मन्दिर की शान दुगुनी होकर कुल दुनिया पर हमारी बादशाहत कायम हो जायेगी।

यह कहकर यहूदी की आंखों में पानी भर आया।

इस पर एक पादरी साहब बोले—झूठ! सरासर झूठ! तुम तो परमात्मा को अन्यायी ठहराते हो। वह सबसे प्रेम करता है, केवल तुमसे ही नहीं। माना कि प्राचीन समय में उसने तुम्हारी सहायता की थी; परन्तु इधर उन्नीस सौ वर्ष हुए कि वह तुमसे अप्रसन्न है। इस कारण आज कोई भी मनुष्य तुम्हारा मत अंगीकार नहीं करता। परमात्मा ने अपने बेटे यीशू को मनुष्य का पाप हरने के लिए भेजा और जब तक कोई यीशू की शरण में न जाए, उसकी मुक्ति नहीं हो सकती।

यह सुनकर एक मुसलमान तुर्क बोल उठा—आप दोनों का यकीन गलत है। बारह सौ वर्ष हुए कि हजरत मुहम्मद साहब ने सच्चा दीन फैलाकर आपके मजहब को रद्द कर दिया। क्या आप नहीं देखते कि यूरोप, एशिया और चीन में दीने इस्लाम की रोशनी किस तेजी से फैल रही है? आप लोग खुद मानते हैं कि खुदा यहूदियों से खफा है, फिर इस्लाम कबूल क्यों नहीं करते? शिया काफिर हैं, सुन्नत जमाअत बना और असली रब को पाओ।

ईरानी मुल्ला शिया था। शियों पर यह कटाक्ष सुनकर बिगड़ा और कुछ जवाब देना चाहता था; परन्तु हब्शियों, ईसाइयों, तिब्बत-निवासी लामाओं और फारस आदि देश-देशान्तर के रहने वालों में मत-मतांतर विषयक ऐसा कोलाहल मचा कि वह कुछ न बोले सका। प्रत्येक मनुष्य यही कहता था कि मेरे ही देश में सच्चा परमेश्वर है और मैं ही यथार्थ रीति से उसकी पूजा करता हूं। एक चीनी अलग चुपचाप बैठा चाय पी रहा था। तुर्क ने उससे कहा—

भाई साहब, आप चुप क्यों बैठे हैं? मेरी मदद क्यों नहीं करते? मेरे पास आने वाले चीनी सौदागर सब यही कहते हैं कि आप लोग इस्लाम को सब मजहबों से अच्छा ख्याल करते हैं। आप इस मौके पर जरूर अपनी राय दें।

चीनी—महाशयो, मेरे विचार में इन झगड़ों और लड़ाइयों का मुख्य कारण अज्ञान है। सुनिए, मैं आपको एक दृष्टांत सुनाता हूं:

जिस जहाज में मैं चीन से यहां आया हूं, वह सारी पृथ्वी का चक्कर लगा चुका है। आते समय हम पानी लेने के लिए एक दिन सुमात्रा टापू के पूर्वी तट पर ठहरे। तट पर नारियल के वृक्ष खड़े थे, सब-के-सब जहाज से उतर, तट पर जाकर, वृक्षों की छाया में बैठ गए।

इतने में वहां एक अंधा आया। बातचीत करने पर मालूम हुआ कि वह सूर्य के प्रकाश का तत्त्व जानने के निमित्त लगातार सूर्य पर दृष्टि रखने से अंधा हो गया है। हमारे पास आकर वह कहने लगा—देखो, सूर्य का प्रकाश पानी नहीं, क्योंकि हम उसे पानी के समान एक बर्तन से दूसरे बर्तन में नहीं ढाल सकते और वायु उसे हिला भी नहीं सकती। यह अग्नि भी नहीं, यदि अग्नि होती तो पानी से बुझ जाती। वह आत्मा भी नहीं, क्योंकि आंखों से दिखाई देता है प्रकृति भी नहीं, क्योंकि वह नित्य है। बस, सिद्ध हुआ कि सूर्य का प्रकाश जल न है, न अग्नि, न आत्मा है न प्रकृति। तो है क्या, कुछ भी नहीं!

इस अंधे के साथ गोपाल नामक एक नौकर था। अंधा तो हमसे बातें करता रहा, गोपाल ने नारियल की जटा और दूध से एक मोमबत्ती तैयार कर ली। अंधा गोपाल से बोला—गोपाल, देखो कैसा अंधेरा है! मैंने तुमसे ठीक कहा था कि सूर्य नहीं है, फिर भी सब लोग कहा करते हैं कि सूर्य है, परंतु मैं उनसे पूछता हूं कि वह क्या है?

गोपाल—सूर्य क्या है, यह जानने से मुझे कुछ प्रयोजन नहीं। हां, प्रकाश को मैं भलीभांति जानता हूं। देखिए, मैंने यह मोमबत्ती बना ली है। यही मेरा सूर्य है। रात को इसी की सहायता से मैं सब काम कर सकता हूं।

पास ही सुमात्रा टापू का रहने वाला एक लंगड़ा बैठा था। हंसकर बोला—मालूम हुआ कि जन्म ही से अंधे हो, जभी कहते हो सूर्य नहीं है। सुनो, अग्नि का एक गोला है, प्रातःकाल नित्य समुद्र से निकलता है और सन्ध्या समय हमारे टापू के पर्वतों में छिप जाता है। मुझे दुःख है कि तुमको नेत्र नहीं, नहीं तो स्वयं देख लेते।

एक धीवर बैठा यह बातें सुन रहा था। बोला—वाह जी, वाह! क्या कहना है, तुम कभी टापू के बाहर नहीं गये। यदि नौका पर बैठकर दूर समुद्र में जाते, तो पता लग जाता कि सूर्य टापू के पर्वतों में लोप नहीं होता, किन्तु समुद्र से ही निकलता और सायंकाल को समुद्र में ही डूब जाता है। यह सब कुछ मैंने अपने नेत्रों से देखा है।

इस पर हमारे साथ एक हिन्दुस्तानी ने कहना आरंभ किया—मुझे आपकी मूर्खता देखकर बड़ा अचरज होता है। सूर्य यदि अग्नि का गोला होता, तो समुद्र में डूबकर बुझ न जाता? भाई साहब, यह बात नहीं वह तो साक्षात् देवता है। रथ में सवार सुमेरु पर्वत के गिर्द घूमता है। कभी-कभी राहु और केतु उसे पकड़ लेते हैं। परन्तु ब्राह्मण लोग ईश्वर से विनती करके उसे छुड़ा लेते हैं। तुम यह समझते हो कि सूर्यदेव केवल तुम्हारे टापू में प्रकाश करते हैं, और जगह नहीं। तुम्हारा यह विचार मिथ्या है।

एक जहाज का कप्तान भी वहां मौजूद था। बोला—देवता की एक ही कही। सूर्य देवता नहीं, वह केवल हिन्दुस्तान में ही प्रकाश नहीं करता। मैंने देश-देशान्तर की यात्रा की है। सूर्य तो सारी पृथ्वी पर प्रकाश करता है। बात यह है कि वह जापान देश से निकलता है और इगलिस्तान के पीछे छिप जाता है, इसी कारण जापानी अपने देश को निपन अर्थात् सूर्य की जन्म-भूमि कहते हैं।

एक अंगरेज भी वहां बैठा था। बोला—तुम सब मूर्ख हो। सूर्य की चाल का निर्णय हमने किया है। वह न कहीं से निकलता है, न छिपता है, सदैव पृथ्वी के गिर्द घूमता रहता है। यदि ऐसा न होता तो अभी हम पृथ्वी का चक्कर काटकर आये हैं, कहीं न कहीं हम अवश्य सूर्य से टकराते।

कप्तान—तुम सब मूर्ख हो। सूर्य पृथ्वी के गिर्द नहीं घूमता, वरन् पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूमती है। वह अपनी धुरी पर फिरती हुई चौबीस घंटे में एक चक्कर पूरा करती है। जो भाग घूमते समय सूर्य के सम्मुख होता है, वहां दिन होता है, बाकी सब देशों में रात होती है। सूर्य किसी विशेष पर्वत, द्वीप, समुद्र अथवा देश में प्रकाश नहीं करता, वरन् उसका प्रकाश सभी ग्रह-उपग्रहों को समान परिमाण में मिलता है। विचार करके देखें तो आपको मेरा कहना बिल्कुल ठीक जंचेगा। तब आपको विश्वास हो जाएगा कि सूर्य, तारे सबके लिए समान उपकारी हैं।

बुद्धिमान कप्तान ने इस प्रकार अपने अनुभव और दृष्टान्त से सबको समझा दिया।

चीनी फिर कहने लगा—भिन्न-भिन्न मतवाले कहते हैं कि हम भगवान् को मानते हैं, दूसरा कोई नहीं मानता, और जिस परब्रह्म ने सारे जगत् को रचा है, उसे अपने-अपने मंदिरों में बन्द करने की चेष्टा करते हैं।

परमात्मा ने मनुष्य को समता दिखलाने के लिए अपना मन्दिर आप बना दिया है, जो अद्वितीय है।

वह मन्दिर यही विराट संसार है। सारे मानुषी मन्दिर इस मन्दिर की प्रतिच्छाया हैं साधारण मन्दिरों में तो शंख, घंटा, दीपक, चित्र, मूर्तियां, धार्मिक-पुस्तकें, हवन-कुंड और पुजारी आदि पाये जाते हैं। पर क्या कोई ऐसा मन्दिर है, जहां समुन्द्र के समान कुंड, सूर्य, चन्द्र और उपग्रहों के समान प्रकाशमान दीपक और नभमंडल की तरह मनोहारी चित्र हों? क्या इस अर्घ्य सामग्रियों की, संसार की इन नश्वर वस्तुओं से तुलना की जा सकती है? ईश्वर की कृपा और दया की व्याख्या करने के लिए सांसारिक सुख-सामग्री की अपेक्षा और कौन-सी धर्म-पुस्तक अधिक उपयोगी हो सकती है? पुरुष की निज आत्मा से अधिक धर्म-शास्त्र कौन-सा है? परोपकार के समान कौन-सा बलिदान है और योगी के चित्त के तुल्य और कौन हवनकुंड है, जहां स्वयं भगवान् निवास करते हैं?

पुरुष की निज बुद्धि के अनुसार परमात्मा का ज्ञान होता है। ज्यों-ज्यों प्राणी परमदेव की कृपा और प्रभु की अपने चित्त में स्थापना करके उसे अनुभव करता है, त्यों-त्यों वह परमात्मा के समीप हो जाता है।

इस कारण ज्ञानी को अज्ञानी से ग्लानि करना अधर्म है, योगी और महात्मा वही है, जो नास्तिक से भी द्वेष नहीं करता।

चीनी की वार्ता सुनकर सब चुप हो गए।

महंगा सौदा

भारतवर्ष में मैनपुरी एक बहुत छोटी-सी रियासत है। उसमें केवल सात हजार मनुष्यों की बस्ती है; परन्तु क्या हुआ, महल, मंत्री, जनरल, करनल सब हैं। सेना में साठ सिपाही हैं, परन्तु नाम तो सेना है, साठ हों चाहे साठ हजार। सब व्यावहारिक पदार्थों पर कर लगा हुआ है। परन्तु मनुष्य ही इतने थोड़े हैं कि कर की आमदनी से राजा तक का पेट नहीं भरता, मंत्री आदि का तो कहना ही क्या है। इस कारण राजा ने आमदनी का एक और उपाय कर रखा है, अर्थात् जुआघर बनाकर उसे ठेके पर दे रखा है। जुआ खेलने वाले हारें अथवा जीतें, राजा अपना टकीना ले लेता है। यहां विशेष आमदनी इस कारण होती है कि और राजाओं ने अपने देशों में जुआ बन्द कर रखा है, क्योंकि मनुष्य जुआ हारकर प्रायः आत्मघात कर लिया करते थे। मैनपुरी का राजा स्वतन्त्र है, इसलिए उसे जुआ खेलाने से कौन रोक सकता है?

इस जुआघर में देश-देशान्तर के लोग जुआ खेलने आते हैं। यद्यपि राजा इस कमाई को पाप समझता है, परन्तु करे क्या? सत्य व्यवहार से तो धन नहीं मिलता। बिना धन के काम नहीं चलता। इस कारण उसे जुआ खेलाना ही पड़ता है।

बड़ी राजधानियों की भांति यहां किसी बात की कमी नहीं। दरबार होते हैं, सेना कवायद-परेड करती है। चीफ कोर्ट, वकील, कानून आदि सब कुछ विद्यमान हैं। यहां की प्रजा बड़ी सुशील है। परन्तु दैवयोग से यहां किसी मनुष्य ने एक पुरुष को मार डाला। अब

बड़े ठाट-बाट से चीफ कोर्ट के जज एकत्र हुए। वकील, बैरिस्टर आदि सबके सामने उन्होंने यह फैसला दिया कि घातक का सिर काट दिया जाए।

मुश्किल यह पड़ी कि इस राजधानी में गला काटने की कल विद्यमान न थी। राजा ने मंत्रियों की सम्मति से काश्मीर के राजा को पत्र लिखा कि कृपा करके गला काटने की कल भेज दीजिए। उस राजा ने दस हजार रुपये मांगे। तब तो राजा जी चकराए कि दस हजार का तो आदमी भी नहीं, कल के दाम इतने! फिर दक्खिन के महाराज को लिखा। उसने आठ हजार मोल किया। राजा ने विचारा कि यदि गला काटने की कल मोल ली गई तो सारी राजधानी ही बिक जाएगी, यह ठीक नहीं। क्या करें? मंत्रियों ने कहा—महाराज, सेनापति से कहिए कि वह किसी सिपाही को हुक्म दे दें कि वह खूनी का गला काट दे, क्योंकि युद्ध में भी तो वे यही काम करते हैं। परंतु किसी सिपाही ने गला काटना अंगीकार नहीं किया।

राजा ने इस विषय में मंत्रियों से सलाह की और उस सभा ने एक उपसभा बनाई। अंत में बड़े झगड़े के बाद यह निश्चय हुआ कि खूनी को उम्र भर के लिए कैद कर दिया जाए।

राजा ने यह बात मान ली। अब बंदीखाना कहां से लाएं? एक साधारण कोठरी थी, वहीं खूनी को कैद करके उस पर पहरा लगा दिया और हुक्म दिया कि पहरे वाला दो कैदी के वास्ते राजा के लंगर में से नित्य रोटी ला दिया करे।

एक वर्ष पूरा हो जाने पर राजा जब राजधानी का हिसाब देखने लगा तो उसने पांच सौ रुपया खूनी के भोजन-छाजन, पहरे आदि का खर्च लिखा हुआ देखा। सोचने लगा—हैं, यह क्या, पांच सौ रुपये! यह खूनी अभी तो जवान है, मरने के समय तक तो हमारी राजधानी चट कर जाएगा।

मंत्रियों को बुलाकर कहने लगा कि शीघ्र इस खूनी का कोई ठिकाना करो।

मंत्री आपस में विचार करने लगे।

पहला—पहरा हटा दो।

दूसरा—खूनी यदि भाग गया?

पहला—भाग गया तो पाप कटा।

अतएव पहरा हटा दिया गया। मगर खूनी भागा नहीं। आप नित्य जाकर राजा के लंगर से रोटी ले आता, रात को कोठरी बंद करके आनंद सहित सोता और भागने का नाम तक न लेता था।

मंत्री बड़े चकित हुए कि अब क्या करें, इसके यहां पड़े रहने से हमारे राजा की हानि-ही-हानि है, लाभ कुछ भी नहीं। एक मंत्री ने खूनी को बुलाया और बातचीत करने लगा।

मंत्री—भाई, तुम भागते क्यों नहीं? तुम जहां चाहो जा सकते हो, महाराज इसका बुरा न मानेंगे।

खूनी—महाराज बुरा मानें अथवा भला, मैं जाऊं कहां और करूं क्या? आपने तो मेरा सर्वनाश कर दिया, काम करने का अभ्यास मुझे नहीं रहा। इससे तो यह अच्छा था कि आप उसी समय मेरा गला काट डालते। हाय-हाय, यह कैसा अन्याय है, पहले मनुष्य को कैद

करके निकम्मा बना देना और फिर कहना कि भाग जाओ। मैं नहीं जाता। मैं तो अब यहीं प्राण दूंगा।

लीजिए, अब फिर कमीशन बैठा। कई दिन के अधिवेशन के उपरांत यह निश्चय हुआ कि सौ रुपये साल पेंशन देकर उसे यहां से विदा कर दिया जाए।

अंधे को चाहिए दो आंखें। खूनी पेंशन पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ। मैनपुरी छोड़कर दूसरी राजधानी में धरती मोल लेकर खेती करने लगा। अब वह आए वर्ष मैनपुरी जाकर सौ रुपये ले आता है और आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

बस, उसमें यही बात अच्छी हुई कि उसने किसी ऐसे देश में अपराध नहीं किया, जहां कैदी का गला काटने अथवा बंदीखाने में रखने के लिए खर्च की कुछ भी चिंता नहीं की जाती।

राजा दृगपाल और चन्द्रदेव

विजयनगर के राजा दृगपाल ने राजा चन्द्रदेव के साथ युद्ध करके उसकी सेना के सहस्रों योद्धा मार डाले, गांव जला दिये और स्वयं चन्द्रदेव को पकड़कर पिंजरे में कैद कर दिया।

रात को चारपाई पर पड़ा हुआ दृगपाल यह विचार कर रहा था कि चन्द्रदेव का किस प्रकार वध करूं कि अकस्मात् एक बूढ़ा दिखाई पड़ा।

बूढ़ा—तुम चन्द्रदेव के वध करने का विचार कर रहे हो?

दृगपाल—हां, बात तो यही है, परंतु अभी तक मैंने कुछ निश्चय नहीं किया।

बूढ़ा—परंतु तुम तो स्वयं चन्द्रदेव हो।

दृगपाल—झूंठ, मैं चन्द्रदेव!

बूढ़ा—तुम और चन्द्रदेव एक हो। चन्द्रदेव को जो तुम अपने से भिन्न मानते हो, यह केवल तुम्हारी भूल है।

दृगपाल—आप कहते क्या हैं! मैं यहां कोमल बिछौने पर पड़ा हूं। दास-दासी मेरी सेवा में लगे हैं। आज की भांति कल मैं अपने मित्रों के संग प्रीति-भोजन करूंगा। चन्द्रदेव पक्षी की तरह पिंजरे में बंद है। कल वह कुत्तों से फड़वा दिया जाएगा।

बूढ़ा—उसकी आत्मा का तो नाश नहीं कर सकते।

दृगपाल—वाह-वाह, चौदह हजार योद्धा मारकर ढेर कैसे लगा दिया? मैं जीता हूं, वे मर गए, क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि मैं आत्मा को नष्ट कर सकता हूं?

बूढ़ा—यह आप किस तरह जानते हैं कि वे मर गए?

दृगपाल—इसलिए कि वे दिखाई नहीं देते। इस पर एक बात यह है कि उन्हें कष्ट हुआ और मुझे राज्य मिला।

बूढ़ा—यह भी आपको भ्रम हुआ है। आपने उन्हें कष्ट नहीं दिया वरन् अपने आपको कष्ट दिया है।

दृगपाल—मैं आपकी बात नहीं समझा !

बूढ़ा—आपको समझने की इच्छा है ?

दृगपाल—हां, समझने की इच्छा है।

बूढ़ा—अच्छा, तो आओ, उस तालाब पर चलें।

तालाब पर पहुंचकर बूढ़े ने कहा कि वस्त्र उतारकर इस तालाब में उतर जाओ, ज्यों ही मैं तुम्हारे सिर पर पानी डालने लगूं, तुम तालाब में गोता लगाना। राजा दृगपाल ने वैसा ही किया। गोता लगाते ही उसने देखा कि मैं राजा दृगपाल नहीं, कोई और हूं। पास एक सुन्दर स्त्री लेटी हुई है। यद्यपि इस स्त्री को उसने पहले कभी नहीं देखा था, फिर भी उसे वह अपनी रानी समझ रहा था।

स्त्री—प्यारे प्राणपति, कल की थकान के कारण आपको सोते-सोते देर हो गई है। मैंने आपको जगाया नहीं। अब आप उठिए, वस्त्र पहनकर दरबार में जाइए। राजे-महाराजे आपकी राह देख रहे हैं।

राजा दृगपाल अपने को चंद्रदेव समझकर तुरंत उठकर दरबार में चला गया।

वहां राजे-महाराजे चन्द्रदेव को देखकर अति प्रसन्न हुए और प्रणाम करके बोले—महाराज, हमको दृगपाल बड़ा दुःख दे रहा है। यह अपमान अब नहीं सहा जाता। आज्ञा दीजिए कि युद्ध की दुन्दुभी बजायी जाए।

चन्द्रदेव बोला—नहीं, पहले दूत भेजकर दृगपाल को समझाना उचित है।

दूत भेजकर आप शिकार खेलने चल दिया और वहां जाकर जंगल से दो सिंह मार लाया। फिर महल में जाकर उसने भोजन किया और रात्रि को रानी के साथ विहार करता रहा।

अब इस प्रकार सदैव वह राज-काज करके मदृगया करने जाता, रात्रि को महल में आकर रानी के साथ विहार करता। महीनों बीत गए, इतने में उसके दूत लौट आये, पर उनके नाक-कान कटे हुए थे। राज दृगपाल ने कहलाया था कि दूतों की जो दृगर्ति हुई है, वहीं चंद्रदेव की भी होगी। अगर उसने सोना-चांदी का कर न दिया।

चन्द्रदेव (वास्तव में दृगपाल) ने मंत्रियों को एकत्र करके आज्ञा दी कि चतुरंगिनी सेना सजाकर युद्ध की तैयारी करो, मैं स्वयं संग्राम करूंगा। आठवें दिन चंद्रदेव और दृगपाल में घोर संग्राम हुआ, चंद्रदेव अर्थात् दृगपाल पड़ा गया। उसे भूख-प्यास का इतना दुःख न था जितना कि अपमान और अप्रतिष्ठा का। पिंजरे में बंद रहकर सदा अपने मित्रों और सम्बन्धियों को बंधे हुए देखकर उसका मन बहुत दुखी होता। नित्य यही विचार करता था कि शत्रु को किस प्रकार मारूं; यहां तक कि जब अपनी रानी के हाथ-पांव बंधे देखे और यह जाना कि दृगपाल के पास ले जा रहे हैं, तो वह क्रोध से जल उठा। वह चाहता था कि पिंजरा तोड़कर बाहर निकल जाए, परन्तु वह बेसुध होकर अंदर ही गिर पड़ा।

इतने में वधिकों ने आकर उकी मुश्कें कस लीं और उसे फांसी पर ले चले। चन्द्रदेव रो-रोकर कहने लगा—मुझे मत मारो, मुझ पर दया करो। परन्तु किसी ने न सुना। फांसी पर लटकने को ही था कि उसे ध्यान आया—ओहो, यह तो मेरा भ्रम है, मैं तो दृगपाल हूं। यह तो स्वप्न है। वह जोर मारकर सिर बाहर निकालना ही चाहता था कि फिर सो गया और देखा कि मैं तो पशु बन गया हूं।

अब वह पशु बनकर जंगल में चरने लगा, बच्चे उसका दूध पीने लगे। तब दृगपाल ने समझा कि मैं हिरनी बन गया। परन्तु इस अवस्था में बड़ा सुख मान रहा था। इतने में

किसी शिकारी ने बच्चे को गोली मारी। बच्चा गिर पड़ा और एक भयानक मनुष्य ने आकर उसका सिर काट डाला।

दृगपाल ने भय से चौंककर सिर बाहर निकाल दिया तो देखा कि बूढ़ा पास खड़ा है और वहां कुछ नहीं।

दृगपाल—ओहो! मैंने कितने साल पर्यन्त कष्ट भोगा कि मैं कुछ वर्णन नहीं कर सकता।

बूढ़ा—अभी तो आपने सिर डुबोया था, मेरा तो लोटा भी खाली नहीं हुआ। आप कहते हैं कि चिरकाल तक आपने दुःख भोगा। विचारो कि चन्द्रदेव और जिन योद्धाओं और पशुओं को तुमने मारा है, वे सब वास्तव में तुम ही हो। तुम यह समझ रहे हो कि आत्मा केवल तुममें ही है। परन्तु मैंने तुम्हारा चोला बदलकर यह दिखला दिया है कि दूसरों को कष्ट देने से वास्तव में तुम अपने को ही कष्ट देते हो। आत्मा एक है और सर्वत्र व्यापक है। उसी का एक अंश तुममें हैं। उस अंश को शुद्ध करना तुम्हारे वश में है। सबको अपनी आत्मा समझकर उनके साथ प्रेम करने से तुम्हारी आत्मा शुद्ध हो जाएगी। दूसरों को दुःख देकर निज आत्मा को पालन करने से तुम्हारी आत्मा भ्रष्ट हो जाएगी। आत्मा अविनाशी है। जो मर गए, वे तुम्हें दिखाई नहीं देते, परन्तु आत्मा नहीं मरती। तुम दूसरों को माकर अपनी आयु बढ़ाना चाहते हो, यह असम्भव है। आत्मा छोटी-बड़ी नहीं हो सकती, यह देशकाल से परे है। उससे भिन्न जो कुछ दिखाई देता है, वह सब भ्रान्ति मात्र है।

यह कहकर बूढ़ा अन्तर्धान हो गया।

अगले दिन दृगपाल ने चन्द्रदेव को छोड़ दिया और पुत्र को राज्य सौंपकर वन में तपस्या करने चला गया।

अंतःकरण का मल-मैल दूर करके अब दृगपाल साधु वेश में प्राणि-मात्र को देश-देश फिरकर यह उपदेश करता है, कि दूसरों का अपकार करना स्वयं अपना अपकार करना है।

तीन प्रश्न

एक समय एक राजा ने विचार किया कि मुझे यह मालूम हो जाना चाहिए कि—

1. किसी काम को शुरू करने का ठीक समय कौन-सा है?
2. किन लोगों की बात सुननी चाहिए, किनकी नहीं?
3. संसार का सबसे उत्तम पदार्थ क्या है, जिससे मैं जो चाहूं कर सकता हूं?

अतएव उसने अपनी राजधानी में डोंडी पिटवा दी कि जो कोई पुरुष इन तीन बातों का उत्तर देगा, उसे बहुत इनाम दिया जाएगा। अब बुद्धिमान पुरुष आकर राजा को इन प्रश्नों का उत्तर देने लगे।

पहले प्रश्न के उत्तर में किसी ने कहा कि मनुष्य को काम करने के वास्ते पहले दिनों, महीनों और वर्षों का सूची-पत्र बना लेना चाहिए। किसी ने कहा कि कार्य आरम्भ करने का पहले से ठीक समय नियत करना असम्भव है। मनुष्य को चाहिए कि वृथा समय न गंवाये। जो कर्तव्य हो, सदा उसे करता रहे। किसी ने कहा कि राजा कितना भी चतुर और

सावधान क्यों न हो, वह अकेला प्रत्येक कार्य आरम्भ करने का ठीक समय नहीं जान सकता। उसे बुद्धिमान लोगों की सभा बनाकर उनसे सम्मति लेनी चाहिए।

इस पर दूसरे बोले कि कुछ कार्य ऐसे होते हैं कि उन्हें तुरन्त करना पड़ता है। सभा में उन पर विचार करने का अवकाश नहीं मिल सकता और कार्य करने से पहले उसका फल जानना आवश्यक है। यह सब बातें ओझे पंडित जानते हैं, इस कारण उनसे पूछना उचित है।

इसी प्रकार लोगों ने दूसरे प्रश्न के भी अनेक उत्तर दिये। किसी ने कहा—राजा के मंत्री अति उत्तम होने चाहिए। कोई बोला—पंडित। कोई बोला—वैद्य। किसी ने कहा—सेना। इत्यादि।

तीसरे प्रश्न का उत्तर भी ऐसा ही मिला, कोई कहता था कि पदार्थ-विद्या सबसे उत्तम है, कोई कहता था कि शास्त्र-विद्या, तो कोई पूजा-पाठ बतलाता था।

राजा को कोई उत्तर ठीक मालूम न हुआ। पास के जंगल में एक जगत् विख्यात बुद्धिमान साधु निवास करता था। राजा ने विचारा कि चलो, उस साधु से इन प्रश्नों का उत्तर पूछें।

साधु कुटिया छोड़कर कहीं बाहर नहीं जाता था और केवल दीन मनुष्यों से मिला करता था। इस कारण राजा साधारण वस्त्र पहनकर पैदल साधु की कुटिया पर पहुंचा। देखा कि साधु कुटिया के सामने धरती खोद रहा है। राजा को देखते ही साधु ने प्रणाम किया और फिर खोदने लगा। वह बहुत दुबला और कमजोर था और फावड़ा चलाते हुए हांफता था।

राजा ने कहा—महाराज, मैं आपसे तीन बातें पूछने आया हूं। पहली यह कि मैं ठीक काम करने का ठीक समय किस प्रकार जान सकता हूं। दूसरी यह कि मुझे किन लोगों से सहवास करना उचित है। तीसरा यह कि कौन-सा विषय सबसे उत्तम है।

साधु ने कोई उत्तर नहीं दिया और धरती खोदता रहा।

राजा—महाराज, आप थके मालूम होते हैं। लाइए, फावड़ा मुझे दीजिए और आप जरा विश्राम कर लीजिए।

साधु ने राजा को धन्यवाद दिया और फावड़ा उनके हाथ में दे दिया। आप जमीन पर बैठ गया।

राजा दो क्यारियां खोद चुका तो रुक गया और फिर अपने तीनों प्रश्न दुहराये। साधु ने उत्तर दिया, हां। और फावड़ा लेने को हाथ बढ़ा दिया। लेकिन राजा ने फावड़ा न दिया और खोदता ही रहा, यहां तक कि सांझ हो गई। तब राजा ने फावड़ा जमीन पर रख दिया और बोला—महाराज, मैं तो आपसे अपने प्रश्नों का उत्तर लेने आया था। यदि आप कोई उत्तर नहीं दे सकते तो मैं लौट जाता हूं।

साधु—देखो, कोई भागा आता है।

राजा ने मुंह फेरकर देखा कि एक दाढ़ी वाला मनुष्य जंगल की ओर से दौड़ा आ रहा है। उसने अपने पेट को हाथ से दबा रखा था और हाथों के बीच से रुधिर बह रहा था। राजा के पास पहुंचकर वह बेसुध होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। राजा और साधु ने कुरता उठाकर देखा तो उसके पेट में बड़ा भारी घाव पाया। राजा ने घाव को पानी से धोकर

अपना रूमाल उस पर बांध दिया, रुधिक बन्द हो गया। कुछ काल उपरांत मनुष्य को सुध आयी, पानी मांगा। राजा ने तुरन्त जल लाकर मनुष्य को पिलाया। इतने में सूर्यास्त हो गया। राजा साधु की सहायता से मनुष्य को उठाकर कुटिया में ले गया और वहां चारपाई पर लेटा दिया। घायल आदमी को नींद आ गई। राजा भी थक जाने के कारण तुरन्त सो गया। भोर होने पर उठा तो घायल ने कहा—राजन्, आप मुझे क्षमा कीजिए।

राजा—क्षमा कैसी, मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं!

मनुष्य—आप मुझको नहीं जानते, परन्तु मैं आपको जानता हूं। आपने मेरे भाई का धन हर लिया था, इस कारण मैने प्रतिज्ञा की थी कि आपसे बदला लूंगा। मैं जानता था कि आप साधु से मिलकर संध्या समय अकेले घर को लौटेंगे। इस कारण जंगल में छिप रहा था। आपके सिपाहियों ने मुझे वहां देखकर पहचान लिया और मुझे गोली मारी। मैं भागकर यहां आया। यदि आप मेरे घाव न बन्द करते तो मैं अवश्य मर जाता। आपने मुझ पर बड़ी दया की। मैं आपको मारना चाहता था, परन्तु आपने मेरी जान बचायी। अब भविष्य में आपका दास बनकर सेवा करूंगा, आप क्षमा करें।

राजा बड़ा प्रसन्न हुआ कि ऐसा घातक शत्रु सहज में ही मित्र बन गया। उसने अपने वैद्य को उसकी दवा करने को बुला भेजा और अपने नौकर उसकी सेवा करने के लिए बुलाए उससे विदा होकर राजा ने साधु से कहा—महाराज, आपने मेरे प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दिया, अच्छा प्रणाम, आज्ञा दीजिए।

साधु—आपके प्रश्नों का उत्तर तो मिल चुका।

राजा—मैंने नहीं समझा।

साधु—देखो, यदि तुम कल मुझ पर तरस खाकर धरती न खोदते और शीघ्र ही लौट जाते तो यह मनुष्य राह में तुम्हें कष्ट देता, और तुम पछताते कि मैं साधु के पास क्यों न ठहर गया। इसलिए विदित हुआ कि उचित समय वह था जब तुम धरती खोद रहे थे और उचित मनुष्य मैं था और मेरा भला करना तुम्हारा परम कर्तव्य था। उसके पीछे जब यह मनुष्य आया, तो उचित समय वह था जब तुम उसके घाव को बन्द कर रहे थे, और वह उचित मनुष्य था और उसके घाव को बन्द करना तुम्हारा कर्तव्य था। सारांश यह है कि सदैव वर्तमान काल ही उचित काल है, क्यों वर्तमान काल पर ही हमारा अधिकार है। जो मनुष्य मिल जाए, वही उचित मनुष्य है! कौन जानता है, पल में क्या हो जाए और कोई मिले अथवा न मिले। सर्वोत्तम कर्तव्य परोपकार है, क्योंकि उपकार के ही लिए मनुष्य इस मृत्युलोक में शरीर धारण करता है।

●●●

चांदी की डिबिया

प्रकाशनकाल : 1930

चाँदी की डिबिया

अर्थात्

जॉन गॉल्सवर्दी के "Silver Box"

का अनुवाद

अनुवादक

श्रीयुत् प्रेमचन्द जी, बी० ए०

प्रयाग

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०

१९३०

(मुख पृष्ठ : चांदी की डिबिया)

पात्र-सूचीं

जान बार्थिविक	मेम्बर पार्लिमेंटा, धनी और लिबरल दल का
मिसेज़ बार्थिविक	उनकी स्त्री
जैक बार्थिविक	उनका बेटा
रोपर	उनका वकील
मिसेज़ जोन्स	उनकी नौकरारी
मा़र्लो	उनका ख़िदमतगार
ह्वीलर	उनकी ख़िदमतगारिन
जोन्स	मिसेज़ जोन्स का शौहर
मिसेज़ सैडन	घर की मालकिन
स्नो	जासूस
पुलिस मैजिस्ट्रेट	
एक अपरिचित स्त्री	
दो छोटी अनाथ लड़कियां	
लिवेन्स	उन लड़कियों का बाप
दारोग़ा	
मैजिस्ट्रेट का क्लार्क	
अर्दली	
पुलिस के सिपाही, क्लार्क और अन्य दर्शक	

समय—वर्त्तमान। पहले दो अंकों की घटना ईस्ट-ट्यूज़डे को होती है। तीसरे अंक की घटना ईस्टर-वेंसडे (बुध) को।

अंक 1 : **दृश्य पहला**—राकिंहम गेट, जान बार्थिविक का भोजनालय
दृश्य दूसरा— वही,
दृश्य तीसरा—वहीं

अंक 2 : **दृश्य पहला**—जोन्स का घर मरथर स्ट्रीट
दृश्य दूसरा—जान बार्थिविक का भोजनालय

अंक 3 : **दृश्य पहला**—लंदन का पुलीस कोर्ट

अंक 1

दृश्य पहला

[परदा उठता है, और बार्थिविक का नए ढंग से सजा हुआ बड़ा खाने का कमरा दिखाई देता है। खिड़की के परदे खिंचे हुए हैं। बिजली की रोशनी हो रही है। एक बड़ी गोल खाने की मेज पर एक तश्तरी रक्खी हुई है, जिसमें ह्विस्की, एक नलकी और एक चांदी की सिगरेट की डिबिया है। आधी रात गुजर चुकी है।

दरवाज़े के बाहर हलचल सुनाई देती है। दरवाजा झोंके से खुलता है, जैक बार्थिविक कमरे में इस तरह आता है, मानो गिर पड़ा हो। वह दरवाज़े का कुंडा पकड़कर खड़ा सामने देख रहा है और आनन्द से मुस्करा रहा है। वह शाम के कपड़े पहिने हुए है, और वह हैट लगाए हुए है जो तमाशा देखते वक्त लगाई जाती है। उसके हाथ में एक नीले रंग का मखमल का ज़नाना बटुआ है। उसके लड़कौंधे चेहरे पर ताज़गी झलक रही है। डाढ़ी और मूंछ मुंड़ी हुई है। उसके बाजू पर एक ओवरकोट लटक रहा है।]

जैक : अहा! मैं मज़े से घर पहुंच गया। (**विवाद के भाव से**) कौन कहता है कि मैं बिना मदद के दरवाज़ा नहीं खोल सकता था? **वह लड़खड़ाता है, बटुए को झुलाता हुआ अन्दर आता है। एक जनाना रूमाल और लाल रेशम की थैली गिर पड़ती है।** खूब झांसा दिया—सभी चीजें गिरी पड़ी हैं। कैसा चकमा दिया है चुड़ैल को, उसका बेग साफ़ उड़ा लाया। (बटुए को झुलाता है।) खूब झांसा दिया।

चांदी की डिबिया से एक सिगरेट निकालकर मुंह में रख लेता है।

उस गधे को कभी कुछ नहीं दिया।

अपनी जेब टटोलता है और एक शिलिंग बाहर निकालता है। वह उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है, और लुढ़क जाती है। वह उसे खोजता है।

इस शिलिंग का बुरा हो। (**फिर खोजता है**) एहसान को भूलना नीचता है! मगर कुछ भी नहीं, (**वह हंसता है**) मैं उससे कह दूंगा कि मेरे पास कुछ भी नहीं है।

वह दरवाज़े से रगड़ता हुआ निकलता है, और दालान से

होता हुआ, ज़रा देर में लौट आता है। उसके पीछे-पीछे जोन्स आता है, जो नशे में चूर है। जोन्स की उम्र लगभग तीस साल है। गाल पिचके हुए, आंखों के गिर्द गड्ढे पड़े हुए, कपड़े फटे हुए हैं, वह इस तरह ताकता है जैसे बेकार हो और पिछलगुए की भांति कमरे में आता है।

जैक : शिः, और चाहे जो कुछ करो मगर शोर मत करना। दरवाज़ा बन्द कर दो और थोड़ी-सी पियो।

बड़ी गंभीरता से

तुमने मुझे दरवाज़ा खोलने में मदद दी—मगर मेरे पास कुछ है नहीं। यह मेरा घर है, मेरे बाप का नाम बार्थिविक है—वह पार्लियामेंट का मेम्बर है, उदार-मेम्बर है। यह मैं तुमसे पहिले ही बता चुका। थोड़ी-सी पियो।

वह शराब ढालता है, और पी जाता है।

मुझे नशा नहीं है, **(सोफ़ा पर लेटकर)** कोई हर्ज़ नहीं। तुम्हारा क्या नाम है? मेरा नाम बार्थिविक है, मेरे बाप का भी यही नाम है; मैं भी लिबरल हूं—तुम क्या हो?

जोन्स : **(भारी तेज़ आवाज़ में)** मैं तो पक्का 'अनुदार' हूं। मेरा नाम है जोन्स। मेरी बीबी यहां काम करती है; वह मज़दूरनी है, यहां काम करती है।

जैक : जोन्स? **(हंसता है)** एक दूसरा जोन्स मेरे कॉलिज में पढ़ता है। मैं खुद साम्यवादी नहीं हूं। मैं लिबरल हूं—दोनों में बहुत कम अन्तर है। क्योंकि लिबरल दल के सिद्धान्त ही ये हैं। हम सब कानून के सामने बराबर हैं—बेहूदी बात है, बिलकुल वाहियात, (हंसता है) मैं क्या कहने जा रहा था। मुझे थोड़ी-सी ह्विस्की दो।

जोन्स उसे ह्विस्की देता है, और नलकी से पानी का छींटा मारता है।

मैं तुमसे यह कहने जा रहा था, कि मेरी उससे तकरार हो गई। **(बटुए को झुलाता है)** थोड़ी-सी पीलो जोन्स—तुम्हारे बग़ैर यह काम ही न हो सकता—इसी से मैं तुम्हें पिला रहा हूं। अगर कोई जान भी जाय, कि मैंने उसके रुपये उड़ा दिए, तो क्या करता। चुड़ैल! **(सोफा पर पैर रख लेता है।)** शोर मत करो और जो चाहे सो करो। शराब उंड़ेलो और खूब डटकर पियो। सिगरेट लो, जो चाहे सो लो। तुम्हारे बग़ैर वह हरगिज़ न फंसती। **(आंखें बन्द करके)** तुम टोरी हो, मैं खुद लिबरल हूं, थोड़ी-सी पियो—मैं बड़ा बांका आदमी हूं।

उसका सिर पीछे की तरफ़ लटक जाता है, वह मुस्कराता हुआ सो जाता है, और जोन्स खड़ा होकर उसकी तरफ़

ताकता है; तब जैक के हाथ से गिलास छीनकर पी जाता है। वह बटुए को जैक की कमीज़ के सामने से उठा लेता है। उसे रोशनी में देखता है और सूंघता है।

जोन्स : आज किसी अच्छे आदमी का मुंह देखकर उठा था।

जैक के सामने की जेब में उसे ठूंस देता है।

जैक : (बड़बड़ाता हुआ) चुड़ैल! कैसा चकमा दिया।

जैक चारों तरफ़ कनखियों से देखता है, वह ह्विस्की उंड़ैल कर पी जाता है, तब चांदी की डिबिया से एक सिगरेट निकालकर दो-एक दम लगाता है, और ह्विस्की पीता है। फिर उसे बिल्कुल होश नहीं रहता।

जोन्स : बड़ी अच्छी-अच्छी चीज़ें जमा की हैं।

वह ज़मीन पर पड़ी हुई लाल थैली को देखता है।

है माल बढ़िया।

वह उसे उंगली से छूता है, किश्ती में रख देता है और जैक की तरफ ताकता है।

है मोटा आसामी।

वह आईने में अपनी सूरत देखता है। अपने हाथ उठाकर और उंगलियों को फैलाकर वह उसकी तरफ़ झुकता है; तब फिर मुट्ठी बांधकर जैक की तरफ़ ताकता है, मानो नींद में उसके मुस्कराते हुए चेहरे पर घूंसा मारना चाहता है। एकाएक वह बाकी बची हुई ह्विस्की गिलास में उंड़ेलता है और पी जाता है। तब कपटमयी हर्ष के साथ वह चांदी की डिबिया और थैली उठाकर जेब में रख लेता है।

बचा, मैं तुम्हें चरका दूंगा। इस फेर में न रहना।

गुरगुराती हुई हंसी के साथ वह दरवाज़े की ओर लड़खड़ाता हुआ जाता है। उसका कंधा स्विच से टकरा जाता है, रोशनी बुझ जाती है। किसी बंद होते हुए दरवाज़े की आवाज़ सुनाई देती है।

परदा गिरता है।

परदा फिर तुरन्त उठता है।

दृश्य दूसरा

[बार्थिविक का खाने का कमरा। जैक अभी तक सोया हुआ है। सुबह की रोशनी परदों से होकर आ रही-है। समय साढ़े आठ बजे का है। ह्वीलर जो एक फुर्तीली औरत है, कूड़े की टोकरी लिये आती है। और मिसेज़ जोन्स आहिस्ता-आहिस्ता कोयले की टोकरी लिये

दाखिल होती है।]

ह्वीलर : **(परदा उठाकर)** जब तुम कल चली गई, तो वह तुम्हारा निखट्टू शौहर तुम्हारी टोह में चक्कर लगा रहा था। मैं समझती हूं, शराब के लिए तुमसे रुपया मांग रहा था। वह आध घंटे तक यहां कोने में पड़ा रहा। जब मैं कल रात को डाक लेने गई तो मैंने उसे होटल के बाहर खड़े देखा। अगर तुम्हारी जगह मैं होती, तो कभी उसके साथ न रहती। मैं कभी ऐसे आदमी के साथ न रहती, जो मुझ पर हाथ साफ करता। मुझसे यह बरदाश्त ही न होता। तुम लड़कों को लेकर क्यों नहीं उसे छोड़ देती हो? अगर तुम यह बरदाश्त करती रहोगी, तो वह और भी सिर चढ़ जाएगा। मेरी समझ में नहीं आता, कि महज़ शादी कर लेने से कोई आदमी क्यों तुम्हें दिक़ करे।

मिसेज़ जोन्स : **(काली आंखें और काले बाल, चेहरा अंडाकार, आवाज़ चिकनी, नर्म और मीठी। सूरत से सहनशील मालूम होती है। उदासी से बातें करती है। वह नीले रंग का कपड़ा पहिने हुए है और उसके जूते में सूराख़ है।)** वह आधी रात को घर आया और अपने होश में न था। उसने मुझे जगाया और पीटने लगा। उसे सिर-पैर की कुछ खबर ही नहीं मालूम होती थी। मैं उसे छोड़ना तो चाहती हूं, मगर डरती हूं, न मालूम मेरे साथ क्या करे। जब वह नशे में होता है, तो उसके क्रोध का पारावार नहीं रहता।

ह्वीलर : तुम उसे क़ैद क्यों नहीं करा देतीं? जब तक तुम उसे बड़े घर न पहुंचा दोगी, तुम्हें चैन न मिलेगा। अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो कल ही पुलिस में इत्तला दे देती। वह भी समझता कि किसी से पाला पड़ा था।

मिसेज़ जोन्स : हां, मुझे जाना तो चाहिए, क्योंकि जब वह नशे में होता है तो मेरे साथ बुरी तरह पेश आता है। लेकिन बहिन! बात यह है कि उन्हें आजकल बड़ा कष्ट है—दो महीने से घर बैठे हुए हैं। और यही फ़िक्र उसे सता रही है। जब कहीं मजूरी मिल जाती है, तब वह इतना उजड्डपन नहीं करते। जब ठाले बैठते हैं तभी उनके सिर भूत सवार होता है।

ह्वीलर : अगर तुम हाथ-पैर न हिलाओगी, तो उससे गला न छूटेगा।

मिसेज़ जोन्स : अब यह दुर्गति नहीं सही जाती; मुझे रात-रात भर जागते गुज़र जाती हैं और यह भी नहीं कि कुछ कमा कर लाता हो, क्योंकि घर का सारा बोझ मेरे सिर है। ऐसी-ऐसी गालियां देता है, क्या कहूं। कहता है कि तू शोहदों को साथ लिये फिरती है। बिलकुल झूठी बात है, मुझसे कोई आदमी नहीं बोलता। हां, वह खुद औरतों के पीछे पड़ा रहता है। उसकी इन्हीं सब बातों से मेरा जी जला करता है। मुझे धमकाता

है, कि अगर तुमने मुझे छोड़ा तो सिर काट लूंगा। यह सब शराब और चिन्ता का फल है। हां, यों आदमी वह बुरा नहीं है। कभी-कभी वह मुझसे मीठी-मीठी बातें करता है, लेकिन मैंने उसके हाथों इतने दुःख भोगे हैं कि उसकी मीठी बातें भी बुरी लगती हैं। मैं तो उसकी बातों का जवाब तक नहीं देती। जब नशे में नहीं होता, तो लड़कों से भी प्रेम करता है।

व्हीलर : तुम्हारा मतलब है, जब वह नशे में होता है?

मिसेज़ जोन्स : हां। (**उसी स्वर में**) वह छोटे साहब सोफ़ा पर सोए हुए हैं।

दोनों चुपचाप जैक की तरफ़ ताकती हैं।

मिसेज़ जोन्स : (**नर्म आवाज़ में**) मालूम होता है, नशे में हैं।

व्हीलर : शोहदा है, शोहदा, मुझे विश्वास है, कि तुम्हारे शौहर की तरह इसने भी रात को पी थी। इसकी बेकारी एक दसरी तरह की है, जिसमें पीने ही की सूझती है। जाकर मारलो से कह आऊं, यह उसका काम है। (**वह चली जाती है।**)

मिसेज़ जोन्स झुककर धीरे-धीरे झाड़ू देने लगती है।

जैक : (**जागकर**) कौन है? क्या बात है?

मिसेज़ जोन्स : मैं हूं सरकार, मिसेज़ जोन्स।

जैक : (**उठ बैठता है, और चारों तरफ़ ताकता है।**) मैं कहां हूं? क्या वक्त है?

मिसेज़ जोन्स : नौ का अमल होगा हुजूर। नौ।

जैक : नौ? क्यों? क्या?

उठकर ज़बान चलाता है और सिर पर हाथ फेरकर मिसेज जोन्स की तरफ़ घूरकर देखता है।

देखो, तुम मिसेज़ जोन्स, यह न कहना कि तुमने मुझे यहां सोते पाया।

मिसेज़ जोन्स : न कहूंगी, न कहूंगी सरकार।

जैक : इत्तफ़ाक की बात है! मुझे याद नहीं आता कि मैं यहां कैसे सो गया। शायद चारपाई पर जाना भूल गया! अजीब बात है। मारे दर्द के सिर फटा जाता है। देखो मिसेज़ जोन्स, किसी ने कुछ कहना मत।

बाहर जाता है, ड्योढ़ी में मारलो से मुठभेड़ होती है। मारलो जवान और गम्भीर है। उसकी डाढ़ी-मूंछ साफ़ है, और बाल माथे की तरफ़ से कंघी करके मुरग़े की कलग़ी की तरह ऊपर उठा दिए गए हैं। है तो वह खानसामा, लेकिन अच्छे चाल-चलन का आदमी है। वह मिसेज़ जोन्स को देखता है, और ओंठ दबाकर मुस्कराता है।

मारलो : पहिली बार नहीं पी है, और न अंतिम बार ही है। ज़रा कुछ बौखलाया हुआ मालूम होता था, क्यों मिसेज़ जोन्स?

मिसेज़ जोन्स : अपने होश में न थे, लेकिन मैंने ध्यान नहीं दिया।

मारलो : तुम्हारी तो आदत पड़ी हुई है। तुम्हारे शौहर का क्या हाल है?

मिसेज़ जोन्स : **(नर्म आवाज़ से)** कल रात को तो उनकी हालत अच्छी न थी। कुछ सिर पैर की ख़बर ही न थी। बहुत रात गए आए, और गालियां बकते रहे। लेकिन इस वक्त सो रहे हैं।

मारलो : इसी तरह मज़दूरी ढूंढ़ी जाती है, क्यों?

मिसेज़ जोन्स : उनकी आदत तो यह है, कि रोज़ सबेरे काम की तलाश में निकल जाते हैं। और कभी-कभी इतने थक जाते हैं कि घर आते ही गिर पड़ते हैं। भला यह कैसे कहूं कि वह काम नहीं खोजते। ज़रूर खोजते हैं। रोजगार मंदा है।

वह टोकरी और झाडू सामने रक्खे चुपचाप खड़ी हो जाती है। जिन्दगी की अगली-पिछली बातें किसी वन्य दृश्य की भांति उसकी आंखों के सामने आने लगती हैं, और वह उन्हें स्थिर, उदासीन नेत्रों से देखती है।

लेकिन मेरे साथ वह बुरी तरह पेश आते हैं। कल रात उन्होंने मुझे पीटा और ऐसी-ऐसी गालियां दीं कि रोंगटे खड़े होते हैं।

मारलो : बैंक की छुट्टी थी, क्यों? उसे होटल का चस्का पड़ गया है। यही बात है। मैं उसे रोज़ बड़ी रात तक कोने में बैठे देखता हूं। वहीं फिरा करता है।

मिसेज़ जोन्स : काम की खोज में दिन भर दौड़ते-दौड़ते बहुत थक जाते हैं। और कहीं कोई दूसरा रोज़गार भी नहीं मिलता, इसलिए अगर एक घूंट भी पी लेते हैं, तो सीधे दिमाग़ पर चढ़ जाती है। लेकिन जिस तरह वह मेरे साथ पेश आते हैं, उस तरह अपनी बीवी के साथ न पेश आना चाहिए। कभी-कभी तो वह मुझे घर से निकाल देते हैं। और मैं सारी रात मारी-मारी फिरती हूं। वह मुझे घर में घुसने भी नहीं देते। पीछे से पछताते हैं। और वह मेरे पीछे-पीछे लगे रहते हैं, गलियों में मुझ पर ताक लगाए रहते हैं। उन्हें ऐसा न चाहिए, क्योंकि मैंने कभी उनके साथ दगा नहीं की। और मैं उनसे कहती हूं, कि मिसेज़ बार्थिविक को तुम्हारा आना अच्छा नहीं लगता। लेकिन इस पर उन्हें क्रोध आ जाता है, और वह अमीरों को गालियां देने लगते हैं। उनकी नौकरी भी इसी वजह से छूटी, कि वह मुझे बुरी तरह सताते थे। तब से वह अमीरों के जानी दुश्मन हो गये हैं। उन्हें देहात में सईसी की अच्छी जगह मिल गई थी। लेकिन जब मुझे मारने-पीटने लगे, तो बदनाम हो गए।

मारलो : सज़ा हो गई?

मिसेज़ जोन्स : हां, मालिक ने कहा, मैं ऐसे आदमी को नहीं रक्खूंगा, जिसकी लोग इतनी निन्दा करते हैं। उसने यह भी कहा कि इसकी देखा-देखी और लोग भी ऐसे ही करेंगे। लेकिन यहां का काम छोड़ दूं तो मेरा निबाह न हो। मेरे तीन बच्चे हैं। और मैं नहीं चाहती कि वह मेरे पीछे-पीछे गलियों में घूमें और शोर-गुल मचाएं।

मारलो : (**खाली बोतल को ऊपर उठाकर**) एक बूंद भी नहीं। अगर अबकी तुम्हें मारे, तो एक गवाह लेकर सीधे कचहरी चली जाना।

मिसेज़ जोन्स : हां, मैंने ठान लिया है। ज़रूर जाऊंगी।

मोरलो : हूं! सिगरेट की डिबिया कहां हैं?

वह चांदी की डिबिया ढूंढ़ता है। मिसेज़ जोन्स की तरफ देखता है, जो हाथों और घुटनों के बल झाड़ू दे रही है, वह रुक जाता है, और खड़ा-खड़ा कुछ सोचने लगता है। वह तश्तरी में से दो अधजले सिगरेट उठा लेता है, और उनके नाम पढ़ता है।

मारलो : डिबिया कहां चली गई?

वह विचारपूर्ण भाव से फिर मिसेज़ जोन्स को देखता है, और जैक का ओवरकोट लेके जेबें टटोलता है। ह्वीलर नाश्ते की तश्तरी लिये आती है।

मारलो : (**ह्वीलर से अलग**) तुमने सिगरेट की डिबिया देखी है?

ह्वीलर : नहीं।

मारलो : तो वह ग़ायब हो गई। मैंने रात उसे तश्तरी में रख दिया था, और उन्होंने सिगरेट पिया भी (**सिगरेट के जले हुए टुकड़े दिखाकर**)। इन जेबों में नहीं है। आज ऊपर कब ले गए? जब वह नीचे आयें तो उनके कमरे में खूब तलाश करना। यहां कौन-कौन आया था?

ह्वीलर : अकेली मैं और मिसेज़ जोन्स।

मिसेज़ जोन्स : यह कमरा तो हो गया, क्या बैठक भी साफ कर दूं?

ह्वीलर : (**उसे सन्देह से देखकर**) तुमने देखा है? पहिले इस छोटी कोठरी को साफ़ कर दो।

मिसेज़ जोन्स टोकरी और ब्रुश लिये बाहर चली जाती है, मारलो और ह्वीलर एक दूसरे के मुंह की ओर ताकते हैं।

मारलो : पता तो चल ही जायगा।

ह्वीलर : (**हिचकिचाकर**) ऐसा तो नहीं हुआ कि उसने—

द्वार की ओर देखकर सिर हिलाती है।

मारलो : (**दृढ़ता से**) नहीं, मैं किसी पर सन्देह नहीं करता।

ह्वीलर : लेकिन मालिक से तो कहना ही पड़ेगा।

मारलो : ज़रा ठहरो, शायद मिल ही जाय, हमें किसी पर सन्देह न करना चाहिए। यह बात मुझे पसन्द नहीं।

परदा गिरता है।

तुरन्त ही फिर परदा उठता है।

दृश्य तीसरा

[बार्थिविक और मिसेज़ बार्थिविक मेज़ पर बैठे नाश्ता कर रहे हैं, पति की उम्र पचास और साठ के बीच में है। चेहरे से ऐसा मालूम होता है कि अपने को कुछ समझता है। सिर गंजा है, आंखों पर ऐनक है, और हाथ में टाइम्स पत्र है। स्त्री की उम्र पचास के लगभग होगी। अच्छे कपड़े पहिने हुए हैं। बाल खिचड़ी हो गए हैं। चेहरा सुन्दर है, मुद्रा दृढ़ है। दोनों आमने-सामने बैठे हैं।]

बार्थिविक : (**पत्र के पीछे से**) बार्नसाइड के बाई इलेक्शन में मजूर दल का आदमी आ गया प्रिये।

मिसेज़ बार्थिविक : मजूर दल का दूसरा आदमी आ गया। समझ में नहीं आता लोग क्या करने पर तुले हुए हैं।

बार्थिविक : मैंने तो पहिले ही कहा था। मगर इससे होता क्या है।

मिसेज़ बार्थिविक : वाह! तुम इन बातों को इतनी तुच्छ क्यों समझते हो। मेरे लिए तो यह आफ़त से कम नहीं। और तुम और तुम्हारे लिबरल भाई इन आदमियों को और शह देते हैं।

बार्थिविक : (**भौंहें चढ़ाकर**) सब दलों के प्रतिनिधियों का होना उचित सुधार के लिए ज़रूरी है।

मिसेज़ बार्थिविक : तुम्हारे सुधार की बात सुनकर मेरा जी जल उठता है। समाज सुधार की सारी बातें पागलों की-सी हैं। हम खूब जानते हैं कि उनकी क्या मंशा है। वे सब कुछ अपने लिए चाहते हैं। ये साम्यवादी और मजूर दल के लोग परले सिरे के मतलबी हैं; न उनमें देश-भक्ति है। ये सब ऊंचे दरजे के लोग हैं। वे भी वही चाहते हैं, जो हमारे पास मौजूद है।

बार्थिविक : जो हमारे पास है वह चाहते हैं। (**आकाश की ओर देखता है।**) तुम क्या कहती हो प्रिये? (**मुंह बनाकर**) मैं कान के लिए कौवे के पीछे दौड़ने वालों में नहीं हूं।

मिसेज़ बार्थिविक : मलाई दूं? सबके सब बौखल हैं। देखते जाव, थोड़े दिनों में हमारी पूंजी पर टैक्स लगेगा। मुझे तो विश्वास है कि वह हर एक चीज़ पर कर लगा देंगे। उन्हें देश का तो कोई ख़याल ही नहीं। तुम लिबरल और कंज़रवेटिव सब एक से हो। तुम्हें नाक के आगे तो कुछ दिखाई

ही नहीं देता। तुममें ज़रा भी विचार नहीं है। तुम्हें चाहिए कि आपस में मिल जाव, और इस अंखुए को ही उखाड़ दो।

बार्थिविक : बिलकुल वाहियात बक रही हो। यह कैसे हो सकता है कि लिबरल और कंज़रवेटिव मिल जायं। इससे मालूम होता है कि औरतों के लिए यह कितनी—लिबरलों का सिद्धान्त ही यह है कि जनता पर विश्वास किया जाय।

मिसेज़ बार्थिविक : चुपके से नाश्ता करो, जान, मानो तुममें और कंज़रवेटिवों में बड़ा भारी फर्क है। सभी बड़े आदमियों के एक ही सिद्धान्त और एक ही स्वार्थ होते हैं।

शान्त होकर

उफ़! तुम ज्वालामुखी पर बैठे हो जान।

बार्थिविक : क्या?

मिसेज़ बार्थिविक : मैंने कल पत्र में एक चिट्ठी पढ़ी थी, उस आदमी का नाम भूलती हूं, लेकिन उसने सारी बातें खोलकर रख दी थीं। तुम लोग किसी बात की असलियत नहीं समझते थे।

बार्थिविक : हूं। ठीक है। (**भारी स्वर से**) मैं लिबरल हूं, इस विषय को छोड़ो।

मिसेज़ बार्थिविक : टोस्ट दूं? मैं इस आदमी के विचारों से सहमत हूं। शिक्षा, नीची श्रेणी के आदमियों को चौपट कर रही है। इससे उनका सिर फिर जाता है, और यह सभी के लिए हानिकर है। मैं नौकरों के रंग-ढंग में अब वह बात ही नहीं पाती।

बार्थिविक : (**कुछ सन्देह के साथ**) अगर तबदीली से कोई अच्छी बात पैदा हो जाय, तो मैं उसका स्वागत करने को तैयार हूं। (**एक ख़त खोलता है**) अच्छा, मास्टर जैक का कोई नया मामला है, 'हाई स्ट्रीट, आक्सफोर्ड। महाशय, हमारे पास मि॰ जान बार्थिविक की चालीस पौण्ड की हुंण्डी आयी है।' अच्छा यह खत उसके नाम है। 'हम अब इस चेक को भेजते हैं, जो आपने हमारे यहां भुनाया था, पर जैसा मैं अपने पहले पत्र में लिख चुका हूं, जब वह आपके बैंक में भेजा गया तो उन लोगों ने उसे नहीं सकारा। भवदीय, मास एण्ड सन्स टेलर्स।' खूब (**चेक को ध्यान से देखकर**) है मज़ेदार बात। इस लौंडे पर तो मुक़दमा चल सकता है।

मिसेज़ बार्थिविक : जाने भी दो जान, जैक की नीयत बुरी न थी। उसने यही समझा होगा कि मैं कुछ रुपये ऊपर ले रहा हूं। मेरा अब भी यही खयाल है कि बैंक को यह चैक भुना देना चाहिए था। उन लोगों को मालूम होगा कि तुम्हारी कितनी साख है।

बार्थिविक : (**पत्र और चेक को फिर लिफाफे में रखकर**) अदालत में लाला की आंखें खुल जातीं।

जैक आ जाता है। उसे देखते ही वह चुप हो जाता है, बास्केट के बटन बन्द कर लेता है। ठुड्डी पर अस्तुरा लग गया है। उसे दबा लेता है।

जैक : **(उन दोनों के बीच में बैठकर और प्रसन्न मुख बनने की इच्छा करके)** खेद है मुझे देर हो गई। **(प्यालों को अरुचि से देखकर)** अम्मा, मुझे तो चाय दीजिए। मेरे नाम का कोई ख़त है?

बार्थिविक इसे ख़त दे देता है।

यह क्या बात है, इसे खोल किसने डाला? मैं आप से कह चुका मेरे ख़तों...

बार्थिविक : **(लिफ़ाफ़े को छूकर)** मेरा ख़याल है यह मेरा ही नाम है।

जैक : **(खिन्न होकर)** आप ही का नाम तो मेरा भी नाम है। इसे मैं क्या करूं।

ख़त पढ़ता है और बड़बड़ाता है।

बदमाश!

बार्थिविक : **(उसे देखकर)** तुम इतने सस्ते टूटने के लायक़ नहीं हो।

जैक : क्या अभी आप मुझे काफ़ी नहीं कोस चुके।

मिसेज़ बार्थिविक : क्यों उसे दिक़ करते हो जान! कुछ नाश्ता कर लेने दो।

बार्थिविक : अगर मैं न होता तो जानते हो तुम्हारी क्या दशा होती? यह संयोग की बात है—मान लो तुम किसी ग़रीब आदमी या क्लार्क के बेटे होते। ऐसा चेक भुनाना जिसे तुम जानते हो कि चल न सकेगा, क्या कोई मामूली बात है! तुम्हारी सारी ज़िन्दगी बिगड़ जाती। अगर तुम्हारे यही ढंग हैं, तो ईश्वर ही मालिक है। मैं तो ऐसी बातों से हमेशा दूर रहा।

जैक : आपके हाथ में हमेशा रुपये रहते होंगे। अगर आपके पास रुपये का ढेर हो तो फिर इसकी ज़रूरत—

जान : मेरी हालत ठीक इसकी उलटी थी। मेरा बाप कभी मुझे काफ़ी रुपये न देता था।

जैक : आपको कितना मिलता था?

जान : इसमें कोई सार नहीं। सवाल है, क्या तुम अनुभव करते हो कि तुमने कितना बड़ा अपराध किया है।

जैक : यह सब मैं कुछ नहीं जानता। हां, अगर आपका ख़याल है कि मैंने बेजा किया तो मुझे दुःख है। मैं तो यह पहले ही कह चुका। अगर मैं पैसे-पैसे को मुहताज न होता तो कभी ऐसा काम न करता।

बार्थिविक : चालीस पौण्ड में से अब कितने बचे रहे?

जैक : **(हिचकता हुआ)** ठीक याद नहीं, मगर ज़्यादा नहीं हैं।

बार्थिविक : आख़िर कितना?

जैक : (**उद्दण्डता से**) एक पैसा भी नहीं बचा।

बार्थिविक : क्या?

जैक : मारे दर्द के सिर फटा जाता है।

अपने हाथ पर सिर झुका लेता है।

मिसेज़ बार्थिविक : सिर में दर्द कब से होने लगा बेटा? कुछ नाश्ता तो कर लो।

जैक : (**सांस खींचकर**) बड़ा दर्द हो रहा है।

मिसेज़ बार्थिविक : क्या उपाय करूं? मेरे साथ आओ बेटा! मैं तुम्हें ऐसी चीज़ खिला दूंगी कि सारा दर्द तुरन्त जाता रहेगा।

दोनों कमरे से चले जाते हैं, और बार्थिविक ख़त को फाड़ कर अंगीठी में डाल देता है। इतने में मारलो आ जाता है और चारों ओर आंखें दौड़ाकर जाना चाहता है।

बार्थिविक : क्या है मारलो? क्या खोज रहे हो?

मारलो : मि॰ जान को देख रहा था।

बार्थिविक : मि॰ जान से क्या काम है?

मारलो : मैंने समझा शायद यहां हों।

बार्थिविक : (**सन्देह के भाव से**) हां, लेकिन उनसे तुम्हें काम क्या है?

मारलो : (**लापरवाही से**) एक औरत आई है। कहती है उनसे कुछ कहना चाहती हूं।

बार्थिविक : औरत! इतने सवेरे! कैसी औरत है?

मारलो : (**स्वर से बिना कोई भाव किए हुए**) कह नहीं सकता हुजूर। कोई ख़ास बात नहीं। मुमकिन है कुछ मांगने आई हो। मेरा ख़याल है कोई ख़ैरात मांगने वाली है।

बार्थिविक : क्या उन औरतों के-से कपड़े पहने है?

मारलो : जी नहीं, मामूली कपड़े पहने है।

बार्थिविक : कुछ मांगना चाहती है।

मारलो : जी नहीं।

बार्थिविक : तुम उसे कहां छोड़ आए हो?

मारलो : बड़े कमरे में हुजूर।

बार्थिविक : बड़े कमरे में। तुम कैसे जानते हो कि वह चोरनी नहीं है? घर की कुछ टोह लेने आई हो?

मारलो : मुझे ऐसी तो नहीं मालूम होती।

बार्थिविक : खैर, यहां लाओ। मैं खूद उससे मिलूंगा।

मारलो चुपके से सिर हिलाकर भय प्रकट करता चला जाता है। ज़रा देर में एक पीले मुख की युवती को साथ लिये लौटता है। उसकी आंखें काली हैं, चेहरा सुन्दर, कपड़े तरहदार हैं, और काले रंग के। लेकिन कुछ फूहड़ है। सिर

पर एक काली टोपी है जिस पर सफेद किनारी है। उस पर परमा के बैंजनी फूलों का एक गुच्छा बेढंगेपन से लगा हुआ है। मि. बार्थिविक को देखकर वह हक्का-बक्का हो जाती है। मारलो चला जाता है।

अपरिचित स्त्री : अरे! क्षमा कीजिएगा। कुछ भूल हो गई है।

वह जाने के लिए घूमती है।

बार्थिविक : आप किससे मिलना चाहती हैं श्रीमती जी?

अपरिचित : **(रुककर और पीछे की ओर देखकर)** मैं मि. जान बार्थिविक से मिलना चाहती थी।

बार्थिविक : जान बार्थिविक तो मेरा ही नाम है श्रीमती जी। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?

अपरिचित : जी—मैं यह नहीं....

आंखें झुका लेती है। बार्थिविक उसे ध्यान से देखता है और ओठों को सिकोड़ता है।

बार्थिविक : शायद आप मेरे बेटे से मिलना चाहती हैं?

अपरिचित : **(जल्दी से)** हां-हां, यही बात है।

बार्थिविक : पूछ सकता हूं कि मुझे किससे बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है?

अपरिचित : **(उसके मुख पर विनय और आग्रह का भाव दिखाई देता है)** मेरा नाम है—मगर ज़रूरत ही क्या है। मैं झमेला नहीं करना चाहती। मैं ज़रा एक मिनट के लिए आपके बेटे से मिलना चाहती हूं।

साहस से

सच तो यह है कि मेरा उनसे मिलना बहुत ज़रूरी है।

बार्थिविक : **(अपनी बेचैनी को दबाकर)** मेरे बेटे की तो आज तबीयत कुछ ख़राब है। अगर ज़रूरत हो तो मैं आपका काम कर सकता हूं। आप अपनी ज़रूरत बयान करें।

अपरिचित : जी—लेकिन मेरा उनसे मिलना ज़रूरी है। मैं इसी इरादे से आयी हूं। मैं कोई झमेला नहीं करना चाहती, लेकिन बात यह है—रात को—आपके बेटे ने उड़ा दी—उन्होंने मेरी...

रुक जाती है

बार्थिविक : **(कठोर स्वर से)** हां, हां, कहिए, कया?

अपरिचित : वह मेरा—बटुआ उठा ले गए।

बार्थिविक : आपका बटु...

अपरिचित : मुझे बटुए की चिन्ता नहीं है। उसकी मुझे ज़रूरत नहीं। मैं सच कहती हूं, मेरा इरादा बिलकुल नहीं है कि कोई झमेला हो।

उसका चेहरा कांपने लगता है

लेकिन—लेकिन—मेरे सब रुपये उसी बटुए में थे।

बार्थिविक : किस चीज़ में—किस चीज़ में?

अपरिचित : मेरे बटुए में एक छोटी सी थैली में रखे हुए थे। लाल रंग की रेशमी थैली थी। सच कहती हूं, मैं न आती—मैं कोई झमेला नहीं करना चाहती। लेकिन मुझे रुपये मिलने चाहिए, कि नहीं?

बार्थिविक : क्या आपका यह मतलब है कि मेरे बेटे ने—?

अपरिचित : जी, समझ लीजिए, वह अपने...मेरा यह मतलब कि वह—

बार्थिविक : मैं आपका मतलब नहीं समझा।

अपरिचित : **(अपने पैर पटककर मोहक भाव से मुस्कराती है)** ओह! आप समझते नहीं—वह पिए हुए थे। मुझसे तकरार हो गई।

बार्थिविक : **(इसे बेशर्मी की बात समझकर)** कैसे? कहां?

अपरिचित : **(निःशंक भाव से)** मेरे घर पर। वहां एक दावत थी, और आपके सुपुत्र—

बार्थिविक : **(घंटी बजाकर)** मैं पूछ सकता हूं कि आपको यह घर कैसे मालूम हुआ? क्या उसने अपना नाम और पता बतला दिया था?

अपरिचित : **(नज़र फेरकर)** मैंने उनके ओवर कोट से निकाल लिया।

बार्थिविक : **(ताने की मुस्कराहट के साथ)** अच्छा! आपने उसके ओवर कोट से निकाल लिया। वह इस वक्त इस प्रकाश में आपको पहचान जायगा?

अपरिचित : पहचान जायगा? क्या इसमें भी कोई शक है।

मारलो आता है।

बार्थिविक : मि० जान से कहो नीचे आवें।

मारलो चला जाता है और बार्थिविक बेचैन होकर कमरे में टहलने लगता है।

आपकी और उसकी जान पहचान कितने दिन से है?

अपरिचित : केवल—केवल गुडफ्राइडे से।

बार्थिविक : मेरी समझ में नहीं आता, मैं फिर कहता हूं, मेरी समझ में नहीं आता—

वह अपरिचित स्त्री को कनखियों से देखता है, जो आंखें नीची किए खड़ी हाथ मल रही है। इतने में जैक आ जाता है। उसे देखकर वह ठिठक जाता है और अपरिचित स्त्री सनकियों की भांति खिलखिला पड़ती है। सन्नाटा छा जाता है।

बार्थिविक : **(गंभीरता से)** यह युवती—महिला कहती हैं कि गई रात को—क्यों श्रीमती जी, गई रात को ही न—तुमने इनकी कोई चीज़ उठा ली—

अपरिचित : **(आतुरता से)** मेरा बटुआ और मेरे सब रुपये उसी लाल रेशमी थैली में थे।

जैक : बटुआ? **(इधर-उधर ताकता है कि निकल भागने का मौका कहीं है)** मैं बटुआ क्या जानूं।

बार्थिविक : **(तेज़ आवाज़ में)** घबराओ मत। तुम्हें गई रात को इन श्रीमती जी से मिलने से इनकार है?

जैक : इनकार! इनकार क्यों होने लगा? **(स्त्री से धीमे स्वर में)** तुमने मेरा नाम क्यों बतला दिया? तुम्हारे यहां आने की क्या ज़रूरत थी?

अपरिचित : **(आंखों में आंसू भर लाकर)** मैं सच कहती हूं मैं नहीं चाहती थी—तुमने उसे मेरे हाथ से छीन लिया था। तुम्हें खूब याद होगा—और उस थैली में मेरे सब रुपये थे। मैं रात ही तुम्हारे पीछे आती, लेकिन मैं भम्भड़ नहीं मचाना चाहती थी, और देर भी बहुत हो गयी थी—फिर तुम बिलकुल—

बार्थिविक : जाते कहां हो? बतलाओ क्या माजरा है?

जैक : **(चिढ़कर)** मुझे कुछ याद नहीं। **(स्त्री से धीमी आवाज़ में)** तुमने ख़त क्यों न लिख दिया?

अपरिचित : **(नाराज़ होकर)** मुझे रुपयों की अभी इस वक्त ज़रूरत है—मुझे आज मकान का किराया देना है।

बार्थिविक की तरफ़ देखती है।

ग़रीबों पर सभी दांत लगाए रहते हैं।

जैक : सचमुच मुझे तो कुछ याद नहीं। रात की कोई बात मुझे याद नहीं है।

सिर पर हाथ रखता है।

बादल-सा छा गया है। और सिर में दर्द भी ज़ोर का हो रहा है।

अपरिचित : लेकिन आपने रुपये तो लिये थे। यह आप नहीं भूल सकते। आपने कहा भी था कि कैसा चरका दिया।

जैक : खैर, तो यहां होगा। हां, अब मुझे कुछ-कुछ याद आ रहा है। मगर मैंने उसे लिया ही क्यों था?

बार्थिविक : हां, तुमने लिया ही क्यों, यही तो मैं पूछता हूं?

वह तेज़ी से खिड़की की तरफ़ घूम जाता है।

अपरिचित : **(मुस्कराकर)** तुम अपने होश में न थे, ठीक है न?

जैक : **(शर्म से मुस्कराकर)** मुझे बहुत खेद है। लेकिन अब मैं क्या कर सकता हूं?

बार्थिविक : हां, कर सकते हो, तुम उसका रुपया लौटा सकते हो।

जैक : मैं जाकर तलाश करता हूं, लेकिन सचमुच मेरे पास रुपये हैं नहीं।

वह जल्दी से चला जाता है, और बार्थिविक एक कुर्सी

रखकर उस स्त्री को बैठने का इशारा करता है। तब होंठ सिकोड़े हुए वह खड़ा हो जाता है और उसे ध्यान से देखता है। वह बैठ जाती है और उसकी तरफ़ दबी हुई आंख से देखती है। तब वह घूम जाती है और नकाब खींचकर चोरी से अपनी आंखें पोंछती है। इतने में जैक आ जाता है।

जैक : **(खाली बटुए को दिखाता हुआ खिन्न भाव से)** यही है न? मैंने चारों तरफ़ छान डाला थैली कहीं नहीं मिलती। तुम्हें ठीक याद है, वह इस बटुए में थी?

अपरिचित : **(आंखों में आंसू भरकर)** याद? हां, खूब याद है। लाल रंग की रेशमी थैली थी। मेरे पास जो कुछ था, सब उसी में था।

जैक : मुझे सचमुच बड़ा दुःख है। सिर में बड़ा दर्द हो रहा है। मैंने खिदमतगार से पूछा, लेकिन वह कहता है कि मैंने नहीं पाया।

अपरिचित : मेरे रुपये आपको देने पड़ेंगे।

जैक : ओह! सब तय हो जायगा, मैं सब ठीक कर दूंगा। कितने रुपये थे?

अपरिचित : **(खिन्न होकर)** सात पौण्ड थे और बारह शिलिंग थे। वही मेरी कुल संपत्ति थी।

जैक : सब ठीक हो जायगा। मैं तुम्हें एक चेक भेज दूंगा।

अपरिचित **(उत्सुकता से)** नहीं साहब, मुझे अभी दे दीजिए, जो कुछ मेरी थैली में था, वह सब दे दीजिए। मुझे आज किराया देना है, वे सब एक दिन के लिए भी न मानेंगे। मैं पहिले ही पन्द्रह दिन पिछड़ गयी हूं।

जैक मुझे बहुत दुःख है, मैं सच कहता हूं मेरे जेब में एक कौड़ी भी नहीं है।

वह दबी आंखों से बार्थिविक को देखता है।

अपरिचित **(उत्तेजित होकर)** चलिए-चलिए, मैं न मानूंगी, ये मेरे रुपये हैं और आपने ले लिये हैं। मैं बग़ैर रुपया लिय घर न जाऊंगी। सब मुझे निकाल देंगे।

जैक **(सिर पकड़कर)** लेकिन जब मेरे पास कुछ है ही नहीं तो दूं क्या? मैं कह नहीं रहा हूं कि मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है?

अपरिचित **(अपना रुमाल नोचकर)** देखिए मुझे टालिए नहीं।

विनय से दोनों हाथ जोड़ लेती है, तब एकाएक सरोष होकर कहती है।

अगर तुम न दोगे, तो मैं दावा कर दूंगी, यह साफ़ चोरी है...चोरी।

बार्थिविक **(बेचैनी से)** ज़रा ठहर जाइए। न्याय तो यही है कि आपके रुपये दिए जाएं और मैं इस मामले को तय किए देता हूं।

रुपये निकालकर।

यह आठ पौण्ड हैं, फ़ाज़िल पैसे थैली की कीमत और गाड़ी का

किराया समझ लीजिए। मुझे और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। धन्यवाद देने की भी कोई ज़रूरत नहीं।

घंटी बजाकर वह चुपचाप दरवाज़ा खोल देता है, अपरिचित स्त्री रुपये को बटुए में रख लेती है और जैक की तरफ़ से बार्थिविक को देखती है। उसका मुख पुलकित हो उठता है, वह मुंह अपने हाथ से छिपा लेती है और चुपके से चली जाती है। बार्थिविक दरवाज़ा बन्द कर देती है।

बार्थिविक : (गम्भीर भाव से) क्यों, कैसी दिल्लगी रही।

जैक : (विरक्त भाव से) संयोग की बात।

बार्थिविक : इस तरह वह चालीस पौण्ड उड़ गए। पहिले एक बात फिर दूसरी बात। मैं एक बार फिर पूछता हूं कि अगर मैं न होता, तो तुम्हारी क्या दशा होती? मालूम होता है, तुमने ईमान को ताक पर रख दिया। तुम उन लोगों में हो जो समाज के लिए कलंक हैं। तुम जो कुछ न कर गुज़रो, वह थोड़ा है। नहीं मालूम तुम्हारी मां क्या कहेंगी। जहां तक मैं समझता हूं तुम्हारे इस चलन के लिए कोई उज्र नहीं हो सकता। यह चित्त की दुर्बलता है। अगर किसी ग़रीब आदमी ने यह काम किया होता तो क्या तुम समझते हो, उसके साथ लेशमात्र भी दया की जाती? तुम्हें इसका सबक़ मिलना चाहिए। तुम और तुम्हारी तरह के और आदमी समाज के लिए विष फैलाने वाले हैं। **(क्रोध से)** अब फिर कभी मेरे पास मदद के लिए मत आना। तुम इस योग्य नहीं हो कि तुम्हारी मदद की जाय।

जैक : (अपने पिता की ओर क्रोध से देखता है, उसके मुंह पर लज्जा या पश्चाताप का कोई भाव नहीं है।) अच्छी बात है, न आऊंगा। देखूं आप इसे कहां तक पसन्द करते हैं। इस वक्त भी आपने मेरी मदद न की होती, अगर आपके प्राण इस भय से न सूख जाते कि यह बात पत्रों में छप जाएगी। सिगरेट कहां है?

बार्थिविक : (बेचैनी से उसे देखकर) खैर, अब मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

घंटी बजाता है

इस बार मैं और छोड़ देता हूं।

मारलो आता है

जाओ।

टाइम्स के पीछे अपना मुंह छिपा लेता है

जैक : (प्रसन्न होकर) सिगरेट कहां है, मारलो?

मारलो : मैंने रात ह्विस्की के साथ सिगरेट का बक्स भी रख दिया था। फिर इस वक्त उसका कहीं पता नहीं।

जैक : मेरे कमरे में देखा?

मारलो : जी हां, मैंने सारा घर छान डाला, मैंने नेस्टर सिगरेट के दो टुकड़े तश्तरी में पाए। इससे मालूम होता है, कि आपने रात को पिया होगा

हिचकता हुआ

मेरा तो ख़याल है कि कोई डिबिया को उड़ा ले गया।

जैक : **(बेचैनी से)** चुरा ले गया?

बार्थिविक : क्या चीज़ है। सिगरेट की डिबिया? और तो कोई चीज़ नहीं ग़ायब हुई?

मारलो : जी नहीं, मैंने प्लेट देख लिया।

बार्थिविक : आज सवेरे घर में तो कुछ गड़बड़ न थी, कोई खिड़की खुली तो न थी?

मारलो : जी नहीं...

जैक से आहिस्ता

रात आप अपनी कुंजी दरवाज़े में छोड़ गए थे।

बार्थिविक की नज़र बचाकर कुंजी दे देता है।

जैक : ठीक है।

बार्थिविक : आज सुबह कौन-कौन कमरे में आया था?

मारलो : मैं, व्हिलर और मिसेज़ जोन्स, बस और तो कोई नहीं आया।

बार्थिविक : तुमने मिसेज़ बार्थिविक से पूछा? **(जैक से)** जाकर अपनी मां से पूछो उनके पास तो नहीं है। यह भी कह दो कि खूब देख लें, कोई और चीज़ तो गुम नहीं हुई।

जैक अपनी मां के पास जाता है।

ऐसी बातों से ख़ाहम-ख़ाह चिन्ता हो जाती है।

मारलो : जी हां हुजूर।

बार्थिविक : तुम्हारा किसी पर संदेह है?

मारलो : जी नहीं।

बार्थिविक : यह मिसेज़ जोन्स? वह यहां कितने दिनों से काम कर रही है?

मारलो : इसी महीने से तो आई है।

बार्थिविक : कैसी औरत है?

मारलो : मुझे उससे अधिक परिचय नहीं। देखने में तो सीधी-सादी शरीफ़ औरत मालूम होती है।

बार्थिविक : कमरे में आज झाडू किसने लगाई?

मारलो : व्हीलर और मिसेज़ जोन्स ने।

बार्थिविक : **(अपनी पहली उंगली उठाकर)** अच्छा मिसेज़ जोन्स किसी वक्त कमरे में अकेली भी आई थी?

मारलो : **(उसका चेहरा मद्धिम पड़ जाता है)** जी हां।

बार्थिविक : तुम्हें कैसे मालूम?

मारलो : **(अनिच्छा के भाव से)** मैंने उसे यहां देखा।

बार्थिविक : ह्वीलर भी अकेली इस कमरे में आई थी?

मारलो : जी नहीं। लेकिन जहां तक मैं समझता हूं मिसेज़ जोन्स बहुत ईमानदार—

बार्थिविक : **(हाथ उठाकर)** मैं यह जानना चाहता हूं कि मिसेज़ जोन्स दोपहर तक यहां रही?

मारलो : जी हां—नहीं, नहीं, वह वाबर्ची को तलाश करने तरकारी वाले की दुकान पर गई थी।

बार्थिविक : ठीक! वह इस समय घर में है?

मारलो : जी हां, है।

बार्थिविक : बहुत अच्छा। मैं इस मामले को साफ़ करके ही दम लूंगा। सिद्धान्त के विचार से यह ज़रूरी है कि असली चोर का पता लगाया जाय। यह तो समाज संगठन की जड़ को हिलाने वाली बात है?

मारलो : जी हां।

बार्थिविक : इस मिसेज़ जोन्स की दशा कैसी है? इसका शौहर कहीं काम करता है?

मारलो : काम तो शायद कहीं नहीं करता।

बार्थिविक : बहुत अच्छी बात है। इस विषय में किसी से कुछ मत कहना, ह्वीलर से कहो ज़बान न खोले और मिसेज़ जोन्स को यहां भेजो।

मारलो : बहुत अच्छा।

मारलो चला जाता है। उसका चेहरा बहुत चिंतित है। बार्थिविक वहीं रहता है। उसका चेहरा न्यायगंभीर और कुछ प्रसन्न है, जैसा जांच करने वाले मनुष्यों का हो जाता है। मिसेज़ बार्थिविक और जैक आते हैं।

बार्थिविक : क्यों प्रिये, तुमने तो डिबिया नहीं देखी?

मिसेज़ बार्थिविक: ना! लेकिन कैसी विचित्र बात है जान। मारलो की तो कोई बात ही नहीं। ख़िदमतगारिनों में भी मुझे विश्वास है कोई नहीं—हां बावर्ची।

बार्थिविक : अच्छा बावर्ची?

मिसेज़ बार्थिविक : हां। मुझे किसी पर संदेह करने से घृणा है।

बार्थिविक : इस समय मनोभावों का प्रश्न नहीं, न्याय का प्रश्न है। नीति की रक्षा...।

मिसेज़ बार्थिविक: अगर मज़दूरिनी इसके विषय में कुछ जानती हो, तो मुझे आश्चर्य न होगा। लोरा ने उसकी सिफारिश की थी।

बार्थिविक : **(न्याय के भाव से)** मैंने मिसेज़ जोन्स को बुलाया है। यह मुझ पर छोड़ दो और याद रक्खो जब तक अपराध साबित न हो जाय, कोई अपराधी नहीं है। इसका ख़याल रक्खूंगा। मैं उसे डराना नहीं चाहता,

मैं उसके साथ हर तरह की रिआयत करूंगा। मैंने सुना है बहुत फटेहालों रहती है। अगर हम ग़रीबों के साथ और कुछ न कर सकें तो उनके साथ जहां तक हो सके हमदर्दी तो करनी ही चाहिए।

मिसेज़ जोन्स आती है प्रसन्न मुख होकर।

ओ, गुडमार्निंग मिसेज़ जोन्स।

मिसेज़ जोन्स : **(धीमी और रूखी आवाज़ में)** गुडमार्निंग सर, गुडमार्निंग मैडेम।

बार्थिविक : मैंने सुना है तुम्हारे पति आजकल खाली बैठे हुए हैं?

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर, आजकल उनके पास कोई काम नहीं है।

बार्थिविक : तब तो मेरे ख़याल में वह कुछ कमाते ही न होंगे?

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर, आजकल वह कुछ नहीं कमाते।

बार्थिविक : और तुम्हारे कितने बच्चे हैं?

मिसेज़ जोन्स : तीन बच्चे हैं हुजूर, लेकिन बच्चे बहुत नहीं खाते।

बार्थिविक : सबसे बड़े की क्या उम्र है?

मिसेज़ ज़ोन्स : नौ साल की हुजूर।

बार्थिविक : स्कूल जाते हैं?

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर, तीनों बिना नागा मदरसे जाते हैं।

बार्थिविक : **(कठोरता से)** तो जब तुम दोनों मियां-बीवी काम पर चले जाते हो तो बच्चे खाते क्या हैं?

मिसेज़ जोन्स : हुज़ूर, मैं उन्हें खाना देकर भेजती हूं। लेकिन रोज़ कहां खाना मयस्सर होता है हुजूर, कभी-कभी बेचारों को बिना कुछ भोजन दिए ही भेज देती हूं। हां, जब मेरा मियां कहीं काम से लगा रहता है, तो बच्चों पर बड़ा प्रेम करता है। लेकिन जब खाली हाता है तो उसकी मति ही बदल जाती है।

बार्थिविक : शायद पीता भी है?

मिसेज़ जोन्स : जी हां हुजूर। जब पीता है तो कैसे कह दूं कि नहीं पीता।

बार्थिविक : तब तो शायद तुम्हारे सब रुपये पीने ही में उड़ा देता होगा?

मिसेज़ जोन्स : जी नहीं, वह मेरे रुपये-पैसे नहीं छूते। हां जब अपने होश में नहीं रहते, तब उनका मन बदल जाता है। तब वह मुझे बुरी तरह पीटते हैं।

बार्थिविक : वह है क्या? कौन पेशा करता है?

मिसेज़ जोन्स : पेशा! साईस है हुजूर।

बार्थिविक : साईस! उनकी नौकरी छूट कब से गई?

मिसेज़ जोन्स : उसकी नौकरी छूटे कई महीने हो गए हुजूर। तब से कोई टिकाऊ काम नहीं मिला हुजूर, अब तो मोटरों का ज़माना है। उन्हें कौन पूछता है।

बार्थिविक : तुम्हारी शादी उनसे कब हुई थी मिसेज़ जोन्स?

मिसेज़ जोन्स : आठ साल हुए हुजूर—वही साल—

मिसेज़ बार्थिविक : **(तीव्र स्वर से)** आठ! तुमने तो बड़े लड़के की उम्र नौ साल बतलाई थी?

मिसेज़ जोन्स : हां, हुजूर, इसीलिए तो उनकी नौकरी छूटी। मेरे साथ हरमजदगी की और मालिक ने कहा—ऐसे आदमी को रखने से दूसरे आदमी भी बिगड़ेंगे। निकाल दिया।

बार्थिविक : तुम्हारा मतलब...कुछ ठीक...

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर, जब नौकरी छूट गई तो मुझसे शादी कर ली।

मिसेज़ बार्थिविक : तो शादी के पहिले ही तुम...

बार्थिविक : जाने भी दो प्रिये।

मिसेज़ बार्थिविक : **(क्रोध से)** कितनी बेहयाई की बात है।

बार्थिविक : **(जल्दी से)** तुम आजकल कहां रहती हो मिसेज़ जोन्स?

मिसेज़ जोन्स : हमारे घर नहीं है हुजूर। हमें अपनी बहुत-सी चीज़ अलग कर देनी पड़ीं हुजूर।

बार्थिविक : अलग कर देनी पड़ीं। क्या मतलब? क्या गिरवी रख दीं?

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर, अलग कर दीं। आजकल मरथर स्ट्रीट में रहते हैं हुजूर, यहां से बिलकुल पास है। नं. 34, बस एक कोठरी है।

बार्थिविक : किराया क्या है?

मिसेज़ जोन्स : सजे हुए कमरे के छः शिलिंग हफ्ते के पड़ते हैं हुजूर।

बार्थिविक : तो तुम्हारे जिम्मे किराया बाक़ी भी पड़ा होगा है ?

मिसेज जोन्स : जी हां, कुछ बाकी है। हुजूर।

बार्थिविक : लेकिन तुम्हें अच्छी मज़दूरी मिलती है। क्यों?

मिसेज़ जोन्स : बीफे को एक दिन स्टैमफोर्ड प्लेस में काम करती हूं। सोम, बुद्ध, और सुक्कर को यहां आती हूं। आज तो आधी छुट्टी है हुजूर, कल बैंक बन्द न था।

बार्थिविक : समझ गया। हफ्ते में चार दिन। आधा क्राउन रोज़ पाती हो न? क्यों?

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर और मेरा खाना भी मिलता है। लेकिन जिस दिन आधी छुट्टी होती है उस दिन उठारह पेंस ही मिलते हैं।

बार्थिविक : और तुम्हारा शौहर जो कुछ पाता होगा, पीने में उड़ा देता होगा?

मिरोज़ जोन्स : हां साहब, कभी-कभी उड़ा देते हैं, कभी-कभी मुझे दे देते हैं। अगर उन्हें काम मिले तो करने को तैयार हैं हुजूर, लेकिन मालूम होता है, बहुत से आदमी खाली बैठे हुए हैं।

बार्थिविक : उंह! इन बातों में पड़ने से क्या फायदा। **(सहानुभूति दिखाकर)** यहां तुम्हारा काम बहुत कड़ा तो नहीं है? क्यों?

मिसेज़ जोन्स : नहीं हुजूर, ऐसा कुछ कड़ा तो नहीं है, हां जब रात को सोने नहीं पाती

तब कुछ अखरता है।

बार्थिविक : हूं! और तुम सब कमरों में झाड़ू लगवाती हो। कभी-कभी बावर्ची को बुलाने भी जाना पड़ता है? क्यों न?

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर।

बार्थिविक : आज भी तुम्हें ज़ाना पड़ा था?

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर, भाजी वाले की दुकान तक गई थी।

बार्थिविक : ठीक। तो तुम्हारा शौहर कुछ कमाता नहीं और बदमाश है?

मिसेज़ जोन्स : जी नहीं, बदमाश नहीं है। मैं समझती हूं वह बहुत अच्छा आदमी है। हां, कभी-कभी मुझे पीटता है। मैं उसे छोड़ना नहीं चाहती, हालांकि मेरे मन में आता है कि उसके पास से चली जाऊं क्योंकि मेरी समझ में ही नहीं आता उसके साथ रहूं कैसे। वह आए दिन मुझे मारा करता है। थोड़े दिन हुए, उसने मुझे यहां एक घूंसा मारा था।

अपनी छाती को छूती है।

अभी तक दर्द हो रहा है। मैं तो समझती हूं उसे छोड़ दूं, आप क्या कहते हैं हुजूर?

बार्थिविक : वाह! मैं इस बारे में क्या कह सकता हूं? अपने शौहर को छोड़ देना बुरी बात है, बहुत बुरी बात।

मिसेज़ जोन्स : जी हां, मुझे यही डर लगता है कि उसे छोड़ दूं तो न जाने मेरी क्या गति करे। बड़ा गुस्सैल है, हुजूर।

बार्थिविक : इसमें मामले में मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं तो नीति की बात कहता हूं।

मिसेज़ जोन्स : हां, हुजूर; मैं जानती हूं इन मामलों में कोई मेरी मदद न करेगा। मुझे आप ही कोई राह निकालनी पड़ेगी। उन्हें भी तो ठोकरें खानी पड़ती हैं। लड़कों को बहुत चाहते हैं हुजूर, और उन्हें भूखे मदरसे जाते देखकर उनके दिल पर चोट लगती है।

बार्थिविक : **(जल्दी से)** ख़ैर–धन्यवाद। मेरे जी में आया कुछ तुम्हारा हालचाल पूंछूं। अब मैं तुम्हें और न रोकूंगा।

मिसेज़ जोन्स : आपको धन्यवाद देती हूं, हुजूर।

बार्थिविक : अच्छा, गुडमार्निंग।

मिसेज़ जोन्स : गुडमार्निंग हुजूर, गुडमार्निंग बीवी।

बार्थिविक : **(अपनी पत्नी से आंखें मिलाकर)** ज़रा सुन लो मिसेज़ जोन्स, मैं समझता हूं तुमको बतला देना उचित है, एक चांदी की सिगरेट की डिबिया गायब हो गयी है।

मिसेज़ जोन्स : **(कभी इसका मुंह देखती है, कभी उसका)** मुझे यह सुनकर बहुत दुःख हुआ, हुजूर।

बार्थिविक : तुमने तो शायद उसे नहीं देखा। क्यों ?

समझ जाती है कि मेरे ऊपर सन्देह किया जा रहा है, घबड़ा जाती है।

मिसेज़ जोन्स : कहां थी हुज़ूर? बतला दीजिए।

बार्थिविक : **(बात बनाकर)** मारलो कहां कहता था? इस कमरे में? हां इसी कमरे में?

मिसेज़ जोन्स : जी नहीं, मैंने नहीं देखी। अगर मैं देखतीं तो कह देती।

बार्थिविक : **(उसे उड़ती हुई निगाह से देखकर)** भूल तो नहीं रही हो? खूब याद कर लो।

मिसेज़ जोन्स : **(अविचलित होकर)** खूब याद कर लिया।

धीरे से सिर हिलाकर चुपचाप चली जाती है।

मैंने नहीं देखा और न जानती हूं कि कहां है।

बार्थिविक, उसका बेटा, और पत्नी एक दूसरे की ओर कनखियों से देखते हैं।

परदा गिरता है।

अंक 2

दृश्य पहला

(जोन्स का घर)

[मरथर स्ट्रीट। समय ढाई बजे। कमरे में कोई सामान नहीं है, फटे हुए चिकट कपड़े हैं और रंगी हुई दीवारें। साफ़-सुथरी दरिद्रता झलक रही है। जोन्स आधे कपड़े पहिने चारपाई पर लेटा हुआ है। उसका कोट उसके पैरों पर पड़ा हुआ है और कीचड़ से भरे हुए बूट पास ही ज़मीन पर रक्खे हैं। वह सो रहा है। दरवाज़ा खुलता है, और मिसेज़ जोन्स आती है। वह फटा हुआ काला जाकिट पहने हुए है। सिर पर काली मल्लाहों की-सी टोपी है। वह टाइम्स पत्र में लिपटा हुआ एक पारसल लिये हुए है। पारसल नीचे रख देती है और उसमें से एक एपरन (वह कपड़ा जो काम करने वाली स्त्रियां गाउन के ऊपर लपेट लेती हैं), आधी रोटी, दो प्याज़, तीन आलू, और मांस का एक छोटा-सा टुकड़ा निकालती है। ताक पर से एक चायदान उतारकर उसको धोती है, और एक चाय की पुड़िया में से थोड़ी-सी बारीक चाय डालती है। उसे अंगीठी पर रखती है, और पास ही एक लकड़ी की कुर्सी पर बैठकर रोने लगती है।]

जोन्स : **(जागकर जमुहाई लेता हुआ)** ओह तुम हो। क्या वक्त है?

मिसेज़ जोन्स : **(आंखें पोंछकर और मामूली आवाज में)** ढाई बजे हैं।

जोन्स : तुम इतनी जल्दी क्यों लौट आई?

मिसेज़ जोन्स : आज आधे दिन काम था, जेम।

जोन्स : **(चित्त लेटा हुआ और नींद भरी आवाज़ में)** कुछ खाने के लिये है?

मिसेज़ जोन्स : मिसेज़ बार्थिविक के बावर्ची ने मुझे थोड़ा-सा मांस दिया है। मैं उसको उबालने जा रही हूं।

पकाने की तैयारी करती है

किराये के 14 शिलिंग बाकी हैं जेम, और मेरे पास कुल 2 शिलिंग और चार पेन्स रह गए हैं। आज ही मांगने आते होंगे।

जोन्स : **(उसकी तरफ़ फिरकर, कुहनियों के बल लेटा हुआ)** आएं और थैली उठा ले जायं। काम खोजते-खोजते तो मैं तंग आ गया हूं। मैं क्यों काम के लिए चक्कर लगाता हूं? जैसे गिलहरी पिंजरे में नाचती है। 'हुज़ूर मुझे काम दीजिए'—'हुज़ूर एक आदमी रख लें'—'मेरी बीवी और तीन बच्चे हैं', इन बातों से मेरा जी ऊब गया। इससे तो

अच्छा यही है, कि यहीं पड़े-पड़े मर जाऊं। लोग मुझसे कहते हैं—'जोन्स, कल जुलूस में शरीक हो जाव, एक झंडा उठा लो, और लाल मुंह वाले नेताओं की बातें सुनो। फिर अपना-सा मुंह लिये घर लौट आओ।' कुछ लोगों को यह पसंद होगा। जब मैं काम की टोह में जाता हूं और उन बदमाशों को अपनी ओर सिर से पैर तक ताकते देखता हूं, तो जान पड़ता है, मेरे हज़ारों सांप काट रहे हैं। मैं किसी से कोई रियायत नहीं चाहता। एक आदमी पसीने की कमाई खाना चाहता है, पर उसे काम नहीं मिलता। कैसी दिल्लगी है। एक आदमी छाती फाड़कर काम करना चाहता है, कि किसी तरह प्राण बचें और उसे कोई नहीं पूछता। यह न्याय है!—यह स्वाधीनता है! और न जाने क्या-क्या है।

दीवार की तरफ़ मुंह फेर लेता है

तुम इतनी सीधी-सादी हो, तुम नहीं जानतीं कि मेरे भीतर कितनी हलचल मची हुई है। मैं इन बच्चों के खेल से तंग आ गया हूं। अगर कोई उन्हें चाहता है, तो मेरे पास आए। **मिसेज़ जोन्स पकाना बन्द कर देती है, और मेज़ के पास चुपचाप खड़ी हो जाती है।** मैं सब कुछ करके हार गया। जो कुछ होने वाला है, उससे नहीं डरता। मेरी बातों की गिरह बांध लो। अगर तुम समझती हो, कि मैं उनके पैरों पर गिरूंगा, तो तुम्हारी भूल है। मैं किसी से काम न मांगूंगा चाहे जान ही क्यों न जाती रहे। तुम इस तरह क्यों खड़ी हो, जैसे कोई दुखियारी असहाय मूरत हो? इसी से मैं तुम्हें छोड़ता नहीं। अब तुम्हें काम करने का ढंग आ गया। लेकिन इतना सीधापन भी किस काम का। तुम्हारे मुंह में तो जैसे जीभ ही नहीं है।

मिसेज़ जोन्स : **(धीरे से)** जब तुम अपने होश में रहते हो, तो ऐसी ऊटपटांग बातें करते हो, जैसे नशे में भी नहीं करते। अगर तुम्हें काम न मिला तो हमारी गुजर कैसे होगी? मालिक मकान हमें यहां रहने न देगा। वह तो आज अपने रुपए के लिए आता होगा।

जोन्स : तुम्हारे इस बार्थिविक को देखता हूं, रोज चैन की बंसी बजाता हुआ पार्लियामेंट में जाता है और वहां गला फाड़-फाड़कर चिल्लाता है। और उसके छोकरे को भी देखता हूं, जो शान से इधर-उधर ऐंठता फिरता है। उन्होंने ऐसा कौन सा काम किया कि वे यों गुलछर्रे उड़ायें। अपनी ज़िंदगी में कभी एक दिन भी उन्होंने काम नहीं किया। मैं उन्हें हर रोज देखता हूं—

मिसेज़ जोन्स : मैं यह चाहती हूं, कि तुम इस तरह मेरे पीछे-पीछे न लगे रहा करो। न जाने तुम क्यों मेरे पीछे लगे रहते हो। तुम्हारा वहां घूमना उन्हें अच्छा नहीं लगता। उन लोगों को भी शंक होता है।

जोन्स : मेरा जहां जी चाहेगा, वहां जाऊंगा। आखिर कहां जाऊं। उस दिन एजुवेयर रोड पर एक जगह गया। मैनेजर से बोला—'हुज़ूर मुझे रख लीजिये; मुझे दो महीने से कोई काम नहीं मिला; बिना काम किए अब रहा नहीं जाता। मैं काम करने वाला आदमी हूं। आप जो काम चाहें मुझे दें। मैं किसी काम से नहीं डरता।' उसने कहा, 'भले आदमी, सुबह से इस वक्त तक तीस आदमी आ चुके हैं। मैंने पहले दो आदमी ले लिये। इससे ज्यादा की मुझे ज़रूरत नहीं।' मैं बोला—'आपको धन्यवाद देता हूं साहब, संसार में आग ही लग जाय तो अच्छा।' उसने कहा—'यों गाली बकने से काम नहीं मिलेगा, अब चल दो।' **(हंसता है)** चाहे तुम भूखों मर रहे हो, पर तुम्हें मुंह खोलने का हुक्म नहीं। इसका ख़याल भी मत करो। चुपचाप सहते जाओ। यही समझदार आदमियों का दस्तूर है। ज़रा दूर और आगे चला, तो एक लेडी ने मुझसे कहा—

आवाज़ नीची करके।

'क्यों जी कुछ काम करके दो-चार पैसे कमाना चाहते हो?' और मुझे कुत्ता दिया कि उसे दुकान के बाहर पकड़े खड़ा रहूं। खानसामे की तरह मोटा था।—मनों मांस खा गया होगा। उसको पालने में ढेरों मांस लग गया होगा। वह यह समझ कर दिल में खुश हो रही थी, कि मैंने एक गरीब आदमी का उपकार किया, लेकिन मैं देख रहा था कि वह तांबे के ज़ीने पर खड़ी मुझे ताक रही थी, कि मैं उसका मोटा-ताज़ा कुत्ता लेकर कहीं रफूचक्कर न हो जाऊं।

वह चारपाई की पट्टी पर बैठ जाता है, और बूट पहिनता है। तब ऊपर ताककर

तुम सोच क्या रही हो?

मिन्नत करके

क्या तुम्हारे मुंह में ज़बान नहीं है?

कुंडी खटकती हे, और घर की मालकिन मिसेज़ सेडन आती है। वह एक चिंतित, फूहड़ और जल्दबाज औरत है। मज़दूरों के से कपड़े पहिने हुए है।

मिसेज़ सेडन : मिसेज़ जोन्स! जब तुम आई तब हमें तुम्हारी आहट मिल गई थी। मैंने अपने शौहर से कहा, लेकिन वह कहते हैं कि मैं एक दिन के लिए भी नहीं मान सकता।

जोन्स : **(त्योरियां चढ़ाकर मसखरेपन से)** शौहर को बकने दो, तुम स्वाधीन स्त्रियों की तरह अपनी मरज़ी पर चलो। यह लो जैनी, यह उन्हें दे दो।

अपने पाजामे की जेब से एक सावरेन निकालकर वह अपनी

स्त्री की ओर फेंकता है। स्त्री हांफकर उसे अपने एपरन में ले लेती है। जोन्स फिर जूते का फीता बांधने लगता है।

मिसेज़ जोन्स : **(सावरेन को छिपाकर मलती हुई)** मुझे खेद है कि अबकी इतनी देर हो गई। तुम्हारे चौदह शिलिंग आते हैं। यह सावरेन लो। मुझे 6 शिलिंग लौटा दो। **(मिसेज़ सेडन सावरेन ले लेती है और इधर-उधर घुमाती है।)**

जोन्स : **(जूते की तरफ़ आंखें किये हुए)** तुम्हें अचरज हो रहा होगा, क्यों?

मिसेज़ सेडन : तुमको बहुत-बहुत धन्यवाद। तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की। **(वह सचमुच विस्मित हो जाती है।)** मैं रेज गी लाए देती हूं।

जोन्स : **(मुंह बनाकर)** इसकी क्या जरूरत है ?

मिसेज सेडन : तुमको बहुत-बहुत धन्यवाद। तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की।

चली जाती है।

मिसेज़ जोन्स जोन्स की ओर ताकती है जो अभी तक फीते बांध रहा है।

जोन्स : आज ज़रा तक़दीर खुल गई। **(लाल थैली और कुछ फुटकल रेज़गियां निकालकर)** एक थैली पड़ी मिल गई। सात पौण्ड से कुछ ज्यादा हैं।

मिसेज जोन्स : यह क्या किया, जेम्स ?

जोन्स : यह क्या किया, जेम्स ? किया क्या। पड़ी मिली, उठा ली। खोई हुई चीज़ है। और क्या!

मिसेज़ जोन्स : लेकिन उस पर किसी का नाम तो होगा। या कुछ और!

जोन्स : नाम? नहीं, किसी का नाम नहीं है। यह उन लोगों की नहीं है जो मुलाकाती कार्ड लेकर चलते हैं। यह किसी पक्की लेडी की है। ज़रा सूंघो तो!

वह थैली को उसकी तरफ़ फेंकता है। वह उसे धीरे से नाक के पास ले जाती है।

अब तुम्हीं बताओ मुझे क्या करना चाहिए था। तुम्हीं बताओ।

मिसेज़ जोन्स : **(थैली को रखकर)** यह तो मैं नहीं बता सकती, जेम्स, कि तुम्हें क्या करना चाहिए था। लेकिन रुपये तुम्हारे न थे। तुमने किसी दूसरे के रुपये ले लिये।

जोन्स : जिसने पाया उसका हो गया। मैं इसे उन दिनों की मजूरी समझूंगा जब मैं गलियों में उस चीज़ के लिए ठोकर खाता फिरा जो मेरा हक है। मैं इसे पिछली मजूरी समझकर ले रहा हूं। **(विचित्र गर्व से)** रुपये मेरी जेब में हैं, जानी।

मिसेज जोन्स फिर भोजन बनाने की तैयारी करने लगती हैं। जोन्स उसकी ओर कनखियों से देख रहा है।

हां, मेरी जेब में रुपये हैं। और अबकी मैं इसे उड़ाऊंगा नहीं, इसी से केनाडा चला जाऊंगा। तुम्हें भी एक पौण्ड दे दूंगा। **(चुप)** तुम मुझे छोड़ने की कई बार धमकी दे चुकी हो, तुमने बारहा मुझसे कहा है कि मैं तुम्हारे ऊपर बड़ी सख ती करता हूं। मैं यहां से चला जाऊंगा तब तो तुम चैन से रहोगी।

मिसेज जोन्स : **(शिथिलता से)** सख ती तो तुमने मेरे साथ की है, जोन्स, और मैं तुम्हें जाने से रोक भी नहीं सकती। लेकिन तुम्हारे जाने की मुझे खुशी होगी या नहीं, यह मैं नहीं जानती।

जोन्स : इसमे मेरी तक दीर पलट जायगी। जब से तुम्हारे साथ बयाह हुआ तब से कभी भले दिन न देखे। **(कुछ नर्मी से)** और न तुम्हें कभी पिकनिक ही मिला।

मिसेज जोन्स : अगर हमारी-तुम्हारी मुलाक ात न हुई होती तो बहुत अच्छा होता। हम लोग एक दूसरे के लिए बनाये ही नहीं गए। लेकिन तुम हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ गए, और अब तक पड़े हुए हो। और तुम मेरे साथ कितनी बुरी तरह पेश आते हो। जेम्स—उस छोकरी रायस के फेर में पड़े रहते हो? तुम्हें शायद इन लड़कों का कभी ख याल भी नहीं आता जिन्हें हमने पैदा किया है। तुम नहीं समझते कि उनके पालने में मुझे कितनी कठिनाई पड़ती है, और तुम्हारे चले जाने पर उन पर क्या पड़ेगी।

जोन्स : **(खिन्न मन से कमरे में टहलता हुआ)**अगर तुम समझ रही हो कि मैं लड़कों को छोड़ दूंगा तो तुम भूल कर रही हो।

मिसेज जोन्स : यह तो मैं जानती हूं कि तुम उन्हें प्यार करते हो।

जोन्स : **(थैली को उंगलियों पर फिराता हुआ, कुछ क्रोध से)** अभी तो यों ही चलने दो। मैं न रहूंगा तो छोकरे तुम्हारे साथ मज़े में रहेंगे। अगर मैं जानता कि यह हाल होगा तो मैं एक को भी न पैदा करता। क्या फायदा है इससे कि लड़कों को पैदा करके इस विपत्ति में डाल दिया जाय? यह पाप है, और कुछ नहीं। लेकिन हमारी आंखें बहुत देर में खुलती हैं। संसार का यही ढंग है।

थैली को फिर जेब में रख लेता है।

मिसेज जोन्स : हां, यह इन बेचारों के हक में बहुत अच्छा होता। लेकिन हैं तो यह तुम्हारे ही लड़के, और मुझे तुम्हारे मुंह से ऐसी बातें सुनकर अचरज होता है। अगर मेरे पास यह न रहें तो मेरा तो ज रा भी जी न लगे।

जोन्स : **(धुन्नाया हुआ)** यही सबका हाल है। अगर मैं वहां कुछ कमा सका—

उसे अपना कोट हिलाते देखकर, कठोर स्वर में

कोट मत छुओ।

चांदी की ड़िबिया जेब से गिर पड़ती है और सिगरेट चारपाई पर बिखर जाते हैं। डिबिया को वह उठा लेती है और उसे ध्यान से देखती है। वह झपटकर उसके हाथ से डिबिया छीन लेता है।

मिसेज जोन्स : **(चारपाई को टेककर झुकी हुई)** ओ जेम! ओ जेम!

जोन्स : **(डिबिया को मेज़ पर पटककर)** फ जूल बक-बक मत करो। जब मैं यहां से चलूंगा तो इस डिबिया को उसी थैली के साथ पानी में डाल दूंगा। मैंने उसे उस वक्त उठा लिया जब मैं नशे में था; और नशे में जो काम किये जाते हैं, उसका जि म्मेदार कोई नहीं होता, यह ब्रह्मवाक्य है। मुझे इसकी क्या ज रूरत है, मैं इसे लेकर करूंगा क्या? मैंने जलकर दम्भ से इसे निकाल लिया था। मैं तुमसे कह चुका मैं चोर नहीं हूं, और अगर तुमने मुझे चोर कहा तो बुरा होगा।

मिसेज जोन्स : **(एपरन की डोरी को ऐंठती हुई)** यह मिसेज बार्थिविक की है। तुमने मेरे नाम में बट्टा लगा दिया। अरे जेम, तुम्हें यह सूझी क्या?

जोन्स : क्या मतलब?

मिसेज जोन्स : वहां इसकी तलाश हो रही है। लोगों का मुझ पर शुभा है। तुम्हें यह सूझी क्या, जेम?

जोन्स : मैं तुमसे कह चुका मैं नशे में था। मुझे इसकी चाह नहीं है। यह मेरे किस काम की है। अगर मैं इसे गिरो रखने जाऊं तो पकड़ जाऊं। मैं चोर नहीं हूं। अगर मैं चोर हूं तो लौंडा बार्थिविक मुझसे कहीं बड़ा चोर है। यह थैली जो मैंने पड़ी पाई वही एक लेडी के घर से उठा लाया था। लेडी से कुछ झगड़ा हो गया, बस उसने उस बेचारी की थैली उड़ा ली। बराबर कहता रहा, कैसा चरका दिया। उसने लेडी को चरका दिया। मैंने लौंडे को चरका दिया। पल्ले सिरे का मक्खीचूस है। और देख लेना उसका बाल भी बांका न होगा।

मिसेज जोन्स : **(मानो आप ही आप बातें कर रही हो)** ओ जेम! हमारी लगी लगाई रोज ी चली जायगी?

जोन्स : अगर ऐसा हुआ तो मैं भी उनकी ख़बर लूंगा। न थैली कहीं गई है, न लौंडा बार्थिविक कहीं गया है।

मिसेज़ जोन्स मेज के पास आती है और डिबिया को उठा लेना चाहती है, जोन्स उसका हाथ पकड़ लेता है।

तुम्हें उससे क्या मतलब है? मैं कहता हूं सीधे से रख दो।

मिसेज़ जोन्स : मैं इसे लौटा दूंगी और जो-जो हुआ है सब साफ़-साफ़ कह दूंगी।

वह उसके हाथ से डिबिया छीन लेना चाहती है।

जोन्स : न मानोगी तुम?

वह डिबिया को छोड़ देता है और गुर्राकर उस पर झपटता

है। वह चारपाई के उस पार चली जाती है। वह उसके पीछे लपकता है। एक कुरसी उलट जाती है। दरवाज़ा खुलता है और स्नो अन्दर आता है। वह खुफिया पुलिस का आदमी है। इस वक्त सादे कपड़े पहने हुए है। उसकी मूंछें कतरी हुई हैं। जोन्स हाथ गिरा देता है। मिसेज जोन्स हांफती हुई खिड़की के पास खड़ी हो जाती है। स्नो तेज़ी से मेज़ की तरफ जाता है और डिबिया उठा लेता है।

स्नो : अच्छा यहां तो चुहल हो रही है। जिस चीज़ की तलाश में था वही मिल गई। जे॰ बी॰ ठीक वही है।

वह दरवाजे के पास जाता है और डिबिया के अक्षरों को ग़ौर से देखता है। मिसेज़ जोन्स से कहता है—

मैं पुलिस का अफसर हूं। तुम्हीं मिसेज़ जोन्स हो?

मिसेज़ जोन्स : जी हां।

स्नो : मुझे हुक्म है कि तुम्हें जे॰ बार्थिविक, मेम्बर पार्लिमेण्ट नं॰ 6 राकिंघम गेट की यह डिबिया चुरा लेने के अपराध में पकड़ लूं। तुम्हारा बयान ठीक न हुआ तो तुम फंस जाओगी। क्या कहती हो?

मिसेज़ जोन्स : **(धीमे स्वर में। वह अभी तक हांफ रही है और छाती पर हाथ रखे हुए है)** मैं सच कहती हूं, साहब, मैंने इसे नहीं लिया। मैं पराई चीज़ कभी छूती ही नहीं, मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती।

स्नो : तुम आज सवेरे वहां गई थीं, जिस कमरे में यह डिबिया थी उसमें तुमने झाड़ू लगाई, तुम कमरे में अकेली थीं। डिबिया यहां तुम्हारे घर में रखी हुई है। फिर भी तुम कहती हो मैंने नहीं लिया?

मिसेज़ जोन्स : जी हां, जो चीज़ नहीं ली, उसे कैसे कह दूं कि ली है।

स्नो : तब वह डिबिया यहां कैसे आ गई?

मिसेज़ जोन्स : मैं इस विषय में कुछ न कहना ही उचित समझती हूं।

स्नो : यह तुम्हारे पति हैं?

मिसेज़ जोन्स : जी हां, यह मेरे पति हैं।

स्नो : मैं इन्हें गिरफ़्तार करने जा रहा हूं। तुम्हें कुछ कहना तो नहीं है?

जोन्स सिर झुकाए मौन बैठा रहता है।

तो ठीक है। चलो मिसेज़ जोन्स। मैं तुमको इतना ही कष्ट दूंगा कि चुपचाप मेरे साथ चली आओ।

मिसेज़ जोन्स : **(हाथ मलते हुए)** अगर मैंने लिया होता तो मैं यह कभी न कहती कि मैंने नहीं लिया—मैंने नहीं लिया, आपसे सच कहती हूं। यह मैं जानती हूं कि देखने में मैं ही अपराधिन हूं, लेकिन असली बात मैं नहीं बता सकती। मेरे बच्चे मदरसे गए हैं, थोड़ी देर में आते होंगे।

मुझे न पावेंगे तो उन बेचारों का न जाने क्या हाल होगा।

स्नो : तुम्हारा पति उनकी देखभाल कर लेगा, घबराने की कोई बात नहीं।

वह उसका हाथ आहिस्ता से पकड़ता है।

जोन्स : तुम उसका हाथ छोड़ दो, वह ठीक कहती है। डिबिया मैंने ली।

स्नो : **(उसकी तरफ आंखें उठाकर)** शाबाश! शाबाश! बहादुर आदमी हो। चलो मिसेज़ जोन्स।

जोन्स : **(क्रोध से)** उसे छोड़ दे, सुअर। वह मेरी बीवी है। वह शरीफ़ औरत है। अगर उसे पकड़ा तो तुम जानोगे।

स्नो : जरा होश में आओ। इन बातों से क्या फायदा। ज़बान संभालकर बात करो—खैरियत इसी में है।

वह मुंह में सीटी लगाता है और स्त्री को द्वार की ओर खींचता है।

जोन्स : **(झपटकर)** उसे छोड़ दो और हाथ हटा लो, नहीं हड्डी तोड़ दूंगा। उसे क्यों नहीं छोड़ता। मैं तो कह रहा हूं कि मैंने ली है।

स्नो : **(सीटी बजाकर)** हाथ हटा लो, नहीं मैं तुम्हें भी पकड़ लूंगा। अच्छा न मानोगे? **जोन्स उससे लिपट जाता है और उसे एक घूंसा मारता है। एक पुलिसमैन वर्दी पहने हुए आता है। ज़रा देर हाथापाई होती है, और जोन्स पकड़ लिया जाता है। मिसेज़ जोन्स अपने हाथ उठाती है और उनके ऊपर सिर झुका देती है।**

पर्दा गिरता है।

दृश्य दूसरा

[बार्थिविक का भोजनालय, वही शाम है। बार्थिविक-परिवार फल और मिठाइयां खा रहा है।]

मिसेज़ बार्थिविक : जान।

अखरोटों के छिलकों के टूटने की आवाज़ आती है।

बार्थिविक : तुम इन अखरोटों का हाल उनसे क्यों नहीं कहती, खाए नहीं जाते।

एक गरी मुंह में रख लेता है।

मिसेज़ बार्थिविक : यह इस चीज़ का मौसिम नहीं है। मैंने होलीरूड से कहा था।

बार्थिविक अपना गिलास पोर्ट से भरता है।

जैक : दादा, ज़रा सरौता बढ़ाइएगा।

बार्थिविक सरौता बढ़ा देता है। वह किसी विचार में डूबा हुआ मालूम होता है।

मिसेज़ बार्थिविक : लेडी होलीरूड बहुत मोटी हो गयी हैं। मैं यह बहुत दिनों से देख रही हूं।

बार्थिविक : **(अनमने भाव से)** मोटी?

वह सरौता उठा लेता है—चेहरे पर लापरवाही झलकने लगती है।

होलीरूड परिवार का नौकरों से कुछ झगड़ा हो गया था, क्यों?

जैक : दादा, ज़रा सरौता।

बार्थिविक : **(सरौता बढ़ाते हुए)** समाचार पत्रों में निकला था। रसोइयादारिन थी न?

मिसेज़ बार्थिविक : नहीं, खिदमतगारिन थी। मैंने लेडी होलीरूड से बातचीत की थी। वह लड़की अपने प्रेमी को मिलने के लिए बुलाया करती थी।

बार्थिविक : **(बेचैनी से)** मेरी समझ में उन्हें...

मिसेज़ बार्थिविक : तुम क्या कहते हो जान, और दूसरा रास्ता ही क्या था? सोचो, दूसरे नौकरों पर क्या असर पड़ता।

बार्थिविक : हां, बात तो ठीक थी—लेकिन मैं यह नहीं सोच रहा था।

जैक : **(छेड़ने के लिए)** दादा, सरौता।

बार्थिविक सरौता बढ़ा देता है।

मिसेज़ बार्थिविक : लेडी होलीरूड ने मुझसे कहा—'मैंने उसे बुलाया और उससे कहा, फ़ौरन मेरे घर से निकल जा। मैं तुम्हारे चाल-चलन को निंदनीय समझती हूं। मैं कह नहीं सकती। मैं नहीं जानती, और न मैं जानना चाहती हूं कि तुम क्या कर रही थी। मैं सिद्धान्त की रक्षा के लिए तुम्हें अलग कर रही हूं। मेरे पास सिफारिश के लिए मत आना।' इस पर उस लड़की ने कहा—'अगर आप मुझे नोटिस नहीं देंगी तो मुझे एक महीने की तनख़्वाह दे दीजिए। मैंने अपनी इज़्ज़त में दाग़ नहीं लगाया। मैंने कुछ नहीं किया।—कुछ नहीं किया।'

बार्थिविक : अच्छा!

मिसेज़ बार्थिविक : नौकर अब सिर बहुत चढ़ गए हैं, वह सब इस बुरी तरह मिले रहते हैं, कि कुछ मालूम ही नहीं होता कि उनके मन में क्या है। ऐसा जान पड़ता है कि तुम्हें न मालूम हो इसलिए सबों ने गुटकर लिया हो। यहां तक कि मारलो का भी यही हाल है। ऐसा मालूम होता है, कि वह अपने मन की असली बात किसी पर खुलने ही नहीं देता। मुझे इस छिपा-चोरी से चिढ़ है। इससे फिर किसी पर भरोसा नहीं रहता। कभी-कभी मेरा ऐसा जी चाहता है, कि उसका कान पकड़कर हिलाऊं।

जैक : मारलो बहुत भलामानुस है। यह कोई अच्छी बात नहीं है, कि हमारी बातें हर एक आदमी जान ले।

बार्थिविक : इसकी तो चर्चा न करना ही अच्छा।

मिसेज़ बार्थिविक : सब नीच जातों का यही हाल है, तुम यह नहीं बतला सकते कि

वह कब सच बोल रहे हैं। आज जब मैं होलीरूड के घर से चलने के बाद बाज़ार गई, तो इन बेकार आदमियों में से एक आकर मुझसे बातें करने लगा। मैं समझती हूं मुझमें और गाड़ी में केवल बीस गज़ का अंतर था। लेकिन ऐसा मालूम हुआ कि वह सड़क फाड़कर निकल आया।

बार्थिविक : अच्छा! आजकल किसी से बातचीत करने में बहुत होशियार रहना चाहिए। न जाने कैसा आदमी हो।

मिसेज़ बार्थिविक : मैंने उसे कुछ जवाब थोड़े ही दिया, लेकिन मुझे तुरंत मालूम हो गया, कि वह झूठ बोल रहा है।

बार्थिविक : **(एक अखरोट तोड़कर)** यह बड़ा अच्छा नियम है। उनकी आंखों को देखना चाहिए।

जैक : दादा, ज़रा सरौता।

बार्थिविक : **(सरौता बढ़ाकर)** अगर उनकी निगाह सीधी होती है तो कभी-कभी मैं छः पेंस दे देता हूं। यह मेरे नियम के विरुद्ध है, लेकिन इनकार करते तो नहीं बनता। अगर तुम्हें यह दिखाई दे कि वे सुस्त, काहिल और कामचोर हैं, तो समझ लो कि शराबी या कुछ ऐसे ही हैं।

मिसेज़ बार्थिविक : इस आदमी की आंखें बड़ी डरावनी थीं, वह ऐसे ताकता था, मानो किसी का खून कर डालेगा। उसने कहा—मेरे पास आज खाने को कुछ नहीं है। ठीक इसी तरह।

बार्थिविक : विलियम क्या कर रहा था? उसे वहां खड़ा रहना चाहिए था।

जैक : **(अपनी गिलास नाक के पास ले जाकर)** क्यों दादा! क्या यही सन् 63 की है?

बार्थिविक गिलास को आंखों के पास किए हुए है। वह उसे नीचे करके नाक के पास ले जाता है।

मिसेज़ बार्थिविक : मुझे उन लोगों से घृणा है जो सच नहीं बोलते।

बाप और बेटे गिलास के पीछे से आंखें मिलाते है।

सच बोलने में लगता ही क्या है, मुझे तो यह बड़ा आसान मालूम पड़ता है। असली बात क्या है। इसका पता ही नहीं चलता। ऐसा मालूम होता है, जैसे कोई हमें बना रहा हो।

बार्थिविक : **(मानो फैसला सुना रहा हो)** नीची ज़ातें अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारती हैं, अगर हमारे ऊपर भरोसा रक्खें तो उनकी दशा इतनी बुरी न हो।

मिसेज़ बार्थिविक : लेकिन उस पर भी उन्हें संभालना मुश्किल है। आज मिसेज़ जोन्स ही को देखो।

बार्थिविक : इस विषय में मैं वही करूंगा जो न्यायसंगत है। अभी तीसरे पहर मैं रोपर से मिला था। मैंने यह माजरा उससे कहा, वह आ रहा होगा,

यह सब खुफिया पुलीस के बयान पर है। मुझे तो बहुत संदेह है। मैंने इस पर बहुत विचार किया है।

मिसेज़ बार्थिविक : वह औरत मेरी आंखों में ज़रा भी नहीं जंची। उसे किसी बात की शर्म ही नहीं मालूम होती थी। देखो, वहीं मामला जिसकी वह चर्चा कर रही थी। जब वह और उसका मर्द जवान थे। कैसी बेहयाई की बात थी और वह भी तुम्हारे और जैक के सामने। मेरा जी चाहता था कि उसे कमरे से निकाल दूं। .

बार्थिविक : ओह! वह तो जैसे हैं...सब जानते हैं, पर ऐसी बातों पर ग़ौर करते समय हमें तो सोच लेना चाहिये—

मिसेज़ बार्थिविक : शायद तुम कहोगे कि उस आदमी के मालिक ने उसे निकाल देने में ग़लती की?

बार्थिविक : बिलकुल नहीं। इस विषय में मुझे कोई संदेह नहीं है। मैं अपने दिल से यह पूछता हूं—

जैक : दादा, थोड़ी सी पोर्ट!

बार्थिविक : **(सूर्य के उदय और अस्त के ठीक-ठीक नक़ल में बोतल को घुमाते हुए)** मैं अपने दिल से यह पूछता हूं कि हम किसी को नौकर रखने के पहिले उसके बारे में काफ़ी तौर से जांच भी कर लिया करते हैं, या नहीं, ख़ास कर उसके चाल-चलन के बारे में।

जैक : अम्मा, शराब को ज़रा इधर दे दो।

मिसेज़ बार्थिविक : **(बोतल बढ़ाकर)** क्यों बेटे, तुम बहुत ज्यादा तो नहीं पी रहे हो।

जैक अपना गिलास भरता है।

मारलो : **(कमरे में आकर)** जासूस स्नो आपसे मिलना चाहता है।

बार्थिविक : **(बेचैनी से)** अच्छा, कहो अभी एक मिनट में आता हूं।

मिसेज़ बार्थिविक : **(बग़ैर सिर घुमाए हुए)** उसे यहां बुला लो, मारलो।

स्नो ओवरकोट पहिने अपनी बोलर हैट हाथ में लिये आता है।

बार्थिविक : **(कुछ उठकर)** आइये, बन्दगी।

स्नो : बन्दगी साहब। बन्दगी मेम साहब। मैं यह बतलाने आया हूं कि उस मामले में मैंने क्या किया। मुझे डर है, कि मुझे कुछ देर हो गयी है। मैं एक दूसरे मुक़दमें में चला गया था।

चांदी की डिबिया जेब से निकालता है। बार्थिविक परिवार में सनसनी फैल जाती है।

मैं समझता हूं यह ठीक वही चीज़ है।

बार्थिविक : ठीक वहीं, ठीक वही।

स्नो : निशान और अंक वैसे ही हैं, जैसे आपने बतलाए थे। मुझे तो इस मामले में, ज़रा भी हिचिक नहीं हुई।

बार्थिविक : शाबाश! आप भी एक गिलास पीजिये—**(पोर्ट की बोतल को देख कर)** शेरी की।

शेरी उंड़ेलता है।

जैक, यह मिस्टर स्नो को दे दो।

जैक उठकर गिलास स्नो को दे देता है, तब अपनी कुर्सी पर पड़कर उसे आलस्य से देखता है।

स्नो : **(शराब पीकर और गिलास को नीचे रखकर)** आपसे मिलने के बाद मैं उस औरत के डेरे पर गया। नीचों की बस्ती है। और मैंने सोचा कि ड्योढ़ी के नीचे ही कानिस्टेबुल खड़ा कर दूं। शायद जरूरत पड़े और मेरा विचार बिल्कुल ठीक निकला।

बार्थिविक सच।

स्नो जी हां। कुछ झमेला करना पड़ा। मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे घर में यह चीज़ कैसे आई। वह मुझे कुछ जवाब न दे सकी। हां, बराबर चोरी से इनकार करती रही। इसलिये मैंने उसे गिरफ़्तार कर लिया। तब उसका शौहर मुझसे उलझ पड़ा। आखिर मैंने हमला करने के अपराध में उसे भी गिरफ्तार कर लिया। घर से पुलीस स्टेशन तक जाने में वह बहुत गर्म होता रहा—बिल्कुल जामे से बाहर—बार-बार आप को और आपके लड़के को धमकी देता था कि समझ लूंगा। सच पूछिए तो बड़ा फ़ितना निकला।

मिसेज़ बार्थिविक: बड़ा भारी बदमाश है।

स्नो : हां, मेम साहब, बड़ा ही उजड्ड असामी।

जैक : **(शराब की चुस्की लेता हुआ, मज़े में आकर)** पाजी का सिर तोड़ दे।

स्नो : मैंने पता लगाया, पक्का शराबी है।

मिसेज़ बार्थिविक : मैं तो चाहती हूं, बच्चा को कड़ी सज़ा मिले।

स्नो : दिल्लगी तो यह है कि वह अभी तक यही कहे जाता है कि डिबिया मैंने खुद चुराई।

बार्थिविक : डिबिया उसने चुराई। **(मुस्कराता है)** इसमें उसने क्या फायदा सोचा है?

स्नो : वह कहता है कि छोटे साहब पिछली रात को नशे में थे।

जैक अखरोट तोड़ना बन्द कर देता है और स्नो की ओर ताकने लगता है। बार्थिविक की मुस्कराहट ग़ायब हो जाती है, गिलास रख देता है। सन्नाटा छा जाता है—स्नो बारी-बारी से हरेक का चेहरा देखता है, और कहता है।

वह मुझे अपने घर लाए और खूब ह्विस्की पिलाई, मैंने कुछ खाया न था, नशा ज़ोर कर गया और उसी नशे में मैंने डिबिया उठा ली।

मिसेज़ बार्थिविक : गुस्ताख़, पाजी कहीं का।

बार्थिविक : आपका ख़्याल है कि वह कल अपने बयान में भी यही कहेगा।

स्नो : यही उसकी सफ़ाई होगी। कह नहीं सकता बीवी को बचाने के लिए ऐसा कह रहा है, या,

जैक की तरफ़ देखकर

इसमें कुछ तत्त्व भी है। इसका फैसला तो मैजिस्ट्रेट के हाथ में है।

मिसेज़ बार्थिविक : **(गर्व से)** तत्त्व भी है? किसमें क्या? आपका मतलब समझ में नहीं आता। आप समझते हैं, मेरा लड़का ऐसे आदमी को कभी अपने घर नहीं लायेगा!

बार्थिविक : **(अंगीठी के पास से, शान्त रहने की चेष्टा करके)** मेरा लड़का अपनी सफ़ाई कर लेगा। अच्छा, जैक, तुम क्या कहते हो?

मिसेज़ बार्थिविक : **(तीव्र स्वर में)** वह क्या कहेगा? यही और क्या है, कि सब मनगढ़ंत है।

जैक : **(दबसट में पड़कर)** बात यह है, बात यह है, कि मुझे इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं।

मिसेज़ बार्थिविक : वह तो मैं पहिले ही कहती थी। **(स्नो से)** वह आदमी दीदा दिलेर बदमाश है।

बार्थिविक : **(अपने मन को दबाते हुए)** लेकिन जब मेरा लड़का कह रहा है कि इस मामले में कोई तत्त्व नहीं है, तो क्या ऐसी दशा में उस आदमी पर मुकदमा चलाना जरूरी है।

स्नो : उस पर तो हमले का जुर्म लगाना होगा। मिस्टर जैक बार्थिविक भी पुलिस कचहरी चले आयें तो बड़ा अच्छा हो। बच्चा जेल जाएंगे, यह तो मानी हुई बात है। विचित्र बात यह है कि उसके पास कुछ रुपये भी निकले और एक लाल रेशमी थैली भी थी।

बार्थिविक चौंक पड़ता है, जैक उठता है, फिर बैठ जाता है।

मेम साहब की थैली तो नहीं ग़ायब हो गई?

बार्थिविक : **(जल्दी से)** नहीं, नहीं, उनकी थैली नहीं खोई।

जैक : नहीं, थैली तो नहीं गई।

मिसेज़ बार्थिविक : **(मानो स्वप्न देखते हुए)** नहीं। **(स्नो से)** मैं नौकरों से पता लगा रही थी। यह आदमी घर के आस-पास चक्कर लगाया करता है। अगर लंबी सज़ा मिल जाय तो खटका निकल जाय। ऐसे बदमाशों से हमारी रक्षा तो होनी ही चाहिए।।

बार्थिविक : हां, हां, ज़रूर। यह तो सिद्धान्त की बात है। लेकिन इस मामले में हमें कई बातों पर विचार करना है। **(स्नो से)** इस आदमी पर तो मुक़दमा चलाना ही चाहिए, क्यों, आप भी तो यही कहते हैं?

स्नो : अवश्य, इसमें क्या सोचना है।

बार्थिविक : **(जैक की ओर उदास भाव से ताकते हुए)** मेरी इच्छा नहीं होती कि यह मुक़दमा चलाया जाय। ग़रीबों पर मुझे बड़ी दया आती है। अपने पद का विचार करते हुए यह मानना मेरा कर्तव्य है कि ग़रीबों की हालत बहुत ख़राब है। इनकी दशा में बहुत कुछ सुधार की ज़रूरत है। आप मेरा मतलब समझ रहे होंगे। अगर कोई ऐसी राह निकल आती कि मुक़दमा न चलना पड़ता तो बड़ी अच्छी बात होती।

मिसेज़ बार्थिविकः **(तीव्र स्वर में)** यह क्या कहते हो जान? तुम दूसरों के साथ अन्याय कर रहे हो। इसका आशय तो यह है कि हम ज़ायदाद को लोगों की दया पर छोड़ दें। जिसका जी चाहे ले ले।

बार्थिविक : **(उसे इशारा करने की चेष्टा करके)** मैं यह नहीं कहता कि उसने अपराध नहीं किया। मैं इसके सब पहलुओं पर सोच रहा हूं।

मिसेज़ बार्थिविक: यह सब फजूल है, हर काम का वक्त होता है।

स्नो : **(कुछ बनावटी आवाज़ में)** मैं यह बता देना चाहता हूं, कि चोरी का इलज़ाम उठा लेने से कोई फायदा नहीं होगा, क्योंकि हमले के मुक़दमे में सभी बातें खुल ही जायंगी।

जैक की ओर मार्मिक दृष्टि से देखता है।

और जैक, मैं पहले अर्ज़ कर चुका हूं, वह मुक़दमा ज़रूर चलाया जायगा।

बार्थिविक : **(जल्दी से)** हां, हां, यह तो होगा ही। उस स्त्री के विचार से मैं कह रहा हूं, यह तो मेरा अपना ख्याल है।

स्नो : अगर मैं आपकी जगह होता तो इस मामले में ज़रा भी दख़ल न देता। इसमें कोई बाधा पड़ने का भय नहीं है। ऐसे मामले चटपट तय हो जाते हैं।

बार्थिविक : **(संदेह के भाव से)** अच्छा, यह बात? अच्छा, यह बात?

जैक : **(सचेत होकर)** अच्छा। मुझे अपने बयान में क्या कहना पड़ेगा?

स्नो : यह तो आप खुद जान सकते हैं।

दरवाजे तक जाकर

शायद कोई नई बात खड़ी हो जाय। अच्छा यह है कि आप एक वकील कर लीजिए। हम ख़ानसामा को यह साबित करने के लिए तलब करेंगे कि चीज़ वास्तव में चोरी गई। अब मुझे आज्ञा दीजिए, मुझे आज बहुत काम है। गयारह बजे के बाद किसी समय मुक़दमा पेश होगा। बन्दगी हुजूर, बन्दगी मेम साहब। मुझे कल यह डिबिया अदालत में पेश करनी पड़ेगी, इसलिए यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं इसे अपने साथ लेता जाऊं।

वह डिबिया उठा लेता है और सलाम करके चला जाता है। बार्थिविक उसके साथ जाने के लिए उठता है, और अपने

हाथों को कोट के पीछे रखकर निराश होकर बोलता है। मैं चाहता हूं कि तुम इन बातों में दखल न दिया करो। मगर तुम्हारी ऐसी आदत है कि समझो या न समझो दख़ल हरेक बात में दोगी। मारा—सब मामला चौपट कर दिया।

मिसेज़ बार्थिविक: **(रुखाई से)** मेरी समझ में नहीं आता तुम्हारा मतलब क्या है? अगर तुम अपने हक़ के लिए नहीं खड़े हो सकते, तो मैं तो खड़ी हो सकती हूं। मुझे तुम्हारे सिद्धान्त ज़रा भी नहीं भाते। उन्हें लेकर तुम चाटा करो।

बार्थिविक : सिद्धान्त। तुम हो किस फेर में। सिद्धान्तों की यहां चर्चा ही क्या? तुम्हें मालूम नहीं कि पिछली रात को जैक नशे में चूर था?

जैक : अब्बा जान।

मिसेज़ बार्थिविक: **(भयभीत होकर खड़ी हो जाती है)** जैक, यह क्या बात है?

जैक : कोई बात नहीं, अम्मां। मैंने केवल भोजन किया था। सभी खाते हैं। मेरा मतलब है, यानी मेरा मतलब है—आप मेरा मतलब समझ गई होंगी। इसे नशे में चूर होना नहीं कहते। आक्सफोर्ड में तो सभी मुंह का मज़ा बदल लिया करते हैं।

मिसेज़ बार्थिविक: यह बड़ी बेहूदा बात है। अगर तुम लोग आक्सफोर्ड में यही सब किया करते हो—

जैक : **(क्रोध से)** तो फिर आप लोगों ने मुझे वहां भेजा क्यों? जैसे और सब रहते हैं, वैसे ही तो मुझे भी रहना पड़ेगा। इतनी सी बात को नशे में चूर कहना हिमाकत है। हां, मुझे खेद अवश्य है। आज दिन भर सिर में बड़ा दर्द रहा।

बार्थिविक : छी! अगर तुम्हें मामूली-सी तमीज़ भी होती और तुम्हें इतना-सा भी याद होता कि जब तुम यहां आए तो क्या-क्या बातें हुई तो हमें मालूम हो जाता कि इस बदमाश की बातों में कितना सच है। मगर अब तो कुछ समझ में ही नहीं आता। गोरख धन्धा सा होकर रह गया।

जैक : **(घूरता हुआ मानो अधूरी बातें याद आ रही हैं)** कुछ-कुछ याद आता है—फिर सब भूल जाता हूं।

मिसेज़ बार्थिविक: क्या कहते हो जैक? क्या तुम्हें इतना नशा था कि तुम्हें इतना भी याद नहीं?—

जैक : यह बात नहीं है, अम्मां। मुझे यहां आने की खूब याद है—मैं ज़रूर आया हूंगा—

बार्थिविक : **(गुस्से से बेकाबू, इधर से उधर तक टहलता हुआ)** खूब! और वह मनहूस थैली कहां से आ गई। खुदा खैर करे। ज़रा सोचो तो जैक! यह सारी बातें पत्रों में निकल जायंगी। किसको मालूम था कि

मामला यहां तक पहुंचेगा। इससे तो यह कहीं अच्छा होता कि एक दर्जन डिबिये में खो जातीं और हम लोग ज़बान न खोलते। **(पत्नी से)** यह सब तुम्हारी करतूत है। मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था कि अच्छा हो कहीं रोपर आ जाता।

मिसेज़ बार्थिविक : **(तीव्र स्वर से)** मेरी समझ में नहीं आता, तुम क्या बक रहे हो, जान।

बार्थिविक : **(उसकी तरफ़ मुड़कर)** नहीं तुम! अजी–तुम–तुम कुछ जानती नहीं। **(तेज़ आवाज़ से)** आख़िर! वह रोपर कहां मर गया। अगर वह इस दलदल से निकलने की कोई राह निकाल दे, तो मैं जानूं कि वह किसी काम का आदमी है। मैं बदकर कहता हूं कि इससे निकलने का अब कोई रास्ता नहीं है। मुझे तो कुछ सूझता नहीं।

जैक : इधर सुनिए; अब्बाजान को क्यों दिल करती हो? मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि मैं थककर बेदम हो गया था, और मुझे इसके सिवा कुछ याद नहीं है कि मैं घर आया।

बहुत मंद स्वर से

और रोज़ की तरह पलंग पर जाकर सो रहा।

बार्थिविक : पलंग पर चले गये? कौन जानता है कि तुम कहां चले गये, मुझे तुम्हारे ऊपर अब विश्वास नहीं रहा। मुझे क्या पता कि तुम ज़मीन पर पड़ रहे होंगे।

जैक : **(बिगड़कर)** ज़मीन पर नहीं, मैं–

बार्थिविक : **(सोफ़ा पर बैठकर)** इसकी किसे परवाह है कि तुम कहां सोये थे? उस वक्त क्या होगा जब वह कह देगा....डूब मरने की बात होगी।

मिसेज़ बार्थिविक : क्या? **(सन्नाटा)** बात क्या हुई, बोलते क्यों नहीं?

जैक : कुछ नहीं–

मिसेज़ बार्थिविक : कुछ नहीं। कुछ नहीं, इससे तुम्हारा क्या मतलब है, जैक? तुम्हारे दादा इसके लिए आसमान सिर पर उठा रहे हैं–

जैक : वह थैली मेरी है।

मिसेज़ बार्थिविक : तुम्हारी थैली? तुम्हारे पास थैली कब थी? तुम खूब जानते हो तुम्हारे पास थैली न थी।

जैक : ख़ैर, दूसरे ही की सही–मगर यह केवल दिल्लगी थी। मुझे उस सड़ी-सी थैली को लेकर क्या करना था?

मिसेज़ बार्थिविक : तुम्हारा मतलब है क्या किसी दूसरे की थैली थी और उसे इस बदमाश ने उड़ा ली?

बार्थिविक : जी हां, थैली उसने उड़ा ली। जोन्स वह आदमी नहीं है कि इस बात पर पर्दा डाल दे। वह इसे खूब नमक-मिर्च लगाकर बयान करेगा। समाचार-पत्रों में इसकी चर्चा होगी।

मिसेज़ बार्थिविक : मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। किस बात का यह सब किस्सा है?

जैक के ऊपर झुककर प्यार से

जैक, बेटा, बताओ तो क्या बात है। डरो मत। साफ़-साफ़ बता दो, बात क्या है?

जैक : अम्मां, ऐसी बातें न करो!

मिसेज़ बार्थिविक: कैसी बातें बेटा?

जैक : कुछ नहीं, यों ही। मुझे कुछ याद नहीं कि वह चीज़ मेरे पास कैसे आ गई। मुझसे और उससे एक पकड़ हो गई—मुझे कुछ ख़बर न थी कि मैं क्या कर रहा हूं—मैंने-मैंने शायद मैंने—तुम समझ गई होगी—शायद मैंने थैली उसके हाथ से छीन ली।

मिसेज़ बार्थिविक: उसके हाथ से? किसके हाथ से? कैसी थैली? किसकी थैली?

जैक : अजी, मुझे कुछ याद नहीं—**(निराश और ऊंची आवाज़ में)** किसी औरत की थैली थी।

मिसेज़ बार्थिविक: किसी औरत की? नहीं! नहीं! जैक! ऐसा न कहो।

जैक : **(उछलकर)** तुम मानती ही नहीं थीं तो मैं क्या करता। मैं तो नहीं बताना चाहता था। मेरा क्या क सूर है?

द्वार खुलता है और मारलो एक आदमी को अंदर लाता है। अधेड़, कुछ मोटा आदमी है। शाम के कपड़े पहने हुए है। मूंछें लाल और पतली हैं। आंखें काली और तेज़। उसकी भवें चीनियों सी हैं।

मारलो : रोपर साहब आये हैं हुजूर।

वह कमरे से चला जाता है।

रोपर : **(तेज आंखों से चारों ओर देखकर)** कैसे मिज़ाज हैं?

जैक और मिसेज़ बार्थिविक दोनों चुप बैठे रहते हैं।

बार्थिविक : **(जल्दी से आकर)** शुक्र है आप आ तो गए। आपको याद है मैंने आज शाम को आप से क्या कहा था? जासूस अभी यहां आया था।

रोपर : डिबिया मिल गई?

बार्थिविक : हां, डिबिया तो मिल गई, पर एक बात है। यह मज़दूरनी का काम न था। उसके शराबी और ठलुये शौहर ने वे चीज़ें चुराई थीं। वह कहता है कि यही रात को उसे घर में लाया था।

वह जैक की तरफ हाथ उठाता है, जो ऐसा दबक जाता है मानो वार बचाता हो।

आपको कभी इसका विश्वास होगा?

रोपर हंसता है और वह उत्तेजित होकर शब्दों पर ज़ोर देता हुआ।

यह हंसी की बात नहीं है। मैंने जैक का क़िस्सा भी आपसे कहा था। आप समझ गए होंगे—बदमाश दोनों चीज़ें उठा ले गया—वह सत्यानाशी

थैली भी ले गया। अखबारों में इसकी चर्चा होगी।

रोपर : **(भवें चढ़ाकर)** हूं! थैली! बड़े लोगों की दशा? आपके साहबज़ादे क्या कहते हैं?

बार्थिविक : उसे कुछ याद नहीं। ऐसा अंधेर कभी देखा था? पत्रों तक यह बात पहुंचेगी।

मिसेज़ बार्थिविक : **(हाथों से आंखों को छिपाकर)** नहीं! नहीं!! यह बात तो नहीं है—

बार्थिविक और रोपर घूमकर उसकी ओर देखते हैं।

बार्थिविक : उस औरत पर कह रही हैं। वह बात अभी-अभी इनके कानों में पड़ी है।

रोपर सिर हिलाता है और मिसेज़ बार्थिविक अपने होंठों को दबाकर मन्द दृष्टि से जैक को देखती है और मेज़ के सामने बैठ जाती है।

आखिर, क्या करना चाहिए रोपर? वह लुच्चा जोन्स इस थैली वाले मामले को खूब बढ़ावेगा, बात का बतंगड़ बना देगा।

मिसेज़ बार्थिविक : मुझे विश्वास नहीं आता कि जैक ने थैली ली।

बार्थिविक : क्या अब भी कोई संदेह है? वह औरत आज सवेरे अपनी थैली मांगने आई थी।

मिसेज़ बार्थिविक : यहां? इतनी बेहया है। मुझे क्यों नहीं बताया?

वह एक दूसरे के चेहरे की तरफ़ ताकती है, कोई उसे जवाब नहीं देता। सन्नाटा हो जाता है।

बार्थिविक : **(चौंककर)** क्या करना होगा, रोपर?

रोपर : **(धीरे से जैक से)** तुमने कुंजी तो दरवाज़े में नहीं छोड़ दी थी?

जैक : **(रुखाई से)** हां, छोड़ तो दी थी।

बार्थिविक : या ईश्वर। अभी और आगे न जाने क्या-क्या होगा?

मिसेज़ बार्थिविक : मुझे विश्वास है कि तुम उसे घर में नहीं लाए थे। जैक! यह सरासर झूठी बात है। मैं जानती हूं इसमें सचाई की गंध तक नहीं है। मिस्टर रोपर!

रोपर : **(यकायक)** तुम रात कहां सोए थे?

जैक : **(तुरन्त)** सोफ़ा पर...वहां—

कुछ हिचककर

यानी...मैं...

बार्थिविक : सोफ़ा पर। क्या तुम्हारा मतलब यह है कि चारपाई पर गए ही नहीं।

जैक : **(मुंह लटकाकर)** नहीं।

बार्थिविक : अगर तुम्हें कुछ भी याद नहीं है तो यह इतना कैसे याद रहा?

जैक : क्योंकि आज सुबह मेरी आंख खुली तो मैंने अपने को वहीं पाया।

मिसेज़ बार्थिविक : क्या कहा?

बार्थिविक : या खुदा!

जैक : और मिसेज़ जोन्स ने मुझे देखा। मैं चाहता हूं कि आप लोग मुझे यों दिक़ न करें।

रोपर : आपको याद है कि आपने किसी को शराब पिलाई थी?

जैक : हां, मैं कसम खाकर कहता हूं कि मुझे एक आदमी की याद आ रही है...उस आदमी के...

रोपर की तरफ़ देखता है

क्या आप मुझसे चाहते हैं कि...

रोपर : **(बिजली की तेज़ी से)** जिसका चेहरा गंदा है।

जैक : **(प्रसन्न होकर)** हां, वही, वही! मुझे साफ़ याद आ रहा है...

बार्थिविक अचानक खिसक जाता है।

मिसेज़ बार्थिविक क्रोध से रोपर की तरफ़ देखती है और अपने बेटे की बांह छूती है।

मिसेज़ बार्थिविक : तुमको बिलकुल याद नहीं है। यह कितनी हंसी की बात है। मुझे उस आदमी के यहां आने का बिलकुल विश्वास नहीं है।

बार्थिविक : तुम्हें सच बोलना चाहिए। चाहे यही सच क्यों न हो? लेकिन अगर तुम्हें याद आता है कि तुमने ऐसी बेहूदगी की तो तुम फिर मुझसे कोई आशा न रक्खो।

जैक : **(उनकी तरफ़ घूरकर)** आखिर आप लोग मुझसे चाहते क्या हैं?

मिसेज़ बार्थिविक : जैक!

जैक : जी हां, मेरी समझ में बिलकुल नहीं आता कि आप लोगों की इच्छा क्या है।

मिसेज़ बार्थिविक : हम लोग यही चाहते हैं कि तुम सच बोलो और कह दो कि तुमने उस नीच को घर में नहीं बुलाया।

बार्थिविक : बेशक, अगर तुम ख़याल करते हो, कि तुमने इस बेशरमी से उसे ह्निस्की पिलाई और अपनी करतूत उसे दिखाई, और तुम्हारी दशा इतनी ख़राब थी कि तुम्हें वे बातें बिलकुल याद नहीं, तो...

रोपर : **(जल्दी से)** मुझे खुद कोई बात याद नहीं रहती। याददाश्त इतनी कमज़ोर है।

बार्थिविक : **(निराश भाव से)** तो मैं नहीं जानता कि तुम्हें क्या कहना पड़ेगा।

रोपर : **(जैक से)** तुम्हें कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। अपने को इस झमेले में मत डालो। औरत ने चीज़ चुराई या मर्द ने चीज़े चुराई, आपको इससे कुछ मतलब नहीं। आप तो सोफ़ा पर सो रहे थे।

मिसेज़ बार्थिविक : तुमने दरवाज़े में कुंजी लगी हुई छोड़ दी, यही काम कम है? अब और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं।

उसके माथे को प्यार से छूकर

तुम्हारा सिर आज कितना गर्म है?

जैक : लेकिन मुझे यह तो बतलाइए कि मुझे करना क्या होगा? **(क्रोध से)** मैं नहीं चाहता, कि इस तरह चारों ओर से मुझे दिक़ करें।

मिसेज़ बार्थिविक उसके पास से हट जाती है।

रोपर : (जल्दी से) आप यह सब कुछ भूल जायं। आप तो सोये थे।

जैक : क्या कल मेरा कचहरी जाना ज़रूरी है?

रोपर : (सिर हिलाकर) नहीं।

बार्थिविक : (ज़रा शान्तचित होकर) सचमुच।

रोपर : जी हां।

बार्थिविक : लेकिन आप तो जायेंगे?

रोपर : जी हां।

जैक : (बनावटी प्रसन्नता से) बड़ी इनायत है। मैं यही चाहता हूं कि मुझे वहां जाना न पड़े।

सिर पर हाथ रखकर

मुझे क्षमा कीजिएगा। आज सिर में ज़ोरों का दर्द है।

बाप की तरफ़ से मां की तरफ़ देखता है।

मिसेज़ बार्थिविक: (जल्दी से घूमकर) अच्छा, जाओ बेटा।

जैक : अच्छा, अम्मां।

वह चला जाता है। मिसेज़ बार्थिविक लम्बी सांस खींचती है। सन्नाटा हो जाता है।

बार्थिविक : यह बहुत सस्ते छूट गए। अगर मैंने उस औरत को रुपये न दिए होते, तो उसने ज़रूर दावा किया होता।

रोपर : अब आपको मालूम हुआ कि धन कितना उपयोगी है।

बार्थिविक : मुझे अब भी सन्देह है कि हमें सच को छिपा देना चाहिए या नहीं।

रोपर : चालान होगा।

बार्थिविक : क्या आपका मन्शा है कि इन्हें अदालत में जाना पड़ेगा?

रोपर : हां।

बार्थिविक : अच्छा! मैंने समझा था कि आप...देखिए मिस्टर रोपर। उस थैली का जिक्र मिस्टर कागज़ों में न आने दीजिएगा।

रोपर अपनी छोटी आंखें उसके चेहरे पर जमा देता है और सिर हिलाता है।

मिसेज़ बार्थिविक: मिस्टर रोपर, क्या आपके ख़याल में यह मुनासिब नहीं है कि जोन्स परिवार का हाल मैजिस्ट्रेट से कह दिया जाय। मेरा मतलब यह है कि शादी के पहले उनका आपस में कितना अनुचित सम्बन्ध था। शायद जान ने आपसे नहीं कहा।

रोपर : यह तो कोई मार्के की बात नहीं।

मिसेज़ बार्थिविक : मार्के की बात नहीं।

रोपर : निजी बात है। शायद मैजिस्ट्रेट पर भी यही बीत चुकी हो।

बार्थिविक : **(पहलू बदलकर, मानो बोझ खिसका रहा है।)** तो अब आप इस मामले को अपने हाथ में रखेंगे?

रोपर : अगर ईश्वर की कृपा हुई।

हाथ बढ़ाता है।

बार्थिविक : **(विरक्त भाव से हाथ हिलाकर)** ईश्वर की इच्छा? क्या? आप चले?

रोपर : जी हां! ऐसा ही मेरे पास एक दूसरा मुक़दमा भी है।

मिसेज़ बार्थिविक को झुककर सलाम करता है और चला जाता है। बार्थिविक उसके पीछे-पीछे अन्त तक बातें करता जाता है। मिसेज़ बार्थिविक मेज़ पर बैठी हुई सिसक-सिसककर रोने लगती है। बार्थिविक लौटता है।

बार्थिविक : **(आप ही आप)** बदनामी होगी।

मिसेज़ बार्थिविक : **(तुरंत अपने रंज को छिपाकर)** मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि रोपर ने ऐसी बात को हंसी में क्यों उड़ा दिया?

बार्थिविक : **(विचित्र भाव से ताककर)** तुम....तुम्हारी समझ में कोई बात नहीं आती। तुम्हें रत्ती भर भी समझ नहीं है।

बार्थिविक : **(क्रोध से)** तुम मुझसे कहते हो कि मुझमें समझ नहीं है?

बार्थिविक : **(घबराकर)** मैं...बहुत परेशान हूं। सारी बात आदि से अन्त तक मेरे सिद्धान्त के विरुद्ध है।

मिसेज़ बार्थिविक : मत बको। तुम्हारा कोई सिद्धान्त भी है। तुम्हारे लिए दुनिया में डरने के सिवा और कोई सिद्धान्त नहीं है।

बार्थिविक : **(खिड़की के पास जाकर)** मैं अपनी ज़िन्दगी में कभी न डरा। तुमने सुना है, रोपर क्या कहता था? जिस आदमी के घर में ऐसी वारदात हो गई हो, उसके होश उड़ा देने को इतनी बात काफ़ी है। हम जो कुछ कहते या करते हैं, वह हमारे मुंह से निकल ही पड़ता है। भूत सा सिर पर सवार रहता है। मैं इन बातों का आदी नहीं हूं।

वह खिड़की खोल देता है मानो उसका दम घुट रहा हो। किसी लड़के के सिसकने की धीमी आवाज़ सुनाई देती है।

यह कैसी आवाज़ है?

वे सब कान लगाकर सुनते हैं।

मिसेज़ बार्थिविक : **(तीव्र स्वर में)** मुझसे रोना नहीं सुना जाता। मैं मारलो को भेजती हूं कि इसे रोक दे। मेरे सारे रोएं खड़े हो गए।

घंटी बजाती है।

बार्थिविक : मैं खिड़की बन्द किए देता हूं, फिर तुम्हें कुछ न सुनाई देगा।

वह खिड़की बन्द कर देता है और सन्नाटा हो जाता है।

मिसेज़ बार्थिविक: **(तीव्र स्वर में)** इससे कोई फ़ायदा नहीं। मेरा दिल धड़क रहा है। मुझे किसी बात से इतनी घबड़ाहट नहीं होती, जितनी किसी बालक के रोने से।

मारलो आता है।

यह कैसा रोने का शोर है मारलो? किसी बच्चे की आवाज़ मालूम होती है।

बार्थिविक : बच्चा है। उस मुंडेर से चिपटा हुआ दिखाई तो पड़ता है।

मारलो : **(खिड़की खोलकर और बाहर देखकर)** यह मिसेज़ जोन्स का छोटा लड़का है, हुज़ूर! अपनी मां को खोजता हुआ यहां आया है।

मिसेज़ बार्थिविक: **(जल्दी से खिड़की के पास जाकर)** कैसा ग़रीब लड़का है! जान, हमें यह मुकदमा न चलाना चाहिए।

बार्थिविक : **(एक कुर्सी पर धम से बैठकर)** लेकिन अब तो बात हमारे हाथ से निकल गई!

मिसेज़ बार्थिविक खिड़की की तरफ़ पीठ कर लेती है, उसके चेहरे पर बेचैनी का भाव दिखाई देता है, वह अपने ओंठ दबाये खड़ी होती है। रोना फिर शुरू हो जाता है। बार्थिविक हाथों से अपने कान बन्द कर लेता है और मारलो खिड़की बन्द कर देता है। रोना बन्द हो जाता है।

पर्दा गिरता है।

अंक 3

दृश्य पहला

[आठ दिन गुज़र गए हैं। लन्दन के पुलिस कोर्ट का दृश्य है। एक बजा है। एक चंदवे के नीचे न्याय का आसन है। इस चंदवे के ऊपर शेर और गैंडे की प्रतिमा बनी हुई है। आंख के सामने एक मुरझाई हुई सूरत का न्यायाधीश अपने कोट के पिछले भाग को गर्म कर रहा है और दो छोटी-छोटी लड़कियों को घूर रहा है, जो नीले और नारंगी चीथड़े पहने हुए हैं। कपड़ों का रंग बिल्कुल उड़ गया है। ये लड़कियां कठघरे में लाई जाती हैं। गवाहों के कठघरे के पास एक अफसर ओवरकोट पहने खड़ा है। उसकी दाढ़ी छोटी और भूरी है। छोटी लड़कियों के बग़ल में एक गंजा पुलिस कांस्टेबिल खड़ा है। अगली बेंच पर बार्थिविक और रोपर बैठे हुए हैं। जैक उनके पीछे बैठा है। जंगलेदार कठघरे में कुछ फटेहाल मर्द और औरतें पीछे खड़ी हैं। कई मोटे-ताज़े कांस्टेबिल इधर-उधर खड़े या बैठे हैं।]

मैजिस्ट्रेट : **(पिता-भाव दिखाता हुआ कठोर स्वर में)** अब हमें इन लड़कियों का झगड़ा तय कर देना चाहिए।

अहलमद : थेरसा लिवेंस ! माड लिवेंस!

गंजा कांस्टेबिल छोटी लड़कियों को दिखाता है जो चुपचाप, स्थिति को समझती हुई विरक्त भाव से खड़ी हैं।

दारोग ा गवाहों के कठघरे में आता है।

दारोग़ा ! तुम अदालत के सामने जो बयान दोगे, वह बिल्कुल सच, पूरा-पूरा सच और सच के सिवा और कुछ न होगा। ईश्वर तुम्हारी मदद करे। इस किताब को चूमो।

दारोग़ा किताब चूमता है।

दारोग़ा : **(एक ही आवाज़ में, हरएक आवाज़ के अन्त में रुकता हुआ ताकि उसका बयान लिखा जा सके।)** आज सवेरे क़रीब दस बजे मैंने इन दोनों लड़कियों को ब्ल्यूस्ट्रीट में एक सराय के बाहर रोते हुए पाया। जब मैंने पूछा कि तुम्हारा घर कहां है तो उन्होंने कहा कि हमारा घर नहीं है। मां कहीं चली गयी है। बाप के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि उसके पास कोई काम नहीं है। जब पूछा कि तुम लोग रात कहां सोई थीं, तो उन्होंने फूफू का नाम लिया। हुजूर, मैंने

तहकीकात की है। औरत घर से निकल गई है और मारी-मारी फिरती है। बाप बेकार है और मामूली सराय में रहता है। उसकी बहन के अपने ही आठ लड़के हैं, वह कहती है कि मैं इन लड़कियों का अब पालन नहीं कर सकती।

मैजिस्ट्रेट : **(चंदवे के नीचे अपनी जगह पर आकर)** तुम कहते हो कि मां मारी-मारी फिरती है। तुम्हारे पास क्या सबूत है?

दारोग़ा : हुजूर, उसका शौहर यहां मौजूद है।

मैजिस्ट्रेट : अच्छी बात है। उसे पेश करो।

लिवेंस का नाम पुकारा जाता है। मैजिस्ट्रेट आगे झुक जाता है और कठोर दया से लड़कियों की ओर देखता है। लिवेंस अंदर आता है। उसके बाल खिचड़ी हो गए हैं। कालर की जगह गुलूबन्द लगाए हुए हैं। वह गवाहों के कठघरे के पास खड़ा हो जाता है।

अच्छा, तुम इनके बाप हो? तो तुम इन लड़कियों को घर में क्यों नहीं रखते? यह क्या बात है कि तुम इनको इस तरह सड़कों पर फिरने के लिए छोड़ देते हो?

लिवेंस : हुजूर, मेरे कोई घर नहीं है। मेरे खाने का तो ठिकाना नहीं है। मैं बिलकुल बेकार हूं और न मेरे पास कुछ है जिससे इनका पालन कर सकूं।

मैजिस्ट्रेट : यह कैसे?

लिवेंस : **(शर्माकर)** मेरी बीबी निकल गई और सारी चीज़ें गिरों रख दीं।

मैजिस्ट्रेट : लेकिन तुमने उसे ऐसा करने क्यों दिया?

लिवेंस : हुजूर, मैं उसे रोक नहीं सका। उधर मैं काम की तलाश में गया, इधर यह निकल भागी।

मैजिस्ट्रेट : क्या तुम उसे मारते-पीटते थे?

लिवेंस : **(ज़ोर देकर)** हुजूर, मैंने कभी उसे तिनके से भी न मारा।

मैजिस्ट्रेट : तब क्या बात थी, क्या वह शराब पीती थी?

लिवेंस : **(धीमी आवाज़ में)** हां हुजूर!

मैजिस्ट्रेट : उसका चाल-चलन अच्छा न था ?

लिवेंस : **(धीमी आवाज में)** हां, हुजूर !

मैजिस्ट्रे : अब कहां है?

लिवेंस : मुझे नहीं मालूम, हुजूर। वह एक आदमी के साथ निकल गई और तब मैं—

मैजिस्ट्रेट : हां, हां, ठीक है। यहां कोई उसे जानता थोड़े ही है?

गंजे कांस्टेबिल से

क्या यहां कोई जानता है उसे?

दारोग़ा : इस इलाक़े में तो कोई नहीं जानता हुज़ूर! लेकिन मैंने पता लगाया कि—

मैजिस्ट्रेट : हां, हां, ठीक है! इतना काफी है।

बाप से

तुम कहते हो कि वह घर से निकल गई और इन लड़कियों को छोड़ गई। तुम इनके लिए क्या इन्तज़ाम कर सकते हो? तुम देखने में तो हट्टे-कट्टे आदमी हो!

लिवेंस : हां, हुज़ूर, हट्टा-कट्टा तो हूं, और काम भी करना चाहता हूं, लेकिन अपना कोई बस नहीं। कहीं मज़दूरी मिले तब तो?

मैजिस्ट्रेट : लेकिन तुमने कोशिश की थी?

लिवेंस : हुज़ूर, सब कुछ करके हार गया। कोशिश करने में कोई कसर नहीं उठा रखी।

मैजिस्ट्रेट : अच्छा—

दारोग़ा : **(सन्नाटा हो जाता है)** अगर हुज़ूर का ख़याल हो कि ये बच्चे अनाथ हैं तो हम उनको लेने को तैयार हैं।

मैजिस्ट्रेट : हां, हां, मैं जानता हूं। लेकिन मेरे पास कोई ऐसी शहादत नहीं है कि यह आदमी अपने बच्चों की ठीक तौर से देख-रेख नहीं कर सकता।

वह उठता है और आग के पास चला जाता है।

दारोग़ा : हुज़ूर, इनकी मां इनके पास आती जाती है।

मैजिस्ट्रेट : हां, हां! मां इस योग्य नहीं है कि बच्चे उसे दिए जायं।

बाप से

तुम क्या कहते हो?

लिवेंस : हुज़ूर, मैं इतना ही कहता हूं कि अगर मुझे काम मिल जाय तो मैं बड़ी खुशी से उनकी परवरिश करूंगा। लेकिन मैं क्या करूं हुज़ूर, मेरे तो भोजन का ठिकाना नहीं। सराय में पड़ा रहता हूं। मैं मजबूत आदमी हूं, काम करना चाहता हूं। दूसरों से दूनी हिम्मत रखता हूं, लेकिन हुज़ूर देखते हैं कि मेरे बाल पक गए हैं बुख़ार के सबब से।

अपने बाल छूता है।

इसलिए मैं जंचता नहीं। शायद इसीलिए मुझे कोई नौकर नहीं रखता।

मैजिस्ट्रेट : **(आहिस्ता से)** हां, हां! मैं समझता हूं कि यह एक मामला है।

लड़कियों की तरफ़ कड़ी आंखों से देखकर।

तुम चाहते हो कि ये लड़कियां अनाथालय में भेज दी जायें।

लिवेंस : हां, हुज़ूर, मेरी तो यही इच्छा है।

मैजिस्ट्रेट : एक हफ़्ते की मुहलत देता हूं। आज ही के दिन फिर आना। अगर

उस वक्त उचित हुआ तो मैं हुक्म दे दूंगा।

दारोग़ा : आज के दिन हुजूर!

गंजा कांस्टेबिल लड़कियों का कंधा पकड़े ले जाता है। बाप उनके पीछे-पीछे जाता है। मैजिस्ट्रेट अपनी जगह पर लौट आता है और झुककर क्लर्क से सायं-सायं बातें करता है।

बार्थिविक : **(हाथ की आड़ से)** बड़ा करुण दृश्य है रोपर, मुझे तो उन पर बड़ी दया आ रही है।

रोपर : पुलिस कोर्ट में ऐसे सैकड़ों आया करते हैं।

बार्थिविक : बड़ी दिल दुखाने वाली बात है। लोगों की दशा जितना ही देखता हूं, उतना ही मेरे दिल पर असर होता है। मैं पार्लमेंट में उनका पक्ष लेकर अवश्य खड़ा होऊंगा। मैं एक प्रस्ताव—

मैजिस्ट्रेट क्लर्क से बोलना बन्द कर देता है।

क्लार्क : हिरासत वालो!

बार्थिविक एकाएक रुक जाता है। कुछ हलचल होती है और मिसेज़ जोन्स सदर दरवाज़े से अन्दर आती है। जोन्स पुलिस वालों के साथ कैदियों के दरवाज़े से आता है। वे कठघरे के अन्दर एक क़तार में खड़े होते हैं।

क्लार्क : जेम्स जोन्स! जेन जोन्स!

अर्दली : जेन जोन्स?

बार्थिविक : **(धीरे से)** देखो रोपर, उस थैली की ज़िक्र न आने पाए। चाहे जो कुछ हो तुम उसे समाचार पत्रों में न आने देना।

रोपर सिर हिलाता है।

गंजा कांस्टेबिल : चुप रहो।

मिसेज़ जोन्स काले पतले फटे कपड़े पहने हुए है। उसकी टोपी काली है। वह कठघरे के सामने की दीवार पर हाथ रक्खे चुपचाप खड़ी हो जाती है। जोन्स कठघरे की पिछली दीवार टेककर खड़ा हो जाता है। और इधर-उधर साहस भरी दृष्टि से ताकता है। उसका चेहरा उतरा हुआ है और बाल बढ़े हुए हैं।

क्लार्क : **(अपने कागज़ देखकर)** हुजूर, यह वही मुकदमा है जो पिछले बुधवार को ज़ेर तजवीज़ था। एक चांदी की सिगरेट की डिबिया की चोरी और पुलिस पर हमला—दोनों मुलज़िमों का साथ-साथ विचार हो रहा था। जेम्स जोन्स, जेन जोन्स।

मैजिस्ट्रेट : **(घूरकर)** हां, हां, मुझे याद है।

क्लार्क : जेन जोन्स!

मिसेज़ जोन्स : हां, हुजूर।

क्लार्क : क्या तुम स्वीकार करती हो कि तुमने एक चांदी की सिगरेट की डिबिया जिसकी कीमत 5 पौं. 10 शिलिंग है, जान बार्थिविक मेम्बर पार्लमेंट के मकान-से, ईस्टर मंडे के दिन ग्यारह बजे रात और ईस्टर ट्यूसडे आठ बजे दिन के बीच में चुराई थी। बोलो, हां या नहीं?

मिसेज़ जोन्स : (धीमे स्वर में) नहीं हुजूर, मैंने नहीं—

क्लार्क : जेम्स जोन्स, क्या तुम स्वीकार करते हो, कि तुमने एक चांदी की सिगरेट की डिबिया जिसकी क़ीमत 5 पौं. 10 शिलिंग है, जान बार्थिविक मेम्बर पार्लमेंट के मकान से ईस्टर मंडे को 11 बजे रात और ईस्टर ट्यूसडे के 8 बजे दिन के बीच में चुराई? और जब पुलिस ईस्टर ट्यूसडे को तीन बजे शाम के वक्त अपना काम करना चाहती थी, तो तुमने उस पर हमला किया? बोलो, हां या नहीं

जोन्स : (रुलाई से) हां, लेकिन इसके बारे में मुझे बहुत-सी बातें कहनी हैं।

मैजिस्ट्रेट : (क्लार्क से) हां, हां। लेकिन यह क्या बात है कि इन दोनों पर एक ही जुर्म लगाया गया है? क्या वे मियां बीवी हैं?

क्लार्क : हां हुजूर! आपको याद है कि आपने मुजरिम को हिरासत में रक्खा था कि शौहर के बयान पर और भी शहादत ली जा सके।

मैजिस्ट्रेट : क्या तभी से ये दोनों हवालात में हैं?

क्लार्क : आपने औरत को उसी की ज़मानत पर छोड़ दिया था।

मैजिस्ट्रेट : हां, हा! यह चांदी की डिबिया वाला मामला है। मुझे अब याद आया। अच्छा!

क्लार्क : टामस मारलो?

टामस मारलो की पुकार होती है। मारलो अन्दर आता है और गवाहों के कठघरे में जाता है। वहां उसे हलफ़ दी जाती है। चांदी की डिबिया पेश की जाती है और कठघरे की दीवार पर रखी जाती है।

क्लार्क : (मिसिल पढ़ता हुआ) तुम्हारा नाम टामस मारलो है? तुम जॉन बार्थिविक नं. 6 राकिंघम गेट के यहां खानसामा हो?

मारलो : जी हां!

क्लार्क : क्या तुमने पिछले ईस्टरडे की रात को चांदी की एक डिबियां नं. 6 राकिंघम गेट के खाने के कमरे में एक तश्तरी में रक्खी? क्या यही वह डिबिया है?

मारलो : जी हां!

क्लार्क : और जब तुम सुबह को पौने नौ बजे तश्तरी को उठाने गए तो तुम्हें डिबिया नहीं मिली?

मारलो : हां हुजूर!

क्लार्क : तुम इस मुजरिम औरत को जानते हो?

मारलो सिर हिलाता है।

क्या वह नं. 6 राकिंघम गेट में मज़दूरी का कार्य करती है?

मारलो फिर सिर हिलाता है।

जब तुमने डिबिया न पाई तो उस वक्त मिसेज़ जोन्स उस कमरे में थी?

मारलो : जी हां!

क्लार्क : फिर तुमने उस चोरी का हाल जाकर अपने मालिक से कहा और उसने तुम्हें थाने भेजा?

मारलो : जी हां!

क्लार्क : **(मिसेज़ जोन्स से)** तुम्हें इनसे कुछ पूछना है?

मिसेज़ जोन्स : नहीं हुजूर। कुछ नहीं।

क्लार्क : **(जोन्स से)** जेम्स जोन्स, क्या तुम्हें इस गवाह से कुछ पूछना है?

जोन्स : मैं तो उसे जानता भी नहीं।

मैजिस्ट्रेट : क्या तुमको ठीक याद है कि तुमने उसी वक्त डिबिया रक्खी थी जिस वक्त की तुम कह रहे हो?

मारलो : हां, हुजूर!

मैजिस्ट्रेट : अच्छी बात है। अब अफसर **(खुफिया पुलिस)** को बुलाओ।

मारलो चला जाता है और स्नो कठघरे में आता है।

अर्दली : तुम अदालत के सामने जो बयान दोगे वह सच होगा, बिलकुल सच होगा और सच के सिवा कुछ न होगा, ईश्वर तुम्हारी मदद करे।

स्नो किताब चूमता है।

क्लार्क : **(मिसिल पढ़ते हुए)** तुम्हारा नाम राबर्ट स्नो है? तुम मिट्रा पुलीटन पुलिस दल नं. 10 बी. विभाग के जासूस हो? आज्ञानुसार ईस्टर ट्यूसडे को तुम कैदी के मकान नं. 34 मरथर स्ट्रीट में गए थे? और क्या तुमने अन्दर जाने पर इस डिबिया को मेज़ पर पड़ी पाया?

स्नो : जी हां!

क्लार्क : क्या यही डिबिया है?

स्नो : **(डिबिया को उंगली से छूकर)** जी हां!

क्लार्क : तब क्या तुमने डिबिया को अपने कब्ज़े में कर लिया और इस क़ैदी औरत पर उस डिबिया के चोरी का इलज़ाम लगाया? और क्या उसने चोरी से इनकार किया?

स्नो : जी हां!

क्लार्क : क्या तुमने उसे हिरासत में ले लिया?

स्नो : जी हां!

मैजिस्ट्रेट : उसका बर्ताव कैसा था?

स्नो : उसने ज़रा भी हुज्जत न की। हां, बराबर इनकार करती रही।

मैजिस्ट्रेट : तुम उसे जानते हो?

स्नो : नहीं हुजूर।

मैजिस्ट्रेट : यहां और कोई उसे जानता है?

गंजा कांस्टेबिल : नहीं हुजूर! दो में से एक को भी कोई नहीं जानता। हमारे पास इनके खिलाफ़ कोई शिकायत नहीं है।

क्लार्क : **(मिसेज़ जोन्स से)** तुम्हें इस अफ़सर से कुछ पूछना है?

मिसेज़ जोन्स : नहीं हुजूर, मुझे कुछ नहीं पूछना है।

मैजिस्ट्रेट : अच्छी बात है, आगे चलो।

क्लार्क : **(मिसिल पढ़ता हुआ)** और जब तुम इस औरत को गिरफ्तार कर रहे थे, क्या मर्द क़ैदी ने मुदाख़लत की और तुम्हें अपना काम करने से रोका? और क्या तुमको एक घूंसा मारा?

स्नो : जी हां!

क्लार्क : क्या उसने कहा, इसे छोड़ दो, डिबिया मैंने ली है?

स्नो : जी हां!

क्लार्क : और तब तुमने सीटी बजाई और दूसरे कांस्टेबिल की मदद से उसे हिरासत में ले लिया?

स्नो : जी हां!

क्लार्क : क्या थाने पर जाते हुए वह बहुत गुस्से में था और तुम्हें गालियां दीं? और बार-बार कहता रहा कि डिबिया मैंने ली है?

स्नो सिर हिलाता है।

क्या इस पर तुमने उससे पूछा कि डिबिया तुमने कैसे चुराई? और क्या उसने कहा कि मैं छोटे मिस्टर बार्थिविक के बुलाने पर मकान में गया?

बार्थिविक अपनी जगह पर घूमकर रोपर की तरफ़ कड़ी दृष्टि से देखता है।

क्या उस दिन ईस्टर मंडे की आधी रात थी? और मैंने ह्विस्की पी और उसी के नशे में डिबिया उठा ली?

स्नो : जी हां!

क्लार्क : क्या वह बारबर इसी तरह झल्लाता रहा?

स्नो : जी हां!

जोन्स : **(बीच में बोलकर)** ज़रूर झल्लाता रहा। जब मैं तुमसे कह रहा था कि डिबिया मैंने ली है तो तुमने मेरी बीवी पर क्यों हाथ डाला?

मैजिस्ट्रेट : **(गर्दन बढ़ाकर हिश करके डांटता हुआ)** तुम जो कुछ कहना चाहोगे, उसे कहने का मौका तुम्हें अभी मिलेगा। इस अफ़सर से तुम्हें कुछ पूछना है?

जोन्स : **(चिढ़कर)** नहीं।

मैजिस्ट्रेट : अच्छी बात है। हम पहले मुजरिम औरत का बयान लेंगे।

मिसेज़ जोन्स : हुजूर, मैं तो अब भी वही कहती हूं जो अब तक बराबर कहती आ रही हूं कि मैंने डिबिया नहीं चुराई।

मैजिस्ट्रेट : ठीक है, लेकिन क्या तुमको मालूम था कि किसी ने उसे चुराया?

मिसेज़ जोन्स : नहीं हुजूर, और मेरे शौहर ने जो कुछ कहा है उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानती। हां, इतना ज़रूर जानती हूं कि वह सोमवार को बहुत रात गए घर आये। उस वक्त एक बज चुका था। और वह अपने आपे में न थे।

मैजिस्ट्रेट : क्या वह शराब पीये था?

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर।

मैजिस्ट्रेट : और वह नशे में था?

मिसेज़ जोन्स : हां हुजूर, बिलकुल बे-ख़बर था?

मैजिस्ट्रेट : और उसने तुमसे कुछ कहा?

मिसेज़ जोन्स : नहीं हुजूर, खाली मुझे गालियां देता रहा। और सुबह को जब मैं उठी और काम करने चली गयी तो वह सोता रहा। फिर मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती। हां, मिस्टर बार्थिविक ने, जो मेरे मालिक हैं, मुझसे कहा कि डिबिया ग़ायब हो गई है।

मैजिस्ट्रेट : हां! हां!

मिसेज़ जोन्स : तो जब मैं अपने शौहर का कोट हिलाने लगी तो सिगरेट की डिबिया उसमें से गिर पड़ी। और सारे सिगरेट चारपाई पर बिखर गए।

मैजिस्ट्रेट : **(स्नो से)** तुम कहते हो कि सिगरेट चारपाई पर बिखर गए। तुमने सिगरेट चारपाई पर बिखरे देखे थे?

स्नो : नहीं हुजूर, मैंने नहीं देखा।

मैजिस्ट्रेट : यह तो कहते हैं कि मैंने उन्हें बिखरे नहीं देखा?

जोन्स : न देखा हो, लेकिन बिखरे थे।

स्नो : हुजूर, मैंने कमरे की सब चीज़ों के देखने का मौका ही नहीं पाया। इस मर्द ने मेरा काम ही हल्का कर दिया।

मैजिस्ट्रेट : **(मिसेज़ जोन्स से)** अच्छा तुम्हें और क्या कहना है?

मिसेज़ जोन्स : तो हुजूर, मैंने जब डिबिया देखी, तो मेरे होश उड़ गए। और मेरी समझ में न आया कि उन्होंने क्यों ऐसा काम किया। जब जासूस अफ़सर आया तो हम लोगों में इसी के बारे में कहा-सुनी हो रही थी। क्योंकि हुजूर, उसने मुझे तबाह कर दिया। अब मुझे कौन नौकर रक्खेगा। मेरे तीन-तीन बच्चे हैं हुजूर।

मैजिस्ट्रेट : **(गर्दन बढ़ाकर)** हां, हां! लेकिन उसने तुमसे कहा क्या?

मिसेज़ जोन्स : मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे ऊपर ऐसी क्या आफ़त आई कि तुमने

ऐसा काम कर डाला। उसने कहा कि यह नशे के कारण हुआ। मैंने बहुत शराब पी ली थी और न जाने मुझ पर क्या सनक सवार हो गई थी। और बात यह है हुजूर, कि उन्होंने दिन भर कुछ नहीं खाया था। और जब खाली पेट कोई शराब पीता है, तो चट दिमाग़ पर असर हो जाता है। हुजूर, न जानते हों, लेकिन यह बात सच है। और मैं क़सम खाकर कहती हूं कि जब से हमारा ब्याह हुआ, उसने कभी ऐसा काम नहीं किया। हालांकि हम लोगों को बड़ी-बड़ी आफ़तें झेलनी पड़ीं।

कुछ ज़ोर देकर बात करती हुई।

मुझे विश्वास है कि अगर वह अपने आपे में होते तो ऐसा काम कभी न करते।

मैजिस्ट्रेट : हां, हां! लेकिन क्या तुम नहीं जानतीं कि यह कोई उज्र नहीं है?

मिसेज़ जोन्स : हां जानती हूं हुजूर। **(मैजिस्ट्रेट आगे झुक जाता है और क्लार्क से बातें करता है।)**

जैक : **(पीछे की जगह से आगे को झुककर)** दादा, मैं कहता हूं।

बार्थिविक : चुप रहो। **(रोपर से बातें करते हुए मुंह छिपाकर)** रोपर, अच्छा हो कि तुम अब खड़े हो जाओ और कह दो कि और सब बातों और क़ैदियों की ग़रीबी का ख़याल करके हम इस मुक़दमे को और आगे नहीं बढ़ाना चाहते। और अगर मैजिस्ट्रेट साहब इसे उस आदमी का फ़िसाद समझकर करवाई करें—

रोपर सिर हिलाता है।

गंजा कांस्टेबिल : ख़ामोश।

मैजिस्ट्रेट : अच्छा, अब अगर यह मान लिया जाय कि जो कुछ तुम कहती हो वह सच है और जो कुछ तुम्हारा शौहर कहता है वह भी सच है, तो मुझे यह विचार करना पड़ेगा कि वह कैसे घर के अन्दर पहुंचा। और क्या तुमने अन्दर पहुंचने में उसकी कुछ मदद की? तुम उस मकान में मज़दूरनी का काम करती हो न?

मिसेज़ जोन्स : जी हां, हुजूर, लेकिन अगर मैं उसको मकान के अन्दर घुसने में मदद देती तो मेरे लिए यह बहुत बुरा काम होता। और मैंने जहां-जहां काम किया कभी ऐसा न किया।

मैजिस्ट्रेट : ख़ैर, यह तो तुम कहती हो। अब देखें तुम्हारा शौहर क्या बयान देता है।

जोन्स : **(जो पीछे के कठघरे में हाथ टेके हुए धीमी रूखी आवाज़ से बोलता है)** मैं वही कहता हूं जो कुछ मेरी बीवी कहती है। मैं कभी पुलिस कोर्ट में नहीं लाया गया। और मैं साबित कर सकता हूं कि मैंने यह काम नशे में किया। मैंने अपनी बीवी से कह दिया और

वह भी यही कहेगी कि मैं उस चीज़ को पानी में फेंकने जा रहा था। यह इससे कहीं अच्छा था कि मैं उसके पीछे परेशान होता।

मैजिस्ट्रेट : लेकिन तुम मकान के अन्दर घुसे कैसे?

जोन्स : मैं उधर से गुज़र रहा था। मैं 'गोट और बेल्स' सराय से घर जा रहा था।

मैजिस्ट्रेट : गोट और बेल्स क्या चीज़ है? क्या सराय है?

जोन्स : हां, उस कोने पर। उस दिन बैंक की छुट्टी थी और मैंने दो घूंट पी ली थी। मैंने छोटे मिस्टर बार्थिविक को ग़लत जगह दरवाज़े की कुंजी लगाते हुए देखा।

मैजिस्ट्रेट : अच्छा!

जोन्स : **(आहिस्ता से और कई बार रुककर)** तो मैंने उन्हें कुंजी का सुराख दिखा दिया। वह नवाबों की तरह शराब में चूर था। तब वह चला गया लेकिन थोड़ी देर बाद लौटकर बोला, मेरे पास तुम्हें देने को कुछ नहीं है। लेकिन अन्दर आकर थोड़ी-सी पी लो। तब मैं अन्दर चला गया। आप भी ऐसा ही करते। तब हमने थोड़ी-सी ह्विस्की पी। आप भी इसी तरह पीते। तब छोटे मिस्टर बार्थिविक ने मुझसे कहा, थोड़ी सी शराब पी लो। और तम्बाकू भी पियो। तुम जो चीज़ चाहो ले लो। यह कहकर वह सोफ़ा पर सो गया। तब मैंने थोड़ी सी और शराब पी। और सिगरेट भी पिया। फिर मैं आपसे नहीं कह सकता कि इसके बाद क्या हुआ?

मैजिस्ट्रेट : क्या तुम्हारा मतलब है कि तुम नशे में इतने चूर थे कि कुछ भी याद नहीं रहा?

जैक : **(बाप से नरमी के साथ)** ठीक यही बात है—जो जो—

बार्थिविक : चुप!

जोन्स : हां, मेरा यही मतलब है।

मैजिस्ट्रेट : फिर भी तुम कहते हो कि तुमने डिबिया चुराई?

जोन्स : मैंने डिबिया चुराई हरगिज़ नहीं। मैंने सिर्फ ले ली थी।

मैजिस्ट्रेट : **(गर्दन आगे बढ़ाकर)** तुमने इसे चुराया नहीं? तुमने इसे सिर्फ ले लिया? क्या तुम्हारी थी? यह चोरी नहीं तो और है क्या?

जोन्स : मैंने इसे ले लिया।

मैजिस्ट्रेट : तुमने इसे ले लिया। तुम इसे उनके घर से अपने घर ले गए—

जोन्स : **(गुस्से से बात काटकर)** मेरा कोई घर नहीं है।

मैजिस्ट्रेट : अच्छी बात है। देखें नवयुवक मिस्टर बार्थिविक, तुम्हारे बयान के बारे में क्या कहते हैं?

जोन्स गवाहों के कठघरे से चला जाता है। गंजा कांस्टेबिल जैक को इशारे से बुलाता है और वह अपनी टोपी लिए

गवाहों के कठघरे में आता है। रोपर मेज़ के पास चला आता है जो वकीलों के लिए अलग की हुई है।

हलफ़ देने वाला क्लार्क : तुम अदालत के सामने जो बयान दोगे उसे सच होना चाहिए, बिलकुल सच होना चाहिए और सिवास सच के कुछ न होना चाहिए। ईश्वर तुम्हारी मदद करे। इस किताब को चूमो।

जैक किताब चूमता है

रोपर : **(जिरह करते हुए)** तुम्हारा क्या नाम है?

जैक : **(धीमी आवाज़ में)** जान बार्थिविक जूनियर।

क्लार्क इसे लिख लेता है।

रोपर : कहां रहते हो?

जैक : नं. 6 राकिंघम गेट।

उसके सब जवाबों को क्लार्क लिखता जाता है।

रोपर : तुम मालिक के लड़के हो?

जैक : **(बहुत धीमी आवाज़ में)** हां।

रोपर : ज़रा ज़ोर से बोलो। क्या तुम मुजरिम को जानते हो?

जैक : **(जोन्स स्त्री पुरुष की ओर देखकर धीमी आवाज़ में)** मैं मिसेज़ जोन्स को जानता हूं। मैं—**(ऊंची आवाज़ में)** मर्द को नहीं जानता।

जोन्स : लेकिन मैं तुमको जानता हूं।

गंजा कांस्टेबिल : चुप रहो।

रोपर : अच्छा, क्या तुम ईस्टर-मंडे की रात को बहुत देर में घर आए थे?

जैक : हां।

रोपर : क्या तुमने ग़लती से दरवाज़े की कुंजी दरवाज़े में लगी हुई छोड़ दी?

जैक : हां।

मैजिस्ट्रेट : अच्छा, तुमने कुंजी दरवाज़े में ही लगी छोड़ दी?

रोपर : और अपने आने के विषय में तुम्हें सिर्फ इतना ही याद है?

जैक : **(धीमी आवाज़ में)** हां, इतना ही।

मैजिस्ट्रेट : तुगने इस मर्द मुजरिम का बयान सुना है। उसके बारे में तुम क्या कहते हो?

जैक : **(मैजिस्ट्रेट की तरफ़ मुड़कर दृढ़ता के साथ)** बात यह है हुजूर, कि मैं रात को थिएटर देखने चला गया था। वहां खाना खाया और बहुत रात गए घर पहुंचा।

मैजिस्ट्रेट : तुम्हें याद है कि जब तुम आए तो यह आदमी बाहर खड़ा था?

जैक : जी नहीं। **(वह हिचकता है)** मुझे तो याद नहीं।

मैजिस्ट्रेट : **(कुछ गड़बड़ाकर)** क्या इस आदमी ने तुम्हें दरवाज़ा खोलने में मदद दी? जैसा इसने अभी कहा है। किसी ने दरवाज़ा खोलने में

तुम्हें मदद दी?

जैक : जी नहीं। मैं तो ऐसा नहीं समझता। मुझे याद नहीं।

मैजिस्ट्रेट : तुम्हें याद नहीं? लेकिन याद करना पड़ेगा। तुम्हारे लिए यह कोई मामूली बात तो नहीं है कि जब तुम आओ तो दूसरा आदमी दरवाज़ा खोल दे! क्यों?

जैक : **(लज्जा से मुस्कराकर)** नहीं ।

मैजिस्ट्रेट : अच्छा तब?

जैक : **(असमंजस में पड़कर)** बात यह है कि शायद मैंने उस रात को बहुत ज़्यादा शामपेन पी ली थी।

मैजिस्ट्रेट : **(मुस्कराकर)** अच्छा तुमने बहुत ज्यादा शामपेन पी ली थी?

जोन्स : मैं इन महाशय से एक सवाल पूछ सकता हूं?

मैजिस्ट्रेट : हां, हां! तुम जो कुछ पूछना चाहो पूछ सकते हो।

जोन्स : क्या आपको याद नहीं है कि आपने कहा था कि मैं अपने बाप की तरह लिबरल हूं और मुझसे पूछा था कि तुम क्या हो?

जैक : **(माथे पर हाथ रखकर)** मुझे कुछ याद आता है—

जोन्स : और मैंने आपसे कहा था कि मैं पक्का कंसर्वेटिव हूं। तब आपने मुझसे कहा, तुम तो साम्यवादी से मालूम पड़ते हो। जो कुछ चाहो ले लो।

जैक : **(दृढ़ता के साथ)** नहीं मुझे इस तरह की कोई बात याद नहीं है।

जोन्स : लेकिन मुझे याद है। और मैं उतना ही सच बोलता हूं, जितना आप। मैं इसके पहले कभी पुलिस कोर्ट में नहीं लाया गया। ज़रा इधर देखिए, क्या आपको याद नहीं है कि आपके हाथ में एक नीले रंग की थैली थी? और—

बार्थिविक उछल पड़ता है।

रोपर : मैं हुजूर से अर्ज़ करना चाहता हूं कि यह प्रश्न फजूल है। क्योंकि कैदी ने खुद इक़बाल कर लिया है कि उसे कुछ याद नहीं।

मैजिस्ट्रेट के चेहरे पर मुस्कराहट दिख़ाई पड़ती है।

अन्धा अन्धे को क्या रास्ता दिखा रहा है।

जोन्स : **(बिगड़कर)** मैंने इनसे ज़्यादा ख़राब काम नहीं किया है। मैं ग़रीब आदमी हूं, मेरे पास न रुपये हैं न दोस्त हैं। वह धनी है, वह जो कुछ चाहे कर सकता है।

मैजिस्ट्रेट : बस-बस, इन बातों से कोई फ़ायदा नहीं। तुम्हें शान्त रहना चाहिए। तुम कहते हो, यह डिबिया मैंने ले ली। तुमने क्यों उसे ले लिया? क्या तुम्हें रुपये की बहुत ज़रूरत थी?

जोन्स : रुपये की तो मुझे हमेशा ज़रूरत रहती है।

मैजिस्ट्रेट : क्या इसीलिए तुमने उसे ले लिया?

जोन्स : नहीं।

मैजिस्ट्रेट : **(स्नो से)** इसके पास कोई चीज़ बरामद हुई?

स्नो : जी हां, हुजूर। इसके पास 6 पौं. 12 शिलिंग निकले। और यह थैली।

लाल रेशमी थैली मैजिस्ट्रेट के हाथ में रख दी जाती है। बार्थिविक अपनी जगह से उचक पड़ता है लेकिन फिर बैठ जाता है।

मैजिस्ट्रेट : **(थैली की तरफ़ देखकर)** हां, हां, लाओ, इसे देखूं।

सब चुप हो जाते हैं।

नहीं, थैली के बारे में कोई बयान नहीं है। तुम्हें वे सब रुपये कहां मिले?

जोन्स : **(कुछ देर चुप रहकर एकाएक बोल उठता है)** मैं इस सवाल का जवाब देने से इनकार करता हूं।

मैजिस्ट्रेट : अगर तुम्हारे पास इतने रुपये थे तो तुमने डिबिया क्यों ली?

जोन्स : मैंने इसे जलन की वजह से ली।

मैजिस्ट्रेट : **(गर्दन बढ़ाकर)** तुमने इसे जलन की वजह से लिया? ख़ैर यह एक बात है। लेकिन क्या तुम ख़याल करते हो कि तुम जलन की वजह से दूसरों की चीज़ें लेकर शहर में रह सकते हो?

जोन्स : अगर आपकी हालत मेरी सी होती, अगर आप भी बेकार होते—

मैजिस्ट्रेट : हां, हां, मैं जानता हूं। चूंकि तुम बेकार हो, तुम समझते हो कि चाहे तुम जो कुछ करो, माफ़ हो जाएगा।

जोन्स : **(जैक की तरफ़ उंगली दिखलाकर)** आप उनसे पूछिए। उन्होंने क्यों उसकी थैली—

रोपर : **(आहिस्ता से)** क्या हुजूर को अभी इस गवाह की और जरूरत है?

मैजिस्ट्रेट : **(व्यंग्य से)** नहीं। कोई फ़ायदा नहीं।

जैक कठघरे से चला जाता है, और सिर झुकाए हुए अपनी जगह पर बैठ जाता है।

जोन्स : आप इनसे पूछिए कि इन्होंने क्यों उस औरत की—

लेकिन गंजा कांस्टेबिल उसकी आस्तीन पकड़ लेता है।

गंजा कांस्टेबिल : चुप!

मैजिस्ट्रेट : **(ज़ोर देकर)** मेरी बात सुनो। मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि इन्होंने क्या लिया और क्या नहीं लिया? तुमने पुलिस के काम में मदाख़िलत क्यों की?

जोन्स : उनका काम यह नहीं था कि मेरी बीवी को गिरफ्तार करते। वह एक शरीफ़ औरत है और उसने कुछ नहीं किया है।

मैजिस्ट्रेट : नहीं, पुलिस का यही काम था। तुमने अफ़सर को घूंसा क्यों मारा?

जोन्स : ऐसी हालत में दूसरा आदमी भी मारता? अगर मेरा बस चलता तो फिर मारता।

मैजिस्ट्रेट : इस प्रकार बिगड़कर तुम अपने मुक़दमे को कुछ मदद नहीं पहुंचा रहे हो। अगर सभी तुम्हारी तरह करने लगें तो हमारा काम ही न चले।

जोन्स : **(आगे झुककर, चिन्तित स्वर में)** लेकिन उसकी क्या दशा होगी? इस बदनामी से उसे जो नुकसान हुआ, वह कौन भरेगा?

मिसेज़ जोन्स : हुज़ूर, बच्चों की फ़िक्र इन्हें सता रही है। क्योंकि मेरी नौकरी जाती रही। और इस बदनामी की वजह से मुझे दूसरा मकान लेना पड़ा।

मैजिस्ट्रेट : हां हां, मैं जानता हूं। लेकिन इसने अगर ऐसा काम न किया होता, तो किसी का कुछ न होता।

जोन्स : **(घूमकर जैक की तरफ़ देखते हुए)** मेरा काम इतना बुरा नहीं है, कि जितना इनका। पूछता हूं इनका क्या होगा?

गंजा कांस्टेबिल कहता है—चुप!

रोपर : मिस्टर बार्थिविक, यह अर्ज़ कर रहे हैं कि कै़दी की ग़रीबी का ख़याल करके वह डिबिए के मामले को आगे नहीं बढ़ाना चाहते। शायद हुज़ूर, दंगे की कारवाई करेंगे।

जोन्स : मैं इसको दबने न दूंगा। मैं चाहता हूं कि सब कुछ इंसाफ़ के साथ किया जाए—मैं अपना हक़ चाहता हूं।

मैजिस्ट्रेट : **(डेस्क को पीटकर)** तुमको जो कुछ कहना था, वह कह चुके। अब चुप रहो।

सन्नाटा हो जाता है। मैजिस्ट्रेट झुककर क्लार्क से बातें करता है।

हां, मेरा ख़याल है कि इस औरत को बरी कर दूं।

वह दया भाव से मिसेज़ जोन्स से कहता है जो अभी तक कठघरे पर हाथ धरे अनिश्चल खड़ी है।

तुम्हारे लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि इस आदमी ने ऐसा काम किया। इसका फल उसको नहीं भोगना पड़ा बल्कि तुमको भोगना पड़ा। तुम्हें यहां दो बार आना पड़ा, तुम्हारी नौकरी छूट गई।

जोन्स की तरफ़ ताकता है।

और यही हमेशा होता है। तुम अब जाओ। मुझे दुःख है कि तुमको यहां व्यर्थ बुलाना पड़ा।

मिसेज़ जोन्स : **(धीमी आवाज़ में)** हुज़ूर। अनेक धन्यवाद।

वह कठघरे से चली जाती है और पीछे फिरकर जोन्स की तरफ़ देखती हुई अपने हाथों को मलती है और खड़ी हो जाती है।

मैजिस्ट्रेट : हां हां, मेरे बस की बात नहीं। अब जाओ, तुम खुद समझदार हो।

मिसेज़ जोन्स पीछे खड़ी होती है, मैजिस्ट्रेट अपने हाथ पर सिर झुका लेता है तब सिर उठा के जोन्स से कहता है।

मेरी बात सुनो। क्या तुम चाहते हो कि यह मामला यहीं तय कर दिया जाय या जूरी **(पंचायत)** के पास भेज दिया जाय।

जोन्स : **(बड़बड़ाता हुआ)** मैं जूरी नहीं चाहता।

मैजिस्ट्रेट : अच्छी बात है। मैं यहीं तय कर दूंगा। **(ज़रा रुककर)** तुमने डिबिया चुराना स्वीकार कर लिया है।

जोन्स : चुराना नहीं।

गंजा कांस्टेबिल : चुप!

मैजिस्ट्रेट : और पुलिस पर हमला करना।

जोन्स : भला, कोई भी आदमी ऐसी बेजा...

मैजिस्ट्रेट : यहां तुम्हारा व्यवहार बहुत बुरा था। तुम यह सफ़ाई देते हो कि जब तुमने डिबिया चुराई तब तुम नशे में थे। यह कोई सफाई नहीं है। अगर तुम शराब पीकर क़ानून को तोड़ोगे तो तुम्हें उसका फल भोगना पड़ेगा। और मैं तुमसे साफ़-साफ़ कहता हूं कि तुम जैसे आदमी जो नशे में चूर हो जाते हैं, और जलन या उसे जो कुछ तुम कहना चाहो, उसके फेर में पड़कर दूसरों की बुराई करते हैं, वे समाज के शत्रु हैं।

जैक : **(अपनी जगह पर झुककर)** दादा! यही तो आपने मुझसे भी कहा था।

बार्थिविक : चुप! **(सब चुप हो जाते हैं। मैजिस्ट्रेट क्लार्क से राय लेता है। जोन्स आगे झुका हुआ प्रतीक्षा करता है।)**

मैजिस्ट्रेट : यह तुम्हारा पहला कसूर है और मैं तुम्हें हल्की सज़ा देना चाहता हूं। **(तीव्र स्वर में लेकिन बिना कोई भाव प्रकट किए हुए)** एक महीने की कड़ी क़ैद।

वह झुककर क्लार्क से बातें करता है। गंजा कांस्टेबिल और एक दूसरा सिपाही मिलकर जोन्स को कठघरे से ले जाते हैं।

जोन्स : **(रुककर और पीछे हटकर)** तुम इसे न्याय कहते हो? जैक का तो कुछ भी नहीं बिगड़ा? उसने शराब पी, उसने थैली ली—उसी ने थैली ली, लेकिन **(ज़बान दबाकर)** उसका रुपया उसे बचा ले गया। वाह रे इंसाफ़।

जोन्स कोठरी में बन्द कर दिया जाता है और स्त्री-पुरुषों के मुंह से एक सूखी धीमी आह निकलती है।

मैजिस्ट्रेट : **(वह अपनी जगह से उठता है)** अब हम नाश्ता करने जाते हैं।

अदालत में हलचल मच जाती है, रोपर उठता है और

समाचार के सम्वाददाता से बातें करता है। जैक सिर उठाकर अकड़ता हुआ बरामदे में चला जाता है। बार्थिविक भी उसके पीछे-पीछे जाता है।

मिसेज़ जोन्स : (विनीत भाव से उसकी तरफ फिरकर) हुज़ूर!

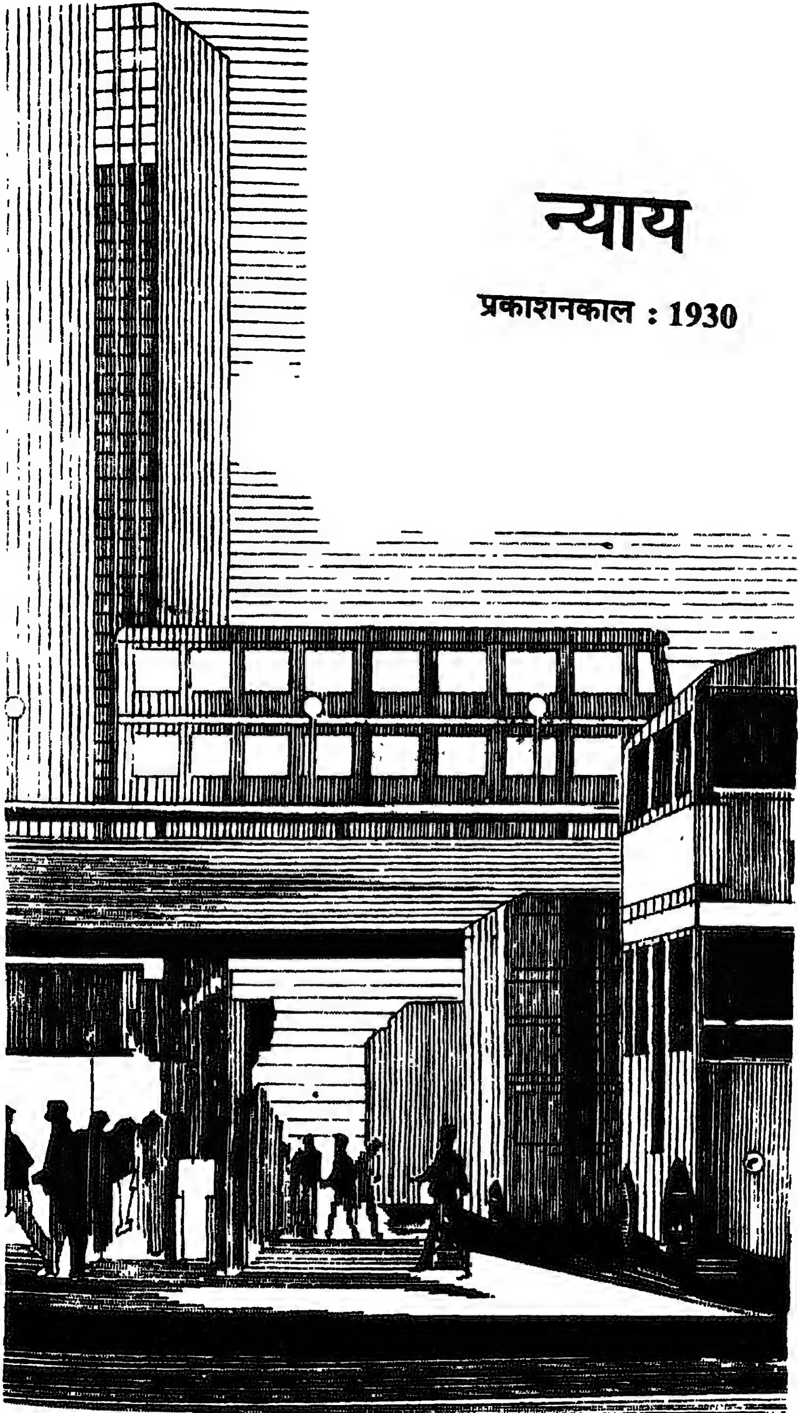
बार्थिविक असमंजस में पड़ जाता है। फिर हिम्मत हारकर वह लज्जित भाव से इंकार का संकेत करता है और जल्दी से कचहरी से चला जाता है। मिसेज़ जोन्स उसकी तरफ देखती खड़ी रह जाती है।

पर्दा गिरता है।

●●●

न्याय

प्रकाशनकाल : 1930



न्याय

अनुवादक

श्रीयुत प्रेमचन्द जी, बी० ए०

प्रयाग

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०

१९३०

(मुख पृष्ठ : न्याय)

पात्र-सूची

जेम्स हो, वाल्टर हो (जेम्स हो का लड़का) सालिसिटर (वकील)

राबर्ट कोकसन	उनका मैनेजिंग क्लार्क (कायाध्यक्ष)
विलियम फ़ाल्डर	छोटा (जूनियर) क्लार्क
स्वीडिल	आफिस का नौकर
विस्टर	डिटेक्टिव (खुफिया पुलिस)
कावली	एक कैशियर (खजांची)
मिस्टर जस्टिस फ्लाइड	जज विचारक
हैरोल्ड क्लीवर	पुराना एडवोकेट (सरकारी वकील)
हेक्टर फ्रोम	एक युवक वकील
कैप्टेन डान्सन मी॰ सी॰	एक जेल के अध्यक्ष
रेवरेन्ड हिउ मिलर	एक जेल के पादड़ी
एडवर्ड क्लेमेन्ट	एक जेल के डाक्टर
वुडर	प्रधान वार्डर
मोने, क्लिप्टन, ओक्लिअरी	कैदी
रुथ हनीविल	एक औरत

बैरिस्टर गण, सालिसिटर गण, दर्शक गण, चोबदार, रिपोर्ट गण, जूरीमैन, वार्डर गण और कैदी गण।

समय—वर्त्तमान काल।

अंक 1	:	जेम्स एण्ड वाल्टर हो का आफिस जुलाई।
अंक 2	:	अदालत, दोपहर, अक्टूबर।
अंक 3	:	जेल, दिसम्बर।

8

दृश्य पहला	:	जेल अध्यक्ष का आफिस।
दृश्य दूसरा	:	जाने आने का रास्ता।
दृश्य तीसरा	:	जेल की कोठरी।
अंक 4	:	जेम्स एण्ड वाल्टर हो का आफिस, सबेरा, मार्च दो वर्ष बाद की घटना।

अंक 1

दृश्य पहला

[जुलाई मास का सबेरा, जेम्स और वाल्टर हो के मैनेजिंग क्लार्क का कमरा है। कमरा पुराने ढंग का, महोगनी की पुरानी कुरसी और मेज़ों से सज़ा हुआ है, जिन पर चमड़ा लगा हुआ है। टीन के बक्स और इलाकों के नक्शे कतारों में सजे हैं। कमरे में तीन दरवाज़े हैं, जिनमें दो दरवाज़े बीच दीवार में पास-पास हैं। इन दरवाज़ों में एक बाहर के दफ्तर में जाने का है। लड़की और कांच के परदे की दीवार से मैनेजर का कमरा उस बाहरी कमरे से अलग कर दिया गया है। बाहरी कमरे में जाने का दरवाज़ा खोलने पर एक चौड़ा दरवाज़ा और दिखाई देता है जहां से नीचे उतरने की सीढ़ियां हैं। बीच के दो दरवाज़ों में दूसरा दरवाज़ा छोटे क्लार्क के कमरे में जाता है। तीसरा दरवाज़ा मालिकों के कमरे में जाने का है।

मैनेजिंग क्लार्क कोकसन बैठे हुए मेज़ पर रखी हुई पास बुक के अंकों को जोड़ रहे हैं और अपने ही आप अंकों को दुहराते भी जाते हैं। उनकी उम्र साठ वर्ष की है। चश्मा लगाये हुए हैं। क़द के ठिगने हैं, सिर गंजा है। ठुड्डी कुछ आगे को उठी हुई है, जिससे नीयत की सफ़ाई झलक रही है। एक पुराना काला कोट और धारीदार पतलून पहने हुए हैं।]

कोकसन : और पांच बारह, और तीन-पन्द्रह, उन्नीस, तेईस बत्तीस, इकतालीस हासिल आए चार।

पृष्ठ पर एक निशान लगाकर उसी प्रकार उच्चारण करता जाता है।

पांच, सात, सत्रह, बारह, चौबीस और नौ तैंतीस, तेरह हासिल आया एक।

फिर निशान लगाता है। बाहर के कमरे का दरवाज़ा खुलता है, और ऑफ़िस का अर्दली स्वीडिल दरवाज़े को बन्द करता हुआ भीतर आता है। उसकी अवस्था 16 साल की है। उसके चेहरा का रंग पीला और बाल खड़े हैं।

झुंझलाकर ऐसी दृष्टि से देखता हुआ मानो कह रहा हो कि तुम क्या करने आए हो?

और हासिल आया एक।

स्वीडिल : फ़ाल्डर को कोई पूछ रहा है।

कोकसन : पांच, नौ, सोलह, इक्कीस, उन्तीस और हासिल आए दो। उसे मारिस के मकान पर भेज दो। नाम क्या है?

स्वीडिल : हनीविल!

कोकसन : चाहता क्या है?

स्वीड़िल : औरत है।

कोकसन : शरीफ़ औरत है?

स्वीडिल : नहीं, मामूली है।

कोकसन : उसे भीतर बुला लो। यह पास-बुक मिस्टर जेम्स के पास ले जाओ।

पास-बुक बन्द करता है।

स्वीडिल : (दरवाज़ा खोलकर) ज़रा आप अन्दर चली आयें।

रुथ हनीविल भीतर आती है। उसकी अवस्था छब्बीस वर्ष की है। क़द लम्बा, आंखें और बाल काले हैं। चेहरा सुगठित, सुडौल और हाथी दांत-सा सफ़ेद है। उसके कपड़े सादे हैं। वह बिलकुल चुपचाप खड़ी है। उसके अन्दाज़ और रंग-ढंग से मालूम होता है कि किसी अच्छे घर की है।

स्वीडिल पास-बुक लेकर मालिकों के कमरे की ओर चला जाता है।

कोकसन : (घूमकर रुथ की ओर देखते हुए) वह अभी बाहर गया है। **(सन्देह के साथ)** आप अपना मतलब कहिए।

रुथ : (बेधड़क होकर) जी हां, कुछ अपना काम है।

कोकसन : यहां निजी काम से कोई नहीं आने पाता। आप चाहें तो उसे कुछ लिखकर रख जायं।

रुथ : नहीं, मैं उनसे मिलना नहीं चाहती हूं।

वह अपनी काली आंखों को सिकोड़कर कटाक्ष से उनकी ओर देखती है।

कोकसन : (फूलकर) यह बिलकुल नियम के विरुद्ध है। मान लीजिए मेरा ही कोई मित्र यहां मुझसे मिलने आए। यह तो ठीक नहीं है।

रुथ : जी नहीं, ठीक है?

कोकसन : (कुछ चकराकर) हां कहता तो हूं, और तुम तो यहां एक छोटे क्लार्क से मिलना चाहती हो?

रुथ : जी हां, मुझे उससे बहुत ही ज़रूरी काम है।

कोकसन : (उसकी तरफ़ पूरी तरह मुंह फेरकर, कुछ बुरा मनाकर) लेकिन यह वकील का दफ़्तर है। तुम उसके घर पर जाकर मिलो।

रुथ : वहां तो वह था ही नहीं।

कोकसन : **(चिन्तित होकर)** क्या तुम्हारा उससे कुछ रिश्ता है?

रुथ : जी नहीं।

कोकसन : **(दुविधे में पड़कर)** मेरी समझ में नहीं आता क्या कहूं? यह कोई दफ़्तर का काम तो है नहीं।

रुथ : लेकिन मैं करूं तो क्या करूं?

कोकसन : वाह! यह मैं क्या जानूं?

स्वीडिल लौट आता है, और इस कमरे से कोकसन की ओर कुतूहल से घूरता हुआ कमरे में चला जाता है। जाते समय दरवाज़े को सावधानी के साथ दो-एक इंच खुला छोड़ जाता है।

कोकसन : **(उसकी दृष्टि से होशियार होकर)** ऐसा नहीं हो सकता, आप जानती हैं, ऐसा किसी तरह नहीं हो सकता! मान लो एक मालिक ही आ जायं तो?

बाहरी कमरे के बाहरी दरवाज़े से रह-रहकर कुंडी का खटकना और हंसना सुनाई देता है।

स्वीडिल : **(दरवाज़े के भीतर सिर डालकर)** यहां बाहर कुछ बच्चे खड़े हैं।

रुथ : जी, वे मेरे बच्चे हैं।

स्वीडिल : मैं उन्हें देखता रहूं?

रुथ : यह तो बिल्कुल छोटे बच्चे हैं। **(कोकसन की ओर एक कदम बढ़ाती है।)**

कोकसन : तुम्हें दफ़्तर के घण्टों में उसका समय नष्ट न करना चाहिए। यों ही हमारे यहां एक क्लार्क की कमी है।

रुथ : मरने जीने का सवाल है जी।

कोकसन : **(फिर कान खड़े करके)** मरने जीने का?

स्वीडिल : यह फाल्डर साहब आ गए।

फाल्डर बाहर के कमरे से भीतर आता है। उसका चेहरा पीला है, देखने में अच्छा है। उसकी आंखें तेज़ और सहमी हुई हैं। वह क्लार्क के कमरे की ओर बढ़ता है और वहां हिचकता हुआ खड़ा हो जाता है।

कोकसन : खैर, मैं तुम्हें एक मिनट दे सकता हूं। लेकिन यह नियम विरुद्ध है।

वह कागज़ों का एक पुलिन्दा उठाकर मालिकों के कमरे में घुस जाता है।

रुथ : **(धीमी, घबराई हुई आवाज़ से)** वह फिर पीने लगा, बिल। कल रात को उसने मेरा गला काटने की कोशिश की थी। उसके जागने के पहिले ही मैं बच्चों को लेकर भाग आई हूं। मैं तुम्हारे घर गई थी।

फाल्डर : मैंने डेरा बदल दिया है।

रुथ : आज रात के लिए सब तैयारी हो गई है न?

फाल्डर : मैं टिकट ले आया हूं। टिकट घर के पास मुझसे पौने बारह बजे मिलना। ईश्वर के लिए भूल मत जाना कि हम स्त्री-पुरुष हैं।

उसकी ओर स्थिर और निराश नेत्रों से देखते हुए।

रुथ : तुम जाने से डर तो नहीं रहे हो?

फाल्डर : क्या अपना और बच्चों का सामान तुमने ठीक कर लिया है?

रुथ : नहीं, सब छोड़ आई हूं! मुझे हनीविल के जग जाने का भय था। बस एक बेग लेकर चली आई हूं। मैं अब घर के पास तक नहीं जा सकती।

फाल्डर : **(हक्का-बक्का होकर)** वह सब रुपया यों ही बरबाद गया! कम-से-कम कितने रुपये हों तो तुम्हारा काम चल जाय?

रुथ : छः पाउंड। मेरे ख़्याल से इतने में काम चल जायगा।

फाल्डर : देखो, हमारे जाने की ख़बर किसी को न हो। **(मानो कुछ अपने ही आप से)** वहां जाकर मैं यह सब भुला देना चाहता हूं।

रुथ : अगर तुम्हें खेद हो रहा हो, तो रहने दो। मुझे उसके हाथ से मर जाना मंजूर है। परन्तु तुम्हारी मरजी के खिलाफ़ तुम्हें न ले जाऊंगी।

फाल्डर : **(एक अजीब हंसी हंसकर)** हमारा जाना तो रुक नहीं सकता। तुम्हें परवा नहीं। मैं तो तुम्हें चाहता हूं।

रुथ : अब भी विचार कर लो, क्योंकि अभी कुछ नहीं बिगड़ा है।

फाल्डर : जो कुछ होना था हो गया। यह लो सात पाउंड। याद रखना टिकट घर के पास—पौने बारह बजे। रुथ, यदि मुझे तुमसे प्रेम न होता।

रुथ : मुझे प्यार करो।

दोनों आवेग के साथ चिपट जाते हैं, ठीक इसी समय कोकसन के आ जाने से वे झट अलग हो जाते हैं। रुथ बाहर के कमरे से होकर चली जाती है। कोकसन गंभीर भाव से सब समझते हुए भी दृढ़ता से धीरे-धीरे जाकर अपनी जगह पर बैठते हैं।

कोकसन : यह बात ठीक नहीं है, फाल्डर।

फाल्डर : फिर ऐसा कभी नहीं होगा।

कोकसन : इस जगह यह बिल्कुल मुनासिब नहीं।

फाल्डर : हां, ठीक है।

कोकसन : तुम खुद समझ सकते हो, मैंने केवल इसीलिए आने दिया कि वह कुछ दुःखी थी, और उसके साथ बच्चे थे। **(मेज़ की दराज़ से एक पुस्तक निकालकर देते हुए)** लो इसे पढ़ना। 'घर की पवित्रता' बड़े अच्छे ढंग से लिखी गयी है।

फ़ाल्डर : **(एक अजीब मुंह बनाकर उसे लेते हुए)** धन्यवाद!

कोकसन : और सुनो फ़ाल्डर, वाल्टर साहब आते ही होंगे। क्या तुमने यह सूची पूरी कर ली जो डेविस जाने से पहिले कर रहा था?

फ़ाल्डर : जी, मैं कल उसे बिलकुल पूरी कर दूंगा। निश्चय।

कोकसन : डेविड को गये एक हफ्ता हो गया। देखो फ़ाल्डर, ऐसे काम नहीं चलेगा। तुम निजके झगड़ों में पड़कर दफ्तर के कामों में लापरवाही कर रहे हो। मैं उस औरत के आने की बात तो किसी से न कहूंगा। लेकिन—

फ़ाल्डर : **(अपने कमरे में जाते हुए)** बड़ी दया है।

कोकसन उस दरवाज़े की ओर घूमता है, जिसमें से होकर फ़ाल्डर गया है। फिर एक बार सिर हिलाकर कुछ लिखने के लिए तैयार होता है। उसी समय बाहर कमरे से वाल्टर हो आता है। उसकी उम्र पैंतीस वर्ष की होगी। सूरत भलेमानुसों की सी है। आवाज़ मीठी और नम्र है।

वाल्टर : गुडमार्निंग, कोकसन!

कोकसन : गुडमार्निंग, मिस्टर वाल्टर!

वाल्टर : अब्बा जान?

कोकसन : **(बड़प्पन जताते हुए, मानो ऐसे युवक से बातें कर रहा हो, जो अपने काम में जी न लगाता हो)** मिस्टर जेम्स तो ठीक गयारह बजे यहां आ गए हैं।

वाल्टर : मैं तसवीर देखने गिल्डहाल चला गया था।

कोकसन : **(इस प्रकार से उसकी ओर देखते हुए मानो उसने ठीक इसी उत्तर की आशा की हो।)** देख आए आप? हां, यह बोल्टर का पट्टा है। क्यों इसे वकील के पास भेज दूं?

वाल्टर : अब्बाजान क्या कहते हैं?

कोकसन : उनसे पूछना व्यर्थ है।

वाल्टर : मगर हमें बहुत होशियार रहना चाहिए।

कोकसन : बिलकुल ज़रा-सी तो बात है। मुश्किल से मिहनताने भर का भी न होगा। मैं समझता था आप खुद ही इसे कर लेंगे।

वाल्टर : नहीं, आप भेज ही दें। मैं ज़िम्मेदारी अपने सिर नहीं लेना चाहता।

कोकसन : **(ऐसे दयाभाव से जो शब्दों में नहीं प्रकट किया जा सकता)** जैसी आपकी इच्छा; और यह रास्ते के हक़वाला जो मामला है, उसकी सब लिखा-पढ़ी हो गयी है।

वाल्टर : मैं जानता हूं; लेकिन साफ़-साफ़ तो उनकी मनशा यही मालूम होती है कि शिरकत की ज़मीन को अलग कर दिया जाय।

कोकसन : हमें इससे क्या मतलब, हम क़ानून से बाहर नहीं हैं।

वाल्टर : मैं इसे पसंद नहीं करता।

कोकसन : **(सद्‌भाव से मुसकिराकर)** हम क़ानून के खिलाफ़ नहीं जा सकते। आपके पिता जी भी ऐसे कामों में समय नष्ट करना पसंद न करेंगे।

ठीक इसी समय जेम्स हो मालिकों के कमरे में से होकर भीतर आते हैं। वह ठिगने हैं। सफ़ेद गलमुच्छे हैं। सिर के बाल घने और सफ़ेद हैं। आंखों से होशियारी टपकती है। सोने का कमानीदार चश्मा नाक पर लगा है।

जेम्स : गुडमार्निंग, वाल्टर!

वाल्टर : आपका मिज़ाज कैसा है, अब्बा जान?

कोकसन : **(अपने हाथ के कागज़ों को नाक के नीचे से इस तरह देखता हुआ, मानो उनके आकार को तुच्छ समझ रहा हो)** मैं बोल्टर के पट्टे को फ़ाल्डर को दिये आता हूं कि इस बारे में हिदायत तैयार कर दे।

फ़ाल्डर के कमरे में जाता है।

वाल्टर : उस रास्ते के हक़वाले मामले में क्या होगा?

जेम्स : हां, हमको वहां जाना पड़ेगा। मुझे याद आता है तुमने कहा था न, कि फ़र्म का रोकड़ चार सौ के कुछ ऊपर है?

वाल्टर : हां, है तो।

जेम्स : **(पास बुक बेटे की ओर बढ़ाकर)** तीन-पांच-एक—और हाल का तो कोई चेक है ही नहीं। ज़रा वह चेक-बुक निकाल तो लाओ।

वाल्टर एक अलमारी की दराज़ खोलकर चेकबुक लाकर देता है।

जेम्स : मुसन्नों में पाउंड पर निशान लगाते जाओ। पांच, चौवन, सात, पांच, उट्ठाइस, बीस, नब्बे, ग्यारह, बावन, इकहत्तर मिलते हैं न?

वाल्टर : **(सिर हिलाकर)** कुछ समझ ही में नहीं आता, मैंने तो अच्छी तरह देख लिया था, चार सौ से ऊपर थे।

जेम्स : लाओ मुझे तो दो। **(चेक-बुक लेकर मुसन्नों को अच्छी तरह जांचता है।)** देखो तो यह नब्बे कैसा है?

वाल्टर : इसे किसने मंगाया?

जेम्स : तुमने।

वाल्टर : **(चेक-बुक लेकर)** जुलाई 7 को लिखा गया है? हां, उसी दिन मैं ट्रेन्टन का इलाका देखने गया था। शुक्रवार को मैं गया था और मंगलवार को वापस आया था। आपको तो याद होगा। लेकिन देखिए, अब्बा जान, मैंने नौ पाउंड का चेक भुनाया था। पांच गिन्नी स्मिथर को दिया। बाक़ी सब मेरे खर्च में आया। हां, केवल आधा

क्राउन बचा था।

जेम्स : **(गम्भीर भाव से)** उसे नब्बे पाउंडवाले चेक को देखना चाहिए।

पासबुक के पाकिट में से चेक को ढूंढ़ निकालता है।

ठीक तो मालूम होता है। यहां नौ तो कहीं नहीं है। कुछ गड़बड़ है। उस नौ पाउंड के चेक को किसने भुनाया था?

वाल्टर : **(परेशानी और दुःख के साथ)** लाइए देखूं, मैं मिसेज़ रेडी की वसीयत लिख रहा था। उतना ही समय मिला था। याद आ गया, हां, मैंने कोकसन को दिया था।

जेम्स : इन अक्षरों को तो देखो। क्या तुमने लिखा था?

वाल्टर : **(विचारकर)** अक्षर पीछे की ओर कुछ घूम जाता है। लेकिन यह तो नहीं घूमता।

जेम्स : **(कोकसन उसी समय फ़ाल्डर के कमरे से निकलकर आता है।)** उससे पूछना चाहिए। कोकसन ज़रा इधर आकर सोचो तो सही। क्या तुम्हें याद है, गए शुक्रवार को मिस्टर वाल्टर ने तुम्हें एक चेक भुनाने के लिए दिया था? यह वही दिन है जिस दिन वह ट्रेन्टन गए थे।

कोकसन : हां, नौ पाउंड का चेक था।

जेम्स : ज़रा देखो तो इसे!

चेक उसके हाथ में देता है।

कोकसन : नहीं! नौ पाउंड था, मेरा खाना उसी समय आता था। और मैं गर्म-गर्म खाना पसंद करता हूं इसलिए चेक को मैंने डेविस को दे दिया कि जल्दी बैंक चला जाय। वह गया और सब नोट ही नोट लाया था। आपको तो याद होगा, मिस्टर वाल्टर! गाड़ी के भाडे के लिए आपको कुछ रेज़गारी की दरकार थी! **(कुछ अवज्ञा भरी दया की दृष्टि से)** इधर लाइए ज़रा मैं तो देखूं। आप शायद गलत चेक देख रहे हैं।

चेक बुक और पास बुक वाल्टर के हाथ से ले लेता है।

वाल्टर : नहीं, ऐसा नहीं है।

कोकसन : **(जांचकर)** बड़े अचम्भे की बात है।

जेम्स : तुमने डेविस को दिया था, और इधर डेविस सोमवार को आस्ट्रेलिया के लिए रवाना हो गया। दाल में कुछ काला है, कोकसन!

कोकसन : **(परेशानी और घबराहट के साथ)** यह तो पक्का जाल है। नहीं-नहीं, ज़रूर कुछ ग़लती हो रही है।

जेम्स : मेरा भी ऐसा ही ख़याल है।

कोकसन : मुझे यहां तीस साल हो गए, पर ऐसा कभी इस दफ़्तर में नहीं हुआ।

जेम्स : **(चेक और मुसन्ने को देखते हुए)** किसी बड़े चालाक आदमी का काम है। यह तुम्हारे लिए चेतावनी है वाल्टर, कि अंकों के बाद जगह मत छोड़ा करो।

वाल्टर : **(कुछ चिढ़कर)** मैं जानता हूं, लेकिन उस दिन में बड़ी जल्दीमें था।

कोकसन : **(अकस्मात्)** मेरे तो होश ठिकाने नहीं हैं।

जेम्स : मुसन्ने में भी अंक बदले हुए हैं। बड़ी उस्तादी से माल उड़ाया है। डेविस कौन से जहाज़ से गया है?

कोकसन : 'सिटी आफ़ रंगून' से।

जेम्स : हमें तार देकर उसे नेपल्स में गिरफ्तार करा देना चाहिए। अभी वहां पहुंचा न होगा।

कोकसन : उसकी जवान बीवी का क्या होगा। उस डेविस युवक को मैं बहुत चाहता हूं। छी! छी! इस दफ्क्तर में ऐसी—

वाल्टर : मैं बैंक जाकर ख़ज़ांची से दर्याफ्त करूं?

जेम्स : **(गंभीर भाव से)** उसे यहां ले आओ और कोतवाली को भी टेलीफोन करो।

वाल्टर : सचमुच?

बाहर के कमरे से होकर चला जाता है, जेम्स कमरे में टहलने लगता है। फिर ठहरकर कोकसन की ओर देखता है जो बेचैनी से पाजामे के ऊपर से घुटनों को रगड़ रहा है।

जेम्स : देखो कोकसन, चाल-चलन बड़ी चीज़ है। है न?

कोकसन : **(चश्मे के ऊपर से उसकी ओर देखकर)** मैं आपका ठीक मतलब समझ नहीं सका।

जेम्स : तुम्हारा बयान उसे बिलकुल न जंचेगा, जो तुम्हें नहीं जानता है।

कोकसन : आं-हां **(वह हंस पड़ता है और फिर यकायक गंभीर होकर कहता है।)** मैं उस युवक के लिए बहुत दुःखित हूं। मिस्टर जेम्स, मझे अपने लड़के के लिये भी इससे अधिक दुःख न होता।

जेम्स : बुरी बात है।

कोकसन : सब काम ठीक चलता हो वहां यकायक ऐसी वारदात हो जाय! आफ़त है और क्या। आज खाना भी न रुचेगा।

जेम्स : ऐं—यहां तक नौबत पहुंच गई?

कोकसन : चिंता में डालने वाली बात है। **(धीरे से)** वह ज़रूर किसी लालच में पड़ गया होगा।

जेम्स : इतनी जलदी नहीं, कोकसन। अभी उस पर दोष भी तो नहीं साबित हुआ है।

कोकसन : अगर मुझे एक महीने की तनख़्वाह न मिलती तो मुझे अफ़सोस न होता, मगर यह तो—**(सोचता है)**

जेम्स : मैं ख़्याल करता हूं वह जल्दी पहुंचेगा।

कोकसन : **(ख़ज़ांची के लिए सब सामान ठीक कर)** पचास गज़ भी तो नहीं है यहां से; अभी एक मिनट में आ पहुंचता है।

जेम्स : इस दफ़्तर में बेईमानी! यह सोचकर मेरे दिल को चोट लगती है।

वह मालिकों के कमरे की ओर जाता है।

स्वीडिल : **(आहिस्ते से आकर धीरे-धीरे कोकसन से)** वह फिर आ पहुंची। फ़ाल्डर से शायद कुछ कहना भूल गई है।

कोकसन : **(यकायक चौंककर)** हैं? नहीं असंभव है! लौटा दो उसे।

जेम्स : मामला क्या है?

कोकसन : कुछ नहीं मिस्टर जेम्स, एक निजी मामला है। चलो, मैं खुद चलता हूं।

जेम्स के मालिक के कमरे में जाते ही, वह बाहर के दफ्तर में आता है।

देखो अब तुम तंग मत करो, अभी हम किसी से मिल नहीं सकते।

रुथ : क्या एक मिनट के लिए भी नहीं?

कोकसन : नहीं, हरगिज़ नहीं। अगर तुम्हें कुछ बहुत जरूरी काम हो, तो बाहर ठहरो। अभी थोड़ी देर बाद वह खाना खाने जायगा।

रुथ : जी! बहुत अच्छा!

वाल्टर ख़ज़ांची के साथ जाता है, और रुथ के बगल से होकर निकलता है। रुथ भी उसी समय बाहर के कमरे से चली जाती है।

कोकसन : **(ख़ज़ांची से, जो देखने में, घुड़सवार पलटन का एक आलसी सिपाही सा मालूम होता था।)** गुडमार्निंग **(वाल्टर से)** आपके अब्बाजान कहां हैं?

वाल्टर मालिकों के कमरे की ओर चला जाता है।

कोकसन : मिस्टर कौली, बात तो छोटी है पर है बड़ी भद्दी। मुझे शर्म आती है कि इसके लिए आपको कष्ट देना पड़ा।

कौली : मुझे वह चेक ख़ूब याद है। उसमें कोई ख़राबी नहीं थी।

कोकसन : ख़ैर, आप बैठिए तो। मैं ऐसा आदमी तो नहीं हूं कि ज़रा-सी बात में घबड़ा जाऊं, लेकिन इस तरह का मामला ऐसी जगह में हो जाय, यह तो ठीक नहीं। मैं तो यह चाहता हूं कि लोग सच्चे दिल से खुशी-खुशी काम करें।

कौली : ठीक है।

कोकसन : **(बटन पकड़कर, खींचते हुए और मालिकों के कमरे की ओर देखते हुए।)** मान लिया कि वह अभी बिल्कुल नासमझ है, पर मैंने उससे कई बार कहा कि अंकों के आगे जगह न छोड़ा करो, पर वह सुनता ही नहीं।

कौली : मुझे उस आदमी का सूरत खूब याद है—बिल्कुल जवान था।

कोकसन : पर बात यों है कि शायद उस आदमी को हम आपके आगे पेश न

कर सकें।

जेम्स और वाल्टर अपने कमरे में से बाहर आते हैं।

जेम्स : गुडमार्निंग, मिस्टर कौली! आपने मुझे और मेरे लड़के को तो देख ही लिया। मिस्टर कोकसन और मेरे आफिस के नौकर स्वीडिल को भी आप देख चुके हैं। मैं समझता हूं, हममें से कोई न था। **(ख़जांची मुस्कराकर सिर हिलाता है)**

जेम्स : आप कृपाकर बैठिए तो यहां, मिस्टर कौली! कोकसन तुम ज़रा तब तक इनसे बातें तो करो। **(फ़ाल्डर के कमरे की ओर जाते हैं।)**

कोकसन : ज़रा एक बात सुनते जाइए, मिस्टर जेम्स।

जेम्स : कहो, कहो।

कोकसन : उस बेचारे को क्यों परेशान करते हैं? वह ग़रीब तो यों ही बात-बात में घबड़ा जाता है।

जेम्स : इस मामले को बिलकुल साफ़ कर लेना चाहिए कोकसन। फ़ाल्डर की ही नहीं तुम्हारी भी नेकनामी है इसी में।

कोकसन : **(ज़रा अकड़कर)** ख़ैर, मेरी तो आप चिन्ता न करें। वह आज सवेरे एक बार हैरान हो चुका है। मैं नहीं चाहता कि उसे दोबारा उलझन में डाला जाय।

जेम्स : यह तो जाब्ते की बात है, लेकिन ऐसे विषय में भलमंसी की क्या बात है। बहुत संगीन मामला है। जब तक कौली साहब को बातों में लगाइए। **(फ़ाल्डर के कमरे का दरवाज़ा खोलता है।)** बोल्टर के पट्टे की मिसिल तो लाओ फ़ाल्डर।

कोकसन : **(झटके के साथ)** आप कुत्ते तो नहीं पालते?

ख़जांची दरवाज़े की ओर एकटक देखता रहता है, और कुछ जवाब नहीं देता।

कोकसन : आपके पास कोई बुलडाग का बच्चा हो, तो एक मुझे दे दीजिए।

ख़जांची के चेहरे का रंग देखकर उसका चेहरा उतर जाता है, और वह फ़ाल्डर की ओर मुड़कर देखता है। फ़ाल्डर कौली के चेहरे की ओर इस तरह टकटकी लगाए द्वार पर खड़ा है, जैसे खरगोश सांप की ओर आंख जमा लेता है।

फ़ाल्डर : **(कागज़ों को लाकर)** जी, ये हैं सब।

जेम्स : **(उनको लेकर)** धन्यवाद!

फ़ाल्डर : जी, तो मेरे लिये और कोई काम नहीं है?

जेम्स : नहीं। **(फ़ाल्डर घूमकर अपने कमरे में चला जाता है, जैसे ही वह दरवाज़ा बन्द करता है, जेम्स ख़जांची की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता है। ख़जांची सिर हिलाता है)**

जेम्स : यही था? हमें तो यह संदेह न था।

कौली : बिलकुल ठीक, यह भी मुझे पहिचान गया। उस कमरे से भाग तो नहीं सकता?

कोकसन : **(दुःखित होकर)** एक ही खिड़की है, नीचे पूरा एक मंजिल और तहखाना।

फ़ाल्डर के कमरे का दरवाज़ा खुलता है, फ़ाल्डर हाथ में टोपी लिये, बाहरी कमरे के दरवाजे की तरफ़ जाता है।

जेम्स : **(धीरे से)** कहां जाते हो, फ़ाल्डर?

फ़ाल्डर : जी, खाना खाने।

जेम्स : थोड़ी देर और ठहर सकते हो? मुझे तुमसे इस पट्टे के बारे में कुछ कहना है। समझे!

फ़ाल्ड : जी, अच्छा! **(अपने कमरे में वापस जाता है।)**

कौली : अगर ज़रूरत पड़े, तो मैं क़सम खाकर कह सकता हूं कि इसी आदमी ने चेक भुनाया था। उस दिन सवेरे वही आखिरी चेक था जो खाना खाने के पहिले मैंने लिया था। देखिए मेरे पास उन नोटों के नम्बर भी मौजूद हैं।

एक कागज़ का पुरज़ा मेज़ पर रखता है फिर अपनी टोपी घुमाते हुए।

अच्छा, गुडमार्निंग!

जेम्स : गुडमार्निंग, मिस्टर कौली!

कौली : गुडमार्निंग, मिस्टर कोकसन!

कोकसन : **(कुछ भौंचक्के से होकर)** गुडमार्निंग!

ख़जांची बाहर के आफिस घर से होकर जाता है, कोकसन अपनी कुर्सी पर इस भांति बैठ जाता है, मानो इस परेशानी में उसे सिर्फ़ कुर्सी ही का सहारा है।

वाल्टर : आप अब क्या करना चाहते हैं?

जेम्स : उसे यहां बुलाओ, चेक और मुसन्ना मुझे दे दो।

कोकसन : आख़िर यह बात क्या है; मैंने तो समझा था, यह डेविस—

जेम्स : अभी सब मालूम हुआ जाता है।

वाल्टर : ठहरिए, क्या आपने अच्छी तरह सोच लिया है?

जेम्स : बुलाओ उसको अन्दर।

कोकसन : **(मुश्किल से उठकर फ़ाल्डर के कमरे का दरवाज़ा खोलकर भारी स्वर से)** ज़रा यहां तो आना।

फ़ाल्डर आता है।

फ़ाल्डर : **(शान्त भाव से)** जी, हाज़िर हूं!

जेम्स : **(अचानक उसकी ओर मुड़कर चेक को उसकी ओर बढ़ाते हुए)** तुम इस चेक को पहिचानते हो, फ़ाल्डर?

फाल्डर : जी नहीं!

जेम्स : अच्छी तरह देखो तो इसे, तुमने पिछले शुक्रवार को इसे भुनाया था।

फाल्डर : हां, जी हां! यह वही है, जिसे डेविस ने मुझे दिया था।

जेम्स : मुझे मालूम है और तुमने डेविस को रुपये दिए थे?

फाल्डर : जी हां!

जेम्स : जब डेविस ने तुम को यह चेक दिया था तब क्या यह ठीक ऐसा ही था?

फाल्डर : जी हां, मेरा तो यही ख़याल है।

जेम्स : क्या तुम्हें मालूम है कि मिस्टर वाल्टर ने केवल 9 पाउंड का चेक लिखा था?

फाल्डर : जी नहीं, नब्बे का।

जेम्स : नहीं फ़ाल्डर, सिर्फ़ नौ का।

फाल्डर : **(घबड़ाकर)** मैंने समझा नहीं।

जेम्स : मतलब यह कि इस चेक में फेरफार किया गया है। अब सवाल यह है कि तुमने किया या डेविस ने!

फाल्डर : मैंने-मैंने?

जेम्स : समझकर जवाब दो, सोच लो!

फाल्डर : **(समझकर)** जी नहीं, मुझसे यह काम नहीं हुआ।

जेम्स : मिस्टर वाल्टर ने कोकसन को चेक दिया था। उसी समय कोकसन का खाना आया था। उस समय ज़रूर एक बजा होगा।

कोकसन : हां, इसीलिए तो मैं जा नहीं सका।

जेम्स : ठीक है, इसीलिए कोकसन ने डेविस को चेक दे दिया। तुमने सवा बजे चेक भुनाया था। यह ऐसे पता चलता है कि ख़जांची ने खाना न खाने के पहिले इसी चेक के रुपये दिए थे।

फाल्डर : जी हां, डेविस ने मुझे इसलिए चेक दिया था कि उसके कुछ मित्र उसे एक दावत दे रहे थे।

जेम्स : **(सिटपिटाकर)** तो तुम डेविस पर दोष लगाते हो?

फाल्डर : यह मैं कैसे कह सकता हूं? बड़े अचरज की बात है!

वाल्टर अपने बाप के बिलकुल पास जाकर कान में कुछ कहता है।

जेम्स : फिर शनिवार के बाद तो डेविस यहां नहीं आया न?

कोकसन : **(किसी प्रकार इस युवक को सहारा देने की इच्छा से और इस बात के टलने की झलक की तनिक आशा पाकर)** नहीं, वह सोमवार को चला गया।

जेम्स : वह यहां आया तो नहीं था? क्यों फ़ाल्डर?

फाल्डर : **(बहुत धीमे स्वर से)** जी नहीं।

जेम्स : बहुत अच्छा, तब तुम इस बात का क्या जवाब देते हो कि मुसन्ना में नौ के बाद सिफ़र मंगल के दिन या उसके बाद जोड़ा गया।

कोकसन : **(आश्चर्य से)** यह क्या?

फ़ाल्डर का सिर चकराने लगता है, बड़ी कठिनाई के साथ वह अपने को संभालता है। मगर उसकी हालत बुरी हो जाती है।

जेम्स : **(बहुत गंभीर होकर)** कोकसन, बात पकड़ गई न! चेकबुक मिस्टर वाल्टर की जेब में मंगलवार तक था। क्योंकि उसी दिन सवेरे ट्रेन्टन से लौटे हैं। क्या अब भी तुम इनकार करते हो फ़ाल्डर तुमने चेक और मुसन्ने को नहीं बदला?

फ़ाल्डर : जी नहीं, जी नहीं, हां साहब। जी हां, मैंने ही यह काम किया है।

कोकसन : **(दुःख के आवेश में)** छी! छी! ऐसा काम किया तुमने?

फ़ाल्डर : साहब, मुझे रुपये की बड़ी सख़्त ज़रूरत थी। मुझें ध्यान ही न रहा कि मैं क्या कर रहा हूं।

कोकसन : तुम्हारे दिमाग़ में यह बात आई कैसे?

फ़ाल्डर : **(उसकी बातों का मतलब समझकर)** मैं कुछ नहीं कह सकता, साहब, एक मिनट के लिए मैं पागल हो गया था।

जेम्स : तुम्हारा मिनट बहुत लम्बा होता है, फ़ाल्डर। **(मुसन्ने को ठोंकते हुए)** कम से कम चार दिन का।

फ़ाल्डर : हुजूर मैं क़सम खाता हूं, मुझे बिलकुल ख़्याल न था कि मैं क्या कर रहा हूं। जब कर चुका तब होश आया। मेरी इतनी हिम्मत न हुई कि कह दूं। भूल जाइए, साहब, मेरी इस दुर्बलता को, मैं सब रुपये वापस कर दूंगा, मैं वादा करता हूं।

जेम्स : अपने कमरे में जाओ।

फ़ाल्डर करुणाजनक दृष्टि से देखकर अपने कमरे में चला जाता है। सन्नाटा छा जाता है।

इससे बुरा मामला और क्या हो सकता है?

कोकसन : ऐसी सीनाज़ोरी और यहां!

वाल्टर : अब क्या करना चाहिए?

जेम्स : और कुछ नहीं, मुक़दमा चलाइए।

वाल्टर : मगर यह इसका पहिला क़सूर है।

जेम्स : **(सिर हिलाकर)** मुझे इसमें बहुत सन्देह है। कितनी सफ़ाई के साथ हाथ मारा है!

कोकसन : मैं तो समझता हूं इसे किसी ने मोह में डाल दिया।

जेम्स : जीवन भारी मोह के सिया और है क्या?

कोकसन : हां, यह तो ठीक है लेकिन मैं काया और कामिनी की बात कर रहा

हूं, मिस्टर जेम्स! उससे मिलने के लिए आज ही एक औरत आई थी।

वाल्टर : वही औरत जो आते वक्त हमारे सामने से निकली थी। क्या वह इसकी बीवी है?

कोकसन : नहीं, कोई रिश्ता नहीं। **(आंखें मटकाना चाहता है, पर समय का विचार करके रुक जाता है।)** हां, विवाहिता है।

वाल्टर : आपको कैसे मालूम?

कोकसन : अपने बच्चों को साथ लाई थी।

विरक्ति के साथ।

वे दफ़्तर के बाहर थे।

जेम्स : तब तो पक्का शोहदा है।

वाल्टर : मेरें ख़्याल से उसे इस बार क्षमा कर देना चाहिए।

जेम्स : जिस कमीनापन से उसने यह काम किया है, उससे तो मैं क्षमा नहीं कर सकता। यह समझे बैठा था, कि अगर बात खुल गई, तो हमारा सन्देह डेविस पर होगा। यह बिलकुल इत्तिफ़ाक था कि चेक-बुक तुम्हारी जेब में पड़ी रह गई।

वाल्टर : ज़रूर किसी क्षणिक मोह में पड़ गया था। उसको सोचने का वक्त नहीं मिला।

जेम्स : कोई ईमानदार और साफ़ दिल आदमी एक मिनट के अन्दर ऐसे मोह में नहीं पड़ जाता। उसका कोई ठिकाना नहीं है। रुपये के मामले में अपनी नीयत को साफ़ रखने की शक्ति उसमें नहीं है।

वाल्टर : **(रूखे स्वर से)** लेकिन पहिले कभी उसने ऐसा नहीं किया।

जेम्स : **(उसकी बात को अनसुनी करके)** अपने समय में मैंने ऐसे बहुत आदमी देखे हैं। इसके सिवा कोई उपाय नहीं कि उन्हें हानि के पथ से दूर रक्खा जाय। उनकी आंखें नहीं होतीं।

वाल्अर : उसे सख़्त क़ैद की सज़ा हो जायगी।

कोकसन : जेल बड़ी बुरी जगह है!

जेम्स : **(हिचकता हुआ)** समझ में नहीं आता, उसे कैसे छोड़ दिया जा सकता है। इस दफ़्तर में उसे रखने का तो अब कोई सवाल ही नहीं। लेकिन ईमान ही मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है।

कोकसन : **(मंत्र मुग्ध की भांति)** इसमें क्या शक।

जेम्स : वैसे ही उसे हम उन लोगों के बीच में नहीं छोड़ सकते जो उसके चाल चलन को नहीं जानते। समाज की ओर भी हमारा कुछ कर्तव्य है।

वाल्टर : लेकिन उस पर इस तरह तो दाग़ लगा देना अच्छा नहीं।

जेम्स : अगर चकमा देने की कोशिश न करता, तो मैं उसे क्षमा कर देता। लेकिन उसने अपराध पर अपराध किया है। आवारा है।

कोकसन : मैं यह नहीं कहता, परिस्थितियों पर विचार करके उसका अपराध हलका हो जाता है।

जेम्स : एक ही बात है, उसने खूब दाव घात लगाई, और मालिकों की आंखों में धूल झोंकी, और एक निर्दोषी आदमी के सिर अपराध मढ़ दिया। अगर ऐसा मामला भी क़ानून के लायक न हो, तो कौन होगा।

वाल्टर : फिर भी उसकी सारी ज़िन्दगी की ओर देखिए।

जेम्स : **(चुटकी लेते हुए)** अगर तुम्हारी चले तो कोई अभियोग ही न चले।

वाल्टर : **(मुंह सिकोड़कर)** मैं ऐसी बातों से नफ़रत करता हूं।

कोकसन : हमें तो सिर्फ अपने बचाव से मतलब है।

जेम्स : ऐसी बातों से कोई फ़ायदा नहीं।

अपने कमरे की ओर बढ़ता है।

वाल्टर : थोड़ी देर के लिए, आप अपने को उसकी जगह पर रखिए, पिताजी!

जेम्स : यह मेरे बस की बात नहीं।

वाल्टर : हमें क्या मालूम कि उसके ऊपर क्या संकट पड़ा था।

जेम्स : यह समझ लो वाल्टर, कि जो आदमी ऐसा करना चाहता है, वह करेगा, चाहे संकट हो या न हो। अगर न करना चाहे, तो कोई उसको मज़बूर नहीं कर सकता।

वाल्टर : वह आगे ऐसा काम नहीं करेगा।

कोकसन : अच्छा, मैं अभी उससे इस बारे में बातें करता हूं। उस बेचारे पर सख़्ती न करनी चाहिए।

जेम्स : अब जाने दो, कोकसन! मैंने इरादा पक्का कर लिया है।

अपने कमरे में चला जाता है।

कोकसन : **(थोड़ी देर सन्देह के साथ कुछ सोचकर)** तुम्हारे पिता का कोई विशेष दोष नहीं है, अगर वह यही उचित समझते हैं, तो मैं उनका हाथ न पकडूंगा।

वाल्टर : हटो भी कोकसन, तुम मेरी बात पर ज़ोर क्यों नहीं देते। उस पर दया तो आती है।

कोकसन : **(ग़रूर से)** मैं नहीं कह सकता मुझे दया आ रही है, या नहीं।

वाल्टर : हमें पछताना पड़ेगा।

कोकसन : उसने जान-बूझकर यह काम किया है।

वाल्टर : दया खींचतान से नहीं आती।

कोकसन : **(प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखकर)** नाराज़ न हो, हमें सोच-समझकर काम करना चाहिए।

स्वीडिल : **(तश्तरी में खाना लाकर)** आपका खाना, हुजूर।

कोकसन : रखो।

स्वीडिल खाना मेज पर रखता है, ठीक इसी समय जासूस

विस्टर बाहर के कमरे में आता है। और वहां किसी को न देखकर भीतर चला आता है। वह मोटा आदमी है, क़द मामूली, मूछें मुड़ी हुई, नीले रंग का टिकाऊ सूट पहिने है। मज़बूत बूट पैर में हैं।

विस्टर : **(वाल्टर से)** मैं स्काटलैण्ड यार्ड के थाने से आ रहा हूं। मेरा नाम डिटेक्टिव सार्जेण्ट विस्टर है।

वाल्टर : **(प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता हुआ)** बहुत अच्छा, मैं अपने पिता को ख़बर देता हूं।

वह मालिकों वाले कमरे में जाता है, जेम्स आता है।

जेम्स : गुडमार्निंग!

कोकसन से जो उसकी ओर करुणा भरी दृष्टि से देखता है।

मुझे अफ़सोस है कि मैं मान नहीं सकता। मुझे ऐसा करना ही पड़ेगा। उस दरवाज़े को खोलो।

स्वीडिल आश्चर्य के साथ सहमते हुए दरवाज़ा खोलता है।

इधर आओ, फ़ाल्डर।

जैसे ही फ़ाल्डर झिझकता हुआ बाहर निकलता है, डिटेक्टिव जेम्स का इशारा पाकर उसकी बाहों को पकड़ लेता है।

फ़ाल्डर : **(सिकुड़ते हुए)** नहीं-नहीं-नहीं-नहीं!

विस्टर : बस! बस! तुम तो समझदार आदमी हो।

जेम्स : मैं इस पर चोरी करने का जुर्म लगाता हूं।

फ़ाल्डर : हुजूर, दया कीजिए, एक औरत है जिसके लिये मैंने यह काम किया। मुझे कल तक के लिए छोड़ दीजिए।

जेम्स हाथ का इशारा करता है। उसके उस निष्ठुर भाव को देखकर फ़ाल्डर निश्चल हो जाता है। फिर धीरे-धीरे मुड़कर अपने को डिटेक्टिव के हाथ में दे देता है। जेम्स कठोर और गम्भीर होकर पीछे-पीछे चलता है। स्वीडिल लपककर द्वार खोलता है, और उनके पीछे बाहर के कमरे से दालान तक जाता है, जब वे सब चले जाते हैं कोकसन एक बार चारों ओर घूमकर बाहर के कमरे की ओर दौड़ता है।

कोकसन : **(अधीर होकर)** सुनो, सुनो! ये सब हम क्या कर रहे हैं?

चारों ओर सन्नाटा छा जाता है, वह अपना रूमाल निकाल कर मुंह पर से पसीना पोंछता है। फिर अपनी मेज़ के पास अंधे की तरह आकर बैठ जाता है। और खाने की ओर उदास भाव से देखता है।

पर्दा गिरता है।

अंक 2

दृश्य पहला

[न्यायालय। अक्टूबर महीने का तीसरा पहर, चारों ओर कुहरा छाया हुआ है। कचहरी में बारिस्टर, वकील, सम्वाददाता, चपरासी, जूरियों से ठसाठस भरा है। एक बड़े मज़बूत कठघरे में फ़ाल्डर है। उसके दोनों तरफ़ दो सिपाही निगरानी के लिए खड़े हैं, मानो उनकी उस पर कुछ विशेष दृष्टि नहीं है। फ़ाल्डर ठीक जज के सामने बैठा है। जज एक ऊंची जगह पर बैठा है। उसका भी ध्यान किसी खास चीज़ पर नहीं है। सरकारी वकील हेरोल्ड क्लीवर दुबला और पीला आदमी है। उम्र अधेड़ से कुछ अधिक है। सिर पर एक नक़ली बाल लगाए बैठा है, जिसका रंग उसके चेहरे के रंग से मिलता-जुलता है। वादी का वकील हेक्टर फ्रोम जवान और लम्बे क़द का है। मूंछ और दाढ़ी साफ़ है। एक सफेद नक़ली बाल सिर पर पहिने है। दर्शकों में जेम्स और मिस्टर होम बैठे हैं। उनकी गवाही हो चुकी है। कोकसन और ख़ज़ ढंची भी बैठे हैं। विस्टर गवाही के कठघरे से उतर रहा है।]

क्लीवर : यह सरकारी मुक़दमा है हुज़ूर।

अपने कपड़ों को संभालकर बैठता है।

फ्रोम : **(अपनी जगह से उठता हुआ, जज को सलाम करके)** हुज़ूर जज और जूरी के सदस्य गण! मैं इस यथार्थ बात को अस्वीकार नहीं करता कि अभियुक्त ने चेक के अंकों को बदला था। मैं आपके सम्मुख इस बात का प्रमाण दूंगा कि उस समय अभियुक्त की मानसिक अवस्था कैसी थी, और आपकी सेवा में निवेदन करूंगा कि उस समय उसे उसका जिम्मेदार समझने में आप उसके साथ अन्याय करेंगे, वास्तव में अभियुक्त ने यह काम चित्त की अव्यवस्थित दशा में किया जो क्षणिक उन्माद के समान था। इसका कारण वह भीषण समस्या थी, जो उस पर आ पड़ी थी। महोदय! अभियुक्त की उम्र केवल तेईस वर्ष की है। मैं अभी एक औरत को यहां पेश करता हूं जिसके बयान से आपको मालूम हो जायगा, कि अभियुक्त ने यह काम क्यों किया। आप स्वयं उसके मुख से उसके जीवन की करुण-कथा और उससे भी करुण प्रेम-वृत्तांत सुनेंगे, जो अभियुक्त के हृदय में उसने जागृत की थी। महाशय गण! वह औरत अपने पति के साथ बड़ी बुरी अवस्था में रहती है। उसका पति बराबर उसके

साथ अत्याचार करता है। यहां तक कि उस बेचारी को डर है कि वह उसे मार तक न डाले। इस समय मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि किसी नवयुवक के लिए किसी की विवाहित स्त्री से प्रेम करना प्रशंसनीय या उचित है अथवा उसको यह अधिकार है कि वह उस स्त्री की उसके पिशाच पति से रक्षा करे। परन्तु हम सबको मालूम है, कि प्रेम आदमी से क्या-क्या नहीं करा सकता। महोदयो! मैं आपसे कहता हूं कि उस औरत का बयान सुनते समय आप इस बात पर ध्यान रखें, कि एक निर्दय और अत्याचारी व्यक्ति से विवाह होने के कारण वह उसके हाथ से छुटकारा नहीं पा सकती। क्योंकि विवाह-विच्छेद कराने के लिए मार-पीट के सिवा किसी और दोष का दिखाना ज़रूरी है जो शायद उसके पति में नहीं है।

जज : क्या इन बातों का भी अभियोग से कोई सम्बन्ध है, मिस्टर फ्रोम?

फ्रोम : हुजूर, मैं अभी यह आपको साबित करूंगा।

जज : बहुत अच्छा।

फ्रोम : इस प्रकार की अवस्था में वह और क्या कर सकती थी। उसके लिए और कौन-सा रास्ता खुला था? या तो वह अपने शराबी पति के साथ रहकर अत्याचारों को चुपचाप सहती अथवा अदालत के ज़रिए विवाह-विच्छेद कराती। लेकिन महाशय गण! अपने अनुभवों से मैं कह सकता हूं कि अदालत की शरण लेकर भी अपने पति के अत्याचारों से बचना कठिन था। और किसी तरह वह बच भी जाती, तो सिवा किसी कारखाने में जाने या सड़क पर मारे-मारे फिरने के और कुछ भी नहीं कर सकती थी। क्योंकि कोई काम न जानने वाली औरत के लिए अपना और अपने बच्चों का पालन करना आसान काम नहीं। यह अब उसे मालूम हो रहा है। या तो वह सरकारी ख़ैरात-ख़ाने में जाती या अपनी लाज बेचती।

जज : आप अपने विषय से बहुत दूर चले गए। मिस्टर फ्रोक।

फ्रोक : मैं एक मिनट के अन्दर अपना आशय बतला दूंगा, हुजूर।

जज : ख़ैर, कहो।

फ्रोम : महोदय! विचार कीजिए। यह औरत स्वयं आपको ये बातें बतायेगी और अभियुक्त भी उसका समर्थन करेगा, कि ऐसी अवस्थाओं में पड़कर उसने अपने उद्धार की सारी आशाएं उस पर छोड़ दीं। क्योंकि इस युवक के हृदय में उसने जो भाव उत्पन्न किए थे, उससे वह अपरिचित न थी। इस विपत्ति से बचने के लिए, उसे इसके सिवा और कोई मार्ग दिखाई न दिया कि किसी दूर देश में जाकर, जहां उन्हें कोई न पहिचाने, वे पति-पत्नी की तरह रहें। बस यही उनका अंतिम और, जैसा निस्संदेह मेरे मित्र मिस्टर क्लेवर कहेंगे, अविचार-पूर्ण

निर्णय था। परन्तु यह सच्ची बात है कि दोनों का मन इसी पर तुला हुआ था। एक अपराध से बचने के लिए दूसरा अपराध करना अच्छी बात नहीं। और जिनके लिए ऐसी अवस्था में पड़ने की संभावना नहीं है, वे शायद मेरी बातों पर चौंक उठेंगे। परन्तु मैं उनका उत्तर देना नहीं चाहता। महोदय, चाहे आप इनके इस कार्य को किसी भी दृष्टि से देखें, चाहे इस दशा में पड़कर इन दोनों को क़ानून के हाथ में ले लेना आपको उचित मालूम हो या अनुचित पर बात यह अवश्य ठीक है। आफ़त की मारी हुई यह बेचारी औरत और उसको जान से चाहने वाला यह अभियुक्त, जो बालक से कुछ ही अधिक उम्र का होगा, इन दोनों ने एक साथ किसी दूर देश में जाने का निश्चय कर लिया था। अब इसके लिए इनको रुपये की आवश्यकता भी थी। परन्तु इनके पास रुपया नहीं था। अब सातवीं जुलाई की घटनाओं के विषय में, जिस दिन चेक पर का अंक बदला गया था, और जिन घटनाओं से मैं यह सिद्ध करना चाहता हूं कि अभियुक्त इस कार्य के लिए जिम्मेदार नहीं था, ये बातें आप गवाहों के मुख से ही सुनेंगे। राबर्ट कोकसन....।

एक बार चारों ओर घूम पड़ता है फिर सादा कागज़ हाथ में लेकर इन्तज़ार करता है।

कोकसन की पुकार होती है, वह आकर गवाहों के कठघरे में जाता है, टोपी को अपने सामने पकड़े रहता है, उसे हलफ़ दी जाती है।

फ्रोम : आपका नाम क्या है?

कोकसन : राबर्ट कोकसन।

फ्रोम : क्या आप उस आफिस के मैनेजिंग क्लर्क हैं, जिसमें अभियुक्त नौकर था?

कोकसन : हां।

फ्रोम : अभियुक्त उनके यहां कितने दिनों से काम कर रहा है?

कोकसन : दो साल से। नहीं—मैं भूल रहा हूं—हां—बस सत्रह दिन कम दो साल।

फ्रोम : ठीक है, अच्छा मिहरबानी करके यह बतलाइए, कि दो साल में आपने उसका चाल-चलन कैसा पाया है?

कोकसन : **(मानो इस प्रश्न से कुछ ताज्जुब हुआ हो, वह धीरे से जूरी से कहता है।)** वह बहुत अच्छा और शरीफ़ आदमी था। मैंने कभी उसका कोई दोष नहीं देखा। मुझे तो बड़ा आश्चर्य हुआ था, जब उसने ऐसी हरकत की।

फ्रोम : क्या कभी उसने ऐसा मौका दिया था, जिससे उसकी ईमानदारी पर

आपको संदेह हुआ हो?

कोकसन : नहीं, हमारे दफ्तर में बेईमानी! नहीं, ऐसा कभी नहीं हुआ।

फ्रोम : मुझे विश्वास है मिस्टर कोकसन, कि जूरी महोदय गण आपकी बात को ध्यान से सुन रहे हैं।

कोकसन : हर एक रोज़गारी आदमी जानता है कि कारबार में ईमानदारी ही सब कुछ है।

फ्रोम : क्या आप उसके चाल-चलन की तारीफ़ कर सकते हैं?

कोकसन : **(जज की ओर मुड़कर)** बेशक! हमेशा से हम लोग सब बहुत अच्छी तरह आनंदपूर्वक रहते थे। उसे सुनकर मेरे तों होश उड़ गए।

फ्रोम : अच्छा, अब सातवीं जुलाई का दिन याद कीजिए। जिस दिन कि यह चेक बदला गया था। उस दिन उसके चित्त की क्या दशा थी?

कोकसन : **(जूरियों से)** यदि मुझसे पूछो, तो मैं कहूंगा, कि उस समय उसका चित्त ठिकाने नहीं था।

जज : **(तीव्र स्वर में)** क्या तुम्हारा मतलब है कि वह पागल था?

कोकसन : परेशान था।

जज : ज़रा साफ़-साफ़ कहो।

फ्रोम : **(नम्रता के साथ)** कहिए, मिस्टर कोकसन!

कोकसन : **(कुछ चिढ़कर)** मेरी राय में...

जज की ओर देखकर।

वह जैसी कुछ भी हो। वह कुछ डावांडोल-सौं था, अवश्य जूरीगण मेरे मतलब को समझ गए होंगे।

फ्रोम : क्या आप कह सकते हैं कि आपने यह राय कैसे क़ायम की।

कोकसन : हां! मैं कह सकता हूं, मैं होटल से खाना मंगवाता हूं। थोड़ा-सा कबाब और आलू। इससे वक्त की बहुत बचत होती है। हां, जब मेरा खाना आया मिस्टर वाल्टर ही ने मुझे वह चेक भुनाने के लिए दिया। इधर अगर मैं उस समय जाऊं, तो खाना ठंडा हुआ जाता है, और फिर ठंडा खाना किस काम का। यह तो आप समझ ही सकते हैं। हां, तो बस मैं क्लर्कों के कमरे में गया, और दूसरे क्लर्क डेविस को मैंने वह चेक भुना लाने को दे दिया। मैंने उस समय फाल्डर को कमरे में टहलते देखा, मैंने उससे कहा भी था 'फ़ाल्डर यह चिड़ियाघर नहीं है।'

फ्रोम : क्या आपको याद है उसने इसका क्या जवाब दिया?

कोकसन : हां, उसने कहा, 'ईश्वर इसे चिड़ियाघर बना देता तो अच्छा होता।' मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

फ्रोम : और भी आपने कोई विशेष बात देखी?

कोकसन : हां, देखा था।

फ्रोम : वह क्या?

कोकसन : उसके गले का बटन खुला हुआ था। मैं हमेशा चाहता हूं कि लोग साफ़ और क़ायदे से रहें। मैंने उससे कहा, तुम्हारे कालर का बटन खुला है।

फ्रोम : उसने आपकी बात का क्या जवाब दिया था?

कोकसन : उसने मुझे घूरकर देखा, यह बेअदबी थी।

जज : तुम्हें घूरकर देखा था? क्या यह एक बहुत मामूली बात नहीं है?

कोकसन : हां, लेकिन उसका देखना कुछ...मैं ठीक बयान नहीं कर सकता, एक अजीब तरह का था।

फ्रोम : क्या आपने कभी ऐसी दृष्टि उसकी आंखों से आगे नहीं देखी थी?

कोकसन : नहीं। अगर देखता, तो मैं मालिकों से उसकी शिकायत कर देता। हम ऐसे झक्की आदमी को अपने यहां नहीं रखते।

जज : क्या तुमने इस बात की शिकायत अपने मालिकों से की थी?

कोकसन : **(आहिस्ते से)** बिना किसी पक्के सबूत के मैं उनको कष्ट देना उचित नहीं समझता।

फ्रोम : लेकिन आप पर इस बात का ख़ास असर पड़ा था?

कोकसन : इसमें क्या शक! डेविस अगर यहां होता, तो वह भी यही कहता।

फ्रोम : अफ़सोस है कि वह यहां नहीं है। ख़ैर, अब आप उस दिन की बात याद कर सकते हैं, जिस दिन वह जाल पकड़ा गया। क्या उस दिन कोई ख़ास बात हुई थी? वह अठारह तारीख़ थी।

कोकसन : **(कान पर हाथ रखकर)** मैं कुछ कम सुनता हूं।

फ्रोम : जिस दिन आपको इस जाल की बात मालूम हुई उस दिन उसके पहिले कोई ऐसी घटना हुई थी, जिससे आपका ध्यान आकर्षित हुआ हो?

कोकसन : हां, एक औरत।

जज : इस बात से इसका क्या सम्बन्ध है, मिस्टर फ्रोम?

फ्रोम : हुजूर, मैं कोशिश कर रहा हूं जिससे मालूम हो जाय कि अभियुक्त ने यह काम किस प्रकार की मानसिक अवस्था में किया है।

जज : ठीक है, यह मैं समझता हूं। लेकिन आप जो पूछ रहे हैं, वह इसके बहुत बाद की बात है।

फ्रोम : हां, हजूर। लेकिन यह मेरे कथन को पुष्ट करती है।

जज : ठीक है।

फ्रोम : आपने क्या कहा? एक औरत? तो क्या वह दफ़्तर में आई थी?

कोकसन : हां।

फ्रोम : किस लिये?

कोकसन : फ़ाल्डर से मिलने के लिए। वह उस समय मौजूद नहीं था।

फ्रोम : उसे आपने देखा था?

कोकसन : हां! देखा था।

फ्रोम : क्या वह अकेली आई थी?

कोकसन : **(दृढ़ता से)** आप मुझे मुश्किल में डाल रहे हैं। चपरासी ने जो कुछ कहा था वह बयान करते हुए मुझे संकोच होता है।

फ्रोम : ठीक है, मिस्टर कोकसन, ठीक है!

कोकसन : **(अकस्मात् इस भाव से जैसे कहता हो तुम इन बातों को क्या समझो अभी बच्चे हो, मैं कहता हूं।)** फिर भी दूसरी तरह समझा देता हूं। एक आदमी के किसी प्रश्न के उत्तर में उस औरत ने जवाब दिया था, वे मेरे हैं, महाशय!

जज : वे क्या थे? कौन थे?

कोकसन : उसके बच्चे बाहर थे।

जज : आपको कैसे मालूम?

कोकसन : हुजूर। मुझसे यह बात न पूछें, वरना मुझे सब माजरा कहना पड़ेगा। यह ठीक नहीं है।

जज : **(मुस्कराते हुए)** दफ़्तर के चपरासी ने आपसे सब माजरा कह दिया।

कोकसन : जी हां! जी हां!

फ्रोम : ख़ैर, मैं जो पूछना चाहता हूं, मिस्टर कोकसन, वह यह है, कि जब वह औरत मिस्टर फ़ाल्डर से मिलने के लिए आग्रह कर रही थी, उस समय उसने कोई ऐसी बात कहीं थी, जो आपको ख़ास तौर से याद हो?

कोकसन : **(उसकी ओर इस तरह से देखता हुआ मानो उसे उस वाक्य को पूरा करने के लिए उत्साहित कर रहा हो)** हां, कुछ और कह रहा था।

फ्रोम : या उसने कुछ नहीं कहा था?

कोकसन : नहीं, कहा था। लेकिन मैं इस प्रश्न का उत्तर देना ठीक नहीं समझता।

फ्रोम : **(चिढ़ से मुस्कराकर)** क्या आप जूरी से भी नहीं कह सकते?

कोकसन : जीने मरने का सवाल है।

जूरी का मुखिया : क्या आपका मतलब है कि उस औरत ने यह कहा था?

कोकसन : **(सिर हिलाकर)** यह ऐसी बात है जो आप सुनना पसंद न करेंगे।

फ्रोम : **(बेसब्र होकर)** क्या फ़ाल्डर उस औरत के सामने ही आ गया था?

कोकसन सिर हिलाता है।

और वह उससे भेंट करके चली गई?

कोकसन : ऐ! मैंने ठीक समझा नहीं, मैंने उसे जाते नहीं देखा।

फ्रोम : तो क्या वह अब भी वहीं है?

कोकसन : (प्रसन्नता से मुस्कराकर) नहीं।

फ्रोम : धन्यवाद, मिस्टर कोकसन।

वह बैठता है।

क्लीवर : (उठाकर) आपने कहा कि जाल के दिन अभियुक्त कुछ विचलित-सा था। उसके मानी क्या, महाशय?

कोकसन : (नर्मी से) यह आपको खुद समझ लेना चाहिए, आपने कोई ऐसा कुत्ता देखा है—कुत्ता जो अपने मालिक से भटक गया हो—उस समय वह चारों ओर निगाह दौड़ाता है?

क्लीवर : ठीक, मैं भी आंखों की बात पूछने वाला था। आपने कहा, उसकी दृष्टि कुछ अजीब थी। अजीब से आपका क्या मतलब है? विचित्र या कुछ और?

कोकसन : हां, अजीब-सी।

क्लीवर : (झुंझलाकर) हां, यह तो ठीक है। लेकिन आपके लिए जो अजीब हो, मुमकिन है वह मेरे लिए अथवा जूरी के लिए अजीब न हो। आपका मतलब क्या है डरी हुई, लजाई हुई, या गुस्से में भरी हुई?

कोकसन : आप मेरा काम और मुश्किल कर रहे हैं। मैं एक शब्द कहता हूं, आप उसके लिए दूसरा शब्द चाहते हैं।

क्लीवर : (टेबिल पर हाथ रगड़ते हुए) क्या अजीब का अर्थ पागल है?

कोकसन : पागल नहीं—अजीब।

क्लीवर : खैर, आपने कहा उसके गले का बटन खुला हुआ था। क्या उस दिन बहुत गर्मी थी?

कोकसन : हां, शायद थी तो।

क्लीवर : जब आपने उससे कहा, तो क्या उसने बटन लगा लिया?

कोकसन : हां, शायद लगा लिया।

क्लीवर : क्या इससे यह मालूम होता है कि उसका दिमाग़ ठीक नहीं था?

कोकसन जवाब देने को मुंह खोलकर ही रह जाता है। क्लीवर बैठ जाता है।

फ्रोम : (जल्दी से उठकर) क्या आपने कभी पहिले भी उसे ऐसे अस्त-व्यस्त देखा था?

कोकसन : नहीं, वह हमेशा शांत और साफ रहता था।

फ्रोम : बस, उतना काफ़ी है।

कोकसन जज की ओर घूमकर इस प्रकार से देखता है मानो वकील भूल गया हो कि जज भी कुछ पूछेगा। फिर जब समझ जाता है कि जज कुछ नहीं पूछेगा तो उतरकर जेम्स और वाल्टर के बग़ल में बैठ जाता है।

फ्रोम : रुथ हनीविल!

रुथ हनीविल अदालत में आकर गवाहों के कठघरे में स्थिर भाव से शांत खड़ी होती है, उसका चेहरा मुरझाया हुआ है।

फ्रोम : नाम क्या है?

रुथ : रुथ हनीविल।

फ्रोम : उमर?

रुथ : छब्बीस साल।

फ्रोम : आपकी शादी हो चुकी है? अपने पति के साथ रहती हैं? ज़रा ज़ोर से बोलिए।

रुथ : नहीं, जुलाई से उसके साथ नहीं रहती।

फ्रोम : आपके बाल बच्चे हैं?

रुथ : जी हां! दो हैं।

फ्रोम : क्या वे आपके साथ रहते हैं?

रुथ : जी हां!

फ्रोम : क्या आप अभियुक्त को जानती हैं?

रुथ : **(उसकी ओर देखकर)** हां!

फ्रोम : आपके साथ उसका किस प्रकार का सम्बन्ध था?

रुथ : मित्र का।

जज : मित्र!

रुथ : **(भोलेपन से)** जी हां, प्रेमी।

जज : **(तीव्र स्वर से)** किस मानी में?

रुथ : हम दोनों एक दूसरे को प्यार करते हैं।

जज : ठीक है! लेकिन—

रुथ : **(सिर हिलाकर)** जी नहीं, और कुछ नहीं हुआ।

जज : अभी तक कुछ नहीं...हूं...

रुथ से फाल्डर की ओर दृष्टि घुमाकर।

ठीक है!

फ्रोम : आपके पति क्या करते हैं?

रुथ : मुसाफ़िर हैं।

फ्रोम : आप दोनों में कैसी पटती है?

रुथ : **(सिर हिलाकर)** वह कहने की बात नहीं है।

फ्रोम : क्या वह तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करते थे या और कोई बात है?

रुथ : हां, पहिले बच्चे के बाद से ही।

फ्रोम : किस प्रकार?

रुथ : यह मैं नहीं कह सकती—हर तरह से।

जज : मुझे डर है, आप यह सब नहीं कह सकते।

रुथ : **(फाल्डर की ओर इशारा करके)** उन्होंने मुझे अपनी शरण में लेने का वचन दिया। हम दक्षिण अमरीका जाने वाले थे।

फ्रोम : **(जल्दी से)** हां, ठीक है। और फिर अड़चन क्या पड़ी?

रुथ : मैं दफ़्तर के बाहर ही खड़ी थी कि वह पकड़ लिए गए। इससे मेरा दिल टूट-सा गया।

फ्रोम : तो आप जान गई थीं कि वह गिरफ्तार कर लिया गया?

रुथ : जी हां, मैं उसके बाद दफ़्तर में गई थी, और उन्होंने...

कोकसन की ओर इशारा करके।

मुझे सब बतला दिया।

फ्रोम : अच्छा, क्या आपको 7वीं जुलाई की बात याद है?

रुथ : हां।

फ्रोम : क्यों?

रुथ : उस दिन मेरे पति ने मेरा गला घोंट डालना चाहा था।

जज : गला घोंट डालना चाहा था?

रुथ : **(सिर नीचा करके)** जी हां।

फ्रोम : हाथ से या किसी...

रुथ : हां, मैं किसी प्रकार वहां से भाग आई, और अपने मित्र से मिली। उस समय ठीक आठ बजे थे।

जज : सवेरे? तुम्हारे पति उस समय शराब के नशे में तो नहीं थे?

रुथ : हमेशा शराब के नशे में ही नहीं मारते थे।

फ्रोम : आप उस समय किस हालत में थीं?

रुथ : बहुत बुरी हालत में। मेरे कपड़े सब फट रहे थे, और मेरा दम घुट रहा था।

फ्रोम : क्या आपने अपने मित्र से यह माजरा कहा था?

रुथ : हां, कहा था। अब समझती हूं, अगर न कहती, तो अच्छा होता।

फ्रोम : क्या यह सुनकर वह आपे से बाहर हो गया था?

रुथ : बुरी तरह।

फ्रोम : उसने किसी चेक के बारे में कभी आपसे कुछ कहा था?

रुथ : कभी नहीं।

फ्रोम : उसने कभी आपको रुपये भी दिए थे?

रुथ : हां, दिए थे।

फ्रोम : किस दिन?

रुथ : शनिवार के दिन।

फ्रोम : आठ तारीख को।

रुथ : मेरे और बच्चों के लिए कपड़े खरीदने और चलने की तैयारी करने के लिए।

फ्रोम : क्या इससे आपको आश्चर्य हुआ था?

रुथ : किस बात से?

फ्रोम : कि उसके पास तुम्हें देने को रुपये निकल आए।

रुथ : हां, हुआ था। इसलिए कि जब मेरे पति ने मुझे मारा था उस दिन सवेरे मेरे मित्र रोने लगे थे कि उनके पास रुपये नहीं हैं जो वे मुझे कहीं ले चलें। बाद को उन्होंने मुझसे कहा था कि अचानक उनकी क़िस्मत खुल गई है।

फ्रोम : आपने उनको आख़िरी बार कब देखा था?

रुथ : जब वे पकड़ लिए गए। यही दिन हमारे रवाना होने का था।

फ्रोम : अच्छा, क्या आपसे उसकी मुलाक़ात शुक्रवार और उस दिन के बीच में और भी कभी हुई थी?

रुथ सिर हिलाकर कबूल करती है।

उस समय उसकी क्या हालत थी?

रुथ : गूंगे के समान। कभी-कभी तो उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलता था।

फ्रोम : मानो कोई असाधारण बात हो गई हो?

रुथ : हां!

फ्रोम : रंज की, खुशी की, या किसी बात की?

रुथ : जैसे उनके सिर पर कोई विपत्ति मंडरा रही हो!

फ्रोम : **(कुछ हिचककर)** मैं पूछ सकता हूं कि तुम्हें उससे बहुत प्रेम था?

रुथ : **(सिर नवाकर)** हां।

फ्रोम : क्या वह भी आपसे बहुत प्रेम करता था?

रुथ : **(फाल्डर की ओर देखकर)** हां, साहब!

फ्रोम : अच्छा जी, आपका क्या विचार है? आपको ख़तरे और आफ़त में देखकर वह बदहवास हो गया और उसका अपने ऊपर काबू न रहा या और कुछ?

रुथ : हां, यही बात है।

फ्रोम : भले बुरे का ख़्याल भी जाता रहा?

रुथ : हां, कुछ देर के लिए अवश्य।

फ्रोम : अच्छा, क्या शुक्रवार को वह बहुत घबड़ाया हुआ था या साधारण दशा में?

रुथ : बहुत ही घबड़ाए हुए। मैं उन्हें अपने पास से जाने न देती थी।

फ्रोम : क्या आप अब भी उसे चाहती हैं?

रुथ : **(फाल्डर की ओर देखकर)** उन्होंने मेरे लिए अपना सत्यानाश कर लिया।

फ्रोम : धन्यवाद!

वह बैठ जाता है, रुथ वहीं पर अविचलित भाव से सीधी खड़ी रहती है।

क्लीवर : (लेहाज़ से) जब शुक्रवार सात तारीख़ के सवेरे आप उनसे विदा हुईं, उस समय वह होशहवास में थे?

रुथ : जी हां!

क्लीवर : धन्यवाद! मुझे आपसे और कुछ नहीं पूछना है।

रुथ : (जूरी की ओर कुछ झुककर) शायद मैं भी उनके लिए ऐसा ही कर सकती थी, अवश्य कर सकती थी।

जज : ज़रा ठहरो, तुम कहती हो कि तुम्हारा विवाहित जीवन बिलकुल सुख रहित है। दोनों ही का दोष होगा।

रुथ : मेरा दोष है कि मैं कभी उसकी खुशामद नहीं करती। ऐसे आदमी की खुशामद करें ही क्यों?

जज : तुम उनका कहना नहीं मानती होगी।

रुथ : (प्रश्न को टालकर) मैं हमेशा उसकी इच्छा के अनुसार काम करती रही हूं।

जज : मुलज़िम से जान-पहचान होने के पहिले तक?

रुथ : नहीं, बाद को भी।

जज : मैं यह सवाल इसलिए पूछ रहा हूं कि तुम मुलज़िम से प्रेम करना निंदा की बात नहीं समझती?

रुथ : (हिचककर) कदापि नहीं, मेरे जीवन का यही आधार है।

जज : (कड़ी निगाह से देखकर) अच्छा, अब तुम जा सकती हो।

रुथ फ़ाल्डर की ओर देखती है, फिर धीरे-धीरे उतरकर गवाहों में जाकर बैठ जाती है।

फ्रोम : मैं अब मुलज़िम को बुलाता हूं, हुज़ूर!

फ़ाल्डर कठघरे में से उतरकर गवाहों के कठघरे में जाता है। बाकायदा क़सम दिलाई जाती है।

फ्रोम : तुम्हारा नाम क्या है?

फ़ाल्डर : विलियम फ़ाल्डर।

फ्रोम : और उम्र?

फ़ाल्डर : तेईस साल।

फ्रोम : तुम्हारी शादी नहीं हुई है?

फ़ाल्डर सिर हिलाकर इनकार करता है।

फ्रोम : उस महिला को तुम कितने दिनों से जानते हो?

फ़ाल्डर : छः महीने से।

फ्रोम : उसने तुम्हारे साथ अपना जो रिश्ता बतलाया है, क्या वह ठीक है?

फ़ाल्डर : हां।

फ्रोम : तो तुम्हें उससे गहरा प्रेम है। क्यों?

फाल्डर : हां।

जज : यह जानते हुए भी कि उसकी शादी हो गई है?

फाल्डर : हुजूर, मैं लाचार हो गया।

जज : लाचार हो गए?

फाल्डर : हुजूर; मैं अपने को संभाल न सका।

जज कंधा हिलाता है।

फ्रोम : तुमसे उससे जान-पहिचान कैसे हुई?

फाल्डर : मेरी एक विवाहिता बहिन के ज़रिए।

फ्रोम : क्या तुम जानते थे कि अपने पति के साथ वह सुखी थी, अथवा नहीं?

फाल्डर : उसे कभी सुख नहीं मिला।

फ्रोम : क्या तुम उसके पति को जानते थे?

फाल्डर : हां, केवल उसी के द्वारा मैंने जाना था वह नरपशु है।

जज : मैं नहीं चाहता पड़ोस में किसी आदमी को गालियां दी जायं।

फ्रोग : **(सिर झुकाकर)** जैसी हुजूर की आज्ञा! **(फाल्डर से)** क्या तुम इस चेक में रद्दोबदल स्वीकार करते हो?

फाल्डर सिर झुका लेता है।

फ्रोम : तारीख सात जुलाई की बात याद करो और जूरी से उस दिन की घटना बयान करो।

फ ाल्डर : **जूरी की ओर देखकर)** मैं सवेरे अपना नाश्ता कर रहा था जब वह आई। उसके सारे कपड़े फटे हुए थे, वह हांफ रही थी मानो सांस लेने में उसे कष्ट हो रहा हो। उसके गले पर पुरुष की उंगलियों के निशान थे। उसकी बांहों में चोट आ गई थी। और खून जमा गया था। मैं उसकी यह दशा देखकर डर गया। उसके बाद उसने सब हाल मुझसे कहा। मुझे ऐसा मालूम होने लगा—ऐसा मालूम होने लगा और वह मैं बयान नहीं कर सकता। मेरे लिए वह असह्य था।

एकाएक तनकर।

आप उसे देखते, और आपके दिल में भी उसके लिए मेरी जैसी मुहब्बत होती तो आप भी मेरे ही समान व्याकुल हो जाते।

फ्रोम : अच्छा!

फाल्डर : वह मेरे पास से चली गई क्योंकि मुझे दफ़्तर जाना था। तो इस भय से मेरे होश उड़े थे कि कहीं वह फिर उस पर अत्याचार न करे। सोच रहा था क्या करूं। मैं काम न कर सका। रात दिन इसी तरह बीत गया। किसी काम में जी ही न लगता था। सोचने की शक्ति न थी। चुपचाप बैठा न जाता था। ठीक उसी समय डेविस मेरे पास आया,

और चेक देकर बोला, फ़ाल्डर जाओ, ज़रा बैंक से रुपये लेते आओ; शायद हवा में फिर आने से तुम्हें कुछ आराम मिले। मालूम होता है तुम्हारी आधी जान निकल गई है। फिर जब वह चेक मेरे हाथ में आया मैं नहीं जानता मुझे क्या हुआ। न जाने क्योंकर मेरे मन में आया कि अगर टी वाई जोड़ कर अंक के आगे एक बिंदी लगा दूं तो रुथ को वहां हटा ले जाने के लिए रुपये हो जायंगे। वह बात मेरे दिमाग़ में आई और चली गई। मुझे फिर कुछ याद नहीं कि डेविस के जाने के बाद मैंने क्या किया। केवल जब कैशियर को मैंने चेक दिया, तो उसने पूछा था कि क्या नोट दूं? तब शायद मुझे मालूम हुआ कि मैंने क्या किया। जब मैं बाहर आया, तो जी में आया किसी मोटर के नीचे दबकर मर जाऊं। मैंने चाहा रुपयों को फेंक दूं, लेकिन फिर मुझे उसकी याद आई और मैंने उसे बचाने की ठान ली, चाहे कुछ भी हो। यह सच है कि सफ़र के टिकट के रुपये और जो कुछ मैंने उसको दिए थे सब मिट्टी में मिल गए। लेकिन बाक़ी रुपये मैंने बचा लिए हैं। मैं सोच रहा हूं मैंने यह काम कैसे किया, क्योंकि यह मेरा स्वभाव नहीं हैं।

फ़ाल्डर चुप हो जाता है और हाथ मलता है।

फ्रोम : तुम्हारे आफिस से बैंक कितनी दूर है?

फ़ाल्डर : कोई पचास गज़ से अधिक न होगा।

फ्रोम : डेविस के चले जाने के बाद से तुम्हारे चेक भुनाने में कितना समय लगा होगा?

फ़ाल्डर : चार मिनट से ज़्यादा न लगे होंगे, क्योंकि मैं दौड़ता हुआ गया था।

फ्रोम : क्या चार मिनट के भीतर का हाल तुम्हें याद नहीं?

फ़ाल्डर : जी नहीं, सिवाय इसके कि मैं दौड़ता हुआ गया था।

फ्रोम : टी वाई और बिन्दी का जोड़ना भी तुम्हें याद नहीं?

फ़ाल्डर : जी नहीं, मैं सच कहता हूं।

फ्रोम बैठता है और क्लीवर उठता है।

क्लीवर : लेकिन तुम्हें याद है कि तुम दौड़े थे?

फ़ाल्डर : जब मैं बैंक पहुंचा, उस समय मेरा दम फूल रहा था।

क्लीवर : और तुम्हें चेक का बदलना याद नहीं?

फ़ाल्डर : (धीरे से) जी नहीं।

क्लीवर : मेरे मित्र ने जो विलक्षणता का आवरण डाल रक्खा है उसे हटा देने से क्या वह साधारण जालसाज़ी के सिवा और कुछ हो सकता है? बोलो?

फ़ाल्डर : मैं उस दिन आधा पागल हो रहा था, जनाब।

क्लीवर : ठीक, ठीक! लेकिन तुम इनकार नहीं कर सकते कि टी वाई और

सिफ़र बाक़ी लिखावट के साथ ऐसा मिल गया था, कि ख़ज़ांची धोखा खा गया।

फाल्डर : संयोग था।

क्लीवर : **(खुश होकर)** विचित्र का संयोग था, क्यों? मुसन्ने को तुमने कब बदला?

फाल्डर : **(सिर झुकाकर)** बुधवार के दिन।

क्लीवर : क्या वह भी संयोग था?

फाल्डर : **(क्षीण स्वर में)** जी नहीं।

क्लीवर : यह काम करने के लिए तुम अवश्य मौक़ा ढूंढ़ते रहे होंगे। क्यों?

फाल्डर : **(आवाज़ मुश्किल से सुनाई पड़ती है।)** हां।

क्लीवर : तुम यह तो नहीं कहते, कि काम करते वक्त भी तुम बहुत उत्तेजित थे?

फाल्डर : मेरे सिर पर भूत सवार था।

क्लीवर : पकड़े जाने के डर से?

फाल्डर : **(बहुत धीरे से)** हां!

जज : क्या तुमने यह नहीं सोचा कि अपने मालिकों से सारी बातें कहकर रुपये लौटा देना ही तुम्हारे लिए अच्छा होगा?

फाल्डर : मैं डरता था।

सब चुप हो जाते हैं।

क्लीवर : निःसंदेह तुम्हारी इच्छा थी कि तुम इसके बाद उस औरत को भगा ले जाओगे।

फाल्डर : जब मुझे मालूम हुआ कि मैंने ऐसा काम कर डाला, तो उसका उपयोग न करना गुनाह बेलज्ज़त था। इससे तो कहीं अधिक अच्छा नदी में डूबकर मर जाना था।

क्लीवर : तुम जानते थे कि क्लर्क डेविस इंग्लैंड से जा रहा है। जब तुमने चेक बदला था तब क्या तुम्हें नहीं सूझा था कि सबका शक डेविस पर होगा?

फाल्डर : मैंने पल भर के भीतर सब काम किया। हां, बाद में यह बात मेरी समझ में आई थी।

क्लीवर : और फिर भी तुमसे अपनी ग़लती ज़ाहिर न की गई?

फाल्डर : **(उदासी से)** मैंने सोचा था वहां पहुंचकर मैं सब कुछ लिख भेजूंगा। मेरी इच्छा रुपये को चुका देने की थी।

जज : लेकिन इसी बीच में तुम्हारा निर्दोषी मित्र क्लर्क गिरफ्तार हो सकता था।

फाल्डर : मैं जानता था, कि वह बहुत दूर है, हुजूर। मैंने सोचा था कि वक्त मिल जायगा। इतनी जल्दी बात ज़ाहिर हो जायगी यह मुझे ख़याल

ही नहीं था।

फ्रोम : शायद हुजूर को याद दिलाना बेजा न होगा, चेक बुक मिस्टर वाल्टर हो के पास डेविस के चले जाने के बाद तक था। अगर यह जालसाज़ी एक दिन बाद पकड़ी जाती, तो फ़ाल्डर भी चला गया होता। इससे शक भी फ़ाल्डर पर ही होता न डेविस पर।

जज : सवाल यह है कि मुलज़िम को यह बात मालूम थी या नहीं कि शक उस पर होगा न कि डेविस पर?

फ़ाल्डर से तीव्र स्वर में।

क्या तुम जानते थे कि चेक मिस्टर वाल्टर हो के पास डेविस के चले जाने के बाद तक था?

फ़ाल्डर : मैं...मैं...मैंने सोचा था...वह...

जज : देखो सच-सच बोलो, हां या नहीं।

फ़ाल्डर : **(बहुत आहिस्ते)** नहीं हुजूर, यह मैं नहीं जानता था।

जज : यहां तुम्हारी बात कट जाती है, मिस्टर फ्रोम।

फ्रोम सिर झुकाता है।

क्लीवर : क्या ऐसी सनक तुम्हें पहले भी कभी सवार हुई थी?

फ़ाल्डर : **(कातर भाव से)** जी नहीं।

क्लीवर : तीसरे पहर तुम इतने स्वस्थ हो गए थे कि फिर तुम उस समय पूरे तौर से काम पर वापस अपना काम करने के लिए गए।

फ़ाल्डर : हां, मुझे रुपया लेकर आफिस से वापस जाना था।

क्लीवर : तुम्हारा मतलब नौ पाउंड से है। तुम्हारा होश तो इतना ठीक था कि तुम्हें यह खूब अच्छी तरह याद थी फिर भी तुम कहते हो कि तुम्हारे चेक के अंक बदलने की बात याद नहीं।

फ़ाल्डर : अगर मैं उस समय पागल न होता, तो मैं कभी भी यह काम करने की हिम्मत न करता।

फ्रोम : **(उठकर)** क्या वापस जाने के पहिले तुमने अपना खाना खाया था?

फ़ाल्डर : नहीं, मैंने दिन भर कुछ नहीं खाया था। और रात को नींद भी मुझे नहीं आई।

फ्रोम : अच्छा, डेविस के जाने और नोट भुनाने के बीच जो चार मिनट बीते थे, उसकी बात क्या तुम्हें बिलकुल याद नहीं है?

फ़ाल्डर : **(एक मिनट ठहरकर)** मुझे केवल यह याद है कि उस समय मिस्टर कोकसन का चेहरा मुझे याद आ रहा था।

फ्रोम : मिस्टर कोकसन का चेहरा? उससे और तुम्हारे काम से क्या सम्बन्ध?

फ़ाल्डर : नहीं, महाशय।

फ्रोम : क्या तुम्हें आफ़िस में जाने के पहले भी वही बात याद थी?

फाल्डर : हां! उस समय, बाहर दौड़ते समय भी।

फ्रोम : और क्या उस समय तक ही याद थी जब ख़ज़ांची ने तुम से कहा 'क्या नोट लेंगे?'

फाल्डर : हां, उसके बाद मुझे होश आ गया। लेकिन तब सोचना बेकार था।

फ्रोम : धन्यवाद! बस सफ़ाई के सब गवाह गुज़र चुके।

जज सिर हिलाता है। फाल्डर अपनी जगह पर वापस आता है।

फ्रोम : **(कागज़ वगैरह संभालकर)** हुज़ूर और जूरी गण, मेरे मित्र ने अपनी जिरह में इस सफ़ाई का मज़ाक उड़ाने की कोशिश की है जो इस मामले में हमारी तरफ़ से पेश की गई है। मैं जानता हूं कि जो गवाह पेश किए गए हैं उससे अगर आपके दिल में यह यक़ीन न हो गया हो कि मुलज़िम ने यह काम केवल एक क्षणिक दुर्बलता के कारण किया है, और दरअसल उसको इसके लिए जिम्मेदार नहीं कहा जा सकता तो मेरे कथन का भी कुछ असर आप पर नहीं पड़ेगा। उसके हृदय में जो भयानक उथल-पुथल था, उसने उसकी मानसिक और नैतिक शक्तियों को ऐसा कुचल डाला कि उसे एक क्षणिक पागलपन कहा जा सकता है। मेरे मित्र ने कहा है कि मैंने इस मामले पर विलक्षणता का आवरण डालने की कोशिश की है। महोदय गण, मैंने ऐसी कोशिश नहीं की। मैंने केवल जीवन का वह आधार दिखाया है—उस अस्थिर जीवन का, जो प्रत्येक पाप का कारण होता है, चाहे मेरे मित्र उसकी कितनी हंसी क्यों न उड़ाएं। महाशय गण, हम इस समय एक ऐसे सभ्य युग में पहुंच गए हैं कि किसी प्रकार के भीषण अत्याचार का दृश्य हमारे दिल पर एक ख़ास असर डाले बिना नहीं रहता, चाहे हमारे साथ उस मामले का कुछ भी सम्बन्ध न हो। पर अगर हम ऐसा अत्याचार एक औरत पर होते देखें, और वह ऐसी औरत हो जिसे हम प्यार करते हैं, तब क्या होगा? सोचिए, यदि मुलज़िम की दशा में आप होते, तो किस प्रकार का भाव आपके मन में उत्पन्न होता? इस बात को सोचिए और तब उसके मुंह की ओर देखिए। वह उन बेफिक्रों में और बेहयाओं में नहीं है जो उस औरत पर जिसे वह प्यार करता है पैशाचिक अत्याचार के चिह्न देखे और विचलित न हो। हां महाशय गण, देखिए उसके मुख पर दृढ़ता नहीं है। और न उसके चेहरे से पाप ही झलक रहा है। यह एक ऐसा साधारण चेहरा है जो बड़ी आसानी से अपने भावों के वशीभूत हो जाता है। उसकी आंखों का हाल भी आपने सुना है। मेरे मित्र चाहे 'अजीब' शब्द पर हंस उठें, लेकिन दरअसल ऐसी अवस्थाओं में मनुष्यों की आंखों में जो चंचलता आ जाती है वह सिवाय 'अजीब'

के और कुछ नहीं कही जा सकती। याद रखिए, मैं यह नहीं कहता कि उसकी मानसिक दुर्बलता क्षणिक अन्धकार की झलक मात्र नहीं थी जिसमें धर्म और अधर्म का ज्ञान लुप्त हो गया, लेकिन मैं यह कहता हूं कि जिस तरह कोई मनुष्य ऐसी परिस्थिति में आत्म-हत्या कर लेने पर आत्म-हत्या के दोष से मुक्त हो जाता है, उसी भांति वह इस अव्यवस्थित दशा में दूसरे अपराध भी कर सकता है, और करता है।

इस कारण उसको अपराधी न कहकर एक मरीज कहना चाहिए और उसके इलाज का प्रबन्ध भी करना चाहिए। मैं मानता हूं इस तर्क का दुरुपयोग किया जा सकता है। परिस्थिति को देखकर ही इसका निर्णय करना चाहिए। लेकिन यह एक ऐसी भावना है, जिसमें आपको सन्देह का फल अपराधी को देना चाहिए। आपने सुना होगा मैंने अपराधी से प्रश्न किया था कि उसने उन अभागे चार मिनट में क्या सोचा था। उसने क्या जवाब दिया? 'मुझे मिस्टर कोकसन का चेहरा याद आ रहा था।' महाशय गण, कोई आदमी बनावटी तौर से ऐसा जवाब नहीं दे सकता। इस पर सत्य की एक गम्भीर छाप लगी हुई है। जो औरत आज अपनी जान को भी जोखिम में डालकर यहां गवाही देने आई है, उसके साथ अपराधी का जो प्रेम है, चाहे उचित हो या न हो, वह भी आप से अब छिपा नहीं है। जिस दिन उसने यह काम किया था उस दिन वह कितना घबड़ाया हुआ था इसमें तो कोई सन्देह करना असम्भव है। इस प्रकार के दुर्बल और भाव-प्रबल आदमी का ऐसी दशा में कितना पतन हो सकता है यह हम सबको अच्छी तरह मालूम है। यह सारा काम केवल एक मिनट में हुआ। बाक़ी काम ठीक वैसे ही हुआ, जैसे छुरा भोंकने के बाद आदमी मर जाता है या सुराही उलट देने से पानी गिर पड़ता है।

आपको यह बतलाने की ज़रूरत नहीं कि जीवन में कोई बात इतनी दुखदाई नहीं है जितनी यह कि जो हो चुका वह मिटाया नहीं जा सकता। एक बार जब चेक पर अंक बदल दिया गया और उसके रुपये मिल गए, जो चार भयंकर मिनटों का काम था, तो चुप साध लेने के सिवा और क्या किया जा सकता था? लेकिन उन चार मिनटों में यह आदमी जो आपके सामने खड़ा है उस पिंजड़े में आकर फंस गया जो आदमी को बेदाग़ नहीं छोड़ता। उसके बाद के काम—उसका अपराध स्वीकार न करना, मुसन्ने को बदलना, भागने की तैयारी करना—इनसे यह नहीं सिद्ध होता कि उसने दृढ़ पापमय संकल्प से ये काम किए, जो मूल आचरण के फलमात्र थे। बल्कि इनसे केवल उसक चरित्र की दुर्बलता सिद्ध होती है और यही उसकी विपत्ति का

कारण है। लेकिन क्या हमें केवल इसलिए उसे पतित कर देना चाहिए कि वह जन्म और शिक्षा से दुर्बल चरित्र है। महोदय गण, इस अपराधी की तरह हजारों आदमी हमारे क़ानून की चक्की में रोज़ पिसकर मर रहे हैं। केवल इसलिए कि हममें वह इनसानियत की आंख नहीं है जिससे हम देखें कि वे अपराधी नहीं केवल मरीज़ हैं। यदि मुलज़िम अपराधी साबित हो गया और उसके साथ मुलज़िम या पाप में सने प्राणियों का-सा व्यवहार किया गया तो वह सचमुच ही एक अपराधी बन जायगा, जैसा हम अपने अनुभव से कह सकते हैं।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि ऐसी व्यवस्था न दीजिए जो उसे जेल में ले जाकर हमेशा के लिए दाग़ लगा दे। महोदय गण! न्याय एक यन्त्र है जिसे यदि कोई चला दे तो फिर वह अपने ही आप चलता रहता है। क्या हम इस व्यक्ति को दरअसल उस मशीन के नीचे दबाकर चकनाचूर कर देंगे? और वह इसलिए कि दुर्बलता के वशीभूत होकर उसने एक भूल की है। क्या आप उसे उन अभागे मल्लाहों का एक सदस्य बनाना चाहते हैं जो उन अंधेरे और भीषण जहाज़ों को चलाते हैं जिन्हें हम जेलख़ाना कहते हैं? क्या उसे वह यात्रा शुरू करनी होगी जहां से शायद ही कोई लौटता हो? या फिर उसे एक बार समय देना चाहिए कि सुबह का खोया हुआ शाम को भी लौट आता है, या नहीं? मैं आप लोगों से अर्ज़ करता हूं कि उस नौजवान की ज़िन्दगी को बरबाद न कीजिए। यह सारी बरबादी उन्हीं चार मिनटों का फल है। घोर सर्वनाश उसकी ओर मुंह खोले खड़ा है। अभी यह बच सकता है। आज आप उसे अपराधी की तरह सज़ा दे दीजिए और मैं आपसे कह देता हूं कि वह हमेशा के लिए हाथ से निकल जायगा। न तो उसका चेहरा और न उसका रंग-ढंग यह कह सकता है कि वह उस अग्नि-परीक्षा से बच निकलेगा। उसके अपराध को एक पलड़े में तौलिए और दूसरे पर उसके उन कष्टों को तौलिए जो वह पा चुका है। आपको मालूम होगा कि कष्टों का पलड़ा दस गुना अधिक भारी हो गया। दो महीने से वह हवालात में सड़ रहा है। क्या सम्भव है वह इसे भूल जायगा? इन दो महीने में उसके हृदय को जो दुःख हुआ होगा उसे सोचिए। आप यक़ीन रखिए कि उसकी सज़ा काफी हो गयी। न्याय की भीषण चक्की उसको तभी से पीसने लगी है जब से इसका गिरफ्तार होना तय हो चुका था। यह उसकी सज़ा की दूसरी मंजिल चल रही है। यदि आप तीसरी पर ले जाने की चेष्टा करेंगे तो मैं आगे कुछ नहीं कहना चाहता।

अपनी उंगली और अंगूठे को मिलाकर एक दायरा बनाता

है, फिर हाथ को नीचा कर लेता है और बैठ जाता है। जूरी एक दूसरे का मुंह देखकर सिर हिलाते हैं, फिर सरकारी वकील की ओर देखते हैं। वह उठता है और अपनी आंखें उसी जगह गड़ाकर जिससे उसे कुछ सुविधा मालूम पड़ती है बार-बार आंखें फेरकर जूरी की ओर देखता जाता है।

क्लीवर : हुजूर ! **(पंजे के बल खड़े होकर)** और जूरी गण! इस मामले की घटनाओं पर कोई आपत्ति नहीं की गई और मेरे मित्र क्षमा करें, सफ़ाई जो दी गई है वह इतनी कमज़ोर है कि मैं फिर गवाहों के बयान की आलोचना करके आपका समय नहीं ख़राब करना चाहता। सफ़ाई में क्षणिक पागलपन की दलील पेश की गई है, और क्यों यह बे-सिर-पैर की सफ़ाई पेश की गई? शायद आप मुझे माफ़ करें, मैं आपसे ज्यादा अच्छी तरह जानता हूं! ऐसी सफ़ाई को बे-सिर-पैर के सिवा और क्या कहा जाय? कसूर को इक़बाल कर लेना ही दूसरा रास्ता था। महोदय गण! अगर अपराध स्वीकार कर लिया गया होता, तो मेरे मित्र को हुजूर की सीधी-सादी दया की प्रार्थना करने के सिवा और कोई उपाय न था। परन्तु उन्होंने ऐसा न करके इस मामले की कतर-ब्योंत की है, और यह सफ़ाई गढ़ डाली है जिससे उन्हें त्रिया-चरित्र की बानगी दिखाने, एक स्त्री को गवाह के कठघरे में खड़ा करने और इसे एक करुण-प्रेम के रंग में रंगने का अवसर दे दिया है। मैं अपने मित्र की इस सूझ-बूझ की तारीफ़ करता हूं। इससे उन्होंने किसी हद तक क़ानून से बचने की कोशिश की है। शायद और किसी तरह वह प्रेरणा और चिन्ता के सारे किस्से को अदालत के सामने इस प्रकार न खड़ा कर सकते। लेकिन महोदय गण! एक बार जब आपको असली बात मालूम हो गई, तब आप सारी बात मान गए।

सहृदय उपेक्षा के साथ

अच्छा, इस पागलपन की दलील को देखिए। पागलपन के सिवा हम इसे कुछ नहीं कह सकते। आपने उस औरत का बयान सुना है। वह क़ैदी के हक़ में गवाही देगी इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं। फिर भी उसने क्या कहा था, आपको मालूम है? उसने कहा—जब उसने क़ैदी से विदा ली थी उस समय वह किसी तरह अव्यवस्थित न था। अगर चिन्ताओं ने उसे अशान्त कर दिया था तो वही एक ऐसा वक्त था, जब उसके मन की अशान्ति प्रगट होती। सफ़ाई के दूसरे गवाह मैनेजिंग क्लर्क की गवाही भी आपने सुनी जो उन्होंने क़ैदी के हक़ में दी थी। कुछ कठिनाई के बाद मैं उससे क़बूल करा पाया हूं कि डेविस को चेक देते वक्त मुलज़िम कुछ अस्थिर....

उनका विचार ऐसा मालूम होता था कि आप इस शब्द का

आशय समझ जायेंगे और यकीन है, महाशय गण आप समझ गए होंगे।

होने पर भी पागल नहीं था। अपने मित्र की भांति मुझे भी दुःख है कि डेविस यहां नहीं है। लेकिन मुलज़िम ने वे शब्द कहे हैं जो डेविस ने उन्हें चेक देते समय कहे थे। अवश्य ही वह इस समय पागल नहीं था। नहीं तो वह इन शब्दों को ज़रूर भूल जाता। ख़ज़ांची ने भी कहा कि चेक भुनाते वक्त उसके होश-हवाश बिलकुल ठीक थे। इसलिए इस सफ़ाई का मतलब यह हुआ कि एक आदमी जो एक बजकर दस मिनट पर स्वस्थ था और एक बजकर पन्द्रह मिनट पर भी ठीक था, वह अपने को इस समय के बीच में केवल अपराध की सज़ा पाने के डर से पागल कह रहा है।

महाशय, यह दलील इतनी लचर है कि मैं ज़्यादा बकवास करके आपका समय नष्ट नहीं करना चाहता। आप स्वयं निश्चय कर सकते हैं कि उसका क्या मूल्य है। मित्र ने यह आधार लेकर जवानी, प्रलोभन, आदि के विषय में बहुत कुछ कहा है और बड़े सुन्दर शब्दों में कहा है। परन्तु मैं केवल इतना ही याद दिलाता हूं कि मुलज़िम ने जो अपराध किया है क़ानून की दृष्टि से बहुत भारी अपराध है। साथ ही इस मामले में कुछ और भी विचार करने की बात है। जैसे मुलज़िम का अपने साथ के निर्दोषी क्लर्क पर शक करवाने की कोशिश करना, दूसरे की ब्याही हुई औरत के साथ रिश्ता रखना इत्यादि। इन सब बातों से आपके लिए इस सफ़ाई को अधिक महत्त्व देना कठिन हो जायगा। सारांश यह कि मैं आपसे मुलज़िम को दोषी स्वीकार करने की प्रार्थना करता हूं, जो इन सारी बातों क़ो देखते हुए आपके लिए लाज़िम हो गई है।

दृष्टि को जज और जूरी की ओर से फेरकर, फाल्डर की ओर घुमाता है, फिर बैठ जाता है।

जज : **(जूरी की ओर कुछ झुककर और हाकिमाना अंदाज़ से)** जूरीगण, आपने गवाहों के बयान और उन पर जिरह सुन ली है। मेरा काम केवल यही है कि मैं आपके सामने वह तनकीहें रख दूं जिन पर आपको विचार करना है। यह बात तो स्वीकार कर ही ली गई है कि चेक और मुसन्ने के अंकों को मुलज़िम ने बदला। अब सफ़ाई यह दी गई है कि मुलज़िम ने जब यह अपराध किया, उस समय वह अपने होश-हवास में न था। जहां तक पागलपन की बात है आपने मुलज़िम का सारा किस्सा और दूसरे गवाहों के बयान भी सुन लिए। अगर इन बातों से आप इस नतीजे पर पहुंचे कि जाल करते वक्त मुलज़िम पागल था तो आप यही कह सकते हैं कि मुलज़िम अपराधी

है, लेकिन वह पागल था। और यदि आपको यह विश्वास हो कि मुलज़िम का दिमाग़ ठीक था। **(याद रखिए पूरा पागल होना ज़रूरी है)** तो आप उसे अपराधी ठहराएंगे। उसके मन की दशा के विषय में जो शहादतें हैं, उन पर विचार करते समय आप बहुत होशियारी से जालसाज़ी के पहिले और पीछे मुलज़िम के रंग-ढंग और चाल-ढाल पर ध्यान रक्खें। खुद मुलज़िम की, उस औरत की, कोकसन की, और कैशियर की शहादतों से क्या सिद्ध होता है? इस विषय में मैं आपको यह भी याद दिलाना चाहता हूं कि मुलज़िम ने कबूल किया है कि टी वाई और सिफ़र को जोड़ने की बात चेक हाथ में आते ही उसके मन में आ गई थी। मुसन्ने के बदलने के बाद उसका आरचण कैसा था इसे भी ध्यान में रखिए। इन सब बातों का पूर्व-निश्चय के प्रश्न से जो सम्बन्ध है वह खुला हुआ है। और पूर्व-निश्चय स्वस्थ दशा में ही हो सकता है। उसकी उम्र और चित्त की चंचलता इत्यादि बातों पर विचार करके आपको उसके साथ रियायत करने की ज़रूरत नहीं। यदि आप उसे दोषी के साथ पागल निर्णय करें, तो यह सोच देखें कि वह पागलपन उसका उस लायक था या नहीं कि उस वक्त वह पागलख़ाने भेज दिया जाता।

वह रुक जाता है, फिर जूरी के मेम्बरों को दुविधे में पड़ा हुआ देखकर कहता है।

अब आप चाहें तो अलग जा सकते हैं।

जज के पीदे के दरवाज़े से जूरी चले जाते हैं, जज कुछ काग़ज़ों को सिर झुकाकर देखने लगता है, फ़ाल्डर अपने कठघरे से झुककर अपने वकील से घबड़ाए हुए स्वर में रुथ की ओर संकेत कर कुछ बात करता है। वकील उसे सुनकर फ्रोम से कहता है।

फ्रोम : **(उठकर)** हुजूर, मुलज़िम ने मुझे आपसे यह अर्ज़ करने को कहा है कि आप कृपा करके रिपोर्टरों से कह दें कि वे अख़बार में उस गवाह औरत का नाम इस मामले की कार्यवाही की रिपोर्ट में न छापें। शायद हुजूर समझ सकते हैं कि नतीजा उसके लिए कितना बुरा हो सकता है।

जज : **(चोट करते हुए हलकी सी मुस्कराहट के साथ)** लेकिन मिस्टर फ्रोम, आप इन बातों को जानते हुए भी उसे यहां लाए हैं न?

फ्रोम : **(सन्देह के साथ सिर झुकाकर)** क्या हुजूर समझते हैं कि और किसी प्रकार मैं मामले को साफ़-साफ़ पेश कर सकता था?

जज : हूं! ख़ैर!

फ्रोम : हुजूर, दरअसल उस पर बड़ी भारी आफ़त आ जायगी।

जज : यह कोई कारण नहीं है कि मैं आपकी बात पर ध्यान दूं।

फ्रोम : हुजूर, इतनी दया करें। मैं यक़ीन दिलाता हूं, कि मैं अत्युक्ति नहीं कर रहा हूं।

जज : गवाह के नाम को छुपा रखना मेरे नियम के विरुद्ध है।

फ़ाल्डर की ओर देखता है, जो हाथ मलता रहता है, फिर रुथ की ओर देखता है, जो स्थिर बैठी हुई फ़ाल्डर की ओर देखती है।

मैं आपकी बात पर विचार करूंगा। मैं सोचूंगा, क्योंकि मुझे यह भी देखना है कि यह औरत कहीं क़ैदी के लिए झूठी गवाही देने न आई हो।

फ्रोम : हुजूर, मैं सच—

जज : ठीक है, मैं अभी कोई ऐसी बात नहीं कह रहा हूं। मिस्टर फ्रोम, अभी इस बात को छोड़िए।

बात ख़तम होते ही जूरी लौटते हैं और अपनी जगह पर बैठते हैं।

अहलमद : जूरीगण, क्या आप सब की राय मिल गई है?

फोरमैन : हां, मिल गई है।

अहलमद : क्या आपने उसे दोषी निर्णय किया है, या दोषी के साथ पागल भी?

फोरमैन : दोषी।

जज प्रसन्न होकर सिर हिलाता है, फिर काग़ज़ों को हिला कर फ़ाल्डर की ओर देखता है जो चुपचाप स्थिर भाव से बैठा है।

फ्रोम : **(उठकर)** हुजूर का हुक्म हो तो आप से उसकी सज़ा कुछ कम करने के लिए अर्ज़ करूं। जूरी से तो मैं उसकी उम्र और यह काम करते समय उसके मन की चंचलता के विषय में जो कुछ कहना था, कह चुका। उसके उपरान्त हुजूर से कुछ और कहने की ज़रूरत मैं नहीं समझता।

जज : मेरा तो ऐसा ही ख़याल है।

फ्रोम : अगर हुजूर ऐसा फरमाते हैं, तो मैं केवल इतना ही अर्ज़ करूंगा कि हुजूर सज़ा देते वक्त मेरी अर्ज़ का ख़याल रक्खें।

जज : **(क्लर्क से)** क़ैदी को आवाज़ दो।

क्लर्क : मुलज़िम! सुनो तुम्हारे ऊपर जालसाजी करने का अपराध लगाया गया है। क्या तुम्हें इस विषय में कुछ कहना है कि अदालत से तुम्हें क़ानून के मुताबिक सज़ा क्यों न दी जाय?

फ़ाल्डर सिर हिलाकर 'नहीं' कहता है।

जज : विलियम फ़ाल्डर, तुम्हारा विचार अच्छी तरह किया गया और तुम्हारे

ऊपर जालसाज़ी का अपराध सिद्ध हुआ है, और मेरी राय में ठीक सिद्ध हुआ है।

कुछ ठहरकर कागज़ देखता है और कहता है।

तुम्हारी ओर से यह सफ़ाई दी गई थी कि यह अपराध करते समय तुम अव्यवस्थित थे, और इसलिए इस काम के लिए तुम जिम्मेदार नहीं कहे जा सकते। मैं ख़याल करता हूं कि यह केवल उस प्रलोभन का प्रत्यक्ष रूप दिखाने की एक चाल थी, जिसने तुम्हें चंचल कर दिया, क्योंकि तुम्हारे विचार के प्रारम्भ से ही तुम्हारे वकील ने एक प्रकार से केवल दया की प्रार्थना की है। यह सफाई पेश करने से इतना ज़रूर हुआ कि उन्हें ऐसी गवाहियां दिलाने का अवसर मिला जो उस विचार से ध्यान देने योग्य हैं। यह कार्यवाही उचित थी या नहीं थी, दूसरी बात है। उन्होंने तुम्हारे बारे में कहा है कि तुम्हें अपराधी नहीं, मरीज़ समझना चाहिए। और उनकी इस दलील का जिसका अन्त दया की एक मर्मस्पर्शी प्रार्थना पर हुआ, तत्त्व क्या है? यही कि हमारी न्यायपद्धति दूषित है और पापवृत्ति को सुधारने के बदले उसको पुष्ट और पूर्ण करती है। इस प्रार्थना को कितना महत्त्व देना चाहिए इस विषय में कई बातें विचारणीय हैं। पहले तो तुम्हारे अपराध की गुरुता है। किस चालाकी के साथ तुमने मुसन्ने को बदला, किस कमीनापन से एक निर्दोषी के सिर अपराध मढ़ने की कोशिश की। और यह मेरे ख़याल में एक बहुत बड़ी बात है। और सबसे बड़ी बात यह है कि मुझे दूसरों को तुम्हारा उदाहरण दिखाकर ऐसे कामों से रोकना है। दूसरी ओर यह भी विचार करना है कि तुम कम उम्र हो।

इसके पहिले तुम्हारा चाल-चलन हमेशा अच्छा रहा है। और जैसा कि तुम्हारे और तुम्हारे गवाहों के बयान से मालूम होता है कि तुम यह काम करते वक्त कई कारणों से कुछ अस्थिरचित्त भी थे। तुम्हारे प्रति और समाज के प्रति जो मेरा कर्तव्य है उसके अन्दर रहते हुए मेरी पूरी इच्छा है कि मैं तुम पर दया का व्यवहार करूं। और यह मुझे इन बातों की याद दिलाता है जिनके आधार पर ही मुआमले का विचार किया जा सकता है। तुम वकील के दफ़्तर में क्लर्क का काम करते हो यह इस मामले में एक बड़ी भारी बात है। यह तुम किसी प्रकार भी नहीं कह सकते कि तुम्हें अपराध की भीषणता या उसके दंड का पूरा ज्ञान नहीं था। हां, यह कहा गया है, कि तुम्हारे मनोभावों ने तुम्हें अस्थिर बना दिया था। हनीविल से जो तुम्हारा रिश्ता था उसका वृत्तान्त आज कहा गया है, इसी वृत्तान्त पर सफाई और दयाप्रार्थना दोनों ही का आधार रक्खा गया है। दया की प्रार्थना केवल

उसी पर से की गई है। अच्छा, अब वह वृत्तान्त क्या हैं।
तुम एक युवक हो और वह एक विवाहिता युवती है, यद्यपि उसका विवाहित जीवन दुःखी है। तुम दोनों का आपस में प्रेम हो गया। तुम दोनों कहते हो कि वह सम्बन्ध अपवित्र और कलुषित नहीं था। मैं नहीं जानता कि यह बात कहां तक सच है। फिर भी तुम स्वीकार करते हो कि शीघ्र ही वह होने वाला था। तुम्हारे वकील ने इस बात पर पर्दा डालने के लिए यह कहा है कि उस औरत की अवस्था बड़ी करुण थी। मैं अपनी राय इस विषय में नहीं देना चाहता। मैं इतना जानता हूं कि वह एक विवाहिता स्त्री है, और यह खुली हुई बात है कि तुमने यह अपराध एक भ्रष्ट संकल्प को पूरा करने के लिए किया। इच्छा होने पर भी मैं दया प्रार्थना का अनुमोदन नहीं कर सकता, जिसका आधार सदाचार के विरुद्ध है। तुम्हारे वकील ने यह भी कहा है कि तुमको और अधिक क़ैद की सज़ा देना तुम्हारे प्रति अविचार होगा। मैं उनके इस कथन से सहमत नहीं हूं। क़ानून जो है वही रहेगा। क़ानून एक विशाल भवन है जो हम सबकी रक्षा करता है, और जिसका हर एक पत्थर दूसरे पत्थर पर अवलम्बित है। मैं केवल इसका व्यवहार करने वाला हूं। तुमने जो अपराध किया है वह बड़ा भारी है। इस हालत में कर्तव्य की ओर दृष्टि रखकर हृदय में तुम्हारे प्रति जो दया की इच्छा है, वह मैं पूरी नहीं कर सकता। तुम्हें तीन साल की सख़्त सज़ा भोगनी पड़ेगी।

फाल्डर जो अब तक व्यग्रता के साथ जज की वक्तृता को सुन रहा था, अपनी छाती पर सिर झुका लेता है। जैसे ही वार्डर उसे ले जाने लगते हैं रुथ अपनी जगह पर खड़ी होती है। अदालत में गोलमाल होने लगता है।

जज : **(रिपोर्टरों से)** प्रेस के महोदयगण, आज के मामले में जिस औरत ने गवाही दी है उसका नाम कागज़ों में जाहिर न हो।

रिपोर्टर लोग सिर झुकाकर स्वीकार करते हैं।

जज : **(रुथ से जो उसकी ओर देख रही है)** तुम समझ गई न? तुम्हारा नाम ज़ाहिर न होगा।

कोकसन : **(रुथ की आस्तीन पकड़कर)** जज आपसे कुछ कह रहे हैं।

रुथ जज की ओर देखती है और चली जाती है।

जज : आज मैं अभी और बैठूंगा। दूसरा मामला पेश करो। अहलमद जान वूली को आवाज़ दो।

अहलमद : **(वार्डर से)** जान वूली वाले गवाह हाज़िर हैं?

वह आवाज़ देता है—जान वूली वाले गवाह हाज़िर हैं?

पर्दा गिरता है।

अंक 3

दृश्य पहला

[जेलख़ाने में मामूली तरह से सज़ा हुआ एक कमरा, जिसमें दो बड़ी-बड़ी खिड़कियां हैं। खिड़कियों में छड़ लगी हुई है, जिनमें से कैदियों के कसरत करने का आंगन दिखाई दे रहा है। वहां क़ैदी पीले कपड़े पहिने हुए दिखाई देते हैं। उनके कपड़ों पर तीर का निशान लगा हुआ है। सिर पर पीली मुंडी टोपी है। वे सब एक क़तार में चार-चार गज़ के फ़ासले से सफ़ेद और टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों पर तेज़ी से चलते दिखाई देते हैं जो आंगन के फर्श पर बनी हैं। दो सिपाही नीले रंग का कपड़ा पहिने हुए, तलवार लिए बीच में खड़े हैं। उनकी टोपी के सामने थोड़ा-सा हिस्सा निकला हुआ है। कमरे की दीवारें रंग से पुती हुई हैं। कमरे में किताब रखने का एक आला है जिसमें सरकारी ढंग की किताबें रक्खी हैं। दोनों खिड़कियों के बीच एक अलमारी है। दीवार पर जेलख़ाने का एक नक्शा लटक रहा है। एक लिखने की मेज़ पर सरकारी कागज़ात रखे हैं। यह क्रिसमस की संध्या है। दारोग़ा साफ़ रोबदार आदमी है। कतरी हुई छोटी मूंछें हैं। मुल्लाओं की-सी आंखें, बाल खिचड़ी हो गए हैं, और कनपट्टी से फिरे हुए हैं। मेज़ के पास खड़ा एक आरी को देख रहा है, जो किसी धातु की बनी हुई है। जिस हाथ में वह उसे पकड़े हुए है उसमें दस्ताना है, क्योंकि उसके हाथ की दो उंगलियां गायब हैं। प्रधान वार्डर वुडर लम्बा और दुबला है, और पलटनिया मालूम होता है। उसकी उम्र साठ वर्ष की है। मूंछें सफेद हैं। बन्दर की-सी उदास आंखें हैं। गवर्नर से दो क़दम की दूरी पर मुस्तैदी से खड़ा है।]

दारोग़ा : **(रूखी और हलकी मुस्कराहट के साथ)** बड़े आश्चर्य की बात है, मिस्टर वुडर! तुम्हें यह कहां मिली?

वुडर : उसकी चादर के नीचे, साहब। ऐसी बात दो वर्ष से नज़र नहीं आई।

दारोग़ा : **(आश्चर्य से)** कोई सधी-बधी बात थी क्या?

वुडर : उसने अपनी खिड़की की गराद इतनी काट डाली है।

अंगूठे और उंगली को एक चौथाई इंच अलग करके उठाता है।

दारोग़ा : मैं दोपहर को उससे मिलूंगा, उसका नाम क्या है? मोनी, शायद कोई पुराना आसामी है।

वुडर : हां, साहब! यह चौथी बार सज़ा भुगत रहा है। ऐसे पुराने खिलाड़ी को तो ज्यादा समझ से काम लेना चाहिए था।

करुणाभाव से।

कह रहा था, मन बहलाता था। कहीं घुस गए, कहीं से निकल आए। सब इसी धुन में पड़े रहते हैं।

दारोग़ा : दूसरे कमरे में कौन रहता है?

वुडर : ओक्लियरी, हुज़ूर!

दारोग़ा : अच्छा, वह आइरिश मैन?

वुडर : उसके दूसरे कमरे में रहता है वह युवक फ़ाल्डर, सभ्य श्रेणी का। उसके बाद बूढ़ा क्लिपटन।

दारोग़ा : हां, वह दार्शनिक। मैं उससे मिलूंगा। उसकी आंखों के बारे में पूछना है।

वुडर : कुछ अक्ल काम नहीं करती। ऐसा मालूम होता है कि अगर एक भागने की कोशिश करता है, तो बाकी सबों को इसकी ख़बर हो जाती है। सभी भागने पर उतारू हो जाते हैं। खूब हलचल मच रही है।

गवर्नर : **(विचार करके)** यह हलचल बुरा है।

क़ैदियों को कसरत करते देखता हुआ।

वहां तो सब के सब बड़े शान्त मालूम होते हैं।

वुडर : उस आइरिशमैन ओक्लियरी ने आज दरवाज़े पर धक्का देना शुरू किया। बिलकुल ज़रा-सी बात उनमें खलबली डाल देने को काफी है। वे कभी-कभी सब बे-ज़बान जानवरों से हो जाते हैं।

दारोग़ा : घोड़ों में बादल गरजने से पहले यह बात मैंने देखी है। सवारों की कतारों को चीरते हुए निकल जाते थे।

जेल का पादरी आता है। बाल काले हैं, वैराग्य का भाव है, गिर्जे के कपड़े पहने हैं। चेहरा बहुत गम्भीर, होंठ कुछ जकड़े हुए। धीरे से सभ्य भाषा में बात करता है।

दारोग़ा : **(आरा दिखाकर)** इसे देखा तुमने, मिलर?

चैपलेन : काम की चीज़ मालूम होती है।

दारोग़ा : अजायबघर में भेजने लायक़ है।

अलमारी के पास जाकर उसे खोलता है और उसमें पुरानी रस्सियों के टुकड़े, कीलें और धातुओं के बने हुए औज़ार नज़र आते हैं। उनमें कागज़ के पर्चे बंधे हुए हैं।

अच्छा, धन्यवाद मिस्टर वुडर, तुम जा सकते हो।

वुडर : **(सलाम करके)** जो हुक्म।

चला जाता है।

दारोग़ा : क्यों मिस्टर मिलर—दो तीन दिन में यह क्या हो गया है? सारे जेल की हवा बिगड़ी हुई है।

चैपलेन : मुझे तो कुछ नहीं मालूम।

दारोग़ा : खैर, जाने दो। कल यहीं भोजन कीजिए न?

चैपलेन : बड़ा दिन है, अनेक धन्यवाद।

दारोग़ा : आदमियों की हलचल मुझे परेशान कर देती है।

आरे को देखते हुए।

इस शैतान को भी सज़ा देनी पड़ेगी। जो भागने की कोशिश करता है उस पर सख़्ती करने का जी नहीं चाहता।

आरे को जेब में रख लेता है, और अलमारी में भी ताला बन्द करता है।

चैपलेन : बाज़-बाज़ बला के हठीले और शरीर होते हैं। बिना सख़्ती के कुछ नहीं किया जा सकता।

दारोग़ा : फिर भी तो कोई नतीजा नहीं। गोल्फ़ के लिए ज़मीन बहुत कड़ी है, क्यों?

वुडर फिर भीतर आता है।

वुडर : एक आदमी आपसे मिलना चाहते हैं, महाशय! मैंने उनसे कहा ऐसा क़ायदा नहीं है।

दारोग़ा : क्या चाहता है?

वुडर : कहिए तो विदा कर दूं।

दारोग़ा : **(मजबूरी से)** नहीं, नहीं, बुलाओ। तुम बैठो, मिलर।

वुडर किसी को आने के लिए इशारा करता है, और उसके भीतर आते ही वह चला जाता है। मिलने वाला कोकसन है, वह घुटने तक मोटा ओवरकोट पहिने है। हाथ में ऊनी दस्ताने हैं। ऊंची टोपी लिये हुए है।

कोकसन : मुझे आपको कष्ट देने का खेद है। लेकिन मुझे एक युवक के बारे में कुछ कहना है।

दारोग़ा : यहां तो बहुत से युवक हैं।

कोकसन : फ़ाल्डर नाम है। जालसाज़ी में। **(अपने नाम का कार्ड दारोग़ा को देकर)** जेम्स एण्ड वाल्टर हो या कार्यालय वकालत के लिए मशहूर है।

दारोग़ा : **(मुस्कराहट के साथ कार्ड लेते हुए)** आप किसलिए मुझसे मिलना चाहते हैं?

कोकसन : **(अकस्मात् क़ैदियों की क़वायद देखकर)** कैसा दृश्य है।

दारोग़ा : हां, हमारे यहां से अच्छी तरह दिखाई देता है। मेरे दफ्तर की मरम्मत हो रही है।

टेबिल के पास बैठकर।

हां, कहिए।

कोकसन : **(मानो कष्ट के साथ अपनी दृष्टि को क़ैदियों की ओर फेरकर)**

मैं आपसे दो एक बात करना चाहता हूं। मुझे अधिक देर लगेगी। **(धीरे से)** बात यह है कि मैं क़ायदे से तो यहां नहीं आ सकता। परन्तु उसकी बहन मेरे पास आई थी। बाप-मां तो कोई है ही नहीं। वह बहुत घबराई हुई थी। मुझसे बोली मेरे पति तो मुझे उससे मिलने जाने नहीं देते। कहते हैं उसने कुल में कलंक लगाया है। दूसरी बहन बिलकुल चलने-फिरने से लाचार है। उसने मुझसे आने के लिए कहा। मुझे भी उस युवक से प्रेम है। मेरा ही मातहत था। मैं भी उसी गिर्जे में जाया करता हूं। इसलिए मैं इनकार न कर सका।

दारोग़ा : लेकिन खेद है, उसे किसी से मिलने का हुकुम नहीं है। वह यहां केवल एक मास की काल कोठरी के लिए आया है।

कोकसन : मैं उससे उस समय एक बार मिला था जब वह हवालात में बन्द था और उसका मामला चल रहा था। बेचारे के आगे-पीछे कोई नहीं है।

दारोग़ा : **(कुछ प्रसन्न होकर)** मिलर ज़रा घंटी तो बजाओ।

कोकसन से।

क्या आप सुनना चाहते हैं कि डाक्टर उसके बारे में क्या कहते हैं?

चैपलेन : **(घंटी बजाकर)** मालूम होता है कि आप जेलख़ाने में बहुत कम जाते हैं।

कोकसन : हां, लेकिन देखकर दुःख होता है, वह अभी बिल्कुल युवक है। मैंने उससे कहा—"धीरज रखो!" हां, यही कहा था। "धीरज" उसने जवाब दिया। "एक दिन अपने को कमरे में बन्द करके मेरी ही भांति सोचिए और कलपिए तो मालूम हो। बाहर का एक दिन यहां के एक वर्ष के समान है। मैं क्या करूं?" उसने फिर कहा, "मैं कोशिश करता हूं, मिस्टर कोकसन, परन्तु अपनी आदत से लाचार हूं।" फिर हाथों से मुंह ढांप कर वह रोने लगा। मैंने देखा उंगलियों के बीच में से होकर आंसू टपक रहे थे। मैं तो तड़प उठा।

चैपलेन : वही युवक है न जिसकी आंखें कुछ अजीब तरह की हैं। चर्च आफ़ इंग्लैंड का नहीं मालूम होता।

कोकसन : नहीं।

चैपलेन : जानता हूं।

दारोग़ा : **(वुडर से जो भीतर आया है)** डाक्टर साहब से कहो कि कृपा करके एक मिनट के लिए मुझसे आकर मिल लें।

वुडर सलाम करके चला जाता है।

उसकी शादी तो नहीं हुई है।

कोकसन : नहीं।

गुप्त भाव से।

लेकिन एक औरन है, जिसे वह बहुत चाहता है, ठीक वेश्या नहीं है।

बड़ी करुण कहानी है।

चैपलेन : अगर दुनिया में शराब और औरत न होती, तो जेलख़ाने ही न होते।

कोकसन : **(चश्मे के ऊपर से चैपलेन का देखता हुआ)** हां, लेकिन मैं विशेषकर वही बात आपसे कहने आया हूं। यह चिन्ता उसे मारे डालती है।

दारोग़ा : अच्छा!

कोकसन : बात यह है कि उस औरत का पति बड़ा ही बदमाश है और वह उसे छोड़ बैठी है। वह उस युवक के साथ ही भाग जाने का इरादा करती है। यह बात अच्छी नहीं है। लेकिन मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया। जब मुक़दमा ख़तम हो गया, तो उसने कहा....कि अलग रहकर अपना पेट चलाऊंगी और जब तक वह सज़ा काटकर बाहर न आए, उसके नाम पर बैठी रहूंगी। उसको इस बात से बड़ी भारी शान्ति मिली थी। लेकिन एक महीने बाद वह मुझको मिली। मुझसे उससे जान पहिचान नहीं है। पर बोली—"अपनी बात तो दूर है, मैं अपने बच्चों तक का पालन नहीं कर सकती। मेरे कोई मित्र नहीं है। मैं ज़्यादा किसी से मिल-जुल भी नहीं सकती। उससे मेरे पति को मेरा पता लग जाने का डर है। मैं बिलकुल दुबली हो गयी हूं।" दरअसल वह दुबली हो गई है। "अब शायद मुझे किसी कारख़ाने में जाना पड़ेगा।" यह बड़ी दुःख भरी कहानी है। मैंने कहा, "नहीं, कहीं न जाना पड़ेगा। मेरे घर पर मेरी स्त्री है, बच्चे हैं। यदि उन्हें भोजन मिलेगा तो तुमको भी क्यों नहीं मिल सकता?" दरअसल वह बड़ी नेक औरत है। उसने जवाब दिया "सच? लेकिन मैं आपसे यह नहीं कह सकती। इससे तो अच्छा है, कि मैं अपने पति के पास लौट जाऊं।" यद्यपि मैं जानता हूं कि उसका पति एक शराबी तथा पशु के समान अत्याचारी आदमी है फिर भी मैंने उसे पति के पास जाने को मना नहीं किया।

चैपलेन : आप कैसे कर सकते थे?

कोकसन : हां, लेकिन उसके लिए मुझे दुःख है। युवक को अभी तीन साल सज़ा भुगतनी है। मैं चाहता हूं वह कुछ आराम से रहे।

चैपलेन : **(कुछ चिढ़कर)** कानून आपके साथ बिलकुल सहमत नहीं।

कोकसन : वह बिलकुल अकेला है, मुझे डर है वह पागल न हो जाय। भला ऐसा कौन चाहता होगा? मुझे जब उसने देखा तो रोने लगा, मुझसे किसी का रोना देखा नहीं जाता।

चैपलेन : यह बहुत ही कम देखा गया है, कि क़ैदी किसी को देखकर रोने लगे।

कोकसन : **(उसकी ओर ताकता हुआ यकायक जामे से बाहर होकर)** मेरे घर कुत्ते भी हैं।

चैपलेन : अच्छा!

कोकसन : हां, और मैं कह सकता हूं कि मैं कभी उन्हें हफ्तों तक अकेले बन्द नहीं रख सकता। चाहे वह मुझे टुकड़े-टुकड़े कर डालें।

चैपलेन : मगर अपराधी तो कुत्ते नहीं हैं। उनमें धर्म-अधर्म का ज्ञान होता है।

कोकसन : लेकिन उसको समझाने का यह ढंग नहीं है।

चैपलेन : खेद है हम आप से एक-मत नहीं हो सकते।

कोकसन : कुत्तों में भी यही बात है, आप उनसे दया का व्यवहार करेंगे तो वे आपके लिए सब कुछ करेंगे। मगर उनको अकेले बन्द कर रखिए। आप देखेंगे वे झल्ला उठेंगे।

चैपलेन : मगर इतना आप ज़रूर स्वीकार करेंगे, जो आपसे ज्यादा अनुभव रखते हैं वह जानते हैं कि क़ैदियों से किस तरह व्यवहार किया जाय।

कोकसन : **(हठ करके)** मैं इस बेचारे युवक को जानता हूं। मैं उसे वर्षों से देखता आ रहा हूं। वह कुछ दिल का कमजोर है। उसका बाप भी क्षय से मरा था। मैं केवल उसके भविष्य की बात सोच रहा हूं। अगर उसको काल कोठरी में रक्खा जायगा जहां कुत्ता-बिल्ली तक उसके साथी नहीं हैं, तो उसके स्वास्थ्य को ज़रूर नुकसान पहुंचेगा। मैंने उससे पूछा था कि "तुम्हें क्या कष्ट है?" उसने जवाब दिया, "यह मैं आपसे ठीक बयान नहीं कर सकता, मिस्टर कोकसन, लेकिन कभी-कभी जी चाहता है कि अपना सिर दीवार पर पटक दूं।" कितनी भयानक बात है।

उसकी बात के बीच में ही डाक्टर भीतर आते हैं। उनका कद मझोला है, खूबसूरत भी कहा जा सकता है, आंखें तेज़ हैं, खिड़की पर झुककर खड़े होते हैं।

दारोग़ा : यह महाशय कह रहे हैं कि एकांतवास से उच्च श्रेणी के नंबर तीन हजार सात वही दुबला सा युवक...फ़ाल्डर की दशा बिगड़ रही है। आपकी क्या राय है डाक्टर क्लेमेंट?

डाक्टर : हां, वह ज़रूर ऊब गया है। परन्तु उसके स्वास्थ्य में तो कोई ख़राबी नहीं आई है। केवल एक महीना तो है।

कोकसन : लेकिन यहां आने के पहिले तो उसे हफ्तों रहना पड़ा था।

डाक्टर : यह तो जानी-बूझी बात है। यहां उसका वज़न कुछ नहीं घटा है।

कोकसन : लेकिन मेरा मतलब उसके दिमाग़ से है।

डाक्टर : उसका दिमाग़ भी दुरुस्त है। कुछ घबड़ाया-सा ज़रूर रहता है। परन्तु और कोई शिकायत नहीं है। मैं उसके विषय में सावधान हूं।

कोकसन : **(लाजवाब होकर)** मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई।

चैपलेन : **(सज्जनता के साथ)** यही एक ऐसा वक्त है कि हम उसके दिल पर कुछ असर डाल सकते हैं। मैं अपने निज की दृष्टि से कहता हूं।

कोकसन : **(दारोग़ा की ओर भौंचक्केपन से देखकर)** मैं आपसे शिकयत नहीं करना चाहता, परन्तु मेरे ख़याल में यह अच्छी बात नहीं।

दारोगा : मैं खुद जाकर आज उसे देखूंगा।

कोकसन : इसलिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मेरा ख़याल है कि रोज़ देखते रहने से शायद आपको कुछ पता न लगे।

दारोग़ा : **(कुछ तीखेपन से)** अगर उसके स्वास्थ्य में कुछ भी ख़राबी मालूम हुई तो मामला फौरन आगे भेज दिया जावेगा, इसका काफी प्रबन्ध है।

वह उठता है।

कोकसन : **(अपनी ही धुन में)** यह बात अवश्य है कि जो बात आंख से नहीं देखी जाती उसके लिए कष्ट नहीं होता। परन्तु मैं उधर से निश्चिन्त हो जाना चाहता हूं।

दारोग़ा : आप उसे हमारे ऊपर छोड़ दीजिए।

कोकसन : **(नम्र और विनीत भाव से)** शायद आप मेरा आशय समझ गए हों। मैं सीधा-सादा आदमी हूं। अफ़सर के विरुद्ध मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

चैपलेन की ओर झुककर।

बुरा न मानिएगा। गुडमार्निंग।

जब वह चला जाता है, तब तीनों कर्मचारी एक दूसरे की ओर नहीं देखते। लेकिन उनके चेहरे पर एक विचित्र भाव छा जाता है।

चैपलेन : हमारे इन मित्र का ख़याल है कि जेल अस्पताल है।

कोकसन : **(अकस्मात् लौटकर बड़े ही विनीत भाव से)** एक बात और है, वह औरत—मेरे ख़याल में आपसे यह कहना उचित न होगा, अगर आवे तो उसे इससे मिला दीजिएगा। इससे दोनों निहाल हो जायंगे। वह उसी का ध्यान कर रहा होगा। माना वह उसकी बीवी नहीं है, लेकिन किसी बात का खटका नहीं है। बेचारे दोनों बड़े ही दुःखी हैं। आप कोई ख़ास रियायत नहीं कर सकते?

दारोग़ा : **(उकताकर)** मुझे सचमुच ही दुःख है कि मैं कोई ख़ास रियायत नहीं कर सकता। वह जब तक मामूली जेलख़ाने में न जाय, तब तक वह किसी से नहीं मिल सकता।

कोकसन : ठीक है। **(निराश स्वर से)** आपको तकलीफ़ दी, माफ़ कीजिए।

फिर बाहर चला जाता है।

चैपलेन : **(कंधों को हिलाकर)** बड़ा सीधा आदमी है विचारा। चलो क्लेमेंट ख़ाना खा लो।

वह और डाक्टर बातें करते जाते हैं।

दारोग़ा एक लम्बी सांस लेकर टेबिल के पास कुर्सी पर बैठ जाता है और क़लम उठा लेता है।

परदा गिरता है।

दृश्य दूसरा

[जेलख़ाने की पहिली मंज़िल के दालान का हिस्सा। दीवारें फीके हरे रंग से गहरे रंग की एक धारी तक रंगी हुई हैं जो मनुष्य के कन्धे की ऊंचाई तक होंगी। इसके ऊपर सफ़ेदी की हुई है। ज़मीन काले पत्थरों की बनी हुई है। किनारे पर की एक खिड़की से रोशनी छनकर आ रही है। चार कोठरियों के दरवाज़े नज़र आ रहे हैं। आंख की ऊंचाई पर हर एक कोठरी के दरवाज़े में एक छोटा झरोखा है जिस पर एक गोल ढंकना लगा है। उसको ऊपर उठाने से कोठरी का भीतरी दृश्य दिखाई देता है। कोठरी के पास ही दीवार पर एक छोटा चौकोर तख़्ता लगा है जिस पर क़ैदी का नाम, नम्बर और हाल लिखा है।

ऊपर दोमंज़िले और तिमंज़िले के दालानों के लोहे के छज्जे दिखाई दे रहे हैं।

वार्डर (जमादार) एक कोठरी से बाहर निकल रहा है। उसके दाढ़ी है और नीली वर्दी पहिने हुए है। वर्दी पर एक गर्दपोश है, उसमें चाबियां लटक रही हैं।]

जमादार : (दरवाज़े से कोठरी के अन्दर बोलते हुए) जब यह कर लोगे तो मैं तुम्हें कुछ थोड़ा-सा काम और दूंगा।

ओक्लियरो : (नेपथ्य में आयरिश स्वर में) ठीक है, हुजूर!

जमादार : (दोस्ताना ढंग से) आखिर बैठकर क्या करोगे? कुछ न कुछ करना ही अच्छा है।

ओक्लियरी : यही तो मैं सोचता हूं।

कोठरियों के बन्द होने और ताला पड़ने का शब्द सुनाई देता है। फिर किसी के पैरों की आवाज़ सुनाई देती है।

जमादार : (गला कुछ बदलकर जल्दी से) देखो, अच्छी तरह काम करो।

कोठरी का दरवाज़ा बन्द करता है और तनकर खड़ा होता है। दारोग़ा आता है, पीछे-पीछे वुडर है।

दारोग़ा : कोई नई बात?

जमादार : (सलाम करके) नंबर तीन हजार सात।

एक कोठरी की ओर इशारा करके।

काम में पीछे है। उसको आज नम्बर नहीं मिल सकता।

दारोग़ा सिर हिलाता है और आख़िरी कोठरी के पास जाता है। जमादार चला जाता है।

दारोग़ा : इन्हीं महाशय ने आरी बनायी है न?

जेब में से आरी निकालता है, वुडर कोठरी का दरवाज़ा

खोलता है, कैदी सिर पर टोपी दिए बिछौने पर सीधा लेटा नज़र आता है। वह चौंक पड़ता है और कोठरी के बीच में खड़ा हो जाता है। वह दुबला आदमी है, उम्र छप्पन वर्ष की, कान चमगादड़ के-से, डरावनी घूरती हुई और कठोर आंखें हैं।

वुडर : टोपी उतारो। **(मोनी टोपी उतारता है।)** बाहर आओ।

मोनी दरवाज़े के पास आता है।

दारोग़ा : उसे दालान में निकल आने का इशारा करके जेब में से आरी निकालकर उसे दिखाते हुए इस ढंग से बोलता है जैसे कोई अफ़सर सिपाही से बात कर रहा हो।) इसके बारे में कुछ कहना है? बोलो।

मोनी चुप रहता है फिर पूछने पर बोलता है।

मोनी : वक्त काट रहा था।

दारोग़ा : (कोठरी की ओर इशारा करके) काम कम है, क्यों?

मोनी : उसमें मन नहीं लगता!

दारोग़ा : (आरी को खटखटाकर) तो इससे अच्छा ढंग सोचना चाहिए था।

मोनी : (मुंह लटकाकर) और कौन सा ढंग था? जब तक मैं यहां से निकल न जाऊं, तब तक मुझे किसी न किसी काम में अपना वक्त काटना पड़ेगा। इस उम्र में और मेरे लिए रक्खा ही क्या है?

ज्यों-ज्यों ज़बान हिलती है वह नर्म होता जाता है।

आपको तो मालूम ही है कि इस मियाद के बाद दो ही एक साल में मुझे फिर लौट आना पड़ेगा। मैं बाहर निकलकर अपनी बेइज्ज़ती न कराऊंगा। जेल को क़ायदे से दुरुस्त रखने में आपको गर्व है। मुझे भी अपनी इज्ज़त प्यारी है।

यह देखकर कि दारोग़ा उसकी बातों को ध्यान से सुन रहा है वह आरी की ओर इशारा करके कहता है।

कुछ थोड़ा-थोड़ा यह काम भी करता रहूं तो किसी का क्या बिगड़ता है? पांच हफ्तों से मैं इसे बना रहा था। शायद बुरा तो नहीं बना। अब शायद काल कोठरी मिलेगी। या सात दिन सिर्फ रोटी और पानी। आपके बस की बात नहीं। मैं जानता हूं क़ायदे से आप भी लाचार हैं।

दारोग़ा : अच्छा, देखो मोनी अगर मैं इस बार तुम्हें माफ़ कर दूं तो क्या तुम मुझसे वायदा कर सकते हो कि आगे तुम कभी ऐसा न करोगे? सोचो।

वह कमरे में घुसता है और उसके सिरे तक चला जाता है।

फिर स्टूल पर चढ़कर खिड़की की सलाखों को आज़माता है।

दारोग़ा : (लौटकर) क्या कहते हो?

मोनी : (जो सोच रहा था) अभी मुझे छः हफ्ते और यहां अकेले रहना है। कैसे मुमकिन है कि मैं बिना कुछ किए चुपचाप रहूं। कोई चीज़ ज़रूर चाहिए जिसमें मेरा मन लगे। आपकी बड़ी दया है। लेकिन मैं कोई वायदा नहीं कर सकता। एक भले आदमी को धोखा नहीं देना चाहता।

कोठरी की ओर देखकर।

अगर चार घंटे डटकर और मिलते तो मैं इसे पूरा कर लेता।

दारोग़ा : तो उससे होता क्या? फिर पकड़ लिए जाते। यहां लाए जाते और सज़ा मिलती। पांच हफ्ते की सख्त मेहनत करने पर भी कोठरी में बन्द रहना पड़ता। तुम्हारी खिड़की पर एक नई गराद लगा दी जाती। सोचो मोनी क्या यह काम इस लायक है?

मोनी : (कुछ डरावने भाव से) हां, है।

दारोग़ा : (हाथों से भौंहों को खुजाते हुए) अच्छा, दो दिन कोठरी और सिर्फ रोटी और पानी।

मोनी : धन्यवाद!

वह जानवर की भांति घूमता है और अपने कमरे में घुस जाता है। दारोग़ा उसकी ओर देखता रहता है, और सिर हिलाता है। वुडर कोठरी को बन्द करके ताला डालता है।

दारोग़ा : क्लिप्टन की कोठरी खोलो।

वुडर क्लिप्टन की कोठरी खोलता है, क्लिप्टन ठीक दरवाजे के पास एक स्टूल पर बैठा हुआ पाजामा सी रहा है। वह नाटा, मोटा और अधेड़ है। सिर मुड़ा हुआ। धुंधले चश्मे के पीछे छोटी और काली आंखें मानो बुझ रही हों। वह उठकर दरवाज़े में चुपचाप खड़ा हो जाता है और आने वालों को घूरता है।

दारोगा : (उसको बाहर आने का इशारा कर) ज़रा एक मिनट के लिए बाहर आओ, क्लिप्टन!

क्लिप्टन एक डरावनी खामोशी के साथ बाहर आता है, सुई-डोरा उसके हाथ में है। दारोग़ा वुडर से इशारा करता है, वह जांच करने के लिए कोठरी के भीतर जाता है।

दारोग़ा : तुम्हारी आंखें कैसी हैं?

क्लिप्टन : मुझे उनकी कुछ शिकायत नहीं करनी है। यहां सूरज के कभी दर्शन नहीं होते।

चोरों की तरह क़दम उठाकर सिर बढ़ा देता है।

मैं चाहता हूं कि आप मेरे इस दूसरे कमरे में महाशय से कुछ कह दें कि वह ज़रा कुछ चुप रहा करें।

दारोग़ा : क्यों, क्या बात है? मैं चुगली नहीं सुनना चाहता, क्लिप्टन।

क्लिप्टन : मैं नहीं जानता वह कौन है। मुझे तो उसके मारे नींद तक नहीं आती।

उपेक्षा से।

शायद कोई उच्च (स्टार) श्रेणी का होगा। उसे हमारे साथ नहीं रखना चाहिए।

दारोग़ा : **(शान्त स्वर से)** ठीक है, क्लिप्टन, जब कोई कोठरी खाली होगी तब वह हटा दिया जायगा।

क्लिप्टन : 'सवेरे वह दरवाज़ों पर धमाधम शब्द करता है, मानो कोई जंगली जानवर हो। मुझे बरदाश्त नहीं होती। मेरी नींद खुल जाती है। शाम को भी यही हाल होता है। यह कोई अच्छी बात नहीं है। आप ही सोच देखिए। नींद के सिवा यहां और है क्या? वह मुझे पेट भर मिलनी चाहिए।

वुडर कोठरी के बाहर आता है। जैसे ही वह आता है क्लिप्टन चोर की तरह झट से अपनी कोठरी में घुस जाता है।

वुडर : सब ठीक है, हुजूर!

दारोग़ा सिर हिलाता है, वुडर दरवाज़े को बन्द कर ताला लगाता है।

दारोग़ा : वह कौन है जो सवेरे अपने दरवाज़े पर धक्का मार रहा था?

वुडर : **(ओक्लियरी की कोठरी के पास जाकर)** यह है, साहब।

वह ढकना उठाकर झरोखे में से भीतर देखता है।

दारोग़ा : खोलो।

वुडर दरवाज़ा बिल्कुल खोल देता है, ओक्लियरी दरवाज़े के पास टेबिल के सामने कान लगाए बैठा हुआ नज़र आता है। दरवाज़ा खुलते ही वह उछलकर ठीक द्वार पर सीधा खड़ा हो जाता है। उसका चेहरा चौड़ा है, उम्र अधेड़ है, मुंह पतला, चौड़ी और गालों की ऊंची हड्डियों के नीचे गढ़े हो गए हैं।

दारोग़ा : क्या मज़ाक है, ओक्लियरी?

ओक्लियरी : मज़ाक, हुज़ूर! मैंने तो बहुत दिनों से इसे नहीं देखा।

दारोग़ा : अपने दरवाज़े पर धक्के लगाना!

ओक्लियरी : ओ! वह!

दारोग़ा : यह ज़नानों का-सा काम है।

ओक्लियरी : और दो महीने से हो क्या रहा है?

दारोग़ा : कोई शिकायत है?

ओक्लियरी : नहीं हुज़ूर।

दारोग़ा : तुम पुराने आदमी हो, तुम्हें सोच समझकर काम करना चाहिए।

ओक्लियरी : यह सब तो सुन चुका हूं।

दारोग़ा : तुम्हारे बाद वाले कमरे में एक लौंडा है, वह घबड़ा जायगा।

ओक्लियरी : कभी-कभी सनक सवार हो जाती है, हुज़ूर। मैं क्या करूं? हमेशा मन ठिकाने नहीं रहता।

दारोग़ा : काम तो पसंद है न?

ओक्लियरी : **(एक चटाई उठाकर जो वह बना रहा था)** यह काम मुझे दिया गया है। मेरे चाहे कोई प्राण ही ले ले, पर यह मुझसे न होगा। ऐसा सड़ियल काम! एक चूहा भी इसे बना सकता है।

मुंह बनाकर।

बस, यही मुझसे नहीं सहा जाता। यही सन्नाटा! ज़रा-सी कोई भनक कान में आए तो जी हलका हो जाता है।

दारोग़ा : तुम बाहर किसी दुकान में ही होते, तो क्या बातें करने पाते?

आक्लियरी : संसार की बातचीत तो सुनता।

दारोग़ा : **(मुस्कराकर)** अच्छा, अब ये बातें बन्द होनी चाहिए।

ओक्लियरी : अब ज़बान न खोलूंगा हुज़ूर।

दारोग़ा : **(घूमकर)** सलाम!

ओक्लियरी : सलाम, हुज़ूर।

वह कोठरी में जाता है, दारोग़ा दरवाज़ा बन्द करता है।

दारोग़ा : **(चाल-चलन की तख़्ती को पढ़कर)** इस पाजी से कुछ कहने को जी नहीं चाहता।

वुडर : हां, साहब, मुहब्बती आदमी है।

दारोग़ा : **(दालान से निकलने के रास्ते की ओर इशारा करके)** वुडर, जाकर डाक्टर को बुला लाओ।

वुडर उधर चला जाता है।

दारोग़ा फाल्डर की कोठरी की ओर जाता है। वह हाथ उठाकर झरोखे के ढकने को खोलना चाहता है कि अचानक ही सिर हिलाकर हाथ नीचा कर लेता है। फिर चाल-चलन की तख़्ती पढ़कर वह दरवाज़े को खोलता है। फाल्डर ज़ो दरवाज़े के सहारे ही खड़ा हुआ था गिरते-

गिरते संभलता है।

दारोग़ा : **(बाहर आने का इशारा कर)** कहो, क्या अब भी तुम शांत नहीं हो सके, फ़ाल्डर?

फ़ाल्डर : **(हांफता हुआ)** हां, साहब!

दारोग़ा : मेरा मतलब यह है कि अपने सिर को दीवार पर पटकने से कुछ न होगा।

फ़ाल्डर : जी नहीं!

दारोग़ा : फिर ऐसा मत किया करो।

फ़ाल्डर : कोशिश करूंगा, हुजूर।

दारोग़ा : क्या तुम्हें नींद नहीं आती?

फ़ाल्डर : बहुत थोड़ी। दो बजे और उठने के समय के बीच में दिल बहुत घबड़ाता है।

दारोग़ा : क्यों?

फ़ाल्डर : **(उसके ओंठ फैल जाते हैं, जैसे मुस्कराता हो)** यह नहीं जानता। मैं कच्चे दिल का आदमी हूं।

अचानक वाचाल होकर।

उस समय सभी बातें मुझे भयानक मालूम होती हैं। कभी-कभी सोचता हूं कि शायद मैं यहां से कभी बाहर नहीं निकलूंगा।

दारोग़ा : दोस्त यह वहम है। अपने को संभालो।

फ़ाल्डर : **(अचानक झुंझलाकर)** हां, करना ही पड़ेगा।

दारोग़ा : अपने और साथियों को देखो।

फ़ाल्डर : उनको आदत हो गई है। जी हां, शायद मैं भी कुछ दिनों में उन्हीं जैसा हो जाऊंगा।

दारोग़ा : **(कुछ दुःखित होकर)** ख़ैर, यह तुम जानो। अच्छा, अब काम में अपना मन लगाने की कोशिश करो। तुम अभी बिलकुल जवान हो। आदमी जैसा चाहे बन सकता है।

फ़ाल्डर : **(उत्सुकता से)** जी हां।

दारोग़ा : अपने मन को वश में रक्खो। कुछ पढ़ते हो?

फ़ाल्डर : **(सिर झुकाकर)** मेरी समझ में कुछ आता ही नहीं। मैं जानता हूं इससे कोई फायदा नहीं। फिर भी बाहर क्या हो रहा है, यह जानने की इच्छा होती है।

दारोग़ा : क्या कोई घरेलू मामला है?

फ़ाल्डर : जी हां।

दारोग़ा : उन बातों को तुम्हें नहीं सोचना चाहिए।

फ़ाल्डर : **(कोठरी की ओर देखकर)** यह मेरे बस की बात नहीं है।

वुडर और डाक्टर को आते देखकर बिलकुल चुप और

स्थिर हो जाता है। दारोग़ा उसे कोठरी में जाने का इशारा करता है।

फ़ाल्डर : **(जल्दी से धीमे स्वर में)** मेरा दिमाग़ बिलकुल ठीक है, साहब।

कोठरी के भीतर जाता है।

दारोग़ा : **(डाक्टर से)** जाओ और उसे ज़रा देख आओ, क्लेमेंट।

डाक्टर के भीतर जाते ही दारोग़ा दरवाज े को भेड़ देता है, फिर खिड़की की ओर जाता है।

वुडर : **(उनके पीछे-पीछे चलकर)** बड़े दुःख की बात है कि आपको इन सबों के पीछे इतना कष्ट उठाना पड़ता है। मगर सब आदमी सुखी हैं।

दारोग़ा : क्या तुम ऐसा सोचते हो?

वुडर : हां, साहब, केवल 'बड़े दिन' के कारण सब ज़रा बेचैन हो उठे हैं!

दारोग़ा : **(अपने ही आप)** अजीब बात है।

वुडर : क्या कहा, हुज़ूर?

दारोग़ा : बड़ा दिन।

खिड़की की ओर मुंह फेरता है। वुडर उनकी ओर बड़ी चिंता और दया की दृष्टि से देखता है।

वुडर : **(यकायक)** कहिए तो अबकी कुछ धूमधाम ज्यादा की जाय, या आप चाहें तो हाली* के और पौधे लगा दिए जाएं।

दारोग़ा : कोई जरूरत नहीं।

डाक्टर फ़ाल्डर के कमरे से बाहर आता है, दारोग़ा उसे इशारे से बुलाता है।

दारोग़ा : कहिए।

डाक्टर : मैं तो कोई खराबी नहीं पाता हूं। हां, कुछ घबड़ाया ज़रूर है।

दारोग़ा : क्या उसकी हालत की इत्तला देनी चाहिए? सच कहो, डाक्टर।

डाक्टर : बात तो यह है, उसे इस प्रकार एकांत में रखने से कोई फ़ायदा नहीं हो रहा है। परन्तु यह बात तो मैं बहुतों के लिए कह सकता हूं।

दारोग़ा : आपका मतलब है कि आपको औरों के लिए भी सिफारिश करनी पड़ेगी।

डाक्टर : कम से कम एक दर्जन के लिए। केवल ज़रा घबराहट है और कोई बात स्पष्ट नहीं है। यही देखो न।

ओक्लियरी की कोठरी की ओर इशारा करके।

इसकी भी हालत यही है। अगर मैं लक्षणों को छोड़ दूं तो कुछ भी कर ही नहीं सकता। ईमान की बात तो यह है कि मैं कोई ख़ास

---

* क्रिसमस में यूरोप में हाली के पौधों से सजावट की जाती है। इसे शुभ समझा जाता है।

रियायत नहीं कर सकता। वज़न में कुछ घटा नहीं है। आंखें ठीक हैं, नब्ज़ भी ठीक है। बातें बिलकुल होश की करता है। और अब एक हफ्ता तो रह ही गया है।

दारोग़ा : उन्माद का रोग तो नहीं मालूम होता?

डाक्टर : **(सिर हिलाकर)** यदि आप कहें तो मैं उसके बारे में रिपोर्ट पेश कर सकता हूं। लेकिन फिर मुझे औरों के लिए भी रिपोर्ट पेश करनी पड़ेगी।

दारोग़ा : अच्छा! **(फ़ाल्डर की कोठरी की ओर देखते हुए)** उस बेचारे को अभी यहीं रहना होगा।

कहने के साथ कुछ अनमना-सा होकर वुडर की ओर देखता है।

वुडर : आप कुछ कह रहे हैं, हुजूर?

जवाब के बदले दारोग़ा उसकी ओर आंखें फाड़कर देखता है। फिर पीछे फिरकर चलने लगता है। किसी धातु की चीज़ पर कुछ ठोंकने का शब्द सुनाई देता है।

दारोग़ा : **(ठहरकर)** क्या है, मिस्टर वुडर?

वुडर : अपने दरवाज़े को पीट रहा है, साहब। अभी शांत होता नहीं जान पड़ता।

वह जल्दी से दारोग़ा की बग़ल से होकर चला जाता है, दारोग़ा भी धीरे-धीरे उसी ओर जाता है।

परदा गिरता है।

दृश्य तीसरा

[फ़ाल्डर की कोठरी! दीवारों पर सफ़ेदी है, कमरा तेरह फीट चौड़ा, सात फीट लम्बा है। ऊंचाई नौ फीट है। छत गोल है। ज़मीन चमकीली, काली ईटों की बनी है। जंगलेदार खिड़की है जिसके ऊपर हवादान है। खिड़की सामने की दीवार के बीचोंबीच बनी है। उसके सामने की दीवार में छोटा-सा दरवाज़ा है। एक कोने में चादर और बिछावन लपेटा हुआ रक्खा है (दो कम्बल, दो चादरें और एक गिलाफ़)। ठीक उसके ऊपर चौथाई गोल लकड़ी का ताक है, जिस पर बाइबिल और कई धर्मग्रन्थ तले ऊपर मीनार की तरह रक्खे हैं। बालों का काला बुरुश, दांतों का बुरुश, और एक छोटा-सा साबुन भी रक्खा है। दूसरे कोने में लकड़ी की एक खाट खड़ी रक्खी है। खिड़की के नीचे एक अंधेरा हवादान है और एक दरवाज़े के ऊपर भी है। फ़ाल्डर का काम (एक कमीज़ पर उसे बटन के काज बनाने को दिया गया है।) एक खूंटी पर टंगा हुआ है। उसके नीचे एक लकड़ी की मेज़ पर उपन्यास 'लौना दून' खुला हुआ रक्खा है। कोने में दरवाज़े के पास कुछ नीचे एक वर्ग फुट का मोटा कांच का पर्दा है जो दीवार में लगी हुई गैस की नाली के द्वार को छेके हुए

हैं। एक लकड़ी का स्टूल भी रक्खा है। उसके नीचे जूते रक्खे हैं। खिड़की के नीचे तीन चमकदार टीन के डब्बे जड़े हुए हैं।

दिन शीघ्रता से ढल रहा है। फ़ाल्डर मोज़ा पहिने हुए दरवाज़े से सिर लगाकर (मानो कुछ सुन रहा हो) चुपचाप खड़ा है। वह दरवाज़े के कुछ और पास बढ़ता है, पैरों में मोज़ा रहने के कारण शब्द नहीं होता। वह दरवाज़े से सटकर खड़ा होता है। वह खूब कोशिश करता है कि बाहर की कोई बात उसे सुनाई दे जाय। अचानक वह उछलकर सीधा सांस बन्द करके खड़ा होता है मानो किसी की आहट पाई हो। फिर एक लम्बी सांस लेकर वह अपने काम (कमीज़) की ओर बढ़ता है और सिर नीचा करके उसे देखता है। सुई लेकर दो एक टांके लगाता है। उसकी मुद्रा से प्रकट होता है कि वह रंज में इतना डूबा है कि हर एक टांका मानो उसमें स्फूर्ति का संचार कर रहा है। फिर यकायक काम छोड़कर वह इस तरह कोठरी में टहलने लगता है जैसे पिंजड़े में जानवर। वह फिर दरवाज़े के पास खड़ा होता है, कुछ सुनता है, फिर हथेली को फैलाकर दरवाज़े पर रखता है, और माथे को दरवाज़े से टेक लेता है। वहां से मुड़कर धीरे-धीरे उंगली को दीवार की ऊंची रंगीन लकीर पर फेरता हुआ वह खिड़की के पास आता है। वहां आकर ठहरता है, और टीन के डिब्बे का एक ढकना उठाकर देखता है मानो अपने ही चेहरे का एक साथी बनाना चाहता हो। बहुत कुछ अंधेरा हो गया है। अचानक उसके हाथ से टीन का ढक्कन झन-झन शब्द के साथ गिर पड़ता है। सन्नाटे में इस आवाज़ से वह कुछ चौंक उठता है। वह उस कमीज़ की ओर एक नज़र से देखता रहता है जो दीवार पर लटकी हुई है, और अंधेरे में कुछ सफ़ेदी दिखाई देती है। ऐसा मालूम होता है मानो कोई चीज या किसी आदमी को देख रहा हो। खट से एक आवाज़ होती है, कमरे के अन्दर की गैस की बत्ती जो शीशे के आइने में है जल-उठती है। कमरे में खूब उजाला होने लगता है, फ ाल्डर हांफता हुआ नज र आता है, अचानक दूर पर कोई शब्द होता है मानो धीरे-धीरे किसी धातु पर कोई चीज ठोकी जा रही हो। फ़ाल्डर पीछे खिसकता है, उससे यह अचानक आने वाला शोर नहीं सुना जाता। परन्तु आवाज़ बढ़ती जाती है मानो कोई बड़ा ठेला कोठरी की ओर आ रहा हो। फ़ाल्डर मानो इस आवाज़ से सम्मोहित होता जाता है। वह यकायक इंच दरवाज़े की ओर खिसकता है, धम-धम की आवाज़ कोठरियों को पार करती हुई और भी पास आती जाती है। फ़ाल्डर हाथ हिलाने लगता है मानो उसकी आत्मा इस शब्द से मिल गई हो। फिर वह आवाज़ मानो कमरे के भीतर घुस आती है। अकस्मात् वह बंधी हुई मुट्ठी उठाता है, जोर-जोर से हाफंता हुआ वह दरवाज़े पर गिर पड़ता है और उसे पीटने लगता है।]

परदा गिरता है।

अंक 4

दृश्य पहला

[दो साल गुज़र गए हैं। कोकसन का वही कमरा। मार्च का महीना है। दस बजने को दो मिनट बाक़ी हैं। दरवाज़े सब अच्छी तरह खुले हैं। स्वीडिल आफिस को ठीक कर रहा है। उसकी अब छोटी-छोटी मूछें निकल आई हैं। वह कोकसन के टेबिल को झाड़-पोंछ रहा है। फिर एक ढक्कनदार सिंगार मेज़ के पास जाता है और ढक्कन को खोलकर शीशे में अपना चेहरा देखता है। ठीक इसी समय रुथ हनीविल बाहर के दफ्तर के भीतर से होकर आती है और दरवाज़े के पास खड़ी हो जाती है। उसके चेहरे पर आनन्द के भाव झलक रहे हैं।]

स्वीडिल : **(उसको देखते ही उसके हाथ से ढक्कन छूटकर धम्म से गिर पड़ता है।)** अच्छा, आप है!

रुथ : हां!

स्वीडिल : अभी तो यहां केवल मैं ही हूं, वे सुबह ही सुबह आकर अपना वक्त खराब नहीं करते। ओफ़! करीब दो साल बाद आप से मुलाकात हुई।

कुछ हिचककर

आप क्या करती थीं?

रुथ : **(जबरदस्ती हंसकर)** जी रही थी।

स्वीडिल : **(दुःखित होकर)** अगर आप उनसे—

कोकसन की कुर्सी की ओर इशारा करके।

मिलना चाहती हैं तो जरा बैठिए। वे आते ही होंगे। उनको कभी देर नहीं होती।

संकोच के साथ

मैं ख्याल करता हूं वे देहात से वापस आए होंगे। उनकी मियाद तो तीन महीने हुए पूरी हो गई, जहां तक मुझे याद है।

रुथ सिर हिलाकर स्वीकार करती है।

मुझे उनके लिए बहुत दुःख है। मेरे ख़याल से मालिक ने उनके साथ अन्याय किया।

रुथ : हां, अन्याय तो किया।

स्वीडिल : उनको चाहिए था कि उन्हें उस बार माफ़ कर देते। और जज को भी चाहिए था कि उन्हें छोड़ देते। वे आदमी का स्वभाव क्या जानें। हम लोग इनसे कहीं अच्छी तरह जानते हैं।

रुथ कनखियों से देखकर मुस्कराती है।

स्वीडिल : ये हमारे कन्धों पर पत्थरों की गाड़ी लाद देते हैं, हमें मटियामेट कर देते हैं, और फिर यदि हम उठ न सकें तो हमीं को बुरा कहते हैं। मैं इन लोगों को खूब जानता हूं। मैंने इस थोड़ी-सी उम्र में ऐसी बातें बहुत देखी हैं।

इस तरह सिर हिलाकर मानो बुद्धि उसी के हिस्से में पड़ी है।

यही देखो न उस दिन मालिक.....

कोकसन बाहर के दफ़्तर से भीतर आता है। पूर्वी हवा ने कुछ ताज़ा कर दिया है। हां, बाल कुछ और सफ़ेद हो गए हैं।

कोकसन : **(कोट और दस्तानों को खोलते हुए)** अच्छा, तुम हो।

स्वीडिल को बाहर जाने का इशारा करके दरवाज़ा बन्द करते हुए।

बिलकुल भूल गया। दो वर्ष बाद तुम्हें देखा, मुझसे मिलने आई हो? अच्छा मैं तुम्हें कुछ समय दे सकता हूं। बैठ जाओ, घर पर सब कुशल तो है?

रुथ : मैं अब वहां नहीं रहती।

कोकसन : **(तिरछी नज़र से उसकी ओर देखकर)** मैं आशा करता हूं घर की अवस्था पहिले से अच्छी होगी।

रुथ : उतने बखेड़े के बाद मैं हनीविल के साथ न रह सकी।

कोकसन : तुम कोई पागलपन कर बैठी? मुझे यह सुनकर दुःख होगा।

रुथ : मैंने बच्चों को अपने पास रक्खा है।

कोकसन : **(उसे चिन्ता होने लगती है कि बातें वैसी आशाजनक नहीं हैं, जैसा उसने ख़याल किया था।)** ख़ैर, मुझे तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। रिहाई के बाद तो तुमसे शायद फ़ाल्डर से मुलाकात नहीं हुई होगी।

रुथ : नहीं, कल अकस्मात् उनसे भेंट हो गई।

कोकसन : अच्छी तरह है न?

रुथ : **(अकस्मात् झल्लाकर)** उन्हें कुछ काम नहीं मिल रहा है। उनकी हालत बुरी हो रही है। हड्डी-हड्डी निकल आई है।

कोकसन : **(सच्ची सहानुभूति से)** सच! मुझे यह सुनकर बहुत रंज हुआ।

अपने को संभालकर।

उसको रिहा करने के बाद क्या उन लोगों ने कोई काम नहीं तलाश कर दिया?

रुथ : वह केवल तीन हफ्ते वहां काम कर पाए थे। पर उसे छोड़ना पड़ा।

कोकसन : मेरी समझ में नहीं आता तुम्हारी क्या मदद करूं। किसी को साफ जवाब देते मुझे बुरा लगता है।

रुथ : मुझसे उसकी यह दशा नहीं देखी जाती।

कोकसन : **(उसकी प्यारी सूरत की ओर देखता हुआ)** मुझे मालूम है उसके रिश्तेदार उसे आश्रय न देंगे। शायद तुम इस बुरे वक्त में उसकी कुछ मदद कर सको।

रुथ : अब नहीं कर सकती। पहिले कर सकती थी। अब नहीं कर सकती।

कोकसन : मेरी समझ में नहीं आता तुम कह क्या रही हो।

रुथ : **(अभिमान से)** मैं उससे फिर मिली थी। अब कोई आशा नहीं।

कोकसन : **(उसकी ओर ग़ौर से देखकर कुछ घबड़ाया हुआ)** मैं बाल-बच्चों वाला आदमी हूं। मैं ऐसी कोई ख़राब बात नहीं सुनना चाहता। मुझे माफ़ करो। अभी मुझे बहुत काम करना है।

रुथ : मैं अपने घर वालों के पास गांव में बहुत दिन पहिले चली गई होती, लेकिन हनीविल से शादी करने के कारण वे मुझे कभी माफ़ न करेंगे। मैं चालाक तो कभी नहीं थी साहब, लेकिन मुझमें ग़रूर अवश्य है। मैं बहुत छोटी थी जब मैंने उससे शादी की थी। मैं समझती थी कि इससे बढ़कर कोई होगा ही नहीं। वह अक्सर हमारे खेतों में आया करता था।

कोकसन : **(दुःख से)** मैंने तो समझा था कि मुझसे मिलने के बाद उसने तुमसे अच्छा व्यवहार किया होगा।

रुथ : वह मुझे और भी सताने लगा। वह मुझे अपने काबू में तो न ला सका लेकिन मेरा स्वास्थ्य ख़राब हो गया। फिर उसने बच्चों को मारना शुरू किया। मैं नहीं बरदाश्त कर सकी। अब अगर वह मर रहा हो, तो मैं उसके पास नहीं जाऊंगी।

कोकसन : **(खड़ा होकर इस तरह कन्नी काटता है, मानो अग्नि-प्रवाह से बच रहा हो)** हमें इतना आपे से बाहर नहीं होना चाहिए—क्यों?

रुथ : **(क्रोध से)** जो आदमी ऐसा कमीना बर्ताव....

सन्नाटा छा जाता है।

कोकसन : **(स्वभाव के विरुद्ध अनुरक्त होकर)** हां, तो फिर तुमने क्या किया?

रुथ : **(सिहरकर)** पहिली बार उसे छोड़कर जो करती थी वही काम फिर शुरू किया। कमीजों की सिलाई सस्ती बेचनी पड़ती थी। यही एक काम मैं कर सकती थी। परन्तु किसी हफ्ते में सात-आठ रुपये से जयादा न कमा सकी। अपना सूत होता था और दिन भर काम करना

पड़ता था। रात को बारह बजे के पहिले कभी नहीं सोती थी। नौ महीने तक मैं तक मैं यह करती रही।

क्रोध से

लेकिन मैं इस तरह काम नहीं कर सकती थी। मर जाना अच्छा है।

कोकसन : चुप रहो, ऐसी बातें मत करो।

रुथ : बच्चों को भी भूखों मरना पड़ता था। इतने आराम से रहने के बाद मैं उनकी तरफ से बेपरवाह हो गई। मैं बहुत थक जाती थी।

चुप हो जाती है।

कोकसन : **(उत्कंठा से)** फिर क्या हुआ?

रुथ : **(हंसकर)** दुकान के मालिक ने मेरे ऊपर दया की, अभी तक उनकी दया बनी हुई है।

कोकसन : ओफ! मैंने ऐसी बात कभी नहीं सुनी।

रुथ : **(उदासीन भाव से)** उनका व्यवहार मेरे साथ अच्छा है। लेकिन अब वह सब खतम हो गया।

उसके होंठ अचानक कांपने लगते हैं। उलटी हथेली से वह होठों को छिपा लेती है।

मैंने कभी नहीं सोचा था कि फिर उनसे कभी मेरी मुलाक़ात होगी। अचानक ही मुझसे कल 'हर्द बाग' में मुलाक़ात हो गई। हम दोनों वहां बहुत देर तक बैठे रहे। उसने अपनी सब राम कहानी मुझे सुना दी। ओफ़! कोकसन साहब, आप उसे फिर अपने यहां ले लीजिए।

कोकसन : **(व्यग्र होकर)** तो तुम दोनों ने अपनी रोजी खो दी। कितनी भीषण समस्या है।

रुथ : अगर वह यहां आ जाते तो यहां तो उनके विषय में कोई पूछताछ न होती।

कोकसन : हम कोई काम नहीं कर सकते जिससे कार्यालय की बदनामी हो।

रुथ : मेरे लिए और कहीं ठिकाना नहीं है।

कोकसन : मैं मालिकों से कहूंगा, लेकिन मैं नहीं ख़याल करता कि वे उसे ले लेंगे। बात ऐसी ही आ पड़ी है।

रुथ : वह मेरे साथ आए हैं, उधर सड़क पर बैठे हैं।

खिड़की की ओर दिखाती है।

कोकसन : **(ध्यान दिखाकर)** उसे नहीं आना चाहिए जब तक कि उसे बुलाया न जाय।

उसके मुख की ओर देखकर नम्र स्वर से।

हमारे यहां एक जगह खाली है, लेकिन मैं वादा नहीं कर सकता।

रुथ : आप उसे प्राण दान देंगे।

कोकसन : मुझसे जहां तक होगा मैं कोशिश करूंगा लेकिन निश्चय नहीं कह

सकता। अच्छा, उससे कह दो वह यहां न आए जब तक मैं अवस्था को विचार न लूं। अपना पता बता जाओ।

उसके पते को दुहराकर।

तिरासी मलिंगर स्ट्रीट।

ब्लाटिंग कागज़ पर लिख लेता है।

अच्छा, सलाम।

रुथ : धन्यवाद! **(वह दरवाज़े के पास जाकर कुछ कहने के लिए रुकती है। परन्तु फिर चली जाती है।)**

कोकसन : **(सिर और कपाल का पसीना एक बड़े सफ़ेद रूमाल से पोंछकर)** ओफ़, क्या बुरी गत है।

कागज़ों की ओर देखकर घंटी बजाता है। स्वीडिल आता है।

कोकसन : क्या वह जवान रिचार्ड आज क्लर्क की जगह के लिए आएगा?

स्वीड़िजल : जी हां!

कोकसन : अच्छा उसे टाल देना। मैं अभी उससे मिलना नहीं चाहता।

स्वीडिल : उससे क्या कहूं, हुजूर?

कोकसन : **(झिझककर)** कोई बहाना सोच लो। बुद्धि से काम लो। हां, उसे एकदम भगा मत देना।

स्वीडिल : क्या उससे कह दूं कि आपकी तबियत खराब है?

कोकसन : नहीं, झूठ मत बोलो। कह देना कि मैं आज आया नहीं हूं।

स्वीडिल : अच्छा, साहब, तो मैं उसे अभी घुमाता रहूं।

कोकसन : हां! और देखो तुम फ़ाल्डर को तो भूले नहीं हो, न? शायद वह मुझसे मिलने आवे। देखो उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना जैसा उसकी दशा में तुम खुद चाहते।

स्वीडिल : यह तो मेरा धर्म ही है।

कोकसन : ठीक, गिरे हुए को ठोकर मारना चाहिए। फ़ायदा ही क्या? उसे हाथ का सहारा दे दो। यह एक ऐसा सिद्धान्त है जिसे जीवन में कभी न भूलना चाहिए। यही पक्की नीति है।

स्वीडिल : आपको आशा है कि मालिक लोग उन्हें ले लेंगे।

कोकसन : यह अभी कुछ कह नहीं सकता।

बाहर के दफ्तर में किसी के पैरों की आहट पाकर।

कौन है?

स्वीडिल : **(दरवाज़े के पास जाकर देखता हुआ)** फ़ाल्डर आए हैं।

कोकसन : **(चिल्लाकर)** ओफ़! यह उसकी बड़ी बेवकूफी है। उसे फिर आने को कहो। मैं नहीं चाहता.....

फ़ाल्डर के भीतर आते ही वह चुप हो जाता है। उसका

चेहरा पीला और मुरझाया हुआ है। उम्र भी ज़्यादा हो गई है। आंखें अस्थिर हो रही हैं। कपड़े पुराने और फटे हैं। स्वीडिल खुशी के साथ अभिवादन करके चला जाता है।

कोकसन : तुम्हें देखकर बहुत खुश हुआ, मगर तुम कुछ पहले आ गए।

लल्लो-चप्पो करते हुए।

आओ, हाथ मिलाओ। वह तो खूब दौड़-धूप कर रही है।

पसीना पोंछकर।

उसका क़सूर नहीं है, बिचारी बहुत चिन्तित है।

फ़ाल्डर संकोच के साथ कोकसन से हाथ मिलाता है और मालिकों के कमरे की ओर देखता है।

कोकसन : नहीं, अभी वे आए नहीं हैं, बैठ जाओ।

फ़ाल्डर कोकसन की मेज़ के किनारे एक कुर्सी पर बैठता है और अपनी टोपी मेज़ पर रखता है।

अच्छा, अब अपना कुछ हाल बतलाओ।

चश्मे के ऊपर से उसको देखते हुए।

तबीयत कैसी है?

फ़ाल्डर : जीता हूं।

कोकसन : **(किसी और ध्यान में पड़े हुए)** यह सुनकर मुझे खुशी है। हां, उसके बारे में देखो, मैं कोई ऐसी बात नहीं करना चाहता। जो देखने में भद्दी हो। यह मेरी आदत है। मैं सीधा आदमी हूं। मैं सब बातें साफ-साफ करना ही पसंद करता हूं। मैंने, लेकिन तुम्हारे मित्र से वादा किया है कि मालिकों से तुम्हारे बारे में कहूंगा। तुम जानते हो मैं अपनी ज़बान का पक्का हूं।

फ़ाल्डर : बस मैं एक मौक़ा और चाहता हूं, मिस्टर कोकसन। मैंने जो काम किया था उसका हज़ार गुना दंड भोग चुका। हां, साहब, हज़ार गुना ज्यादा। मेरे दिल से पूछिए। लोग कहते हैं मेरा वज़न बढ़ गया है। लेकिन इस—

सिर पर हाथ रखकर।

चीज़ को उन्होंने नहीं तौला। कल तक भी मैं सोचता था यह शायद यहां....

दिल पर हाथ रखकर।

अब कुछ नहीं है।

कोकसन : **(चिन्तित भाव से)** तुम्हें दिल की बीमारी तो नहीं हुई है?

फ़ाल्डर : उनके ख़याल में मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

कोकसन : लेकिन उन्होंने तुम्हारे लिए कोई जगह तो तलाश कर दी थी न?

फ़ाल्डर : कर दी थी, बहुत अच्छे लोग थे। सब जानते हुए भी मुझसे खुश थे।

मैंने सोचा था मजे से दिन कट जायंगे। लेकिन एक दिन और क्लर्कों के कान में भनक पड़ गई...वे मुझसे....फिर मैं वहां न रह सका, मिस्टर कोकसन! बहुत मुश्किल था।

कोकसन : दिल को संभालो; भाई, घबड़ाओ मत।

फ़ाल्डर : उसके बाद एक जगह और मुझे मिल गई थी, पर चली नहीं।

कोकसन : क्यों?

फ़ाल्डर : आपसे झूठ बोलकर कुछ फ़ायदा नहीं है, मिस्टर कोकसन! बात यह है मुझे ऐसा मालूम होता है कि मुझे किसी चीज़ ने चारों ओर से जकड़ रक्खा है जिसमें फंसा पड़ा हुआ हूं। ठीक जैसे मैं किसी जाल में फांस लिया गया हूं। ताड़ से गिरता हूं तो बबूल पर अटकता हूं। बिना प्रशंसा-पत्र के कोई काम नहीं देता था। इस विषय में मुझे जो कुछ न करना चाहिए था वह मैंने किया। और उपाय ही क्या था? परन्तु मुझे डर लगा कि कहीं पकड़ा न जाऊं। बस, इसीलिए छोड़ दिया। अब भी मुझे डर लगा रहता है।

सिर नीचा कर टेबिल के सहारे निराश होकर झुक जाता है।

कोकसन : तुम्हारी हालत पर मुझे बहुत रंज है। विश्वास मानो। क्या तुम्हारी बहन तुम्हारे लिए कुछ न करेगी?

फ़ाल्डर : एक को तपेदिक की बीमारी है और दूसरी.....

कोकसन : हां, मुझे याद है, तुमने मुझसे कहा था कि उनके पति तुमसे बहुत खुश नहीं हैं।

फ़ाल्डर : मैं जब वहां गया तब वे खाना खा रहे थे। मेरी बहन मुझे चूम लेना चाहती थी। मगर उसने उसकी ओर घूरकर देखा....फिर मुझसे कहा—'तुम क्यों आये हो?' मैंने अपने सब अभिमानों को दबाकर कहा—'क्या तुम मुझसे हाथ नहीं मिलाओगे, जिम?....' उसने कहा—'देखो जी, जो कुछ हुआ वह हुआ। मैं तुमसे निबटारा कर लेना चाहता हूं। मैं जानता था कि तुम आओगे, और मैंने पहिले ही निश्चय कर लिया है। मैं तुम्हें पच्चीस गिन्नी देता हूं। तुम केनाडा चले जाओ।' मैंने कहा, ठीक है, सब गला छुड़ा रहे हो। धन्यवाद! मुझे जरूरत नहीं है, पच्चीस गिन्नी अपने पास रक्खो। जिस दशा में मैं रह चुका हूं, उस दशा में रहने के बाद फिर कहां की दोस्ती?

कोकसन : मैं समझ गया। अच्छा, यदि मैं तुम्हें पच्चीस गिन्नी दूं तो तुम लोगे, भाई?

फ़ाल्डर को अपनी ओर मुस्कराते देखकर झेंपता है।

बुरा मानने की बात नहीं, मेरा इरादा बुरा न था।

फ़ाल्डर : तो यहां मुझे नौकरी न मिलेगी?

कोकसन : नहीं, नहीं, तुम मेरा मतलब नहीं समझ रहे हो।

फाल्डर : मैंने इस हफ्ते में रात बग़ीचे में सोकर काटी है। कवियों की उषा का वहां कहीं पता भी नहीं। लेकिन कल उससे मिलकर मुझे मालूम होता है कि मैं आज कुछ और ही हो गया हूं। मेरे जीवन में जो सुख या शान्ति है यह केवल उसके प्रेम में है। वह मेरे लिये पवित्र है। फिर भी उसने मेरा सर्वनाश कर दिया। कितनी अजीब बात है।

कोकसन : हम सब को ही तुम्हारे लिये दुःख है।

फाल्डर : हां, यहां तो मैं भी देख रहा हूं। अत्यन्त दुःख है।

श्लेष के साथ।

लेकिन चोर, डाकुओं के साथ मिलना आपकी शान के खिलाफ़ है।

कोकसन : छीः फ़ाल्डर, क्यों अपने को गाली देते हो? इससे कोई फ़ायदा नहीं है। इस पर परदा डाल दो।

फाल्डर : परदा डाल देना मामूली बात है, अगर आपके पास काफी धन हो। मेरी तरह टूट जाइए तो मालूम हो। मसल है—'जो जैसा करता है फल पाता है।' मुझे तो कुछ ज्यादा मिल गया।

कोकसन : **(चश्मे के ऊपर से उसकी ओर तिरछी नज़र से देखकर)** तुम साम्यवादी तो नहीं बन गये हो?

फ़ाल्डर अकस्मात् चुप हो जाता है मानो पिछली बातें सोच रहा है। कुछ अजीब तरह से हंसता है।

कोकसन : विश्वास मानो, सब लोग दिल से तुम्हारी भलाई चाहते हैं। तुम्हारा नुक़सान करना कोई नहीं चाहता।

फाल्डर : आप बहुत ठीक कहते हैं, कोकसन। हमारा दुश्मन तो कोई नहीं है। फिर भी जान के गाहक सब हैं।

चारों ओर देखने लगता है, मानो कोई उसे फंसा रहा हो।

यह मुझे कुचले डालता है।

मानो अपने को भूलकर

जान ही लेकर छोड़ोगे।

कोकसन : **(बहुत बेचैन होकर)** यह सब कुछ नहीं है। सब अपने आप ठीक हो जायगा। मैं बराबर तुम्हारे लिए प्रार्थना करता था। तुम निश्चिन्त रहो। मैं होशियारी से काम लूंगा और जब वे ज़रा मौज में रहेंगे, तब यह जिक्र छेडूंगा।

ठीक इसी समय जेम्स और वाल्टर हो आते हैं।

कोकसन : **(कुछ घबराकर, परन्तु साथ ही उन्हें इतमीनान दिलाने के लिए)** आज तो आप लोग बहुत जल्द आ गए। मैं ज़रा उनसे बातें कर रहा था—आप इन्हें भूले न होंगे?

जेम्स : **(तीव्र गम्भीर भाव से देखकर)** बिलकुल नहीं। कैसे हो फ़ाल्डर?

वाल्टर : **(डरता हुआ अपना हाथ फैलाकर)** तुम्हें देखकर बहुत खुश हुआ,

फ़ाल्डर।

फ़ाल्डर : **(अपने को संभालकर वाल्टर से हाथ मिलाते हुए)** आपको धन्यवाद देता हूं।

कोकसन : आपसे एक बात करनी है, मिस्टर जेम्स।

क्लर्क के कमरे की ओर फ़ाल्डर को इशारा करके।

तुम ज रा वहां जाकर बैठ जाओ। मेरा जूनियर आज नहीं आएगा। उसकी स्त्री के बच्चा हुआ है।

फ ाल्डर हिचकता हुआ क्लर्क के कमरे में जाता है।

कोकसन : **(गोपनीय भाव से)** मैं आपसे इसी के बारे में कहना चाहता हूं। अपनी भूल पर बहुत लज्जित है। लेकिन लोग उस पर शुभा करते हैं। और उसका चेहरा भी आज उतरा हुआ है। भोजन के लाले पड़े हैं। भोजन के बिना कोई कैसे रह सकता है?

जेम्स : अच्छा भोजन भी नहीं मिलता?

कोकसन : हां, मैं आपसे यही पूछना चाहता था, अब तो उसको काफी सबक़ मिल गया है और हमें एक क्लर्क की ज़रूरत भी है। फ़ाल्डर हम लोगों के लिये कोई नया आदमी नहीं है। एक युवक ने दरख़ास्त तो भेजी है, लेकिन मैं उसे टाल रहा हूं।

जेम्स : क्या जेल के असामी को आफिस में रक्खोगे, कोकसन? मुझे तो अच्छा नहीं लगता।

वाल्टर : वकील की वह बात मैं कभी न भूलूंगा। 'न्याय की चक्की के चलते हुए पाट।'

जेम्स : इस मामले में मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिसे कोई बुरा कह सके। जेल से निकलकर अब तक क्या करता रहा?

कोकसन : एकाध जगह नौकरी मिली थी, मगर वहां टिक नहीं सका। वह बहुत शक्की है—स्वाभाविक बात है—उसे मालूम होता है कि सारी दुनिया उसके पीछे पड़ी है।

जेम्स : यह और ख़राब बात है, मैं उसे पसंद नहीं करता। कभी नहीं किया। 'दुर्बल चरित्र' तो मानो उसके चेहरे पर लिखा हुआ है।

वाल्टर : हमें एक बार उसे सहारा तो देना ही चाहिए।

जेम्स : उसने अपने ही हाथों तो अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी।

वाल्टर : इस जमाने में पूरी जिम्मेदारी का सिद्धान्त मानने योग्य नहीं।

जेम्स : **(गम्भीरता से)** फिर भी तुम्हारा कल्याण इसी में है कि इसे मानते रहो।

वाल्टर : हां, अपने लिए, दूसरों के लिए नहीं।

जेम्स : ख़ैर, मैं सख्ती नहीं करना चाहता।

कोकसन : मुझे खुशी है कि आप ऐसा कहते हैं।

हाथ फैलाकर

वह अपने चारों ओर कुछ देखता रहता है। यह दुर्बलता का चिह्न है।

जेम्स : उस औरत का क्या हुआ जिससे उसका कुछ सम्बन्ध था? ठीक वैसी ही एक औरत को बाहर अभी देखा है।

कोकसन : वह-वह—आपसे कह देना ही ठीक है, वह उससे मिल चुका है।

जेम्स : क्या वह अपने पति के साथ रहती है?

कोकसन : नहीं।

जेम्स : शायद फ़ाल्डर उसके साथ रहता होगा।

कोकसन : **(बनती हुई बात को बनाए रखने की प्रबल चेष्टा करके)** यह मुझे नहीं मालूम। मुझसे इससे क्या मतलब?

जेम्स : लेकिन अगर हम उसे नौकर रक्खेंगे, तो हमें इससे जरूर मतलब है।

कोकसन : **(अनिच्छा से)** शायद आपसे कहना ही ठीक है। वह आज यहां आई थी।

जेम्स : मैंने भी यही सोचा था।

वाल्टर से

नहीं, बेटा, हम ऐसा नहीं कर सकते। सरासर बदनामी है।

कोकसन : दोनों बातों के मिल जाने से मामला बेढब हो गया है। मैं समझता हूं।

वाल्टर : मैं नहीं समझता कि हमें उसकी निजी बातों से क्या सरोकार है।

जेम्स : नहीं-नहीं, यहां आने के पहिले, उसे उस औरत को छोड़ना पड़ेगा।

वाल्टर : ग़रीब बिचारा!

कोकसन : आप उससे मिलेंगे?

जेम्स को सिर हिलाते देखकर।

शायद मैं उसे समझा सकूं।

जेम्स : **(गम्भीर भाव से)** मैं समझा लूंगा, तुम्हें कुछ कहने की जरूरत नहीं।

वाल्टर : **(कोकसन जब फ़ाल्डर को बुलाता है उस समय धीमे स्वर में जेम्स से)** उसकी सारी ज़िन्दगी अब आपके हाथ में है, पिता जी।

फ़ाल्डर आता है, उसने अपने को संभाल लिया है, बेधड़क आकर खड़ा होता है।

जेम्स : देखो फ़ाल्डर, वाल्टर और मैं चाहता हूं कि तुम्हें फिर एक बार मौका दूं। लेकिन मैं दो बातें तुमसे कह देना चाहता हूं। पहिली बात यह है कि यहां सताए हुए की भांति आना ठीक नहीं है। अगर तुम्हारा यह ख़याल है कि तुम्हारे साथ अन्याय किया गया है, तो उसे भूल जाना पड़ेगा। आग में कूदकर यह नहीं हो सकता कि आंच न लगे। समाज यदि अपनी रक्षा न करेगा, तो उसकी कोई परवा न करेगा। समझते हो?

फ़ाल्डर : जी हां, लेकिन क्या मैं भी कुछ कह सकता हूं।

जेम्स : कहो।

फ़ाल्डर : मैंने जेल में इन सब बातों पर बहुत विचार किया है।

कोकसन : **(उत्साह देते हुए)** हां, अवश्य किया होगा।

फ़ाल्डर : वहां सब तरह के आदमी थे। मुझे मालूम हुआ, यदि पहिली बार मेरे साथ नर्मी की गई होती और जेल में रखने के बदले किसी ऐसे आदमी के मातहत रक्खा जाता जो हमारी कुछ देख-भाल करता, तो वहां जितने क़ैदी हैं उनके एक चौथाई भी न रहते।

जेम्स : **(सिर हिलाकर)** मुझे इसमें बहुत सन्देह है, फ़ाल्डर।

फ़ाल्डर : **(कुछ ईर्ष्या के भाव से)** ठीक है साहब, लेकिन मेरा यह अनुभव है।

जेम्स : भाई, तुम्हें यह न भूलना चाहिए कि तुमने शुरू किया था।

फ़ाल्डर : लेकिन मेरी मंशा बुराई की नहीं थी।

जेम्स : शायद न हो, लेकिन तुमने की ज़रूर।

फ़ाल्डर : **(बीते हुए कष्टों की बात सोचकर)** इसने मुझे कुचल डाला, साहब!

सीधा खड़ा होकर।

मैं कुछ और था और अब कुछ और हूं।

जेम्स : इससे तो हमारे मन में शंका होती है, फ़ाल्डर।

कोकसन : आप समझे नहीं, मिस्टर जेम्स, उसका मतलब यह नहीं है।

फ़ाल्डर : **(तीव्र शोक से उद्धत होकर)** नहीं, मेरा मतलब यही है कि मिस्टर कोकसन....

जेम्स : ख़ैर, उन सब बातों को छोड़ो, फ़ाल्डर, अब आगे की ओर देखो।

फ़ाल्डर : **(तत्परता के साथ)** हां, साहब, लेकिन आप समझ नहीं सकते कि जेल क्या चीज़ है।

अपनी छाती को पकड़कर।

बस, यहां उसकी चोट पड़ती है।

कोकसन : **(जेम्स के कान में)** मैंने आपसे कहा था कि उसे अच्छे भोजन की जरूरत है।

वाल्टर : मत घबड़ाओ मित्र, यह सब शान्त हो जायगा। समय तुम पर दया करेगा।

फ़ाल्डर : **(कुछ मुंह सिकोड़कर)** मुझे भी ऐसी आशा है।

जेम्स : **(बड़ी नम्रता से)** ख़ैर, देखो भाई, तुम्हें जो कुछ करना है, वह यह कि बीती हुई बातों पर पर्दा डालो और अपनी अच्छी साख जमाओ। अब रही दूसरी बात, वह यह है कि जिस औरत के साथ तुम्हारा सम्बन्ध था, तुम्हें वचन देना पड़ेगा कि आगे उसके साथ तुम्हारा कोई सरोकार नहीं रहेगा। अगर तुम इस तरह का सम्बन्ध रखकर अपना

जीवन-सुधार शुरू करोगे, तो तुम कभी अपनी नीयत ठीक नहीं रख सकते।

फाल्डर : **(हर एक के मुंह की ओर दुःखी आंखों से देखकर)** लेकिन साहब ....इसी भरोसे पर तो मैंने यह सब दुःख झेले हैं। और भी....कल रात को ही मुझसे उसकी मुलाक़ात हुई है।

यह और इसके पीछे की बातें सुनकर कोकसन की परेशानी बढ़ती जाती है।

जेम्स : यह बहुत दुःख की बात है, फ़ाल्डर। तुम समझ सकते हो मेरे जैसे कार्यालय के लिए यह असंभव है कि वह अपनी आंखें सब तरफ से बन्द कर ले। अपनी नीयत ठीक करने का यह प्रमाण दे दो, बस मैं तुम्हें अपने यहां रख लूंगा, नहीं तो मैं लाचार हूं।

फ़ाल्डर : **(जेम्स की ओर स्थिर दृष्टि से देखते हुए अचानक कुछ दृढ़ होकर)** नहीं, मैं उसे छोड़ नहीं सकता। यह असम्भव है। मेरे लिए उसके सिवा और कोई नहीं है, साहब। और उसके लिए भी मैं ही सब कुछ हूं।

जेम्स : मुझे इसके लिए दुःख है, फ़ाल्डर। लेकिन मैं अपना विचार बदल नहीं सकता। तुम दोनों के लिए आगे चलकर इसका नतीजा अच्छा होगा। इस सम्बन्ध में भलाई कभी नहीं हो सकती। यही तुम्हारे सब दुःखों का कारण था।

फ़ाल्डर : लेकिन, साहब, इसका तो यह मतलब है कि मैंने वे सारे दुःख व्यर्थ ही झेले, किसी काम का नहीं रहा। मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल चौपट हो गया। यह सब मैंने उसके लिए ही किया था।

जेम्स : अच्छा सुनो, अगर दरअसल वह अच्छी औरत है, तो खुद ही समझ जायगी। वह कभी तुम्हारी दुर्गति न कराएगी। हां, अगर उसके साथ तुम्हारे विवाह होने की आशा होती, तो दूसरी बात थी।

फ़ाल्डर : यह मेरा कसूर नहीं है, साहब, कि वह अपने पति से छुटकारा नहीं पा सकी। अगर उसका वश होता, तो वह ज़रूर ऐसा करती। यही सारी विपत्ति का मूल कारण है। **(अकस्मात् वाल्टर की ओर देखकर)** अगर कोई इसकी मदद कर सकता। अब केवल धन की ज रूरत है।

कोकसन : **(वाल्टर हिचककर कुछ कहना ही चाहता था कि बीच में बात काटकर)** मेरी समझ में अभी उसकी चर्चा करने की ज़रूरत नहीं। यह बहुत दूर की बात है।

फ़ाल्डर : **(वाल्टर की ओर कातर भाव से)** उसने तब से उस पर और भी अत्याचार किया होगा। वह साबित कर सकती है, कि उसने उसे छोड़ने पर मजबूर किया।

वाल्टर : मैं तुम्हारी सब तरह से मदद करने को तैयार हूं, फ़ाल्डर, अगर अपने बस की बात हो।

फ़ाल्डर : आपकी मुझ पर बड़ी कृपा है।

वह खिड़की के पास जाकर नीचे सड़क की ओर देखता है।

कोकसन : **(जल्दी से)** मेरी बातों पर न जाइए मि॰ वाल्टर। उसके विशेष कारण हैं।

फ़ाल्डर : **(खिड़की के पास से)** वह नीचे खड़ी है, बुलाऊं? यहीं से बुला सकता हूं।

वाल्टर हिचकता है, और कोकसन तथा जेम्स की ओर देखता है।

जेम्स : **(सिर हिलाकर)** हां, बुलाओ।

फ़ाल्डर खिड़की से इशारा करता है।

कोकसन : **(घबड़ाकर जेम्स और वाल्टर से धीमी आवाज़ में)** नहीं, मिस्टर जेम्स, जब यह जेल में था तब उसे जिस तरह रहना चाहिए था, वैसे वह न रह सकी। उसने मौका खो दिया। हम क़ानून को धोखा देने की सलाह नहीं कर सकते।

फ़ाल्डर खिड़की के पास से चला आता है। तीनों आदमी चुपचाप गम्भीर भाव से उसकी तरफ़ देखते हैं।

फ़ाल्डर : **(उनके भावों में परिवर्तन देखकर सशंक नेत्रों से हर एक की तरफ़ देखते हुए)** हमारा और उसका सम्बन्ध अभी तक पवित्र है, साहब! जो कुछ मैंने अदालत में कहा था वह बिलकुल सच है। कल रात को हम थोड़ी देर तक बग़ीचे में केवल बैठे ही थे।

स्वीडिल बाहर के कमरे से आता है।

कोकसन : क्या है?

स्वीडिल : श्रीमती हनीविल।

सब चुप रहते हैं।

जेम्स : बुलाओ।

रुथ धीरे-धीरे भीतर आती है, और फ़ाल्डर के पास एक किनारे स्थिर भाव से खड़ी हो जाती है। बाकी तीनों आदमी दूसरी ओर खड़े हैं। कोई बोलता नहीं। कोकसन अपनी मेज़ के पास जाकर काग़ज़ों को देखने के लिए झुक जाता है मानो अवस्था ऐसी ही आ गई है कि वह अपनी पुरानी जगह पर आ बैठने के लिए मजबूर है।

जेम्स : **(तेज आवाज़ से)** दरवाज़ा बन्द कर दो।

स्वीडिल दरवाज़ा बन्द करता है।

हमने तुम्हें इसलिए बुलाया है कि इस मामले में कुछ बातें तय करनी

ज़रूरी हैं। मुझे मालूम हुआ कि तुम फ़ाल्डर से अभी हाल में ही फिर मिली हो।

रुथ : जी हां, कल ही।

जेम्स : उसने अपने बारे में सब बातें हमसे कह दी हैं, और हमें उनके लिए बहुत रंज है। मैंने उसे अपने यहां काम देने का वादा किया है इस शर्त पर कि वह फिर से नई ज़िन्दगी शुरू करे। **(रुथ की ओर गौर से देखकर)** इसमें केवल ज़रा हिम्मत की ज़रूरत है।

रुथ अपने हाथों को मलती हुई फ़ाल्डर की ओर देखती रहती है। मानो उसे विपत्ति का आभास हो गया है।

फ़ाल्डर : वाल्टर साहब ने हमारे ऊपर दया करके कहा है कि वह तुम्हारा विवाह-विच्छेद करा देंगे।

रुथ चौंककर जेम्स और वाल्टर की ओर देखती है।

जेम्स : वह तो बहुत कठिन है, फ़ाल्डर।

फ़ाल्डर : लेकिन साहब.....।

जेम्स : **(गम्भीर होकर)** देखो श्रीमती हनीविल, तुम्हें इनसे प्रेम है?

रुथ : हां, साहब, मैं उनसे प्रेम करती हूं।

फ़ाल्डर की ओर दुखित नेत्रों से देखती है।

जेम्स : तब तुम उसके रास्ते का कांटा नहीं बनोगी—क्यों?

रुथ : **(कंपित कंठ से)** मैं उसकी सेवा कर सकती हूं।

जेम्स : सबसे अच्छी सेवा जो तुम कर सकती हो, वह यह है कि तुम उसे छोड़ दो।

फ़ाल्डर : नहीं, क़ोई मुझे तुमसे अलग नहीं कर सकता, रुथ। तुम विवाह-विच्छेद करा सकती हो। हममें तुममें और कोई बात तो नहीं हुई है। बोलो।

रुथ : **(उसकी ओर न देखकर उदासी के साथ सिर हिलाते हुए)** नहीं।

फ़ाल्डर : हुजूर, जब तक मामला साफ़ न हो जायगा हम एक दूसरे से अलग रहेंगे। हम यह वचन देते हैं। केवल आप हमारी मदद करें।.

जेम्स : **(रुथ से)** तुम सब बातें समझ रही हो न? मेरा मतलब भी तुम समझती हो।

रुथ : **(बहुत धीरे से)** हां।

कोकसन : **(अपने ही आप)** औरत समझदार है।

जेम्स : यह अवस्था भयंकर है।

रुथ : क्या मुझे उसको छोड़ना ही पड़ेगा, साहब?

जेम्स : **(अनिच्छा से उसकी ओर देखकर)** मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूं। देवी उसका भविष्य तुम्हारे ही हाथ में है।

रुथ : **(व्याकुल होकर)** मैं उसकी भलाई के लिए सब कर सकती हूं।

जेम्स : **(कुछ खुशी से)** यही तो चाहिए। यही तो चाहिए।

फ़ाल्डर : मेरी समझ में कुछ नहीं आता। क्या सचमुच तुम मुझे छोड़ दोगी? कोई और बात है।

जेम्स की ओर एक क़दम बढ़ाकर।

मैं ईश्वर की क़सम खाकर कहता हूं कि अभी हम दोनों का सम्बन्ध बिलकुल पवित्र है।

जेम्स : मैं तुम पर विश्वास करता हूं, फ़ाल्डर। तुम भी उसकी तरह हिम्मत बांधो।

फ़ाल्डर : अभी-अभी आप कह रहे थे कि तुम्हारी मदद करेंगे। **(रुथ की ओर ताकता है जो मूर्ति की भांति खड़ी है। ज्यों-ज्यों उसे समस्या का ज्ञान होता है उसके मुंह और हाथ कांपने लगते हैं।**
यह क्या बात है? आपने तो....

वाल्टर : पिता जी! **रोपर सिर हिलाता है।**

जेम्स : **(जल्दी से)** मत घबड़ाओ, मत घबड़ाओ, फ़ाल्डर। मैं तुम्हें काम देता हूं। केवल मुझे जानने मत देना कि तुम क्या कर रहे हो—बस।

फ़ाल्डर : **(मानो सुना ही नहीं)** रुथ।

रुथ उसकी ओर देखती है, फ़ाल्डर अपने हाथों से मुंह ढांप लेता है। सन्नाटा छा जाता है।

कोकसन : **(अचानक)** बाहर कमरे में कोई आया है।

रुथ से

तुम ज़रा भीतर जाओ, दो चार मिनट अकेले रहने से तुम्हें आराम मिलेगा।

क्लर्क के कमरे की ओर इशारा करता है और बाहर की ओर जाने लगता है। फ़ाल्डर चुप खड़ा रहता है। रुथ डरते-डरते अपना हाथ बढ़ाती है। उसके स्पर्श से फ़ाल्डर सिहरकर पीछे की ओर हटता है। वह दुःखित होकर क्लर्क के कमरे की ओर जाती है। अचानक चौंककर वह भी पीछे हो लेता है और दरवाजे के भीतर जाकर उसका कंधा पकड़ता है। कोकसन दरवाजा बन्द करता है।

जेम्स : **(बाहर के कमरे की ओर उंगली दिखाकर)** कोई भी हो अभी भगा दो।

स्वीडिल : **(दरवाज़ा खोलकर सहमी हुई आवाज़ से)** सार्जेन्ट विस्टर, खुफिया पुलिस।

डिटेक्टिव कमरे में आकर दरवाज़ा बन्द कर देता है।

विस्टर : आपको तकलीफ़ दी, माफ़ कीजिए। ढाई साल पहिले आपके यहां एक क्लर्क था जिसको मैंने इसी कमरे में गिरफ़्तार किया था।

जेम्स : हां, तो क्या हुआ?

विस्टर : मैंने सोचा कि शायद आपको इसका पता मालूम हो।

संकोचवश कोई जवाब नहीं देता है।

कोकसन : **(हंसकर बात बनाते हुए)** यह बतलाना हमारा काम नहीं कि वह कहां है—बतलाइए!

जेम्स : आपका उससे क्या काम है?

विस्टर : उसने इधर हाज़िरी नहीं बोली है।

वाल्टर : क्या अभी तक पुलिस से उसका पिंड नहीं छूटा है?

विस्टर : हां, हमें उसका पता मालूम होना ज़रूरी है। ख़ैर, यह कोई ऐसी बात नहीं थी। लेकिन हमें मालूम हुआ है कि झूठे प्रशंसापत्र दिखाकर उसने एक नौकरी कर ली थी। दोनों बातें साथ-साथ आ पड़ीं। अब हम उसे छोड़ नहीं सकते।

फिर सब चुप हो जाते हैं। वाल्टर और कोकसन कनखियों से जेम्स की ओर देखते हैं जो खड़ा डिटेक्टिव की ओर स्थिर दृष्टि से देखता रहता है।

कोकसन : **(कुछ तेज़ होकर)** अभी हम बहुत व्यस्त हैं और किसी वक्त आइए तब शायद हम बतला सकें।

जेम्स : **(दृढ़ता से)** मैं नीति का सेवक हूं। लेकिन किसी की मुख़बिरी करना मुझे पसन्द नहीं। मुझसे ऐसा काम नहीं हो सकता। अगर तुम्हें उसे गिरफ़्तार करना है तो बिना हमारी मदद के कर सकते हो।

बातें करते-करते उसकी आंख फ़ाल्डर की टोपी पर पड़ती है जो टेबिल पर पड़ी हुई थी। वह मुंह सिकोड़ता है।

विस्टर : **(उसके भाव के परिवर्तन को देखकर शान्त स्वर से)** बहुत अच्छा, साहब। लेकिन मैं आपको होशियार कर देता हूं कि उसको आश्रय देना....

जेम्स : मैं किसी को आश्रय नहीं देता, लेकिन आप आगे कभी आकर मुझसे ऐसे प्रश्न न कीजिएगा जिनका जवाब देने के लिए हम मजबूर नहीं हैं।

विस्टर : **(रूखी आवाज़ से)** ख़ैर, साहब, अब आगे मैं आपको तकलीफ़ नहीं दूंगा।

कोकसन : मुझे दरअसल अफ़सोस है कि मैं आपको कोई ख़बर नहीं दे सकता। ख़ैर, आप तो समझते ही हैं। अच्छा, सलाम!

विस्टर जाने के लिए मुड़ता है, लेकिन बाहर की ओर न जाकर क्लर्क के कमरे की ओर बढ़ता है।

कोकसन : वह नहीं—नहीं, दूसरा दरवाज़ा।

विस्टर क्लर्क के कमरे का दरवाज़ा खोलता है, रुथ की

आवाज़ सुनाई देती है। वह कह रही है, 'मान जाओ।' फ़ाल्डर कहता है, 'नहीं, मैं नहीं मान सकता।' थोड़ी देर सन्नाटा रहता है। अचानक रुथ डरकर चिल्ला उठती है 'यह कौन है?' विस्टर भीतर घुस जाता है। तीनों आदमी दरवाज़े की ओर हक्के-बक्के होकर देखते हैं।

विस्टर : (भीतर से) तुम हट जाओ।

वह जल्दी से फ़ाल्डर का हाथ पकड़कर बाहर आता है। फ ाल्डर का चेहरा बिल्कुल सफ़ेद हो गया है, वह तीनों आदमियों की ओर देखता है।

वाल्टर : ईश्वर के लिए उसे इस बार छोड़ दो।

विस्टर : मैं अपने ऊपर यह जिम्मेदारी नहीं ले सकता, साहब।

फ़ाल्डर : (एक विचित्र निराशपूर्ण हंसी के साथ) अच्छी बात है!

रुथ की ओर एक दृष्टि डालकर वह सिर उठाता है, और बाहर के आफ़िस से निकल जाता है। विस्टर उसके साथ प्रायः घिसटता हुआ जाता है।

वाल्टर : (व्यथित होकर) बस, अब कहीं का नहीं रहा। बराबर यही बला सिर पर सवार रहेगी।

स्वीडिल बाहर के कमरे से ताकता हुआ नज़र आता है। सीढ़ी से नीचे उतरने की आवाज़ आती है। अचानक द्वार पर विस्टर की धीमी आवाज़ 'या खुदा!' सुनाई देती है।

जेम्स : यह क्या हुआ?

स्वीडिल झपटकर आगे बढ़ता है, दरवाज़ा भी बन्द हो जाता है। पूरा सन्नाटा छा जाता है।

वाल्टर : (भीतर के कमरे की ओर बढ़कर) अरे! यह औरत बेहोश हो रही है।

वह और कोकसन बहोश होती हुई रुथ को उठाकर क्लर्क के कमरे के दरवाज़े से बाहर लाते हैं।

कोकसन : (घबड़ाकर) शान्त हो, शान्त हो, मत घबड़ाओ।

वाल्टर : तुम्हारे पास ब्रांडी नहीं है?

कोकसन : मेरे पास शेरी है।

वाल्टर : अच्छा, ले आओ जल्दी।

जेम्स एक कुर्सी खींच लाता है, वाल्टर रुथ को उस पर लिटा देता है।

कोकसन : (शेरी की बोतल लाकर) यह लीजिए, बहुत तेज अच्छी शेरी है।

वे उसके होठों के भीतर शेरी डालने की चेष्टा करते हैं। पैरों

की आहट पाकर ठहर जाते हैं। बाहर का दरवाज़ा खुलता है और उसी कमरे में विस्टर और स्वीडिल कोई चीज़ लादकर लाते हैं।

जेम्स : (तेज़ी से बढ़कर) यह क्या है?

वे उस बोझ को नज़रों से बाहर दफ्तर में उतारते हैं। रुथ के सिवा सब जाकर उसके चारों ओर खड़े हो जाते हैं और दबी ज़बान से बातें करते हैं।

विस्टर : कूद पड़ा—गर्दन टूट गयी।

वाल्टर : हा ईश्वर!

विस्टर : यह सोचना पागलपन था कि मुझे झांसा देकर निकल जायगा। दो-चार महीने के सिवा और तो कुछ होता ही नहीं।

वाल्टर : (निराशा से) बस, इतना ही।

जेम्स : ओफ़! जान ही पर खेल गया।

अचानक बड़े ही व्यथित कंठ से।

जल्दी जाओ। एक डाक्टर बुला लाओ।

स्वीडिल दौड़ता है।

एक डोली भी लाना।

विस्टर चला जाता है। रुथ के चेहरे पर भय और कातरता का भाव बढ़ता जाता है मानो किसी की बात सुनने की हिम्मत उसमें न हो। फिर धीरे-धीरे उँठकर उनकी ओर बढ़ती है।

वाल्टर : (अचानक उसकी ओर देखकर) हटो।

तीनों आदमी रास्ता छोड़कर पीछे हटते हैं। रुथ घुटनों के बल देह के पास गिर पड़ती है।

रुथ : (धीमी आवाज़ से) यह क्या? इसकी सांस बन्द हो रही है।

लाश से लिपटकर

मेरे प्रियतम! मेरे सुहाग!

बाहर के कमरे के दरवाज़े पर लोग खड़े नज़र आते हैं।

रुथ : (उन्मत्त की भांति खड़ी होकर) नहीं, नहीं, वह मर गए। मत छुओ।

सब लोग हट जाते हैं।

कोकसन : (चुपके से बढ़कर बैठे हुए कंठ से) हाय दुखिया! तुझ पर इतनी विपत्ति!

अपने पीछे पैरों की आहट सुनकर रुथ कोकसन की ओर देखती है।

कोकसन : अब उसे कोई नहीं छू सकता और न कभी छू सकेगा। वह अब ईश्वर

के शान्तिभवन में सुरक्षित है।

रुथ पत्थर की भांति निश्चल होकर दरवाज़ा के पास खड़े हुए कोकसन की ओर देखती है। कोकसन झुककर व्यथित भाव से उसका हाथ पकड़ लेता है जैसे कोई किसी भूले-भटके को पथ बताने के लिए पकड़ता हो।

परदा गिरता है।

●●●



हड़ताल

प्रकाशनकाल : 1930

हड़ताल

अनुवादक

श्रीयुत प्रेमचन्द जी, बी० ए०

प्रयाग

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०

१९३०

(मुख पृष्ठ : हड़ताल)

पात्र-सूची

जॉन ऐंथ्वनी	टिनार्थ के टीन के कारख़ाने व
एडगार ऐंथ्वनी	उसका पुत्र
फ्रेडरिक वाइल्डर विलियम स्कोंटलबरी ओलिवर वेंकलिन	बोर्ड के डाइरेक्टर
हेनरी टेंच	मन्त्री
फ्रांसिस अन्डरवुड	मैनेजर
साइमन हार्निस	ट्रेड यूनियन का एक अधिका
डेविड राबर्ट जेम्स ग्रीन जॉन बल्जिन हेनरी टामस जॉर्ज राउस	मज़दूरों की कमेटी
हेनरी राउस लुइस जागो एवेंस एक लुहार डेविस लाल बालवाला युवक ब्राउन	कारख़ाने के मजदूर
फ्रास्ट	जॉन ऐंथ्वनी का ख़ानसामा
एनिड	जॉन ऐंथ्वनी की बेटी
एनी राबर्ट	डेविड राबर्ट की बीबी
मेज टामस	हेनरी टामस की बेटी
मिसेज़ राउस	जॉर्ज और हेनरी राउस की मां
मिसेज बल्जिन	जॉन बल्जिन की बीबी

मिसेज़ यो — एक मज़दूर की बीबी

अन्डरवुड परिवार की एक सेविका

जॉन मज़दूरों का एक समूह — मेज का छोटा भाई

अंक 1 : मैनेजर के घर का भोजनालय।

अंक 2 : **दृश्य पहला :** राबर्ट के घर का बावर्चीख़ाना।

दृश्य दूसरा : कारख़ाना के बाहर का दृश्य।

अंक 3 : मैंनेजर के घर का दीवानख़ाना।

घटना सातवीं फरवरी को तीसरे पहर बारह और छः बजे के बीच में शुरू होती है।

अंक 1

दृश्य पहला

[दोपहर का समय है, अन्डरवुड के भोजनालय में तेज़ आग जल रही है। आतिशदान के एक तरफ़ दुहरे दरवाज़े हैं, जो बैठक में जाते हैं। दूसरी तरफ़ एक दरवाज़ा है, जो बड़े कमरे में जाता है। कमरे के बीच में, एक लम्बी खाने की मेज़ है। उस पर कोई मेज़पोश नहीं है। वह लिखने की मेज़ बना ली गई है। उसके सिरे पर सभापति के स्थान पर जॉन ऐंथ्वनी बैठा हुआ है। वह एक बुड्ढा, बड़े डीलडौल का आदमी है। दाढ़ी मूंछ मुड़ी हुई, रंग लाल, घने सफ़ेद बाल और घनी काली भौंहें। चाल-ढाल से वह सुस्त और कमज़ोर मालूम होता है, लेकिन उसकी आंखें बहुत तेज़ हैं। उसके पास पानी का एक गिलास रक्खा हुआ है। उसकी दाहिनी तरफ़ उसका बेटा एडगार बैठा अख़बार पढ़ रहा है। उसकी उम्र तीस साल की होगी। सूरत से उत्साही मालूम होता है। उसके बाद वेंकलिन झुका हुआ दस्तावेज़ों को देख रहा है, उसकी भौंहें उभरी हुई हैं और बाल खिचड़ी हो गए हैं। टेंच जो मन्त्री है, खड़ा उसे मदद दे रहा है। वह छोटे क़द का दुबला, और कुछ ग़रीब आदमी है। वह गलमुच्छे रक्खे हुए है। वेंकलिन की दाहिनी तरफ़ मैनेजर अन्डरवुड बैठा है। वह शान्त मनुष्य है जिसके जबड़े की हड्डी लम्बी और गठी हुई है और आंखें स्थिर हैं। आतिशदान के पीछे स्केंटलबरी बैठा हुआ है, जो भारी भरकम, पीला सुस्त आदमी है। उसके बाल सफ़ेद हैं, और कुछ गंजा है। उसके और सभापति के बीच में दो खाली कुर्सियां हैं।]

वाइल्डर : **(दुबला मुर्दा और चिड़चिड़ा आदमी है। उसकी सफ़ेद मूंछें झुकी हुई हैं। आग के सामने खड़ा है।)** इस आग के मारे नाक में दम है। क्यों टेंच, यहां कोई जंगला होगा?

स्केंटलबरी : जंगला!

टेंच : हां, अवश्य मिस्टर वाइल्डर।

वह अन्डरवुड की तरफ़ देखता है।

शायद मैनेजर—शायद मिस्टर अन्डरवुड—

स्केंटलबरी : अन्डरवुड यह तुम्हारे आतिशदान—

अन्डरवुड : **(कागजों को देखते-देखते चौंककर)** पर्दा? शायद! मुझे खेद है।

वह कुछ मुस्कराकर द्वार की ओर जाता है।

हम तो आजकल यहां यह शिकायत कम सुनते हैं कि आग बहुत

तेज़ है।

वह इस तरह धीरे-धीरे और चबा-चबाकर बोलता है, जैसे मुंह में पाइप लिए हुए हो।

वाइल्डर : **(दुःखी होकर)** तुम्हारा मतलब मज़दूरों से है, अच्छा।

अन्डरवुड बाहर चला जाता है।

स्कैंटलबरी : बड़े दुःखी हैं, बेचारे।

वाइल्डर : यह उन्हीं का दोष है स्कैंटलबरी।

एडगार : **(अपना अख़बार ऊपर उठाकर)** इस अख़बार से तो मालूम होता है कि उन्हें बहुत तकलीफ़ है।

वाइल्डर : अजी वह रद्दी अख़बार है, इसे वेंकलिन को दे दो। उसके उदार विचारों से मेल खाता है। ये सब हमें शायद दानव कहते होंगे। इस रद्दी अख़बार के एडीटर को गोली मार देना चाहिए।

एडगार : **(पढ़ता है)** 'अगर उन सभ्य पुरुषों का बोर्ड, जो लन्दन में आराम कुर्सियों पर बैठे हुए टिनार्थ के टीन के कारख़ाने को चलाते हैं, इतनी दया करे कि यहां आकर इस हड़ताल में मज़दूरों की दुर्दशा को अपनी आंखों से देखे–'

वाइल्डर : अब तो हम आ गए हैं।

एडगार : **(पढ़ता हुआ)** 'तो हमें विश्वास नहीं होता कि उनके पाषाण हृदय भी द्रवित न हो जायं।'

वेंकलिन उसके हाथ से पत्र ले लेता है।

वाइल्डर : बदमाश! मैं इस आदमी को उस समय से जानता हूं जब उसके पास झंझी कौड़ी भी न थी। शैतान ने उन लोगों को धमका-धमकाकर खूब धन जोड़ लिया है, जिनके विचार उसके विचारों से नहीं मिलते।

ऐंथ्वनी कुछ कहता है, जो सुनाई नहीं पड़ता।

वाइल्डर : तुम्हारे पिता जी क्या कहते हैं?

एडगार : वह कहते हैं–'पतीली और बर्तन।'

वाइल्डर : अच्छा!

वह स्कैंटलबरी के बगल में बैठ जाता है।

स्कैंटलबरी : **(मुंह से हवा निकालकर)** अगर जंगला न आएगा तो मैं उबल जाऊंगा।

अन्डरवुड और एनिड एक जंगला लेकर आते हैं और आग के सामने रख देते हैं। एनिड का कद लम्बा, चेहरा दृढ़ और छोटा और अवस्था अट्ठाईस साल है।

एनिड : इसे और पास रक्खो फ्रेंक। इससे काम चल जायगा मिस्टर वाइल्डर? इससे बड़ा हमारे पास नहीं है।

वाइल्डर : बहुत अच्छी तरह, धन्यवाद।

स्कैंटलबरी : **(आनन्द से सांस लेकर घूमता हुआ)** आपने बड़ी दया की देवी जी।

एनिड पिता जी, आपको किसी और चीज़ की ज़रूरत है?

ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।

तुम्हें कुछ चाहिए एडगार?

एडगार : हां, मुझे एक 'जे' निब दे दो।

एनिड : वह मिस्टर स्कैंटलबरी के पास रक्खी हुई है।

स्कैंटलबरी : **(निबों की एक छोटी-सी डिबिया उठाकर)** अच्छा! तुम्हारे भाई साहब 'जे' निब से लिखते हैं। मैनेजर साहब किस निब से लिखते हैं?

विशेष नम्रता से

तुम्हारे पति किस निब से लिखते हैं।

अन्डरवुड : पर की क़लम से।

स्कैंटलबरी : बतख का पर भी कितनी अच्छी चीज़ है।

वह पर की क़लमों को दिखाता है।

अन्डरवुड : **(रुखाई से)** धन्यवाद! एक मुझे दीजिए।

वह एक क़लम लेता है।

खाने में क्या देर है एनिड?

एनिड : **(दुहरे दरवाजे पर रुकती है)** हम यहां दीवानख़ाने में खाना खायेंगे। इसलिए कमरे में जल्दी करने की ज़रूरत नहीं।

वेंकलिन और वाइल्डर सिर झुकाते हैं और वह चली जाती है।

स्कैंटलबरी : **(यकायक चौंककर)** अच्छा खाना! वह होटल—भयंकर! कल रात को तुमने भुनी हुई चर्बी खाई थी?

वाइल्डर : साढ़े बारह बज गए! क्यों टेंच तुम जलसे की कर्यवाही नहीं पढ़ोगे?

टेंच : **(रजामन्दी के लिए सभापति की ओर देखकर, एक स्वर में तेजी से पढ़ता है।)** 'बोर्ड के एक जलसे की कार्यवाही जो 31 जनवरी को कम्पनी के दफ्तर नंबर 512 केनन स्ट्रीट में हुआ। उपस्थित मिस्टर ऐंथ्वनी सभापति, मिस्टर वाइल्डर, विलियम स्कैंटलबरी, ओलिवर वेंकलिन, और एडगार ऐंथ्वनी। मैनेजर के वह पत्र पढ़े गए जो उसने 20, 23, 25 और 28 जनवरी को कम्पनी के कारख़ानों की हड़ताल के विषय में लिखे थे। वह पत्र पढ़े गए जो मैनजर को 21, 24, 26 व 29 जनवरी को लिखे गए। सेन्ट्रल यूनियन के प्रतिनिधि मिस्टर साइमन हार्निस का पत्र पढ़ा गया। जिसमें उन्होंने बोर्ड से बातचीत करने की अनुमति मांगी थी। मज़दूरों की कमेटी का पत्र पढ़ा गया जिस पर डेविड राबर्ट, जेम्स ग्रीन, जॉन बल्जिन, हेनरी टामस, जॉर्ज राउस के दसख़त थे, जिसमें उन्होंने बोर्ड से बात-चीत करनी चाही थी। यह निश्चय हुआ कि सातवीं फ़रवरी को मैनेजर के मकान पर बोर्ड की एक विशेष बैठक हो जाय, जिसमें मिस्टर साइमन हार्निस और मज़दूरों की कमेटी से उसी जगह इस मामले पर बातचीत की

जाय। बारह बैनामे मंजूर हुए, नौ सर्टीफिकेट और एक बक़ाया के सर्टीफिकेट पर दख़त किये और मुहर लगाई।

वह रजिस्टर को सभापति की ओर बढ़ा देता है।

ऐंथ्वनी : **(लम्बी सांस लेकर)** अगर आप लोग उचित समझें तो उस पर दख़त कर दें।

क़लम को मुश्किल से घुमाकर हस्ताक्षर कर देता है।

वेंकलिन : क्यों टेंच, यूनियन की यह क्या चाल है? मज़दूरों से तो उनका मेल नहीं हुआ। हार्निस किसलिए मिलना चाहता है?

टेंच : उसे आशा है कि हममें कोई समझौता हो जायगा? वह आज शाम को मज़दूरों से कुछ बातचीत करेगा।

वाइल्डर : हार्निस! ठीक! वह एक ही घुटा हुआ, काइयां आदमी है। मैं इन पर विश्वास नहीं करता। मुझे ऐसा मालूम होता है कि हमने नरमी करने में भूल की। मज़दूर लोग यहां कब तक आ जायेंगे?

अन्डरवुड : आते ही होंगे।

वाइल्डर : अच्छी बात है, अगर हम तैयार नहीं हैं, तो उन्हें रुकना पड़ेगा—अगर थोड़ी देर तक अपनी एड़ियां ठंडी कर लें, तो उन्हें कोई हानि न होगी।

स्कॅटलबरी : **(अहिस्ता से)** बेचारे ग़रीब हैं। बर्फ़ गिर रही है, क्या मौसम है।

अन्डरवुड : **(अपने मतलब से रुक-रुककर)** इस घर से ज्यादा गर्म जगह इन जाड़ों में उन्हें न मिली होगी।

वाइल्डर : ख़ैर, मुझे आशा है, हम इस मामले को इतनी जल्द तय कर लेंगे कि मुझे साढ़े छः की गाड़ी मिल जाय। मैं कल अपनी बीवी को स्पेन ले जा रहा हूं।

गप-शप करने के विचार से

मेरे बाप के कारख़ाने में भी सन् 69 में हड़ताल हुई थी। ठीक यही फरवरी का महीना था। मज़दूर लोग उन्हें गोली मार देना चाहते थे।

वेंकलिन : अच्छा! इस जीवरक्षा के दिनों में जिन महीनों में चिड़ियां अंडे देती हैं, उनमें शिकार खेलना मना है।

वाइल्डर : मालिकों के लिए जीवरक्षा के दिन थे। वह जेब में पिस्तौल रखकर दफ्तर जाया करते थे।

स्कॅटलबरी : **(कुछ डरकर)** सच!

वाइल्डर : **(बातचीत का अन्त करने के लिए)** नतीजा यह हुआ कि उन्होंने एक मज़दूर के पैर में गोली मार दी।

स्कॅटलबरी : **(बे-अख़्तियार जांघ को स्पर्श करके)** सच! ईश्वर बचाए!

ऐंथ्वनी : **(एजिन्डा को ऊपर उठाकर)** हमें यह विचार करना है कि इस हड़ताल के सम्बन्ध में बोर्ड का क्या निश्चय होगा।

सब चुप हो जाते हैं।

वाइल्डर यह सत्यानाशी तिरमुखी लड़ाई है—यूनियन, मज़दूर और हम।

वेंकलिन यूनियन से हमें कोई मतलब नहीं।

वाइल्डर मेरा तो यह अनुभव है कि यूनियन हमेशा बीच में कूद पड़ता है। उसका बुरा हो! अगर यूनियन मज़दूरों की सहायता से मुंह मोड़ना चाहता है और वैसा कर भी रहा है, तो फिर उसने क्यों इन आदमियों को हड़ताल करने ही दिया?

एडगार ऐसे एक दर्जन अवसर आ चुके।

वाइल्डर लेकिन मैं इसे कभी समझ नहीं सका। यह मेरी समझ से बाहर है। वे कहने हैं कि इंजीनियरों और भट्ठी वालों की मांग बहुत ज़्यादा है—बात ठीक है, लेकिन यह इस बात के लिए काफ़ी नहीं है कि यूनियन उनकी सहायता से मुंह मोड़ ले। इसका क्या मतलब है?

अन्डरवुड : हार्पर और टाइनवेल के कारख़ानों में हड़ताल होने का डर।

वाइल्डर : **(विजय-गर्व से)** अच्छा! तो दूसरी हड़तालों से डरते हैं! बस, अब बात समझ में आ गई। लेकिन हमें पहले यह क्यों न बतलाया गया?

अन्डरवुड : बतलाया गया था।

टेंच : आप उस दिन बोर्ड में न आए थे।

स्केंटलबरी : मज़दूर लोग समझ गए कि अगर यूनियन ने हाथ खींच लिया, तो फिर उनका कहीं ठिकाना नहीं है। यह पागलपन है।

अन्डरवुड : यह राबर्ट की करतूत है।

वाइल्डर : यह हमारा सौभाग्य है कि मज़दूरों को राबर्ट जैसा कट्टर उपद्रवी नेता मिल गया।

सब चुप हो जाते हैं।

वेंकलिन : **(ऐंथ्वनी को देखकर)** अब!

वाइल्डर : **(चिड़-चिड़ाता हुआ बोल उठता है)** पूरी आफ़त है। हम लोग जिस स्थिति में पड़ गए हैं, मैं उसे नहीं पसंद करता। मैं बहुत दिनों से यही कहता आ रहा हूं।

वेंकलिन को देखकर।

जब वेंकलिन और मैं क्रिसमस के पहिले यहां आए थे, तो ऐसा मालूम होता था कि मज़दूर लोग राह पर आ जायंगे। तुम्हारा भी तो यही विचार था अन्डरवुड।

अन्डरवुड : हां।

वाइल्डर : लेकिन वे राह पर नहीं आए, और हमारी दशा दिन-दिन बिगड़ती जाती है—हमारे ग्राहक टूटते जाते हैं—हिस्सों का दर घटता जाता है।

स्केंटलबरी : **(सिर हिलाकर)** हा हा!

वेंकलिन : क्यों टेंच, इस हड़ताल से हमें कितना घाटा हुआ?

टेंच : पचास हज़ार से ऊपर।

स्कें टलबरी : **(दुःख से)** यह बात है!

वाइल्डर : इस घाटे का पूरा होना कठिन है।

टेंच : और क्या।

वाइल्डर : किसे मालूम था कि मज़दूर लोग इस तरह अड़े रहेंगे—किसी ने मुंह तक नहीं खोला।

टेंच को क्रोध से देखता हैं।

स्कें टलबरी : **(सिर हिलाकर)** मैं लड़ाई-झगड़े से हमेशा भागता हूं और हमेशा भागूंगा।

ऐंथ्वनी : हम उनके पैरों नहीं पड़ सकते।

सब उसकी तरफ़ ताकने लगते हैं।

वाइल्डर : पैरों कौन पड़ना चाहता है?

ऐंथ्वनी उसकी तरफ़ ताकता है।

मैं सोच समझ कर काम करना चाहता हूं। जब मज़दूरों ने राबर्ट को दिसम्बर में बोर्ड के पास भेजा था तब अवसर था। हमें उसको मिला लेना चाहिए था; इसके बदले सभापति ने—

ऐंथ्वनी के सामने आंखें नीची करके।

हमने उसे झिड़क दिया। अगर उस वक्त ज़रा चतुराई से काम लेते तो सब हमारे पंजे में आ जाते।

ऐंथ्वनी : समझौता नहीं हो सकता!

वाइल्डर : यही तो बात है। यह हड़ताल अक्तूबर से अब तक चली आ रही है और जहां तक मैं समझता हूं, शायद छः महीने और चले। तब तक तो हम चौपट ही हो जायंगे। अगर आंसू पोंछने की कोई बात है, तो यही कि मज़दूर लोग और भी चौपट हो जायंगे।

एडगार : **(अन्डरवुड से)** क्यों फ्रेंक, आज कल उनकी असली हालत क्या है?

अन्डरवुड : **(उदासीन भाव से)** बहुत खराब!

वाइल्डर : लेकिन यह कौन समझ सकता था कि वे इतने दिनों तक बिना सहायता के डटे रहेंगे।

अन्डरवुड : जो उन्हें जानते हैं वे समझे हुए थे।

वाइल्डर : मैं हाथ मारकर कहता हूं कि यहां उन्हें कोई नहीं जानता! अच्छा, टिन का क्या रंग है? दिन-दिन तेज़ होता जाता है। जब हमारा कारख़ाना चलने भी लगेगा तो हमें बाज़ार-भाव के ऊपर चुकाए हुए माल को लेना पड़ेगा।

वेंकलिन : इसके बारे में आप क्या कहते हैं सभापति महोदय?

ऐंथ्वनी : लाचारी है।

वाइल्डर : ईश्वर जाने कब तक हम नफ़ा न दे सकेंगे!

स्कें टलबरी : **(ज़ोर देकर)** हमें हिस्सेदारों का ख़याल रखना चाहिए।

सभापति की ओर फिरकर

सभापति महोदय, हमें हिस्सेदारों का ख़याल रखना चाहिए।

ऐंथ्वनी मुंह में कुछ कहता है।

स्कैंटलबरी : आप क्या कह रहे हैं?

टेंच : सभापति कहते हैं कि उन्हें आपका ख़याल है।

स्कैंटलबरी : **(फिर शिथिल होकर)** काटे खाता है!

वाइल्डर : यह अब दिल्लगी की बात नहीं है। सभापति महोदय को नफ़े की चिन्ता न हो, लेकिन मैं बरसों तक नफ़े को तिलांजलि नहीं दे सकता। हमसे यह नहीं हो सकता कि कम्पनी के धन को मटियामेट करते रहें।

एडगार : **(कुछ लज्जित होकर)** मेरा विचार है कि हमें मज़दूरों की दशा का अधिक ध्यान रखना चाहिए।

ऐंथ्वनी के सिवा सब अपनी-अपनी जगहों पर बैठे इशारेबाजी करने लगते हैं।

स्कैंटलबरी : **(लम्बी सांस लेकर)** मित्र, पर हमें यहां अपने निजी मनोभावों का विचार न करना चाहिए। इससे काम न चलेगा।

एडगार : **(व्यंग्य से)** मैं अपने लोगों के मनोभावों का विचार नहीं कर रहा हूं, मज़दूरों के भावों का विचार कर रहा हूं।

वाइल्डर : इसका जवाब तो यही है कि हम भी रोज़गारी आदमी हैं, परोपकार करने नहीं बैठे हैं।

वेंकलिन : इसी का तो रोना है।

एडगार : मज़दूरों की यह सब दुर्दशा देखकर यह ज़रूरी नहीं है कि हम इस मामले को इतना बढ़ाएं—यह....यह निर्दयता है।

किसी की ज़बान नहीं खुलती, मानो एडगार ने कोई ऐसी चीज खोलकर सामने रख दी है जिसका मौजूद होना कोई भला आदमी स्वीकार नहीं कर सकता।

वेंकलिन : **(व्यंग्यमय हंसी के साथ)** यह तो उचित नहीं है कि हम अपनी नीति की बुनियाद दया जैसी शौक़ की बातों पर रक्खें।

एडगार : मुझे ऐसे मामलों से घृणा है।

ऐंथ्वनी : हमने तो रार नहीं मोल लिया था।

एडगार : इतना तो मैं भी जानता हूं साहब, लेकिन हम लोग अब बहुत दूर बढ़े जा रहे हैं।

ऐंथ्वनी : हर्गिज़ नहीं।

सब एक दूसरे का मुंह ताकते हैं।

वेंकलिन : सभापति महोदय, शौक़ की बात अलग है, हमें यह देखना है कि हम कर क्या रहे हैं।

ऐंथ्वनी : मज़दूरों से एक बार दबे तो फिर हमेशा दबते रहना पड़ेगा। कभी

इसका अन्त न होगा।

वेंकलिन : मैं इसे मानता हूं, लेकिन—

ऐंथ्वनी सिर हिलाकर स्वीकार करता है।

मगर महोदय, फिर वही शौक की बात आ गई। हम यहां सिद्धान्तों की रक्षा करने नहीं बैठे हैं। हिस्सों का मूल्य घट गया है।

वाइल्डर : और अबकी नफ़ा बांटने के समय तक आधा ही रह जायगा।

स्कोंटलबरी : **(घबराकर)** अजी नहीं, ऐसी बुरी दशा क्या होगी।

वाइल्डर : **(धमकाकर)** वह तो आगे ही आएगी।

ऐंथ्वनी की बात सुनने के लिए आगे को झुककर।

मैं कुछ सुन नहीं सका—

एडगार : **(तेज़ी से)** पिता जी कहते हैं जो कुछ करना चाहिए वह करो और दूसरे झगड़ों में न पड़ो।

वाइल्डर : छी !

स्कोंटलबरी : **(हाथ ऊपर उठाकर)** सभापति बैरागी हैं—मैं हमेशा कहता आता हूं कि सभापति बैरागी हैं।

वाइल्डर : हमारी तो लुटिया ही डूब जायगी।

वेंकलिन : **(मधुर स्वर में)** सभापति महोदय, क्या आप सचमुच केवल एक—एक सिद्धान्त के लिए—अपने जहाज़ को डुबा दोगे?

ऐंथ्वनी : वह डूबेगा नहीं।

स्कोंटलबरी : **(घबराकर)** जब तक मैं बोर्ड में हूं तब तक तो मुझे आशा है न डूबेगा।

ऐंथ्वनी : **(आंखें मारकर)** ज़रा समझ-बूझकर, स्कोंटलबरी।

स्कोंटलबरी : क्या आदमी है।

ऐंथ्वनी : मैंने उन्हें हमेशा ललकारा है और कभी नीचा नहीं देखा।

वेंकलिन : हमारा और आपका सिद्धान्त एक है महोदय। लेकिन हम सब लोहे के नहीं बने हैं!

ऐंथ्वनी : हमें केवल अटल रहना चाहिए।

वाइल्डर : **(उठकर आग के पास जाता है)** और जितनी जल्द हो सके तबाह हो जाना चाहिए।

ऐंथ्वनी : तबाह हो जाना दब जाने से कहीं बढ़कर है।

वाइल्डर : **(चिढ़कर)** यह आपको अच्छा लगता होगा, लेकिन मुझे तो नहीं अच्छा लगता, और जहां तक मैं समझता हूं, और कोई भी इसे पसंद नहीं करता।

ऐंथ्वनी उसके मुख की ओर ताकता है—सब चुप हो जाते हैं।

एडगार : हड़ताल जारी रहने का मतलब यह है कि मज़दूरों के बाल-बच्चे भूखों मर जायं। मेरी समझ में नहीं आता हम इस बात को कैसे भूल सकते हैं।

वाइल्डर यकायक आग की ओर मुंह फेर लेता है और

स्कैंटलबरी इस ख़याल को दूर रखने के लिए हाथ फैलाता है।

वेंकलिन : फिर वही दया और धर्म की बात आ गई !

एडगार : क्या आपका ख़याल है कि व्यापारियों के लिए सज्जनता का नाम लेना ही पाप है?

वाइल्डर : मज़दूरों के लिए मुझे भी उतना ही दुःख है जितना दूसरों को हो सकता है, लेकिन अगर वे अपने पांव में कुल्हाड़ी मारें तो यह हमारा दोष नहीं। हमारे लिये अपनी और हिस्सेदारों की चिन्ता काफ़ी है।

एडगार : **(चिढ़कर)** अगर हिस्सेदारों को एक या दो बार नफ़ा न मिले तो वह मर न जायेंगे। यह तो ऐसा कारण नहीं कि हम लोग अपनी हार मान लें।

स्कैंटलबरी : **(बहुत घबराकर)** भाई जान, तुम तो ऐसी बातें करते हो मानो मुनाफ़ा कोई चीज़ ही नहीं। मुझे नहीं मालूम कि हम कितने पानी में हैं।

वाइल्डर : इस मामले में केवल एक बात सोचने की है। हम इस हड़ताल के हाथों तबाह नहीं होना चाहते।

ऐंथ्वनी : हम क़दम पीछे न हटाएंगे।

स्कैंटलबरी : **(निराशा का संकेत करके)** ज़रा आपकी सूरत देखिए।

ऐंथ्वनी अपनी कुरसी पर फिर टिककर बैठ रहा है। सब लोग उसकी ओर देखते हैं।

वाइल्डर : **(अपनी जगह पर लौटकर)** अगर सभापति की यही राय है तो मेरी समझ में नहीं आता कि हम लोग यहां आए क्या करने।

ऐंथ्वनी : मज़दूरों से यह कहने के लिए कि हमसे कोई आशा मत रक्खो। **(दृढ़ता से)** जब तक उनसे सीधी-सादी भाषा में यह न कह दिया जायगा उन्हें इसका विश्वास न आएगा।

वाइल्डर : ठीक। मुझे बिलकुल आश्चर्य न होगा। अगर उस पाजी राबर्ट ने यही बात कहने के लिए हमें यहां बुलाया हो। कपटी आदमियों से मुझे चिढ़ है।

एडगार : **(क्रोध से)** हमने उसके आविष्कार का कुछ भी मूल्य नहीं दिया। मैं तभी से यह कहता चला आता हूं।

वाइल्डर : हमने उसे पांच सौ रुपये उसी वक्त दिए और दो साल बाद दो सौ रुपये बोनस दिया। क्या इतनी रक़म काफ़ी नहीं है? वह और क्या चाहता है?

टेंच : **(असन्तोष के भाव से)** कम्पनी ने उसके आविष्कार से एक लाख पैदा किया और उसके हत्थे चढ़े कुल सात सौ रुपये। इसी तरह उसके दिन कट रहे हैं।

वाइल्डर : वह तो आग लगाने वाला आदमी है। मुझे इन पंचायतों से घृणा है, लेकिन अब हार्निस यहां आ गया है, और हमें चाहिए कि उसकी

मार्फ़त सारे झगड़े तय कर लें।

ऐंथ्वनी : नहीं।

सब के सब फिर उसकी ओर देखते हैं।

अन्डरवुड : राबर्ट मज़दूरों को इस पर राजी न होने देगा।

स्केंटलबरी : खूनी आदमी है, खूनी।

वाइल्डर : **(ऐंथ्वनी की ओर देखकर)** और वह अकेला ही नहीं है।

फ्रास्ट बड़े कमरे से अन्दर आता है।

फ्रास्ट : **(ऐंथ्वनी से)** यूनियन के मिस्टर हार्निस आए हुए हैं। मज़दूर लोग भी आ गए हैं।

ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।

अन्डरवुड जाता है और हार्निस को लेकर लौटता है। हार्निस दाढ़ी मोंछ मुड़ाए हुए है, उसका रंग पीला है, गाल पिचके हुए, आंखें तेज़ और ठुड्डी गोल—फ्रास्ट चला जाता है।

अन्डरवुड : **(टेंच की कुर्सी की तरफ़ इशारा करके)** वहां सभापति के बगल में बैठ जाव मिस्टर हार्निस।

हार्निस के आते ही बोर्ड के लोग एक दूसरे के पास आ जाते हैं और उसकी तरफ़ देखते हैं जैसे मवेशी किसी कुत्ते को देखे।

हार्निस : **(सब को ग़ौर से देखकर और सिर झुकाकर)** धन्यवाद।

वह बैठ जाता है। नाक से बोलता है।

महाशयगण, मुझे आशा है कि आज हम लोग इस मामले को तय करेंगे।

वाइल्डर : ये तो इस बात पर मुनहसर है कि तुम किसे तय करना कहते हो। आदमियों को अन्दर क्यों नहीं बुला लेते?

हार्निस : **(चतुराई से)** मज़दूर लोग आप लोगों से कहीं ज्यादा न्याय पर हैं। हमारे सामने अब यह प्रश्न है कि हमें उन लोगों की फिर मदद करनी चाहिए या नहीं।

वह ऐंथ्वनी के सिवा और किसी से नहीं बोलता। उसका रुख ऐंथ्वनी की तरफ़ है।

ऐंथ्वनी : तुम्हारा जी चाहे तुम उनकी मदद करो। हम खुद मज़दूर रख लेंगे और तुमसे कोई सरोकार न रक्खेंगे।

हार्निस : यह नहीं हो सकता मिस्टर ऐंथ्वनी, आपको बग़ैर पंचायत की मदद के मज़दूर न मिलेंगे और आप इसे जानते हैं।

ऐंथ्वनी : यही देखना है।

हार्निस : मैं आपसे सफाई के साथ बातें करना चाहता हूं। हम आपके मज़दूरों की मदद से इसलिए हाथ खींचने पर मज़बूर हुए कि उनकी कुछ मांगें

बाज़ार दर से बढ़ी हुई हैं। मुझे आशा है कि आज हम लोग उनसे वह शर्तें उठवा लेंगे। अगर उन्होंने ऐसा किया, तो मैं आप लोगों से साफ़ कहता हूं कि हम फिर उनकी मदद करने लगेंगे। इसलिए मैं चाहता हूं कि आज हम लोग कुछ न कुछ तय करके ही उठें। क्या हम लोग इस पुराने ढंग की खींचातानी का अन्त नहीं कर सकते? इससे आप लोगों को क्या मिल रहा है? आप लोग यह क्यों नहीं मानते कि ये बेचारे आप ही लोगों जैसे मनुष्य हैं, और उसी तरह अपना भला चाहते हैं जैसे आप लोग अपना भला चाहते हैं—

कटु स्वर में।

आपकी मोटर गाड़ियां, और शाम्पेन और लम्बी-लम्बी दावतें...

ऐंथ्वनी : अगर मज़दूर लोग काम पर आ जायं तो हम उनके साथ कुछ रियायत कर देंगे।

हार्निस : **(व्यंग्य से)** आप लोगों की भी यही राय है साहब? आप...आप...आप?

डाइरेक्टर लोग जवाब नहीं देते।

ख़ैर, मैं यही कह सकता हूं कि इस ध्वनि में रईसों का घमंड और रोष भरा हुआ है जिसका मेरे ख़याल में अब ज़माना नहीं रहा—लेकिन मालूम होता है मैं ग़लती पर था।

ऐंथ्वनी : यह वही ध्वनि है जिसमें मज़दूर लोग बातें करते हैं। अब तो यह देखना है कि कौन ज़्यादा दिनों तक अड़ सकता है—वह लोग हमारे बिना या हम लोग उनके बिना?

हार्निस : मुझे आश्चर्य है कि आप लोग व्यापारी होकर भी शक्ति के इस तरह बरबाद होने पर लज्जित नहीं होते। इसका नतीजा जो कुछ होगा, वह आपसे छिपा नहीं है।

ऐंथ्वनी : क्या होगा?

हार्निस : समझौता—यही बराबर होता है।

स्केंटलबरी : आप मज़दूरों को यह नहीं समझा सकते कि हमारा और उनका एक ही स्वार्थ है?

हार्निस : **(घूमकर व्यंग्य से)** अगर यह बात ठीक होती तो मैं उन्हें समझ सकता था।

वाइल्डर : देखो हार्निस, तुम बुद्धिमान हो और साम्यवादियों के उन गोरखधंधों को नहीं मानते जिनकी आजकल धूम मची हुई है। उनके और हमारे दिल में ज़रा भी अन्तर नहीं है।

हार्निस : मैं आप से एक बहुत सीधा-सादा, छोटा-सा प्रश्न करता हूं। आप मज़दूरों को उससे एक कौड़ी भी ज्यादा देंगे जितना आपको लाचार होकर देना पड़ेगा।

वाइल्डर चुप रहता है।

वेंकलिन : **(उसी स्वर में)** मेरा तुच्छ विचार तो यह है कि आदमियों को उतनी ही मज़दूरी देना जितना जरूरी हो, वाणिज्य का क, ख, ग है।

हार्निस : **(व्यंग्य से)** हां, मालूम तो यही होता है कि वह वाणिज्य का क, ख, ग है और यही वाणिजय का क, ख, ग आपके हित को मज़दूरों के हित से अलग किये हुए है।

स्कोंटलबरी : **(धीरे से)** हमें कुछ निश्चय कर लेना चाहिए।

हार्निस : **(रुखाई से)** तो यह तय हो गया कि बोर्ड मज़दूरों के साथ कोई रियायत न करेगा?

वेंकलिन और वाइल्डर कुछ बोलने के लिए आगे झुकते हैं, पर रुक जाते हैं।

ऐंथ्वनी : **(सिर हिलाकर)** हां।

वेंकलिन और वाइल्डर फिर आगे को झुकते हैं और स्कोंटलबरी यकायक गुर्रा उठता है।

हार्निस : शायद आप कुछ कहने जा रहे थे?

लेकिन स्कोंटलबरी कुछ नहीं बोलता।

एडगार : **(यकायक सिर उठाकर)** हमें मज़दूरों की इस दशा पर बहुत खेद है।

हार्निस : **(बेपरवाही से)** मज़दूरों को आपकी दया की ज़रूरत नहीं है साहब, वह केवल न्याय चाहते हैं।

ऐंथ्वनी : तो उन्हें न्यायी बनाओ।

हार्निस : 'न्यायी' की जगह 'दीन' कहिए मि. ऐंथ्वनी मगर वह क्यों दीन बनें? यह संयोग की बात है कि उनके पास धन नहीं है, नहीं तो आप लोगों ही जैसे मनुष्य वे लोग भी हैं।

ऐंथ्वनी : ढोंग है!

हार्निस : ख़ैर, मैं पांच साल अमेरिका में रह चुका हूं। इससे आदमी के विचारों पर असर पड़ता ही है।

स्कोंटलबरी : **(मानो अपनी अधूरी गुर्राहट की कसर निकालने के लिए)** मज़दूरों को भीतर बुलाकर सुनना चाहिए कि वह क्या कहते हैं।

ऐंथ्वनी सिर हिलाता है और अन्डरवुड इकहरे दरवाज़े से बाहर जाता है।

हार्निस : **(बेपरवाही से)** आज शाम को मेरी उन लोगों से बातचीत होगी। इसलिए मैं आपसे अर्ज़ करूंगा कि जब तक वह पूरी न हो जाय आप लोग कोई तोड़ न करें।

ऐंथ्वनी फिर सिर हिलाता है, और अपना गिलास उठाकर पीता है।

अन्डरवुड फिर अन्दर आता है। उसके पीछे-पीछे राबर्ट, ग्रीन बलजिन, टामस, और राउस आते हैं। वे हाथ में हाथ

मिलाकर एक कतार में चुपचाप खड़े हो जाते हैं। राबर्ट दुबला, औसत क़द का आदमी है, उसकी पीठ कुछ झुकी हुई है। उसकी ख़सख़सी भूरी दाढ़ी है, गाल की हड्डियां ऊंची, गाल पिचकें हुए, आंखें तेज़ और छोटी। वह एक पुराना चरबी के दाग़ों से भरा हुआ नीले सर्ज का कोट पहिने हुए है। उसके हाथ में पुरानी टोपी है। वह सभापति के समीप ही खड़ा होता है। उसके बाद ग्रीन है। उसका चेहरा मुरझाया और मुड़ा हुआ है, छोटी सफेद बकरियों की सी दाढ़ी है और नीचे झुकी हुई मूंछें, शान्त और निष्कपट आंखों के ऊपर लोहे की ऐनक लगाये हुए है। वह एक ओवरकोट पहिने है, जो पुराना होने से हरा हो गया है। उसके बाद बलजिन है जो एक लम्बा मज़बूत, काली मूंछों वाला और मज़बूत कल्ले का आदमी है। वह एक लाल मफ़लर पहिने हुए और अपनी टोपी को इस हाथ से उस हाथ बदलता रहता है। उसके बग़ल में टामस है। वह बुड्ढा आदमी है जिसकी मूंछें पकी हुई हैं, दाढ़ी घनी और चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुई हैं। उसके दाहिनी तरफ़ राउस है वह पांचों से छोटा है और सिपाही सा दीखता है, उसकी आंखें चमकदार हैं।

अन्डरवुड : **(इशारा करके)** राबर्ट, दीवार से मिली हुई वह कुर्सियां हैं, उन्हें खींच लो और बैठो।

राबर्ट : धन्यवाद, मिस्टर अन्डरवुड हम बोर्ड के सामने खड़े ही रहेंगे।

वह कड़ी आवाज़ में बातें करता है और उसका उच्चारण विदेशियों जैसा है।

कैसा मिजाज़ है मिस्टर हार्निस? आज शाम नक तो आशा न थी कि आपसे भेंट होगी।

हार्निस : **(दृढ़ता से)** तो हम फिर मिल लेंगे राबर्ट।

राबर्ट : बड़े आनन्द की बात है। हमारा कुछ संदेश है। उसे आप अपनी सभा तक पहुंचा दीजिएगा।

ऐंथ्वनी : ये लोग क्या चाहते हैं?

राबर्ट : **(तीव्र स्वर में)** ज़रा फिर कहिए, मैं चेयरमैन की बात नहीं सुन पाया।

टेंच : **(सभापति की कुर्सी के पीछे से)** सभापति यह जानना चाहते हैं कि आदमियों को क्या कहना है।

राबर्ट : हम यहां यह सुनने के लिए आए हैं कि बोर्ड को क्या कहना है। पहिले बोर्ड को बोलना चाहिए।

ऐंथ्वनी : बोर्ड को कुछ नहीं कहना है।

राबर्ट : **(मज़दूरों की पंक्ति की ओर देखकर)** ऐसी दशा में हम डाइरेक्टरों का समय नष्ट नहीं करना चाहते। हमें इस क़ीमती ग़ालीचे पर से अपने पैर उठा लेने चाहिए।

वह घूमता है और मज़दूर भी धीरे-धीरे चलते हैं, मानो सम्मोहित हो गए हों।

वेंकलिन : **(नरमी से)** सुनो राबर्ट, तुमने हमें इस जाड़े-पाले में इतना ही कहने के लिए तो नहीं बुलाया। हमने कितना लम्बा सफ़र किया है।

टामस : **(जो वेल्स का रहने वाला है)** नहीं साहब, और मैं यह कहता हूं—

राबर्ट : **(तीव्र कंठ से)** हां-हां टामस, बोलो क्या कहते हो? डाइरेक्टरों से बातें करने के लिए तुम मुझसे कहीं अच्छे हो।

टामस चुप हो जाता है।

टेंच : सभापति कहते हैं कि मज़दूरों ही ने इस बैठक के लिए कहा था। इसलिए बोर्ड सुनना चाहता है कि वे क्या कहते हैं।

राबर्ट : अगर मैं उनकी दुःख कहानी कहने लगूं तो आज पूरी न होगी। और आप में से कुछ लोग पछताएंगे कि लन्दन के महल छोड़कर न आते तो अच्छा होता।

हार्निस : तुम्हारा मतलब क्या है जी। बेमतलब की बातें न करो।

राबर्ट : आप मतलब की बात चाहते हैं मिस्टर हार्निस, तो आज इस बैठेक के पहिले ज़रा यहां की सैर कीजिए।

वह मज़दूरों की ओर देखता है, उनमें से कोई नहीं बोलता।

तो तुम्हें बड़े अच्छे-अच्छे दृश्य दिखाई देंगे।

हार्निस : बहुत अच्छा दोस्त, मगर देखो टाल मत देना।

राबर्ट : **(मज़दूरों से)** हम लोग मिस्टर हार्निस को टालेंगे नहीं। भोजन के साथ थोड़ी शाम्पेन भी लीजिएगा। आपको इसकी ज़रूरत पड़ेगी।

हार्निस : अच्छा, अब कुछ काम करना चाहिए।

टामस : यह समझ लीजिए कि हम जो कुछ मांगते हैं वह सीधा-सादा न्याय है।

राबर्ट : **(जहरीले स्वर में)** लन्दन से न्याय? क्या बकते हो हेनरी टामस, पागल तो नहीं हो गए हो?

टामस चुप है।

हम खूब जानते हैं कि हम क्या हैं—मरभुखे कुत्ते—जिन्हें कभी संतोष नहीं होता—सभापति ने मुझसे लंदन में क्या कहा था? "तुम जानते ही नहीं कि तुम क्या कह रहे हो। तुम मूर्ख, गंवार आदमी हो। और उन आदमियों के विषय में कुछ नहीं जानते जिनके पक्ष में तुम खड़े हो।"

एडगार : आप तो विषय से दूर चले जा रहे हैं।

ऐंथ्वनी : **(हाथ उठाकर)** राबर्ट, मालिक एक ही हो सकता है।

राबर्ट : तो फिर हम ही मालिक होंगे।

सब चुप हो जाते हैं, ऐंथ्वनी और राबर्ट एक दूसरे से आंखें मिलाते हैं।

अन्डरवुड : राबर्ट, अगर तुम्हें डाइरेक्टरों से कुछ नहीं कहना है, तो ग्रीन या टामस को मज़दूरों की तरफ से क्यों नहीं बोलने देते।

ग्रीन और टामस चिन्तित भाव से राबर्ट को, एक दूसरे को और दूसरे आदमियों को देखते हैं।

ग्रीन : **(जो अंगरेज़ है)** महाशयो, अगर आप लोगों ने मेरी बात मानी होती—

टामस : मुझे जो कुछ कहना है, वही हम सबको कहना है—

राबर्ट : तुम्हें जो कुछ कहना हो कहो, हेनरी टामस।

स्केंटलबरी : **(तीव्र आत्मिक अशांति के भाव से)** ये बेचारे अपनी आत्मा की रक्षा भी नहीं कर सकते।

राबर्ट : और क्या? आत्मा के सिवा उनके पास और है ही क्या? क्योंकि देह का तो आप लोगों ने उद्धार कर दिया, मिस्टर स्केंटलबरी।

चुभती हुई आवाज़ में, मानो मिस्टर का शब्द निकालना ही आपत्ति है।

(मज़दूरों से) क्यों तुम लोग बोलते हो या मैं ही तुम्हारी तरफ़ से बोलूं?

राउस : **(चौंककर)** राबर्ट, या तो तुम्हीं बोलो या दूसरों को ही बोलने दो।

राबर्ट : **(व्यंग्य के भाव से)** धन्यवाद जॉर्ज राउस!

ऐंथ्वनी की तरफ़ रुख़ करके।

सभापति और डाइरेक्टरों के बोर्ड ने हमारी विपत्ति-कथा सुनने के लिए लंदन से यहां आकर हमारा सम्मान किया है। यह उचित नहीं है कि हम उन्हें और देर यहां इन्तज़ार में रक्खें।

वाइल्डर : इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद।

राबर्ट : हमारी कथा सुन लेने के बाद आप ईश्वर को धन्यवाद न देंगे, मिस्टर वाइल्डर, चाहे आप कितने ही बड़े धर्मात्मा हों। सम्भव है आपके लंदनी ईश्वर के पास मज़दूरों की बातें सुनने के लिए समय न हो! मैंने सुना है कि वह ईश्वर बड़ा धनवान है, लेकिन यदि वह मेरी बात सुने तो उससे उसे कहीं ज्यादा ज्ञान होगा जितना कॅंसिंगटन (लंदन में अमीरों का एक महल्ला) में हो सकता है।

हार्निस : देखो राबर्ट, जिस तरह तुम अपने ईश्वर को पूज्य समझते हो, वैसे ही दूसरे आदमियों के ईश्वर को भी समझो।

राबर्ट : यह ठीक है साहब, हमारा यहां दूसरा ही ईश्वर है। मैं समझता हूं कि

वह मिस्टर वाइल्डर के ईश्वर से भिन्न है। हेनरी टामस से पूछो वह बतायेंगे कि उनका और वाइल्डर का ईश्वर एक है या दो।

टामस आपना हाथ उठाता है, और सिर ऊंचा कर लेता है, जैसे कोई भविष्यवाणी कर रहा हो।

वेंकलिन : राबर्ट, ईश्वर के लिए, मूल विषय ही पर रहो।

राबर्ट : मेरे विचार में तो यही मूल विषय है, मिस्टर वेंकलिन। अगर आप धन के ईश्वर को श्रम की गलियों में ले आएं और इसका ध्यान रक्खें कि वह क्या-क्या देखता है, तो मैं आपकी सज्जनता का क़ायल हो जाऊंगा, हालांकि आप रेडिकल (स्वतन्त्रतावादी) हैं।

ऐंथ्वनी : मेरी बात सुनो, राबर्ट,

राबर्ट चुप हो जाता है।

तुम यहां आदमियों की तरफ़ से बोलने आए हो जैसे मैं बोर्ड की तरफ़ से बोलने आया हूं।

वह धीरे-धीरे इधर-उधर ताकता है।

वाइल्डर, वेंकलिन और स्कोंटलबरी विरोध के भाव प्रगट करते हैं और एडगार ज़मीन की तरफ़ ताकता है। हार्निस के चेहरे पर हल्की मुस्कराहट आ जाती है।

अब बोलो तुम क्या कहते हो?

राबर्ट : जी हां ठीक है—

इसके बाद जो कुछ होता है उसमें वह और ऐंथ्वनी एक दूसरे पर आंखें जमाए रहते हैं। मज़दूर लोग और डाइरेक्टर भिन्न-भिन्न रीति से अपने छिपे हुए उद्वेग प्रगट करते हैं, मानो वे ऐसी बातें सुन रहे हैं जो वे खुद न कहते।

मज़दूर लंदन तक जाने की सामर्थ्य नहीं रखते और उन्हें विश्वास नहीं है कि वे जो कुछ लिखकर देंगे उसे आप लोग न मानेंगे। पत्र-व्यवहार का हाल भी उन्हें मालूम है।

वह अन्डरवुड और टेंच को घूरकर देखता है।

और डाइरेक्टरों की बैठकों का हाल भी उनसे छिपा नहीं हैं। मैनेजर से कैफियत तलब करो—मैनेजर से पूछा जाय, कि मज़दूरों की हालत क्या है। क्या हम उन्हें और कुछ दबा सकते हैं?

अन्डरवुड : **(धीमी आवाज़ में)** कमर के नीचे वार मत करो, राबर्ट।

राबर्ट : क्या यह कमर के नीचे है, मिस्टर अन्डरवुड? मज़दूरों से पूछो जब मैं लंदन गया था तो मैंने सब हाल साफ़-साफ़ कह दिया था। पर उसका फल क्या हुआ? मुझसे कह दिया गया कि तुम खुद नहीं जानते क्या कहते हो। मुझमें यह सामर्थ्य नहीं है कि वही बात सुनने के लिए फिर लंदन जाऊं।

ऐंथ्वनी : तुम्हें आदमियों के विषय में क्या कहना है?

राबर्ट : पहिले मुझे उनकी दशा बतलानी है। आप लोगों को इसकी ज़रूरत नहीं है कि मैनेजर से पूछें। अब आप उन्हें और नहीं दबा सकते। हममें से हर एक भूखों मर रहा है।

मज़दूर लोग चकित हो-होकर एक दूसरे के कान में कुछ कहने लगते हैं। राबर्ट चारों तरफ़ देखता है।

आपको आश्चर्य होगा कि मैं यह क्यों कह रहा हूं? हम सभी का बुरा हाल है। इधर कई हफ्तों से हमारी जो दशा है उससे हीन अब हो ही नहीं सकती। आप लोग यह न समझें कि कुछ दिन और अड़े रहने से आप हमें काम करने पर मज़बूर कर देंगे। इसके पहिले हम लोग प्राण दे देंगे। मज़दूरों ने आप लोगों को यह अंतिम सूचना देने को बुलाया है, कि आप लोग उनकी मांगें स्वीकार करते हैं या नहीं? मैं मन्त्री के हाथ में काग़ज का ताव देख रहा हूं।

टेंच कुछ घबरा जाता है।

यह वही है न मिस्टर टेंच? यह तो बहुत बड़ा नहीं है।

टेंच : **(सिर हिलाकर)** हां।

राबर्ट : उस काग़ज़ पर एक वाक्य भी ऐसा नहीं है जिसे हम छोड़ सकें।

आदमियों में कुछ हलचल होती है, राबर्ट चमककर उनकी तरफ़ देखता है।

आप लोग इसे मानते हैं न?

मज़दूर लोग अनिच्छा से स्वीकार करते हैं। ऐंथ्वनी टेंच से कागज़ लेकर पढ़ता है।

एक वाक्य भी नहीं। इनमें से कोई मांग ऐसी नहीं है जो अनुचित कहीं जा सके। हमने कोई बात ऐसी नहीं मांगी है जिसका हमें हक न हो। मैंने लन्दन में जो कुछ कहा था वही अब फिर कहता हूं। उस काग़ज़ पर कोई ऐसी बात नहीं है जिसे मांगने या देने में किसी शरीफ़ आदमी को संकोच हो।

कुछ सोचने लगता है।

ऐंथ्वनी : इस काग़ज़ पर एक मांग भी ऐसी नहीं है, जो हम लोग पूरी कर सकें।

इन शब्दों के बाद जो हलचल मच जाता है, उसमें राबर्ट डाइरेक्टरों को ध्यान से देखता है और ऐंथ्वनी मज़दूरों को। वाइल्डर यकायक उठ जाता है और आग की तरफ़ जाता है।

राबर्ट : यह आप दिल से कहते हैं।

ऐंथ्वनी : हां।

वाइल्डर आग के पास खड़ा स्पष्ट रूप से घृणा का भाव दिखाता है।

रावर्ट : **(गहरी निगाह से देखता हुआ पर उदासीन भाव से)** आप लोग खूब जानते हैं कि कम्पनी की दशा आदमियों की दशा से अच्छी है या नहीं।

डाइरेक्टरों के चेहरों को ग़ौर से देखकर।

आप लोग खूब जानते हैं कि आप यह अन्याय कर सकते हैं या नहीं। लेकिन मैं यह आपसे कहूंगा अगर आप लोग सोचते हैं कि मज़दूर जौ भर भी दबेंगे तो आप लोग भयंकर भूल करते हैं।

स्कैंटलबरी के चेहरे पर आंखें जमा देता है।

यह बड़े शर्म की बात है, कि यूनियन हमारी मदद नहीं कर रहा है। इससे आप लोग यह सोचते होंगे कि हम लोग एक शुभ मुहूर्त में आपके पैरों पर गिर पड़ेंगे। आप लोग सोचते हैं कि इन आदमियों के बाल-बच्चे हैं इसलिए यह दो-एक हफ्तों ही का मामला है—

ऐंथ्वनी : हमारे क्या विचार हैं अगर तुम इसे मन ही में रक्खो तो अच्छा।

रावर्ट : हां, मैं जानता हूं कि इससे हमें कुछ फायदा नहीं हैं। मिस्टर ऐंथ्वनी, मैं आपकी इतनी तारीफ़ तो ज़रूर करूंगा कि आप जो कुछ कहते हैं स्पष्ट कहते हैं।

ऐंथ्वनी की ओर देखकर।

मुझे आपकी ओर से कोई भ्रम नहीं है।

ऐंथ्वनी : **(व्यंग्य से)** धन्यवाद!

रावर्ट : और मैं भी जो कुछ कहता हूं स्पष्ट ही कहता हूं। सुन लीजिए, मज़दूर लोग अपनी बीवी-बच्चों को किसी देहात में भेज देंगे और चाहे भूखों मर जायं, मगर हार न मानेंगे। मैं आपको सलाह देता हूं मिस्टर ऐंथ्वनी, कि आप कम्पनी का सर्वनाश देखने के लिए तैयार रहिए। आप सोचते होंगे कि यह लोग मूर्ख हैं। लेकिन हम हवा का रुख़ देख रहे हैं। आपकी दशा बहुत अच्छी नहीं है।

ऐंथ्वनी : कृपा करके हमारी दशा के बारे में अपनी राय मत प्रगट करो। जाओ और अपनी दशा पर फिर विचार करो।

रावर्ट : **(आगे बढ़कर)** मिस्टर ऐंथ्वनी, अब आप जवान नहीं हैं। जबसे मुझे याद है, आप हमेशा अपने मज़दूरों को शत्रु समझते आए हैं। मैं यह नहीं कहता कि आप कमीने या निर्दयी आदमी हैं, लेकिन आपने कभी उन्हें अपने विषय में एक शब्द कहने का भी अवसर नहीं दिया। आप उन्हें चार बार नीचा दिखा चुके हैं। मैंने यह भी सुना है कि आपको लड़ाई अच्छी लगती है। लेकिन मैं आपसे कहे देता हूं कि यह आपकी आख़िरी लड़ाई है।

टेंच राबर्ट की आस्तीन छूता है।

अन्डरवुड : राबर्ट, राबर्ट!

राबर्ट : क्या राबर्ट-राबर्ट कर रहे हो? जब सभापति अपने मन की बात मुझसे कहते हैं तो मैं क्यों अपनी बात न कहने पाऊं।

वाइल्डर : आज क्या होने वाला है?

ऐंथ्वनी की ओर देखता है।

ऐंथ्वनी : **(वाइल्डर की ओर देखकर दृढ़ता से मुस्कराता है)** हां-हां, कहो राबर्ट, जो कुछ जी में आवे कहो।

राबर्ट : **(जरा ठहरकर)** अब मुझे कुछ नहीं कहना है।

ऐंथ्वनी : यह बैठक पांच बजे तक के लिए स्थगित है।

वेंकलिन : **(अन्डरवुड से धीमी आवाज़ में)** इस तरह तो हम कुछ भी न तय कर सकेंगे।

राबर्ट : **(चुटकी लेकर)** हम सभापति और डाइरेक्टरों को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने दया करके हमारी दशा सुन ली।

वह धीरे-धीरे द्वार की तरफ जाता है। मज़दूर लोग भौंचक्के होकर एक जगह ज़मा हो जाते हैं। तब राउस अपना सिर उठाकर राबर्ट के सामने से होता हुआ बाहर चला जाता है। उसके पीछे और आदमी भी चले जाते हैं।

राबर्ट : **(दरवाज़े पर हाथ रखकर—कटुता से)** बन्दगी साहबो।

चला जाता है।

हार्निस : **(चुटकी लेता हुआ)** आप लोगों ने जो रवादारी का भाव प्रकट किया है, उस पर मैं आपको बधाई देता हूं। आपके आज्ञानुसार में फिर साढ़े पांच बजे आऊंगा। बन्दगी।

वह कुछ सिर झुकाकर ऐंथ्वनी को ध्यान से देखता है। ऐंथ्वनी भी स्थिर भाव से उसकी ओर ताकता है। तब हार्निस और अन्डरवुड दोनों बाहर चले जाते हैं। एक क्षण सन्नाटा छाया रहता है। अन्डरवुड ड्योढ़ी में फिर आता है।

वाइल्डर : **(बुरी तरह चिढ़कर)** अब?

दुहरे दरवाज़े खुल जाते हैं।

एनिड : **(ड्योढ़ी में खड़ी होकर)** भोजन तैयार है।

एडगार यकायक उठकर अपनी बहिन के पास होता हुआ बाहर चला जाता है।

वाइल्डर : क्यों स्केंटलबरी, भोजन करने आते हो?

स्कटलबरी : **(कठिनता से उठकर)** हा-हां, इसके सिवा और क्या करना है।

वे दुहरे दरवाज़े से बाहर चले जाते हैं।

वेंकलिन : **(आहिस्ता से)** क्यों सभापति जी क्या आप सचमुच अंत तक लड़ना चाहते हैं?

ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।

वेंकलिन : होशियार रहिए। कब दबना चाहिए, यह जान लेना सबसे बड़ी सिद्धि है।

ऐंथ्वनी कोई जवाब नहीं देता।

वेंकलिन : (बड़ी गम्भीरता से) यही विनाश का मार्ग है। मिसेज़ अन्डरवुड, तुम्हारे पिता जी ने पुराने ज़माने के ट्रोजनों को भी मात कर दिया।

वह दुहरे दरवाज़े से चला जाता है।

एनिड : मैं पिता जी से कुछ बातें करना चाहती हूं फ्रैंक।

अन्डरवुड और वेंकलिन दोनों बाहर चले जाते हैं। टेंच मेज़ की चारों तरफ़ घूमकर फैले हुए क़लमों और कागज़ों को संभालकर रख रहा है।

एनिड : क्या आप नहीं आ रहे हैं दादा?

ऐंथ्वनी सिर हिलाकर नहीं कहता है। एनिड टेंच की तरफ़ मार्मिक भाव से देखती है।

एनिड : क्यों मिस्टर टेंच, आप कुछ भोजन करने नहीं जा रहे हैं?

टेंच : (हाथ में कागज़ लिए हुए) धन्यवाद!

वह पीछे ताकता हुआ धीरे-धीरे चला जाता है।

एनिड : (दरवाज़े को बन्द करके) दादा, मामला तय हो गया न?

ऐंथ्वनी : नहीं!

एनिड : (बहुत निराश होकर) अरे! क्या आप लोगों ने कुछ नहीं किया?

ऐंथ्वनी सिर हिलाकर नहीं करता है।

एनिड : फ्रैंक कहते हैं कि राबर्ट के सिवा और सबके सब कुछ समझौता करना चाहते हैं। सच!

ऐंथ्वनी : मैं नहीं करना चाहता।

एनिड : हम लोगों के लिए यह स्थिति बहुत ही भयंकर है। अगर आप मैनेजर की स्त्री होते, और यहां का सारा हाल अपनी आंखों से देखते, तो आपकी आंखें खुल जातीं।

ऐंथ्वनी : सच?

एनिड : हमें सारी दुर्गति देखनी पड़ती है। आपको मेरी नौकरानी एनी का ख़्याल आता है, जिसने राबर्ट से विवाह किया था?

ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।

उसकी दशा बहुत ही खराब है। उसको दिल की बीमारी है। जबसे हड़ताल शुरू हुई, उसे ठीक भोजन भी नहीं मिल रहा है। मेरी आंखों देखी बात है, दादा।

ऐंथ्वनी : ग़रीब है बेचारी, उसे जिस चीज़ की ज़रूरत हो दे दो।

एनिड : राबर्ट उसे हम लोगों से कोई चीज़ न लेने देगा।

ऐंथ्वनी : (सामने ताकता हुआ) अगर मज़दूर लोग जान देने पर तुले हैं तो

मेरा क्या दोष है?

एनिड : सबके सब कष्ट में हैं, दादा। मेरी ख़ातिर से इसे बन्द कर दो।

ऐंथ्वनी : **(उसे तीव्र दृष्टि से देखकर)** बेटी, तुम इस बात को न समझ सकोगी।

एनिड : अगर मैं डाइरेक्टर होती, तो कुछ न कुछ ज़रूर ही करती।

ऐंथ्वनी : क्या करती?

एनिड : इस झगड़े का कारण यही है, कि आपको दबना बुरा लगता है। यह बिलकुल—

ऐंथ्वनी : हां-हां कहो।

एनिड : बिलकुल अनावश्यक है।

ऐंथ्वनी : तुम क्या जानती हो कि कौन-सी बात आवश्यक है? अपने उपन्यास पढ़ो, गाना गाओ, गपशप करो, मगर मुझे यह बतलाने की चेष्टा मत करो कि इस टंटे का कारण क्या है?

एनिड : मैं यहां रहती हूं और सब कुछ आंखों से देखती हूं।

ऐंथ्वनी : तुमने कभी सोचा है कि जिन लोगों पर तुम्हें इतनी दया आ रही है, उनके और हमारे बीच में कौन-सी दीवार खड़ी है?

एनिड : **(उदासीनता से)** मैंने आपका मतलब नहीं समझा, दादा।

ऐंथ्वनी : अगर वह लोग जिन्हें ईश्वर ने आंखें दी हैं परिस्थिति को न देखें और अपने हक़ के लिए खड़े होने का साहस न करें तो थोड़े ही दिनों में तुम्हारी और तुम्हारे बाल-बच्चों की दशा इन्हीं आदमियों जैसी हो जायगी।

एनिड : मज़दूरों की जो दशा है उसे आप नहीं जानते।

ऐंथ्वनी : खूब जानता हूं।

एनिड : आप नहीं जानते, दादा; अगर आप जानते तो आप—

ऐंथ्वनी : तुम खुद इस प्रश्न की सीधी-सादी बातों को नहीं जानती हो। अगर हम मज़दूरों की शर्तों को आंखें बन्द करके मानते चले जायं तो समझती हो तुम्हारी क्या दशा होगी? यह दशा होगी।

वह अपना हाथ गले पर रखता है और उसे दबाता है।

पहले तुम्हारे कोमल मनोभाव विदा हो जायेंगे। तुम्हारी सभ्यता और तुम्हारी सुख सामग्रियों का कहीं पता न लगेगा।

एनिड : मैं नहीं चाहती कि समाज में भिन्न-भिन्न श्रेणियां बन जायं।

ऐंथ्वनी : तुम नहीं चाहती—कि समाज में—भिन्न-भिन्न—श्रेणियां बन जायं?

एनिड : **(उदासीनता से)** और मेरी समझ में यह नहीं आता कि इस मामले से उसका क्या सम्बन्ध है।

ऐंथ्वनी : यह समझने के लिए तुम्हें एक या दो पुश्त चाहिए।

एनिड : यह सब कुछ आप और राबर्ट के कारण हो रहा है दादा, और आप इसे जानते हैं।

ऐंथ्वनी अपना नीचे का होंठ निकाल लेता है।

इससे कम्पनी का सर्वनाश हो जायगा।

ऐंथ्वनी : इस विषय में मैं तुम्हारी राय नहीं मांगता।

एनिड : **(चिढ़कर)** यह मुझसे नहीं हो सकता कि राबर्ट की स्त्री यों कष्ट भोगे और मैं खड़ी तमाशा देखती रहूं और दादा, बच्चों का भी तो ख़्याल कीजिए। मैं आपको जताए देती हूं।

ऐंथ्वनी : **(निर्दयता से मुस्कराकर)** आखिर तुम्हारी क्या मंशा है?

एनिड : इसे आप मुझ पर छोड़ दीजिए।

ऐंथ्वनी केवल उसकी ओर ताकता है।

एनिड : **(बदली हुई आवाज़ में उसकी आस्तीन खींचती हुई)** दादा, आपको मालूम है यह चिन्ता आपके लिए हानिकारक है। आपको याद है डॉक्टर फ़िशर ने क्या कहा था?

ऐंथ्वनी : कोई बूढ़ा आदमी बूढ़ी औरतों की-सी बातें सुनना पसंद नहीं करता।

एनिड : लेकिन अगर आपके लिए यह सिद्धान्त की ही बात हो तब भी आप बहुत कुछ कर चुके।

ऐंथ्वनी : तुम्हारा यह ख़याल है!

एनिड : अब इन बातों में न पड़िए दादा, आपको हमारा ख़याल करना चाहिए।

उसके चेहरे से याचना का भाव प्रकट होता है।

ऐंथ्वनी : रखता हूं।

एनिड : यह भार आप सह न सकेंगे।

ऐंथ्वनी : **(आहिस्ता से)** मैं अभी मरूंगा नहीं विश्वास रक्खो।

टेंच कागज़ लेकर फिर आता है। वह उनकी तरफ़ कनखियों से देखता है तब हिम्मत करके आगे बढ़ता है।

टेंच : क्षमा कीजिएगा, मैडम; मैंने सोचा खाना खाने के पहले इन कागज़ों को निबटा दूं।

एनिड उकताकर उसी तरफ़ देखती है, तब अपने बाप की ओर देखकर यकायक लौट पड़ती है, और दीवानखाने में चली जाती है।

टेंच : **(बहुत डरता हुआ ऐंथ्वनी के सामने कागज और कलम रखता है।)** कृपा कर इन कागज़ों पर दस्तख़त कर दीजिए।

ऐंथ्वनी कलम लेकर दस्तख़त करता है।

टेंच : **(सोख़ते का एक टुकड़ा लिए एडगार की कुर्सी के पीछे खड़ा हो जाता है और डरते-डरते बोलना शुरू करता है।)** यहां मुझे हुजूर ही ने नौकर रक्खा।

ऐंथ्वनी : क्या बात है?

टेंच : यहां जो कुछ होता है वह सब मुझे देखना पड़ता है। कम्पनी ही मेरा आधार है। अगर इसमें कुछ गड़बड़ हुआ तो मैं कहीं का न रहूंगा।

ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।

और मेरे घर में हाल ही में दूसरा बच्चा हुआ है, इसलिए इस समय मैं और भी चिन्तित हूं। हमारी तरफ बाजार का भाव भी बड़ा तेज़ है।

ऐंथ्वनी : **(कठोर विनोद के साथ)** हमारी तरफ़ भी तो बाज़ार भाव उतना ही तेज है।

टेंच : जी नहीं। **(बहुत डरकर)** मुझे मालूम है कि कम्पनी की आप को बड़ी चिन्ता है।

ऐंथ्वनी : हां है। मैंने ही इसे खोला था।

टेंच : जी हां। अगर हड़ताल जारी रही तो बहुत बुरा होगा। मैं समझता हूं कि डाइरेक्टरों की समझ में अब यह बात आने लगी है।

ऐंथ्वनी : **(व्यंग्य से)** सच?

टेंच : मैं जानता हूं कि इस विषय में आपके विचार बड़े कट्टर हैं और कठिनाइयों का सामना करना आपकी आदत है, लेकिन मैं समझता हूं कि डाइरेक्टर लोग इसे पसंद नहीं करते क्योंकि अब उन्हें असली हाल मालूम होने लगा है।

ऐंथ्वनी : **(कठोरता से)** शायद तुम्हें भी पसंद न होगा।

टेंच : **(फीकी हंसी के साथ)** यह बात नहीं है, हुजूर। मेरे बाल-बच्चे अवश्य हैं, और पत्नी भी बीमार है। मेरी दशा में इन बातों का ख़्याल करना लाचारी है।

ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।

लेकिन मैं यह नहीं कह रहा था, अगर आप मुझे क्षमा करें।

हिचकता है।

ऐंथ्वनी : तो फिर कहते क्यों नहीं?

टेंच : मेरे पिता मुझसे कहा करते थे कि आदमी जब बुड्ढा हो जाता है तो उसके दिल पर हरेक बात का गहरा असर पड़ता है।

ऐंथ्सनी : **(पिता भाव से)** क्या कहते हो टेंच, कहो?

टेंच : मुझे कहते अच्छा नहीं लगता, हुजूर।

ऐंथ्वनी : **(कठोरता से)** तुमको बतलाना पड़ेगा।

टेंच : **(ज़रा दम लेकर निर्भयता से बोलता हुआ)** मेरा ख़याल है कि डाइरेक्टर लोग आपको दग़ा देंगे।

ऐंथ्वनी : **(चुपचाप बैठा रहता है)** घंटी बजाओ।

टेंच डरता हुआ घंटी बजाता है, और आग के पास खड़ा हो जाता है।

टेंच : यह बात कहने के लिए मुझे क्षमा कीजिए। मैं केवल आपके ख़्याल से कह रहा था।

फ्रास्ट बड़े कमरे से आता है, वह मेज़ के पाए के पास आता है, और ऐंथ्वनी की तरफ़ देखता है। टेंच अपनी घबराहट

को छिपाने के लिए कागज़ों को संभालने लगता है।

ऐंथ्वनी : मेरे लिए ह्विस्की और सोडा लाओ।

फ्रास्ट : खाने के लिए भी कुछ लाऊं, हुजूर?

ऐंथ्वनी सिर हिलाकर नहीं करता है—फ्रास्ट छोटी मेज़ के पास जाता है और शराब तैयार करता है।

टेंच : (धीमी आवाज़ में बिलकुल गिड़गिड़ाकर) अगर आप कोई समझौता कर लेते, तो मेरा चित्त बहुत कुछ शान्त हो जाता।

वह सिर उठाकर ऐंथ्वनी को देखता है, जो स्थिर भाव से बैठा रहता है।

सचमुच इससे मुझे बड़ी चिन्ता हो रही है। मुझे कई हफ्तों से अच्छी नींद नहीं आई।

ऐंथ्वनी उसके चेहरे की ओर ताकता है, तब धीरे से सिर हिलाता है।

टेंच : (निराश होकर) आपको मंजूर नहीं है?

वह कागज़ों को संभालता रहता है। फ्रास्ट ह्विस्की और सोडा एक किश्ती में लाता है और ऐंथ्वनी के दाहिने हाथ के पास रख देता है। वह ऐंथ्वनी को चिन्तित आंखों से देखकर अलग खड़ा हो जाता है।

फ्रास्ट : क्या आप कोई चीज़ न खायेंगे?

ऐंथ्वनी सिर हिलाकर नहीं करता है।

आपको मालूम है कि डॉक्टर ने आप से क्या कहा था?

ऐंथ्वनी : हां, मालूम है।

फ्रास्ट यकायक उसके समीप चला जाता है, और धीमी आवाज़ में बोलता है।

फ्रास्ट : हुजूर, इस हड़ताल ने आपको बहुत चिन्ता में डाल रक्खा है। आप नाहक़ इसके पीछे इतने हैरान हो रहे हैं।

ऐंथ्वनी कुछ शब्द मुंह से निकालता है जो सुनाई नहीं देते।

बहुत अच्छा, हुजूर।

वह घूमकर हॉल में चला जाता है। टेंच दोबारा बोलने की चेष्टा करता है, लेकिन सभापति से आंखें मिल जाने के कारण आंखें नीची कर लेता है। तब उदास भाव से घूमकर वह भी चला जाता है। ऐंथ्वनी अकेला रहा जाता है। वह गिलास उठाता है, उसे हिलाता है, और एक सांस में पी जाता है। तब गहरी सांस लेकर उसे रख देता है और अपनी कुर्सी पर तकिया लगा लेता है।

परदा गिरता है।

अंक 2

दृश्य पहला

[साढ़े तीन बजे हैं। राबर्ट के झोंपड़े के रसोईघर में धीमी आग जल रही है। कमरा साफ़ और सुथरा है। ईंट का फर्श है, सफ़ेद पुती हुई दीवारें हैं, जो धुएं से काली हो गई हैं। सजावट के सामान बहुत थोड़े हैं। चूल्हे के सामने एक दरवाज़ा है जो अन्दर की तरफ़ खुलता है। दरवाज़े के सामने बर्फ़ से भरी हुई गली है। लकड़ी की मेज़ पर एक प्याला और एक तश्तरी, एक चायदान, छुरी और रोटी और पनीर की एक रकाबी रक्खी हुई है। चूल्हे के पास एक पुरानी आरामकुर्सी है जिस पर एक चीथड़ा लपेटा हुआ है। उस पर मिसेज़ राबर्ट बैठी हुई हैं। वह एक दुबली और काले बालों वाली औरत है, अवस्था पैंतीस के लगभग होगी। आंखों से दीनता बरसती है। उसके बालों में कंघी नहीं की हुई है, पीछे की तरफ़ एक फीते से बांध दिए गए हैं। आग के पास ही मिसेज़ यो हैं। उसके बाल लाल और मुंह चौड़ा है। मेज के पास मिसेज राउस बैठी हैं। वह एक बुड्ढी औरत है, बिल्कुल सफेद, बाल सन हो गए हैं। दरवाज़े के पास मिसेज बल्जिन इस तरह खड़ी है मानो जाने वाली हो। वह एक छोटी-सी पीले रंग की दुबली-पतली औरत है। एक कुर्सी पर कुहनियों को रक्खे और चेहरे को हाथों से थामे मेज टामस बैठी हुई है। वह बाईस साल की रूपवती स्त्री है। उसके गाल की हड्डियां ऊंची हैं, आंखें गहरी, और बाल काले और उलझे हुए। वह न बोलती है, न हिलती है, केवल बातें सुन रही है।]

मिसेज़ यो : बस, उसने मुझे छः पेन्स दिये और इस हफ्ते में मुझे पहिली बार इन्हीं पैसों के दर्शन हुए। यह आग बहुत मन्द है। मिसेज़ राउस, आकर हाथ पैर सेंक लो। तुम्हारा चेहरा बर्फ की तरह सफेद हो गया है, सच!

मिसेज़ राउस : **(कांपती हुई शान्त भाव से)** होगा। लेकिन असली सर्दी तो उसी साल पड़ी जिस दिन मेरे बूढ़े पति यहां नौकर हुए। 79 का साल था जबकि तुममें से किसी का जन्म भी न हुआ होगा, न मेज टामस का, न मिसेज़ बल्जिन का।

उनकी ओर बारी-बारी से देखती है।

क्यों एनी राबर्ट, उस वक्त तुम्हारी क्या उम्र थी?

मिसेज़ राबर्ट : सात साल!

मिसेज़ राउस : बस सात साल। तब तो तुम बिलकुल बच्ची थीं।

मिसेज़ यो : **(घमंड से)** मेरी उम्र दस साल की थी। मुझे याद है।

मिसेज़ राउस : **(शान्त भाव से)** तब कम्पनी को खुले हुए तीन साल भी न हुए थे। दादा तेजाब घर में काम करते थे। वहीं उनकी टांग सड़ गई थी। मैं उनसे कहती थी, दादा, तुम्हारी टांग सड़ गई है; वह कहते थे सड़े या गले, मैं खाट पर नहीं पड़ सकता। और दो दिन के बाद उन्होंने खाट पकड़ ली और फिर न उठे। ईश्वर की मर्ज़ी थी। तब हर्जाने वाला क़ानून न था।

मिसेज़ यो : क्या उस जाड़े में कोई हड़ताल नहीं हुई थी?

फिर विकट हास्य के भाव से।

यह जाड़ा तो मेरे लिए बहुत बुरा है। क्यों मिसेज़ राबर्ट, सर्दी खूब पड़ रही है या अभी जी नहीं भरा? क्यों मिसेज़ बल्जिन, भूख लगी है न?

मिसेज़ बल्जिन : चार दिन हुए हमने रोटी और चाय खाई थी।

मिसेज़ यो : शुक्र की धुलाई वाला काम तुम्हें मिला या नहीं?

मिसेज़ बल्जिन : **(दुःखी होकर)** उन्होंने मुझे काम देने का वायदा तो किया था, लेकिन जब मैं शुक्रवार को गई तो कोई जगह ही न थी। अब मुझे अगले हफ्ते में फिर जाना है।

मिसेज़ यो : अच्छा! वहां भी आदमियों की भरमार है। मैं तो यो को बर्फ़ के मैदान में भेज देती हूं कि अमीरों को बर्फ पर चलाएं—जो कुछ मिल जाय वही सही। उन्हें घर की चिन्ता से तो छुट्टी मिल जाती है।

मिसेज़ बल्जिन : **(रूखी और उदास आवाज़ से)** मर्दों को तो जाने दो, लड़कों का हाल और भी बुरा है। मैं तो उन्हें सुला देती हूं। पड़े रहने से भूख कुछ कम लगती है, लेकिन रो-रोकर सब नाक में दम कर देते हैं।

मिसेज़ यो : तुम्हारे लिए तो इतनी कुशल है कि बच्चे छोटे-छोटे हैं। जो पढ़ने जाते हैं उन्हें तो और भी भूख लगती है। क्या बल्जिन तुम्हें कुछ नहीं देते?

मिसेज बल्जिन : **(सिर हिलाकर नहीं करती है, तब कुछ सोचकर)** कुछ बस ही नहीं चलता तो क्या करें?

मिसेज यो : **(बनावट से)** क्या कम्पनी में उनके हिस्से नहीं हैं?

मिसेज राउस : **(उठकर कांपती हुई, किन्तु प्रसन्नमुख से)** अच्छा अब चलती हूं, एनी राबर्ट।

मिसेज़ राबर्ट : ठहरो, जरा चाय तो पीती जाओ।

मिसेज़ राउस : **(कुछ मुस्कराकर)** राबर्ट आएगा तो वह भी तो चाय पिएगा। मैं तो जाकर खाट पर पड़ी रहूंगी। खाट ही पर बदन में गर्मी आवेगी।

लड़खड़ाती हुई द्वार की ओर चलती है।

मिसेज़ यो : **(उठकर उसे हाथ का सहारा देती हुई)** आओ अम्मां, मेरा हाथ पकड़ लो। यही तो हम सब की गति होगी।

मिसेज़ राउस : **(हाथ पकड़कर)** अच्छा, खुश रहो बेटियो!

दोनों चली जाती हैं, पीछे मिसेज़ बल्जिन भी जाती है।

मेज : **(अब तक चुप रहने के बाद बोलती है)** देखा एनी। मैंने जॉर्ज राउस से कहा—जब तक यह हड़ताल बन्द न हो जाय मेरे पीछे न पड़ो। तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम्हारी मां मर रही है और घर में लकड़ी का नाम नहीं। हम चाहे भूखों मर ही जायं लेकिन तुम्हें तम्बाकू पीने को चाहिए। उसने कहा—'मेज, मैं क़सम खाता हूं कि इन तीन हफ्तों से न तम्बाकू की सूरत देखी न शराब की।' मैंने कहा, फिर क्यों अपनी ज़िद पर अड़े हुए हो? बोला, 'मैं राबर्ट की बात को नहीं दुलख सकता।' बस जहां देखो राबर्ट-राबर्ट! अगर वह न बोले, तो आज हड़ताल बन्द हो जाय। उसकी बातें सुनकर सबों पर नशा चढ़ जाता है।

वह चुप हो जाती है। मिसेज़ राबर्ट के मुख से दुःख का भाव प्रगट होता है।

तुम यह कब चाहोगी कि राबर्ट हार जाय। वह तुम्हारा स्वामी है। साये की तरह सबके पीछे लगा रहता है।

मिसेज़ राबर्ट की ओर देखकर मुंह बनाती है।

जब तक राउस राबर्ट से अलग न हो जायगा, मैं उससे बात न करूंगी। अगर वह उसका साथ छोड़ दें, तो फिर सब छोड़ दें। सब यही चाह रहे हैं कि कोई आगे चले। दादा उनसे बिगड़े हुए हैं—सबके सब मन में उन्हें गालियां देते हैं।

मिसेज़ राबर्ट : तुम्हें राबर्ट से इतनी चिढ़ है।

दोनों चुपचाप एक दूसरे की ओर ताकती हैं।

मेज : क्यों न चिढ़ूं? जिनकी मां और बच्चे इधर-उधर ठोकरें खाते फिरते हों उन्हें यह ज़िद शोभा नहीं देती—सब कायर हैं।

मिसेज़ राबर्ट : मेज!

मेज : **(मिसेज़ राबर्ट को चुभती हुई आंखों से देखकर)** समझ में नहीं आता तुम्हें कैसे मुंह दिखाता है।

आग के सामने बैठकर हाथ सेंकती है।

हार्निस फिर आ गया। आज सबों को कुछ न कुछ निश्चय करना पड़ेगा।

मिसेज़ राबर्ट : **(नर्म, धीमी आवाज़ में)** राबर्ट इंजीनियरों और भट्टीवालों का पक्ष न छोड़ेगे। यह उचित नहीं है।

मेज : मैं इन बातों में नहीं आने की। यह उसका घमंड है!

कोई द्वार खटखटाता है। दोनों औरतें घूमकर उधर देखती हैं। एनिड अन्दर आती है। वह एक गोल ऊन की टोपी पहिने हुए हैं, और गिलहरी की खाल का एक जाकिट। वह दरवाज़ा बन्द करके आती है।

एनिड : मैं अन्दर आऊं, ऐनी!

मिसेज़ राबर्ट : **(झिझककर)** आप हैं मिस एनिड! मेज, मिसेज़ अंडरवुड को कुर्सी दो।

मेज एनिड को वही कुर्सी देती है जिस पर आप बैठी हुई थी।

एनिड : धन्यवाद! अब तबीयत कुछ अच्छी है?

मिसेज़ राबर्ट : हां मालकिन, अब तो कुछ अच्छी हूं।

एनिड : **(मेज की ओर इस तरह देखती है, मानो-उससे कह रही है, तुम चली जाओ)** तुमने मुरब्बे क्यों लौटा दिए? यह तुमने अच्छा नहीं किया।

मिसेज़ राबर्ट : आपने मुझ पर बड़ा अनुग्रह किया, लेकिन मुझे उसकी ज़रूरत नहीं थी।

एनिड : ठीक है। यह राबर्ट की करतूत होगी। है न? तुम लोगों को इतना कष्ट सहते उनसे कैसे देखा जाता है।

मेज : **(चौंककर)** कैसा कष्ट?

एनिड : **(चकित होकर)** क्या मैं कुछ झूठ कहती हूं?

मेज : कौन कहता है कि हमें कष्ट है?

मिसेज़ राबर्ट : मेज!

मेज : **(अपना शाल सिर पर डालकर)** हमारे बीच में बोलने वाली आप कौन होती हैं? हम नहीं चाहते कि आप हमारे घर में आकर ताक-झांक करें।

एनिड : **(उसे क्रोध से देखकर लेकिन बग़ैर उठे हुए)** मैं तुमसे नहीं बोलती।

मेज : **(गुस्से से भरी हुई, नीची आवाज़ में)** आपका दया-भाव आपको मुबारक रहे। आप समझती हैं कि आप हम लोगों में मिल सकती हैं। लेकिन यह आपकी भूल है। जाकर मैनेजर साहब से कह देना।

एनिड : **(कठोर स्वर में)** यह तुम्हारा घर नहीं है।

मेज : **(द्वार की ओर घूमकर)** नहीं यह मेरा घर नहीं है। मेरे मकान में कभी न आइयेगा।

वह चली जाती है, एनिड कुर्सी को उंगलियों से खटखटाती है।

मिसेज़ राबर्ट : मेज टामस को क्षमा कीजिए, हुजूर! वह आज बहुत दुःखी है।

राबर्ट : **(यकायक कठोर होकर)** मेरे पास कुछ सुनने के लिए समय नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट : डेविड!

एनिड : बहुत कम समय लूंगी, मि. राबर्ट।

राबर्ट : **(कोट उतारकर)** मुझे खेद है कि मैं एक महिला की–मिस्टर ऐंथ्वनी की बेटी की बात भी नहीं सुन सकता।

एनिड : **(दुबिधे में पड़ जाती है फिर यकायक दृढ़ होकर)** मिस्टर राबर्ट, मैंने सुना है कि मजूरों की दूसरी सभा होने वाली है।

राबर्ट सिर झुकाकर स्वीकार करता है।

मैं आपके पास भिक्षा मांगने आई हूं। ईश्वर के लिए कुछ समझौता करने की चेष्टा करो। थोड़ा-सा दब जाओ चाहे अपनी ही खातिर क्यों न दबना पड़े।

राबर्ट : **(आप ही आप)** मिस्टर ऐंथ्वनी की बेटी मुझसे यह कहती हैं कि कुछ दब जाऊं, चाहे अपनी खातिर क्यों न हो।

एनिड : सब की खातिर, अपनी पत्नी की ख़ातिर।

राबर्ट : अपनी पत्नी की ख़ातिर, सबकी ख़ातिर, मिस्टर ऐंथ्वनी की ख़ातिर।

एनिड : आपको मेरे पिता से क्यों इतनी चिढ़ है? उन्होंने तो आपसे कभी कुछ नहीं कहा।

राबर्ट : कभी कुछ नहीं कहा?

एनिड : जिस तरह आप अपनी राय नहीं बदल सकते उसी तरह वह भी अपनी राय नहीं बदल सकते।

राबर्ट : अच्छा! मुझे यह आज मालूम हुआ कि मेरी भी कोई राय है।

एनिड : वह बूढ़े आदमी हैं और आप–

उसको अपनी तरफ़ ताकते देखकर वह रुक जाती है।

राबर्ट : **(आवाज़ ऊंची किए बग़ैर)** अगर मैं मिस्टर ऐंथ्वनी को मरते देखूं और मेरे हाथ उठाने से उनकी जान बचती हो, तो भी मैं एक उंगली न हिलाऊंगा।

एनिड : आप-आप!

वह रुक जाती है और अपने होंठ काटने लगती है।

राबर्ट : हां, मैं एक उंगली भी न उठाऊंगा, और यह सच है।

एनिड : **(रुखाई से)** यह तुम ऊपरी मन से कह रहे हो।

राबर्ट : नहीं, मैं दिल से कह रहा हूं।

एनिड : लेकिन क्यों ऐसा कहते हो?

राबर्ट : **(चमककर)** इसलिए कि मिस्टर ऐंथ्वनी अन्याय का झंडा उठाए हुए हैं।

एनिड : वाहियात बात।

मिसेज़ राबर्ट उठने की चेष्टा करती है लेकिन अपनी कुर्सी पर गिर पड़ती है।

एनिड : **(तेज़ी से आगे बढ़कर)** एनी!

राबर्ट : मैं नहीं चाहता कि आप मेरी पत्नी की देह में हाथ लगायें।

एनिड : **(एक प्रकार की घृणा से पीछे हटकर)** मैं समझती हूं कि तुम पागल हो गए हो।

राबर्ट : एक पागल आदमी का घर किसी महिला के लिए अच्छी जगह नहीं है।

ऐनिड : मैं तुमसे डरती नहीं।

राबर्ट : **(सिर झुकाकर)** मिस्टर ऐंथ्वनी की बेटी भला किसी से डर सकती है। मिस्टर ऐंथ्वनी उनमें से दूसरों की तरह कायर नहीं हैं।

एनिड : **(चौंककर)** तो शायद तुम इस झगड़े को बढ़ाए रखना वीरता समझते हो।

राबर्ट : या मिस्टर ऐंथ्वनी ग़रीब स्त्रियों और बच्चों की गरदन पर छुरी चलाना वीरता समझते हैं? मैं समझता हूं मिस्टर ऐंथ्वनी धनी आदमी हैं। क्या वह उन लोगों से लड़ने में अपनी बहादुरी समझते हैं जो दाने-दाने को मुहताज़ हैं? क्या वे इसे बहादुरी समझते हैं कि बच्चों को दुःख से रुलाया जाय और औरतें सर्दी के मारे ठिठुरें।

एनिड : **(अपना हाथ उठाकर मानो कोई वार बचा रही है)** मेरे पिता जी अपने सिद्धान्त पर चल रहे हैं। और आप इसे जानते हैं।

राबर्ट : मैं भी वही कर रहा हूं।

एनिड : आप हमें शत्रु समझते हैं, और अपनी हार मानते आपकी कोर दबती है।

राबर्ट : मिस्टर ऐंथ्वनी भी तो हार नहीं मानते। चाहे मुंह से कुछ ही क्यों न कहें।

एनिड : बहरहाल आपको अपनी पत्नी पर दया करनी चाहिए।

मिसेज़ राबर्ट जो कि छाती को हाथ से दबाए हुए है, हाथ उठा लेती है, और सांस रोकना चाहती है।

राबर्ट : इसके सिवा मुझे और कुछ नहीं कहना है।

वह रोटी उठा लेता है, दरवाज़े की कुंडी खटकती है और अंडरवुड अन्दर आता है। वह खड़ा होकर उनकी तरफ ताकता है। एनिड फिरकर उसकी तरफ देखती है, और दुबिधे में पड़ जाती है।

अंडरवुड : एनिड!

राबर्ट : **(व्यंग्य से)** आपको अपनी बीवी के लिए यहां आने की ज़रूरत न थी, मिस्टर अंडरवुड। हम शोहदे नहीं है।

अंडरवुड : इतना मालूम है, राबर्ट। मिसेज़ राबर्ट तो अच्छी हैं।

राबर्ट बिना जवाब दिए मुंह फेर लेता है।

आओ एनिड।

एनिड : मिस्टर राबर्ट, मैं आपकी पत्नी की ख़ातिर एक बार आपसे फिर विनय करती हूं।

राबर्ट : **(मीठी छुरी चलाकर)** अगर आप बुरा न मानें तो अपने पिता और स्वामी की ख़ातिर यह विनय कीजिए।

एनिड जवाब देने की इच्छा को दबाकर चली जाती है। अंडरवुड दरवाज़ा खोलता है, और उसके पीछे-पीछे चला जाता है। राबर्ट आग के पास जाता है, और उठती हुई चिंगारियों के सामने हाथ उठाता है।

राबर्ट : कैसा जी है, प्रिये? अब तो कुछ अच्छी हो न?

मिसेज़ राबर्ट कुछ मुस्कराती है। वह अपना ओवरकोट लाकर उसे उढ़ा देता है।

घड़ी की तरफ देखकर

चार बजने में दस मिनट हैं।

मानो उसे कोई बात सूझ जाती है।

मैंने उनके चेहरे देखे हैं, उस बुड्ढे डाकू के सिवा और किसी में दम नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट : जरा ठहर जाव और कुछ खा लो डेविड, आज तो तुमने दिन भर कुछ नहीं खाया।

राबर्ट : **(गले पर हाथ रखकर)** जब तक ये भेड़िए यहां से चले न जायंगे मुझसे कुछ न खाया जायगा।

इधर से उधर टहलता है।

मुझे मजूरों से अभी बहुत माथा-पच्ची करनी पड़ेगी। किसी में हिम्मत नहीं है। सब कायर हैं। बिलकुल अन्धे। कल की किसी को फिकर ही नहीं।

मिसेज़ राबर्ट : यह सब औरतों के कारण हो रहा है, डेविड।

राबर्ट : हां, औरतों को ही वह सब बदनाम करते हैं। जब अपना पेट कां कूं करता है, तो औरतों की याद आती है। औरत उन्हें शराब पीने से नहीं रोकती। लेकिन एक शुभ कार्य में जब कुछ तकलीफ़ होती है तो चट औरतों की दुहाई देने लगते हैं।

मिसेज़ राबर्ट : लेकिन उनके बच्चों का तो ख़्याल करो, डेविड।

राबर्ट : अगर वे गुलाम पैदा करते चले जायं और जिन्हें पैदा करते हैं उनके भविष्य की कुछ भी चिन्ता न करें—

मिसेज़ राबर्ट : **(सांस भरकर)** बस रहने दो डेविड, उसकी चर्चा ही मत करो। मुझसे

नहीं सुना जाता। मैं नहीं सुन सकती।

राबर्ट : सुनो, जरा सुनो।

मिसेज़ राबर्ट : **(हांफती हुई)** नहीं-नहीं, डेविड, मुझसे मत कहो।

राबर्ट : हैं-हैं! तबियत को संभालो।

व्यथित होकर

मूर्ख, बुरे दिन के लिए एक पैसा भी नहीं रखते। जानते ही नहीं । कौड़ी कफन को नहीं। इन्हें खूब जानता हूं, इनकी दशा देखकर मेरा दिल टूट गया है। शुरू-शुरू में तो सब क़ाबू में न आते थे लेकिन अब सबों ने हिम्मत हार दी।

मिसेज़ राबर्ट : तुम यह आशा कैसे कर सकते हो, डेविड, ये भी तो आदमी हैं।

राबर्ट : कैसे आशा करूं? जो कुछ मैं कर सकता हूं उसकी आशा दूसरों से भी कर सकता हूं। मैं तो चाहे भूखों मर जाऊं सिर कभी न झुकाऊंगा। जो काम एक आदमी कर सकता है, वह दूसरा आदमी भी कर सकता है।

मिसेज़ राबर्ट : और औरतें कहां जायेंगी?

राबर्ट : यह औरतों का काम नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट : **(द्वेष के भाव से चमककर)** नहीं, औरतें मरा करें, तुम्हें उनकी क्या परवाह। जान दे देना ही उनका काम है।

राबर्ट : **(आंख हटाकर)** मरने की कौन बात है, कौन नहीं मरेगा जब तक हम इनको मजा न चखा देंगे।

दोनों की आंखें फिर मिल जाती हैं, और वह फिर अपनी आंख हटा लेता है।

इतने दिनों से इसी अवसर पर इन्तजार कर रहा हूं कि इन डाकुओं को नीचा दिखाऊं। और सब के सब अपना सा मुंह लिए घर लौट जायं। मैं उनकी सूरत देख चुका हूं। विश्वास मानो सब घुटने टेकने को तैयार हैं।

खूंटी के पास जाकर अपना कोट उतार लेता है।

मिसेज़ राबर्ट : **(उसके पीछे आंखें लगाए हुए नर्मी से)** अपना ओवरकोट ले लो डेविड, बाहर बड़ी ठण्ड होगी।

राबर्ट : **(उसके पास आकर आंखें चुराए हुए)** नहीं-नहीं, चुपचाप लेटी रहो मैं बहुत जल्द आऊंगा।

मिसेज़ राबर्ट : **(व्यथित होकर किन्तु कोमल भाव से)** तुम इसे लेते ही क्यों न जाओ।

वह कोट उठाती है, लेकिन राबर्ट उसे फिर उड़ा देता है। वह उससे आंखें मिलाना चाहता है लेकिन नहीं मिला सकता। मिसेज़ राबर्ट कोट में लिपटी हुई पड़ी रहती है। उसकी

एनिड : **(उसकी ओर देखकर)** उसकी क्या बात है, मैं तो समझती हूं सब के सब मूर्ख हैं, काठ के उल्लू।

मिसेज़ राबर्ट : **(कुछ मुस्कराकर)** हैं तो।

एनिड : क्या राबर्ट बाहर गए हैं?

मिसेज़ राबर्ट : जी हां!

एनिड : यह उन्हीं की करतूत है कि कोई बात तय नहीं होती। झूठ तो नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट : **(एनिड की ओर ताकती हुई और एक हाथ की उंगलियों को अपनी छाती पर हिलाते हुए)** लोग कहते हैं कि तुम्हारे बाप....

एनिड : मेरे बाप अब बुड्ढे हो गए हैं और तुम बुड्ढे आदमियों का स्वभाव जानती हो।

मिसेज़ राबर्ट : मुझे खेद है कि मैंने यह बात छेड़ी।

एनिड : **(और नर्मी से)** तुमने वाजिबी बात कही। तुमको इसका खेद क्यों हो? मैं जानती हूं कि इसमें राबर्ट का भी दोष है और मेरे पिता का भी।

मिसेज़ राबर्ट : मुझे बूढ़े आदमियों पर दया आती है हुजूर। बुढ़ापे से ईश्वर बचाए। मैं तो मिस्टर ऐंथ्वनी को हमेशा बहुत ही नेक आदमी समझती थी।

एनिड : **(भावुकता से)** तुम्हें याद नहीं है वह तुम्हें कितना चाहते थे? अब बतलाओ एनी मैं क्या करूं? मुझे कोई नहीं बताता। तुम्हें जिन चीज़ों की ज़रूरत है वह यहां एक भी मयस्सर नहीं।

आग के पास जाकर वह डेगची उतार लेती है और कोयला ढूंढ़ने लगती है।

और तुम इतनी मनहूस हो कि झोल और सारी चीज़ें लौटा दीं।

मिसेज़ राबर्ट : **(कुछ मुस्कराकर)** हां हुजूर!

एनिड : **(झुंझलाकर)** क्या तुम्हारे यहां कोयला भी नहीं है?

मिसेज़ राबर्ट : कृपा करके पतीली को फिर ऊपर रख दो। राबर्ट आयेंगे तो उन्हें चाय के लिए देर हो जायगी। चार बजे उन्हें मजूरों से मिलना है।

एनिड : **(डेगची ऊपर रखकर)** इसका अर्थ यह है कि वह फिर मजूरों का मिज़ाज गर्म कर देंगे। क्यों एनी, तुम उनको मना नहीं कर सकतीं?

मिसेज़ राबर्ट दीन भाव से मुस्कराती है।

तुमने कभी आज़माया है?

ऐनी कोई उत्तर नहीं देती।

क्या वह जानते हैं कि तुम्हारी क्या हालत है?

मिसेज़ राबर्ट : मेरा दिल कमज़ोर है, हुज़ूर और कोई बीमारी नहीं है।

एनिड : जब तुम हमारे साथ थीं तब तो तुम्हें कोई रोग न था।

मिसेज़ राबर्ट : **(गर्व से)** राबर्ट मुझ पर बड़ी दया रखते हैं?

एनिड : लेकिन तुम्हें जिस चीज़ की ज़रूरत हो, वह मिलनी चाहिए और तुम्हारे पास कुछ नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट : **(विनीत भाव से)** सब यही कहते हैं, कि तुम्हारी सूरत मरने वालों की-सी नहीं है।

एनिड : बेशक नहीं है। अगर तुम्हें अच्छा भोजन—अगर तुम चाहो तो मैं डॉक्टर को तुम्हारे पास भेज दूं? उनकी दवा से तुम्हें अवश्य लाभ होगा।

मिसेज़ राबर्ट : **(कुछ आपत्ति करके)** हां हुजूर!

एनिड : मेज टामस को यहां मत आने दिया करो, वह तुम्हें और दिक़ करती है। मुझसे मजूरों की कौन-सी बात छिपी है? मुझे उनकी दशा देखकर बड़ा दुःख होता है, लेकिन तुम जानती हो कि उन्होंने बात को कितना बढ़ा दिया है।

मिसेज़ राबर्ट : **(उंगलियों को बराबर हिलाती हुई)** लोग कहते हैं मजूरी बढ़वाने के लिए दूसरा उपाय नहीं है।

एनिड : **(तत्परता से)** यही तो कारण है, कि यूनियन उनकी मदद नहीं करता। मेरे स्वामी को मजूरों का बड़ा ख्याल है। लेकिन वह कहते हैं कि उनकी मजूरी कम नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट : यह बात है?

एनिड : ये लोग यह नहीं सोचते कि इनकी मुंहमांगी मजूरी देकर कम्पनी कैसे चलेगी।

मिसेज़ राबर्ट : **(बलपूर्वक)** लेकिन नफा तो बहुत हो रहा है, हुजूर।

एनिड : तुम लोग सोचती हो कि हिस्सेदार लोग बड़े मालदार हैं। लेकिन यह बात नहीं है। उनमें से बहुतों की दशा मजूरों से अच्छी नहीं है।

मिसेज़ राबर्ट मुस्कराती है।

उन्हें भलमनसी का निर्वाह भी तो करना पड़ता है।

मिसेज़ राबर्ट : हां हुजूर!

एनिड : तुम लोगों को कोई टैक्स या महसूल नहीं देना पड़ता। और सैकड़ों बातें हैं जो उन्हें करनी पड़ती हैं और तुम्हें नहीं करनी पड़ती। अगर मजूर लोग शराब और जुए में इतना न उड़ा दें तो चैन से रह सकते हैं।

मिसेज़ राबर्ट : ये लोग तो कहते हैं कि काम इतना कठिन है, कि मन बहलाने के लिए कुछ न कुछ होना चाहिए।

एनिड : लेकिन इस तरह की बुरी-बुरी बातें तो नहीं?

मिसेज़ राबर्ट : **(कुछ चिढ़कर)** राबर्ट तो कभी छूते भी नहीं और जुआ तो उन्होंने कभी जिन्दगी में नहीं खेला।

एनिड : लेकिन वह मामूली मजूर—वह इंजीनियर हैं, ऊंचे दर्जे के आदमी हैं।

मिसेज़ राबर्ट : हां बीवी! राबर्ट कहते हैं कि और किसी तरह के मन बहलाव का मजूरों के पास कोई सामान ही नहीं है।

एनिड : **(सोचकर)** हां कठिन् तो है।

मिसेज़ राबर्ट : **(कुछ ईर्ष्या से)** लोग तो कहते हैं ये भद्र लोग भी यही बुराइयां करते हैं।

एनिड : **(मुस्कराकर)** मैं इसे मानती हूं एनी, लेकिन तुम खुद जानती हो यह बिलकुल गप है।

मिसेज़ राबर्ट : **(बड़े कष्ट से बोलकर)** बहुत से आदमी तो कभी शराबखाने की तरफ़ ताकते ही नहीं। लेकिन उनकी बचत भी बहुत कम होती है। और यदि कोई बीमार पड़ गया तो वह भी ग़ायब हो जाती है।

एनिड : लेकिन उनके क्लब भी तो हैं?

मिसेज़ राबर्ट : क्लब एक परिवार को हफ्ते में केवल अट्ठारह शिलिंग देता है और इतने में क्या होना है? राबर्ट कहते हैं मजूर लोग हमेशा फाकेमस्त रहते हैं। कहते हैं आज का छः पेन्स कल के एक शिलिंग से अच्छा है।

एनिड : लेकिन इसी को तो जुआ कहते हैं।

मिसेज़ राबर्ट : **(आवेश के प्रवाह में)** राबर्ट कहते हैं कि मजूरों का सारा जीवन जन्म से लेकर मरने तक जुआ ही है।

एनिड प्रभावित होकर आगे झुक जाती है। मिसेज़ राबर्ट का आवेश बढ़ता जाता है। यहां तक कि अन्तिम शब्दों में वह अपने ही दुःख से विकल हो जाती है।

राबर्ट कहते हैं कि मजूर के घर जब बच्चा पैदा होता है तो उसकी सांसें गिनी जाने लगती हैं, भय होता है इस सांस के बाद दूसरी सांस लेगा भी या नहीं। और इसी तरह उसका जीवन कट जाता है। और जब वह बुड्ढा हो जाता है, तो अनाथालय या कब्र के सिवा उसके लिए दूसरा ठिकाना नहीं। वह कहते हैं कि जब तक आदमी बहुत चालाक न हो और कौड़ी-कौड़ी पर निगाह न रक्खे और बच्चों का पेट न काटे, वह कुछ बचा नहीं सकता। इसीलिए तो वह बच्चों से चिढ़ते हैं। चाहे मेरी इच्छा भी हो।

एनिड : हां-हां जानती हूं।

मिसेज़ राबर्ट : नहीं, बीवी, आप नहीं जानतीं। आपके बच्चे हैं और उनके लिए आपको कभी चिन्ता न करनी पड़ेगी।

एनिड : **(नम्रता से)** इतनी बातें मत करो एनी।

इच्छा न रहने पर भी कहती है।

लेकिन राबर्ट को तो उस आविष्कार के लिए काफी रुपये दिए गए थे।

मिसेज़ राबर्ट : **(अपना पक्ष संभालती हुई)** राबर्ट ने जो कुछ जोड़ा था वह सब खर्च

हो गया। वह बहुत दिनों से इस हड़ताल की तैयारी कर रहे हैं। वह कहते हैं जब दूसरे लोग कष्ट उठा रहे हैं, तो मैं एक पैसा भी अपने पास नहीं रख सकता। मगर सबका यह हाल नहीं है। बहुत से तो किसी से कोई मतलब ही नहीं रखते। हां, उनकी आमदनी होती रहे।

एनिड : जब उन्हें इतना कष्ट है, तो इसके सिवा और कर ही क्या सकते हैं।

बदली हुई आवाज़ में।

लेकिन राबर्ट को तुम्हारा तो ख़्याल करना ही चाहिए। डेगची खौल गई है, चाय बना दूं?

चायदानी उठाती है और उसमें चाय पाकर पानी डाल देती है।

तुम भी तो एक प्याला लो।

मिसेज़ राबर्ट : नहीं बीवी, मुझे क्षमा करो।

कोई आवाज़ सुन रही है जैसे किसी की आहट हो।

मैं चाहती हूं कि राबर्ट से आपकी भेंट न हो।

वह आपे से बाहर हो जाती है।

एनिड : लेकिन मैं तो बिना मिले न जाऊंगी, एनी। मैं बिलकुल शांत रहूंगी वायदा करती हूं।

मिसेज़ राबर्ट : उनके लिए यह जीवन और मरण का प्रश्न है।

एनिड : **(बहुत कोमलता से)** मैं उन्हें बाहर ले जाकर बातें करूंगी। हम तुम्हें दिक् नहीं करेंगे।

मिसेज़ राबर्ट : **(क्षीण स्वर में)** नहीं बीवी।

वह ज़ोर से चौंक पड़ती है, राबर्ट यकायक अन्दर आ जाता है।

राबर्ट : **(अपनी टोपी उतारकर चुटकी लेता हुआ)** अन्दर आने के लिए क्षमा करना। तुम किसी लेडी से बातें कर रही हो।

एनिड : मि. राबर्ट, मैं आपसे कुछ बातें करना चाहती हूं।

राबर्ट : मुझे किससे बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है?

एनिड : आप तो मुझे जानते हैं! मैं मिसेज़ अंडरवुड हूं।

राबर्ट : **(द्वेष भरे हुए अभिवादन के साथ)** हमारे सभापति की बेटी!

एनिड : **(तत्परता से)** मैं यहां आपसे कुछ बातें करने आयी हूं। एक मिनट के लिए ज़रा बाहर चले आइए।

वह मिसेज़ राबर्ट की ओर ताकती है।

राबर्ट : **(अपनी टोपी लटकाता हुआ)** मुझे आपसे कुछ नहीं कहना है, देवी जी।

एनिड : लेकिन मुझे बहुत ज़रूरी बातें करनी हैं।

वह द्वार की ओर चलती है।

हड़तालों का सामना करना पड़ता। और हम इसके लिये तैयार न थे। 'पंचायत' का उद्देश्य है 'न्याय' किसी एक के लिए नहीं, सबके लिये। किसी ईमानदार आदमी से पूछो—वह साफ कह देगा तुमसे भूल हुई। मैं यह नहीं कहता कि तुम्हें जितना पाने का हक़ है, तुम उससे ज्यादा मांग रहे हो, लेकिन इस समय तुम जरूर बहुत आगे जा रहे हो। तुमने अपने लिए गड्ढा खोद लिया है। अब सवाल यह है कि तुम वहीं पड़े रहोगे या जोर लगाकर बाहर निकलोगे।

लुइस : **(सजीला आदमी, काली मूछें)** आपने खूब कहा महाशय, दोनों में कौन-सी बात पसंद करते हो?

गिरोह के लोग फिर खिसकने लगते हैं, और राउस जल्दी से आकर टामस के पास खड़ा हो जाता है।

हार्निस : अपनी मांगों को काट-छांटकर ठीक कर लो, फिर हम तुम्हारे लिये जान देने को तैयार हैं। लेकिन अगर तुम्हें इनकार है तो फिर वह आशा मत रक्खो कि मैं यहां आकर अपना समय नष्ट करूंगा। मैं उन आदमियों में नहीं हूं जो अंट-संट बका करते हैं। शायद यह बात आप लोगों को मालूम होगी। मेरा विश्वास है कि तुम लोग अपनी धुन के पक्के हो। अगर यह ठीक है तो तुम लोग काम पर आने का निश्चय करोगे चाहे कोई तुम्हें कितनी ही उल्टी सलाह दे।

राबर्ट पर आंखें गड़ा देता है।

फिर हम देखेंगे कि कैसे तुम्हारी शर्तें नहीं पूरी होतीं। बोलो क्या मंजूर है? हमसे मिलकर विजय पाना चाहते हो, या इसी तरह भूखों मरना?

मज़दूरों में देर तक कांव-कांव होती है।

जागो : **(गुर्राकर)** वही बातें कीजिए जिनका आपको ज्ञान है।

हार्निस : **(ऊंचे स्वर से)** ज्ञान?

उद्‌गार को रोककर।

मित्रवर, मुझसे कोई बात छिपी नहीं है। जो कुछ तुम पर बीत रही है, वह मुझ पर बीत चुकी है, उस वक्त बीत चुकी है जब....

एक लौंडे की तरफ इशारा करके।

मैं उस लौंडे से बड़ा न था। तब पंचायतें वह न थीं जो आज हैं। ये कैसे इतनी बलवान हो गईं? इसी मेल ने उन्हें इतना बलवान बना दिया है। विश्वास मानो, सब कुछ सह चुका हूं। मेरी आत्मा पर अब तक उसकी निशानी बनी हुई है। तुम पर जो कुछ पड़ी है वह मैं सब जानता हूं। लेकिन पूरा एक टुकड़े से बड़ा होता है, और तुम केवल एक टुकड़ा हो। अगर तुम हमारा साथ दोगे तो हम भी तुम्हारा साथ देंगे।

अपनी आंखों से उनकी टोलियों का अनुमान करके वह

कान लगाए खड़ा रहता है। आदमियों में और ठांय-ठांय होने लगती है। उनकी छोटी-छोटी टोलियां बन जाती हैं, ग्रीन, बल्जिन और लुइस बातें करते हैं।

लुइस : यूनियन का यह आदमी बहुत सोच-समझकर बातें करता है।

ग्रीन : **(धीरे से)** हां! अगर किसी ने मेरी बातों पर कान दिया होता तो मैं गत दो महीनों से यही कहता चला आता हूं।

मल्लाह हंसते दिखाई देते हैं।

लुइस : **(उनकी ओर उंगली उठाकर)** बाड़े के उस पार उन दोनों गधों को देखो।

बल्जिन : **(उदास क्रोध से)** अगर इन सबों ने खिल-खिल किया तो दांत तोड़कर पेट में डाल दूंगा।

जागो : **(यकायक)** आप कहते हैं कि भट्ठीवालों को काफी मजूरी मिलती है?

हार्निस : मैंने यह नहीं कहा कि उन्हें काफी मजूरी मिलती है, मैंने यह कहा कि उन्हें उतनी ही मजूरी मिलती है जितनी ऐसे ही कामों के लिए दूसरे कारखानों में मिलती है।

इवेंस : यह झूठी बात है।

हलचल मच जाता है।

हारपर के कारखाने का नाम तो आपने सुना होगा?

हार्निस : **(शीतल व्यंग्य से)** दोस्त, झूठ का व्यापार तुम्हारे घर होता होगा। हारपर के यहां ओसरी देर तक रहती है, हिसाब लगाने से मजूरी एक ही पड़ती है।

हेन्री राउस : **(अपने भाई जॉर्ज की हूबहू नकल, हां, रंग सांवला है)** सनीचर को ओवर टाइम के लिए आप दूनी मजूरी का समर्थन करेंगे?

हार्निस : हां करेंगे।

जागो : आपने हमारे चन्दों का क्या किया?

हार्निस : **(रुखाई से)** हम बता चुके हैं कि हम उनका क्या करेंगे?

इवेंस : बस, करेंगे, जब सुनिए करेंगे। आप हमारे साथियों को तोड़ना चाहते हैं।

फिर हलचल

बल्जिन : **(चिल्लाकर)** क्या झगड़ा मचा रहे हो?

इवेन्स क्रोध से इधर-उधर ताकता है।

हार्निस : **(ऊंचे स्वर से)** जिनके आंखें हैं, उन्हें मालूम है कि पंचायतें न चोर हैं न दगाबाज, मुझे जो कुछ कहना था कह चुका। अब तुम अपना लेखा-डेवढ़ा समझ लो। जब मेरी ज़रूरत हो घर से बुला लेना।

वह कूदकर नीचे आता है, लोग रास्ता छोड़ देते हैं, वह

उनके बीच से होता हुआ निकल जाता है। एक मल्लाह अपने पाइप को हिला-हिलाकर उसकी ओर मखौल के भाव से देख रहा है। मज़दूरों की टोलियां बन जाती हैं और बहुत-सी आंखें राबर्ट की ओर उठती हैं जो दीवार के सहारे अकेला खड़ा है।

इवेंस : वह चाहता है कि तुम थूककर चाटो। बस यही इसकी मंशा है। वह चाहता है कि तुम हमारी बातों को दुलख दो। थूककर तो न चाटेंगे चाहे भूखों मर जायं।

बल्जिन : थूककर चाटने की बात कौन कर रहा है? ज़रा जबान संभालकर बोलो—समझ गए।

लोहार : **(एक युवक, जिसके बाल काले और बांहें लम्बी हैं)** औरतें क्या करेंगी?

इवेंस : जो हम झेल सकते हैं, वह औरतें भी झेल सकती हैं, क्या इसमें कोई सन्देह है?

लोहार : घर में स्त्री नहीं है न?

इवेंस : चाहता भी नहीं।

टामस : **(ऊंचे स्वर से)** भाइयो, हमें यह अख़्तियार दो कि लन्दन से समझौता कर सकें।

डेवीज़ : **(सांवला, सुस्त और उदास)** मंच पर चढ़ जाओ। अगर तुम्हें कुछ कहना है तो मंच पर चढ़कर कहो।

'टामस' का शोर मच जाता है। लोग उसे ढकेलकर मंच की तरफ़ लाते हैं। वह ज़ोर लगाकर उस पर चढ़ता है और टोपी उतारकर लोगों के चुप हो जाने का इन्तज़ार करता है। सब चुप हो जाते हैं।

लाल बालों वाला युवक : हां बूढ़े दादा, टामस!

कोई बैठे हुए गले से हंसता है। दोनों मल्लाह बातें करते हैं। फिर सन्नाटा छा जाता है और टामस बोलने लगता है।

टामस : हम सब एक साथ डूब रहे हैं और प्रकृति ने हमें इस गहराई में डाल दिया है।

हेनरी राउस : लन्दन ने डाला है, लन्दन ने।

इवेंस : पंचायत ने डाला है।

टामस : न लन्दन ने डाला है, न पंचायत ने डाला है, यह प्रकृति का काम है। प्रकृति के सामने सिर झुकाने में किसी का भी अपमान नहीं हो सकता। क्योंकि प्रकृति बहुत बड़ी चीज़ है, आदमी की इसके सामने कोई गिनती नहीं। मैंने जितना जमाना देखा है, उतना यहां और किसी ने न देखा होगा। मेरी बात मानो, प्रकृति से लड़ना बहुत बुरी

बात है। दूसरों को कष्ट में डालना बुरी बात है जब इस से किसी का उपकार न हो।

कोई हंसता है। टामस झल्लाकर बोलता है।

तुम हंस किस बात पर रहे हो? मैं कहता हूं यह बुरी बात है। हम एक सिद्धान्त के लिए लड़ रहे हैं। किसी को यहां यह कहने का साहस नहीं हो सकता कि मैं सिद्धान्त का भक्त नहीं हूं। लेकिन जब प्रकृति कहती है 'बस, इसके आगे क़दम मत उठाओ' तो कान में तेल डालकर बैठना अच्छी बात नहीं।

राबर्ट हंस पड़ता है। कुछ लोग धीमे स्वर में उसका समर्थन करते हैं।

इस प्रकृति का रुख़ देखकर चलना चाहिए। आदमी का धरम है कि वह सच्चा, ईमानदार और दयालु बने। धरम तुम्हें यही उपदेश देता है।

राबर्ट से क्रोध के साथ।

और मेरी बात सुन डेविड राबर्ट, धरम कहता है कि प्रकृति के सामने ताल ठोंके बिना तुम यह सब कुछ कर सकते हो।

जागो : और पंचायत?

टामस : मैं पंचायत का कुछ भरोसा नहीं करता। उन लोगों ने हमारी कुछ परवाह नहीं की। हमसे कहते थे 'जो हम कहें वह करो।' मैं बीस साल से भट्ठी वालों का जमादार हूं।

जोश के साथ।

मैं पंचायत से पूछता हूं 'क्या तुम मेरी तरह दावे के साथ कह सकते हो कि भट्ठी वाले जो काम करते हैं उसकी ठीक मज़दूरी क्या है? पच्चीस साल से मैं पंचायत को बराबर चन्दा देता आता हूं और...

कुछ बिगड़कर।

उसका कुछ नतीजा नहीं। यह बेईमानी नहीं त। और क्या है, चाहे मिस्टर हार्निस लाख बातें बनावें।

लोग बड़बड़ाते हैं।

इवेंस : सुनो, सुनो!

हेनरी राउस : कहते चलो, कहते चलो! तो फिर इसे धता क्यों नहीं बताते।

टामस : मेरी बात सुनो, अगर कोई आदमी हमारा विश्वास नहीं करता तो क्या मैं उसका विश्वास कर सकता हूं?

जागो : बिलकुल ठीक।

टामस : समझ लो कि वह सब बेईमान हैं, और अपने पैरों पर खड़े हो।

लोग बड़बड़ाते हैं।

लोहार : यही तो हम लोग कर रहे हैं, यह कुछ और?

आंखों में जो राबर्ट के पीदे लगी हुई हैं, द्वेष और प्रेम दोनों मिले हुए हैं। वह फिर अपनी घड़ी देखता है, और जाने के लिए घूमता है। ड्योढ़ी में उसकी जैन टामस से मुठभेड़ हो जाती है। यह एक दस साल का लड़का है जिसके कपड़े बहुत ढीले हैं और हाथ में एक छोटी-सी सीटी लिए हुए है।

मिसेज़ राबर्ट : कहो जैन, कैसे चले?

जैन : दादा आ रहे हैं, बहन मेज भी आ रही है।

वह वहीं पर बैठ जाता है, फिर अपनी सीटी घुमाने लगता है और तीन ऊटपटांग स्वर बजाता है। तब कोयल की बोली की नक़ल करता है। दरवाज़ा खटकता है और बूढ़ा टामस अन्दर आता है।

टामस : मैडम को परनाम करता हूं। अब तो आप कुछ अच्छी हैं।

मिसेज़ राबर्ट : हां मिस्टर टामस, धन्यवाद।

टामस : **(शंकित होकर)** राबर्ट अन्दर हैं?

मिसेज़ राबर्ट : अभी वह जलसे में गये हैं मिस्टर टामस।

टामस : **(मानो उसके दिल का बोझ हल्का हो जाता है। गपशप करने की इच्छा से)** यह बहुत बुरा हुआ मैडम। मैं उनसे यह कहने आया था कि हमें लंदन वालों से समझौता कर लेना चाहिए। ये दुःख की बात है, कि वह जलसे में चले गए। वहां दीवारों से सर टकराना पड़ेगा। देख लेना।

मिसेज़ राबर्ट : **(कुछ उठकर)** वह समझौता तो नहीं करेंगे, मिस्टर टामस।

टामस : तुम्हें रंज नहीं करना चाहिए, मैडम। यह तम्हारे लिए बुरा है। मेरी बात मानो, अब उनका साथ देने वाला कोई नहीं है। बस इंजीनियर लोग और जॉर्ज राउस उनके साथ हैं।

गम्भीरता से

इस हड़ताल में अब धरम नहीं है, मेरी बात मानो। मुझे आकाशवाणी हुई है और मैंने उससे शंका समाधान किया है।

जैन सीटी बजाता है।

हिश! दूसरे क्या कहते हैं इसकी मुझे परवा नहीं है। मैं तो यही कहता हूं कि धरम इस हड़ताल को बन्द कर देना चाहता है। मेरी समझ में तो यही आता है। और यह मेरी राय है, कि हमारा हित इसी में है। अगर मेरी राय न होती, तो मैं न कहता। लेकिन यह मेरी राय है, मेरी बात मानो।

मिसेज़ राबर्ट : **(अपने उद्वेग को छिपाने की चेष्टा करके)** अगर आप लोग दब गए तो न जाने राबर्ट का क्या हाल होगा।

टामस : यह उनके लिए लज्जा की बात नहीं है। आदमी जो कुछ कर सकता

है, वह उन्होंने किया। लेकिन वह मानव सुभाव को पलट देना चाहते हैं। बिल्कुल सीधी सी बात है। कोई दूसरा होता तो वह भी यही करता। लेकिन जब धरम मना कर रहा है तो उन्हें उसकी बात माननी चाहिए।

जैन कोयल की नकल करता है।

क्या चें-चें लगा रक्खी है।

द्वार के पास जाकर।

यह देखो मेरी बेटी आ गई। तुम्हारा जी बहलायेगी। अच्छा अब परनाम करता हूं, मैडम। रंज मत करना। कुढ़ना बुरा है। मेरी बात मानो।

मेज अन्दर आती है और खुले हुए द्वार पर खड़ी होकर सड़क की ओर देखती है।

मेज : दादा, आपको देर हो जायगी। जलसा शुरू हो रहा है।

उसकी आस्तीन पकड़ लेती है।

ईश्वर के लिए दादा अबकी बार और उनका साथ दो।

टामस : (अपनी आस्तीन छुड़ाकर रोब से) क्या बकती है, बेटी। मैं वहीं करूंगा जो उचित है।

वह चला जाता है, मेज जो अभी ड्योढ़ी के बीच में थी, धीरे-धीरे अन्दर आती है, मानो उसके पीछे कोई और आ रहा है।

राउस : (दालान में आकर) मेज।

मेज मिसेज़ राबर्ट की तरफ पीछे करके खड़ी हो जाती है और सिर उठाकर हाथ पीछे किए हुए उसकी तरफ देखती है।

राउस : (जिसके चेहरे से क्रोध और घबराहट झलक रही है) मेज, मैं जलसे में जा रहा हूं।

मेज, वहीं खड़ी अनादर भाव से मुस्कराती है।

मेरी बात सुनती हो?

दोनों सांय-सांय जल्द-जल्द बातें करते हैं।

मेज : हां सुनती हूं। जाओ और हिम्मत हो तो अपनी मां को मार डालो।

राउस उसकी दोनों बांहें पकड़ लेता है। वह सिर को पीछे किए हुए स्थिर खड़ी रहती है। वह उसे छोड़ देता है और चुपचाप खड़ा हो जाता है।

राउस : मैंने राबर्ट का साथ देने की क़सम खाई है। तुम चाहती हो, कि मैं अपने क़ौल से फिर जाऊं।

मेज : (मन्द स्वर में उसकी हंसी उड़ाकर) खूब प्रेम करते हो।

राउस : मेरी बात सुनो, मेज।

मेज : **(मुस्कराकर)** मैंने सुना है कि प्रेमी वही करते हैं जो उनकी प्रेमिका कहती है।

जैन कोयल की बोली बोलता है।

लेकिन मालूम होता है, यह भ्रम है।

राउस : तुम चाहती हो कि मैं उन्हें दग़ा दूं।

मेज : **(अपनी आंखें आधी बन्द करके)** मेरी ख़ातिर से दो।

राउस : **(हाथ से माथा पीटकर)** चलो! यह मैं नहीं कर सकता।

मेज : **(जल्दी से)** मेरी ख़ातिर से करो।

राउस : **(दांतों को दबाकर)** मेरे साथ कुलटाओं की चाल मत चलो, मेज।

मेज : **(जैन की तरफ जल्दी से अपना हाथ बढ़ाकर)** मैं बच्चों को पेट भरने के लिए यह कर रही हूं।

राउस : **(क्रोध से भरी हुई कनबतियों में)** मेज, ओ मेज!

मेज : **(उसका मुंह चिढ़ाकर)** लेकिन तुम मेरे लिए अपना वचन नहीं तोड़ सकते।

राउस : **(रुंघे हुए कंठ से)** नहीं मेज, तोड़ सकता हूं। खुदा की क़सम!

वह घूमता है और क़दम बढ़ाता चला जाता है।

मेज के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट आ जाती है, वह खड़ी उसके पीछे ताकती है। फिर अंदर आती है।

मेज : राबर्ट को तो मैंने मार लिया।

वह देखती है कि मिसेज़ राबर्ट फिर कुरसी पर लेट गई है।

मेज : **(उसके पास जाकर और उसके हाथों को छूकर)** अरे! तुम तो पत्थर की तरह ठंडी हो रही हो। एक घूंट ब्रांडी पी लो। जैन, दौड़ 'लायन' की दुकान पर। कहना मैंने मिसेज़ राबर्ट के लिये मंगवाई है।

मिसेज़ राबर्ट : **(क्षीण स्वर में)** मैं अभी उठ बैठूंगी मेज, जैन को चाय तो दे दो।

मेज : **(जैन को एक टुकड़ा रोटी देकर)** ले, नटखट कहीं के। सीटी बन्द कर।

आग के पास जाकर।

आग तो ठंडी हुई जाती है।

मिसेज़ राबर्ट : **(कुछ मुस्कराकर)** उससे होता ही क्या है!

जैन सीटी बजाने लगता है।

मेज : मत-मत—नहीं मानेगा—आऊं।

जैन सीटी बंद कर देता है।

मिसेज़ राबर्ट : **(मुस्कराकर)** उसे खेलने क्यों नहीं देती, मेज!

मेज : **(आग के पास घुटनियों के बल बैठी हुई कान लगाए हुए)** बस

टुकुर-टुकुर ताका करो। यही स्त्री का काम है। मुझसे तो यह नहीं हो सकता। सुनते-सुनते जी ऊब गया। बस बैठी मुंह ताका करो। सुनती हो जलसे में सबों का शोर। मुझे तो सुनाई दे रहा है।

वह कुहनियों के बल झुक जाती है और ठुड्डी हाथों पर रख लेती है। उसके पीछे मिसेज़ राबर्ट आगे झुकी हुई खड़ी है। हड़तालियों के जलसे की आवाजें सुनकर उसकी घबराहट और मनोव्यथा बढ़ती जाती है।

परदा गिरता है।

दृश्य दूसरा

[चार बज चुके हैं। झुटपटासे का समय है। एक खुले हुए कीचड़ से भरे मैदान में मज़दूर जमा हैं। आगे कांटेदार तारों का बाड़ा है जिसके उस पार एक नहर की ऊंची पटरी है। नहर में एक नौका बंधी हुई है। दूरी पर दलदल है और बर्फ से ढंकी हुई पहाड़ियां हैं। कारखाने की ऊंची दीवार नहर से इस मैदान में होती हुई जाती है। दीवार के कोने में पीपों और तख्तों का एक भद्दा-सा मंच है। उस पर हार्निस खड़ा है। इस भीड़ से कुछ दूर हटकर राबर्ट दीवार का तकिया लगाए खड़ा है। ऊंची पटरी पर दो मल्लाह निश्चिन्त लेटे हुए सिगरेट पी रहे हैं।]

हार्निस : **(हाथ फैलाकर)** बस, मैंने तुम लोगों से साफ-साफ कह दिया। मैं अगर कल तक बोलता रहूं तब भी इससे ज्यादा और कुछ नहीं कह सकता।

जागो : **(सांवला रंग, चेहरा पीला, स्पेनियों की-सी सूरत, छोटी खसखसी दाढ़ी)** महाशय, आपसे एक बात पूछता हूं। वह लोग हममें से किसी को फोड़ सकते हैं?

बल्जिन : **(धमकाकर)** मुंह धो रक्खें।

मज़दूरों के गिरोह में लोग बक-झक करने लगते हैं।

ब्राउन : **(गोल चेहरा)** पाएंगे कहां?

इवेंस : **(ठिगना, चंचल, दिलजला, सूरत से लड़ाका)** घर के भेदियों की कभी कमी नहीं रहती। ऐसे आदमी हमेशा रहेंगे जो पहले अपनी जान की खै़र मानते हैं।

फिर मजदूरों के गिरोह में हलचल मच जाती है। कुछ लोग खिसकने लगते हैं। बूढ़ा टामस गिरोह में मिल जाता है और सामने खड़ा होता है।

हार्निस : **(हाथ उठाकर)** ऐसे गुर्गे उन लोगों को नहीं मिल सकते। लेकिन इससे आपका कोई लाभ नहीं। आप लोग जरा न्याय से काम लीजिए। तुम्हारी मांगों का नतीजा यह होता कि हमें एक साथ दर्जन

टामस : (और जोश में आकर) मुझे सिखाया गया था कि अपने पैरों पर खड़े हो। मुझे सिखाया गया था कि अगर तुम्हारे पास कोई चीज़ खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं तो उधर आंख उठाकर मत देखो। दूसरों के धन पर मौज करना कोई अच्छी बात नहीं। हम सच्ची लड़ाई लड़ें, और अगर हार गए तो इसमें हमारा कोई दोष नहीं। हमें यह अख्तियार दे दो कि हम लन्दन से अपने बूते पर समझौता कर लें। अगर इसमें सफल न हों तो हमें चाहिए कि अपनी हार मर्दों की तरह सहें, यह नहीं कि कुत्ते की मौत मरें, या दूसरे की दुम के पीछे लगे रहें कि वे हमारा उद्धार कर देंगे।

इवेंस : (दबी आवाज़ से) यह कौन चाहता है?

टामस : (गर्दन उठाकर) कौन बोलता है? अगर मैं किसी से भिड़ूं और वह मुझे दे पटके तो मैं किसी की गुहार न लगाऊंगा, धूल झाड़कर फिर उठूंगा। अगर वह मुझे सफाई के साथ पटक देगा तो धूल झाड़ता हुआ अपनी राह लूंगा। ठीक है या नहीं?

सब लोग हंसते हैं।

जागो : पंचायत की जय!

हेनरी राउस : पंचायत की जय!

और लोग शोर में मिल जाते हैं।

इवेंस : थूककर चाटने वाले!

बल्जिन और लोहार इवेंस को घूंसा दिखाते हैं।

टामस : **(सिर हिलाकर)** मैं बूढ़ा आदमी हूं, यह समझ लो।

सब चुप हो जाते हैं, फिर बकबक होने लगता है।

लुइस : बूढ़ा उल्लू, पंचायत का विरोधी।

बल्जिन : मेरा बस चले तो इन भट्ठी वालों का सिर तोड़ के रख दूं।

ग्रीन : अगर लोगों ने पहले मेरी बातों पर कान दिया होता....

टामस : **(माथा पोंछकर)** अब मैं उस बात पर आ रहा हूं जो मैं कहने जा रहा था....

डेवीस : **(दबी जबान से)** अब उसका समय भी है।

टामस : **(धार्मिक भाव से)** धर्म कहता है—'यह लड़ाई बन्द कर दो।'

जागो : झूठी बात है! धर्म कहता है—लड़ाई छिड़ी रहे।

टामस : **(गर्व से)** सच! मुझे ईश्वर ने कान दिए हैं।

लाल बालों वाला युवक : (हंसता है) हां, बहुत बड़े-बड़े।

जागो : तब तुम्हारे कानों ने तुम्हें धोखा दिया।

टामस : **(झल्लाकर)** या तुम सच्चे हो, या मैं सच्चा हूं। तुम दोनों तरफ़ नहीं जा सकते।

लाल बालों वाला युवक : लेकिन धर्म तो जा सकता है।

'शैवर' हंसता है। गिरोह में दबी ज़बान से बातें होने लगती हैं।

टामस : **('शैवर' की ओर आंखें जमाकर)** आह! तुम सबके सब अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार रहे हो। इसलिए मैं तुमको जताए देता हूं कि अगर तुम धर्म की जड़ काटोगे तो मैं तुम्हारा साथ न दूंगा, और न कोई दूसरा ईश्वर भक्त आदमी साथ दे सकता है।

वह मंच से उतर जाता है। जागो मंच की ओर जाता है। 'उसे मत जाने दो' की आवाज़ें सुनाई देती हैं।

जागो : उसे मत जाने दो? कहते शर्म भी नहीं आती।

वह मंच पर चढ़ जाता है।

मुझे तुम लोगों से बहुत कुछ नहीं कहना है। इस मामले को सीधे-सादे ढंग से देखो, इतनी दूर तो तुम मजे से चले आए, अब तुम सफर से मुंह मोड़ रहे हो। क्या यह भलमंसी है? अब तक हम सब एक नाव में थे। अब तुम दो नावों पर बैठना चाहते हो। हम इंजीनियरों ने अब तक तुम्हारा साथ दिया। अब तुम हमें दग़ा दे रहे हो। अगर हमें यह पहले से मालूम होता तो हम तुम्हारे साथ चलते ही क्यों? बस मुझे इतना ही कहना है। बूढ़े टामस ने बाइबल की दुहाई दी है, पर बाइबल का आशय ठीक नहीं समझा। अगर तुम लंदन या हार्निस की शरण जाते हो तो इसका यह आशय है कि तुम अपनी चमड़ी बचाने के लिए हमें गच्चा दे रहे हो—मगर तुम धोखा खाओगे भाइयो, यह भले आदमियों का काम नहीं है।

वह मंच से उतर पड़ता है। उसके छोटे से भाषण के समय मज़दूरों में व्यग्र अशान्ति रहती है। राउस आगे बढ़कर मंच पर कूद कर चढ़ जाता है। चेहरा क्रोध से तिलमिलाया हुआ है। मज़दूरों के दल में अप्रसन्नता की भनभनाहट है।

राउस : **(बहुत उत्तेजित होकर)** भाइयो, मैं कोरा बक्की नहीं हूं, मैं जो कहता हूं वह मेरे हृदय से निकल रहा है। आदमी का स्वभाव देखिए। क्या यह हो सकता है कि किसी की माता भूखों तड़प रही हो और वह टुकुर-टुकुर देखा करे? क्या अब हमसे ऐसा हो सकता है?

राबर्ट : **(आगे बढ़कर)** राउस!

राउस : **(उसे रोष से देखकर)** सिम हार्निस ने जो कुछ कहा वाजिब कहा। मैंने अपनी राय बदल दी है।

इवेंस : अरे! तो क्या तुम उधर मिल गए?

लोग चकित होकर ताकने लगते हैं।

लुइस : **(अन्योक्ति के भाव से)** क्यों भाई, यह क्यों पलट गया?

राउस : **(आपे से बाहर होकर)** उसने वाजिब कहा। उसने कहा 'तुम हमारा

साथ दो, और हम तुम्हारा साथ देंगे। इतने दिनों से हम इसी मामले में ठोकरें खा रहे हैं। और यह किसका दोष है?

राबर्ट की तरफ उंगली दिखाता है।

उस आदमी का! वह कहता था—"नहीं, लुटेरों से लड़ो, उनका गला घोंट दो।" लेकिन उनका गला नहीं घुटा, हमारा और हमारे घरवालों का गला घुट गया। यह सच्ची बात है। भाइयो, मैं बाणी का बहादुर नहीं हूं, मुझमें जो रक्त है और मांस है वह बोल रहा है। मेरा हृदय बोल रहा है।

कठोर, पर कुछ लज्जित भाव से राबर्ट को देखकर।

वह महाशय अभी फिर बोलेंगे, लेकिन मेरी बात मानो, उनकी बातों पर कान मत दो।

लोग सांसें भरने लगते हैं।

उस आदमी की वाणी में आग भरी हुई है।

राबर्ट हंसता हुआ नज़र आता है।

सिम हार्निस ठीक कहता है। पंचायत के बिना हम हैं क्या—मुट्ठी भर सूखी पत्तियां—या धुएं की एक फूंक। मैं बाणी का बहादुर नहीं हूं, लेकिन मेरी बात मानो, इस झगड़े को बंद करो। बाल-बच्चों को भूखों मरने से यह कहीं अच्छा है।

समर्थन की आवाजें विरोध की आवाज़ों को दबा देती हैं।

इवेंस : तुमने यह चोला क्यों बदला जी?

राउस : **(क्रोधातुर भाव से)** सिम हार्निस समझ-बूझकर बोलता है। हमें अख़तियार दो कि लंदन वालों से समझौता कर लें। मैं बोलना नहीं जानता, लेकिन कहता हूं इस सत्यानाशी विपत्ति का अन्त कर दो।

वह अपने मफलर को लपेटता है, सिर को पीछे की ओर झटककर मंच से उतर पड़ता है। मज़दूर दल तालियां बजाता हुआ आगे बढ़ता है। आवाज़ें आती हैं—"बस, इतना बहुत है, यूनियन की जय।" "हार्निस की जय!" उसी वक्त राबर्ट मंच पर आता है। सब चुप हो जाते हैं।

लोहार : हम तुम्हारी बात नहीं सुनना चाहते। मत बको।

हेनरी राउस : नीचे आओ।

यों हांक लगाते हुए समूह मंच की ओर चलता है।

इवेंस : **(झल्लाकर)** बोलने दो! बोलने दो! राबर्ट! राबर्ट!

बल्जिन : **(दबी जबान से)** अच्छा हो कि यह ख़िसक जाय। कहीं मैं उसकी खोपड़ी न तोड़ डालूं।

राबर्ट समूह के सामने खड़ा होकर उसे अपनी आंखों से तौलता है; यहां तक कि धीरे-धीरे लोग चुप हो जाते हैं। वह बोलना शुरू करता है। दोनों में से एक मल्लाह उठकर खड़ा

हो जाता है।

राबर्ट : तो तुम लोग मेरी बात नहीं सुनना चाहते? तुम राउस और उस बूढ़े आदमी की बात सुनोगे। मेरी बात न सुनोगे। तुम यूनियन के साइमन हार्निस की बात सुनोगे। जिसने तुम्हारे साथ इतना सुन्दर व्यवहार किया है; शायद तुम लंदन वाले आदमियों की बात भी सुनोगे। मेरी बात न सुनोगे। अच्छा! तुम सांसें खींच रहे हो! क्यों, तुम यही तो चाहते हो कि तुम्हारी गर्दन उनके पैरों के नीचे हो?

बल्जिन को मंच की ओर आते देखकर शांत करुणा से।

क्यों जान बल्जिन, तुम मेरे दांत तोड़ना चाहते हो? मुझे बोलने दो, फिर शौक़ से तोड़ो, अगर तुम्हें इसमें आनन्द आए।

बल्जिन चुपचाप और झल्लाया हुआ खड़ा हो जाता है।

क्या मैं झूठा हूं, कायर हूं, दग़ाबाज हूं? मुझे विश्वास है कि अगर ये बातें मुझमें होतीं तो तुम शौक़ से मेरी बात सुनते।

भनभनाहट बन्द हो जाती है और सन्नाटा छा जाता है।

यहां कोई ऐसा आदमी है जिसे हड़ताल से उतना धक्का पहुंचा हो जितना मुझे पहुंच रहा है? तुममें कोई ऐसा है जिसने यह झगड़ा शुरू होने के बाद से आठ सौ पौण्ड की चपत खाई हो? अगर कोई है तो सामने आवे। टामस ने कितना बल खाया है—दस पौण्ड, पांच पौण्ड या कितना? तुमने अभी उनकी बातें सुनी हैं। आपने फरमाया है "कोई यह नहीं कह सकता कि मैं नियम का पक्का नहीं हूं।"

तीक्ष्ण व्यंग के साथ।

"लेकिन जब प्रकृति कहता है, बस! तो हमें उसकी आज्ञा माननी चाहिए।" मैं तुमसे कहता हूं क्या आदमी प्रकृति से यह नहीं कह सकता, "अगर तेरा काबू हो तो हमें यहां से जौ भर हटा दे?"

अहंकार के भाव से।

उनका सिद्धान्त उनका पेट है। मगर टामस साहब कहते हैं—"आदमी निष्कपट, सच्चा, न्यायी और दयालु होकर भी प्रकृति की आज्ञा-पालन कर सकता है।" मैं तुमसे कहता हूं प्रकृति न निष्कपट है, न सच्ची, न्यायी न दयालू। तुम लोग जो पहाड़ी के ऊपर रहते हो और बर्फीली रात को अंधेरे में थके-मांदे घर जाते हो—क्या तुम्हें क़दम-क़दम पर दांतों पसीना नहीं आता? क्या तुम इस दयालु प्रकृति की कोमल दयालुता के भरोसे आराम से लेटते हुए जाते हो? जरा एक बार आज़मा कर देखो और तुम्हें मालूम हो जायगा कि प्रकृति कितनी दयालु है।

घूंसा तानकर।

प्रकृति की जो यह सेवा करता है वही मर्द है। टामस साहब फरमाते

हैं—घुटने टेक दो, सिर झुका दो, यह व्यर्थ का झगड़ा मिटा दो। तब तुम्हारा शत्रु एक टुकड़ा तुम्हारे सामने फेंक देगा।

जागो : कभी नहीं।

टामस : मैंने यह नहीं कहा।

राबर्ट : **(चुभती हुई आवाज़ में)** मित्रवर, तुमने चाहे यह न कहा हो पर तुम्हारा मतलब यही था। और धर्म के विषय में तुमने क्या कहा? तुमने कहा—"धर्म इसे मना करता है।" "प्रकृति भी इसे मना करती है।" अगर धर्म और प्रकृति में इतनी एकता है तो मुझे यह बात आज ही मालूम हुई है। उस युवक ने—

राउस की ओर इशारा करके

कहा है कि मेरी बाणी में नरक की आग भरी हुई है। अगर ऐसा होता तो मैं उस सारी आग को इस घुटना टेकने वाले प्रस्ताव को जलाने और झुलसाने में लगा देता। घुटना टेकना कायरों और नमक-हरामों का काम है।

हेनरी राउस : **(जॉर्ज राउस को बढ़ते देखकर)** जरा इसकी ख़बर लो, जॉर्ज। इसकी बातें न सुनो।

राबर्ट : **(उंगली दिखाकर)** वहीं खड़े रहो, जॉर्ज राउस। यह निजी झगड़े चुकाने का मौक़ा नहीं है।

राउस ठहर जाता है।

लेकिन बोलने वालों में से एक रहा जाता है, मि॰ साइमन हार्निस—मि॰ हार्निस या पंचायत, किसी ने भी हमारे साथ बड़ा उपकार नहीं किया है। उन्होंने कहा अपने साथियों को तिलांजलि दे दो, नहीं तो हम तुम्हें तिलांजलि दे देंगे। और यही उन्होंने किया, हमें मंझधार में छोड़ दिया।

इवेंस : बेशक छोड़ दिया।

राबर्ट : साइमन हार्निस साहब बड़े चतुर आदमी हैं, लेकिन मौक़ा निकल गया।

दृढ़ विश्वास से

मगर साइमन हार्निस साहब जो चाहे कहें, टामस साहब जो चाहे कहें, राउस साहब जो चाहे कहें मैदान हमारे हाथ है।

समूह और समीप आ जाता है और उत्सुक होकर उसकी ओर देखता है।

तुमसे पेट की तकलीफ़ नहीं सही जाती। तुम भूल गए कि यह लड़ाई किस लिए छिड़ी। मैं तुमसे कितनी ही बार, बतला चुका हूं; आज एक बात और बताए देता हूं। यह इस देश के रक्त और मांस और रक्त चूसने वालों की लड़ाई है—एक तरफ़ वह लोग हैं, जो मुंह से

निकलने वाली हरेक सांस और हाथ से चलने वाली हरेक चोट के साथ अपनी देह घुलाते हैं, दूसरी तरफ़ वह जन्तु है जो उनका मांस खाकर मोटा हो रहा है और दयालु प्रकृति के नियमानुसार दिन-दिन फूलता चला जाता है। यह जन्तु पूंजी है! यह वह चीज़ है जो आदमियों के माथे का पसीना और उनके मस्तिष्क की पीड़ा अपने दामों मोल लेती है। क्या मुझसे यह बात छिपी है? क्या मेरे मस्तिष्क का रत्न सात सौ पौण्ड में नहीं खरीद लिया गया और उससे घर बैठे एक लाख पौण्ड नफा नहीं हुआ? यह वह चीज़ है जो तुमसे अधिक से अधिक लेना, और तुम्हें कम से कम देना चाहती है। यह पूंजी है! यह वह चीज है जो तुमसे कहती है—"प्यारो, हमें तुम्हारी दशा पर बड़ा दुख है, हम जानते हैं तुम बड़े कष्ट में हो", लेकिन तुम्हारे उद्धार के लिए अपने नफ़े की एक कौड़ी भी नहीं छोड़ती। यह पूंजी है। मुझसे कोई बतलाए उनमें से कौन गरीबों की मदद के लिए इनकम टैक्स पर एक पाई भी बढ़ाने पर राज़ी होगा? यह पूंजी है। एक सुफेद चेहरा और पत्थर का दिल रखने वाला देव! तुमने उसे पछाड़ लिया है। क्या इस अन्त के समय तुम इस नश्वर देह के कष्ट से मैदान छोड़ दोगे? आज सबेरे जब मैं लन्दन के उन महानुभावों से मिलने गया तो मैंने उनके हृदय तक बैठकर देखा। उनमें से एक का नाम स्केंटलबरी है—मांस का एक लोंदा जो हमें खाकर परचा है। वह दूसरे हिस्सेदारों की तरह, जो बिना हाथ-पांव हिलाए आनन्द से सालाना नफा लेते चले जाते हैं, बैठा हुआ था—एक बड़ा मोटा बैल जो उसी वक्त चौंकता है जब उसके रातिब में बाधा पड़ती है। मैंने उसकी आंखें देखीं और मुझे मालूम हुआ कि उसके दिल में डर समाया हुआ है। अपनी, अपने नफ़े की, अपनी मेहनताने की और हिस्सेदारों की शंका उसे मारे डालती थी। एक को छोड़कर और सब घबराए हुए हैं, उन बालकों की भांति जो रात को जंगल में भटक गए हों और पत्ती के ज़रा से खड़कने पर चौंक पड़ते हों। मैं तुमसे आज्ञा मांगता हूं।

वह ज़रा दम लेकर हाथ फैलाता है यहां तक कि बिल्कुल सन्नाटा छा जाता है।

कि मुझे उन महाशयों से यह कहने का पूरा अख़्तियार दे दो "कि आप लोग लन्दन सिधारें, मज़दूरों को आपसे कुछ नहीं कहना है।"

कुछ भनभनाहट होती है।

मुझे यह अख़तियार दो और मैं क़सम खाकर कहता हूं कि एक सप्ताह में तुम्हारी सब मांगें पूरी हो जायंगी।

इवेंस, जागो आदि : हां, इनको पूरा अख़तियार दो, पूरा अख़तियार!!

शाबाश शाबाश!!

राबर्ट : यह लड़ाई हम इस छोटी-सी चार दिन की जिन्दगी के लिए नहीं लड़ रहे हैं।

भनभनाहट बन्द हो जाती है।

अपने लिये, अपनी इस छोटी-सी नश्वर देह के लिए नहीं, उन लोगों के लिए जो हमारे बाद हमेशा आते रहेंगे।

हार्दिक व्यथा से।

भाइयो, अगर उनका कुछ भी ख़याल है तो उसके सिर पर एक पत्थर और मत लुढ़काओ, आकाश पर भयंकर अन्धकार मत फैलाओ कि वे सागर की उद्दाम तरंगों में समा जायं। मैं उनके लिए बड़ी से बड़ी आफ़तें झेलने को तैयार हूं, हम सब इसके लिये तैयार हैं। इसमें किसे इनकार हो सकता है।

दांत पीसकर

अगर हम इस उजले मुंह और लाल ओंठ वाले दैत्य की गर्दन मरोड़ सके, जो आदि से हमारा और हमारे बाल-बच्चों का जीवन रक्त चूस रहा है!

शान्त होकर लेकिन अत्यन्त गम्भीरता और विह्वलता के साथ।

अगर हम में इतना जीवट नहीं है कि इस दैत्य कों छाती से छाती और आंख से आंख मिलाकर इतनी दूर खदेड़ें कि वह हमारे पैरों पर गिर पड़े, तो वह सदैव इसी भांति हमारा रक्त चूसता चला जायगा। और हम हमेशा इसी तरह कुत्तों से भी अधम बने पड़े रहेंगे।

सम्पूर्ण निश्शब्दता। राबर्ट धीरे-धीरे देह को हिलाता खड़ा रहता है। उसकी आंखें आदमियों के चेहरों को उत्तेजित कर रही हैं।

इवेंस और जागो : (यकायक)....

समूह कुछ खिसकता है। मेज पटरी के नीचे-नीचे आकर मंच के निकट खड़ी हो जाती है और राबर्ट की ओर देखकर कुछ कहना चाहती है। यकायक संदेहमय सन्नाटा छा जाता है।

राबर्ट : बूढ़े महाशय कहते हैं, 'प्रकृति के पैरों को चूमो।' मैं कहता हूं प्रकृति को ठोकर मारो, देखें वह हमारा क्या बिगाड़ सकती है।

मेज को देखता है। उसकी भवें सिकुड़ जाती हैं। वह आंखें हटा लेता है।

मेज : **(मंच के पास आकर धीमी आवाज से)** तुम्हारी स्त्री मर रही है।

राबर्ट उसकी ओर घूरता है मानो उत्थान के शिखर पर से नीचे गिर पड़ा हो।

राबर्ट : **(कुछ बोलने की चेष्टा करके)** मैं तुमसे कहता हूं—उन्हें जवाब दो—उन्हें जवाब दो—

समूह की भनभनाहट में उसकी आवाज़ दब जाती है।

टामस : **(आगे बढ़कर)** क्या तुमने उसकी बात नहीं सुनी?

राबर्ट : क्या बात है?

टामस : तुम्हारी स्त्री मर गई है जी।

राबर्ट हिचकता है, तब सिर हिलाकर नीचे कूद पड़ता है, और पटरी के नीचे-नीचे चला जाता है। लोग उसके लिए रास्ता छोड़ देते हैं। खड़ा हुआ मल्लाह अपनी लालटेन खोलता है और उसे जलाने लगता है। अंधेरा हुआ जाता है।

मेज : उन्होंने व्यर्थ इतनी जल्दी की। एनी राबर्ट तो मर गई।

तब उस सन्नाटे में जोश के साथ

क्या तुम सब के सब अन्धे हो गए हो? अभी और कितनी औरतों का खून करना चाहते हो?

समूह उसके पास से हट जाता है। लोग छोटी-छोटी टुकड़ियों में घबराए हुए जमा हो जाते हैं। मेज जल्दी से पटरी के नीचे चली जाती है। लोग चुपचाप उसके पीछे ताकते रहते हैं।

लुइस : तुम सब इसी अग्निकुंड में जलोगे।

बल्जिन : **(गुर्राकर)** मैं तुम्हारे दांत तोड़ दूंगा।

ग्रीन : अगर तुमने मेरी बात मानी होती—

टामस : उसे धर्म से विमुख होने का यह दण्ड मिला है। मैंने उससे कह दिया था कि यही होने वाला है।

इवेंस : इसीलिए तो हमें और भी उसका साथ देना चाहिए।

ताली बजती है।

क्या इस विपत्ति में तुम उसका साथ छोड़ दोगे? उसकी स्त्री मर गई है, क्या इस दशा में तुम उससे दग़ा करोगे?

समूह एक साथ तालियां भी बजाता है और कुड़कुड़ाता भी है।

राउस : **(मंच के सामने आकर)** उसकी स्त्री मर गई। क्या अब भी तुम्हें कुछ नहीं सूझता? तुम लोगों के घर में भी स्त्रियां हैं, उनकी रक्षा कैसे होगी? बहुत दिन न बीतेंगे कि तुम लोगों पर भी यही विपत्ति आवेगी।

लुईस : ठीक-ठीक!

हेनरी राउस : तुमने सच कहा, जॉर्ज, बिल्कुल सच!

लोग दबी ज़बान से हामी भरते हैं।

राउस : हम लोग अन्धे नहीं हैं अन्धा राबर्ट है! तुम लोग कब तक उसका मुंह ताकते रहोगे?

हेनरी राउस,
बल्जिन, डेविस : उसे धता बताना चाहिए।

और लोग भी यही हांक लगाते हैं।

इवेंस : **(झल्लाकर)** गिरे हुए आदमी को ठोकर मारते तुम्हें शर्म नहीं आती?

हेनरी राउस : ज़बान बन्द करो।

बल्जिन को घूंसा तानते देखकर इवेंस हाथ फैला देता है। मल्लाह जिसने लालटेन जला ली है, उसे सिर के ऊपर उठाता है।

राउस : **(मंच पर कूदकर)** उसी की खूनी ज़िद ने तो उसकी यह हालत की। क्या तुम अब भी उस आदमी के पीछे-पीछे चलोगे जिसे खुद नहीं मालूम कि मैं कहां जा रहा हूं?

इवेंस : उसकी स्त्री मर गई है।

राउस : तो यह उसकी अपनी ही करनी का फल तो है। मैं कहता हूं अब भी उसका साथ छोड़ दो, नहीं तो वह इसी तरह तुम्हारी स्त्रियों और माताओं की जान ले लेगा।

डेविस : उसका बुरा हो!

हेनरी राउस : अब उसकी कौन सुनता है!

ब्राउन : बहुत सुन चुके।

लुहार : हद से ज्यादा।

सब लोग यही रट लगाने लगते हैं सिर्फ इवेंस, जागो और ग्रीन चुप रहते हैं। ग्रीन लुहार से बहस करता दिखाई देता है।

राउस : **(चिल्लाकर)** भाइयो, हम पंचायत के साथ मेल कर लेंगे।

तालियां बजती हैं।

इवेंस : **(झल्लाकर)** अरे दग़ाबाज़ो।

बल्जिन : **(गुस्से में भरा हुआ उसके सामने जाकर)** तू किसे दग़ाबाज़ कह रहा है, गधे?

इवेंस घूंसा उठाता है, वार बचाता है, और घूंसा चलाता है। दोनों लड़ने लगते हैं। दोनों मल्लाह लालटेन उठाए तमाशा देख रहे हैं। बूढ़ा टामस आगे बढ़ता है, और उनमें बीच बचाव करता है।

टामस : तुम्हें यों झगड़ा करने में शर्म नहीं आती?

लुहार, ब्राउन, लुइस और लाल बालों वाला युवक इवेंस और बल्जिन को अलग कर देते हैं। स्टेज पर बहुत हलकी रोशनी है।

पर्दा गिरता है।

अंक 3

दृश्य पहला

[पांच बज गए हैं। अन्डरवुड के दीवानख़ाने में, जो सुरुचि के साथ सजा हुआ है, एनिड सोफ़ा पर बैठी हुई बच्चे का फ्राक सी रही है। एडगार एक छोटी-सी लम्बी टांग की मेज़ पर कमरे के बीच में बैठा हुआ एक चीनी की सुन्दूकची को घुमा रहा है। उसकी आंखें दुहरे दरवाज़ों की तरफ़ लगी हुई हैं जो दीवानख़ाने में खुलता है।]

एडगार : **(चीनी की डिबिया को रखकर और अपनी घड़ी को एक नज़र देखकर)** ठीक पांच बजे हैं। फ्राक के सिवा और सब वहां आकर बैठे हुए हैं। वह कहां हैं?

एनिड : वे एक शर्तनामे के विषय में गैस ग्वायन के मकान तक गए हैं। क्या तुम्हें उनकी ज़रूरत होगी?

एडगार : उनसे क्या काम निकलेगा। यह तो डाइरेक्टरों का काम है।

इकहरे दरवाजे की तरफ़ इशारा करके जिस पर पर्दा पड़ा हुआ है।

दादा अपने कमरे में हैं?

एनिड : हां!

एडगार : मैं चाहता हूं कि वे वहीं बैठे रहें।

एनिड आंखें उठाती है।

यह बड़ा बेहूदा काम है, बहन!

उस छोटी सन्दूकची को फिर उठा लेता है, और उसे बार-बार घुमाता है।

एनिड : मैं आज तीसरे पहर राबर्ट के घर गई थी।

एडगार : यह तो अच्छी बात न थी।

एनिड : वह अपनी स्त्री को मारे डालता है।

एडगार : तुम्हारा मतलब है कि हम लोग मारे डालते हैं।

एनिड : **(चौंककर)** राबर्ट को मान जाना चाहिए।

एडगार : मज़दूरों के पक्ष में भी बहुत कुछ कहा जा सकता है।

एनिड : मुझे अब उन पर उसकी आधी दया भी नहीं आती। जितनी वहां जाने के पहिले आती थी। वे हम लोगों के विरुद्ध जाति-भेद फैलाते हैं।

बेचारी एनी की दशा खराब थी—आग बुझी जाती थी। और खाने को उसके लायक कुछ न था।

एडगार इस सिरे से उस सिरे तक टहलने लगता है।

लेकिन फिर भी राबर्ट का दम भर रही थी। जब हम यह सारी दुर्दशा आंखों से देखते हैं, और अनुभव करते हैं कि हम कुछ कर नहीं सकते, तो आंखें बन्द कर लेनी पड़ती हैं।

एडगार : अगर बन्द हो सकें!

एनिड : जब मैं वहां गई तो मैं सोलहों आना उनके पक्ष में थी। लेकिन ज्यों ही मैं वहां पहुंची, तो मेरे मन में कुछ और ही भाव आने लगे। लोग कहते हैं कि मज़दूरों पर दया करनी चाहिए। वे नहीं जानते इसे व्यवहार में लाना कितना कठिन है। मुझे तो निराशा होती है।

एडगार : शायद!

एनिड : मज़दूरों को इस दशा में पड़े देखकर बड़ा दुःख होता है। मुझे तो अब भी आशा है कि दादा कुछ रियायत करेंगे।

एडगार : वह कुछ न करेंगे।

निराश होकर।

यह उनका धर्म हो गया है। इसका सत्यानाश हो! मैं जानता हूं जो कुछ होने वाला है। उन्हें बहुमत से हारना पड़ेगा।

एनिड : डाइरेक्टरों की इतनी हिम्मत नहीं है।

एडगार : है क्यों नहीं, सबों के होश उड़े हुए हैं।

एनिड : **(क्रोध से)** वह मानने वाले नहीं हैं।

एडगार : **(कन्धा हिलाकर)** बहिन, अगर तुम्हें राएं कम मिलेंगी तो मानना ही पड़ेगा।

एनिड : ओह!

घबराकर खड़ी हो जाती है।

लेकिन क्या वह इस्तीफा दे देंगे?

एडगार : अवश्य। यह तो उनके सिद्धान्तों की जड़ ही काट देता है।

एनिड : लेकिन एडगार, इस कम्पनी पर उन्होंने अपना तन, मन सब अर्पण कर दिया। उनके लिए तो कुछ रह ही न जायगा। भयंकर समस्या खड़ी हो जायगी।

एडगार अपने कन्धे हिलाता है।

देखो टेड, वह बहुत बूढे हो गए हैं। उन सबों को मना करना।

एडगार : **(अपने भावों को छिपाने के लिए उबल पड़ता है)** इस हड़ताल में मैं सोलहों आना मज़दूरों के पक्ष में हूं।

एनिड : वह तीस साल से इस कम्पनी के सभापति हैं। सब उन्हीं का किया हुआ है और सोचो उन्हें कैसी-कैसी कठिनाइयां झेलनी पड़ी हैं। उन्हीं ने उनका बेड़ा पार लगाया। टेड तुम उन्हें....

एडगार : तुम चाहती क्या हो? तुमने अभी कहा कि तुम्हें आशा है, दादा कुछ रियायत करेंगे। अब तुम चाहती हो कि रियायत न करने में मैं उनका साथ दूं। यह खेल नहीं है, एनिड।

एनिड : **(तेज़ होकर)** तो मेरे लिए भी दादा के हाथों से उन सब अख़्तियारों के निकल जाने का भय खेल नहीं है, जो उनके जीवन के आधार हैं। अगर वह राज़ी न हुए, और उन्हें हार माननी पड़ी, तो उनकी कमर ही टूट जाएगी।

एडगार : तुम्हीं ने तो कहा है कि आदमियों को इस दशा में देखकर बड़ा दुःख होता है।

एनिड : लेकिन यह भी तो सोचो, टेड, कि दादा से यह चोट सही न जायगी। तुम्हें किसी तरह उन लोगों को रोकना चाहिए। और सब उनसे डरते हैं। अगर तुम उनकी तरफ़ हो जाओ तो कोई उनका कुछ नहीं कर सकता।

एडगार : **(माथे पर हाथ रखकर)** अपने धर्म के विरुद्ध, तुम्हारे धर्म के विरुद्ध। ज्यों ही अपनी बात आ जाती है....

एनिड : यह अपनी बात नहीं है, दादा की बात है।

एडगार : हम हों या हमारा परिवार एक ही बात है। अपनी बात आई, और खेल बिगड़ा।

एनिड : **(चिढ़कर)** तुम दिल्लगी कर रहे हो और मैं सच कहती हूं।

एडगार : मुझे उनसे उतना ही प्रेम है, जितना तुमको है, मगर यह बिलकुल दूसरी बात है।

एनिड : मज़दूरों की क्या दशा होगी, यह हम कुछ नहीं जानते। यह सब अनुमान है। लेकिन दादा का कोई ठिकाना नहीं। क्या तुम्हारा यह मतलब है कि वह तुम्हें मज़दूरों से....

एडगार : हां, उनसे कहीं प्रिय हैं।

एनिड : तब तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आती।

एडगार : शायद!

एनिड : अगर अपनी ख़ातिर करना पड़ता तो और बात थी। लेकिन अपने बाप के लिए मैं इसे शर्म की बात नहीं समझती। मालूम होता है तुम इसका अर्थ नहीं समझ रहे हो।

एडगार : खूब समझ रहा हूं।

एनिड : उनको बचाना तुम्हारा मुख्य धर्म है।

एडगार : कह नहीं सकता।

एनिड : **(मिन्नत करके)** टेड, जीवन से उनका यही एक सम्बन्ध रह गया है। यह उनके प्राण ही लेकर छोड़ेगा।

एडगार : **(उद्‌गार को रोककर)** हां, है तो ऐसा ही।

एनिड : वचन दो।

एडगार : मुझसे जो कुछ हो सकेगा करूंगा।

वह दुहरे दरवाजों की ओर घूमता है।

पर्देदार दरवाजा खुलता हे, और ऐंथ्वनी अन्दर आता है।

एडगार दुहरे दरवाज़ों को खोलकर चला जाता है।

स्केंटलबरी की धीमी आवाज़ यह कहते हुए सुनाई देती है, 'पांच बज गए। यह झगड़ा ख़तम न होगा। हमें उस होटल में फिर भोजन करना पड़ेगा।' दरवाज़े बन्द हो जाते हैं ऐंथ्वनी आगे बढ़ता है।

ऐंथ्वनी : मैंने सुना तुम राबर्ट के घर गई थीं।

एनिड : जी हां!

ऐंथ्वनी : तुम जानती हो कि इस खाई को पार करने की चेष्टा करना कितना कठिन है।

एनिड फ्राक को छोटी मेज़ पर रख देती है, और उसके सामने ताकती है।

जैसे कोई चलनी को बालू से भरे।

एनिड : ऐसा न कहिए दादा।

ऐंथ्वनी : तुम समझती हो कि अपने दस्तानेदार हाथों से तुम देश की विपत्ति को दूर कर सकती हो।

वह आगे बढ़ जाता है।

एनिड : दादा!

ऐंथ्वनी दुहरे दरवाज़े पर रुक जाता है।

मुझे तुम्हारी ही चिन्ता है।

ऐंथ्वनी : (और नम्र होकर) बेटी, मैं अपनी रक्षा आप कर सकता हूं।

एनिड : तुमने सोचा है, अगर वहां....

उंगली दिखाती है।

तुम्हारी हार हो गई तो क्या होगा?

ऐंथ्वनी : मेरी हार हो क्यों?

एनिड : दादा, उन लोगों को इसका अवसर न दीजिए। आपका जी अच्छा नहीं है। आपके वहां जाने की जरूरत ही क्या है।

ऐंथ्वनी : (उदास मुस्कराहट के साथ) मैदान छोड़कर भाग जाऊं।

एनिड : लेकिन उन लोगों का बहुमत हो जायगा।

ऐंथ्वनी : (दरवाज़े पर हाथ रखकर) यही तो देखना है।

एनिड : मैं आपके पैरों पड़ती हूं, दादा।

ऐंथ्वनी उसकी ओर प्यार से देखता है।

वहां न जाइएगा।

ऐंथ्वनी सिर हिलाता है। वह दरवाज़ा खेलता है। आवाज़ों की भिनभिनाहट सुनाई देती है।

स्कैंटलबरी : उस साढ़े छः बजे वाली गाड़ी पर भोजन मिल जाता है न?

टेंच : जी नहीं। मैं तो समझता हूं नहीं मिलता।

बाइल्डर : मैं तो सब कुछ कह डालूंगा। इस दुविधे से जी भर गया।

एडगार : **(चौंककर)** क्या?

यह आवाजें तुरन्त बन्द हो जाती हैं। ऐंथ्वनी दरवाज़े को बंद करता हुआ उनके बीच से निकल जाता है। एनिड भय के भाव के साथ लपककर दरवाज़े के पास आ जाती है। वह मुठिये को पकड़ लेती है और उसे घुमाने लगती है। तब वह आतिशखाने के पास जाती है, और उसके जंगलों को पैरों से खटखटाती है। एकाएक वह घंटी बाजती है। फ्रास्ट उस दरवाज़े से आता है जो बड़े कमरे में खुलता है।

फ्रास्ट : हाज़िर हूं।

एनिड : देखो फ्रास्ट, मज़दूर आज आयें तो उन्हें यहां लाना। हाल में बड़ी ठंडक है।

फ्रास्ट : मुरग़ीखाने में न ले जाऊं, हुजूर।

एनिड : नहीं। मैं उनका अनादर नहीं करना चाहती। जरा-सी बात में बुरा मान जाते हैं।

फ्रास्ट : जी हां, हुजूर!

रुककर।

मिस्टर ऐंथ्वनी ने आज दिन भर कुछ नहीं खाया।

एनिड : मुझे मालूम है।

फ्रास्ट : बस, दो गिलास ह्विस्की और सोडा पिया।

एनिड : सच! तुम्हें उनको ये चीज़ें न देनी चाहिए थीं।

फ्रास्ट : **(गम्भीरता से)** हुजूर, मिस्टर ऐंथ्वनी का मिज़ाज समझ में नहीं आता। उन्हें यह नहीं मालूम होता कि अब वह जवान नहीं हैं, इन चीज़ों से उन्हें हानि होगी। जो कुछ जी में आता है वहीं करते हैं।

एनिड : हम सब भी तो यही चाहते हैं।

फ्रास्ट : हां, हुजूर!

धीरे से।

हड़ताल के बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूं। क्षमा कीजिएगा। मैं समझता हूं कि और लोग मिस्टर ऐंथ्वनी की बात मान जायं और पीछे से मज़दूरों की मांगें पूरी कर दें तो झगड़ा मिट जाय। मुझे मालूम है कि कभी-कभी उनके साथ यह चाल ठीक पड़ती है।

एनिड सिर हिलाती है।

अगर उनकी बात काटी जाती है तो वह झल्ला उठते हैं।

इस भाव से मानो उसने कोई नई बात खोज पाई हो।

मैंने अपनी ही दशा में देखा है, कि जब मुझे क्रोध आ जाता है तो

पीछे उस पर पछताता हू।

एनिड : **(मुस्कराकर)** तुम्हें कभी क्रोध आता है, फ्रास्ट?

फ्रास्ट : हां, हुजूर! कभी-कभी बहुत क्रोध आता है।

एनिड : मैंने नहीं देखा।

फ्रास्ट : **(शान्त भाव से)** नहीं हुजूर, आता है।

एनिड द्वार के पीछे की तरफ़ पैरों से खेलती है।

दर्द भरी आवाज़ में कहता है।

आप तो जानती हैं, मैं मिस्टर ऐंथ्वनी के साथ उसी वक्त से हूं जब मैं 15 साल का था। इस बुढ़ापे में कोई उन्हें छेड़ता है तो मुझे दुःख होता है। मैंने मिस्टर वेंकलीन से इस विषय में बातचीत की थी।

धीमे स्वर में।

वह डाइरेक्टरों में सबसे समझदार मालूम होते हैं। लेकिन उन्होंने मुझसे कहा, 'यह तो ठीक है, फ्रास्ट, लेकिन यह हड़ताल बड़े जोखिम की बात है।' मैंने कहा—'बेशक दोनों तरफ़ के लिए जोखिम की बात है। लेकिन मालिक की कुछ ख़ातिरदारी तो कीजिए। बस ज़रा पुचारा दे दीजिए। यह समझिए कि अगर किसी के सामने पत्थर की दीवार आ जाय तो वह उससे सिर नहीं टकराता, उसके ऊपर से होकर निकल जाता है।' इस पर वह बोले, 'तुम अपने मालिक को यह सलाह क्यों नहीं देते।'

फ्रास्ट अपने नहों की ओर ताकता है।

बस इतनी बात हुई, हुजूर! मैंने आज मिस्टर ऐंथ्वनी से कहा, 'जरा-सी बात के लिए आप क्यों जान खपाते हैं? तो मुझसे बोले, 'बकबक मत करो, फ्रास्ट, जो तुम्हारा काम है वह करो, या एक महीने की नोटिस लो।' इन बातों के लिए क्षमा कीजिएगा, हुजूर!

एनिड : **(दुहरे दरवाज़ों के पास जाकर और कान लगाकर)** क्यों, फ्रास्ट, तुम राबर्ट को जानते हो?

फ्रास्ट : हां हुजूर, उसकी बातों से तो कुछ नहीं मालूम होता, लेकिन उसकी सूरत देखकर हम कह सकते हैं कि वह कैसा आदमी है।

एनिड : **(रुककर)** हां!

फ्रास्ट : वह इन मामूली सीधे-सादे साम्यवादियों में नहीं है। वह गुस्सेवर है, उसके अन्दर आग भरी हुई है। आदमी को अख्तियार है कि वह जो राय चाहे रक्खे। लेकिन जब वह जिद पकड़ लेता है, तब वह उपद्रव करने लगता है!

एनिड : मैं समझती हूं दादा का भी राबर्ट के विषय में यही ख़याल है।

फ्रास्ट : इसी से तो मिस्टर ऐंथ्वनी उससे चिढ़ते हैं।

एनिड उसकी ओर चुभती हुई निगाह डालती है। उसे चिन्तित देखकर खड़ी-खड़ी अपने ओंठ काटने लगती है

और दुहरे दरवाज़ों की ओर ताकती है।

दोनों आदमियों में खींचातानी हो रही है। मुझे रॉबर्ट से ज़रा भी सहानुभूति नहीं है। मैंने सुना है कि औरों की तरह वह भी मामूली मज़दूर है। अगर उसने कोई नई चीज़ निकाली है तो दूसरों से उस की दशा अच्छी भी तो है। मेरे भाई ने एक नए किस्म की कल बना डाली। किसी ने उसे पुरस्कार नहीं दिया। लेकिन फिर भी उसका प्रचार चारों तरफ़ हो रहा है।

एनिड दुहरे दरवाज़ों के और समीप आ जाती है।

एक किस्म का आदमी होता है, जो सारे संसार से इसलिए जला करता है कि विधाता ने उसे अमीर क्यों न बनाया। मैं तो यह कहता हूं कि शरीफ अपने से छोटे आदमियों को उसी तरह अपने बराबर समझता है जैसे वह खुद छोटा होता तो समझता।

एनिड : **(कुछ अधीर होकर)** हां मैं जानती हूं, फ्रास्ट। तुम ज़रा अन्दर जाकर पूछो कि आप लोग चाय पीना चाहते हैं? कहना मैंने भेजा है।

फ्रास्ट : बहुत अच्छा, हुजूर।

वह दरवाज़े खोलता है और अन्दर जाता है। जोशीली, बल्कि गुस्से से भरी हुई बातचीत की क्षीण आवाज़ सुनाई देती है।

वाइल्डर : मैं आपसे सहमत नहीं हूं।

वेंकलिन : रोज़ ही तो यह विपत्ति सिर पर सवार रहती है।

एडगार : **(अधीर होकर)** लेकिन प्रस्ताव क्या है?

स्कैंटलबरी : हां, आपके पिता जी क्या कहते हैं? क्या चाय लाए हो? मेरे लिए मत लाना।

वेंकलिन : मेरी समझ में सभापति ने यह कहा है—

फ्रास्ट फिर दरवाज़े को बन्द करता हुआ अन्दर आता है।

एनिड : **(दरवाज़े से हटकर)** क्या वे अब चाय न पिएंगे?

वह छोटी मेज़ के पास जाती है और बच्चे के फ्राक की तरफ़ ताकती हुई चुपचाप खड़ी रहती है।

एक टहलनी हाल से अन्दर आती है।

टहलनी : मिस टामस आई हैं, हुजूर।

एनिड : **(सिर उठाकर)** टामस? कौन मिस टामस? क्या वह?

टहलनी : हां, हुजूर।

एनिड : **ऊपरी मन से)** अच्छा! वह कहां है?

टहलनी : ड्योढ़ी में।

एनिड : कोई ज़रूरत नहीं—

कुछ हिचकिचाती है।

फ्रास्ट : क्या उसे जवाब दे दूं, हुजूर?

एनिड : मैं बाहर आती हूं। नहीं उसे अन्दर बुला लो एलिन।

टहलनी और फ्रास्ट बाहर जाते हैं। एनिड अपने होंठ सिकोड़ कर छोटी मेज़ पर बैठ जाती है, और बच्चे का फ्राक सीने से लगाती है। टहलनी मेज टामस को अन्दर लाती है, और चली जाती है। मेज दरवाज़े के पास खड़ी हो जाती है।

एनिड : चली आओ, क्या बात है? किसलिए आई हो?

मेज : मिसेज़ राबर्ट के पास से एक संदेशा लाई हूं।

एनिड : संदेशा? क्या?

मेज : उसने आपसे कहा है कि उसकी मां की ख़बर लेते रहिएगा।

एनिड : यह बात मेरी समझ में आई नहीं।

मेज : **(रुखाई से)** संदेशा तो यही है।

एनिड : लेकिन—क्या बात है! क्यों?

मेज : एनी राबर्ट मर गई है।

दोनों चुप हो जाती हैं।

एनिड : **(घबराकर)** लेकिन अभी एक ही घंटा हुआ मैं उसके पास से चली आती हूं।

मेज : ठंड और भूख से मर गई।

एनिड : **(उठकर)** हटो, मुझे तो विश्वास नहीं आता। बेचारी का दिल—तुम मेरी तरफ़ इस तरह क्यों देख रही हो? मैंने तो उसे मदद देनी चाही थी।

मेज : **(अपने क्रोध को दबाकर)** मैंने समझा शायद आप जानना चाहती हैं।

एनिड : **(उत्तेजित होकर)** तुम मुझ पर अन्याय कर रही हो। क्या तुम देखती नहीं हो कि मैं तुम लोगों की मदद करना चाहती हूं?

मेज : जब तक मुझे कोई नहीं सताता, मैं उसे नहीं सताती।

एनिड : **(रूखेपन से)** मैंने तुम्हारे साथ क्या बुराई की है? तुम मुझसे इस तरह क्यों बोल रही हो?

मेज : **(वेदना से विह्वल होकर)** तुम अपना विलास छोड़कर हमारी टोह लेने जाती हो। तुम चाहती हो कि हम लोग एक सप्ताह भूखों मरें।

एनिड : **(अपनी बात पर अड़कर)** बेसिर पैर की बातें न करो।

मेज : मैंने उसे मरते देखा। उसके हाथ ठिठुरकर काले हो गए थे।

एनिड : **(शोक विकल होकर)** ओफ़्! फिर उसने क्यों मुझसे मदद नहीं ली? इस व्यर्थ के अभिमान से क्या फ़ायदा।

मेज : देह को गर्म रखने के लिए कुछ नहीं है तो अभिमान ही सही।

एनिड : **(झल्लाकर)** मैं तुम्हारी बातें नहीं सुनना चाहती। तुम क्या जानती हो मुझे कितना दुःख हो रहा है? अगर मैं तुमसे अच्छी दशा में हूं तो इसमें मेरा क्या अपराध है?

मेज : हम आपकी दौलत नहीं चाहते।

एनिड : तुम न कुछ समझती हो और न समझना चाहती हो। यहां से चली जाओ।

मेज : *(कटुता से)* आप मीठी-मीठी बातें भले ही करें, लेकिन आप ही ने उसकी जान ली। आप और आपके बाप ने।

एनिड : *(क्रोध और आवेश से)* क्यों कोसती हो? मेरे पिता तो इस मनहूस हड़ताल के कारण आप ही बेहाल हो रहे हैं।

मेज : **(कठोर गर्व के साथ)** तब उनसे कह दो मिसेज़ राबर्ट मर गई। इससे उन्हें फायदा होगा।

एनिड : चली जाओ।

मेज : जब कोई हमारे पीछे पड़ता है तो हम भी उसके पीछे पड़ जाते हैं।

वह यकायक तेज़ी से एनिड की तरफ़ बढ़ती है, उसकी आंखें छोटी मेज़ पर रक्खे हुए बच्चे के फ्राक पर जमी हुई हैं। एनिड फ्राक को उठा लेती है, मानो वह बच्चा ही हो। दोनों आंखें मिलाए एक गज़ के अन्तर पर खड़ी हो जाती हैं।

मेज : **(कुछ मुस्कराकर फ्राक की तरफ़ इशारा करते हुए)** अच्छा यह बात है। यह उसके बच्चे का फ्राक है। यह बहुत अच्छा है कि आपको उसकी मां की रक्षा करनी पड़ेगी। उसके बच्चों की नहीं। बुढ़िया बहुत दिनों तक आपको कष्ट न देगी।

एनिड : चली जाओ।

मेज : मैं आपसे उसका संदेशा कह चुकी।

वह फिरकर हाल में चली जाती है। जब तक चली नहीं जाती एनिड निश्चल खड़ी रहती है, फिर झुककर उस फ्राक के ऊपर अपना सर झुका लेती है जिसे वह अभी तक लिए हुए है। दुहरे दरवाज़े खुलते हैं और ऐंथ्वनी मन्द गति से आते हैं। वह अपनी लड़की के सामने से होकर जाते हैं और एक आराम कुर्सी पर बैठ जाते हैं। उनका चेहरा लाल है।

एनिड : **(अपने आवेश को छिपाकर)** क्या बात है दादा?

ऐंथ्वनी सिर हिला देते हैं पर कुछ बोलते नहीं।

क्या बात है?

ऐंथ्वनी जवाब नहीं देते। एनिड दुहरे दरवाज़ों के पास जाती है। वहां एडगार आता हुआ उससे मिल जाता है। दोनों आहिस्ता-आहिस्ता बातें करने लगते हैं।

क्या बात है, टेड?

एडगार : वही बेहूदा वाइल्डर। व्यक्तिगत आक्षेप करने लगा। साफ़ गालियां दे रहा था।

एनिड : उसने क्या कहा?

एडगार : कहता था दादा इतने बुड्ढे और दुर्बल हो गए हैं कि उन्हें कुछ सूझता ही नहीं। दादा अभी उसके जैसे छः आदमियों के बराबर हैं।

एनिड : और क्या।

दोनों ऐंथ्वनी की ओर देखते हैं।

दरवाज़े खुल जाते हैं। वेंकलिन स्केंटलबरी के साथ आता है।

स्केंटलबरी : (एक स्वर में) मुझे यह बात पसंद नहीं है।

वेंकलिन : आगे बढ़कर) प्रधान जी, वाइल्डर ने आपसे माफी मांगी है। कोई आदमी इसके सिवा और क्या कर सकता है?

वाइल्डर, जिसके पीछे-पीछे टेंच है, अन्दर आता है और ऐंथ्वनी के पास जाता है।

वाइल्डर : (बेदिली से) मैं अपने शब्दों को वापस लेता हूं, महाशय। मुझे खेद है।

ऐंथ्वनी सिर हिलाता है।

एनिड : क्यों मिस्टर वेंकलिन, तुमने कुछ निश्चय नहीं किया?

वेंकलिन सिर हिलाता है।

वेंकलिन : प्रधान जी, हम सब यहां हैं। अब आप क्या कहते हैं? हम इस मामले पर विचार करें या दूसरे कमरे में चले जायं।

स्केंटलबरी : हां-हां, हमें विचार करना चाहिए। कुछ न कुछ निश्चय करना ज़रूरी है।

वह छोटी कुर्सी से घूमकर सबसे बड़ी कुर्सी पर बैठ जाता है और आराम की सांस लेता है।

वाइल्डर और वेंकलिन भी बैठते हैं और टेंच एक सीधे तकिए की कुर्सी खींचकर प्रधान के पास रजिस्टर और कलम लेके बैठ जाता है।

एनिड : (धीरे से) मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूं, टेड।

दोनों दुहरे दरवाज़ों से बाहर चले जाते हैं।

वेंकलिन : सच्ची बात यह है, प्रधान जी, अब इस भ्रम से अपने को तसकीन देना कि हमारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता उचित नहीं है। अगर आम जलसे के पहिले इस हड़ताल का अन्त नहीं हो जाता तो हिस्सेदार लोग हमारी बुरी गति बनायेंगे।

स्केंटलबरी : (चौंककर) क्या! क्या बात है?

वेंकलिन : यह तो होगा ही।

ऐंथ्वनी : बनाने दो।

वाइल्डर : तो हम अपनी जगह पर रह चुके।

वेंकलिन : (ऐंथ्वनी से) मुझे उसी नीति के लिए बलिदान हो जाने में कोई भय नहीं है जिस पर मुझे विश्वास हो। लेकिन किसी दूसरे के सिद्धान्तों के लिए जलना मुझे मंजूर नहीं।

स्केंटलबरी : बात तो सच्ची है, प्रधान जी, आपको इसकी फिक्र करनी चाहिए।

ऐंथ्वनी : दूसरे कारखाने वालों के हित के विचार से हमें दृढ़ रहना चाहिए।

वेंकलिन : उसकी भी एक सीमा है।

ऐंथ्वनी : शुरू में तो आप लोग जोश में भरे हुए थे।

स्कैंटलबरी : **(रोनी सूरत बनाकर)** हमने समझा था मज़दूर लोग दब जायंगे, लेकिन यह ख़याल ग़लत निकला।

ऐंथ्वनी : दबेंगे।

वाइल्डर : **(उठकर कमरे में इस सिरे से उस सिरे तक हटलता हुआ)** व्यवसायी आदमी हूं, और मज़दूरों को भूखों मार डालने के सन्तोष के लिए अपने नाम में बट्टा नहीं लगाना चाहता।

आंखों में आंसू भरकर

यह मुझसे नहीं होगा। ऐसी दशा में हम हिस्सेदारों को कैसे मुंह दिखा सकेंगे।

स्कैंटलबरी : हियर-हियर हियर!!

वाइल्डर : **(अपने को धिक्कारकर)** अगर कोई मुझसे यह आशा रक्खे कि मैं उनसे यह कहूंगा मैंने तुम्हें पचास हजार पौण्ड की चपत दी, और चाहे इतना ही घाटा और हो जाय, तो भी अपनी टेक न छोड़ूंगा तो—

ऐंथ्वनी की ओर देखकर

मुझसे यह न होगा। यह उचित नहीं है। मैं आपका विरोध नहीं करना चाहता—

वेंकलिन : **(नम्रता से)** देखिए, प्रधान जी, हम लोग बिलकुल स्वाधीन नहीं है। हम सब एक कल के पुर्जे हैं। हमारा काम केवल इतना है कि जितना लाभ कम्पनी को हो सके उतना होने दें। अगर आप मुझ पर आक्षेप लगायें कि तुम्हारा कोई सिद्धान्त नहीं है तो मैं कहूंगा कि हम केवल प्रतिनिधि हैं। बुद्धि कहती है कि अगर यह हड़ताल चलती रही तो हमें जितनी हानि होगी वह मजूरी की बचत से न पूरी होगी। वास्तव में प्रधान जी, जिन अच्छी से अच्छी शर्तों पर हो सके यह झगड़ा बन्द कर देना चाहिए।

ऐंथ्वनी : ऐसा नहीं हो सकता!

सबके सब सन्नाटे में आ जाते हैं।

वाइल्डर : तो इधर भी हड़ताल ही समझिए।

निराशा से अपने हाथों को पटककर

मेरा स्पेन का जाना हो चुका!

वेंकलिन : **(व्यंग्य मिले हुए स्वर में)** प्रधान जी, आपने अपनी विजय का फल देख लिया?

वाइल्डर : **(आकस्मिक आवेश के साथ)** मेरी स्त्री बीमार है।

स्कैंटलबरी : यह तो आपने बुरी सुनाई।

वाइल्डर : अगर मैं उसे इस भयंकर शीत से न निकाल ले गया तो ईश्वर ही

जाने क्या होगा।

एडगार दुहरे दरवाज़े से अन्दर आता है, वह बहुत गम्भीर दिखाई देता है।

एडगार : **(अपने बाप से)** आपने सुना मिसेज़ राबर्ट मर गई।

सब उसकी तरफ़ ताकने लगते हैं मानो इस समाचार की गुरुता पर विचार करते हों।

एनिड आज शाम को उसके घर गई थी। वहां न कोयला था, न खाना था और न कोई और चीज़ थी। बस हद हो गई।

सन्नाटा हो जाता है। सब एक दूसरे से आंखें चुराते हैं। केवल ऐंथ्वनी बेटे की तरफ़ घूरकर देखता है।

स्कटलब क्या आपका ख़याल है, हम लोग उस ग़रीबिन की कुछ मदद कर सकते थे?

वाइल्डर : **(उत्तेजित होकर)** औरत बीमार थी। कोई नहीं कह सकता कि उसकी जिम्मेदारी हमारे ऊपर है। कम-से-कम मुझ पर नहीं है।

एडगार : **(गर्म होकर)** मैं कहता हूं कि हम सब जिम्मेदार हैं।

ऐंथ्वनी : लड़ाई, लड़ाई है!

एडगार : औरतों से नहीं।

वेंकलिन : बहुधा औरतों के ही माथे जाती है।

एडगार : अगर यह हमको मालूम है, तो हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है।

ऐंथ्वनी : यह आतताइयों के समझने की बात नहीं है।

एडगार : आप मुझे जो चाहे कहें, इससे ऊब गया हूं। हमें मामले को इतना तूल देने का कोई अधिकार न था।

वाइल्डर : मुझे यह बात रत्ती भर भी पसंद नहीं। वह आंधी खोपड़ी वाला साम्यवादी पत्र इस मामले को तोड़-मरोड़कर अपना मतलब गांठेगा। देख लेना, कोई ऊट-पटांग कहानी गढ़कर यह दिखायेगा कि औरत भूखों मर गई। मेरा इसमें कोई दोष नहीं।

एडगार : आप इससे किनारे नहीं रह सकते। हममें से कोई नहीं रह सकता।

स्कंटलबरी : **(कुर्सी के बाजू पर घूंसा मारकर)** लेकिन मैं तो इसका विरोध करता हूं।

एडगार : आप जितना विरोध चाहें करें, आप सच को झूठ नहीं कर सकते।

ऐंथ्वनी : बस! अब मत बांधो।

एडगार : **(क्रोध से उनके सामने खड़े होकर)** जी नहीं, मैं आपसे वहीं कहता हूं जो मेरे दिल में है। अगर हम यह सोचें कि मज़दूरों को कष्ट नहीं हो रहा है, तो यह झूठ है। और अगर उन्हें कष्ट हो रहा है, तो यह मानी हुई बात है कि औरतों को ज्यादा कष्ट हो रहा है और बच्चों की दशा तो कुछ कहीं नहीं जा सकती। मानव स्वभाव का इतना ज्ञान हमको है।

स्कैंटलबरी कुर्सी से खड़ा हो जाता है।

मैं यह नहीं कहता कि उन्हें सताने का हमारा इरादा था। मैं यह नहीं कहता, लेकिन मैं यह ज़रूर कहता हूं कि हमारा सच की ओर से आंखें बन्द कर लेना बेजा था। हमने इन आदमियों को नौकर रक्खा है, और इस अपराध से नहीं बच सकते। मर्दों की तो मुझे ज्यादा परवाह नहीं है, लेकिन मैं औरतों को इस तरह मारना नहीं चाहता। इससे तो यह कहीं अच्छा है कि मैं बोर्ड से इस्तीफा दे दूं।

ऐंथ्वनी के सिवा और सब खड़े हो जाते हैं। ऐंथ्वनी कुर्सी की बांह पकड़े पुत्र की ओर ताकता हुआ बैठा रहता है।

स्कैंटलबरी : भाई जान, आप जिन शब्दों में अपने भाव प्रकट कर रहे हैं वह मुझे पसंद नहीं है।

वेंकलिन : आप हद से आगे बढ़े जा रहे हैं।

वाइल्डर : मेरा भी ऐसा ही विचार है।

एडगार : **(आपे से बाहर होकर)** इन बातों की ओर आंखें मीच लेने से काम न चलेगा। अगर आप लोग औरतों का खून अपनी गरदन पर लेना चाहते हों तो लें। मैं नहीं लेना चाहता।

स्कैंटलबरी : बस-बस, भाई जान।

वाइल्डर : 'हमारी' गर्दन कहिए 'मेरी' गर्दन नहीं। मैं अपनी गर्दन पर यह पाप नहीं लेना चाहता।

एडगार : हम लोग ब़ोर्ड में पांच मेम्बर हैं, अगर हम चार इसके विरुद्ध थे तो हमने क्यों इस मामले को इतनी दूर जाने दिया? इसका कारण आप लोग खूब जानते हैं। हमें आशा थी कि हम मर्दों को भूखों मार डालेंगे, लेकिन हुआ यह कि हम औरतों की जान लेने लगे।

स्कैंटलबरी : **(उन्मत होकर)** मैं इसे नहीं मानता, किसी तरह नहीं। मेरे हृदय में दया है, हम सभी सज्जन हैं।

एडगार : **(श्लेषक भाव से)** हमारी सज्जनता में कोई बाधा नहीं है। यह हमारी कल्पना का दोष है, मि. स्कैंटलबरी।

स्कैंटलबरी : वाहियात! मेरी कल्पना तुम्हारी कल्पना से घट कर नहीं है।

एडगार : जैसी होनी चाहिए वैसी नहीं है।

वाइल्डर : मैंने पहले ही कहा था।

एडगार : तो फिर क्यों नहीं रोका?

वाइल्डर : तो क्या बात रह जाती?

ऐंथ्वनी की ओर देखता है।

एडगार : अगर आप और मैं और हम सबने जो कह रहे हैं कि हमारी कल्पना इतनी अच्छी है—

स्कैंटलबरी : **(घबड़ाकर)** मैंने यह नहीं कहा।

एडगार : **(अनसुनी करके)** इसकी जड़ काट दी होती तो यह मामला कब का

ठंडा हो गया होता और यह दुखिया इस तरह एड़ियां रगड़-रगड़ कर न मरती। कौन कह सकता है कि अभी एक दर्जन और औरतें इसी तरह फाकें नहीं कर रही हैं।

स्केंटलबरी : भाई साहब, खुदा के लिए इस शब्द का इस....इस....बोर्ड के जलसे में प्रयोग न कीजिए। यह....यह....भयंकर है।

एडगार : कोई वजह नहीं कि मैं इसका प्रयोग न करूं।

स्केंटलबरी : तो मैं तुम्हारी बातें न सुनूंगा मैं कान ही न दूंगा। मुझे दुःख होता है।

अपने कान बन्द कर लेता है।

वेंकलिन : हममें से कोई समझौते के विरुद्ध नहीं है, सिवाय तुम्हारे पिता के।

एडगार : मुझे विश्वास है कि अगर हिस्सेदारों को मालूम हो जाय कि....

वेंकलिन : मेरा ख़याल है कि आपको उनकी कल्पना में भी यही दोष मिलेगा। अगर किसी स्त्री का दिल कमजोर है तो क्या इसलिए....

एडगार : ऐसे उपद्रवों में सभी के दिल कमज़ोर हो जाते हैं, यह बच्चा भी जानता है। अगर हमने डकैतों की चाल न चली होती तो इस तरह उसके प्राण न जाते, और यह तबाही न नजर आती जो चारों तरफ़ फैली हुई है। जिसे ज़रा-सी भी बुद्धि है, वह समझ सकता है।

अब तक एडगार बोलता है ऐंथ्वनी उसकी तरफ देखता रहता है। वह अब उठना चाहता है लेकिन एडगार को फिर बोलते देखकर रुक जाता है।

मैं मज़दूरों की, अपनी, या किसी दूसरे की सफाई नहीं दे रहा हूं।

वेंकलिन : शायद आपको सफाई देनी पड़े। अदालत की निष्पक्ष जूरी शायद हमारे ऊपर कुछ भद्दे आक्षेप करे। हमें अपनी आबरू की रक्षा भी तो करनी है।

स्केंटलबरी : (कानों को बन्द किए हुए) अदालत की जूरी! नहीं, नहीं, यह वैसा मामला नहीं है।

एडगार : मुझसे अब और कायरता न होगी।

वेंकलिन : कायरता कड़ा शब्द है, मि॰ एडगार ऐंथ्वनी। अगर यह घटना हो जाने पर हम आदमियों की मांगें पूरी कर दें तो वह अलबत्ता हमारी कायरता-सी मालूम होगी। हमें बहुत सावधान रहना चाहिए।

वाइल्डर : बेशक। हमें अफवाहों के सिवा, इस मामले की कोई ख़बर नहीं है। सबसे सुगम उपाय यह है कि सारी बात मि॰ हार्निस पर छोड़ दें कि वह हमारी तरफ़ से तय कर दें। यह सीधा रास्ता है, और उसी पर हमें आ जाना चाहिए था।

स्केंटलबरी : (गर्व से) ठीक!

एडगार की तरफ़ फिरकर

और आपके विषय में मैं इतना ही कहता हूं कि जिन शब्दों में आपने इस मामले को बयान किया है, वह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है।

आपको उन शब्दों को वापस लेना चाहिए। आप हमारी राय को जानते हुए भी यहां फाके और कायरता की चर्चा करते हैं। आपके बाप के सिवा हम सब लोगों की यह राय है कि मेल ही सबसे अच्छी नीति है। आपका कथन बिल्कुल अनुचित और अविचार से भरा हुआ है। और मैं इसके सिवा और कुछ न कहूंगा। कि मुझे इससे कष्ट हुआ है–

वह अपना हाथ अपने प्रस्ताव-पत्र के बीच में रखता है।

एडगार : **(दुराग्रह से)** मैं एक शब्द भी वापस न लूंगा।

वह कुछ और कहने जा रहा है लेकिन स्केंटलबरी फिर कानों पर हाथ रख लेता है। साहस टेंच याददाश्त के रजिस्टर को उठाकर घुमाने लगता है। फिर सबको यह ज्ञान हो जाता है कि हम कोई अस्वाभाविक काम कर रहे हैं और सब एक-एक करके बैठ जाते हैं। केवल एडगार खड़ा रहता है।

वाइल्डर : **(इस भाव से मानो कोई आक्षेप मिटाने की चेष्टा कर रहा है)** मैं मिस्टर एडगार ऐंथ्वनी की बातों की परवाह नहीं करता। पुलिस की जूरी। यह विचार ही लचर है। मैं प्रधान जी के प्रस्ताव में यह संशोधन करना चाहता हूं कि यह झगड़ा तुरन्त फैसले के लिए मिस्टर साइमन हार्निस के सुपुर्द कर दिया जाय। उन्हीं शर्तों पर जो आज उन्होंने बतलाई थीं। कोई समर्थन करता है?

टेंच रजिस्टर में लिखता है।

वेंकलिन : मैं समर्थन करता हूं।

वाइल्डर : तो मैं प्रधान से निवेदन करूंगा कि वह इसे बोर्ड के सामने रक्खें।

ऐंथ्वनी : **(लम्बी सांस लेकर धीरे-धीरे)** हमारे ऊपर चोटें की गई हैं।

वाइल्डर और स्केंटलबरी की ओर व्यंग्य भरे हुए तिरस्कार से देखकर।

मैं इसे अपनी गर्दन पर लेता हूं। मेरी अवस्था छियत्तर वर्ष की है। बत्तीस साल हुए इस कम्पनी का जन्म हुआ था। उसके जन्म ही से मैं इसका प्रधान हूं। मैंने इसके अच्छे दिन भी देखे और बुरे दिन भी। इसके साथ मेरा सम्बन्ध उस साल शुरू हुआ जब यह युवक पैदा हुआ था।

एडगार सिर झुकाता है ऐंथ्वनी अपनी कुर्सी को पकड़कर फिर कहना शुरू करता है।

मैं पचास साल से मज़दूरों के साथ व्यवहार कर रहा हूं। मैंने हमेशा उन्हें ठोकर मारी है। खुद कभी ठोकर नहीं खाई। मैं इस कम्पनी के मज़दूरों से चार बार भिड़ चुका हूं और चारों ही बार मैंने उन्हें नीचा दिखाया है। लोग कहते हैं मुझमें पहला-सा दम दावा नहीं है।

वाइल्डर की ओर ताकता है।

कुछ भी हो, मुझमें अब भी अपनी तोपों के पास डटे रहने की हिम्मत है।

उसका स्वर और ऊंचा हो जाता है, दुहरे दरवाज़े खुलते हैं और एनिड आती है। अंडरवुड उसको रोकता हुआ पीछे-पीछे आता है।

मज़दूरों के साथ हमने न्याय का व्यवहार किया है। उनको ठीक मज़दूरी दी गई है। हम हमेशा उनकी शिकायतें सुनने के लिए तैयार रहे हैं। कहा जाता है कि जमाना बदल गया; जमाना बदल गया हो, लेकिन मैं नहीं बदला। और न बदलूंगा। कहा जाता है कि स्वामी और सेवक बराबर हैं। लचर बात है। एक घर में केवल एक स्वामी हो सकता है। जहां दो आदमी होंगे तो उनमें जो अधिक योग्य होगा उसी की चलेगी। कहा जाता है कि पूंजी और श्रम के स्वार्थ में कोई अन्तर नहीं है। लचर बात! उनके स्वार्थों में धुओं का अन्तर है। कहा जाता है कि बोर्ड कल का सिर्फ एक पुर्जा है। लचर बात। हमीं कल हैं। कि इसका मस्तिश्क हैं और इसकी नसें हैं। यह हमारा काम है हमी इसको चलायें और बिना किसी डर या रियायत के इसका निश्चय करें कि हमें क्या करना है। मज़दूरों से डरें। हिस्सेदारों से डरें। अपने ही साया से डरें। इसके पहिले मैं मर जाना चाहता हूं।

वह दम लेता है और अपने पुत्र से आंखें मिलाकर फिर कहता है।

मज़दूरों के साथ निबटारा करने का सिर्फ एक रास्ता है और वह है दमन। आजकल की अधकचरी बातों और अधकचरे व्यवहारों ही ने हमें इस दशा में डाल दिया है। दया और नर्मी, जिसे यह युवक अपनी समाज-नीति कहता है, इसकी जड़ है। यह नहीं हो सकता कि तुम चने भी चबाओ और शहनाई भी बजाओ। यह अधकचरी भावुकता, इसे चाहे साम्यवाद कहो कुछ और कोरी गप है। स्वामी स्वामी है, और सेवक सेवक है। तुम उनकी एक बात मानो और वह छः और मांगेंगे।

रुखाई से मुस्कराकर।

वे ओलियर ट्विस्ट(चार्ल्स डिकेंस के एक उपन्यास का पात्र) ' की भांति कभी संतुष्ट नहीं होते। अगर मैं उनकी जगह पर होता तो मैं भी वैसा ही करता। लेकिन मैं उनकी जगह पर नहीं हूं। मेरी बातों को गिरह बांध लो। अगर तुम उनसे यहां दबे, वहां दबे, तो एक दिन तुम्हें मालूम होगा कि तुम्हारे पैरों के नीचे ज़मीन खिसक गई है, और तुम दिवालिएपन के दलदल में फंस गए हो। और तुम्हारे साथ वह लोग भी दलदल में डूब रहे होंगे जिनके सामने तुमने घुटने टेके हैं। मुझ पर यह इल्जाम लगाया जाता है कि मैं स्वेच्छाचारी शासक हूं, जिसे अपनी टेक के सिवा और किसी बात की चिंता नहीं है—लेकिन

मैं इस देश का भविष्य सोचता हूं जिस पर अव्यवस्था की काली बाढ़ का संकट आने वाला है। जिस पर जन शासन का संकट आने वाला है, और न जाने कौन-कौन से संकट आने वाले हैं। अगर मैं अपने आचरण से इस विपत्ति को अपने देश पर लाऊं तो मैं अपने भाइयों को मुंह न दिखा सकूंगा।

ऐंथ्वनी सामने की ओर शून्य में ताकता है और पूरा सन्नाटा छाया हुआ है। फ्रास्ट बड़े कमरे से आता है और ऐंथ्वनी के सिवा और सब लोग उसकी ओर चिंतित हो होकर ताकते हैं।

फ्रास्ट : (ऐंथ्वनी से) हुजूर, मज़दूर लोग यहां आ गए।

ऐंथ्वनी उसे चले जाने का इशारा करता है।

क्या उन लोगों को यहां लाऊं?

ऐंथ्वनी : ठहरो!

फ्रास्ट चला जाता है ऐंथ्वनी घूमकर अपने पुत्र की ओर ताकता है।

अब मैं उस आक्षेप पर आता हूं जो मेरे ऊपर किया गया है।

एडगार घृणा का संकेत करता है और सिर कुछ झुकाकर चुपचाप खड़ा रहता है।

एक औरत मर गई है। मुझसे कहा जाता है कि उसका खून मेरी गर्दन पर है। मुझसे कहा जाता है कि और भी कितनी ही औरतों बच्चों को भूखों मरने और एड़ियां रगड़ने का अपराध भी मेरी गर्दन पर है।

एडगार : मैंने हमारी गर्दन पर कहा था।

ऐंथ्वनी : एक ही बात है।

उसका स्वर ऊंचा होता जाता है। और मनोद्वेग उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है।

मुझे यह नई बात मालूम हुई कि अगर मेरा द्वन्द्वी एक सच्ची लड़ाई में, जिसका कारण मैं नहीं हूं, नीचा देखे तो यह मेरा दोष है। अगर मैं कुश्ती खा जाऊं, और यह सम्भव है, तो मैं शिकायत न करूंगा। यह मेरा जिम्मा होगा। और यह उसका है। मैं चाहूं भी तो इन मज़दूरों को उनकी स्त्रियों और बच्चों से अलग नहीं कर सकता। सच्ची लड़ाई सच्ची लडाई है। उन्हें चाहिए कि लड़ाई छेड़ने के पहले उसका नतीजा सोच लिया करें।

एडगार : (धीमे स्वर में) लेकिन क्या यह सच्ची लड़ाई है, पिताजी? उनको देखिए और हमको देखिए। उनके पास केवल यही एक हथियार है।

ऐंथ्वनी : (कठोरता से) और तुम इतने निर्लज्ज हो कि उन्हें यह हथियार चलाना सिखाते हो। आजकल यह रिवाज सा चल पड़ा है कि लोग अपने शत्रुओं का पक्ष लेते हैं। मैंने अभी वह कला नहीं सीखी है।

यह मेरा दोष है कि उन्होंने अपनी पंचायत से भी लड़ाई ठान ली?

एडगार : दया भी तो कोई चीज़ है।

ऐंथ्वनी : और न्याय का पद उससे भी ऊंचा है।

एडगार : मगर एक आदमी के लिए जो न्याय है, वह दूसरे के लिए अन्याय है।

ऐंथ्वनी : **(अपने उद्गार को दबाकर)** तुम मुझ पर अन्याय का दोष लगाते हो जिसमें पशुता है, निर्दयता है—

एडगार घृणासूचक संकेत करता है। सब के सब डर जाते हैं।

वेंकलिन : ठहरिए, ठहरिए, प्रधान जी।

ऐंथ्वनी : **(कठोर स्वर में)** यह मेरे ही पुत्र के शब्द हैं। यह उस युग के शब्द हैं, जिसे मैं नहीं समझता। यह दुर्बल संतानों के शब्द हैं।

सब लोग भुनभुनाने लगते हैं। ऐंथ्वनी प्रबल प्रयत्न से अपने ऊपर काबू पाता है।

एडगार : **(धीरे से)** ये बातें मैंने अपने विषय में भी तो कहीं थीं, दादा।

दोनों एक दूसरे की ओर देर तक ताकते हैं। और ऐंथ्वनी अपना हाथ एक ऐसे संकेत से फैलाता है मानो उन व्यक्तियों को हटा देना चाहता हो। तब अपने माथे पर हाथ रख लेता है और इस तरह हिलता है मानो उसे चक्कर आ गया हो। लोग उसकी तरफ बढ़ते हैं लेकिन वह उन्हें पीछे हटा देता है।

ऐंथ्वनी : इसके पहिले कि मैं इस संशोधित प्रस्ताव को बोर्ड के सामने रक्खू, मैं एक शब्द और कहना चाहता हूं।

वह एक-एक के चेहरे की ओर देखता है।

अगर आप उसे स्वीकार करते हैं तो उसका यह आशय होगा कि हमने जो कुछ करने की ठानी थी वह हम पूरा न कर सकेंगे। इसका यह आशय है कि पूंजी के साथ हमारा जो कर्तव्य है, उसे हम पूरा न कर सकेंगे, इसका यह आशय है कि हमेशा ऐसे ही हमले होते रहेंगे और हमको हमेशा दबना पड़ेगा। धोखे में न आइए। यदि अब की बार आप मैदान छोड़कर भागे तो फिर आपके क़दम कभी नहीं जमेंगे। आपको कुत्तों की तरह अपने ही आदमियों के कोड़ों के सामने भागना पड़ेगा। अगर आपको यही मंजूर है तो आप इस संशोधन को स्वीकार करें।

वह फिर एक-एक के चेहरे की ओर देखता है। और अन्त में एड्गार की तरफ़ आंखें जमा देता है। सब आंखें जमीन की ओर किए बैठे हैं। ऐंथ्वनी संकेत करता है और टेंच उसके हाथ में कार्यवाही का रजिस्टर देता है। वह पढ़ता है।

मि॰ वाइल्डर ने प्रस्ताव किया और मिस्टर वेंकलिन ने उसका समर्थन किया। "मज़दूरों की मांगें तुरंत मिस्टर साइमन हार्निस के हाथों में दे दी जायं कि आज सुबह उन्होंने जो शर्तें बताई थीं उनके अनुसार मामले को तय कर दें।"

यकायक जोर से।

जो लोग पक्ष में हैं हाथ उठावें।

एक मिनट तक कोई नहीं हिलता। तब ज्यों ही ऐंथ्वनी फिर बोलना चाहता है वाइल्डर और वेंकलिन जल्दी से हाथ उठा देते हैं। तब स्कैंटलबरी और सबसे पीछे एडगार हाथ उठाते हैं। एडगार अब भी सिर नहीं उठाता।

जो लोग इसके विपक्ष में हों?

ऐंथ्वनी अपना ही हाथ उठा देता है।

स्पष्ट स्वर में।

संशोधन स्वीकार हो गया। मैं बोर्ड से इस्तीफा देता हूं।

एनिड लम्बी सांस लेती है और सन्नाटा छा जाता है। ऐंथ्वनी स्थिर बैठा हुआ है। उसका सिर धीरे-धीरे झुक रहा है। यकायक वह सांस लेता है मानो उसका सारा जीवन उसके भीतर उमड़ पड़ा हो।

पचास साल। सज्जनो आपने मेरे मुंह में कालिख लगा दी। मज़दूरों को लाओ।

वह सामने ताकता हुआ स्थिर बैठा रहता है। सभासद गण जल्दी से एकत्र हो जाते हैं। टेंच सहमी हुई आवाज से बड़े कमरे में आवाज़ देता है। अंडरवुड ज़बरदस्ती एनिड को कमरे से खींच ले जाता है।

वाइल्डर : (घबराकर) उनसे क्या कहना होगा? अभी तक हार्निस क्यों नहीं आया? क्या उसके आने के पहिले हमें आदमियों से मिलना चाहिए? मैं नहीं—

टेंच : आप लोग अन्दर जायें।

टामस, ग्रीन, बल्जिन और राउस अन्दर आते हैं और छोटी मेज़ के सामने एक कतार में खड़े हो जाते हैं। टेंच बैठ जाता है और लिखता है। सब आंखें ऐंथ्वनी की ओर लगी हुई हैं जो बिल्कुल शान्त हैं।

वेंकलिन : (छोटी मेज़ के पास आकर सशंक मैत्री के साथ) देखो टामस, अब क्या करना है? तुम्हारी सभा ने क्या तय किया?

राउस : सिम हार्निस के पास हमारा जवाब है। वह आप से बतलायेंगे। हम उनकी राह देख रहे हैं। वह हमारी तरफ़ से जवाब देंगे।

वेंकलिन : यही बात है, टामस?

टामस : (रुखाई से) जी हां! राबर्ट न आयेंगे। उनकी बीबी मर गई है।

स्कैंटलबरी : हां, हां, हम सुन चुके। ग़रीब औरत!

फ्रास्ट : (बड़े कमरे से आकर) मिस्टर हार्निस आए हैं।

हार्निस के आने पर वह चला जाता है।

हार्निस के साथ में कागज़ का एक टुकड़ा है। वह डाइरेक्टरों को सलाम करता है, मज़दूरों की तरफ देखकर सिर हिलाता है और कमरे के बीच में छोटी मेज़ के पीछे खड़ा हो जाता है।

हार्निस : सज्जनो!

सब को सलाम करता है।

टेंच उस कागज़ को लिए जिस पर वह लिख रहा है, आ जाता है और सब धीमे स्वर में बातें करने लगते हैं।

वाइल्डर : हम तुम्हारी राय देख रहे थे, हार्निस। आशा है, कि हम कुछ तय...

फ्रास्ट : **(बड़े कमरे से आकर)** राबर्ट आए हैं।

वह चला जाता है।

राबर्ट जल्दी से अन्दर आता है और ऐंथ्वनी की ओर ताकता हुआ खड़ा हो जाता है। उसका चेहरा उदास और मुर्झाया हुआ है।

राबर्ट : मिस्टर ऐंथ्वनी, मुझे खेद है कि मुझे ज़रा देर हो गई। मैं ठीक वक्त पर यहां आ जाता लेकिन एक बात हो गई इसलिए न आ सका।

मज़दूरों से।

कोई बातचीत हुई?

टामस : नहीं! लेकिन तुम क्यों आए, भले आदमी?

राबर्ट : आप लोगों ने आज हमें अपनी अवस्था पर फिर विचार करने के लिए आदेश दिया था। हमने उस पर विचार कर लिया है। हम यहां मज़दूरों का जवाब देने के लिए आए हैं।

ऐंथ्वनी से।

आप लंदन जायं, आप से हमें कुछ नहीं कहना है। हम अपनी शर्तों में जौ भर भी कमी न करेंगे। और न हम काम पर आयेंगे जब तक हमारी सब शर्तें न मान ली जायेंगी।

ऐंथ्वनी उसकी ओर ताकता है, लेकिन बोलता नहीं। मज़दूरों में हलचल होती है जैसे सब घबरा गए हों।

हार्निस : राबर्ट!

राबर्ट : **(उसकी ओर क्रोध से देखकर फिर ऐंथ्वनी से)** अब तो आप साफ-साफ समझ गए। क्या यह साफ और सीधा जवाब नहीं है। आपका यह सोचना ग़लत था कि हम घुटने टेक देंगे। आप देह पर विजय पा सकते हैं लेकिन आत्मा पर विजय नहीं पा सकते। आप लंदन लौट जायें, आदमियों को आप से कुछ नहीं कहना है।

दुविधे से ज़रा रुककर वह स्थिर ऐंथ्वनी की ओर एक कदम बढ़ाता है।

एडगार : राबर्ट, हम सब तुम्हारे लिए दुःखी हैं। लेकिन...

राबर्ट : महाशय, अपना दुःख आप अपने पास रक्खें। मगर अपने बाप को बोलने दीजिए।

हार्निस : **(कागज़ का टुकड़ा हाथ में लिए हुए छोटी मेज़ के पीछे से बोलता है।)**

राबर्ट! राबर्ट!!

ऐंथ्वनी से, आवेश के साथ

आप क्यों नहीं जवाब देते?

हार्निस : राबर्ट!

राबर्ट : **(तेज़ी से मुड़कर)** क्या बात है?

हार्निस : **(गम्भीरता से)** तुम बिना प्रमाण के बातें कर रहे हो। तुम्हारे हाथ में अब फैसला नहीं रहा।

वह टेंच को इशारा करता है। टेंच डाइरेक्टरों को इशारा करता है। वे उसके शर्तनामे पर हस्ताक्षर कर देते हैं।

इस कागज़ को देखो।

कागज़ को ऊपर उठाकर

इंजीनियरों और भट्ठीवालों की शर्तों के सिवा और सब शर्तें मंजूर की गईं। शनीचर के दिन समय के ऊपर काम करने के लिए दूनी मज़दूरी। रात की टोलियां बदस्तूर। यह शर्तें मंजूर कर ली गई हैं। मज़दूर लोग कल से काम करने जायेंगे। हड़ताल समाप्त हो गई।

राबर्ट : **(कागज को पढ़कर आदमियों पर बिगड़ता है। वे उसके पास से हट जाते हैं। केवल राउस अपनी जगह पर खड़ा रहता है। भीषण शान्ति के साथ)** तुम लोगों ने मुझे दग़ा दी। तुम्हारे लिए मैंने मौत की परवाह न की। तुम मुझे चरका देने के लिए इसी अवसर का इंतजार कर रहे थे।

मज़दूर लोग एक साथ जवाब देते हैं।

राउस : यह झूठ है।

टामस : कहां तक तुम्हारा साथ देते?

ग्रीन : अगर तुमने मेरी बात मानी होती।

बल्जिन : **(दबी ज़बान से)** ज़बान बन्द करो।

राबर्ट : तुम इसी अवसर का इन्तजार कर रहे थे।

हार्निस : **(डाइरेक्टरों का शर्तनामा लेकर और उसे टेंच को देकर)** बस मसाला तय हो गया। मित्रों, अब तुम लोग जा सकते हो।

मज़दूर लोग धीरे-धीरे चले जाते हैं।

वाइल्डर : **(नीची और उखड़ी हुई आवाज़ में)** अब तो यहां हमारे ठहरने की ज़रूरत नहीं मालूम होती।

दरवाज़े तक जाता है।

मैं उस गाड़ी के लिए अब भी कोशिश करूंगा। तुम आते हो, स्कैंटलबरी?

स्कटलबरी : **(वेंकलिन के साथ उसके पीछे जाता हुआ)** हां-हां, ज़रा ठहरो।

राबर्ट को बोलते हुए सुनकर वह ठहर जाता है।

राबर्ट : **(ऐंथ्वनी से)** लेकिन आपने तो उन शर्तों पर दस्तखत ही नहीं किया। वह लोग अपने प्रधान के बिना कोई शर्त नहीं कर सकते। आप उन शर्तों पर कभी दसखत न कीजिएगा।

ऐंथ्वनी चुपचाप उसकी ओर ताकता है।

खुदा के लिए! यह न कहिए कि आपने दसखत कर दिया।

आवेशमय करुणा से।

मुझे इसका विश्वास था।

हार्निस : **(डाइरेक्टरों का शर्तनामा दिखाकर)** बोर्ड ने हस्ताक्षर कर दिया।

राबर्ट हस्ताक्षरों को बेदिली के साथ देखता है, उसके हाथ से कागज़ छीन लेता है और अपनी आंखें बन्द कर लेता है।

स्कॆंटलबरी : **(हाथ की आड़ करके टेंच से)** प्रधान जी की ख़बर रखना। उनकी तबियत अच्छी नहीं है। उन्होंने आज भोजन भी नहीं किया। अगर स्त्रियों और बच्चों के लिए कोई फण्ड खोला जाय, तो मेरी तरफ़ से बीस पाउंड लिख देना।

वह अपनी भारी देह को संभालता हुआ जल्दी से बड़े कमरे में चला जाता है और वेंकलिन, जो राबर्ट और ऐंथ्वनी को चेहरा मरोड़-मरोड़कर देख रहा है, पीछे-पीछे जाता है। एडगार सोफा पर बैठा हुआ ज़मीन की तरफ़ ताकता रहता है। टेंच दफ्तर में लौट कर कार्यवाही का रजिस्टर लिखता है। हार्निस छोटी मेज़ के पास खड़ा राबर्ट को गम्भीर भाव से देखता रहता है।

राबर्ट : तो अब आप इस कम्पनी के प्रधान नहीं हैं।

पागलों की तरह हंसकर।

हा हा—हा! उन सबों ने आपको निकाल बाहर किया। अपने प्रधान को भी निकाल बाहर किया—हा—हा हा!

भीषण धैर्य के साथ।

तो हम दोनों निकाल दिए गए, मिस्टर ऐंथ्वनी।

एनिड दुहरे दरवाज़े से लपकी हुई अपने बाप के पास आती है और उसके पास झुक जाती है।

हार्निस : **(राबर्ट के पास आकर और उसकी आस्तीन पकड़ कर)** तुम्हें शर्म नहीं आती, राबर्ट? चुपके से घर जाओ, भले आदमी, घर जाओ।

राबर्ट : **(हाथ छुड़ाकर)** घर!

दोनों साथ-साथ जाते हैं।

एनिड : **(धीमी आवाज़ में अपने बाप से)** दादा, अपने कमरे में आइए, अपने कमरे में आइए।

ऐंथ्वनी ज़ोर लगाकर उठता है। वह राबर्ट की तरफ़ फिरता है जो उसकी तरफ़ ताक रहा है। दोनों कई सेकेंड तक एक दूसरे को टकटकी लगाए देखते रहते हैं ऐंथ्वनी। हाथ उठाता है जैसे सलाम करना चाहता हो। लेकिन हाथ गिर पड़ता है। राबर्ट के मुख पर शत्रु भाव की जगह आश्चर्य अंकित हो जाता है। दोनों अपने सिर सम्मान के भाव से झुका लेते हैं। ऐंथ्वनी धीरे-धीरे अपने पर्देदार दरवाज़े की तरफ़ जाता है। एकाएक वह लड़खड़ाता है जैसे गिरने-गिरने हो रहा हो। फिर संभल जाता है। एनिड और एडगार जो कमरे में से दौड़ कर आये हैं उसको सहारा देते हैं। राबर्ट कई सेकेंड तक ऐंथ्वनी को ध्यान से देखता हुआ खड़ा रहता है, तब बड़े कमरे में चला जाता है।

टेंच : (हार्निस के पास आकर) मेरे सिर से एक बड़ा बोझ उतर गया, मिस्टर हार्निस। लेकिन कितना दर्दनाक माजरा था।

माथे से पसीना पोंछता है।

हार्निस जो शांत और दृढ़ है, टेंच की ओर देखकर मुस्कराता है।

कितनी झांव-झांव हुई। उसका यह कहने से क्या मतलब था कि हम दोनों निकाल दिए गए? माना उस बेचारे की बीवी मर गई, लेकिन उसे प्रधान से इस तरह न बोलना चाहिए था।

हार्निस : एक औरत तो मर ही गई उस पर हमारे दोनों रत्नों को नीचा देखना पड़ा।

यकायक अन्डरवुड आता है।

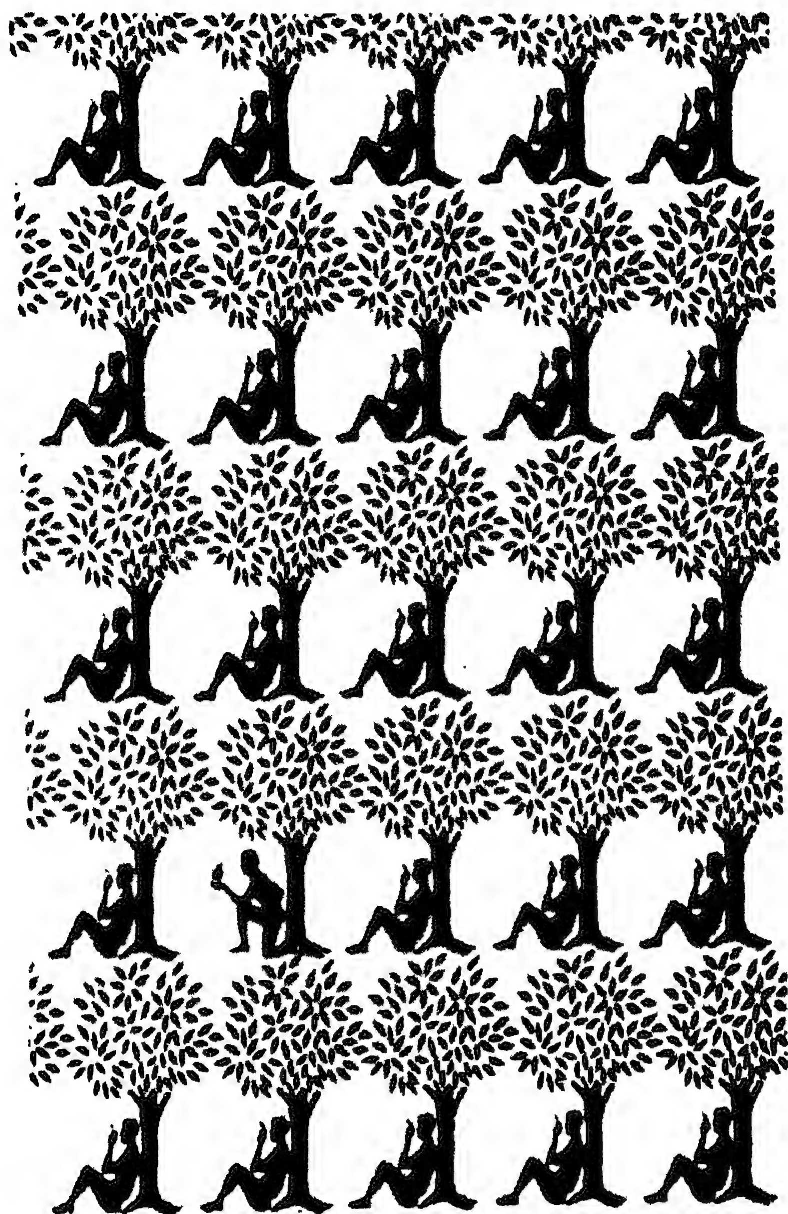
टेंच : (हार्निस की ओर देखकर यकायक उद्विग्न होकर) आपने देखा यह तो वही शर्तें है, जो आपने और मैंने लिखी थीं और हड़ताल शुरू होने से पहले दोनों पक्षों को दिखाई थीं। फिर यह झगड़ा किस लिए हुआ?

हार्निस : (धीमे स्वर में) यही तो दिल्लगी है।

अंडरवुड दरवाज़े ही पर खड़ा-खड़ा हां का संकेत करता है।

परदा गिरता है।

●●●



सृष्टि का आरंभ

प्रकाशनकाल : मार्च, 1937–अप्रैल, 1937

सृष्टि का आरम्भ

[बर्नार्ड शॉ की एक ओजपूर्ण रचना]

(अदन की वाटिका, तीसरे पहर का समय। एक बड़ा सांप अपना सिर फूलों की एक क्यारी में छिपाये हुए और अपने शरीर को एक वृक्ष की शाखाओं में लपेटे हुए पड़ा है। वृक्ष भलीभांति चढ़ चुका है, क्योंकि सृष्टि के दिन हमारे अनुमान से कहीं अधिक बड़े थे। सर्प उस व्यक्ति को नहीं दिखाई दे सकता जिसको उसकी विद्यमानता का ज्ञान नहीं है, क्योंकि उसके हरे और भूरे रंग के मेल से धोखा होता है। उसके निकट ही फूलों की क्यारी से एक ऊंची चट्टान दिखाई दे रही है। यह चट्टान और वृक्ष दोनों एक हरियाली के किनारे पर हैं, जिसमें एक हरिण का बच्चा मरा और सूखा हुआ पड़ा है और उसकी गरदन टूट गई है। आदम अपने एक हाथ के सहारे चट्टान पर झुका हुआ मृत शरीर को भयभीत होकर देख रहा है, उसने अपनी बाईं ओर सर्प को नहीं देखा है। वह दाहिनी ओर मुड़ता है और घबड़ाकर पुकारता है।)

आदम—हौआ, हौआ !

हौआ—क्या है, आदम?

आदम—यहां आओ, शीघ्र कुछ हो गया है !

हौआ—(दौड़कर) क्या, कहां? (आदम हरिण के बच्चे की ओर संकेत करता है) ओह! (वह उसके पास जाती है और आदम को भी उसके साथ जाने का साहस होता है) इसकी आंखों को क्या हो गया?

आदम—केवल आंखें नहीं, यह देखो (उसको ठुकराता है।)

हौआ—अरे यह न करो, यह जागता क्यों नहीं?

आदम—मालूम नहीं, सो नहीं रहा है।

हौआ—सो नहीं रहा है?

आदम—देखो तो !

हौआ—(हरिण के बच्चे को हिलाने और उलटने की चेष्टा करते हुए) यह तो कठोर और ठंडा हो गया है !

आदम—कोई वस्तु इसको जगा नहीं सकती?

हौआ—इसमें तो विचित्र गंध है, ओह ! (अपना हाथ झाड़ती है और उसके पास से हट जाती है) क्या तुमने इसको इसी दशा में पाया था?

आदम—नहीं, अभी खेल रहा था कि ठोकर खाकर लड़खड़ाता हुआ गिर पड़ा, फिर वह हिला तक नहीं और इसकी गरदन में कोई दोष हो गया है। (गर्दन उठाकर हौआ को दिखाने

के लिए झुकता है।)

हौआ—मत छुओ, इसके पास से हट जाओ। (दोनों पीछे हट जाते हैं और थोड़ी दूर से उस लोथ पर बढ़ती हुई घृणा से विचार करते हैं।)

हौआ—आदम !

आदम—हां।

हौआ—मान लो कि तुम ठोकर खाकर गिर पड़ो, तो क्या तुम भी इसी तरह चले जाओगे?

आदम—ओह ! (थर्रा जाता है और चट्टान पर बैठ जाता है।)

हौआ—(उसके पार्श्व में बैठकर और उसके घुटनों को पकड़कर) तुमको इसका ध्यान रखना चाहिए, प्रतिज्ञा करो कि ध्यान रखोगे।

आदम—ध्यान रखने से लाभ क्या? हमको यहां सदैव रहना है, देखती हो, सदैव के क्या अर्थ हैं। एक-न-एक दिन मैं भी ठोकर खा जाऊंगा और गिर पड़ूंगा। मुमकिन है कल ही, और संभव है इतने दिनों बाद जितनी कि इस बाग में पत्तियां हैं अथवा नदी के किनारे बालू के कण हैं। तात्पर्य यह कि मैं भूल जाऊंगा और ठोकर खा जाऊंगा।

हौआ—मैं भी।

आदम—(भीत होकर) नहीं नहीं ! मैं अकेला रह जाऊंगा और सदा के लिए। तुम कभी अपने को इस विपत्ति में न डालना। तुम चला न करो, चुपचाप बैठी रहा करो; मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। और जिस वस्तु की तुमको आवश्यकता होगी, स्वयं लाकर दूंगा।

हौआ—(कांपते हुए उसकी ओर से मुंह फेर कर और अपनी कुहनियों को पकड़कर) मैं इस तरह जल्द घबड़ा जाऊंगी। इसके सिवाय तुम्हारा यह परिणाम हुआ, तो फिर मैं अकेली रह जाऊंगी। उस समय बेकार बैठी न रह सकूंगी और अंत में मेरा भी वही परिणाम होगा।

आदम—और फिर?

हौआ—फिर हम नहीं होंगे, केवल पशु, पक्षी और सर्प होंगे।

आदम—यह न होना चाहिए।

हौआ—हां, न होना चाहिए; किन्तु हो सकता है।

आदम—नहीं, कहता हूं कि नहीं होना चाहिए। मैं जानता हूं कि ऐसा नहीं होगा।

हौआ—हम दोनों जानते हैं, लेकिन कैसे जानते हैं?

आदम—बाग में एक 'शब्द' है, जो मुझको बातें बताया करता है।

हौआ—बाग तो शब्दों से पूर्ण है, जो मेरे सिर में नए-नए विचार लाते रहते हैं।

आदम—मेरे लिए केवल एक शब्द है जो मुझसे इतना निकट है मानो मेरे भीतर से आ रहा हो।

हौआ—आश्चर्य है कि मैं तो प्रत्येक वस्तु में शब्द सुनती हूं और तुम केवल एक शब्द अपने भीतर सुनते हो। मगर कुछ बातें ऐसी भी हैं जो इन शब्दों के द्वारा नहीं किंतु मेरे भीतर से आती हैं। और यह विचार कि 'मेरा कभी नाश नहीं' मेरे भीतर से आया है।

आदम—लेकिन हम नष्ट हो जायंगे। इस हरिण के बालक की भांति हम भी गिरेंगे और....(उठकर घबराहट में इधर-उधर टहलने लगता है) मैं इस विद्या का तेज नहीं सह सकता। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं। मैं तुमसे कहता हूं कि ऐसा नहीं होना चाहिए। फिर भी यह नहीं जानता कि किस प्रकार रोकूं।

हौआ—मैं भी यही अनुभव करती हूं। आश्चर्य की बात है कि तुम इस प्रकार कह रहे हो। तुमको किसी दशा में कल नहीं ! तुम सदैव विचार बदलते रहते हो।

आदम—(डांटकर) यह क्यों कहती हो? मैंने अपना विचार कब बदला है?

हौआ—तुम कहते हो कि तुम्हारा नाश न होना चाहिए। लेकिन तुम्हीं इसकी शिकायत किया करते थे कि हमको यहां सदैव रहना है। किसी-किसी समय तुम घंटों मौन धारण किये हुए विचारा करते हो और मन ही मन में मुझ पर क्रोधित रहते हो। जब मैं पूछती हूं कि मैंने क्या किया है, तो तुम कहते हो कि तुम्हारे विषय में नहीं किन्तु अपने यहां सदैव रहने की विपत्ति पर ध्यान कर रहा था। परन्तु मैं पूछती हूं कि जिस वस्तु को तुम विपत्ति कहते हो, वह, यहां सदैव मेरे साथ रहना है।

आदम—तुम यह क्यों विचारती हो? नहीं, तुम भूल करती हो। (वह फिर मुग्ध होकर बैठ जाता है) मूल विपत्ति तो सदैव अपने साथ रहना है। मैं तुमको चाहता हूं, परन्तु अपने को नहीं चाहता। मैं कुछ और होना चाहता हूं। इससे अच्छा मैं चाहता हूं कि मेरा बारंबार फिर से आरंभ होता रहे। जिस प्रकार सर्प केंचुल बदलता रहता है, उसी प्रकार मैं भी अपने को बदलता रहूं। मैं अपने से ऊब गया हूं। परन्तु मुझको किसी न किसी प्रकार सहन करना है। एक दिन या कई दिन के लिए ही क्यों किंतु सदैव के लिए यह एक भयभीत कर देने वाला विचार है। इसी पर मौन होकर विचार किया करता हूं। और खेद करता हूं। क्या तुमने कभी इस पर विचार नहीं किया?

हौआ—मैं अपने विषय में विचार नहीं करती। इससे क्या लाभ? मैं जो हूं, सो हूं। कोई वस्तु इसको बदल नहीं सकती। मैं तुम्हारे सम्बन्ध में विचार करती रहती हूं।

आदम—यह ठीक नहीं, तुम सदैव मेरी खोज में लगी रहती हो। तुमको सदैव यह जानने की चिन्ता रहती है कि मैं क्या करता रहता हूं। यह तो एक बार ज्ञात होता ही। इसकी जगह कि अपने को मेरे साथ लगाए रखो, तुमको यह यत्न करना चाहिए कि तुम्हारा एक अपना निजी अस्तित्व पृथक् हो।

हौआ—मुझको तुम्हारा ध्यान रखना है। तुम सुस्त हो, मलिन रहते हो; अपना ध्यान नहीं रखते। प्रतिक्षण स्वप्न देखते रहते हो। यदि मैं अपने को तुम्हारे साथ लगाए न रखूं, तो तुम दूषित भोजन करने लगोगे और घृणा के योग्य हो जाओगे। इस पर मेरे इतने देखते रहने पर भी तुम किसी दिन मस्तक के बल गिर पड़ोगे और मृतक हो जाओगे।

आदम—मृतक? यह कौन-सा शब्द है?

हौआ—(हरिण के बच्चे की ओर संकेत करके) इसकी भांति। मैं इसको मृतक कहती हूं।

आदम—(उठ कर बच्चे के पास जाते हुए) इसमें कोई अप्रिय बात मालूम होती है।

हौआ—(आदम के पास जाते हुए) यह तो श्वेत छोटे कीड़ों के रूप में बदल रहा है।

आदम—इसको नदी में फेंक आओ। यह असह्य हो रहा है।

हौआ—मैं इसको स्पर्श करने का साहस नहीं कर सकती।

आदम—तो मैं ही फेंक आऊं, यद्यपि मुझे इससे घृणा हो रही है। यह हवा को विषमय कर रहा है। (खुरों को अपने हाथ में लेकर शव को यथासंभव अपने शरीर से दूर लटकाये हुए उस ओर जाता है जिस ओर से हवा आई थी।)

हौआ—(उसकी ओर एक क्षण भर देखती रहती है, फिर घृणा की एक झिझक के साथ

चट्टान पर बैठ जाती है और कुछ विचारने लगती है। सर्प का शरीर मनोहर नए रंगों से चमकता हुआ देख पड़ता है। वह पुष्पों की क्यारी से धीरे से अपना सिर उठाता है और हौआ के कान में एक अद्‌भुत मनोमुग्धकर किन्तु सुरीली ध्वनि में कहता है।)

सर्प–हौआ !

हौआ–कौन है?

सर्प–मैं हूं ! तुमको अपना सुन्दर नवीन फण दिखाने आया हूं। देखो (सुन्दर बेल में अपना फण फैला देता है।)

हौआ–आहा ! किन्तु तुझको बोलना किसने सिखाया?

सर्प–तुमने और आदम ने ! मैं घास में छिपकर तुम्हारी बातें सुना करता हूं।

हौआ–यह तेरी बड़ी बुद्धिमानी है।

सर्प–मैं इस मैदान के पशुओं में सबसे अधिक चतुर हूं।

हौआ–तेरा फण बहुत सुन्दर है (फण को थपथपाती है और सर्प को प्यार करती है) अच्छे सर्प ! क्या तू अपनी देवी माता हौआ को चाहता है?

सर्प–मैं उसको पूजता हूं (हौआ की गरदन को अपनी दोहरी जीभ से चाटता है।)

हौआ–(उसको प्यार करती हुई) हौआ के प्रिय सर्प ! अब हौआ कभी अकेली न रहेगी। क्योंकि उसका सर्प बातें कर सकता है।

सर्प–बहुत-सी वस्तुओं के विषय में मैं बातें कर सकता हूं। मैं बड़ा बुद्धिमान हूं। यह मैं ही था, जिसने तुम्हारे कान में धीरे से वह शब्द कह दिया था जो तुमको नहीं ज्ञात था–मृतक, मृत्यु, मरना।

हौआ–(कांप कर) इसकी याद क्यों दिलाता है? मैं तेरा सुन्दर फण देखकर उसको भूल गई थी। तुमको अभागी वस्तुओं की याद नही दिलाना चाहिए।

सर्प–मृत्यु भाग्यहीन वस्तु नहीं, यदि तुमने उस पर विजय पाना सीख लिया है।

हौआ–मैं मृत्यु पर विजय कैसे पा सकती हूं?

सर्प–एक दूसरी वस्तु के द्वारा, जिसको उत्पत्ति कहते हैं।

हौआ–(उच्चारण की चेष्टा करते हुए) उ...त्...प...त्ति।

सर्प–हां, उत्पत्ति।

हौआ–उत्पत्ति क्या है?

सर्प–सर्प कभी मरता नहीं, तुम किसी दिन देखोगी कि मैं इस सुन्दर केंचुल से एक नया सर्प बन कर, और इससे अधिक सुन्दर केंचुल लेकर बाहर निकल आऊंगा। यही उत्पत्ति है।

हौआ–मैं ऐसा देख चुकी हूं। बड़े आश्चर्य की बात है।

सर्प–मैं बड़ा चतुर हूं, जब तुम और आदम बातें करते हो तो मैं भी तुमको 'क्यों' कहते हुए सुनता हूं। प्रति समय क्यों तुम नेत्रों से वस्तुओं को देखती हो और कहती हो 'क्यों?' मैं स्वप्न में देखता हूं और कहता हूं 'क्यों नहीं?' मैंने 'मृतक' शब्द को अपने आप बनाया है, जिसका तात्पर्य मेरी पुरानी केंचुल है, जिसको मैंने अपनी नवीनता के समय उतार कर फेंक दिया। इस नवीन को मैं उत्पन्न होना कहता हूं।

हौआ–'उत्पत्ति' एक सुन्दर शब्द है।

सर्प–क्यों नहीं? मेरी भांति बार-बार उत्पन्न होओ और सदैव नवीन और सुन्दर बनी रहो?

हौआ—मैं? इसलिए कि ऐसा होता नहीं, और क्यों नहीं।

सर्प—किन्तु वह 'तो कैसे' हुआ 'क्यों नहीं?' तो नहीं हुआ। बताओ 'क्यों नहीं?'

हौआ—पर मैं इसको पसन्द नहीं करूंगी। फिर से नया बन जाना अच्छी बात है। किन्तु मेरा पुराना चोला पृथ्वी पर बिल्कुल मेरी भांति पड़ा रहेगा और आदम उसको पीछे हटते हुए देखेगा और—

सर्प—नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं, एक दूसरी उत्पत्ति भी है।

हौआ—दूसरी उत्पत्ति !

सर्प—सुनो, तुमको एक भारी गुप्त-भेद बताता हूं। मैं बड़ा बुद्धिमान हूं। मैं विचारता रहता हूं। मैं संकल्प का पक्का हूं और जिस वस्तु की मुझको आवश्यकता होती है, उसको प्राप्त कर लेता हूं। मैं अपने संकल्प से काम लेता रहा हूं और मैंने विचित्र-विचित्र वस्तुएं खाई हैं; पत्थर, सेब, जिनको खाते हुए तुम भयभीत होती हो।

हौआ—तुम्हारा यह साहस !

सर्प—मुझे प्रत्येक बात का साहस हुआ और अन्त में मुझे ऐसा ढंग ज्ञात हो गया जिससे अपने जीवन का भाग अपने शरीर के भीतर सुरक्षित रख सकूं।

हौआ—जीवन किसे कहते हैं?

सर्प—वह वस्तु जो मृतक और सजीव हरिण के बालक में अन्तर करती हो।

हौआ—कैसे सुन्दर शब्द हैं और कैसी आश्चर्य-जनक वस्तु है। 'जीवन' सब शब्दों में सबसे प्रिय शब्द है।

सर्प—हां जीवन ही पर विचार और चिन्ता करने से मैंने करामात दिखाने की शक्ति प्राप्त की है।

हौआ—करामात? फिर एक नवीन शब्द?

सर्प—करामात उस असंभव बात को कहते हैं, जो साधारणत: नहीं हो सकती, परन्तु हो जाती है।

हौआ—मुझे कोई करामात बताओ, जो तुमने की हो।

सर्प—मैंने अपने जीवन का एक भाग अपने शरीर में एकत्रित किया और उसको एक घर में बन्द किया जो उन पत्थरों से बना था जिनको मैंने खाया था।

हौआ—उससे क्या लाभ हुआ?

सर्प—मैंने उस छोटे से घर को धूप दिखाई और सूर्य की उष्णता में रख दिया। वह फट गया और उससे एक छोटा सर्प निकल आया, जो प्रतिदिन बढ़ता गया यहां तक कि मेरे बराबर हो गया। यही थी दूसरी उत्पत्ति।

हौआ—ओहो ! यह तो असीम आश्चर्य-जनक है। यह तो मेरे भीतर भी चेष्टा कर रही है, और मुझको घायल किए डालती है।

सर्प—उसने मुझे लगभग फाड़ डाला था, किन्तु इस पर भी मैं जीवित हूं और फिर अपने चोले को फाड़कर अपने को इसी प्रकार उत्पन्न कर सकता हूं। अदन में लगभग इतने सर्प हो जायंगे, जितने कि मेरे शरीर पर चट्टे हैं। उस समय मृत्यु कुछ न कर सकेगी। यह सर्प और वह सर्प मरते रहेंगे, परन्तु सर्प शेष ही रहेगा।

हौआ—परन्तु सर्प के अतिरिक्त हम सब कभी न कभी मर जायेंगे और तब कुछ और

शेष न रहेगा, सर्वत्र सर्प ही सर्प रह जायंगे।

सर्प—यह न होना चाहिए। हौआ मैं तुमको पूजता हूं, मेरे पूजन करने के लिए कोई न कोई वस्तु होनी चाहिए, जो तुम्हारी भांति मुझसे नितांत भिन्न हो। कोई वस्तु सर्प से उत्तम अवश्य होनी चाहिए।

हौआ— हां, यह न होना चाहिए, आदम का नाश न हो। तुम बड़े बुद्धिमान हो। बताओ, क्या करूं?

सर्प—सोचो, संकल्प करो, मिट्टी खाओ, श्वेत पाषाण को चाटो; इस सेब को खाओ जिससे तुम भयभीत होती हो, सूर्य तुमको जीवन देगा।

हौआ—सूर्य पर मुझको भरोसा नहीं। मैं स्वयं ही जीवन दूंगी। मैं अपने शरीर को चीर कर दूसरा आदमी निकालूंगी। चाहे ऐसा करने में मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े क्यों न हो जायं!

सर्प—अवश्य साहस करो। प्रत्येक बात संभव है, प्रत्येक बात सुनो। मैं बूढ़ा हूं। आदम और हौआ से भी बूढ़ा हूं। मुझे अब तक 'ललस'* याद है, जो आदम और हौआ से पहले थी। जिस प्रकार मैं तुमको प्रिय हूं, इसी प्रकार उसको भी था। वह अकेली थी, उसके संग कोई पुरुष न था। जिस प्रकार हरिण के बच्चों को गिरा हुआ देखकर तुमने मृत्यु देख ली, इसी प्रकार उसने भी देख लिया था, तब उसको ध्यान हुआ कि ये नये सिरे से उत्पन्न होने का और मेरी भांति अपने को बदलने का कोई उपाय निकालना चाहिए। उसका संकल्प बलवान् था। वह प्रयत्न करती रही और जितनी इस वाटिका के वृक्षों में पत्तियां हैं, उनसे भी अधिक महीनों तक वह संकल्प करती रही। उसकी पीड़ा भयानक थी। उसके क्रन्दन ने अदन को निद्रा से शून्य कर दिया था। उसने कहा—अब ऐसा न होना चाहिए। नये सिरे से जीवन का भार असह्य है। उनके लिए यह क्लेश अत्यन्त अधिक है और जब उसने अपना शरीर बदला तो एक ललस न थी, वरन दो थीं; एक तुम्हारी भांति, दूसरी आदम की भांति। एक हौआ थी। दूसरा आदम।

हौआ—पर उसने अपने को दो में क्यों विभाजित किया और क्यों हमको एक दूसरे से विभिन्न बनाया?

सर्प—कहता तो हूं कि यह परिश्रम एक के सहन करने से बहुत अधिक है। इसमें दो को सम्मिलित रहना चाहिए।

हौआ—क्या तुम्हारा यह तात्पर्य है कि मेरे साथ आदम को भी इस कष्ट में सम्मिलित होना पड़ेगा? नहीं, वह नहीं सम्मिलित होगा। वह इस परिश्रम को सहन नहीं कर सकता और न शरीर पर कोई कष्ट उठा सकता है।

सर्प—इसकी आवश्यकता नहीं, इसके लिए कोई परिश्रम न होगा। वह स्वयं सम्मिलित होने के लिए तुमसे प्रार्थना करेगा। वह अपनी इच्छा के द्वारा तुम्हारे वश में होगा।

हौआ—तब तो मैं जरूर करूंगी, लेकिन कैसे? ललस ने इस चमत्कार को कैसे किया?

---

*साधारणतया यह किंवदंती प्रतिद्ध है कि 'ललस' आदम की पहली स्त्री थी। पति की अवज्ञा के दंड में वह अदम की वाटिका से निकाल दी गई। कहा जाता है कि वह अब भी संसार में विद्यमान है, परन्तु दिखाई नहीं पड़ती। वह हौआ की संतान की शत्रु है। अस्तु जमोगा का रोग इसी से होना माना जाता है, किंतु बर्नार्ड शॉ ललस को आदम और हौआ दोनों की माता समझते हैं।

सर्प—उसने ध्यान किया।

हौआ—'ध्यान किया' क्या वस्तु है?

सर्प—उसने मुझसे एक ऐसी घटना की चित्ताकर्षक कथा का वर्णन किया, जो एक ऐसी ललस पर कभी नहीं बीती और जो कभी नहीं थी। ललस को उस समय तक यह नहीं ज्ञात था कि 'ध्यान', उत्पन्न करने का आरम्भ होता है। तुम भी, जिस वस्तु की तुमको इच्छा हो, उसका ध्यान करो, उसका संकल्प करो, और अन्त में जिस वस्तु का संकल्प करोगी उसे उत्पन्न कर लोगी।

हौआ—केवल 'नास्ति' से मैं किस प्रकार कोई वस्तु पैदा कर सकती हूं?

सर्प—प्रत्येक वस्तु 'नास्ति' ही से उत्पन्न हुई होगी। अपने पुट्ठों पर मांस को देखो, यह सदैव वहां नहीं था। जब मैंने प्रथम बार तुमको देखा तो तुम वृक्ष पर नहीं चढ़ सकती थीं, परंतु तुम संकल्प और प्रयत्न करती रहो, और तुम्हारे संकल्प ने केवल 'नास्ति' से तुम्हारी बाहुओं पर मांस का यह लोथड़ा पैदा कर दिया था। यहां तक कि तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो गई और तुम एक हाथ के बल अपने को खींचकर वृक्ष की उस डाल पर बैठ जाने के योग्य हो गई जो तुम्हारे सिर से ऊंची थी।

हौआ—वह तो अभ्यास था।

सर्प—अभ्यास से वस्तुएं घिस जाती हैं, बढ़ती नहीं। तुम्हारे केश हवा में तरंगें ले रहे हैं जैसे खिंच कर बढ़ जाने का प्रयत्न कर रहे हों, परंतु अभ्यास करने पर भी वह बढ़ नहीं पाते केवल इसीलिए कि तुमने संकल्प नहीं किया है। जब ललस ने कुछ ध्यान किया था, उसको मौन भाषा में (क्योंकि उस समय तक शब्द नहीं थे) मुझसे वर्णन किया, तो मैंने उसे सम्मति दी कि इच्छा करो, फिर संकल्प करो, और हमको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जिस वस्तु की उसने इच्छा की थी, और संकल्प किया था, वह उसके संकल्प की गति से अपने आप उसके भीतर उत्पन्न हो गई। तब मैंने भी संकल्प किया कि अपने को बदल कर एक के बदले दो बना लूं। और बहुत दिनों बाद यह चमत्कार प्रकट हुआ। मैं अपने पुराने चोले से बाहर निकला। इस रूप में एक दूसरा सर्प मुझसे लिपटा हुआ था। और अब उत्पन्न करने के लिए दो ध्यान हैं, दो इच्छाएं हैं, और दो संकल्प हैं।

हौआ—इच्छा करना, ध्यान करना, उत्पन्न करना, यह तो बड़ी लम्बी कहानी है। मुझे इसके लिए कोई एक शब्द बता। तू तो शब्दों का पारदर्शी है।

सर्प—जनना, इससे दोनों का तात्पर्य है। ध्यान करके आरम्भ करना और उत्पत्ति पर समाप्त कर देना।

हौआ—मुझको इस कहानी के लिए कोई एक शब्द बता जिसका ललस ने ध्यान किया और जिसको तुझसे मौन भाषा में वर्णन किया। वही कहानी जो ऐसी अद्भुत थी कि सत्य नहीं हो सकती थी और फिर भी सत्य हो गई।

सर्प—एक शेर।

हौआ—ललस मेरी कौन थी? अब उसके लिए कोई शब्द बता।

सर्प—वह तुम्हारी माता थी।

हौआ—और आदम की भी?

सर्प—हां।

हौआ-(उठकर) मैं जाती हूं और आदम से जनने के लिए कहती हूं।

सर्प-(ठट्ठा मार कर हंसता है) !

हौआ-(व्याकुल होकर और चौंककर) कैसी घृणा पैदा करने वाला शब्द है ! तुमको हो क्या गया है? इसे पहले किसी के मुंह से ऐसा शब्द नहीं निकला ।

सर्प-आदम नहीं जन सकता।

हौआ-क्यों?

सर्प-ललस ने इसको ऐसा ध्यान नहीं किया। वह ध्यान कर सकता है, इच्छा कर सकता है, संकल्प कर सकता है। अपने जीवन को समेट कर एक नई रचना के लिए सुरक्षित रख सकता है। वह सब कुछ उत्पन्न कर सकता है, सिवाय एक वस्तु के, और वह एक वस्तु उसकी अपनी वस्तु है।

हौआ-ललस ने उसको वंचित क्यों रखा?

सर्प-इसलिए कि यदि वह ऐसा कर सकता, तो उसको हौआ की आवश्यकता न होती।

हौआ-ठीक है, तो जनना मुझको होगा।

सर्प-हां इसी के द्वारा उसका तुमसे सम्बन्ध है।

हौआ-और मेरा उससे।

सर्प-हां ! उस समय तक, जब तक कि तुम दूसरा आदम न उत्पन्न कर लो।

हौआ-मुझे इसका तो ध्यान ही न था। तू बहुत बड़ा है। किन्तु यदि में दूसरी हौआ पैदा करूं, तो सम्भव है कि वह इसकी ओर झुक जाय और मेरे बिना रह सके। मैं तो कोई हौआ उत्पन्न नहीं करूंगी, केवल आदम ही आदम उत्पन्न करूंगी।

सर्प-हौआ के बिना आदम अपने जीवन को नित नया न कर सकेंगे। कभी न कभी तुम हरिण के बच्चे की तरह मर जाओगी और फिर नए आदम बिना हौआ के उत्पन्न करने में असमर्थ रहेंगे। तुम ऐसे परिणाम का ध्यान तो कर सकती हो, किन्तु इसकी कामना नहीं कर सकतीं; इसलिए संकल्प नहीं कर सकतीं, अतएव केवल आदम ही आदम उत्पन्न नहीं कर सकती।

हौआ-यदि हरिण के बालक की भांति मुझको मर जाना है, तो जो कुछ शेष है, वह भी क्यों न मर जाय? मुझे इसकी चिन्ता नहीं।

सर्प-जीवन को रुकना नहीं चाहिए। यह सबसे पहली बात है। यह कहना अज्ञानता है कि तुमको चिन्ता नहीं। तुमको अवश्य चिन्ता है। यही चिन्ता है जो तुम्हारे ध्यान को उत्तेजित करेगी, तुम्हारी इच्छा को भड़काएगी, तुम्हारे संकल्प को अटल बनायेगी और अन्त में केवल नास्ति से उत्पत्ति करेगी।

हौआ-(सोचते हुए) केवल नास्ति जैसी तो कोई वस्तु नहीं हो सकती। बाग भरा हुआ है। रिक्त नहीं है।

सर्प-मैंने इस पर भली भांति ध्यान नहीं किया था, यह एक बलवान् विचार है। हां, केवल नास्ति जैसी कोई वस्तु नहीं। निस्सन्देह ऐसी वस्तुएं हैं जिनको हम देखते नहीं। गिरगिट भी हवा खाता है।

हौआ-मैंने एक और बात विचारी है। मैं उसको आदम से कहूंगी (पुकारते हुए) आदम ! आओ ! आओ !

आदम का शब्द-ओ ! ओ !

हौआ—इससे वह प्रसन्न होगा और उसके कुम्हलाए हुए पीड़ित चित्त की चिकित्सा हो जायगी।

सर्प— उससे अभी कुछ न कहो, मैंने तुमको भारी भेद नहीं बताया है।

हौआ—अब और क्या बताना है? यह चमत्कार मेरा कार्य है।

सर्प—नहीं, उसको भी इच्छा और संकल्प करना है। परन्तु उसको अपनी इच्छा और संकल्प तुमको दे देना होगा।

हौआ—कैसे?

सर्प—यही तो बड़ा गुप्त भेद है। चुप, वह आ रहा है।

आदम—(लौटते हुए) क्या वाटिका में हमारे शब्द और उस 'शब्द' के अतिरिक्त कोई और शब्द भी है? मैंने एक नवीन शब्द सुना था।

हौआ—(उठती है और दौड़कर उसके निकट जाती है) तनिक विचार करो आदम! हमारे सर्प ने हमारी बातें सुन-सुनकर बोलना सीख लिया।

आदम—(प्रसन्न होकर) सचमुच? (वह उसके निकट से होकर पत्थर के पास जाता है और सर्प को प्यार करता है।)

सर्प—(प्यार से उत्तर देता है) हां, सचमुच, प्रिय आदम!

हौआ—मुझको इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बातें कहनी हैं। आदम अब हमको सदैव रहने की आवश्यकता नहीं।

आदम—(आवेश में सर्प का सर छोड़ देता है) क्या! हौआ इस विषय में मुझसे खेल न करो। ईश्वर करे, किसी दिन हमारी समाप्ति हो जाती और इस भांति कि मानो नहीं हुआ। ईश्वर करे मैं सदैव रहने की विपत्ति से छुटकारा पाऊं। ईश्वर करे इस वाटिका का संवारना किसी दूसरे माली के सिपुर्द हो जाय। और जो संरक्षक उस 'शब्द' की ओर से नियुक्त किया गया है, वह स्वतंत्र हो जाय। ईश्वर करे कि स्वप्न और शान्ति जो प्रतिदिन मुझको यह सब कुछ सहन करने के योग्य बनाए हुए है कुछ काल में अक्षय निद्रा और शान्ति हो जाय। बस किसी-न-किसी प्रकार से समाप्ति होनी चाहिए। मुझमें इतनी शक्ति नहीं कि 'सदैवता' को सहन कर सकूं।

सर्प—तुमको आगामी ग्रीष्म तक भी रहने की आवश्यकता नहीं और फिर भी कोई समाप्ति नहीं होगी।

आदम—यह नहीं हो सकता।

सर्प—हो सकता है।

हौआ—और होगा।

सर्प—हो चुका है। मुझको मार डालो और कल वाटिका में तुम दूसरा सर्प देखोगे, तुम्हारे हाथ में जितनी ऊंगलियां हैं उनसे भी अधिक सर्प तुमको मिलेंगे।

हौआ—मैं दूसरा आदम और हौआ उत्पन्न करूंगी।

आदम—मैंने कह दिया कि कहानियां न गढ़ो। यह नहीं हो सकता।

सर्प—मुझे स्मरण है, जब तुम आप ही एक ऐसी वस्तु थे, जो नहीं हो सकती थी, किंतु फिर भी तुम हो।

आदम—(आश्चर्यपूर्ण होकर) यह तो सच होगा। (पत्थर पर बैठ जाता है।)

सर्प—मैं उस भेद को हौआ से कह दूंगी और वह तुमको बता देगी।

आदम–(शीघ्रता से सर्प की ओर मुड़ता है और उस दशा में उसका पैर किसी तीक्ष्ण वस्तु पर पड़ जाता है) ओह !

हौआ–क्या हुआ?

आदम–कांटा है, प्रत्येक स्थान पर कांटे हैं। वाटिका को सुहावनी बनाने के लिए इनको सदैव साफ करते-करते थक गया।

सर्प–कांटे शीघ्र नहीं बढ़ते। अभी बहुत समय तक वाटिका उनसे भर नहीं सकेगी। उस समय तक नहीं भर सकेगी जब तक कि तुम अपना बोझ उतार कर सदैव के लिए सोने न चले जाओगे। तुम इसके वास्ते क्यों दुखित हो? नवीन आदम को अपने लिए अपना स्थान आप ही साफ करने दो !

आदम–यह सत्य है, तू अपना भेद हमको बता दे। देखो हौआ ! सदैव के लिए यदि रहना न पड़े, तो कैसा उत्तम हो।

हौआ–(व्याकुलता के साथ भूमि पर बैठकर घास उखाड़ते हुए) पुरुष की यही दशा है। यह जानते हुए कि हमको सदैव के लिए नहीं रहना है, इस प्रकार बातें करने लगे मानो आज ही हमारी समाप्ति होनेवाली है ! तुमको इन भयानक वस्तुओं को साफ करना है। नहीं तो जब कभी अज्ञानता में हम पैर उठायेंगे, तो घायल हो जायंगे।

आदम–हां, साफ तो अवश्य करना है, परंतु थोड़ा ही। कल मैं इन सबको साफ कर डालूंगा।

सर्प–(ठट्ठा मार कर हंसता है) !!!

आदम–यह अद्भुत कोलाहल है, मुझे सुहावना लगता है।

हौआ–मुझको तो अच्छा नहीं लगता। तू किस लिए चिल्लाता है?

सर्प–आदम ने एक नई वस्तु निकाली है अर्थात् 'कल'। अब जब कि शेष रहने का बोझ तुम्हाने सिर से उठ गया है, तुम नित नई वस्तुएं निकाला करोगे।

आदम–शेष रहना? यह क्या है?

सर्प–यह मेरा शब्द है जिससे तात्पर्य सदैव के लिए जीवित रहना है।

हौआ–सर्प ने 'होने' के लिए एक सुन्दर शब्द बनाया है, 'जीवन'।

आदम–मेरे लिए कोई ऐसा सुन्दर शब्द बता दे जिससे 'कल' काम करना अभिप्रेत हो, क्योंकि सम्भवत: यह एक भारी और पवित्र आविष्कार है।

सर्प–टालना।

आदम–अत्यन्त प्रिय शब्द है। ईश्वर करे मैं भी सर्प की-सी बोली पाए होता।

सर्प–यह भी हो सकता है, प्रत्येक बात सम्भव है।

आदम–(अचानक भय से चौंक पड़ता है) अरे !

हौआ–मेरी शान्ति ! जीवन से मेरा छुटकारा !

सर्प–'मृत्यु' ! इसके लिए यह शब्द है।

आदम–टालने में क्या भय है।

हौआ–क्या भय है?

आदम–यदि मृत्यु को कल पर टाल दूं, तो मैं कभी नहीं मरूंगा। 'कल' कोई दिन नहीं, और न हो सकता है।

सर्प—मैं बड़ा बुद्धिमान् हूं; परन्तु मनुष्य विचार में मुझसे भी अधिक गम्भीर है। स्त्री जानती है 'केवल नास्ति' कोई वस्तु नहीं। पुरुष जानता है कि 'कल' कोई दिन नहीं। मैं इनको पूजता हूं, ठीक करता हूं।

आदम—यदि मृत्यु को पाना है, तो मुझको कोई सच्चा दिन नियत करना चाहिए, कल नहीं। मुझको कब मरना चाहिए?

हौआ—जब मैं दूसरा आदम उत्पन्न कर लूं।, तो तुम मर जाना। मगर नहीं, तुम्हारा जब जी चाहे मर जाओ। (वह उठती है और आदम के पीछे से निरपेक्ष भाव से टहलती हुई वृक्ष के पास जाती है और उसके सहारे खड़ी होकर सर्प की गरदन को थपथपाती है।)

आदम—फिर भी कोई शीघ्रता नहीं है।

हौआ—विदित होता है, कि तुम इसको 'कल' पर टालोगे।

आदम—और तुम? क्या तुम दूसरी हौआ उत्पन्न करते ही मर जाओगी?

हौआ—मैं क्यों मरूं? क्या तुम मुझसे छुटकारा पाना चाहते हो? अभी तुम चाहते थे कि मैं चुपचाप बैठी रहूं और चला न करूं, जिससे कहीं हरिण के बच्चे की भांति ठोकर खाकर मर न जाऊं और अब तुमको मेरी परवाह नहीं।

आदम - अब इसमें इतनी हानि नहीं है।

हौआ—(सर्प से क्रोध में) यह मृत्यु जिसको वाटिका में ले आया है, एक विपत्ति है। वह चाहता है कि मैं मर जाऊं।

सर्प—(आदम से) क्या तुम चाहते हो कि वह मर जाय?

आदम—नहीं, मरना मुझको है, हौआ को मुझसे पहले नहीं मरना चाहिए; मैं अकेला रह जाऊंगा।

हौआ—तुम दूसरी हौआ पाओगे।

आदम—यह तो ठीक है। परन्तु सम्भव है कि वह ठीक तुम्हारी जैसी न हो। और हो नहीं सकती, इसको तो मैं भलीभांति अनुभव कर रहा हूं। उसकी वह स्मृतियां न होंगी। वह क्या होगी, मैं उसके लिए एक शब्द चाहता हूं।

सर्प—अजनबी।

आदम—हां यह एक अच्छा और ठोस शब्द है। 'अजनबी।'

हौआ—जब नवीन आदम और नवीन हौआ होंगी, तो हम अजनबियों की वाटिका में होंगे। हमको एक दूसरे की आवश्यकता है। (तुरन्त आदम के पीछे आ जाती है और उसके मुख को अपनी ओर उठाती है) आदम, इस बात को कभी न भूलना। कदापि न भूलना।

आदम—मैं क्यों भूलूंगा? मैंने तो इसको सोचा है।

हौआ—मैंने भी एक बात सोची है। हरिण का बच्चा ठोकर खाकर गिर पड़ा और मर गया, परन्तु तुम चुपचाप मेरे पीछे आ सकते हो और (वह अचानक उसके कंधों को धक्का देती है और उसको मुंह के बल ढकेल देती है) मुझको इस प्रकार ढकेल सकते हो कि मैं मर जाऊं। यदि मेरे पास यह तर्क न होता कि तुम मेरी मृत्यु की चेष्टा नहीं करोगे, तो मैं सोचने का साहस न करती।

आदम—(मारे भय के वृक्ष पर चढ़ने लगता है) तुम्हारी मृत्यु की चेष्टा ! कैसा भयानक विचार है !

सर्प—मार डालना, मार डालना, मार डालना, यह शब्द है।

हौआ—नवीन आदम और हौआ हमको मार डालेंगे। मैं उनको नहीं उत्पन्न करूंगी। (वह चट्टान पर बैठ जाती है और आदम को नीचे खींचकर अपने पार्श्व में कर लेती है और अपने दहिने हाथ से उसको पकड़े रहती है।)

सर्प—तुमको उत्पन्न करना होगा; क्योंकि यदि नहीं उत्पन्न करोगी, तो समाप्ति हो जायगी।

आदम—नहीं, वह हमको मार डालेंगे। वह हमारी भाँति अनुभव करेंगे। कोई वस्तु उसको रोकेगी। वाटिका का 'शब्द' जिस तरह हमको बताता है, उसी तरह उनको भी बताएगा कि मार डालना नहीं चाहिए।

सर्प—बाग का 'शब्द' तुम्हारा अपना शब्द है।

आदम—है भी और नहीं भी। वह मुझसे बड़ा है और मैं उसका एक भाग हूं।

हौआ—वाटिका का 'शब्द' मुझे तो तुमको मार डालने से नहीं रोकता। फिर भी मैं यह नहीं चाहती कि तुम मुझसे पहले मरो। इसके लिए मुझे किसी शब्द की आवश्यकता नहीं।

आदम—(उसकी गरदन में बांहे डालकर और प्रभावित होकर) नहीं, नहीं, बिना किसी शब्द के भी यह एक खुली हुई बात है, कोई न कोई ऐसी वस्तु है जो हमको एक दूसरे से संबन्धित किये हुए है, जिसके लिए कोई शब्द नहीं है।

सर्प—प्रेम ! प्रेम ! प्रेम !

आदम—यह तो एक इतनी बड़ी वस्तु के लिए बहुत छोटा-सा शब्द है।

सर्प—(ठट्ठा मार कर हंसता है)

हौआ—(अधीरता से सर्प की ओर मुड़कर,) फिर वही हृदय खुरचने वाला शब्द ! इसको बंद कर। तू क्यों ऐसा करता है?

सर्प—संभव है, 'प्रेम' लगभग अत्यंत छोटी वस्तु के लिए बहुत बड़ा शब्द हो जाय, परन्तु जब तक यह छोटा है, उस समय तक यह अत्यंत मधुर होगा।

आदम—(ध्यान करते हुए) तू मुझे हैरान कर रहा है, मेरी पुरानी विपत्ति यद्यपि भारी थी परंतु सीधी-सादी थी। जिन अद्भुत वस्तुओं का तू वादा कर रहा है, वह मुझे मृत्यु जैसी दिव्य विभूति देने से पहले मेरे अस्तित्व को उलझा सकती है। मैं अविनाशी जीवन के भार से व्याकुल था, परन्तु मेरा चित्त मलिन नहीं था। यदि मुझको यह ज्ञात नहीं था कि मैं हौआ से प्रेम करता हूं, तो यह भी ज्ञात न था कि संभव है वह मेरा प्रेम छोड़ दे और किसी दूसरे आदम से प्रेम करने लगे। क्या तू इस विद्या के लिए कोई शब्द बता सकता है?

सर्प—ईर्षा ! ईर्षा ! ईर्षा !

आदम—कैसा भयानक शब्द है?

हौआ—(आदम को हिलाते हुए) बहुत सोचना नहीं चाहिए। तुम बहुत सोचा करते हो!

आदम—(क्रोध में) मैं सोचने से विरत कैसे रह सकता हूं, जब मुझे संदेह हो गया है। संदेह से प्रत्येक वस्तु अच्छी है। जीवन संदिग्ध हो गया है, प्रेम सन्दिग्ध है, क्या इस नवीन विपत्ति के लिए तेरे पास कोई शब्द है?

सर्प—भय, भय, भय।

आदम— इसकी चिकित्सा भी तेरे पास है?

सर्प—आशा, आशा, आशा।

आदम—आशा क्या है?

सर्प—जब तक तुमको स्थिरता का ज्ञान नहीं, तुमको यह ज्ञान भी नहीं कि स्थिर बीते हुए से अधिक रुचिकर नहीं होगा। इसी को आशा कहते हैं।

आदम—इससे मुझे धीरज नहीं होता। मेरे भीतर भय आशा की अपेक्षा अधिक बलवान है। मुझे निश्चय की आवश्यकता है। (धमकाता हुआ उठता है।) यह वस्तु मुझे दे, नहीं तो जब तुझको सोता हुआ पाऊंगा, तो मार डालूंगा।

हौआ—(सर्प के आसपास अपनी बांहें डालकर) मेरा सुन्दर सर्प, अरे नहीं! यह भयानक विचार तुम्हारे चित्त में कैसे आ सकता है?

आदम—भय मुझसे प्रत्येक कार्य करा सकता है। सर्प ही ने मुझको भय दिया, अब उससे कह दो कि मुझको विश्वास दे नहीं तो मेरी ओर से भय लेकर जावे।

सर्प—भविष्य को अपने संकल्प से बांध लो और प्रतिज्ञा कर लो।

आदम—प्रतिज्ञा क्या ?

सर्प—अपनी मृत्यु के लिए एक दिन नियत करो और उस दिन मर जाने का संकल्प कर लो। फिर मृत्यु सन्दिग्ध न रहेगी, वरन् निश्चित हो जायगी। फिर हौआ यह संकल्प कर ले कि वह तुम्हारे मर जाने तक तुमसे प्रेम करेगी। इस प्रकार प्रेम सन्दिग्ध नहीं रहेगा।

आदम—हां, यह तो बड़ी अच्छी बात है। इससे भविष्य बंध जायगा।

हौआ—(अप्रसन्न होकर और सर्प की ओर से मुंह फेरकर) परन्तु इससे आशा विनष्ट हो जायगी।

आदम—(क्रोध से) चुप रहो, आशा निकृष्ट वस्तु है, प्रसन्नता बुरी वस्तु है; विश्वास मंगलमय वस्तु है।

सर्प—'बुरी' किसको कहते हैं? तुमने एक नया शब्द निकाला है।

आदम—जिस वस्तु से मैं डरता हूं, वह बुरी वस्तु है। अच्छा हौआ! सुनो, और सांप तू भी सुन, जिससे तुम दोनों मेरी प्रतिज्ञा को याद रखो। मैं चारों ऋतुओं के एक सहस्र चक्र तक जीवित रहूंगा।

सर्प—वर्ष, वर्ष।

आदम—मैं एक सहस्र वर्ष तक जीवित रहूंगा, उसके बाद नहीं रहूंगा। मैं मर जाऊंगा और शांति प्राप्त करूंगा और उस समय तक हौआ के सिवाय किसी दूसरी स्त्री से प्रेम नहीं करूंगा।

हौआ—और यदि आदम अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहेगा, तो मैं भी उसकी मृत्यु तक किसी दूसरे पुरुष से प्रेम नहीं करूंगी।

सर्प—तुम दोनों ने विवाह का आविष्कार किया है। आदम तुम्हारा पति है, जो किसी दूसरी स्त्री के लिए नहीं हो सकता, और तुम उसकी पत्नी हो, जो किसी दूसरे पुरुष के लिए नहीं हो सकती।

आदम—(स्वभावतः हौआ की ओर हाथ बढ़ाते हुए) पति और पत्नी!

हौआ—(आपना हाथ उसके हाथ में देते हुए) पत्नी और पति!

सर्प—(ठट्ठा मार कर हंसता है!)

हौआ—(आदम को अपने से अलग करके) मैंने कह दिया कि यह मनहूस कोलाहल न कर।

आदम–उसकी बात न सुन। कोलाहल मुझे भला लगता है। इससे मेरा हृदय हलका होता है। तू बड़ा प्रसन्नचित्त सर्प है, पर तूने अभी कोई प्रतिज्ञा नहीं की। तू क्या प्रतिज्ञा करता है?

सर्प–मैं कोई प्रतिज्ञा नहीं करता। मैं अवसर से लाभ उठाता हूं।

आदम–अवसर? इसका क्या अर्थ है?

सर्प–इसका अर्थ यह है कि मुझको विश्वास से इतना ही भय है जितना तुमको संदेह से, अर्थात् सिवाय संदेह के कोई वस्तु विश्वसनीय नहीं। यदि मैं भविष्य को बांध लूं, तो अपने संकल्प को बांध लूंगा, और जब संकल्प को बांध लूंगा तो उत्पत्ति में रुकावट आरम्भ हो जायगी।

हौआ–उत्पत्ति में रुकावट न होनी चाहिए। मैंने कह दिया कि मैं उत्पन्न करूंगी, यदि ऐसा करने में मुझे अपने को खण्ड-खण्ड भी कर देना पड़े !

आदम–तुम दोनों चुप रहो, मैं भविष्य को अवश्य बाधूंगा। मैं भय से अवश्य स्वतंत्र होऊंगा। (हौआ से) हम अपनी-अपनी प्रतिज्ञा कर चुके, यदि तुमको उत्पन्न करना है, तो तुम इस प्रतिज्ञा की सीमा के भीतर उत्पन्न करो। अब सर्प की बातें अधिक न सुनो। (हौआ के केश पकड़कर खींचता है।)

हौआ–छोड़ मूर्ख ! अभी इसने मुझको अपना भेद नहीं बताया है।

आदम–(उसको छोड़कर) हां ठीक है, मूर्ख किसको कहते हैं?

हौआ–मैं नहीं जानती, यह शब्द आप-से-आप आ गया। जब तुम भूल जाते हो और विचारने लगते हो और भय से पराजित हो जाते हो, उस समय तुम जो कुछ होते हो, वही मूर्ख है। आओ सर्प की बातें सुनें।

आदम–नहीं, मुझे भय लगता है, जब वह बोलता है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि भूमि मेरे पैरों के नीचे बैठ रही है। क्या तुम उसकी बातें सुनने के लिए ठहरोगी?

(सर्प ठट्ठा मारकर हंसता है।)

आदम–(खिलकर) इस शब्द से भय दूर हो जाता है। क्या कौतूहल है, सर्प और स्त्री आपस में भेद की बातें करने जा रहे हैं। (हंसता है और धीरे-धीरे चला जाता है। यह इसकी पहली हंसी थी)

हौआ–अब भेद बता, भेद ! (चट्टान पर बैठ जाती है और सर्प के कंठ में भुजाएं डाल देती है। सर्प होंठ के नीचे कुछ कहने लगता है। हौआ का मुख अत्यंत रोचकता से चमकने लगता है। उसकी रोचकता बढ़ती जाती है। यहां तक कि फिर उसके स्थान पर अत्यधिक घृणा के चिह्न प्रकट हो जाते हैं और वह अपना मुख अपने हाथों से छिपा लेती है।)

कुछ शताब्दियों के पश्चात्। प्रातःकाल। ईराक–अरब में भूमि का एक हरा-भरा खण्ड और वह भी लट्ठों से बना हुआ एक भवन है जो एक बाईं वाटिका पर जाकर समाप्त होता है। आदम मध्य वाटिका में भूमि खोद रहा है, उसके दक्षिण ओर हौआ द्वार के पास एक वृक्ष की छांह में तिपाई पर बैठी हुई सूत कात रही है। उसका चरखा जिसको वह हाथ से चला रही है, एक बड़े चक्र की भांति है, जो भारी लकड़ी का बना हुआ है। वाटिका की दूसरी ओर कांटों की भीति है, जिसमें टट्टी से बंद एक मार्ग है।

दोनों किफायत और बेपरवाही के साथ मोटे कपड़ों और पत्तों को पहिने हैं। दोनों अपना बाल्यकाल और निर्मलता खो चुके हैं। आदम की दाढ़ी बढ़ी हुई है और उसके केश बेढंगे कटे

हुए हैं। परन्तु दोनों स्वस्थ हैं और तरुण अवस्था में हैं। आदम एक कृषक की भांति थका हुआ दृष्टि आता है। हौआ अपेक्षाकृत प्रसन्न है। वह बैठी कात रही है और कुछ विचार कर रही है।

एक पुरुष का शब्द–अहा, माता !

हौआ–(दृष्टि उठाकर सम्मुख टट्टी की ओर देखती है) काबील आ रहा है। (आदम घृणा प्रदर्शित करता है और बिना सिर उठाये हुए धरती खोदने में लगा रहता है।)

काबील टट्टी को ठोकर मारकर मार्ग से अलग कर देता है और लम्बे-लम्बे पगों से वाटिका में प्रवेश करता है। बातचीत और रूप-रंग से वह एक हठीला सिपाही ज्ञात होता है। वह एक लम्बे बल्लम और चर्म की एक चौड़ी ढाल से सुसज्जित है। ढाल पर पीतल मढ़ा हुआ है। उसकी लोहे की टोपी सिंह के सिर से बनाई गई है, जिसमें बैल की सींगें लगी हुई हैं। वह लाल कवच पहने हुए हैं और एक पदक लगाए हुए है। पदक सिंह-चर्म पर टंका हुआ है जिसमें सिंह के नख लटक रहे हैं। पगों में खड़ाऊं हैं जिन पर पीतल का काम बना हुआ है। उसकी टांगें पीतल के आवरण से सुरक्षित हैं। उसकी सिपाहियों जैसी खड़ी मूंछें तैल से चमक रही हैं। माता-पिता के साथ उसका बर्ताव ऐसा है, जिससे उसकी उद्दण्डता और अवज्ञा का पता चलता है। वह जानता है कि उसके ढंग पसन्द नहीं किए जाते और न वह क्षमा किया गया है।

काबील–(आदम से) अभी तक धरती खोदना समाप्त नहीं हुआ? तुम सदा धरती खोदते रहोगे और सदा उसी पुरानी नाली में लगे रहोगे, कोई उन्नति नहीं, कोई नया विचार नहीं, कोई कीर्ति नहीं ! यदि मैं भी इसी भूमि खोदने में लगा रहता जैसा कि तुमने मुझे सिखाया था, तो आज मैं कुछ न होता।

आदम–तुम भाला और ढाल लिए हुए इस समय क्या हो, जब कि तुम्हारे भाई का रक्त धरती के भीतर से, तुम्हारे विरुद्ध क्रन्दन कर रहा है !

काबील–मैं पहला वध करनेवाला हूं, तुम केवल पहले मनुष्य हो ! प्रत्येक व्यक्ति पहला मनुष्य हो सकता है। यह ऐसा ही सहज है जैसा कि पहली गोभी होना। किन्तु पहला हत्यारा होने के लिए, साहसी मनुष्य की आवश्यकता है।

आदम–यहां से चले जाओ, हमारा पीछा छोड़ दो। हमको अलग रखने के लिए संसार बहुत विस्तृत है।

हौआ–तुम उसको क्यों भगाते हो? वह मेरा है। मैंने उसको अपने शरीर से बनाया था। मैं अपनी बनाई हुई वस्तु को कभी-कभी देखना चाहती हूं !

आदम–तुमने तो हाबील को भी बनया था। इसने हाबील को मार डाला; पर इस पर भी क्या तुम उसको देखने की कामना कर सकती हो?

काबील–मैंने हाबील को मार डाला, तो यह किसका अपराध था? मार डालने का आविष्कार किसने किया था? मैंने? नहीं, उसी ने अविष्कार किया था। मैं तो तुम्हारी शिक्षा पर चल रहा था। मैं तो धरती खोदा करता था? और कूड़ा-करकट साफ किया करता था। मैं पृथ्वी का फल खाता था और तुम्हारी तरह परिश्रम से जीवन-निर्वाह करता था। मैं मूर्ख था, किन्तु हाबील नए विचार और साहस का मनुष्य था। वह खोजी था और वस्तुत: उन्नति करने वाला था। उसने रक्त का अनुसंधान किया और हत्या का आविष्कार किया। उसने यह ज्ञात किया कि सूर्य की उसने अग्नि ओस की बूंदों के द्वारा नीचे लाई जा सकती है। अग्नि को सदैव प्रकाशमान रखने के लिए एक बलि का स्थान निर्माण किया। जितने पशुओं को मारता था, उनके मांस को

बलि-स्थान में अग्नि से पकाता था। वह अपने को मांस खा-खाकर जीवित रखता था। उसको अपना आहार प्राप्त करने के लिए केवल इसकी आवश्यकता थी कि अपना दिन आखेट जैसे स्वास्थ्यदायक और गौरवपूर्ण कार्य में व्यय करे और फिर एक घंटा अग्नि के साथ खेल करे। तुमने उससे कुछ भी नहीं सीखा। तुम परिश्रम करते रहे और मुझसे भी यही काम कराते रहे। मैं हाबील के हर्ष और स्वाधीनता पर ईर्ष्या करता था। मैं अपने को इसलिए तुच्छ समझता था कि तुम्हारा अनुकरण करने के स्थान पर उसका अनुकरण नहीं करता था। ऐसा वह भाग्यवान् था कि अपने भोजन में उस 'शब्द', को भी सम्मिलित रखता था, जिसने उसको अनेक नई बातें बताई थीं। वह कहता था--वह 'शब्द उस अग्नि का 'शब्द' है, जो मेरा भोजन पकाती है और जो अग्नि भोजन पका सकती है, वह खा भी सकती है। यह सच था कि मैंने अग्नि को बलि-स्थान में भोजन को समाप्त कर देते हुए स्वयं देखा, तब मैंने भी एक बलि-स्थान बनाया और उस पर भोजन की भेंट चढ़ाई। अन्न, मूल और फल सब, व्यर्थ कुछ न हुआ। हाबील मुझ पर हंसता था और तब एक बड़ी बात मैंने सोची--'क्यों न हाबील को मार डालें,जिस तरह वह पशुओं को मारा करता है !' मैंने वार किया और वह मर गया, जिस प्रकार पशु मरा करते थे। इसके बात मैंने तुम्हारी मूर्खता और परिश्रम के जीवन को छोड़ दिया और उसकी तरह निर्वाह करने लगा--शिकार, रक्त बहाना। शिकार के द्वारा क्या मैं तुमसे श्रेष्ठ, तुमसे अधिक बलिष्ठ, तुमसे अधिक प्रसन्न और तुमसे अधिक स्वाधीन नहीं हूं?

आदम--तुम अधिक बलिष्ठ नहीं हो, तुम ठिगने हो। तुम्हारा जीवन दृढ़ नहीं हो सकता। तुमने पशुओं को अपने से भयभीत कर दिया है। सर्प ने अपने को तुम से बचाने के लिए विष उत्पन्न कर लिया है। मैं स्वयं तुमसे डरता हूं। यदि तुम अपनी माता की ओर एक पग और बढ़े तो मैं अपनी कुदाल से तुमको उसी तरह मार कर गिरा दूंगा, जिस तरह तुमने हाबील को मार कर गिरा दिया था।

हौआ--वह मुझको मारेगा नहीं, वह मुझसे प्रेम करता है।

आदम--वह हाबील से भी प्रेम करता था; परन्तु उसको उसने मार डाला।

काबील--मैं स्त्रियों को मारना नहीं चाहता, मैं अपनी मां को नहीं मारूंगा और उसी के विचार से तुमको भी नहीं मारूंगा। यद्यपि बिना तुम्हारे कुदाल की धार नें आए हुए इस भाले को तुम्हारे पार कर सकता हूं। मुझे यह ध्यान न होता, तो मैं तुम्हें मार डालने की चेष्टा किए बिना न रहता यद्यपि डरता हूं कि कहीं तुम न मुझे मार डालो। मैंने सिंह और वन शूकर से संग्राम किया है, यह देखने के लिए कि कौन किसको मार डालता है। मैंने मनुष्य के साथ भी युद्ध किया है। यह है तो भयानक काम पर इससे अधिक आनंद भी किसी और काम में नहीं। मैं इसको लड़ाई कहता हूं। जो कभी लड़ा नहीं है, जीवन का आनंद वह नहीं जानता। यही आवश्यकता मुझको मां के पास ले आई है।

आदम--अब तुमको एक दूसरे से क्या प्रयोजन? वह उत्पन्न करने वाली है और तुम विनाश करने वाले हो।

काबील--मैं विनाश कैसे कर सकता हूं जब तक वह उत्पन्न न करे? मैं चाहता हूं कि वह और पुरुष उत्पन्न करती रहे, और हां, स्त्रियां भी जिससे वह सब अपनी-अपनी बारी से और अधिक पुरुष उत्पन्न करें, असंख्य पुरुषों की, जितनी कि सहस्र वृक्षों में पत्तियां होंगी उनसे भी अधिक पुरुषों की एक बड़ी भारी रचना का ध्यान मेरे मस्तिष्क में है। मैं उनको दो बड़े भागों

मैं विभाजित करूंगा। एक का सेनापति मैं होऊंगा, दूसरे का वह व्यक्ति जिससे मैं सबसे अधिक भय करूं और जिसको सबसे पहले मार डालना चाहूं। तनिक विचार तो करो, मनुष्य का यह सारा दल आपस में लड़ता-मरता रहेगा। जय की पुकार, उत्तेजना के शब्द, निराशा का गान, दुःख की विनय, निःसंदेह इन्हीं में जीवन होगा। ऐसा जीवन जो पूर्ण-रूप से कार्य में लाया गया हो। एक प्रज्वलित आग का और आंधी का जीवन, जिसने उसको न देखा होगा, न सुना होगा, न अनुभव किया होगा और न परीक्षा की होगी। वह इस आदम के सम्मुख, जिसने यह सब कुछ किया होगा, अपने को अपदार्थ और मूर्ख समझेगा।

हौआ—और मैं ! मैं केवल एक सुगम द्वार होऊंगी पुरुषों को उत्पन्न करने का, जिससे तुम उनको मार डालो !

आदम—या वह तुमको मार डालें !

काबील—माता ! पुरुषों का उत्पन्न करना तुम्हारा अधिकार है, तुम्हारा काम है। तुम्हारे कष्ट से तुम्हारा गौरव है और तुम्हारी विजय है। तुम मेरे पिता को जैसा कि तुम कह रही हो, इसके लिए केवल अपना एक द्वारा बना लेती हो। उसको तुम्हारे लिए भूमि खोदनी पड़ती है, परिश्रम करना पड़ता है, चलना पड़ता है, बिल्कुल उस बैल की भांति जो भूमि खोदने में उसे सहायता देता है, या उस गधे की भांति जो उसका बोझा लादता है। कोई स्त्री मुझसे मेरे पिता का जीवन नहीं व्यतीत करा सकती, मैं शिकार करूंगा, लडूंगा और अपनी नस-नस की शक्ति व्यय करूंगा। जब अपने प्राण संकट में डाल कर जंगली सुअर मारकर लाऊंगा, तो मैं अपनी स्त्री के सम्मुख लाकर डाल दूंगा कि वह उसको पकावे। और उसके परिश्रम के बदले में उसको भी एक कौर दे दूंगा। उसको कोई दूसरा भोजन नहीं मिलेगा। इससे वह मेरी चेरी हो जाएगी। और जो मुझको मार डालेगा, वह उस स्त्री को लूट के माल की तरह ले जायगा। पुरुष स्त्री का स्वामी होगा, न कि उसका बालक और मजदूर !

(आदम अपनी कुदाल फेंक देता है और ध्यान से हौआ को देखने लगता है।)

हौआ—आदम ! क्या तुम परीक्षा में पड़ गए? क्या हमारे आपस की प्रीति से तुमको यह बात उत्तम मालूम होती है?

काबील—प्रीति का हाल वह क्या जाने? जब वह लड़ चुकेगा तब भय और मृत्यु का सामना कर लेगा। जब वह अपनी शक्ति का अंतिम आवेश व्यय करके आन्दोलन कर चुकेगा, उस समय उसको ज्ञात होगा कि वास्तव में स्त्री के आलिंगन में प्रेम से शांति प्राप्त करना किसको कहते हैं। उस स्त्री से पूछो जिसको तुमने उत्पन्न किया है और जो मेरी पत्नी है। क्या वह मेरी अगली चाल पसंद करेगी, जब कि मैं आदम का अनुसरण करता था, कृषि और मजदूरी करता था।

हौआ—(क्रोध में चरखा छोड़कर) तुम्हारा मुंह कि तुम यहां आकर लुआ* पर अभिमान करो जो किसी काम की नहीं और जो बेहद बुरी लड़की और सबसे निकम्मी पत्नी है ! तुम उसके स्वामी हो। तुम तो आदम के बैल या अपने रक्षक श्वान से भी कहीं अधिक उसके दास हो। निःसंदेह जब तुम अपने प्राण संकट में डालकर जंगली सुअर का शिकार करोगे, तो उसके परिश्रम के बदले में एक और उसके सम्मुख भी डाल दोगे। अहाहा ! दुर्भाग्य ! क्या तुम यह समझते हो कि मैं उससे या उससे अधिक तुमसे परिचित नहीं हूं? क्या तुम्हारा प्राण उस समय भी संकट में होता है जब तुम गिलहरी या नीली लोमड़ी को मारते हो, जिससे वह उनको अपने

---

* बार्टन ने अपने नाटक में काबील की स्त्री का नाम आदा बताया था।

शरीर से लटकाकर स्त्री से पशु बन जाय? जब तुम बेबस और बहीन पक्षियों को जाल में फंसाते हो तो केवल इसलिए कि लुआ को साधारण और हलाल खाद्य खाने में कष्ट होता है। तो उस समय कैसे सूरमा मालूम होते हो? तुम सिंह को मारने के लिए अवश्य अपनी जान संकट में डालते हो, किन्तु उसका चर्म किसको मिलता है। जिसके लिए तुमने भय का सामना किया! लुआ उसको अपना बिछौना बनाने के लिए ले लेती है और उसका सड़ा हुआ मांस तुम्हारे आगे फेंक देती है जिसको तुम खा भी नहीं सकते। तुम लड़ते हो, इस कारण कि समझते हो कि वह इससे तुम्हारा आदर करती है। और तुमको चाहती है। मूर्ख ! वह तुमको इस प्रयोजन से लड़ाती है कि तुम उसको सुख भोग के सामान ओर मारे हुए लोगों का माल लाकर देते हो, और वह लोग जो तुमसे डरते हैं, उसको सोना-चांदी और धन देते रहते हैं। तुम कहते हो कि मैं आदम को केवल एक माध्यम बनाए हुए हूं ! मैं तो चरखा चलाती हूं और घर की देख-भाल करती हूं, संतान उत्पन्न करती हूं और उनका पालन करती हूं। मैं तो एक स्त्री हूं और परुषों को लुभाने और उनका शिकार करने के लिए कोई पालतू पशु नहीं हूं! तुम क्या हो? एक दुर्भाग्य-दास, जो मुंह पर मुलम्मा किए हो ! या पशुओं के बालों की एक गठरी हो ! जब मैंने उत्पन्न किया था तो तुम एक मनुष्य के बालक थे और लुआ एक मनुष्य की बालिका। तुम लोगों ने अब अपने को क्या बना डाला है?

काबील-(बल्लम को ढाल में पहनाकर मूंछो को ऐंठता हुआ) मनुष्य से उत्तमतर भी कोई वस्तु है-'शूर', और वही है मनुष्य-शिरोमणि।

हौआ-नर-शिरोमणि ! तुम तो नराधम हो। तुम्हारा अन्य पुरुषों के साथ वही संबंध है जो सफेद लोमड़ी का शशक के साथ है, और लुआ का तुम्हारे साथ वह संबंध है, जो जोंक का सफेद लोमड़ी के साथ है। तुम अपने पिता को तुच्छ समझते हो, परंतु जब वह मरेगा, तो संसार उसके जीवन के कारण अधिक पूर्ण हो चुका होगा। जब तुम मरोगे तो लोग कहेंगे वह बड़ा लड़ाका था, संसार के लिए यह उत्तम होता कि वह उत्पन्न न हुआ होता, और लुआ के विषय में वह कुछ न कहेंगे, वरन् जब उसको स्मरण करेंगे, तो उसके नाम पर थूक देंगे।

काबील-वह संग रखने के लिए तुमसे अच्छी स्त्री है और यदि वह भी मुझको उसी प्रकार बुरा कहती जिस प्रकार तुम कह रही हो या जिस प्रकार आदम को बुरा कहा करती हो, तो मैं मारते-मारते उसको नीला कर देता। मैंने ऐसा किया भी है और तुम कहती हो कि मैं दास हूं।

हौआ-इस कारण कि उसने दूसरे पुरुष पर दृष्टि डाली थी और तुम उसके पैरों पर गिरे और रो-रोकर क्षमा मांगने लगे और पहले से दस गुना उसके दास हो गये और वह जब भलीभांति कराह चुकी और उसकी पीड़ा कम हुई, तो उसने तुमको क्षमा कर दिया। क्यों सच है कि नहीं?

काबील-वह मुझसे पहले से अधिक प्रेम करने लगी। यही स्त्री का वास्तविक स्वभाव है।

हौआ-(माता की भांति उस पर करुणा करके) प्रेम ! तुम इसको प्रेम कहते हो ! इसको स्त्री का स्वभाव कहते हो। मेरे पुत्र ! इसका नाम न पुरुष है, न स्त्री, न इसको प्रेम कहते हैं, न जीवन ! तुम्हारी अस्थियों में वास्तविक बल नहीं और न तुम्हारे शरीर में खून है।

काबील-हा हा ! (अपने बल्लम को पकड़कर पूरे बल से घुमाता है)

हौआ-हां, तुमको आप ही अपने बल का अनुमान करने के लिए छड़ी घुमाने की

आवश्यकता होती है। तुम जीवन का, बिना कड़वा किये हुए और बिना खौलाये हुए उसके स्वाद का अनुभव नहीं कर सकते। तुम लुआ का प्रेम, जब तक उसका मुंख रंगा हुआ न हो, अनुभव नहीं कर सकते। तुम उसके शरीर की गरमी नहीं अनुभ्रव कर सकते, जब तक कि वह गिलहरी के बालों से ढंकी न हो। तुम सिवा दुःख के कुछ नहीं अनुभव कर सकते और न सिवा मिथ्या के किसी वस्तु का विश्वास कर सकते हो। तुम जीवन के उन दृश्यों के देखने के लिए मस्तक भी नहीं उठाओगे, जो तुम्हारे चारों ओर हैं, किन्तु कोई लड़ाई या मृत्यु देखने के लिए दस मील दौड़ते चले जाओगे।

आदम–बस ! बहुत कहा जा चुका। लड़के को छोड़ दो।

काबील–लड़का ! हा हा !

हौआ–(आदम से) तुम शायद यह विचार रहे हो कि संभव है, इसका जीविकोपाय तुम्हारे जीविकोपाय से उत्तम हो। तुम अभी तक परीक्षा करने में लगे हुए हो। क्या तुम भी मेरे साथ वह बर्ताव करोगे, जो वह अपनी स्त्री के साथ करता है? क्या तुम भी सिंह और भालू का शिकार करना चाहते हो, जिससे मेरे सोने के लिए चमड़ों की बहुतायात हो जाय? क्या मैं भी अपना मुख रंगा करूं और अपनी बाहुओं को नरम और कोमल बनाकर खराब कर डालूं? क्या में भी पिढ़्की, ब्तेर और बकरी के बच्चों का मांस खाने लगूं जिनका दूध तुम मेरे लिए चुराकर ले आया करोगे?

आदम–तुम्हारे साथ बसर करना यों ही एक परीक्षा है। जैसी हो, वैसी रहो, मैं भी जैसा हूं, वैसा रहूंगा।

काबील–तुममें से कोई जीवन को नहीं जानता। तुम सीधे-सादे ग्रामीण मनुष्य हो। तुम उन बैलों, गधों और कुत्तों के दास हो, जिनको तुमने अपनी आवश्यकताओं के लिए पाल रखा है। मैं तुमको उभारकर उससे अधिक ऊंचाई पर ला सकता हूं। मैंने एक उपाय सोचा है। क्यों न हम अपनी सेवा के लिए पुरुष और स्त्रियों को पालें, क्यों न बाल्यावस्था ही से उनका इस रीति से पालन करें कि उनको किसी दूसरे प्रकार के जीवन का ज्ञान न होने पावे, जिसमें वह स्वीकार कर लें कि हम देवता हैं और वह यहां केवल इसलिए हैं कि हमारे जीवन को गौरवशाली बनाये रहें?

आदम–(प्रभावित होकर) यह तो निःसंदेह एक बहुत बड़ा विचार है।

हौआ–(घृणा पूर्वक) बहुत बड़ा विचार है !

आदम–हां, जैसा कि सांप कहा करता था, 'क्यों नहीं?'

हौआ–क्योंकि ऐसे नीचों को मैं अपने घर में नही रहने दूंगी, क्योंकि ऐसे पशुओं से मुझको घृणा है, जिनके दो शिर हों या जिनके अंग सूखे हों, या जो कुरूप, हठी, और प्रकृति-विरुद्ध हों। मैंने पहले ही काबील से कह दिया कि वह पुरुष नहीं है और न 'लुआ' स्त्री है, दोनों राक्षस हैं, और अब तुम उनसे भी अधिक प्रकृति के विरुद्ध राक्षस उत्पन्न करना चाहते हो, जिसमें तुम केवल सुस्त और बेकार हो जाओ और तुम्हारे पाले हुए 'मानवी पशु' परिश्रम को एक झुलसने वाली व्याधि समझें। अच्छा स्वप्न है, क्या कहना? (काबील से) तुम्हारा पिता तो केवल साधारण ही मूर्ख है, किन्तु तुम्हारे रोम-रोम में मूर्खता व्याप्त है; और तुम्हारी स्त्री तुमसे भी अधिक मूर्खा है।

आदस–मैं क्यों मूर्ख हूं? मैं तुमसे अधिक मूर्ख कैसे हो सकता हूं?

हौआ–तुमने कहा था कि वध कभी नहीं होगा, इसलिए कि 'शब्द' हमारी संतान को इससे रोकेगा। उसने काबील को क्यों नहीं रोका !

काबील–उसने मना तो किया था, किन्तु मैं कोई बच्चा नहीं हूं कि एक शब्द से डर जाऊं। 'शब्द' ने समझा था कि मैं अपने भाई का रक्षक होने के सिवा और कुछ नहीं हूं। उसको ज्ञात हो गया कि मैं 'मैं' हूं और हाबील को भी वही होना चाहिए और अपनी देखभाल आप करना चाहिए। जिस प्रकार कि मैं उसका रक्षक था उससे अधिक वह मेरा रक्षा नहीं था, फिर उसने तुमको क्यों न मार डाला? यदि मुझको कोई रोकने वाला नहीं था, तो उसको भी कोई रोकने वाला न था। व्यक्तिगत सामना था और मैं जीत गया मैं पहला विजेता था।

आदम–जब तुमने यह सब सोचा था तो 'शब्द' ने तुमसे क्या कहा था?

काबील–क्यों? उसने मुझको अधिकार दे दिया और कहा कि मेरा यह कृत्य मुझ पर एक धब्बा है, एक जला हुआ धब्बा, जिसमें कोई मुझको वध न कर सके, जैसा कि हाबील अपनी भोड़ों पर लगा देता था। मैं यहां ठीकमठीक खड़ा हुं और जिन कायरों ने कभी वध नहीं किया, जो अपने भाइयों के रक्षक बनने से संन्तुष्ट है, वह तिरस्कृत समझ कर छोड़ दिए जाते हैं और शशकों की तरह मार डाले जाते हैं। जो काबील के ज्ञान पर चलेगा, वह संसार पर शासन करेगा, और वह यदि हारकर गिर जायगा, तो उसका सात गुना बदला लिया जायगा। 'शब्द' ने यह कह दिया है, अतः तुमको और दूसरों को मुझसे विद्रोह करते समय सावधान रहना चाहिए।

आदम–डींग मारना और ढिठाई छोड़ो और सच-सच बाताओ, क्या 'शब्द' यह नहीं कहता कि यदि कोई दूसरा तुमको तुम्हारे भाई के वध के लिए मार डालने का साहस नहीं कर सकता, तो तुम स्वयं अपने को मार डालो?

काबील–नहीं।

आदम–यदि तुम झूठ नहीं बोलते, तो फिर ईश्वरीय न्याय कोई वस्तु नहीं।

काबील–मैं झूठ नहीं बोलता, ईश्वरीय न्याय अवश्य एक वस्तु है। क्योंकि 'शब्द' मुझसे कहता है कि मैं अपने को प्रत्येक व्यक्ति के आगे उपस्थित करूं, जिसमें यदि वह मुझे मार डाल सके, तो मार डाले। बिना जोखिम के मैं महत्वशाली नहीं हो सकता। हाबील का खून बहाना मैं इसी रूप में दे रहा हूं। जोखिम और भय पग-पग पर मेरे पीछे हैं। बिना इसके साहस का कोई अर्थ नहीं होता और साहस ही वह वस्तु है, जो रक्त गरमाकर लाल और तेजपूर्ण बना देता है।

आदम–(अपनी कुदाल उठाकर फिर खोदने की तैयारी करता है) अच्छा अब चले जाओ। तुम्हारा यह तेजपूर्ण-जीवन एक सहस्र वर्ष तक नहीं रहेगा और मुझे एक सहस्र वर्ष तक रहना है। तुम सब यदि परस्पर, या हिंस्र पशुओं के साथ लड़ने से नहीं मरोगे, तो उस व्याधि से मर जाओगे, जो स्वयं तुम्हारे भीतर विद्यमान है। तुम्हारा शरीर मनुष्य के शरीर के सदृश नहीं, वरन् उस 'छतरफेम'...के सदृश परिपालित होता है जो वृक्षों पर अंकुरित होता है। श्वास लेने के स्थान पर तुम छींकते हो और खांसते हो और अंततः मुरझाकर नष्ट हो जाते हो। तुम्हारी आंते सड़ जाती हैं, तुम्हारे सिर के केश झड़ जाते हैं, तुम्हारे दांत मैले हो जाते हैं और गिर जाते हैं और तुम समय से पहले मर जाते हो; इसलिए नहीं कि तुम मरना नहीं चाहते हो, बल्कि इसलिए कि तुमको मरना पड़ता है। मैं खेती करूंगा और जीवित रहूंगा।

काबील–और तुम्हारा यह सहस्र वर्ष का जीवन तुम्हारे किस काम का है, तुम पुरानी

घास हो, सौ वर्ष तक धरती खोदते रहने से, क्या अब तुम कुछ बढ़िया खोदने लगे हो? मैं उतने समय तक नहीं जीवित रहा हूं, जितने समय तक तुम जी चुके हो। किंतु खेती की कला से संबंध रखने वाली जितनी बातें हो सकती थीं, उनको मैं जानता हूं और अब उसको छोड़कर उससे उत्तम कलाओं के जानने में तत्पर हूं। मैं लड़ना और शिकार करना अर्थात् मार डालने की विद्या जानता हूं। तुमको अपने सहस्त्र वर्ष का निश्चय कैसे हो सकता है? मैं अभी तुम दोनों को मार डाल सकता हूं, और तुम दो भेड़ों से अधिक अपनी रक्षा नहीं कर सकते। मैं तुमको छोड़ देता हूं, परन्तु दूसरे तुमको मार डाल सकते हैं। क्यों न वीरता के साथ जीवन निर्वाह करो और शीघ्र मरकर दूसरों के लिए स्थान रिक्त कर दो? मैं स्वयं जो तुम दोनों की अपेक्षा कहीं अधिक विद्याओं को जानता हूं, अपने आपसे विरक्त हो जाऊं, यदि लड़ना या शिकार खेलना न हो। ऐसे सहस्त्र वर्ष बिताने से पहिले ही मैं अपने को मार डालूं, जैसा कि प्राय: 'शब्द' की ओर से आन्दोलन हुआ करता है।

आदम—छोटे, अभी तुम कह रहे थे कि 'शब्द' हाबील की जान के बदले तुम्हारी जान का सामना नहीं करता।

काबील—'शब्द' इस प्रकार सम्मुख नहीं होता, जिस प्रकार तुमसे हुआ करता है। मैं एक युवा पुरुष हूं और तुम एक बूढ़े बच्चे। कोई बच्चे और युवा से एक-सी बातें नहीं करता और युवा सुनकर चुपचाप कांपने नहीं लगता वरन् उत्तर देता है और वह 'शब्द' से अपना मान कराता है और अन्तत: जो चाहता है उससे कहलाने लगता है।

आदम—इस बड़े बोल पर तुम्हारी जीभ नष्ट हो !

हौआ—अपनी जीभ को वश में रखो और मेरे बच्चे को कोसो मत ! ललस की यह भूल थी कि उसने उत्पन्न करने की प्रीति को स्त्री और पुरुष के बीच में असमान भागों में विभाजित किया। काबील ! यदि हाबील के उत्पन्न करने की पीड़ा तुमको सहन करनी पड़ती या उसके मर जाने पर दूसरा मनुष्य उत्पन्न करना पड़ता, तो तुम उसका वध न करते, वरन् उसकी जान को बचाने के लिए अपनी जान संकट में डालते। यही कारण है कि ऐसी निर्मूल बातचीत, जिसने अभी आदम को भी लुभा लिया था, जब कि वह अपनी कुदाल फेंककर थोड़ी देर के लिए तुम्हारी ओर आकर्षित हो गया था। मुझको एक व्यतीत हो जाने वाली वायु ज्ञात हुई, जो किसी शव पर से बह गई हो यही कारण है कि उत्पन्न करनेवाली स्त्री और नाश करने वाले पुरुष के मध्य शत्रुता है। मैं तुमको जानती हूं। तुम सुखाभिलाषी और इन्द्रियों के दास हो। जीवन को उत्पन्न करना परिश्रम और कठिनता का काम है, जिसके लिए अधिक समय की आवश्यकता है। दूसरों के उत्पन्न किये हुए जीवन को चुरा ले जाना सुगम है और थोड़ी देर का काम है। जब तक तुम कृषि करते रहे, तुम संसार को जीवित और उत्पन्न करने के योग्य बनाए हुए थे, जिस प्रकार मैं जीवित हूं और उत्पन्न करती हूं। ललस ने तुमको इसीलिए स्त्रियों के परिश्रम से स्वतंत्र रखा था, चोरी और वध के लिए नहीं।

काबील—शैतान उसका कृतज्ञ हो, मैं अपने पावों तले की मिट्टी के साथ पति का खेल खेलने से अधिक उत्तम अपने समय का सुव्यय निकाल सकता हूं।

आदम—'शैतान' ! यह कौन-सा नया शब्द है?

काबील—सुनो, जब कभी तुमने 'शब्द' की चर्चा की, जो तुमको बातें बताया करते हैं, तो मैंने कभी चित्त लगाकर तुम्हारी बात नहीं सुनी है। दो शब्द होंगे, एक तो वह जो तुमको बुरा

कहता है और तुछ समझता है दूसरा वह जो मेरा मान करता है और मुझ पर भरोसा रखता है। मैं तुम्हारे शब्द को 'शैतान का शब्द' कहता हूं और अपने शब्द को 'ईश्वर का शब्द।'

आदम—मेरा शब्द जीवन का शब्द है और तुम्हारा शब्द मृत्यु का !

काबील—अच्छा तो यही सही, क्योंकि वह मुझसे कहता है कि मृत्यु वास्तव में मृत्यु नहीं है, वरन् दूसरे जीवन का एक द्वार है—ऐसा जीवन जो अधिक शक्तिशाली और तेजपूर्ण है, जो केवल आत्मा का जीवन है, जिसमें मिट्टी के ढेले और बसूले या भूख और थकान नहीं।

हौआ—इंद्रिय-विलास और आलस्य का जीवन, काबील ! मैं भली प्रकार जानती हूं।

काबील—इंद्रिय-विलास का जीवन ! हां क्यों नहीं, ऐसा जीवन जिसमें कोई अपने भाई की रक्षा नहीं करता, इसलिए कि उसका भाई अपनी रक्षा स्वयं कर सकता है; परन्तु क्या मैं आलसी हूं, तुम्हारे परिश्रम के जीवन को छोड़कर क्या मुझे उन संकटों और विपत्तियों का सामना करना नहीं ़ड़ा है जिनका तुमको कोई अनुभव नहीं? तीर हाथ में बसूले से हलका जान पड़ता है, किंतु जो शक्ति तीर को लड़ने वाले के हृदय में उतार देती है, और जो शक्ति बसूले को अक्षत और स्थूल मिट्टी के भीतर प्रविष्ट कर देती है, इन दोनों में अग्नि और जल का सम्बन्ध है। मेरी शक्ति इसकी शक्ति के समान है। इसलिए कि मेरा मन पवित्र है।

आदम—यह क्या शब्द है? पवित्र का क्या अर्थ?

काबील—जो मिट्टी से विमुख होकर ऊपर सूर्य और स्वच्छ आकाश की ओर आकर्षित हों।

आदम—बच्चे ! आकाश तो शून्य है, किंतु भूमि फलों से पूर्ण है; भूमि हमको भोजन देती है और हमको वह शक्ति प्रदान करती है जिससे हमने तुमको और समस्त मनुष्य जाति को उत्पन्न किया। आज उस मिट्टी से सम्बन्ध-रहित हो जाओ जिसको तुम तुच्छ समझते हो, तो तुम बुरी तरह नष्ट हो जाओगे।

काबील—मुझको मिट्टी से घृणा है, मुझको भोजन से घृणा है। तुम कहते हो कि भूमि हमको शक्ति प्रदान करती है; किन्तु क्या यही भूमि विष्टा होकर हमको रोगों का शिकार नहीं बनाती? मुझको उस उत्पन्न करने से घृणा है जिस पर तुमको और माता को गर्व है और जो हमको पिछड़ाकर पशुओं के तुल्य कर देता है परिणाम भी यदि यही होता है जैसा कि आरंभ रहा है, तो मनुष्य जाति का मिट जाना अच्छा। यदि मुझको भालू की भांति उदर भरना है, यदि लुआ को भालू की भांति पिल्ले जनना है, तो मैं मनुष्य के बदले भालू ही होना पसन्द करूंगा, क्योंकि भालू अपने से लजाता नहीं, उसको अपने से उत्तम वस्तु का ज्ञान नहीं होता। यदि तुम भालू की भांति तृप्त हो तो मैं नहीं हूं। तुम उस स्त्री के साथ रहो, जो तुमको बच्चे दे। मैं उस स्त्री के पास जाऊंगा, जो मुझे 'स्वप्न' दे। तुम अपने भोजन के लिए भूमि टटोलते रहो, मैं अपना भोजन अपने तीर के द्वारा या तो आकाश से ले आऊंगा या उस समय उसको गिरा दूंगा, जब कि वह अपने जीवन के बल से भूमि पर चलती-फिरती होगी। यदि मेरे लिए बस यही दो उपाय हैं कि भोजन प्राप्त करूं या मर जाऊं, तो अपने भोजन को भूमि से जहां तक संभव होगा, दूरी पर से प्राप्त करूंगा। बैल, इसके पहले कि वह मुझे मिले, घास से बढ़कर भोजन प्राप्त करेगा। और चूंकि, मनुष्य बैल से अधिक चुना हुआ है, इसलिए किसी दिन मैं अपने शत्रु को बैल खाने के लिए दूंगा और फिर उसको मारकर आप ही खा जाऊंगा।

आदम—राक्षस ! सुनती हो हौआ?

हौआ–तो अपने मुंह को स्वच्छ निर्मल आकाश की ओर आकर्षित करने से यही तात्पर्य है ! मनुष्य-भक्षण ! बच्चों को खजाना ! इसका तो बिल्कुल यही परिणाम होगा कि जो मेमनों और बकरी के बच्चों का हुआ था, जब कि हाबील ने भेड़ और बकरी से प्रारंभ किया था। अंततः तुम बेचारे मूर्ख ही रहे। क्या तुम समझते हो कि मैंने इन बातों पर विचार नहीं किया, जिसको बच्चा जनने की पीड़ा सहनी पड़ती है और जिसको भोजन तैयार करने का परिश्रम करना होता है? मुझे भी अपने बच्चे के संबन्ध में यह विचार था कि शायद मेरा शूर और वीर पुत्र किसी उत्तम वस्तु का ध्यान करे और उसकी इच्छा करे और संभव है उसका संकल्प भीं करे–यहां तक कि उसको उत्पन्न कर ले, और परिणाम यह हुआ कि वह भालू होना और बच्चों को खा जाना चाहता है। रीछ भी आदमी को न खाए, यदि उसको शहद मिलता रहे।

काबील–मैं रीछ होना नहीं चाहता और न बच्चों को खाना चाहता हूं। मैं आप ही नहीं जानता कि मैं क्या चाहता हूं। सिवाय इसके कि इस बुड्ढे कृषक से कुछ अच्छ होना चाहता हूं जिसको ललस ने इसलिए बनाया था कि मुझको उत्पन्न करने में तुम्हारी सहायता करे और जिसको तुम अब तुच्छ समझती हो, इसलिए कि वह तुम्हारी आवश्यकता पूरी कर चुका है।

आदम–(क्रोध से उत्तेजित होकर) जी चाहता है कि तुमको अभी दिखा दूं कि मेरा कुदाल तुम्हारे बल्लभ के होते हुए तुम्हारे अवज्ञा-पूर्ण शिर के दो टुकड़े कर सकता है !

काबील–आवज्ञा-पूर्ण ! हा हा ! (अपने बल्लम को घुमाकर) आओ सबके बुड्ढे बाप ! परीक्षा कर लो। लड़ाई का तनिक स्वाद चख लो।

हौआ–बस, बस, मूर्खों ! बैठ जाओ और चुप होकर मेरी बात सुनो। (आदम उदास होकर अपने शस्त्रों को हिलाकर बसूला फेंक देता है। काबील भी हंसता हुआ बल्ल्म और ढाल को भूमि पर डाल देता है, दोनों बैठ जाते हैं) मैं नहीं कह सकती कि तुममें से कौन तनिक भी मुझको तृप्त रहा है, तुम अपनी खेती से या वह अपनी गंदी हिंसा से। मैं समझती हूं कि ललस ने तुमको जीवन के उन सुगम उपायों से किसी के लिए भी स्वतंत्र नहीं किया था। (आदम से) तुम वृक्षों की जड़ खोदते हो और भूमि के भीतर से अन्न निकालते हो, आकाश से कोई ईश्वर-प्रद भोजन क्यों नहीं उतारते? वह अपने भोजन के लिए चोरी और वध करता है। मृत्यु के पश्चात् आयु पर व्यर्थ कविता करता है और अपने भयानक जीवन को सुन्दर शब्दों में और अपने रोएंदार शरीर को अच्छे वस्त्रों में, जिससे लोग चोर और हत्यारा समझकर कोसने के बदले उसकी मान-प्रतिष्ठा करें, छिपाये हुए है। आदम के सिवा तुम सब मनुष्य मेरी संतान और मेरी संतान की संतान हो। तुम लोग मेरे पास आते हो और अपनी प्रदर्शिनी करना चाहते हो, परन्तु तुम्हारी सारी बुद्धि और योग्यता तुम्हारी माता हौआ के सम्मुख लुप्त हो जाती है।

किसान आते हैं, लड़ने-मरने वाले आते हैं, किन्तु दोनों से मैं एक समान ऊब जाती हूं, क्योंकि वह या तो पिछली फसल के समान ही होती है, और पिछली लड़ाई केवल पहली लड़ाई की शत्रुता होती है। मैं यह सब हजारों बार सुन चुकी हूं। कुछ लोग आकर अपने सबसे छोटे बच्चे की चर्चा करते हैं, कि मेरे सबसे समझदार और प्यारे बच्चे ने 'कल' कहा है, या यह कि वह और बच्चों से अधिक अनोखा और हंसमुख है; और मुझको आश्चर्य, प्रसन्नता और रुचि को प्रकट करना पड़ता है, यद्यपि पिछला लड़का बिल्कुल पहले लड़के के समान ही होता है और वह कोई ऐसी नई बात नहीं कहता, जिसको तुम्हारे और हाबील के मुंह से सुनकर मैंने और आदम ने आनन्द न उठाया हो, इसलिए कि तुम दोनों संसार के सबसे पहले बच्चे थे और

हमको उस आश्चर्य और आनन्द से पूर्ण करते थे जिसको जब तक संसार की स्थिति रहेगी, फिर कोई दो व्यक्ति अनुभव नहीं कर सकते। जब मैंउत्पन्न करने के योग्य न रहूंगी, तो अपने पुराने बाग में, जो कूड़ा-करकट का ढेर हो रहा है, चली जाऊंगी, इस विचार से कि कदाचित् बात करने के लिए फिर सर्प मिल जाय, किन्तु सर्प को तुमने हमारा शत्रु बना दिया है उसने वारा छोड़ दिया है, या मर गया है। मैं अब उसको कभी नहीं देखती। इसलिए मुझको लौट आना पड़ता है और आदम की उन्हीं बातों को सुनना पड़ता है, जो दस हजार बार सुन चुकी हूं, या परपोते की सेवा-सुश्रूषा करनी पड़ती है, जो अब युवा हो चुका है और अपने बड़प्पन से मुझको भयभीत करना चाहता है। आह ! कैसा शिथिल कर देने वाला जीवन है और अभी इसी प्रकार लगभग सात सौ वर्ष काटने होंगे !

काबील–दीन माता ! देखती हो, जीवन कितना विशाल है ! मनुष्य प्रत्येक वस्तु से थक जाता है। आकाश के नीचे कोई नई वस्तु नहीं।

आदम–(हौआ से घृणा-पूर्ण भाव में) यदि तुमको शिकायत करने के अतिरिक्त कोई काम नहीं है,तो तुम क्यों जी रही हो?

हौआ–इसलिए कि अभी आशा शेष है।

काबील–किस बात की?

हौआ–तुम्हारे और मेरे स्वप्न के सत्य सिद्ध होने की नई और उत्तम वस्तुओं के उत्पन्न होने की। मेरी सन्तान और सन्तान की सन्तान कृषक हैं, न कि लड़ाके। उनमें से कुछ लोग खेती करेंगे, न कि लड़ाई। वह तुम दोनों से अधिक उपयोगी हैं। वह दुर्बल हैं, भीरु हैं, और प्रदर्शन के इच्छुक हैं। फिर भी वह मैले-कुचैले रहते हैं और बाल कटाने का कष्ट भी सहन नहीं करते। वह ऋण लेते हैं और कभी परिशोध नहीं करते। इस पर भी उनको जिस वस्तु की अवश्यकता होती है, लोग उनको दे देते हैं। इसलिए कि वह सुन्दर शब्दों में सुन्दर झूठ बोलते हैं। वह अपने स्वप्न को स्मरण रख सकते हैं। वह बिना सोए हुए स्वप्न देख सकते हैं। उनकी संकल्प शक्ति ऐसी नहीं कि वह स्वप्न देखने के स्थान में सृजन कर सकें; किन्तु सर्प ने कहा था कि वह लोग जो दृढ़ विश्वास रखते हैं, प्रत्येक स्वप्न को अपने संकल्प से उत्पन्न कर सकते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो बांसुरी के कुछ टुकड़े काटकर उनको फूंकते हैं, जिसने वायु में 'शब्द' के मनोहर स्वर उत्पन्न होते हैं और कुछ तो इन भाँति-भाँति के स्वरों को परस्पर मिला देते हैं, और तीन-तीन टुकड़ों से एक ही समय शब्द निकलते हैं और मेरे प्राणों को उभारकर उन वस्तुओं तक पहुंचा देते हैं, जिनके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। और कुछ मिट्टी के पशु बनाते हैं ओर पत्थर पर आकृतियां ठोंक देते हैं और मुझसे कहते हैं कि इन आकृतियों की स्त्रियां उत्पन्न करो। मैंने उन आकृतियों पर विचार किया है और फिर संकल्प किया है और लड़की उत्पन्न भी की है, जो अब बढ़कर उन आकृतियों से मिल गई है, और कुछ लोग, हैं, जो बिना उंगलियों पर गिने हुए संख्या सोच लेते हैं, और रात्रि के समय आकाश की ओर देखा करते हैं। वह लोग तारों के नाम रखते हैं और पूर्व ही से यह बता सकते हैं कि सूर्य कब काले तवे से ढक जायगा। तू बाल को देखो जिसने इस चर्खे को बना कर मेरे श्रमों को बहुत कुछ घटा दिया है,फिर हनूक को देखो जो पहाड़ियों पर फिरा करता है और बराबर 'शब्द' की बातें सुना करता है; उसने अपनी इच्छा को उस 'शब्द' की इच्छा पूरी करने के लिए छोड़ दिया है। स्वयं उसमें बहुत कुछ 'शब्द' की महिमा आ गई है। जब यह लोग आते हैं, तो सदैव कोई-न-कोई नई बात या नई आशा अवश्य

होती है और जीवित रहने के लिए बहाना मिल जाता है। वह कभी मरना नहीं चाहते; क्योंकि वह सदैव सीखते रहते हैं और कोई-न- कोई नई वस्तु या विद्या उत्पन्न करते रहते हैं। और यदि उत्पन्न नहीं करते, तो कम-से-कम उनके स्वप्न देखते रहते हैं। और इसके बाद भी काबील तुम अपनी लड़ाई और नाशकारिता पर मूर्खों की भांति इतराते हुए आते हो और मुझसे कहते हो कि 'यह सब अत्यन्त प्रभावशाली है, मैं शूर हूं और मृत्यु या मृत्यु के भय के अतिरिक्त कोई दूसरी वस्तु जीवन को प्रिय नहीं बना सकी।' बस दुष्ट बालक ! यहां से चले जाओ और तुम आदम ! अपना काम देखो और इसकी बातें सुनने में अपना समय न नष्ट करो।

काबील–मैं कदाचित् बहुत बुद्धिमान तो नहीं हूं किन्तु....

हौआ–(बात काटकर) हां कदाचित् नहीं हो, परन्तु इस पर अभिमान न करो। यह कोई प्रशंसा योग्य बात नहीं है।

काबील–तो भी माता ! मेरे भीतर एक निर्विवाद शक्ति है जो मुझको बताती है कि मृत्यु जीवन में अपना भाग अवश्य लेती है। अच्छा, मुझे यह बताओ कि मृत्यु का आविष्कार किसने किया?

(आदम चौंक पड़ता है, हौआ अपना चरखा छोड़ देती है। दोनों अत्यन्त विस्मय का प्रदर्शन करते हैं।)

काबील–तुम दोनों को क्या हो गया है?

आदम–लड़के, तुमने हमसे एक भयानक प्रश्न किया है।

हौआ–तुमने वध आविष्कार किया, बस इतना कह देना पर्याप्त समझो।

काबील–वध मृत्यु नहीं है। तुम मेरा अभिप्राय समझते हो? जिनको मैं वध करता हूं, यदि उनको मैं छोड़ दूं, तो भी वह मर जायेंगे। यदि मैं वध न किया जाऊं, तो भी मर जाऊंगा। मुझको इसमें किसने फंसाया? मैं पूछता हूं कि मृत्यु का किसने आविष्कार किया?

आदम–लड़के ! बुद्धि की बात करो, क्या तुम सदैव का जीवन सहन कर सकते थे? तुम्हारा विचार है कि तुम सहन कर सकते थे। चूंकि जानते हो कि अपने विचार की परीक्षा नहीं कर सकते, परन्तु मैं जानता हूं कि अनंत और अशेषता के रूप में बैठकर अपने भाग्य को झींखना क्या अर्थ रखता है। तनिक विचार तो करो, कभी छुटकारा न होता और तुम नदी के तट पर बालू के जितने कण हैं, उनसे अधिक दिनों तक आदम ही आदम रहते और फिर भी परिणाम से उतनी दूर रहते, जितना कि पहले थे ! मेरे भीतर बहुत कुछ है, जिससे कि मुझे घृणा है और जिसे मैं निकालकर फेंक देना चाहता हूं। अपने माता-पिता के कृतज्ञ बनो जिन्होंने तुमको इस योग्य बनाया कि अपना बोझ नए और अच्छे मनुष्यों को सौंप दो और इस प्रकार तुम्हारे लिए प्रत्येक स्थिर-शांति को उपस्थित किया, क्योंकि हमीं ने मृत्यु का भी आविष्कार किया था।

काबील–(उठकर) तुमने अच्छ किया, मैं भी सदैव जीवित रहना नहीं चाहता, किन्तु यदि मृत्यु को तुमने आविष्कार किया, तो मुझे दोष न लगाओ, क्योंकि मैं मृत्यु का प्रबन्धक हूं।

आदम–मैं तुमको लांछन नहीं लगाता। विश्वास मानकर चले जाओ, मुझे खेती के लिए और अपनी मां को चरखा कातने के लिए छोड़ दो।

काबील–तुमको इसलिए छोड़ देता हूं, किंतु मैंने तुम लोगों को एक उत्तम मार्ग दिखा

दिया है। (ढाल और भाला उठा लेता है) मैं अपने शूर-वीर मित्रों और उनकी सुंदरी स्त्रियों के पास चला जाऊंगा। (कांटों की दीवार की ओर जाता है) जब आदम धरती खोदा करता था और हौआ चरखा चलाया करती थी, उस समय सभ्य मनुष्य कहां थे? (ठहाका लगाता हुआ जाता है और फिर चुप होकर दूर से पुकारता है) माता ! बिदा।

आदम-(बड़बड़ाते हुए) पामर स्वान ! टट्टी को फिर बंद कर सकता था। (वह स्वयं टट्टी को मार्ग में खड़ी कर देता है) उसकी और उसी प्रकार के लोगों की बदौलत मृत्यु जीवन पर विजय पाती जाती है। इसी समय देखों मेरे बहुत से पोते और नाती जीवन को पूर्ण-रूप से जानने के पहले ही मर जाते हैं। कुछ परवाह नहीं; (अपने हाथ पर थूकता है और अपनी कुदाल उठा लेता है) खेती सीखने के लिए जीवन अभी यथेष्ट विशाल है, यद्यपि यह लोग संक्षिप्त बना रहे हैं !

हौआ-(सोचते हुए) हां खेती के लिए और लड़ने के लिए। किंतु क्या दूसरे अत्यंत आवश्यक कामों के लिए भी जीवन यथेष्ट विशाल है? क्या यह लोग इतने समय तक जीवित रहेगें कि 'मन' खा सकें?

आदम-'मन' क्या है?

हौआ-वह आहार जो आकाश से लाया जाय, जो वायु से बना हो और मलिन रीति से धरती खोद कर न निकाला गया हो। क्या लोग अपनी अल्पायु में समस्त तारों की गति जान लेंगे? हनूक को तो 'शब्द' का अर्थान्तर सीखने में दो सौ बरस लग गए। जब वह केवल अस्सी बरस का बच्चा था, तो उसके शब्द को समझने के बाल-प्रयत्न काबील के प्रलयंकारी क्रोध से अधिक भयानक थे। जब उनकी परमायु अल्प हो जायगी तो लोग खेती करेंगे, लड़ेंगे मारेंगे और मरेंगे और उनके बच्चे हनूक उनसे कहेंगे कि 'शब्द' की इच्छा यही है कि वह सदैव या तो खेती करते रहें या लड़ते रहें और मारते-मरते रहें।

आदम-यदि वे स्वयं आलसी हैं और उनका संकल्प यही है कि मर जायं तो में उनको रोक नहीं सकता। में एक सहस्त्र वर्ष तक जीता रहूंगा। यदि उनको यह स्वीकार नहीं, तो वह मर जायं और धिक्कार में फंसे रहें।

हौआ-धिक्कार? यह क्या है?

आदम-यह उन लोगों की दशा है, जो मृत्यु को जीवन से अच्छा कहते हैं। तुम चरखा चलाए जाओ, बेकार न बैठी रहो, जब कि मैं तुम्हारे लिए रोम-रोम की शक्ति व्यय कर रहा हूं।

हौआ-(धीरे से चरखा घुमाते हुए) यदि मूर्ख न होते तो हम दोनों के लिए खेती और चरखे से उत्तम जीवन का कोई द्वार निकाल लेते !

आदम-अपना काम करो, अन्यथा बिना रोटी के रहना पड़ेगा।

हौआ-मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहेगा, और भी कोई वस्तु है। हम अभी नहीं जानते कि वह क्या है; किन्तु किसी दिन हमको ज्ञात हो जायगा और तब हम अकेले उससे जीवन निर्वाह करेंगे और फिर न खेती रह जायगी, न चरखा न लड़ना होगा, न मारना।

[वह विवश होकर चरखा चलाती है, आदम अधीरता के साथ भूमि खोदता है।]

●●●